

भाषार्थ गो विनयक गा माभार, यमपुर

॥ अथ भगवती सूत्र पंचमाङ्ग प्रारम्भ ॥

॥ विज्ञापनम् ॥

माधार्म श्री विनयकवच ज्ञान मण्डार, बयपुर

~~~~~

इस अनादि अन्त ससार मे अनादि काल से बारबार जन्म मरण करते करते जीय थावर योनि मे रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाड़ी नदी मे पत्थर गुरुते गुरुते छापसे चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीय भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावर पणो की छोड़ ब्रसपने बेरिद्रियादिक में उपजता है, अथवा पंचेद्रिपतिर्यचयोनि मे, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि मे पैडा होता है, उसमे भी थक यथन खेच्छ देवको छोड़ आर्य मगधादि जो साढे पचीस देवा हैं उनमे जन्म होना-आर्यदेव मे जन्म होने पर भी अत्यजादि जाति की छोड़ उत्तम जाति और कुल मे जन्म होना-उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सय अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना-अरीर के सय अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के थढजाने से होते हैं,

रंघी वा परलोकसंधंधी काम कुछ कर सका है, इसी कारण मग आयुवाले) गीतम ऐसा कहके आयुको सय गुणो से बढा दिख और शुभकर्मके उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने



पुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्त्व पर सच्ची श्रद्धा होना व  
 पर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सय तो मिथ्यावृष्टियों को भी होता

के कम होजाने और शुभकर्म के बढने से जीवको मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म  
 का ५५ और शुभकर्म के बढने से यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभको बढाने के लिये  
 धर्मके सेवाय और कोई भी यत्न नहीं है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध  
 करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्मके वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण की धर्मी  
 (धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अपना  
 जन्म सफल करते हैं, इतनी श्रद्धि पाके भी उनको धर्मका सेवन दुर्लभ है, और भी धर्मी को त्रिभुवन  
 की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चितामणि और कामधेनु आप से दास हो मिलते हैं, तो पुत्र, कलत्र, घर,  
 सवारी और राज्य मिलजाता क्या बड़ी खोज है, धर्म साधन करनेवालेका वो घड़ी का जीना भी सफल  
 और कार्य कारक है, परतु धर्म हीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य, औ भक्ष्य  
 इत्यादि विचार रहित) का कोटा कोटी वर्ष जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है, पशुवत अपना आयु  
 पूर्ण कर मरता है, इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरने  
 के लिये नौका रूप तीर्थंकरों का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "विना मतलब पराये

दुख को दूर करने की इच्छा," है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिये दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैन दर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया जायदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुग्रहदया," भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्व दर्शनी दया का उपयोग रखते हैं परन्तु सर्वाङ्गो दया का उपयोग तो जैन दर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैन मत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाकं सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यह है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्का बनया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होने पर भी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक्यस्तु हो जाने से क्वापि वैसा पक्का नही होता तैस्वही यथाविधि दया पाडीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय यद्यपि सर्व दर्शनों में दयाका मान है परंतु उस के स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिञ्चित्कर दया) है, जय के उसका स्वरूपही ग्राह्य नसार यथार्थ नही जानश्चक्रे हैं तो पालन करना कैसे हो शकै, फेरफार घैसा के-कोई कहते हैं पञ्चप्राण

~ दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव सुखी न होय प्रत्युत होय तो घैसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकरदेना भी दया ही है,

को दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक र कोई स्यूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया

१ किंन यह भुम हैं, और एकरीत से-साचारधर्म वयाधर्म क्रियाधर्म और धर्म-हता है,-इन चारो धर्मो के दान शील तप और माय चार कारण हैं,

दान होय, मनबल होय तो शील पाछा जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और दान होय, यह मायधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञा नयल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं," ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारों अनुयोग का विचार, सप्तमगी, यद्द्रव्यविचार, आदिक सब ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। वज्रवैकालिक में लिखा है के-ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेयी तथा मरत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सो ही अयधधारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्पपर्यंत दानादि करनेसे भी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानी के एकस्वासीत्वास में नष्ट होशका है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के पान जैसा कहा है, ज्ञान बिना सम्पन्न अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नहीं होते इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पांच भेद-मति श्रुत अर्वाधि मनप र्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्थमत

परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सञ्चाल है, उद्देश समुद्देश ध्याना इत्यादि व्ययहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से श्रुत स्वरूप विच्छिन्न श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है इससे श्रुतज्ञानका आचरण आसिधन अनुभवन होता है और इससे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल में श्रीगौतमादिक केबली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र से विरहमान जिनेंद्रो से सुनके जीय मुक्त होते है, आगामिकालमें पद्मनाम आदि तीर्थकरोसे सुन अनेक जीय मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की याचना पृच्छना परावर्तना अनुपेक्षा और धर्मकया होती है, श्रीउपाई सूत्रमें धर्मकया चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और सर्वेदिनी, जिस्से तत्व माग में प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसको निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भायना होय उसको सर्वेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कया श्री श्रुतिहन्त देवाधिदेव तीर्थकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ “उपपन्नेदया त्रिगमेदवा धुवेदया,” त्रिपदी स्पदी से ही गणधर द्वादशाग की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं)

गन के जेव हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिये इस्की वृद्धि और ये वर्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सत्र से उत्कृष्ट मु नवृद्धि की छति उत्कृष्ट छति सुगम रीति को स्वीकार करना जो

रापकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको  
 और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सब कारण शीघ्र श्रीमुञ्जिंदायाद निवासी श्रीराय धन  
 २ दुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे नकार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके  
 क १ प्रयत्न होय के जिस्से पुन जैनमत युवायस्या को प्राप्त होय इति शम् ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

## भूमिका ।

श्रीभगवती नामक पचम अङ्का अनुयोग समवायाङ्क चतुर्थ अङ्कानुयोग के अनन्तर क्रमसे प्राप्त हुआ है ।  
 विवाहपक्षति पचम अगानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भावशुश्रूषा की सेना के दलन करनेसे  
 तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक निसवाद रहित ध्यान  
 होने से त्रिभुवन रूप धरके आगन में सुधासमान निर्मल जिनके यशकी राशि फैल रही है ऐसे जिनैन्द्र परम  
 करुणावन्त श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर बर्द्धमानस्वामि चौबीसमें तीर्थंकर महाराजने जैसा कहा उनके पाषवे

गणधर प्रायः सधमास्वामी ने श्रीश्रमणसघ और अपनी सन्तति के लिए सुग्रह्य से सङ्कलित किया है ।  
तहाँ अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मगल समुदायार्थ द्वारजेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारा  
के निरूपण करने से होती है ।

तहाँ पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अग्रव्यय कहना चाहिये नहीं तो वृथा फटक  
ज्ञासा मदन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अथ का अवगम (ज्ञान) है  
इन्को अनन्तर फल कहत हैं, दूसरा अर्थावगम होने के बाद तत्पूवक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर  
फल कहाता है ।

योग अर्थात् सन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इसके देनेका काल और कौन इसके  
देने के योग्य है इसीसा प्रथम लक्षण समझ जानना चाहिये ।

मङ्गल जो चित्त निवृत्ति के हतु ग्रय के प्राप्ति मध्य और अंत में किया जाना है ।

अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणों से कहना सो व्याख्या वही सुग्मा  
ही सो इस ग्रथमें कही है, अथवा विशेष तथा जीव अजीव आदि

वही है, अथवा व्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रथमें है, तथा

५८  
प्राप्ति इस ग्रथमें होने और विशिष्टनयप्रथाह प्रथमप्रथाह इस ग्रथ में कहने  
ऐसा नाम हुआ हुम्पा । जगदीश, व्याघ्रप्रज्ञप्ति, यह पर्याय हैं ।

व्याघ्र (जैसा प्रदीप) अथवाय (जैसा पलाञ्च) अथवाय (जैसा हिल्य) भेद से त्रिधा होना है  
परन्तु ज्ञात का नाम यथाय ही होना चाहिये क्योंकि समुदायाय की समाप्ति कहाई होती है ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद स १५ प्रकार का होता है जो स्थानाग के समान  
इदानी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अहं का निक्षेप क्षायोपशमिक भावग्रह प्रयचन पुरुष के अग की तरह  
अग होने से हुआ है इसलिये व्याख्याप्रज्ञप्ति अग ऐसा नाम हुआ । यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य  
और ज्ञाय भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल भावागही का अधिकार है क्योंकि यह ग्रथ क्षायो  
पशमिकादि भाव का कारण है ।

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पञ्चम जन्म का तात्पर्य त्रीन् जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और  
नय ४ अनुयोग अथात् सूत्र का अथ न मयन्ध अथवा सूत्र का अथ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अ  
भात् सूत्राय प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहें हैं, यही चारों जैसे नगर में सुख से प्रवेश करने को चार द्वार  
होत हैं तेसे इस प्रयचन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं । ज्ञात को न्यासदेवा  
के समीप करदेना सो उपक्रम लौकिक और ज्ञात्वीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

द्रव्य क्षेत्र फल भाव छीर आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता अर्थोधिकार छीर समग्रतार भेद से छ प्रकार है, निक्षेप अथात् न्यास स्थापन, ओघ नाम सूत्रालापक से तीन भेद हैं । तहा सूत्रालापकनिष्पन्नानिक्षेप सूत्र के छालाओ का नाम बना जैसे कि व्याख्याप्रज्ञप्ति इत्यादि । अनुगम सूत्रका स्थापनानुक्रम परित्खेद । नय अनन्तधर्मात्मक यस्तुके एक अग्रका ज्ञान का कहत है जो उपक्रान्त नहीं है उसका निक्षेप नामादि नहीं हो सक्ता जिस्का निक्षेप नहीं हुआ नयो से विचार भी नहीं होता है इसलिये इन अनुयोगद्वारी से एकश्रुत स्कन्ध, सातिरेक अध्ययनज्ञातस्वभाय, ४२ शतक १०००० उद्देश्य रूप व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्रकपित जीवाजीनादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्त्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पठने पढाने मे अवश्य यत्न करना चाहिये । परन्तु पठने का अधिकारी यही होगा जो के मोक्षमार्ग अभिलाषी गुरुका आज्ञाकारी औदीक्षाण्डिये जिस्को १५ वष व्यतीत हुआ हाय । व्याख्याप्रज्ञप्ति अग सूत्रवेनका अवसर भी यही है इति श्राम् ।

मकसूदाथाद्

अर्जोमगज

राय धनपतिसिंह बहादुर—



## ॥ विज्ञापनम् ॥

ननोऽत्र पद्यपङ्काः श्रीवीरवामानिचलस्युभोयपमिह आकृतयशास्मृनुस्तदीयोगे । ख्यातः श्रीलप्रतापसिद्धिपञ्चमी मायासुरीयास्तो  
 नस्य न तावनामविदिताकुलस्तदीयादन्तून् ॥ १ ॥ अष्टाशक्तिस्वरूपमदृढची स्तम्भीपते सोदर श्रीमद्राधकषादुरोपनपतिः सिद्धानुकरासकी ।  
 श्रीश्रीनगमदुष्टममकराक्षीकोपलत्पेचिरम् टीकावातिकसपुनसुसिगिमि समद्रयित्यासुमम् ॥ २ ॥ सत्त्वापव्यवृत्तस्यलपु वपुनस्तापत्यहोपुलका गा  
 रास्पुवपुनकागिमिमदकाव्यसापपरभादरम् । पुनःश्रुत्यागमपाठनच्छपठन सरसायक आयकाः स्थिरैर्नीलिमश्यासनस्यपुनर्निर्देशानपमंद्दये ॥ ३ ॥  
 नागस्त्यशतुपकोन्नगवतीमृगामिपानाधुना नामापुलकपाठजदयकुलोसखप्रमादपि । दुर्याप्याः यल्लुदृतिवातिवधृतपाठयाप्राच्छन्नं श्रीमत्पूजितरा  
 वनन्द्रगर्विनिशानवपुप्यामया ॥ ४ ॥ अग्राप्यातिपरिष्कमवभितरा पायसैर्मुद्रुत स्यात्तत्रापिषिबिन्दिदीपवगलोन्मादादशुद्धपदि । साःस्वाशोष्यमु  
 शारमुनिविनवैविष्टे रुपादृष्टिता मिष्यादुष्टमस्तनयवसराम्माथय संज्जनाम् ॥ ५ ॥

अनारम

जीनाप्रजाकर

मानकपथ्य यती

[illegible]

दुप्रतिरवापूरेदिब्बज्जवासस्य स्याद्वादिवादापुण्डरावशीकृतस्य विधिगेष्वेतुइतिस्मृज्जसमन्वितस्य मिथ्यास्याद्यानायिरमखसखरिपुणसदसनाय श्रीमन्म  
हान्नीरमहराजन निपुक्तस्य धसनिपुक्तस्सपगखमाय्कमतिप्रकल्पितस्य मुनियोषी रमावाच भविगमाय पूर्वमुनिविशिष्टिस्फितयो वज्रुप्रवरगुहस्त्वेषि  
ससवाचनसमर्थयो वृत्तिभूतिनाक्रिययो सदन्यवाच्य जीवाभिगमादिविधिविधवरदवरकलेभामां सङ्कुट्टनेम दृष्टतरा  
रमाप्यथारोगादिव गुरुजनयचना त्पूर्वमुनिविशिष्टिस्फुलोत्पत्तौ रस्माप्ति नांस्त्रिकेयेय वृत्ति रारज्यत इति शास्त्रप्रस्ता  
उच्यते विविधा बीजाप्रावादिप्रचुरतरपरदार्थविषया वा अस्तिविधिना कथञ्चि त्रिखिलत्रयेष्व्यास्या मन्यते  
स्यानावि प्रगवतो महावीरस्य गौतमादिविमन्यान् प्रति प्रक्षिप्तपदगणप्रतिपादनानि व्याख्या कृताः प्र  
भूमाभान मन्त्रि पस्याम् १ । अथवा विविधतया विद्वादेकवा आस्यापयतइति व्यास्या अत्रिलाप्यपदाय

साधार्म्यी श्री विनयचन्द्र झांग भण्डार, बमपुर

[illegible][illegible]

पौत्रीपरमाब्जनेनम् । देवदेवजिनेनत्वा सुखाश्चतुर्देवता । नास्तिकपक्षसाम्यस्य यत्नेष्वङ्गनुसारतः । १ । समवायनाम्ने शौचोपर्यगच्छन्तो, द्विने धिवाह  
पक्षतोनाम दण्डमागच्छन्ति । ते विवाहपक्षतो ध्वजहाये । विविधकक्षता नामाप्रकार शौचादिपदाय शौमहावीर देवे शीतमान्निमित्तैर्पूज्या प्रत्युपदा  
यै तत्रैव ते विवाहपक्षतो जज्ञोः यत्रा विविधकक्षता धमूहपवर्गा प्रवाहसद्वर्ता प्रवाहपक्षीये वेदनेविषे तिका विवाहपक्षसौकक्षीये यन्मो एह मगयतो

पदाङ्ग-सोमसुमुपपन्नपद्मतरुमुत्तुति ॥ अत आत्मरथा दावेव परमेष्ठिपञ्चकनमस्कार सुपदार्थयथाह ॥ अमोघरहताशमित्यादि ॥ तत्र तमहति तेषा  
 तर्जं यदं द्रव्यनाममुक्तीनाय भाङ्ग-नवाहयपदद्वयमावर्तकोयकपयत्यो ॥ नमः करधरसुसक्तधुम्रिधानकूपो नमस्कारो द्रवस्वित्यय ॥ केच्यहत्या  
 ङ्गचङ्गाः अमरधरविनिर्मिताद्योकादिमहाप्रतिज्ञायरूपा पुजा महती त्यर्हन्तो यथाङ्ग-अरिर्हतिवद्वज्रम सुबाधिपरिहृतिपुयसकार ॥ सिद्धिमम  
 संवधरका अरहतातेबुधुति ॥ १ ॥ अत सौम्य इहच चतुर्थ्यैर्यपुष्टी प्राकृतसौलीयथा द्रविद्यमानवा रह यजान्तरूपो देशो नम्य गिरिगुहा  
 दीनां सुववदितया समस्तवस्तुसोभयतप्रव्यवस्थया प्रावेन येवाते अरहोमरौ ऽत सौम्यो ऽरहोतर्ज्यो ऽपवा ऽभिद्यमानो रम स्पन्दनः सकलपरि  
 ग्रहोपसक्तबभूतो तद्य विनाशो करगुपलकबभूतो येवाते ऽरथान्ता अत सौम्यो ऽपवा ऽरहतावति ह्रविद्व प्यावति मयम्बङ्गाः शीबराभवा दय  
 या ऽरह्यङ्गाः प्रकहरामादिहेतुभूतमभोजेतरविषयसम्पदौऽपि बीतरगत्वादिकव्याव मत्सक्या इत्यर्थः अरिहतावमितिपाठान्तरम् तत्र कर्मरिहद्व  
 न्यः आङ्ग-अठविहृपियकन अरिभूयहोहसयलजीवाङ्ग । तंनममरिर्हता अरिहतातेकबुधुति ॥ १ ॥ अरहताङ्ग मित्यपि पाठान्तरम् तत्र रोहङ्गी  
 ऽनुपजायमानन्य शीबराभवाङ्गा द्वाङ्ग-दुर्गेवीजेयथात्यन्त प्रादुर्नवतिनाङ्कुर ॥ १ ॥ अरहताङ्ग मित्यपि पाठान्तरम् तत्र रोहङ्गी  
 जीभनमङ्गनङ्गभनीतभूताना मनुपमानन्दरूपपरमपदपुरपयप्रवक्षकत्वेन परमोपकारित्वादिति ॥ नमोसिद्धवति ॥ सित वज्र मनुप्रकार कर्मन्धन  
 प्यात दुर्ग आगवत्समानशुद्धयानानलेन यैस्ते निरुक्तयिधिना सिद्धा अथवा विभुगता चित्तिवचनात् वेपन्तिस्स पुनरावृत्त्या भिवृत्तिपुरी मगम्बन्

### ॥दृष्ट॥ णमोस्मरहताण णमोसिद्धाण

द्विवेपपपरमेष्टि ममस्कारमंयकपञ्चकौयेङ्ग ॥ नमाङ्गीये ममस्कार इथा केङ्गेने १ परर्हताङ्ग अङ्गां अरहतेकानि ते  
 १ आदिमहागतिज्ञायरूप पूजायेवाथ ते अरहत कभीये । तथा पटकर्मरूप कैरो इथा ते परिहृत । तथा  
 १ स्मारइथा कहने १ विहाय सिद्धेनजाङ्गे पटप्रकारकर्मरूप यज्ञाङ्गमरूप अमिहरो ज्वालोनि ये मोषपहता

अव्यसपवः सव्यसापवोवा ऽत स्तेज्यः भमीसोयसवसाधूकभित्तिविस्थाठ तत्र सर्वशश्वस्य देव्यसर्वतापाभपि दशोभा  
दपरि०

त्ये मुच्यते सोके मनुष्यसोके ननु गच्छादौ ये सर्वसाधव स्तेज्यो नमइति एषाव नमनीयता मौलमार्गसाहायककरणेनो प  
कारित्वात् आहव-प्रसङ्गायसहायन करेतिमैसजमकरेतसस । एषककारवेवं नमामशसवसाधूयति ॥ १ ॥ ननु यद्यप्य सरोपेण नमस्कार सदा सि  
दसाधूनामेव पुस्त सद्गुरुवे न्येया मय्यईदोना पइका ह्यतो ईदवाधयो न साधुत्वं व्यजवरभित्ति ? अद्यविस्तरेण तदा स्वपन्नादिव्यजवरमुधारण  
तो ऽसौ वाच्यः स्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ईदोविनमस्कारफल मवाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजाविनमस्कारफलवदिति कर्त्त  
व्यो विज्ञेयतो ऽसौ प्रतिव्यक्तिन नासौ वाच्यो व्यक्तत्वावेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वा युक्ता न सिद्धिना सवया कृतक  
त्यत्वेन सवप्रधानत्वा ? नैव मर्तुपदद्वयन सिद्धानां ज्ञायमानत्वा दर्शनामेव त्रीचप्रवर्तनेना त्यक्तोपकारित्वा दित्यईदोदिदव सा नन्वव मावा  
पादे सा प्रप्नोति क्षत्रिजनै आचार्यन्यः सकाशा दर्शदादीनां ज्ञायमानत्वादिति अतएव तोपमेव वास्यंतोपकारित्वा ? नैव आचार्याणां मुपदे  
ज्जानमानमर्घ्यं मर्तुपदद्वयतएव नहि कृतकत्वा आचार्यादय उपदेसतो ऽर्चंज्ञापकत्वं प्रतिपद्यन्ते यतो ऽस्मिन्तएव परमार्थेन सर्वार्थेज्ञापका स्थाया ऽईत्य  
रिपदूपायवा चार्यादयो ऽत सा जमररुत्पाईकमत्सरव मणुष्य उक्त्व-अपकोइयिपरिसाए पयमितापयमएरकोत्ति ॥ एव ताप त्परमेष्ठिनो नम  
रुत्वा पुनातनजनानां भुतज्ञानस्या त्यक्तोपकारित्वा तस्यैव ब्रह्मज्ञानभुतकृतत्वा ज्ञावभुतस्यैव ब्रह्मभुतहेतुकत्वा त्वज्ज्ञावरूपद्रव्यभुतनमस्तुवृत्ता  
इ ॥ मनोचरनीप्तिवीर्यति ॥ त्रिणि पुस्तकादा वरवरविप्यासः सा बाह्यदशप्रकारापि श्रीमन्नात्रेयविनेन स्वधुताया ब्राह्मीनामिकाया दक्षिता ततो  
प्राप्तो त्पनिर्णीयत आहव-सैहसिनीविद्यां विवेकबनीयदादिकरेण । इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषण निपेरिति मन्वचिकृतआहस्यैवममूल

### पमोयजीण्डिवीए

रइपाविहने । यभीएविहोए माओविहोए पुष्पाकादिकनेविहो भवररुकापनाकप ते भठारेप्रकारे कबभवेवं योतागोपुचो माओने देवाओ तेमाटे माओ

स्वार्थमनूनेमानन्यादिनापमात्रेः १ मत्वं चितुं शिष्यमिति मद्रूपपरिपातमाय चेत्पुनमेवेति प्रतिषेधादयः  
 पुनरस्य मामान्यन व्याख्याप्रप्रतिप्रति नायेवोच्चाहति तेपुनमोच्यन्ते ततएव श्रावप्रवृत्त्यादीदृक्फलसिद्धे स्थापयि ३३ प्रगवता ऽर्थव्याख्याप्रतिषेध  
 तपोक्ता स्नामाच प्रशापना वोर्योवा जनतरफल परम्पराफलतु मोक्षः तथा स्या एवबलत्वादेव फलताया सिद्धौ नस्यात् साक्षात् पारम्पर्येववा यत्र  
 मापादू तत्रतिपात्यितुं पुरमइत जनासत्यप्रसङ्गा तथा यमेव सम्यक्त्यो यदुतास्य शास्त्रस्येह प्रयोजनमिति २ तदेव अस्यत्वात्तस्यै कद्रुतस्त्वयत्तस्य  
 मानिरापायनगतन्यायस्य उद्देश्यकदशसदृशप्रमास्य पदप्रिज्ञाप्रप्रसङ्गपरिभाषस्या ऽष्टाक्षीतिसहस्राधिकलक्षद्रुयप्रमाखपदराक्षी संज्ञसादीनि  
 इतिज्ञानानि अथ प्रथमे ज्ञात ग्रन्थान्तरपरिभाषापाप्ययने दशो दैवबामवति उद्देश्यका द्याप्यपनार्थदक्षाभिप्रायिनो ऽध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते अथ  
 पानविधिना शिष्यस्या चार्थेन यदे तावन्त मध्ययननाम मपीयेवमुद्देशा सायव सुखपरस्वरकादिनिमित्त माद्याभिषयाभिधानादु  
 रेत मद्रुडातुं दिमागायामाह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ अपिक्तनायार्थो यद्यपि वक्ष्यमाकोद्देशकदशकादिगम्ये अयमयावगम्यते तथापि दासाना सु  
 मावयोपाय मन्त्रिषीयते तत्र रायगिहेत्यादि सुसप्तसम्पेकयवनाया द्राजयहेनगरे वक्ष्यमाकोद्देशकस्यार्थो प्रगवता त्रीमहावीरेव दक्षित इतिव्याख्ये  
 यं यय मन्वराभी हयिमत्तवन्तता वसेया ॥ वसकति ॥ वलमविपयः प्रथमोद्देशकः बलमावेचशिए इत्याद्यर्थविवयायइत्ययः ॥ दुक्किउति ॥ दुः

### रायगिह चरणा १ दुर्क २

निदि श्रुतेः । पादव मेदिनोदिक्ताच विषयभाइवाचिकारण इति । माद्यादिविनि स्वरूप विधेय जायवो, शिष्येयमोमानसिखीएछे, एभगव  
 चमइन्द्रपमानवे, पदवेलाखपख्यासीमइन्द्रपमापछे ॥ शिष्ये प्रथमयतवे दश उदेया श्रीमहावीरदेवे राजयइमगरनेविवेक  
 एतन्न ॥ एतमावेचशिष्टे इत्यादि । वलम विपयपयमो निषयव रूप पक्षितोउदेमो मव प्रयुनो खीयवो १ । दुक्केति ॥  
 ॥ अमवेदे ॥ इत्यादि प्रयना निषय पूछो ते वीजोउदेया २ । कंठपपीयेव कांवा मिष्यालमोइनीवकमनेउय

॥ त । स्वपुत्र दुःख वेदयतीत्यादि प्रसन्निर्येयाद्यत्यर्थः ॥ कस्यपठेति ॥ काष्ठा मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थो ज्ञ्या  
 न्यदग्नपत्र ॥ श्रीवपरिणाम सयव प्रकृते दोषो जीवदूषक काष्ठाप्रदोय साक्षिपय स्तुतीयः जीवेन प्रदत्त । काष्ठाभोहनीय कस्म छत मित्याद्य  
 यमिपयापत्यर्थः बकार समुच्चये ॥ एष्यति ॥ प्रकृतयः कर्मजोदा बहुर्णोद्भाज्यार्थः कतिमर्दत । कस्मप्रकृतय इत्यादिद्यावी ॥ पुत्रवीटिति ॥  
 रत्नप्रजादिपुष्पः पचमेवाच्चाः कतिनवत । पुष्पय इत्यादिषु युग्मस्य ॥ जावतसि ॥ यावच्छोपलक्षितः पष्ठः यावतोन्नतता । वकायातरा त्वयै  
 इत्यादिषुत्रयावी ॥ नेरइएति ॥ नेरयिष्यदोपलक्षित सप्तमो नेरयिषो प्रदत्त । निरये उत्पद्यमानइत्यादिषु तत्सूत्र ॥ वासेति ॥ वासश्चोपलक्षि  
 तो ऽएत एकाल्पतातो भद्रम् । मनुष्यइत्यादि सूत्रयावी ॥ गुरुएति ॥ गुरुकविपयोगवमः कय सवत्त । जीवासुरुकत्व मानश्चस्तीत्यादिषु ॥ सूत्र मस्य  
 वाःसमुच्चयार्थः ॥ असवाटिति ॥ बहुवचननिर्देशा बलनाया दृष्टमोदयकस्याचा सात्सूत्र सैव सम्यपूयका सवत् । एवमास्याति बलत् प्रचलित मि  
 त्यादीनि प्रथमशतोद्देशकस्यपदविपाचार्य ॥ तदेव शालोद्देशो कृतमगलादिकृत्योगेयि प्रथमशतस्यादी विद्योपतो मयलमाह ॥ नमोसुपस्वति ॥ नमस्का

कस्यपठेस्य ३ पगइ ४ पुदयीठ ५ जावते ६ नेरइए ७ वाले ८ गुरुएय ९ चलपाठ १० ॥ पमोसुस्यस्व ॥

दे पचपच दमनपचपरिचाम तेजिक प्रकृष्टमाठा अपत्ते क्षात्र जोकदूषक तेकाचा प्रदोय हेमगवन् जोवे काष्ठाभोहनीयकमजोव ॥ इत्यादि ।  
 पर्यनिकपच तीका १ । २ मस्य समुच्चयमा ॥ पगइ ॥ प्रकृति कइता कसमभिव हेमगवन् केतको कसप्रकृति ॥ इत्यादि प्रत्र चौवो ४ । पुदवीटीति ॥ रत्न  
 प्रमा छविवी हेमगवन् केतकोछे ॥ इत्यादि अवनर्जिय पचमा १ । जावतेति हेमगवन् केतसे पाकाये धतरे मय खमताहोय तेनिर्भयक्य छडो १ ।  
 नेरइए ॥ हेमगवन् नरबनेजिये नारको अपत्ते बिबा धनारको अपत्ते ॥ इत्यादि प्रत्र सातमो ७ । वासे ॥ अश्विये कतिवाच हेमगवन् मनुष्यइत्यादि ॥ प्रत्र पाठ  
 मा ८ । मरएव ॥ हेमगवन् विद्या चौकभारोहोय ॥ इत्यादि प्रत्रनिकय ते मयमो छेद्यो ८ । पचवापो ॥ हेमगवन् चकवर्गमो रमकचे, पचमावे पचवि  
 ए इत्यादि प्रत्र ॥ निचवत दृष्टमोठेगा १ ॥ इत्यादिषु प्रथमशतोहेमगव नाकाच ॥ चमोमपछेति ॥ नमस्कारइयो खेहने दुतेने ॥ द्युत वादगगीरूप

रोक्षु भुताय दादशाङ्गीकपाया इत्यवचनाय । नन्विष्टदेवतात्मस्फारोमङ्गलार्थोऽप्रवति । नष्टभुतमिष्टदेवतेति कथमयमङ्गलार्थ इति ? अत्रोच्यते भुतमि  
 ष्टदेवते याइता ममस्वरचीयत्वा स्थिरं कर्मसुखेति च भुत मष्टते भमस्वीर्थायेति । अत्रानात् तीर्थे च भुत सारसारोहरणसाधारणकारकत्वा स  
 च्चादिति । एतत्तव इत्यप्रमत्तोद्देशकाभिधेयार्थसंज्ञः प्राग्दर्शितं सातय यथोद्देशं निर्दिष्ट इति न्याय भाषित्यादित् । अयमोद्देशकार्यप्रचोवाच्य स  
 मीयते यदुत सुपल्लस्वामी अन्धूस्वामिन मन्त्रिसम्पन्नमुच्यवामिति ? उच्यते सुषर्माविवाच्यमायाया मुवत्तत्वा दाइव-तिर्यक्चतुर्हस्माते निर  
 यत्तस्वामिनमिति अनुनामा प्राइ ॥ अइव जते । पञ्चमस्त अङ्गस्त विवाइयकतीएवमवेवं मगवपा महावीरेव अयमहे एवते इवस्ववं जते । के अहे  
 त्वा भाषित्य आस्यातो प्यस्ताजिः प्रमोद्देशक भाषित्य व्याख्याते प्रतिष्ठत अत्युद्देशक मुपोद्वातस्येइ आखे नेकपानिधानादिति अयञ्च प्राब्  
 व्याख्यातो ममस्वरारदिको पन्थो वृत्तिरुता न व्याख्यातः कुतोपि कारकादिति ॥ तेवकासेवेति ॥ तेइति प्राकृतज्ञीसीवत्वा तस्मिन् यत्र तत्कार मा  
 सीत् तं कारो न्यत्रापि पास्यामङ्गलार्थो । यथा-इमार्वं जते । पुढयी इत्यादिषु कासे अचिह्नाववप्यिणीषतुर्थविज्ञानमसवे ॥ तेवति ॥ तस्मिन् य  
 वा मरे नगयान् पत्तजया मकरोत् ॥ समये कासस्येवमिच्छिष्टे विज्ञाने अयवा दृतीयेत्येव तत् स्तेन कासेन हेतुभूतेन तेन समयेन हे

### तेणकाष्टेण तेणसमपुण

वड नोपुधर्माधामो पातानाग्रिथ अनुपत इमकवेवे ॥ तेवकासेवे ॥ अत्राकासेवति ते भवसपिपको कासन/पुसम



पुनः यकारः प्रथमैकवचनप्रत्ययः । अयरेधागच्छदित्सर्वेइत्यादाविव-ततश्च राजपुरुषनाम अगर्गं ॥ होत्येति ॥ अत्रवत् नन्विदानी  
 मपि तत्र असौ त्यतः रूपमुक्तं अत्रवदिति ? उच्यते यकारप्रयोगविधित्तियुक्तं तदेवा प्रव क्तु सुप्रसक्तमिति वाचमादानकाले ऽवसृप्येकी  
 त्या एकास्य तदोपधुनप्रवाहनां इति ज्ञात्वात् ॥ यच्छति ॥ इदस्यानक्तं अत्रवर्धको वाच्य ग्रथगीरवज्रयादिश्च तस्यासिद्धितत्वात् सचैव-रिद्धि  
 त्वित्यप्यसमिद्धं ॥ रिद्धि पुरजवनादिभिः वेदं स्तिमित स्थिर स्थाकादिप्रयवर्जितत्वात् ससृद्धं प्रथमस्यादिभिर्जुतिमुक्तत्वा तत पदत्रयस्य कर्मभार  
 यः ॥ यमुपपन्नकजावय ॥ प्रमुदिता इष्टाः प्रमोदकारकवस्तूना सद्भावा ज्जमानपरवास्तव्यलोका आनपदाश्च अत्रपदजवा स्तत्रायाता सतो यत्र त  
 त्रमुदितज्जमानपदमित्यादि रौप्यपतिका स्वव्याप्त्यानो ऽग्रहयः ॥ तत्सञ्चति ॥ पष्ठराः पञ्चम्यर्थत्वा तस्या द्वाव्यपहरनगरात् ॥ वक्ष्यति ॥ वक्षि  
 सात् ॥ उत्तरपुरास्त्विति ॥ उत्तरपौरस्त्ये ॥ दिशां प्रागो दिपूयोवा प्रागो भयममस्तस्य दिग्भाग स्तत्र गुक्चित्सकनाम ॥ वेङ्ग्य  
 ति ॥ चित्तं लैप्यादिचयनस्य प्राका कर्मवेति नैत्य सङ्काशत्वा हेवर्द्धिं तदाभ्यस्त्या तदुद्भवमपि नैत्यं तद्वद् व्यतरायतनं भर्तुं प्रगवता मर्हेता माय

## रायगिहेणाम णयेरेहोत्या यच्छतं तत्स्वणरायगिहस्तुणयरस्तु द्यहिया उत्तरपुरास्त्विति सीजाए गुणसिलगुणामचेद्गुहोत्या

तत्रमानाम वीधा परानेविवे । तेष्वसमयं । यवाकाशकारे जेसमयनेविवे अगर्गं कदाचि ते समये । रायगिहेणामचयेरेहोत्या ॥ राजपुरुष, इतिनामै  
 वयरेकवर्ता नगराता इवा इहां वस्तमानकाहे राजपुरुषनगरके तोपविधित्तोतकाहे नगरनेजेवो नर्यकवर्ती तेवो वस्तमानकासे मर्ही अवस पियवो  
 काठ माटे इयावलो । यवयो । यवकतेवचनरावपसेवीवो वाचिवो । तच्छरायगिहस्थायरप्यवदिया । यवाकाशकारे इमसंवाचवो तेइने राजा  
 राजगइ नगरने वाहिर । उत्तरपुरास्त्विति सीमाए । उत्तरपूवना दिगिना माए विभागनेवियै एतत्तेरेयानकोचनेवियै गुणयिष्ठ इतिनामै व्यतरायन  
 ना वेत्तमये विव पञ्चवा विवदत भायतन आनपदइ इवा । तत्तत्तत्तेरेपिरावा । तिहां राजपुरुषनगरे तेविचकामे राजावे जेयद विववो एव मुखव

तन् ॥ इतिमिति ॥ धनुष इव यन्मयास्यास्यते तत्प्रयागः सुगमत्वा वित्यवसेयमिति ॥ तेनकाशेखतेसंमण्डलसुमण्डलेति ॥ समतपसिसेदेचेतिवचनात्  
 भ्राम्यति तपस्यतीति भ्रमन् भयवा सः क्षोत्रमेव ममसा वर्ततइति समनाः क्षोत्रवत्त्वय समसो व्याप्यार्तं स्वामप्रस्तावान् मनोमाप्रस्तवस्या स्वय  
 त्यात् सुगतवाः यथा जलस्येव मलतिज्जापत समोवा सर्वेज्जतेषु समब इत्यनेकार्थत्वा द्वागुना प्रवर्ततइति समसो निरुक्तिवद्भात् ॥ जगयति ॥ जगया  
 नेययोदियुक्तः पून्यइत्यर्थः ॥ महावीरेति ॥ वीरः क्षूरीरविज्जातावितिवचनात् रिपुनिराकरयतो विज्जातः सः यन्मयाप्यादिरपिस्था दतो विशि  
 ष्यते महा द्यावी दुज्जयतारिपुनिरत्करका ह्रीरयेति महावीर यस्य देयं जगवतो गौडनाम कृतं यदाह-अबलेनयनरवाब सतिसमेपरीसङ्कोचस  
 म्नासं देयनकएमहावीरति ॥ आदिकरेति ॥ आदौ प्रथमतः अतस्मात्तारादिदृष्टात्मकं करोति तत्पर्यप्रकायकत्वेन प्रकथयती त्वेवकील आविके  
 रः ॥ आदिकरत्वा द्यावी कियिषइत्याह ॥ तित्त्वपरेति ॥ तरति तेन ससारसागरमिति तीर्थं प्रवचन तदव्यातिरेका चेह सः क्षोत्रय तत्स्वरबद्धी  
 सत्या तीर्थकरः तीर्थकरत्व तस्य भान्योपदेज्जपूवेक नित्यतभाह ॥ सहस्रसुदेति ॥ सह आत्मनैव स्याद् भग्न्योपदेज्जतइत्यर्थं सम्यक् यथाह हु  
 द्रो जेयोपादयायेषवीमयस्तुतस्य विदितवानिति सहस्रसुदुः सहस्रसुदुः सः पुंस्योक्तत्वा दित्यतभाह ॥ पुरिसोक्तमेति ॥ पु  
 रुषावां मध्ये तन तेन रूपादिना तिस्रयेनोद्भूतत्वा दूद्वर्तित्वा दुक्तमः पुंस्योक्तमः अथ पुंस्योक्तमस्त्वमेवास्य चिद्वाधुपमानत्रयेव समर्पयत्वाह ॥ पु

तत्पणसेणिगुराया चिह्नादेवी तेनकालेन तेनसमण समणेनगवमहावीरे आदिगरे तित्यगरे सहस्रसुदे

माहे नमो ॥ विश्वादेवी ॥ स्वस्वानामे राबोद्धे ॥ तच्चकाशेव ॥ अवसपिपीवीनाम योधाधारानैविवे ॥ समवेभगवमहावीरे ॥ अमरतपक्षो ऐश्वर्बोदिगुष  
 ब्रत पन्म इत्यत्र महावीर इत्यनामै ॥ आदिगरे ॥ द्युतर्बर्धधाधारोणादिसूचनो आदिनां करणधार ॥ तित्यगरे ॥ ततोये खेचे तेनेतोयं प्रवचन तत्रा सं  
 थापकोक परछपदेज विना ज्ञेयापादेयपसुसरूप आर्धं ॥ पुरिसतमे ॥ पुंस्यपमाहि सनाम रूपादिप्रतिग्रहेकरो भववाधय  
 चिद्भनीयैर सौम्यैकेरौसहित तेनाते पुंसपरिसंज्ञ ॥ परिसवरपुंडरीए ॥ पुंस्यपमाहिवरत्कश्चिदे प्रधान क्षेत्रकमस्तनो परे

१०१ खेः पुरुष द्यामीसिंहदेतिपुरुषविहो । लोके महि विहो शौर्यं मतिप्रकट मन्पुपगत मताः क्षीर्यं स उपमान कृत क्षीर्यं  
 नु प्रगः । १०२ त्वे प्रत्यनीकदेन प्राप्यमायसा प्यजीतत्वात् भुक्तिस्वकाठिनमुप्रिप्रहारप्रहतिप्रवर्धमानामरक्षरीरपुम्बजताकरवावेति तथा ॥ पुरिखव  
 रपुष्परीयति ॥ वरपुष्परीयं प्रपामभवससहस्रपत्र पुरुषो वरपुष्परीकमिवेति पुरुषवरपुष्परीयं पवलत्व चास्य जगवतः सर्वाभुप्रमलीमसरहितत्वात्  
 सर्वेय मुप्रामुनावेः सुदुस्यात् क्षयवाः पुरुषादां तत्सेवकजीयाना वरपुष्परीकमिव वरपुष्पत्रयिव यः सत्तापालपनिवारकसमर्पत्वा इत्याकारयत्वा  
 व स पुरुषवरपुष्परीकमिति तथा ॥ पुरिखवरगपहन्ति ॥ पुरुषयव वरवंचकसी पुरुषवरगपहन्ती ययागपहस्तिनो भवेनापि समस्तैरहस्तिनो न  
 ज्यत तथा जगवत स्तद्विहिरकेन इतिपरकजदुर्जिहमरमरकादीनि दुरितानि नश्यतीति पुरुषवरगपहन्तीत्युच्यत इत्यत उपमात्रया सुसुयो  
 ज्ञनो लो नवायं पुरुषोत्तमएव किंतुलोकसा प्युत्तमो लोकमायत्वा देतदेवाह ॥ लोकस्य वज्रिज्वल्लोकस्य नायः प्रनु लोकायाधो  
 नायत्वं योगसेमकारित्वं योगसेमरूपाय इतिवचनात् तथा स्या प्राप्तस्य लोकस्य सम्यग्दर्शनादे र्योगकरकेन सद्यस्यच परिपालनेनेति लोकमा  
 यत्वं ययावास्वितसमस्तवस्तुलोमप्रदीपना देवेत्यत्राह ॥ लोकस्य विविष्टुतिर्पञ्जरामररूपसा तरतिमिरनिराकरकेन प्रकटय

## पुरिसुतमे पुरिससीहे पुरिसवरपुष्परीए पुरिसवरगघहृत्यो लोगुप्तमे लोगनाहे लोगहिणु लोगपदीवे

पुरभावेकरो सवप्रथम पापरहित तमाटे ॥ पुरिखवरपधहत्तो ॥ पुरुषयर्माहि प्रधान गम्यहस्योसमान त्रिमगधहस्योनीगन्वे भजेरा हावो नाचे तिम भ  
 गवन जेदेयनेदिये विहरे तिहतिहा इतिदुमिथादिपरचक्रनाये ॥ लोगुप्तमे ॥ मलयजीवनेमाहि समवेकरो कप्तमहे ॥ लोगनाहे ॥ इहाबीकयदे  
 पामवधिविह माचगामी सवसाई भयलोण जाववा तेहभो नाकहीये योगसेमना करपहारवे विवेधामे ममपाम्बूनवो तेहने पमाडेहे ते योग  
 वरोये यनेजिचे पामे समसापीहे तेहने साधावको खंडहचानहीये मनर्मीकरपच उपजावते चेमकहीये तेवैपूनाज कामीकरे तेमयोबीकनाब  
 वहीये ॥ इहाबाव पटविधमोपनिजाव तेहने रचाने कारये विटुवाहे ॥ लोगपदीवे ॥ इहाबीककहीये सजीर्पदेहीवोव जेहने भर्तनो भवसाहे तेह

[illegible]

खोगपञ्जीयगरे श्यनयदगु न्वखुदगु मग्गदगु सरणदगु

न एव प्रदीपमानः । नागपञ्चादयेः । इहा साक्षात्कृता गजधरं ते प्रते पञ्चासूर्यसमानाणि किमसूर्येनोषाद्योः । कतिपयौ जगमादि सप्तमेष्ट्यातशोय तिम  
न धुवेष्ट्या; एतदे विपरीतं वचनेनोः । वादार्थांगी रवे । प्रववा, समस्तसाक्षाद्योक्तायनेविदे प्रघातकरे । अमयदए । उ  
पवव, दयाप्रतेदीयेते । वस्तुदए । द्युतमानकपवस्तुदे तेमयो । मयदए । आनदयनचारित्रकप मोचमागना द्वा

तदुपपत्तेश्च नरादयः दारुद्र्यापकृत्यास्य धम्मदेव्यायैवेत्यतयाह ॥ धम्म सुतचारित्रात्मक दशयतीति धम्मदेशकः ॥ धम्मदेश्येति ॥  
पाठान्नरः ॥ तत्र धम्मं युतचारित्ररूपं दूयत इति धम्मद्वयः धम्मदेशनामात्रेणापि धम्मदेशक उच्यत इत्यतयाह ॥ धम्मसारोदिति ॥ धम्मदेशस्य प्रव  
त्तत्वेन सारोपेदिव धम्मसारोदिति यथा रथस्य सारथी रथ रथिक मङ्गल्य रथति एव जगवाञ्चारित्रधर्माङ्गानां सुयमात्मप्रवचनास्याना रथयो  
पञ्चा धम्मसारोदिति जयतीति तीर्थांतरीयमतमा स्यापि धम्मसारथय सुतरीतिविज्ञापयकाह ॥ धम्मवरणाठरतचक्रवर्तीति ॥ धम्य समुद्रा यतुये  
य इमियान् मतेनत्वारोन्ता पृथिव्यन्ता एतेषु स्वामितया जयतीति दारुद्रस्य सबाधौचक्रवर्तीष वरणातुरणचक्रवर्ती राजातिशयो धम्मविपये वरणा  
तुरणचक्रवर्ती धम्मवरणातुरणचक्रवर्ती यथाहि-पृथिव्या अयराजानिशापी वरणातुरणचक्रवर्तीभवति तथा जगता ध्यग्मविपय क्षेत्रप्रवेवृषा  
मय्यं मातिगपत्या तयोप्यतइति । अथवा धम्मएव वर मितरजरापेक्षया कृपित्वादिधम्मवर्णापसयाया चातुरस्त म्दानादिजनेन वतुर्किंजाग ज्ञात  
सूदांवा नरकादिगतीना मल्लकारीत्या चातुरस्त तदेयचातुरस्त यच्च जयारातिष्वेदा सेन वशिष्ठं क्षील्यस्य सतथा यतश्च धम्मदेशकत्वादित्येव  
यत्तद्व्यस्य म अंकुष्टानादियोगेवति प्रवतीत्याह ॥ धम्मकिंशयमरमावयुचक्रवर्ती ॥ अयतिवर्ते कटकुब्जादिदिशि रत्नस्थिते अविस्वाद्यकदा । इत्येव वा  
यिज्जत्वाद्वा वरे प्रपाने ज्ञानदंशे क्षेत्रसाध्ये विज्ञेयसामान्यबोधोपात्मने चारयति य सतथा, कदावाच व्येवविषयवेदनसम्पुपेतः कैचि दम्पुभगस्य

योहिदए धम्मदए धम्मनायगे धम्मसारोहिण धम्मवरणाठरतचक्रवर्ती ध्युप्यकिंशय वरणाणदसणधरे

तारहे । सरबदण ॥ नानाविधउपट्टत जावम रचाप्यान एतस्से निर्वाचक्षीवे तेमाटे सरबदए ॥ माहिदए ॥ सम्यक् चारिषूय तेहना देवद्वार ।  
॥ धम्मदए ॥ चारिषूय धमना देवद्वार ॥ धम्मदेशिनए ॥ युतचारित्ररूपधर्माना उपदेमक्क ॥ धम्मनायगे ॥ धमना मायक्क ठाकुरहे ॥ धम्मसारोदिए ॥ ध  
मरूपय पयत्तीशाने सारोपिममान ॥ धम्मवरणाठरणचक्रवर्ती ॥ जिय पृथिवीनेनियै समक्क राजामोहि चक्रवर्ती प्रपान तिम धमनाचक्रवर्तीसि भ  
गवान् चक्रवर्ति । यथा चक्रवर्ति चारिदिग्गिना यतसरे योच मनावे तिम भगवत चारिबतिना यतसरे ॥ यथाकिंशयवरणाठरउपधरे ॥ भिल्या

ते सुबभिम्योपनेशस्या धोपकारीभ्यतोति निष्कटतप्रतिपादनायाः-अथवा-कथमस्याप्रतिष्ठतसर्वेदमर्थसम्पन्नम् । अत्रोच्यते भावरक्षाभावा देतमे  
यास्यावेदयन्नाह ॥ यियद्वकडमन्येति ॥ व्यावृत्तं निवृत्त मपगत इदं व्यावृत्तं भावरक्षा यस्यासी व्यावृत्तव्या, अद्यानाय द्यास्य रागादिगयाज्जात  
इत्याह ॥ त्रिकोति ॥ अयति निराकरोति रागद्वेषादिरूपा मराली नितिलिखितः, रागादिजय द्यास्य रागादिरुक्कपतज्जयोपायान्मनपूर्वकएव प्रवर्ततीत्ये  
तदस्याह ॥ आचरति ॥ जानाति आटस्थिज्ञानषतुष्टयेमति द्यायकः, द्यायकइत्यनेनास्य स्वार्थसम्पत्तुपायसतो ऽपुमातु स्वार्थसम्पत्तिपूर्वक पराये  
सम्पादकत्वं विशेष्यषतुष्टयेनाह ॥ बुद्धेति ॥ बुद्धो जीवादितित्यस्तुदुबान्, तथा ॥ शोइएति ॥ जीवादितित्वस्य परेणं शोचयिता, तथा ॥ मुतेति ॥  
मुक्क द्याद्यान्यत्तरपन्ययननेन मुक्कत्वात्, तथा ॥ मोयएति ॥ परेणा कर्मयन्यना म्मोचयिता । अय मुक्कावस्था नाधित्य विशेष्यन्याह ॥ सर्वबू  
वृद्धरीति ॥ सर्वस्य वस्तुलोमस्य विशेष्यरूपतया ज्ञापकत्वेन सर्वज्ञः, सामान्यरूपतया पुनः सर्वदर्शी, मनुमुक्कावस्थाया दक्षंभान्तराचिनमतपुरुषव  
द्भविष्य ज्ञातस्य एतत्तपदद्वयं द्विचि कदृश्यतइति । तथा ॥ चिकमयसमित्यादि ॥ तत्र द्विचि सर्ववाचारहितत्वा दृष्टत्वा स्वात्ताविक्रमायोगिकचलमई  
त्यनायात् सकृज मयिद्यमानरोगं तन्विकथनमसुरीरमनसोरजावात् अभक्त ममन्तार्थविषयज्ञानरूपत्वात् अक्षय मनाश्चाद्यपयंवहितस्थितिकत्वात्

त्रियद्वन्द्वसं जिणं जाणए वुट्ठं धोहिणं मुत्ते मोयए सव्वणू सव्वदरिसी सिवमयउमरुअमण तमरकयमव्वायाह

दिवदोहस्ताः प्राभमहो । एतन्नाप्रधानकोऽवस्थानं निवृत्तययाये वृत्तस्यपयो जेष्ठवक्तो । जिषे । रागागदिव  
 प्रीत्या जिते ते त्रिन । प्रायस्विकप्रान्तपरोक्षो षष्ठिक । जायए । खागे जीवादितल ॥ युदे ॥ इस्करा । बोदिए । जीवादितल प्रवरने बन्धवै ॥ सुते ॥ बाह्या  
 व्यनर पत्ययो मंत्राबा । भावए । शीरलोधाने वमन्वयो मन्त्रावै ॥ मन्त्राव ॥ सर्वखावे घामेकरो ॥ खखदन्तिवो । खखदन्तिवो । सर्वदेखे खमेकरो । सुक्तिप्रवस्थाभायो  
 नमपंतमन्त्रमन्त्राबाह । मन्त्राबाभाधारहित वस्तुवानी भभाव रोगरहित वनतर्षर्वविषयस्वरूपयको साठिप्रपयवसितवक्तो घनेरा  
 पुनरपि पावनाजहो योभापवतार नहोकरे । सिद्धगदनामधेय ॥ भाषजाधानो यति सकलधर्मेपूरा जिह्वी प्रमदनामजेहो

एनएरिषावबानहौ बोजापवतार नहोकरै । सिबगदनाभघेय । भासजावानौ गति सकसधयैपूर । विहौ पयदनामजेहगो

॥ ७ ॥ १८-२॥ रपूब्रह्मा त्पोर्बेमासी बभ्रुमरुहसवत् ब्रह्माग्रार्थं परेया मपीडाकारिस्थात् ॥ सिद्धिगहनामधेयंति ॥ सिध्यन्ति निष्ठितार्था प्रवन्ति यस्यां सा सिद्धिः साक्षासी गम्यमानत्वाः द्रुतिष्य सिद्धिगति स्तदव नामधेय आहस्तनाम यस्य तत्तथा ॥ ठावति ॥ तिष्ठति आगवस्थानमिष्यमकर्मोजायेन सदावस्थितो प्रवति यत्र तत्स्थान जीवकर्मको जीवस्य स्वरूप लोकायवा जीवस्य रूपविशेषाणि लोकायस्य आधयपत्माया साधारे ऽप्यारीया द्यवसयानि तदेवभूतं त्वानं ॥ सपाविठकासति ॥ यातुमना ननु तत्प्रतस्तत्प्राप्तस्याकारवत्त्वेन विवक्षितार्थाभा प्रकपठासम्भवात् प्राप्नुकामइतिच यदुच्यते तदुपचारा इत्यर्थाहि निरजिज्ञासायव प्रयवन्-कोवसिनो प्रवन्ति-मोक्षप्रवेबसवद्य निरपुहोमुनिसत्तम इतिवचनादिति ॥ जावसमासर ब्रति ॥ ताव द्गवहृबंको वाच्यी याव त्समवसरवं समवसरववववइति सब जगवहृबंकाएव ॥ पुपसोयगजिगतनेलककयपइठजमरगबनिद्विभिकुठव निबियकुचियपयारिबावत्तमुजिरय ॥ पुजमोबको रवविशोवो पुङ्गः कीटविशोय अङ्गारविशोयोवा मैलं नीलोधिकारः, कज्जल मयी, प्रहृष्टमरगवः प्रतीत, एतस्य ज्ञिगः कज्जलायो निकुठंकाः समूहो येषान्ते तथा तेच ते निबिताव्य निविष्ठा कुम्बिताय कुम्बलीजूता प्रदक्षिणावर्त्ताय नूदिं द्विरो जायस्य सतथा एव द्विरोजवर्त्तादिः ॥ रनुष्यसपत्तमठयसुङ्गमासकोमलतले ॥ इति पादतलवर्त्तकानाः शरीरवर्त्तको जगवतो वाच्यः, पादतलवि श्लेषकस्य चायमर्थः, रक्त सौहित मुत्पत्तपत्रव, त्कमलतलवत् सुकुमलार्ज्यं, दुङ्गमासना मध्ये कोमलं, तलं पादतल यस्य स तथा तस्या ॥ अठ सइस्सवरदुरिसलम्बवपरं आयासगएववकैव आगासगएववकैव आगासगयाहि चामराहि आगसकसिहामएवं सपायपीठेवं सीहासयेव ॥ आ कायस्त्रटिब मतिरुक्क स्त्रटिबविश्लेष तान्मयेन उपलभयतइतिगम्य ॥ यत्तसएवपुरठकहिज्जमावेवं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ अठइसहि समणसाइस्सी हि बतीसाय अम्बियासाइस्सीहि सद्विषयविबुळे ॥ साइस्सीसदः सहस्रपर्यायः सादं तव तथा विद्यामानतयापि सादंभितिस्या दत उच्यते सपरि

मप्युणरावसिय सिद्धगहनामधेय ठाणःसर्पाविक्रामे जाव समोसरण

॥ ठावसपाविठकाम ॥ आकाशकान केनोवनाकमचयगयाते जीवनाकान तिर्वाजानागेइच्छामत ॥ जावसमासर ॥ सापत्समासरचनावर्त्तकजिम व

मृतः परित्यजितइति, ॥ पुण्यालुपुष्टिपरमावे ॥ नयद्यानुपुष्यादिना ॥ ग्रामाखुगामदृष्टमावे ॥ ग्रामस्य प्रतीतो ॥ नुयामस्य तवभन्तरयामो ग्रामानुयाम  
 तन्मयं गच्छन् ॥ सुहं सुहं विहरमावे जेठेव रायगिरे चयरे जेठेव गुणसिलए चेइए तजेव उवागच्छइ उवागजिता अहापलिकय उगहं उगि  
 बइ उगिबिहता मजमेव तयसा अप्पावं प्रावेमाळ विहरइति ॥ समवसरवयवंकेष, समस्यस्य जगवटो अतेवासी वइये समबा जगवतो अप्येगइया  
 उगपवइयाइत्यादि ॥ माच्यादिवरको याच्य, खया अतुरगुमाराः क्षेयप्रवणतयो व्यातरा ज्योतिष्काः वीमानिका देवाद्य, भगवतः समीप मागच्छन्ता  
 यनयितव्याः ॥ परिमृगिगयति ॥ राजयहा द्राकादिसोको जगवतो वन्दनार्थे निर्गत सन्निर्गमयेवं ॥ तएवं रायगिरे उगरे विंयाळगतिगवउळव  
 वरउम्मुइमहापइयेमु थुङ्गको अकमस्यस्य एवमाइरइ, एवउन्तु देवाकुप्यिया समवे जगवं महावीर इइ गुणसिलए चेइए अहापलिकय उगहं  
 उगिबिहता मजमेव तयसा अप्पावं मावेमाळेविहरइ त सयं सन्तु तहाऊवावं अरइतावं जगवताच भाभगोयस्सविसवकयाए किमगपुष्य वदव  
 कमसगपायसिअहु धइयेउगाठगपुता ॥ इत्यादिवोच्यो याव जगवत नमस्यति पपुपासतेवेति एव राजनिर्गमो त पुरनिर्गमय तत्पपुपासना  
 नोपपातिकपट्टाच्या ॥ धम्मोवइठिठि ॥ धम्मकेवेइ जगवतो वाच्या सावेवं-तएव समवे जगव महावीरे सेइयस्स रळो विस्रसापमुहावयदेवीच ती  
 नेव महइमहासिमाय परिसाए सव्वजासापुगानिबीए सरस्सरेए धम्म परिकइइ तजइहा अत्थिलोए अत्थिअलोए । एव । जीवाअजीया धयेभोक्खे ॥ इ  
 त्यादि तथा ॥ जइानरगाम्मती जवेरयाजायवेयवापरएसारदीरमावसाइदुस्साइतिरिक्खओचीए ॥ इत्यादि ॥ पठिगयापरिसति ॥ लोकः स्वस्थान  
 नतः प्रतिगमय तस्या एवं वाच्यः ॥ तयउसाभइइमहालिया ॥ महय परिसा ॥ महति ॥ महती आलपप्रत्यपस्य स्वापिकत्वा दतिज्ञायातिथयगुह्वी  
 महस्यपत् प्रदाताप्रधानपपत् ॥ महापानावा सतपूजाना महाबावा परियत् महावपयदिति समस्यस्य जगधंमहावीरस्स अतिथ धम्म सो

### परिसाणिग्गया

'साविम्वया ॥ पर्यंका नारण वेठो चार देवनी चारदेवीनी चतुविधसव ॥ धम्मजसिचो ॥ भगवदेधमकछो ॥ तजइहा अत्थि



धाममम ३ तिकुसुमो ध्यायाद्विषयादिष्व पदरेह २ यददमसह २ एववयासी सुयवउएव धते । निम्मायेपाययेवे इत्येव अस्तेवेह  
 मयवेवा माहवेया परिसयममाद्विषय एवववता आमेवदिशिं पाठभूया तामेवविशिं पञ्जिगयति ॥ तेवमित्यादि ॥ तेनकासेन तेनसमयेन अम  
 वस्य प्रगवतो महावीरस्य ॥ जेहेति ॥ प्रथमः ॥ अतवाविति । धिष्य- धनेन पदद्वयेन तस्य सकलसङ्गनायकत्वमाह ॥ इंद्रपूयति ॥ इन्द्रपूयति ॥  
 ति भावपितृरुत नामयेय ॥ नामति ॥ विज्रिह्वपरिबामात् माधेत्यर्थः अन्तेवासी किं विववया भावकोऽपि स्यादित्यतआह ॥ अखगारेति ॥  
 नासागारं विद्यत इत्यनगरः अयम्बा १ वगीतगोत्रोऽपि स्यादित्यतआह ॥ गोयमगोत्रेवति ॥ गीतमखगोत्रइत्यर्थः, अयम्ब तत्त्वानोचितदेहना  
 नायेत्यन्यानापिउदेहोपि स्यादित्यतआह ॥ उतुस्सेहेति ॥ सतइस्तोऽय- अयम्ब सखइरीनोपि स्यादित्यतआह ॥ समवडरससठावउंठिएति ॥  
 मुनं नामे उपरि अयम सकलपुरुषतत्त्वोपेतावयवतयादुस्य तत्र तवतुरस्म्य प्रचाल समवतुरस्म्य अथवा समाः झरीरसखगोत्रमभावविषया  
 दिव्य द्यतलोअपो यस्य तत्त्वमवतुरस्मं अमपस्त्विव चतुदि भ्नागोपलक्षिताः झरीरावयवाइति अन्येत्वाहुः-समा अन्यूनूपिका द्यतलो अयमपो  
 यय तत्त्वमवतुरम अमयय पर्येकावनोपविष्टस्य आनुनो रन्तर आवनस्य ललाटोपरिजगस्य चान्तर दक्षिणस्त्वयस्य वामचानुन चान्तर वामस्त्वय

धम्मोकिहिं परिसापणिगया । तेणकालेण नेणसमएण समणस्सजगवठमहावीरस्स  
 जेहेस्थितेवासी इवमुत्तीणाम झुणगारे गोयमगोत्तेण सत्तुरसेहे समचउरससठाणसंठिए

नोए एवंओवा अमोअने इत्यादि । परिसापणिगया । पयदासंयधीषाव अवदेवेदो पीतामा आनकनेविदे गया । तेवकाठेव । तेवकाठेविदे  
 । तेवममएवं । तेसमवनेत्रिये । समवकमगवधो महावीरस्म । समवतपण्णो ऐधर्मादियवदुल्ल महावीरस्माओ ॥ जेहेपतेवासी । वडा समीपने विवरेव  
 चाराप्रवमयिष ॥ इदमूतीचाम ॥ इन्द्रमूति एवमुत्तीणामहेतिअने दोषोनामहेतिअने चररद्विव एतावतासामु । गोयमगोत्तेवं अखगारे ॥ गोयमनामा योवनो  
 परववहार । सत्तुरसेहे । सातवाककवो यरीरेवे जेवनो । समवउरससठावउंठिए । सखवपुषवयवसङ्गल सम ठल चारे अखइ जेवना एवमे समवउ

रयदतिब्रजानुन उपात्तरमिति अयमेकानु-विस्तारारसेषयोः समस्तात् समस्तानु सप्ततत् सप्ततत् संस्थानस्या कारः समचतुरस्त्रसंस्थान तन संस्थितो व्य  
 यन्विता यः मतया अयस्य श्रीमत्संज्ञकमन्त्रिणि स्यादित्यतश्चाह ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ इह सहनर्न अस्मिन्सम्बन्धयिषोय यज्जगदीना लक्षण  
 मिद-रिसुनायदोहपदा यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ उभयमककवर्चो कारायतवियाकाहिति ॥ १ ॥ तत्र यज्जगत् तत्कीमिका कीन्वितकारसमुटोपम  
 सामर्थ्ययक्तयात् ग्रामनय साहादिसपयहवदुकाग्रसमुटोपमसामर्थ्यान्वितस्या द्रव्ययत्न सवासी सारास्य उज्जयती मकटवन्निवदुकाग्रसमुटोपम  
 सामर्थ्यापतयात् यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 मत्र ग्रवर्तन्ति अयन्त्र निगद्यवर्चो वि स्यादित्यतश्चाह ॥ अयन्त्रपुलपनिपचपम्हनीरे ॥ फलकस्य सुवक्ष्य ॥ पुलगति ॥ यः पुलको सव सस्य योनि  
 कयः कपपद्वरगालस्यः तथा ॥ यज्जगति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 यातिमय स्तरमभानो यो जंक्रपो रेरा तस्य यत्पत्न यत्पत्न तद्द्वीरो यः मतया अयवा / कनकस्य यः पुलको हुतत्वसति विदु सस्य निमयो घ  
 मतः मृदुको य मतया ॥ यज्जगति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 न यिजिह्वरद्वितीयि स्यादित्यतश्चाह ॥ उग्र मप्रपूय तयो जगतामदि यस्ससयतया यद्वन्देन प्राकृतपुसा मप्रक्यते चिन्तयितु

### यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ उग्र मप्रपूय तयो जगतामदि यस्ससयतया यद्वन्देन प्राकृतपुसा मप्रक्यते चिन्तयितु

रग मंथाने भवितव्ये ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 मयद्वय एवमय यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 नदी कामरूपसे चीतव्या नवाय तपजे जगत् एवमय यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥ यज्जगद्विमुक्त्यकारायसपयकति ॥  
 नदी ॥ जेदेतेवेकरो कम तथावीयेते तत्तप कवीये ॥ मजातवे ॥ धार्यवादिदीयरहित तेभाटातप ॥ उरासे ॥ प्रधानतये

माय ॥ ५ ॥ अथा युक्तइत्यर्थः ॥ दिगातवेति ॥ दीप्तं आपवस्थभानदृग्भक्ष्यं कर्मवज्रगणदहनसमर्थतया व्यवहितं तपो धर्मेभ्यानादि यस्य सत  
पा ॥ तप्ततवेति ॥ तप्त तपो यन्मासी तप्ततया एव हि तेन तप्तपक्षत येन कर्मणि सन्ताप्यन्ते न तपसा स्वात्मापि तपो रूप सन्तापितो  
यतो न्यस्यास्यपयमिव ज्ञातमिति ॥ मञ्जातवेति ॥ आद्यासा दोषरहितत्वात् प्रजासतपाः ॥ उरासेति ॥ ग्रीभ उग्रविशिष्टोपश्विच्छिष्टतपः ॥ उरा  
त्पायुल्याना मण्यमत्त्वानां त्रयानकइत्यर्थः अन्यत्वायुः ॥ उरासेति । उदारः प्रबालः ॥ चोरो निपुणः ॥ यरीवहेन्द्रियादिरिपुगणविनाश  
माप्रित्य निद्वयइत्यर्थः अन्ये स्वात्मनिरेषं चोरमायुः ॥ चोरमायुः ॥ चोरो निपुणः ॥ यरीवहेन्द्रियादिरिपुगणविनाश  
चोरो तपोनि क्षापसीत्यर्थः ॥ चोरबर्धनचोरवासिति ॥ चोरं शक्यं मरणसत्त्वे दुर्दुष्टवरत्वा द्वाद्भक्ष्यये तत्र वस्तुं ग्रीभ यस्य सतपा ॥ उच्छूडसरीरेति ॥  
उच्छूडं उज्जित निर्वोक्तं क्षरीरं यत्न तत्वरकारत्यागा त्सतपा ॥ शक्तिविविक्ततेयसवेति ॥ शक्तिता शरीरान्तर्लभित्वेन ब्रह्मतापता वि  
पुला विसीमां धर्मेभ्यो जनप्रमाद्यैश्चाश्रितवस्तुष्वहनसमर्थत्वा तेजोलेखा विच्छिद्यतपोकल्पसम्पिधिविशेषप्रपञ्चा तेजोस्वाला यस्य सतपा मूलही  
नात्मातु ॥ उच्छूडसरीरवगितविपुलनेयमेवेति ॥ कर्मभारं कत्वा व्याख्यातमिति ॥ चतुर्दशपूर्यादि विद्यन्ते यस्य तेनैव तेषां रचि

वित्ततवे तप्ततवे महातवे उराले धोरे धोरगुणे धोरतवस्सी धो  
रयनधेरयासी उष्णुदसरीरे सास्त्रिधितलेउलेस्से षउइसपुष्ठी

पासळादि पण्यजीवने भयउपजे ॥ घारे ॥ निर्घनपरीपण इन्द्रियादिरिपुविनाशबाधनी निदय ते घारकडोवे ॥ घोरगवे ॥ घनेरेजीव आवरो मसबि प  
इया पाचारता मूकमुगळे जेवना ॥ भारतपळी ॥ भारतपैकरी तपळीचे ॥ घोरबभेरेवासी ॥ घोरदाऊनपनेरे पळसल जीवे भारता खोडिखो एका  
प्रप्रापनेविषे बमशाना मीन ॥ उच्छूठमरोरे ॥ गरीरनी भोगारहित खाडोवे देहनी युयूषा निष ॥ सविस्तविष्ठसंतयसेखे ॥ गरीरमाजिसकोबोवे घने  
बडाजनपमान चेबापितपमुदहनसमय ते शालेखाजिने एविमिष्टपको खपजे ॥ पणइमपळी ॥ उत्थावादि पणवे पूरता प्ररकार ॥ पणवावा

तत्त्वा दसौ ऋतुसपूर्वा अनेन तस्य ऋतुकोशसितामाह सचावधिष्ठानादिविक्तसोऽपि स्वादतथाह ॥ अठनाकोशमयति ॥ केयलप्रानवक्कप्रानवकुष  
ममन्वितइत्यर्थः उत्तविशेषबहुयुक्तोऽपि क्वचि न समप्रभुतविषयव्यापिष्ठानो प्रवति ऋतुद्वयपूर्वविहा यदस्यामक्षपतितत्वेन मववावित्यतथा  
इ ॥ अष्टस्वरसंक्रियाइति ॥ सर्वेष ते अष्टरसप्रियाताय तत्संयोगाः सर्वेषा वाचराखां समिपाताः सर्वाश्चरसप्रियाता स्नेमस्य ज्ञेयतया सन्ति स स  
र्वाष्टरसप्रियाती, अष्टाविवा अष्टवसुष्टकारोवि अष्टरावि सांगत्येन नितरा वदितुं प्रीक्षितस्येति अष्टाष्टरसमिवादी सप्त एवशुद्धविशिष्टो जगवाभू वि  
मयराक्षिरिक् साहादितिरुत्वा क्षिप्याचारत्वाच्च समस्तप्रगष्टमहाधीरस्व ॥ अष्टुरसार्मते विहरतीति योग सत्र दूरं च विप्रकटं सामभक्त्य सवि  
कट तन्निषेधाददूरसामस्तं तत्र नातिदूरे नातिनिष्ठ इत्यर्थः, निविचः सदात्र विहरतीत्यतथाह ॥ लब्ध्वाभुति ॥ लब्ध्वा भुजानी यस्या सावूर्ध्वानुः शु  
नुपुचिष्वाशनवर्धना दीपयद्विकनिपद्याया अजावा शोक्तुदुकासुनइत्यर्थः ॥ अष्टोविरेति ॥ अष्टोमुखो मोक्षे तिर्यग्वा विचित्रहृदिः क्षिन्तु नियतजू  
प्रागनिपमितदृष्टिरितिप्राहः ॥ आरुकोशोवमयति ॥ ध्यान धर्म्यं द्युल्लंघात तवेव कोष्ठं शुक्लसो ध्यानकोष्ठं सप्त मुपगत सत्र प्रविष्टो ध्यानकोष्ठोपगतो  
पचादि-कोष्ठे पाप्यं प्रक्षित मधिप्रसृतं प्रव स्येवं सप्रगवान् ध्यानतो ऽविप्रकीर्णप्रियाभक्त्यरुचक्षिरिति ॥ संजमेवति ॥ संजमेवति ॥ तवरेव ॥ तवरेवति ॥ अतश्चना

चउणाणोयगए सधुस्करसंगिवाती सुमणस्सजगयत्तमहावीरस्स  
धुदूरसामत्ते उहुजाणु झ्होसिरे ज्झाणवीठीवगए सजमेणतयसा

बनए ॥ श्रीवन्वानबल्लित चारवाननी धरद्वहार ॥ सबसरसविहार ॥ सबससुखकारी भस्वरनी सुमावे  
 करीने बहवाना मोनखे जइनी समवे ॥ समजसाभगवधामकात्रौरख ॥ समद भगवत श्रीमहावीरसामोने ॥ चदूरसामते ॥ मतिवेगखानकी पति  
 ॥ छावा जानवे जेइनी एतसै खड्डूपाभनवेडाखे ॥ प्रसीसिरे ॥ यथाकृष्टि भूमिमेविये ॥ यथापकीडावग ॥ धमभ्यान मुखाध्या  
 "यत पैठा जिस कीठामाहिवाजी धाम ठरकोपरकी वीरैरगही विस भाममाहिरवता इन्द्रियमनजाविकार पसरैवही ॥

विना ५०० त्वय्यार्पो मुनेः अद्रुष्टव्यः सयसतपोयद्वं ज्ञानयोः प्रधामयोऽङ्गाङ्गावयमापयार्थं प्रधाजयव्य सयमस्य मयकर्मोन्मुपादानहेतुस्वेन त  
यस्य पुरातनव्यभिचरवद्वतुल्य प्रवर्तिताभिनवकर्मोन्मुपादानात् पुराकर्मवयवकाश्च सकलकर्मवयवसत्ताकोमोददति ॥ अप्याजप्रविभाकेयिहरदति  
याम्नाने वामय सिद्धतीत्ययः ॥ ततत्वसेति ॥ ततो ध्यानबोद्धोपगतविहरानन्तर कर्मविविधविहराश्च ॥ सेदति ॥ प्रस्तुतपरामर्शार्थं स्तस्यसु वा  
माम्नास्त्वय विज्ञायावपरत्तायमाह ॥ प्रयवगोपमस्ति ॥ किमित्याह ॥ जायसन्नेहत्यादि ॥ जातश्रुदिविद्विज्ञोपव सन्नुनिष्ठतीतियोग स्तत्र ज्ञाता प्रवृत्ता  
भृगु इच्छा पश्यमाणापतस्यज्ञानमस्ति यस्यासौजातयु तया ज्ञातः संक्षयो यस्य स जातसत्राय सक्षयस्त्वनवधारितायंज्ञानं सर्वत्र तस्य प्रगवतो  
ज्ञातो प्रगवताश्च मन्नावीरेव जनमाश्रयित्वादी मूढे बलवये वसितोनिर्दिष्ट स्तत्र य एव यलम् एववसितइत्युक्त स्ततर्दीकायविवया वे  
तो निर्द्वयो ज्ञानमिति वर्तमानज्ञासविवयः वसितइतिज्ञा तीतकालविवयः ज्ञतोऽत्र सक्षय कथयाम यएवार्थोवममम सएवा तीतो प्रवर्तीति? वि  
रुदत्या दनयाः ज्ञातयोरिति तया ॥ जायकोद्वेजेति ॥ ज्ञात कुतूहलं यस्य सजातपुनइतो ज्ञातोत्सुक्यइत्यर्थं ज्ञय मेताम् पदार्थान् प्रगवा  
न् प्रवर्तयिष्यतीति तया ॥ उष्यवद्वदति ॥ तत्तया माननूवावती मृता प्रहायस्य सवत्पलसद्वः, ज्ञय ज्ञातसद्व इत्यतावदेवास्तु किमर्थं मुत्पन्न  
सद्व इत्यभिप्रायते प्रयुतयद्वत्वेन सौत्पलसद्वत्तस्य तत्तया कस्यमुपया सदा प्रवर्ततइति? ज्ञोष्यते हेतुत्वमदसंभार्यं, तयाहि—कथं प्रवृत्तसद्व

शुष्माण्नायेमाणे ग्रिहरद्व तपुण सेजगवगोयमे जायसद्वे जायससये सृजायकोउहसे उष्यससद्वे

॥ मन्मथरा मवाज्जमउपायेनो ॥ तदया ॥ तयेचरो पुणतनकम निकर एवका ओगीतमन्नामो ॥ अप्याचंयवेभावेविहर ॥ यामानिमावताव  
का दिचरे ॥ तपुणमेमममायम ॥ तिकारे ते भयवत गीतम ॥ जायसद्वे ॥ प्रवर्तीति यहा तत्तयाचयामी योहा जेहने ॥ जायससए ॥ प्रवर्तीति संसय  
ओमहाओरद्व' ज्ञानमनेषमिद' इहा वतमानकाल जने धर्मीतकाल मरोयोक्षिमन्नायमयम ॥ सजावकाउहसे ॥ प्रवर्तीति कर्ममुत्पन्नो जेहने ज्ञामी  
पश्यवकिनपतिवचारयमे एवमाउतायनो ॥ उष्यवद्व ॥ तत्तावउपयोवे यहाजेहने त्रिचकारण उग्रजीविनाप्रमर्तेनही ॥ उष्यवद्व ॥ ज्ञयमीति जेहने

उच्यते यत उत्पन्नमदुहति हेतुत्वप्रदर्शनं श्रीवितनेव वाक्यालङ्कारतया प्रस्य' यदाहुः--प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तज्वरतरा म्माकायपञ्चाम्बुधुवेविजाघरीम् ।  
इह यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा प्रवृत्तज्वरत्व प्रवृत्तदीपत्वादे ईतुयो यम्यस्तमिति ॥ उत्पन्नसंसर्ग उत्पन्नकोउह  
क्षेतिप्राग्वत् तथा सजायसन्देहस्यादि पदपद्वत् प्राग्वत्, भवर भिर समूहः प्रकृपादिवचनो यथा--सञ्जातधामोवससिद्धिभूत्या मामातृप्रजाभिः  
प्रतिमान्नाय । येन्द्रैद्युयंप्रकर्षेव कातेष्वाः कार्त्तवीर्यइति अन्येणु--आपसन्देहस्यादिविशेषेणद्वारादक्षय भव व्याख्याति आतामद्वायस्य प्रदु स आताम  
दुः क्षिमिति आतामद्वायस्य इह वस्त्वस्या देवेति अथ आतामद्वायस्य इह कथमित्यतश्चाह यस्मा ज्जातमुहल' कथंना  
मा स्याथ मवनीस्ये इत्यन्तिमायवामिति, एतच्च विशेषणत्रय मवद्यश्चापक्षया ब्रह्ममेव, नुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नप्रदुत्वाद्य ईहापायचारबाजेदेन  
वाच्या', अन्येत्वाहुः--आतामद्वायपेययो त्यक्कप्रदुत्वाद्यः समानार्थो विवक्षितार्थस्य प्रक्षयंप्रवृत्तिप्रादयाय क्षुतिमुक्षेप मन्वाक्षीक्षा, नचैव  
पुनरुक्तदीपाय, यदाह--वक्ष्याम्यंमयादिभि राक्षिमन्माःसुखंलयाभिवन् । यत्पदमसकृते तत्पुनरुक्तनदोपायेति ॥ १ ॥ उवाचउठेति ॥ उ  
त्थान मुत्वा छदै वतनं तथा उत्थया उत्तिष्ठति छर्द्धे भवति, उठेइत्युक्ते क्षियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वस्तु मुत्तिष्ठति, तत सहायवच्छे  
दायो न मुत्वायेति ॥ उवाचउठेति ॥ उपायज्जती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियायाः पूर्वकासताप्रिधानाय उत्थायोत्थामिति, ज्ञाप्रत्ययेन नि

### उत्पण्यससए उत्पण्यकोउहस्रे सजायससए सजायकोउहस्रे उठाएउठेत्ता

विशेष वेदने ॥ उत्पण्यकाउहस्रे ॥ उठेत्तावेकोत्तइकविमिवेदने ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥  
विशेषवी प्रवृत्तेः संदेहवेदने ॥ सजायकोउठेत्ता ॥ विशेषवी प्रवृत्तेः कोत्तइसवेदने ॥ सजायसहे ॥ विशेषवी सजायसहे ॥ सजायसहे ॥ सजायसहे ॥  
विशेषवी सजायसहे ॥ सजायकोउठेत्ता ॥ विशेषवी सजायसहे ॥ सजायकोउठेत्ता ॥ सजायकोउठेत्ता ॥ सजायकोउठेत्ता ॥ सजायकोउठेत्ता ॥  
-यैने सजायसहे ॥ वेदेवधमवेधमवमवाधौरे ॥ शिवा अमसमयवत श्रीमहावीरसामोहे ॥ तेषेवधवागज्जइधवागज्जइत्ता ॥ ति

दिगतीति ॥ अवेदेत्यदि ॥ इह प्रारुतप्रयोगा दय्यपत्त्याद्वा ॥ येनेति ॥ यस्मिन्नेव दिग्भागे समस्तो जगदान् महावीरो ब्रह्मते ॥ तेवेवति ॥ तस्मिन्नेव  
 दिग्भागे उपागच्छति, तत्कालापाहया यतोनामत्वा दगमनक्रियाया यतोनामविप्रलम्भाभिर्द्वयः कृत, उपागम्यथ समस्तं ॥ यस्मिन्  
 नापयं ॥ तिर्युक्ताति ॥ श्रीन् वारान् त्रि-कलाः ॥ आयादिकपयादिर्बकरेति ॥ आदित्वा इतिब्रह्मका वारज्य प्रदक्षिणः परितो व्याप्यतो इति  
 पण्य आदन्तिप्रदक्षिणो ऽत संकरोतीति ॥ ब्रह्मते वाचा स्मृतिरिति ॥ नमस्यति कायेन प्रथमति ॥ महासवेति ॥ न नैव  
 प्रत्यानयो ऽतिनिबद्धः अयमहपरिहरा आत्मासवेवा स्थाने ब्रह्मभान्ति गम्यम् ॥ नाहदूरेति ॥ न नैवा तिर्युरो ऽतिविप्रकृष्टो नीचित्यपरिहृ  
 रान् मातिदूरेवा स्थाने ॥ सुस्तुसमावेति ॥ जगद्व्यवधानि श्रोतु मिच्छन् ॥ अग्निमुहेति ॥ अग्निं जगद्वत् सतीकृत्य मुमुक्षुस्ये त्यग्निमुपुः, तथा ॥  
 त्रिपण्यति ॥ विमयेन हेतुना ॥ पञ्चमिश्रतेति ॥ प्रकृष्ट-प्रमाणो सत्तादृष्टपटितत्वेन अञ्जलि इत्यस्यासविष्टेयः कृतो विहितो येन सो ग्याहिता

जेनेयसमणेनगवमहावीरे तेनेयउवागच्छइ उवागच्छिज्ञा समणजगवमहावीर  
 तिरकुसोआयाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता वदइ जमसइ वदिज्ञा जमसिज्ञा  
 गज्जानयेण पातिदूरे सुस्तुसमाणे जमसमाणे अग्निमुहे विणएण पजळिउठे

श्रीपादे तिर्योपाधौने ॥ समस्तमममहावीर ॥ समस्त योगवत श्रीमहावीर स्थाप्यते ॥ तिर्युक्तापादादिपयादिबकरेश्वरेइत्ता ॥ तोनवार इदि  
 वे इवपञ्चो वारमो प्रदक्षिणा बउद्वेर करे करीने ॥ बंदइ ॥ श्रुतिकरे वपनेकरे ॥ नमसइ ॥ आवायेकरी नमस्कारकरे ॥ वंदित्ता ॥ वंदीने ॥ अर्चयि  
 ता ॥ नमस्कारकरीने ॥ नवावचे ॥ अविद्यासबहुंब्रह्मभौ ॥ पातिदूरे ॥ अतिदूर वेगकापयि भौ ॥ मुमुक्षुवमावे ॥ भगवत श्रीमहावीरस्वामीनां व  
 र्जमोमसया ब्रह्मता ॥ समस्तमावे ॥ नमस्कारकर्ता ॥ अग्निमुहे ॥ भगवतदिग्गे मुचकरी ॥ विमयेन ॥ विमयसो आयातनाटाब्रह्मताबका ॥ पञ्चदि  
 गे ॥ वापमोभमावेजगाओ ॥ पञ्चुपासमावे ॥ विगाकरनामका अग्निवेपवेसोभवाभौ विदित्करो ॥ एनववाओ ॥ इत्येकवयावका ॥ वेपुचभते ॥ तेनेये

दिदधाना तस्मात्प्रसिद्धा ॥ पर्युपासीतः सेवमानो ज्ञेयस्य विशेषकदेश्वक्षेपे भवत्येति विरुपदक्षित आश्चर्य-विद्विगिगहापरि  
 यन्त्रिणोरेणुतेदिपत्रितोरेहि ॥ प्रतिपद्युभाषणुष उवतत्तर्हि सुवेयवति ॥ १ ॥ एवययासिति ॥ एव वक्ष्यमात्रप्रकार वस्तु भवादी युक्तवान् ॥ से  
 इति ॥ तत् यदुक्तं पूर्वैः स्वतन्त्रतितमित्यादि ॥ ब्रूयति ॥ एव मर्त्यं तत्र तथा स्येवव्याख्यातत्वात्, अथवा से इति श्रुते मागपदेशीप्रसिद्धो ऽथवा  
 शार्चं वर्तते, अथश्रुतं वास्तोपन्यासात्, परिप्रसार्थत्वात् यदाह-अथप्रकियाप्रज्ञानतर्कमूलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयः, ॥ नूनमिति भिद्यति  
 व्रतति ॥ मुरो रामरत्नव ततश्च ईमदन्तः ॥ कस्याकृप सुखसकृपेति वा प्रविज्ज्वायेषुकेवेतिवचना त्प्राकृतसंज्ञेत्वात् मवस्य सुसारस्य प्रपस्यवा भी  
 त रत्नहनुत्या प्रवान्तो भयान्तोबाः तस्यामन्त्रवर्णं, इजवास्तः ॥ ईमयास्तः ॥ ज्ञानादिदिप्यमान प्रादीसावितिवचनात्, व्याजमाना वाः दी  
 प्यमान प्राकृदीसावितिवचनात्, अथवा आदित आरज्य जनेति पर्येग्तो यन्यो जगवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गस्य प्रथमशतस्य प्रथमोद्देशक  
 स्य स्वभावात् न निश्चितः, अथा नेमसम्बन्धना यातस्य पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्ये इमादिमुक्तम् ॥ अतमावेभलियइत्यादि ॥ अथ ज्ञेयमिमा  
 येव प्रयवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्या धर्मानुक्षणं कुर्वते वमथवाचकं सूत्रं सुपन्थतं नान्यामीति ॥ अत्रोच्यते इह चतुर्षु  
 पुरुषार्थेषु मोक्षारत्यःपुत्रपार्थी मुख्यः सर्वातिशायित्वात्, तस्यैव मोक्षस्यवाच्यस्य साधनानां च सम्यग्दृष्टानादीना साधनत्वेना व्यभिचारिका नून

### पञ्चवासमाणे एववथासी सेणजनेते चलमाणे चलिणु ३

देहमनन्त्रावरूपं सु इक्षरूप एहो मुरना धर्मवच सवच आचवा, अथ परावको योसुधर्मासासीवे “वसमावेवसिए” एहवोमन्द सूत्रनी आदि वा  
 आचनेरामन्द आदिन्यासा इमपूजा ? उत्तर, पुरुषार्थं विद्वन्महि मुख्य मोक्ष, तेजनी साधवो सार तेतो कममेचये उपपद्ये ते कमगाचयताः प्रमुक्तम वा  
 दिनामर्चो एवर्धमवाप्ता तेववेदे “वसमावेवसिए” वसमावेवसिजे जेजमरापको क्तिवको वसवामाथा भोयवा सगमुचयया तेवमवसिएकविजे  
 ॥

पञ्चावको भोगवचकाश्च असस्तावसमयसर्गेवे तिहजि यहिसो पसमसमव तेहनेविवे पसवामांथो तेवसोक्कवीयेजि



यनियमस्य प्रवृत्ताः चन्द्रि रियते, उन्नयनियमस्तेष्वेव सम्यक्पूर्वार्थनादीनि मोक्षस्यैव साध्यस्य साधनानि नाप्यस्या ग्रंथस्य, मोक्षस्य तेपाभेदसाधनाया साध्यो नाभ्येयानिमिति, सच मोक्षो विपक्षकया तद्विपक्षकया यत्र सचमुक्त्यः कर्माणि रात्मनः सम्बन्धं सोपातु कर्मणां प्रत्यये यमनृकस्य सप्तः वसमावेष्ट्यादि ॥ तत्र ॥ वसमावेष्टि ॥ वसत् स्थितिकया दुरूप सागच्छत्, विपाकाभिमुखीभव द्युत्कर्मेति प्रकरकगम्यम् तद्वसित मुदितमिति व्यपदिश्यते वसनाकासो द्वाद्वावसिका तस्यच कातस्या सङ्केयसमयत्वा दादिसध्यान्तयोगित्व कर्मपुद्गलाभा भव्यनन्ताः स्वन्या भ्रमन्तप्रदेष्टा सततव ते कनेव प्रतिबन्धमनेव वसन्ति तत्र योसा द्वाद्वावसमय सस्मि स्वदेव तद्वसित मुच्यत कथपुन कर्तुर्मानव इतीति प्रवती ? त्यजोक्त - यथा- पठ उत्पद्यमानत्वात् प्रथमतस्तुप्रवेष्टो उत्पद्यमानत्वो त्यजोक्ततीति उत्पद्यमानत्वात् तस्य प्रथमतस्तुप्रवेष्टकात्वा द्वाद्वाव्य पठ उत्पद्यत इत्येव व्यपदेशद्वर्धना त्मच्छिदुमेवो त्यकत्व तूपपत्त्याप्रसाध्यते तथाहि-उत्पत्तिक्रियाकात्सत्य प्रथमतस्तुप्रवेष्टो साधुत्यको यदि पुन

नोत्पन्नोभविय तदा तस्याः क्रियाया वैपथ्यमभविय विष्णुत्वात्वा दुत्पाद्योत्पादनायां हि क्रियाप्रवन्ति, यथाच प्रथमेक्रियाद्वे नासाधुत्यक साधो तरेद्यपि द्वे धनुत्यक्यवावी प्राप्नोति क्षोभुत्तररक्षकक्रियाका नात्मनि रूपविद्येयो येन प्रथमसमये नोत्पन्न साधुत्तरानिदुत्पाद्यते अतः सर्वदेवा नुत्पत्तिप्रसङ्गः दृष्टाचोत्पत्ति रन्त्यतस्तुप्रवेष्टो पठस्य दूर्ध्वनात् अतः प्रथमतस्तुप्रवेष्टकात्सत्य किञ्चिदुत्पन्न पठस्य यावन्नोत्पन्न नतदुत्तरक्रिययोत्पाद्यते यदि पुनकत्पाद्येत तदा तदेकदेवो त्पादनस्य विपाकां कासानाञ्च द्वयः स्यात्, यद्विहि तदधीत्यादननिरपेक्षा न्याः क्रिया प्रवन्ति तदोत्तराङ्गानुक्रमकं मुन्नेत नाभ्यया, तदेव यथा पठ उत्पद्यमान एवोत्पन्न सार्थवा सार्येयसमयपरिमादत्वा दुदयावसिकाया ध्यादिसमया त्पद्यति वसदेव कर्मवसित, कथ यतो यदिहि-तत्कर्मवसितानिमुखीभूत मुदयावसिकाया ध्यादिसमयस्य नवसितं स्या तदा तस्या द्यस्य वसनसमयस्य वैपथ्यस्या तत्रा वसितत्वात् यथाच तस्मिन् समये नवसित तथा द्वितीयादिसमयेद्यपि नवसेत् कोहि तेपा मात्मनि रूपविद्येयो

पम प्रथमसमये मन्त्रित मन्त्रेणु वसतीति १ अतः सर्वदेवा वसन्तप्रसङ्गः, अस्ति चान्त्ये समये वसन्त त्वितिपरिमितत्वेन कर्माज्जावान्युपगमात्  
 अत आवासिकाकालादि समयएव किञ्चिदस्ति यच्च तस्मिन् वसतिं वसतिं तन्मन्त्रेणु समयेषु वसति, यदितु तेवपि तदेवाद्य वसन्त मये अवा तस्मि  
 श्वेव वसन्ते सर्वेषा मुद्रयावत्किञ्चलनसमयानां अयः स्यात्, यदिहि तत् समयवसन्तनिरपेक्षावन्त्यसमयवसन्तानि प्रवर्तन्ति तदो तत्रवसन्तानुक्रमेण  
 मुन्येत नान्यथा, तद्वत् वसन्तयि तत्त्वार्थवसितमवतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमावेउदीरियसि ॥ उदीरिज्जमावेउदीरियसि चिरेखा गामिना  
 कालेन यद्वेदितस्य कर्मेदितस्य तस्य विविष्टा अवसायसङ्कलेन करवेना अयोदयेप्रवेपथं, साया सङ्केयसमयवर्तिनी तथाच पुनरुदीरकया उदीर  
 का प्रथमसमयएवो दीर्यमात्रं कर्म्म पूर्वोच्यपट्टदृष्टान्तेनो दीरित स्मवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेदज्जमावेवेदियसि ॥ वेदज्ज कर्म्मको जोगो ऽनुजव  
 इत्यर्थं, एतच्च वेदम स्थितिसया दुदयमासस्य कर्म्मच उदीरिज्जकारणेन जोदय मुपनीतस्य प्रवर्ति, तस्यच वेदनाकालस्या सङ्केयसमयत्वा दायसमये  
 वेदयमानमेव वेदित स्मवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पहेज्जमावेपहीरसि ॥ प्रहावेतु जोवप्रदेहीः सच्च सन्निष्टस्य कर्म्मच स्रोतः पतन, एतदप्यसंख्येयसमय  
 परिचाकमेव तस्यतु प्रहाकस्या विसमये प्रहीममात्रं कर्म्म प्रहीवं स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ विज्जमावेविज्जसि ॥ वेदज्ज तु कर्म्मको दीर्यकालागा

### उदीरिज्जमाये उदीरिए २ वेदज्जमायेवेदिए ३ पहेज्जमाये पहीणे ४

म कपका वृषते जेवहि तत्तु गुष्ठा तेनुष्ठाजकहीवे पडिवाततुनीपेचावे एपिबवाचं ॥ १ ॥ उदीरिज्जमाये उदीरिए ॥ जेकम उदवचाजानवो यवे अ  
 मारो काले वेदजे तेवकमल युभाज्यशयायकयदीकरो पारकर्म्मो उदेपारहीवे तेउदीरिज्जमायेवे तें अस्सजातिसमये वत्तें ते तिचे उदीरिज्जमायेकरो प्रबमसम  
 य जे उदीरिज्जमाया कर्म्म ते उदीरिज्जमायेवे तें प्रबमसमयभीपेचावे पूणकही वज्जनाहटीत तिचनीपरे जाचको ॥ २ ॥ वेदज्जमायेवेदिए ॥ उदाकमनी  
 भोगवा पनभमदरअच्च; ते असंख्यातसमयसीमबर्णे तिहा प्रबमसमये वेदज्जमायावे तें जेकम तेवेवोण कहीये प्रबमसमयभीपेचावे पूणकही वज्जनाहटीत ते  
 तथा जोवप्रदेयसहितमिज्जो कम तेहको जोवप्रदेयकको पतनते पुच असंख्यातसमयेवत्तें तिहा प्रबमसमये प्रहीवमा

स्थितीना इस्तताकरं तदापक्षेनास्तिबाणेन करबविद्येयेब करोति, तदपिब ष्ठेवममसस्यसंयसंयमेव तस्य स्वादिसंयमे स्थितित श्चिद्यमान कम्म  
 च्चिद्यमिति ॥ ५ ॥ तथा ॥ त्रिज्जमावेभिसेति ॥ अेदसु कम्मब भुजस्या भुजस्या तीप्ररसस्या पवतताकरयेन मन्दस्य पोदुतना  
 करणेन तीत्रता करब सो,पिबा संस्येयसमयएव, ततब तदाद्यासमय रसतो जिद्यमान कम्मसिक्कमिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ ठक्कमायेवुठ्ठति ॥ दाइ  
 सु कम्मसिक्कदाइवां ध्यानाभिजा तदूपापणपण कम्ममेत्थअनमित्यर्थं तथाहि—ठागुस्या गिना दग्गस्य कागुठुपापणपण प्रस्मात्तमाच प्रव  
 न दाइ सादा कम्मंबोऽपीति, तस्या प्यत्तामुदुत्तवत्तित्वेना संस्येयसमयस्पादिसंयमे दद्यामानदग्गमिति ॥ ३ ॥ तथा ॥ मिज्जमायेमेठ्ठेति ॥ जिय  
 माब मायुःकन वृत्तमितिव्यपविहपते, मरब ह्यायुःपुट्ठानाअप सता संस्येयसमयवर्त्तितं जवति तस्यब कम्मना प्रयमसमया दादज्यावीचिकमरवे  
 ना नुचवं मरबस्यजावा च्चियमाब वृत्तमिति ॥ २ ॥ तथा ॥ च्चिज्जरिज्जमावेविच्छिसेति ॥ मिळीपमाबं वित्तरा मपुनप्रावेन सीयमाबहुम्मनिज्जीय

### त्रिज्जमाणेविसे ५ जिज्जमाणेजिसे वज्जमाणेदेहे ७ मिज्जमाणेमहे ८ जिज्जरिज्जामाणेणिज्जिसे ९

नकम ते प्रवीच जवतां प्रवेज्जाकडीवे पूर्वोत्त वज्जहतां तेहनीपरे ॥ १ ॥ च्चिज्जमावेविसे ॥ तथा ष्ठेदमकवतां दीघवासाजितिककम्मनो इज्जवासाकरिवो  
 ते अपवत्तननामकरबविसेये करी करे तेपचिदेदनअसंज्जातेसमयेवर्त्ते तेहनेपचिसे समयेकित्तिकवो जेयमान जेयाकडीवे ॥ १ ॥ मिज्जमावेमिसे ॥ तथा  
 भेइकडिये यमनो पक्कवा पक्कम कम्मना भेइको तीप्ररसनेअपवत्तनाकरबेकरो मइपवे करवो मंदरसने सज्जतनाकरबेकरो दीप्ररसकरवो ते पचि पसंज्जा  
 तसमवे वर्त्ततिबां पचिसेसमवे रसवो मिद्यमानकम मयोवचिसे ॥ १ ॥ कव्वमाणेदेहे ॥ तथा दाइकडिये कम्मकपियाकाठनो ध्यानाब्धियेकरो तदूय अपमपन  
 पक्कमपचीकरिवा जिम काष्ठपचिइको बाज्जा तेमज्जपू तिम कम्मने पचि ते पचि पसज्जातसमवे वर्त्ते तेपचिसे समये वासवा मोषा कम्मतेनाचो करी  
 से पवपट इटां ॥ ७ ॥ मिज्जमावेमहे ॥ तथा मरबकडिये पाज्जवापणपण पय जे मरवाआप्या ते मयोवचिसे तेपचि पसज्जातसमयेवर्त्ते तेहना  
 प्रचभा प्रबमममदको पारभो चानोचिमरवेकरो प्रविचमरवना भावबको मरवाभाया ते मया पूर्वोत्त पटइटां ॥ ८ ॥ च्चिज्जरिज्जमावेविच्छिसे ॥

लीकमिति व्यपदिश्यते निजरसस्या सक्येयसमयज्ञावित्येव तत्प्रथमसमयएव पटनिष्पत्तिदुष्टान्तेन निष्क्रीयत्वस्थो पपद्यामानत्वादिति, पटदुष्टान्तव  
 सवपदेपु सुभावनिकोवाच्यः ॥ ६ ॥ तदेव मेताव्यप्रज्ञान् गीतमेनप्रवृत्ता जनवान् मन्वावीरः पृष्ठः सुखाय ॥ इतेत्यादि ॥ अथकस्मा ङ्गवन्तं गीतमः  
 पृच्छति? विरचितद्वादगाङ्गुत्या विवितसकलभुतविषयत्वेन निश्चितसङ्गत्यातीतत्वेन च सर्वोच्चकस्यत्वा तस्य, आह-सुखार्हेत्यत्र सर्वे साहचर्यं वाप  
 रोऽपुष्पेजाः । अथअथवाहवेवी विषयवर्देयसङ्गतमत्योक्तिः ॥ १ ॥ नैव मुक्तगुणत्वयि शब्दस्थतया नाजोगसम्भवात् यदाह-नहिनामानामोगः ख  
 द्यस्त्वदेवत्वचिक्वास्ति । मत्सत्त्वानांतरत्वे ज्ञानावरणप्रलुतिकर्मति ॥ १ ॥ अथवाऽऽनतएव तस्यप्रज्ञाः समवाति, स्वकीयबोधसवादनायं मन्वालो  
 कज्ञोचनार्थं श्रियायां वा स्ववचि प्रत्ययोत्पादनार्थं सुदूरचणाकस्यस्यवादनायैवेति, तच्च ॥ इतागोयमेति ॥ इतइति कोमलामप्रकाशो दीर्घत्वंच  
 मानचदेवमीप्रव मुक्तयद्यपि, वक्तव्येइत्यादेः प्रत्युसारबन्तु बसदेव वस्ति नित्यादीना स्थापुनतत्वप्रदर्शनार्थं, वङ्गाः पुनराहु-इतागोयमाइत्य  
 व इतइति, एवमेतदि त्वप्युपगमवचन यदनुमत तत्प्रदर्शनार्थं अक्षमावेइत्यादि प्रत्युसारितमिति, इह यावत्करकनभ्यानि पदानि सुप्रती  
 तान्येव, एव मेतानि नवपदानि कर्मोचिस्त्व्य वगैरानातीतकासकामानापिकरस्यजिज्ञासया पृष्टानि निर्योतानिच, अथे तान्येव वक्तव्यदीनि प  
 ररपरतः किं नुस्वाधार्थानि निवार्थानि वति? पृष्ठां निर्येयव दर्शयितुमाह ॥ एवइत्यन्ते ॥ इत्यादिष्वप्य नवरन् ॥ एगवति ॥ एकार्या न्यनन्यवि

### इतागोयमा चलमाणेष्विष्टावणिज्जारिज्जमाणेणिज्जिद्ये एगुणजतेनवपदाकिंगुठा

तथा लीशपदेप्रवचो वन्म निजरवामासी वैमलावरवामाया ते वमनिजरा वगलाकोषो कर्षीये तेष्वि चसक्यातसमभवावौद्धे, प्रथमसमवनो अपेक्षावे  
 सेनो पूर्वोक्तपठ इति ए वल्लहदांत नवेरपदे जाचनो ॥ ८ ॥ इति गीतमेपुष्पा? भगवते वाष्वा ॥ इतागायमा ॥ पक्षमावेवसिए जावचिक्वरिक्वमावे  
 विम्विचे ॥ इत इहा कोमलामप्रवे, पक्षमा इत कर्षता वेगीतम वे अथ इमहीच पक्षमावेवसिए, वाळवामाधो ते वाष्वाजवदेदे यावत् निजरवामो  
 योते निजराजवहीदे, यहीगीतमकडे एमवगतनवकर्मधधिकारोने वक्तमानपतीतवाचसयमानाधिकरचपुष्पा तेनिजवकोषा पत्ति ॥ एवमंतेनवपदाकि

पयादि मन्त्रयोजनानिवा ॥ माहापोसति ॥ इह योपा उदात्तादयः ॥ माहावज्येति ॥ इह व्यजना न्यरासि ॥ उदाहो निपातो  
 विस्तरार्थः ॥ नावठति ॥ निव्राप्रियेयानि, इहय वतुर्मेपयेषु हृष्टा, तत्रच कामिदि देवार्थो न्येकव्यजनानि यथा वीरवीरमित्यादीनि ॥ १ ॥  
 तथा म्यानि एकाध्यानि ज्ञानाध्ययनानि, यथावीरं प्रय इत्यादीनि ॥ २ ॥ तथा नेकार्थो न्येकव्यज्जनानि, यथा कर्णव्यमादिपाणि वीराणि ॥ ३ ॥  
 तथा म्यानि नामाध्यानि ज्ञानाध्ययनानि, यथा पटपटसकुटादीनि ॥ ४ ॥ तदेव वतुर्मेपियेपि द्वितीयवतुर्पञ्चमी प्रसूत्रे गृहीतो परिदृश्य  
 माननात्याज्जनतया तदस्यो रसभवात् निर्वेकवसूत्रेण चत्वारिपदा म्यामित्य द्वितीया, सिद्धमानादीनि तु यज्यपदान्यामित्य वतुय  
 इति, ननु चस्तितादीना मर्धानां व्यक्तप्रेतत्वा त्वय माद्यानि चत्वारि यदा न्येकार्थोनी ? त्याज्ज्या ॥ उच्यते कसस्सुति ॥ उत्पद्य मुत्पादो ज्ञावे

### पाणाधीसा पाणावजया उदाहृता पाण्डा

एयहा बाबापासा । हेमवतन् एवमपदस्य एवमा एव चक्रे, एकप्रयोजनहे पापगन्ध इहावदात्त प्रमुदात्त स्मरित एमन्द मान्वात्त बाबवा उदाहृ  
 क्यतेवृदावशहे, बाबा तेदनां कुदा२ कवचा व्यजनहे । उदाहृ निपात विकल्पावेहे एतत्ते चकचा बाबहा मानाप्रकारनां प्रयच्छे । बाबा ना  
 मानकारना या उदार, वा नानाप्रकारतो न व्यजनपञ्चर इहा चतुस्रो वीरवो वि एकग्रह एकपञ्च एकव्यजन विमचीरवीर इत्यादि १ तथा  
 एकपञ्च पनेकव्यजन तथा वीरपञ्च इत्यादि २ तथा अनेक पञ्च एकव्यजन तथा वीर मङ्गिनीनां वीर ३ तद्वानाया पञ्च मानाव्यजन तथा वट  
 पटादि ४ इहा चतुस्रोनां संयच्छहे तीपवि वीकी वीकीमागी पञ्चो, वीणादीरमायाता अरुमवकको एषुचनेविदे चकनादि चारपद धायी वीकीमागी  
 पनेविबिज्जमावे इत्यादि पञ्चपञ्चात्री वीकीमागी वीरवो ॥ मगलतकहे हेयोतम न चकवामाद्युं तेकम चर्चकद्विये एयद्विष्टो १ ॥ ४ उदीरवा मो  
 द्युं तेकम उदीरिवीकहीने एयीको २ ॥ तथा वि वेदवामाद्यो तेकम वेयुंकद्विये एयीको ॥ कर्महीनवावामाद्युं तेकम प हीनवयु कहीने एयीको  
 ॥ ५ ए एह पञ्च चारिपद ए एकावकाववा । एहीनो एकचक्रे, वा अनेक प्रचारनां वी वीय उदात्तादिव तदा वा मानाप्रकारना न व्यजन

अग्रस्ययविषानात् तस्य पक्षः परिपक्षो ग्रीकारः पक्षपरिपक्ष इति चानुपाठादिति, उत्पन्न पक्ष इव पक्षग्रा श्रुतीयाचत्वा तुल्यकपक्षेव उत्पन्ना ग्रीकारेव उत्पादात्यं पर्यायं परिपक्षो कार्या भवेता मुच्यन्ते अथवा उत्पन्नपक्षस्य उत्पादात्यवस्तुविकल्पस्या त्रिभाष्यानी तिलोपः, सर्वेषा मे पा मुत्पाद माश्रित्यै कार्यकारित्वा ऐक्यान्तर्मुक्तमप्यजाविस्त्वन तुल्यकालत्वा ऐक्यार्थिकत्वं मितिभावः, स पुन उत्पादात्यः पर्यायो विधिः केव सोत्पादएव, यतः कमचिन्नायाङ्गुर्मन्त्रः प्रहाये फलसङ्ख्यं कवलाङ्गमनोद्वारासी, तत्रैतानि यद्वानि केवलसोत्पादविषयत्वा ऐकार्याङ्गुत्तानि, यस्मात् कवलाङ्गमपर्यायो जीवेन न कदाचिदपि प्राप्तपूर्वो यस्माच्च प्रचलनं कृतं सतदर्थेयं पुरुषप्रयासं सस्मात्स एव केवलज्ञानोत्पत्तिपर्यायो मुपपन्नः, एषा न्य पदान्तमेकार्थानामपि सत्ता सयमर्थः सामर्थ्यप्रतिपत्तिर्भावे यदुक्तं पूर्वं लक्ष्यति उदेतीत्यर्थः उदितं च वेद्यते अमुपपन्न इत्यप तच्च द्विषा स्थितिकया दुदयप्राप्तं सुदीरकया बोदयमुपनीतं ततश्च मुनवानन्तर तत्प्रहीयत वतलत्वा ल्मीवा दपयतीत्यर्थं एतच्च टीकाकारमतेन व्याख्या त न मयेतु व्याख्यानि स्थितिधर्माद्यविवक्षितसामान्यकर्मोभयत्वा ऐकार्यिका ज्येतानि केवलसोत्पादपक्षरूपं साचकानीति चत्वारि चलनादीनि प दा न्येकार्यिकानीं त्युक्ते ज्ञेया स्यमेकार्यिकानीति सामर्थ्यावयवतमपि सुखावबोधाय साक्षा त्प्रतिपादयितुमाह ॥ विज्ञानमात्रे इत्यादि ॥ व्याख नव

पाणाद्योसा पाणावजणा । गोयमा । चलमाणेचलिगु उदी  
 रिजमाणेउदीरिगु वेहजमाणेवेहगु पहेजमाणेपहीणे एगुण  
 चक्षारिपया एगठा पाणाद्योसा पाणावजणा उप्यक्षपस्कस्स

ते अथर चलनादिव पदमे अथ अन्तर्भेदकौ विम परिषा चारिपद एकार्यिकज्ञा इतो पाणकाये बहेवे ॥ उप्यक्षपस्कस्स्येति वसमात्रेचलिगु इत्यादि  
 अरिपद कत्वादपदे यत्ते लिखकारच इहाविनाशकौ तेकत्वाद्यनामपर्यायविधेय केवलसत्त्वाद् हीन ऐकार्यकौ कर्मचितानेवियै कर्मने अयचुवे यश  
 चान् एवकेवलज्ञान बोधामोच, तिहांएचारिपद केवलसत्त्वादविवक्षकौ एकार्यं ज्ञाना, ऐकार्ये केवलज्ञान पर्यायजोवे पक्षिसेविपरि पाप्माननो अ

[illegible]

विज्ञानाणिविषये निज्ञानाणेत्रिया दक्षमाणेदहे मिज्ञमाणेमए णिज्जरिज्ञाना

नेत्रेण्यन्तान् प्रवान् वमी नीरान् प्रवासयन्ति चेन्नमप्राप्तमिति चेन्न तेनारवयो तेषिण येनसप्तानोत्पत्तिं पर्यावक्यो । जेवमपश्चिओ तेपये जेवज्जो ते  
उदरापादे पने उदसपाप्पा ते देवीये पनुभविये इत्थस । तेवेज्जत्तिकियववकी उदीरवारोक्करो उदयथावो ते पनुभव्यापादे प्रचोवद्वाय, तेमाटे उत्पाद  
पये एवात्तिपएकायक्या । यवदा द्वितिरंधादि पविशियेयित मामान्वक्तस पात्रयववो एवावणे जेवमोत्पादपपनी साधवडे ते उत्पदपये जमभित्ता  
ये तेइन् प्रचोवपन् तेइयो ॥ डि एवमेविये क्षितिनोवियमक्या । तथा भि एवा एवमोवियमक्या । ए० इहाकमवाइरूप विजमक्यो भि

पदे पुनस्तत्र मरण मर्त्यं सर्वकर्मफलसङ्घटितं भववशहेतुजन्तुमिति वियथितमिति । तथा निष्कर्मोपायनिष्कर्षमिति तत्पदं सर्वकर्माज्ञायविषयं य  
तः सर्वकर्मनिष्कर्षं न कदाचिद् व्यनुजतपूर्वं जीवेनिति श्रुतौ ज्ञेयं सर्वकर्माज्ञायरूपनिष्कर्षकार्येण पूर्वपदेभ्यो मित्कार्येणा द्विकार्यं पदं जवति अ  
पेतानि पदानि विशेषतो भागार्थान्यपि सन्ति सामान्यतः कस्यपक्षस्या त्रिषायकतया प्रयुक्तानी १ तस्या मासङ्कायामाह ॥ विगयपक्षस्तस्मिन् ॥  
विगतं विगमो वस्तुभो गत्यन्तरायेद्यद्विनाशः 'सद्यः पक्षो वस्तुधर्मं सास्यवापदाः परियहो विगतपक्षः सास्य विगतपक्षस्य यावत्कालीतिशेषः, विगत  
स्थिवा सेवकर्मोपज्ञादो त्रिमितौ जीवेन तस्या प्राप्तपूर्वतया त्वन्तमुपादेयत्वा तदर्थेस्थाप्य पुन्यप्रयासस्येति, एतानि चैव विगमाद्यनि जवन्ति, स्थिवा  
नामपदेहि स्थितिरुक्तं विगम उक्तो, निद्यमानपदे स्वपुत्रावतदो विगमो, दृष्टमानपदे स्वकर्मताजवन विगमो, वियमाद्यपदे पुन रायु कर्माज्ञावो  
विगमो, निष्कर्षमाद्यपदे स्वोपकर्माज्ञावो विगमउक्त, सादेव सेतानि विगतपक्षस्य प्रतिपादकानी तुल्यन्ते एवम् यत्पञ्चमाङ्गादिवृत्रोपपत्त्यावे प्रेरित  
यदुत सेनाभिप्रायेवेद सूत्र मुपपत्त्यमिति ? तत्केवलद्वानोत्यादसर्वकर्मविगमाभिप्रायरूपपुत्राभिप्रायव्याख्यानेन निर्वातमिति, एतत्सूत्रस्यवादि  
सिद्धसेनाचार्योप्याह-उपपत्त्यामाद्यकालं उपपत्त्यविगययवियच्छतं । इवियपक्षवयतो तिकासविषयविसेवेति ॥ १ ॥ उत्पद्यमानकालमित्यनेन आद्य  
समया दारभ्यो तत्पन्तसमयं याव दुत्पद्यमानत्वस्ये इत्या दूर्तमानप्रविश्यात्साविषयं द्रव्यं मुक्तं, मुत्पन्न मित्यनेन तु अतीतकालविषय, मेव वि  
गतं विगच्छादि त्वनेनापीति ततश्चो एवद्यमानादिप्रज्ञापयन् सजगवान् द्रव्यं विशेषयति अथ त्रिकासविषय यथा सवतीति सवाहगाथाय 'अन्त्येतु

### पेणिजिज्ञे एणपचपदा गाणठा गाणाधोसा गाणावजणा धिगायपस्तस्स

इहं आबुद्धमथा समावददितम ॥ तदा विज्जरिज्जभावे इहोसर्वकर्मना विगमकक्षा इहेकारेवे विगतपक्षे एकक्षा ॥ ए एह पं पावे इ पदने  
यावहा नातापचपक्षूहाय ॥ भाषा भागमकारणा घोसा घोयउक्षान्तादिक ॥ भाषा भागमकारणा वक्षया खवजपचर ॥ विगयपक्षस्तस्स ॥ वि  
गतमग्नो अवस्थानिरा पेचये विभाग तेइमोइवपय परिग्यह ते विगतपक्षकक्षीये एयवपद विगतपक्षमो यावकक्षे ए नवपदने विवै पधपयोखे ॥



बर्तितपदस्य मूत्रे भजिपाना बलमादिवहानि सामान्येन व्याप्तानि न कर्मापेक्षयेय, तथाहि ॥ बलमात्रेण लिखति ॥ ११॥ बलन मस्तिरत्वपर्यायेषु  
 बलनम उतपादः ॥ वेदस्त्रमायेवेत्युक्ति ॥ व्यग्रमान कल्पित व्युत्क्रम्यन इतिवचनात् व्येजमपि तद्रूपपेक्षयो र्थादयम् ॥ उदीरि  
 ज्ञमायेउदीरियति ॥ इहो दीर्य स्थिरस्य सुतः प्रेरक तदपि बलनमेव ॥ पदेज्जमायेपरीयेति ॥ प्रहीयमात्र प्रक्षदयन् परिपतवित्यर्थः, प्रहीर्षं  
 प्रयष्ट परिपतितमित्यर्थः इहापि प्रहीर्ष बलनमेव बलनादीना प्रेक्षार्थत्वं सर्वथा गत्यर्थेयत्वात् ॥ रुप्यक्षपक्षस्त्विति ॥ बलत्वादिना पर्यायेको र्थात्  
 स्वलक्षपक्षस्याभिप्रायका म्येतानीति, तथा बलदददाहरकमिच्छरा व्यक्रमार्थोव्यपि व्याप्तयेयानि, तथाक्यान् प्रतीतमेव निष्कार्यता पुन  
 रेपानय-कुठारादिना सतादिविषयबल सोमरादिना क्षरीरविषयो नेदो, इतिना दार्थाविविषयो दाहो, मरकत्तु प्रायस्मागो, निष्करा स्वतिपु  
 रावीन्रवनमिति ॥ विगमयकस्त्विति ॥ प्रिक्वाप्यप्यपि सामान्यतो विनायात्रिप्रायका व्येक्षानीत्यर्थः, नच बलव्य किमेतौ बलनादिनि रिहनिहप्यति  
 रतत्वरूपत्वादेयामिति बलत्वरूपस्यासिद्धत्वात् तद्विद्विषय निययनमतेन वस्तुस्वरूपस्य प्रक्षापयितु मारक्यत्वा-तथाहि-व्यवहारनय द्युतिव  
 ने ॥ चतितमितिमग्नते निषयसु बलदपि बलितम् अत्र वस्तुत्वमेव तत्र विद्येयावश्यकता विहेवा जिवात्म्यमात्रमात्रावश्यकमिति, इहा  
 ये प्रज्ञोत्तरदूषद्वये नोक्तत्वं विवक्षित, मोक्षः पुन जीवस्य, जीवाय नारकादय द्युतिविविषय, यदाह-नेरइयाभ्युत्तराई पुढवाहवें दियादठचव  
 पददियतिरियनरा वंतरजोद्विषयमेवाको २४ ॥ १ ॥ तत्र नारका स्तावत् स्थित्यादिनि द्युतिवयनाह ॥ नेरइयाबभित्यादि ॥ निर्गत मयमिष्टकल  
 बर्तं येत्य स्तं निरपा स्तपुनया निरपिका नारका स्तेपा निरपिकाको ॥ नतेति ॥ नदत्ता ॥ केवइयकासति ॥ क्रियावासी कातयेति क्रियत्काल

पेरइयाणनतेकवद्वयकालिठिइ पक्षमा। गोयमा। जह्वेणदसयाससहस्साद्विठिइ

पाणि माचनो वार्त्तावहो तेमाच तो ज्येनेहाय जीवते नारको पादिदेह चतुर्वेदद्वय बतवे तेचतुर्वेद दृष्टवना नाम ॥ नारको पसरदि ११ पृथि  
 शीपादि १६ वेदश्रीपादि १८ पक्षित्री तिर्यच २ मनुष्य २१ व्यतर २२ ज्योतिषो २३ वैमानिक २४ इति ॥ इति नारकोनो स्मितिपुष्टे १ वेदरयान



तिवा ऊचसतिवा निसर्गतिवा इति ॥ तत्र सतत अनवरतं यत्तु-कितादि ते इतिदुःख्यासस्य निरन्तरमेवो ऋषिनि द्यासी हवयेते सतत  
 त्वच प्रायो वृत्त्यापि स्यादित्यत आह ॥ सततमेव ॥ सततमेव ज्ञेयमप्येति तद्विरहो स्तोत्रिभावः दीर्घत्वमेव प्रारुतत्वात् आरुमगतीत्यादेः  
 पुनश्चाह चिप्यवचने आदरोपदर्शनायै गुरुनि रात्रिपभाबवचनादि यिष्या सन्तोषयन्ती प्रयति तथाच योमःपुन्येन प्रममयकार्यनिवृत्त्या  
 दिपु पटन्ते सोमे वादेयवचना अवन्ति तथाच प्रयोपकार स्त्रीयोमिवद्विभेति अथ तेषामेवाङ्गारप्रमयआह ॥ येरइयागमित्यादि ॥ व्यक्त न  
 वरम् ॥ आहाररुति ॥ आहारं चर्चयन्ते प्रायेयन्त इत्येवंष्टीसा चर्चोवा प्रयोजनमेवामसी त्यचिन आहारैव जोजने नाचिम आहारस्य जोजन  
 स्या चिंम आहाररुचिनः ॥ अहापक्यवायति ॥ आहारही इत्येतत्पदप्रवृत्ति यथा प्रहापनाया यतुर्णोपाङ्गस्य ॥ पठमरुति ॥ आद्ये ॥ आहाररु  
 देवसुति ॥ आहारपदस्या हाविर्गतिमस्य उद्देशः पदहासलोपा दाहारोद्देशक सत्र भवितम् ॥ तद्वाभाविबुद्धि ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति  
 तत्र नारकाहारवक्ष्यतापा वदूनि द्वाराणि भवन्ति तत्सङ्ग्राह्ये पूर्वोक्तस्थित्युक्तसल्लङ्घारद्वयदशानपूर्विका गायामाह ॥ ठिइगाहा ॥ व्या  
 स्या स्थितिर्नारकाणां वाच्या उक्तावयतीतीकावेव तथा ॥ आहाररुति ॥ आहारविषयो विचिर्वाच्यः सर्व्वम् ॥ येरइयागं ज्ञते। आहारही इ  
 ताप्याहारही ॥ येरइयागं ज्ञते। केवह कासस्व आहारठे समुप्यज्जह ॥ ॥ आहारार्थे आहारप्रयोजन माहारार्थित्ववित्यर्थः ॥ गोयमा । येरइयागं

णेरइयागजनेष्ट्याहारही । जहापन्मवणाए पठमसए आहारुदेसए तहानाणिथव ॥ गाहा ॥  
 ठितितरसासाहारे किवाहारेइससुठेवावि । कइनागससुणिव कीसवन्नुज्जोपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा अहावस्यासपरे । एचिमपचवचा मदि सातमेपदे अहावे तिमर्जावचा, ते इम । सततं सतता ॥ निरन्तर समयमाचरन् विरह विनासे चर्चा  
 दुषमठे । येरइयागं । नारकीने। भति । हेमनवन् । आहापी । आहारार्थाधीति, आहारना बोद्धव्ये ॥ अहा । किम पचवचाए । पचवचानो अहावीस  
 मी पदना । पठमसए । पडिवा मतकनो। आहारुदेसए । आहार उद्देश्यामीति अभिप्रायावे । तद्वाभाविबुद्धि । तिमर्जावचो ॥ गाहाद्विति । किमिमारुही

दुर्विधे चाङ्गद पक्षे ॥ अन्यथाङ्गराजिकेत्यर्थः ॥ तत्राङ्गा आमोगनिष्ठतिय अभाभोगनिष्ठतिय ॥ तत्रा भोगो ऽप्रिसन्धि स्तेन निवर्तितः कृत धामो गन्धितित चाङ्गरयामीनी व्यापूवद्वत्यर्थे अभाभोगनिवर्तित थाङ्गरयामीति विशिष्टव्या मन्तरयापि प्रावृद्धभासे प्रचुरतरपक्षव्यायमिष्यग्य ग्रीनपून्नाप्याङ्गरयन् ॥ तत्पक्षं जसे अभाभोगनिष्ठतिय सेवं अणुसमयमधिरथिए आङ्गरठे समुप्यज्ज ॥ अनुसमयं प्रतिपद्य सन्ततातितीप्रपुद्देद मीयत्तमदीदयत पुत्रप्याङ्गरादिना प्रकारवति ॥ अविरथिएति ॥ पुकरसलितम्यायादपि न विरथित अथवा प्रदीपबालोपनोग्याङ्गरस्य सकुट्टइसे दि भोगो नृममपरस्या दतो ग्रहवरयापि मातत्यप्रतिपादनाथं भविरथितमित्याह ॥ तत्पद्य जसे आमोगनिष्ठतिय सेवं असठेअसमइए आतोमु इतिप चाङ्गरठ समुप्यज्ज ॥ अर्थव्यातभाभयिका एत्थोपमादिएरिमाओवि स्यावतआह ॥ आतोमुपुत्तिएति ॥ इदमुत्तमवति आङ्गरयामी त्यन्नि माय धतपा गृहीताङ्गारद्वयपरिणामतीप्रतरवुःपञ्चमपुरस्वर मन्तमुंभूतो विवर्ततइति ॥ विवाङ्गरतितिति ॥ विंस्वरूपंवा वस्तु नारका आङ्गारय

श्रीति वाच्यं ? यागः। समुत्पये तत्रेदं मन्त्रनिवचनमुक्तं ॥ उदरव्याजं जते । किमाहारमाहारंति ? गोपमा । दधुतं अर्धतपयसिमाह ॥ अनन्तप्रदेक्षवन्ति  
 पुट्टनद्रव्यातीत्ययं सदन्यपा मयोम्यत्यात् ॥ योतु अर्धेअपसावगाडाह ॥ मूकतरप्रदेक्षावगाडानिह ॥ यद्वामायोग्यानि अनन्तप्रदेक्षावगाडा  
 निनु ॥ नगस्येव स्रक्कनोक्त्यः प्यधुपपदग्रमभाख्यात् ॥ कासठ अर्धतरधियाह ॥ अपन्यमध्यमोरुस्यसितिकानीत्ययः, स्थितिश्च आहारयोग्य  
 रक्त्यः परिरामेऽवस्थानमिति ॥ ज्ञायठ यमुमताह रथमताह आसमताह आहारंति ५ । आह ज्ञायठ वळमताह आहारंति कि ताह एगव  
 गाह आहारंति ज्ञात्र किपं वळसाह आह रंति २ गोपमा । ठाखमगळं पळुव एगवळाहंति आहारंति आव पथळाहंति आहारंति विहाळमगळ  
 पळुव आनगळाहंति आहारंति आवसुक्षिताहंति आहारंति ॥ तत्र ॥ ठाखमगळ पळुवति ॥ तिष्ठत्यस्मि क्षितित्स्यान सुताम्यं पथा - एकवळं द्वि  
 पथमित्यादि ॥ विहाळमगळं पळुवति ॥ विधानं विक्षयः कासाविरिति ६ । आह वळठ कासवळाह आहारंति ताहंति एगगुळकासाह आहारं

ति जाव दमगुणकालाई आहारैरिति धेकैजगुणकालाह असखेजगुणकालाह अकतगुणकालाह आहारैरिति ? गोयमा । एखगुणकालाहपि आहारैरिति  
 जाव अकतगुणकालाहपि आहारैरिति ३ । एव आवसुकिनाह ११ । एव गथठवि १३ । एव गथठवि १८ । जाह जावठं कासुभताह ताह ठाकमगण पडुव नीय  
 गथामाह आहारैरिति मोदुकासाह आहारैरिति नोतिपासाह आहारैरिति ॥ एकस्पष्टाभा मसजवा दमेया आस्पष्टाभिकतासूक्ष्मपरिबामाज्या कुइया  
 योम्यवात् ॥ अउकासाह आहारैरिति जाव अउकासाह आहारैरिति ॥ अमुप्रदेक्षिकताबादरपरिबामाज्या कुइययोग्यत्वादिति ॥ विहाकमगणं पडु  
 व कसलताहपि आहारैरिति ॥ जाव सुखाहपि आहारैरिति १६ । जाह जावठं कसलताह आहारैरिति ताहकि एगगुणकलकलाई आहारैरिति जाव अक  
 तगुणकलकलाह आहारैरिति ? गोयमा । एगगुणकलकलाहपि आहारैरिति जाव अकतगुणकलकलाहपि आहारैरिति २० । एव अठवि फासा जाविपवा  
 अकतगुणकलकलाहपि आहारैरिति २३ जाइजत । अकतगुणकलकलाई आहारैरिति ताहकि पुठाह आहारैरिति ? गोयमा । पुठाह आहार

रैरिति मो अउठाह आहारैरिति २८ । पुठाहपि ॥ आत्मप्रदेक्षस्पष्टाभि तसुन रात्मप्रदेक्षस्पष्टेन सवगाहवेडा इहिरपि प्रवति अत उच्यते ॥ जाइ  
 जते । पुठाह आहारैरिति ताहं कि ठगाडाह आहारैरिति अलोनाडाह आहारैरिति ? गोयमा । ठगाडाह मो अलोपाडाह ॥ अलनादामीति आत्मप्रदेक्षे  
 स्पष्टे कछेजगुणकालाह २६ ॥ जाहं जते । ठगाडाह आहारैरिति ताह कि अकतरोगाडाह आहारैरिति परपरोगाडाहं आहारैरिति ? गोयमा । अ  
 कतरोगाडाह मो परपरोगाडाहं आहारैरिति ॥ अलनालोवगाडाहमीति येपु प्रदेक्षे घालावगाह सोखेव घालावगाडाहमी ताव्यनस्तरावगाडाहमी अन्तरा  
 जावेनावगाडत्वात् गानिष-तदन्तरवर्तीनि ताव्यवगाडकम्बध्यात् परम्परावगाडाहमीति ३० ॥ जाह जते । अकतरोवगाडाह आहारैरिति ताहकि  
 अडूहं आहारैरिति बायराहं आहारैरिति ? गोयमा । अडूहपि आहारैरिति बायराहपि आहारैरिति ॥ तज्जाबुलं बाहरलं बावेखिळं तेयामेवा डारयो  
 म्यानां स्वस्थानां प्रदेक्षइथा नमुना भवसेय ३१ । जाह जते । अडूहपि आहारैरिति बायराहपि आहारैरिति ताह कि ठळं आहारैरिति एवं अवेवि

तिरियपि ? गोयमा । उद्धपि अहारेति एव अहेयि तिरियपि ३२ । जाइ जते । उद्धपि आहारेति अहवि तिरियपि आहारेति ताइ कि आहआहा  
रेंति मजे आहारेति पञ्चइसके आहारेति ? गोयमा । तिहावि ॥ अयमर्थः आनोगमिर्वर्तितस्या हारस्या अमर्षीभूतिकस्या विमच्यावसानेषु स  
पमा हारपगतीति ३३ ॥ जाइ जते । जाइ मजे अवमाअयि आहारेति ताइ कि सुविसए आहारेति अविसेए आहारेति ? गोयमा । सुविसए नो  
अविसेए आहारेति ॥ तत्र सः स्त्रीयो विषयाः स्पृहायणाहामतरावगाढास्तः अविषय स्तस्मि आहारयन्ति ३४ ॥ जाइ जते । सुविसए आहारे  
रेंति तांकि आहारेति अहारेति अहारेति ? गोयमा । आहारेति गोअवाअुवि आहारेति ॥ तत्रा मुपूअो ययासकं ना  
तिजम् ३५ ॥ जाइ जत । आहारेति ताइकि तिरिदिहि आहारेति जाव अहारेति आहारेति ? गोयमा । नियमा अहारेति आहारेति ॥  
इह नारकाकां लोकमप्यर्तित्येन पक्षा मयूहादिदिगा मलोकेना नावृतत्वात् पदसु दिक्वाहारप्रवृत्तमस्ति तत उक्तं नियमात् यद्दिशि वि

कुर्याद्विहृतम्पानु मोकातवन्तिपु पृथिवीआयिकाविरु विज्ञा अयस्य इयस्य एकस्या दालोकेना वरवे अवन्तीति । यद्यपि यर्कतः पञ्चवर्षांनी त्या  
पुक्तं तथापि प्राप्नुयैव यद्दुःखगन्धादिवृत्तानि द्रव्या स्याद्वारयन्ति तानि दर्शयति ॥ ठंयककारव पदुवति ॥ आहुत्सलवकारव माभित्य तत्र  
मत्स्यमुन्नानुनापएव कारवमिति ॥ वयठे कासनीताइ मयठे दुस्निगवाइ रवठे तितकमुपरवाइ कावठे कककगकयसीयलुक्काइ ॥ एतामिच प्रा  
यो तिम्याहदप एवा जारयन्ति अनु नविप्यतीषकरादपइति अय तानि यपास्यरुपास्येव नारका आहारय म्त्वम्यथावे ? त्यस्या माभङ्गाया म  
निधीयत ॥ तनि पोरावे पञ्चगुणे रमगुणे कासगुणे विप्यरिखामयिता परिपीलयिता परिसाकृता परिविदुसइता ॥ विपरिखामादयो  
विनाशायत्ये वैकापाएव प्यतपः ॥ अकेव अमुठे वल्लगुणे गंचगुणे रवगुणे कासगुणे उप्पाइता आयसरीरोगाहे पोगले सद्यप्यकयाए आहारं  
माहारेति सद्यप्यइयाएति ॥ सर्पोत्पन्ना सर्वे रात्माप्रदन्ती रित्यर्थः ३६ व्याख्यात सूत्रे सङ्गहागाथायाः किवाहारेतीतिपद मय सद्यठेवावीति व्या

स्यायते तत्र सुवताः सुवप्रदेशे नैरयिना आहारयन्तीति । वापीतिवचना इतीत्य आहारयन्ती त्वपिवाच्यं तद्वैवं ॥ नैरइयाचं ज्ञते । सवृष्टं आह  
 रति सवृष्टं परिबार्मेति सवृष्टं कससंति सवृष्टं नाससति अत्रिक्खवं आहारंति अत्रिक्खवं परिबार्मेति अत्रिक्खवं कससति अत्रिक्खवं नीससति  
 आहव आहारंति ? ५ इता योयमा । नैरइयासवृष्टं आहारंति १२ सवृष्टंति ॥ सर्वोत्तमवेक्षेः ॥ अत्रिक्खवति ॥ धनवरत पर्याप्तविसति ॥ आह  
 वति ॥ अइरि अश्वर्वादा अययोमन्नाबत्यायाभिति ३३ तथा ॥ अइजागति ॥ आहारतयोपात्तपुद्गलाना अतिथ ज्ञाग आहारयन्तीतिवाच्यं त  
 वेव ॥ नैरइयाच ज्ञते । जे योगवले आहारताए नेरइति ठेव तेसि योगवलाव सेयाससि अइजाग आहारंति अइजागं आवाइति ? गोयमा ।  
 असंखेज्जाग आहारंति अइजागं आवाइति सेयाससिति ॥ एयत्काले एइकोत्तरकाल नित्यर्थः असवेत्तइजागनाहारंतीत्यत्र अपि आवाइते  
 मवादिप्रथमवृद्ध्यासयइइव कांयित् पहीतासङ्केयनामनाहान् पुद्गला आहारयन्ति तदव्येतुपतन्तीति अम्येत्वाचकते अजुसूत्रनयदर्थेनात् स्वस  
 रीतया परिबताना मवङ्केयनाय आहारयन्ति अजुसूत्रादि - नवादिप्रथमवृद्ध्यासयइइव पहीतानां अरीरवेना परिबताना आहारतांनेष्वति  
 अरीरतया परिबतानामपि केपाविदेव किञ्चिदाहारकार्यकारिका ता मप्युपपन्नति अहुनयत्वा तस्येति अन्ये पुनरित्य मप्रिवचति ॥ असवे  
 ज्जागनामनाहारंति ॥ अरीरतया परिबमन्ति सेपास्तु किञ्चिन्मनुष्याभ्यवइताहारव अमतीप्रवन्ति न अरीरत्वेन परिबमन्तीत्यर्थः ॥ अह  
 तनान्नप्रासाइति ॥ आहारतया पहीताना मनननाय मास्वादयति तत्रवादीन् रसनादीन्प्रियद्वारे गोपलमन्त्र इत्यर्थः ३८ सद्वाविवति ॥  
 द्वारे तत्र सर्वास्येवा हारव्या ह्यआहारयन्तीतिवाच्य वाशब्दः समुच्चैः तद्वैवं ॥ नैरइयाच ज्ञते जे योगवले आहारताए परिबार्मेति तेसि सवे

नो अइमो अधम्मे । उत्तुह तेषीम मायरोपम उच्छासाहारे । सासास्त्राव कहया निरतर आहारे पशारना-प्रर्षी बिंदु, हारे । अदि आहार  
 करे सव्यतोवादि । समवे धाम्मि पदेगिणरो आहारवे ॥ अतिमार्ग ॥ जेतथा आहारे आहार निमित्त जेतथा पुइस गच्छा तेइना असक्कातमो मा

पादरिति गोमये आहरेति ? गोयमा । नवे अपरिचयेषिण आहरेति ॥ इदं विशिष्टग्रहणहीना आहारपरिचयमयोभ्याएव पादया उक्तिस्तथोपा  
 इत्ययः प्रत्यया पूर्वोपरमूत्रयो विधोः स्यात् इष्टुचैव व्यास्या यदाह अत्रस्तुतेनखिय तदेववर्ततवियासखान्तिय । किञ्चासिमाबुठगे विठो  
 दिष्टिप्यनायेदि ३६ ॥ १ ॥ श्रीमन्ननुज्जोपरिखमतिरिति ॥ द्वागपापद तत्र ॥ कीसति ॥ पदावयवे पदसमुदायोपचारात् ॥ कीसताएति ॥ दृश्य  
 किं व्यतया किं व्यजायतया कीदृशतयावा कनप्रकारेण किंरूपतयेत्ययः वाञ्छतुः समुषये ॥ नुज्जोति ॥ नुज्जोपुनः पुनः पुनः परिखमन्ति  
 आहारद्रव्यावीति प्रकृतं इत्येत इववाच्यं तदेव ॥ नरइयाव ज्ञते । जेपोभले आहारसाए गवइति सेव तेहिं योगमला कीसताए नुज्जोपुनज्जो  
 परिखमति ? गोयमा । सोइदियसाए आव कासिदियसाए अकतताए अकतताए अमकुसाए अमकामताए अविच्छिद्यताए अति  
 क्तिपताए अइताए नोउकताए दुक्कताए मोसुइताए एएचि नुज्जोनुज्जो परिखमति ॥ तत्रा निष्टतया सर्वेव तेषा सामान्येना वज्जतया  
 तथा - इकास्ततया सर्वेव तद्भावना कमनीयतया, तथा - इमिमतया सर्वेपानेव देव्यतया, तथा - इमनोइतया कयया प्यमनोरमतया, तथा - इम  
 नोभ्यतया चिन्तयपि अमनोगम्यतया तथा - इनीधिततया आसुमनिष्टतया, एकार्या वेतेस्यवः ॥ अनिकिपताएति ॥ अनिच्येतया वसेरनुत्पा  
 दकत्वेन पुनरम्यनिनायनिमित्ततया, अइयात्वे नेत्यन्ये अममत्वेनत्ययः ॥ अइताएति ॥ गुहपरिखामतया ॥ नोउकताएति ॥ नोलपुपरिखामत  
 यति सद्ग्रहागपायः, इदं सद्ग्रहविगायाविवरकसूत्रं कुरिस्तुत्रपुकाकएव वृत्तपतइति, अय भंरयिकाहारपरिचारा तद्वियमव प्रसवतुष्टयमाइ ॥  
 नेरइयावमित्यादि ॥ पुवाइरिमति ॥ ये पूर्वभाइताः पूर्वकाले एकीकृताः सद्ग्रहीता इतिमावत्, अन्यवइताया ॥ योगमन्ति ॥ स्कन्धाः ॥ परिच

न पादरे पञ्चभात भावार्थे । तन्नाचिया । सगसा आहारनी द्रव्य आहारेपाहारपरिचयम जाग पुष्टकाचिया ॥ कीसव । विषमकारेकरोने । सुज्जोमु  
 न्ना । इमोन्नो । परिखमति । १ परिखमे इष्टिपये नु-सुपने परिखमे एहनो विक्षारपसवर्णा मीहिबी जोबको ॥ विवेनारकोनी आहाराधिकारवको



पति ॥ ते परिचिताः पूर्वकाले शरीरेष्वसह सम्पृक्ताः परिचिताः भूता इत्यप्य इतिप्रथमः प्रश्नः १ । इह-सर्वत्र प्रसृत्यं काकुपाठा दयमस्यते , तथा ॥ आ-  
 पद्यारियति ॥ पूर्वकाले आहता मङ्गुलीता यज्यवहताया ॥ आहारिज्जमाहति ॥ येन वतमानकाले आश्रियमाकाः सङ्गुलमाका अप्यवश्रियमा  
 पाया पुद्गलाः ॥ परिचयति ॥ ते परिचिता इतिद्वितीयः २ । तथा ॥ अवाहारियति ॥ ये शीतकाले जगता ॥ आहारिज्जस्वमाहति ॥ ये  
 जगतागतेकाले आहारिज्जमाकाः पुद्गलाः कोपरिचिता इतितृतीयः ३ । तथा ॥ अवाहारिया अवाहारिज्जस्वमाहत्यादि ॥ अतीताभगताहरवन्नि  
 यानिपया वतुयः ४ । इह-यद्यपि ज्ञातारय्य प्रश्ना उक्ता , क्षया व्येते त्रिपटिः सम्भवति , यतः पूर्वोक्ता आश्रियमाका आहारिज्जमाका आ  
 नाहता अनाश्रियमाका अनाहारिज्जमाकायेति यद् यदानीह वृषितानि , तेषुच एकीकृतवाक्येन परमद्विषयोने पञ्चदश, त्रिकयोगे विद्यति य

पेरइयाणजनेपुष्पाहारियापोगलापरिणया १ आहारियाश्चाहारिज्जमाणापोगलापरिणया २ अण्णा  
 हारियाश्चाहारिज्जसमाणापोगलापरिणया ३ अण्णाहारियाश्चाहारिज्जसमाणापोगलापरिणया ४

आहारिविषय प्रत्युचरि कहेव ? वेरइवच ? नारकीने भते । समजवन् । काई पुष्पाहारियापोगलापरिचया । जेपूर्वकाले शरीर संघाते एकीकीया स  
 पद्मा यवश आहारा जेवइम मदे म्बवते परिचाम्मा एषविकाप्रत्य ? तथा आहारिया अवाहारिज्जमाका । पूर्वकाले आहारा समझा आ न  
 जमानकाले आहारवरेवे यदका सपरेवे ते पाय्मका । पइव परिचवा परिचम्मा ए वीकी प्रत्य ? २ तथा ॥ आवाहारिया । अतीतकाले सगझान  
 की आहाराजकी आहारिज्जमाका । अनागतकाले आहारले संपदम्बेव पोयका । पइव परिचया परिचम्मा एकीकीप्रत्य ? ३ तथा ॥ अवाहा  
 रिया । अतीतकाले आहाराजकी संगुलजकी ते प  
 रनपरिचम्मा एकीकीप्रत्य ? ४ इहा कूने प्रत्युचरिक्का तथा वेमठिमाया एवमीवावते देकावेले अतीतकाले आहारा १ वतमानकाले आहारिजे  
 २ पापानिकाले आहारले २ इम अवाहारा ४ अवाहारले ३ यवाहारले ६ ए ६ पदक्का । तेकनेनिजे संयागो ६ दिवगोने १५ चिक्कसकीनी २

तुल्ययोगे पञ्चदशा पञ्चस्योगे षट् षड्योगे एकइति श्रुतीभरमाह ॥ गीयमेत्यादि ॥ व्यक्तं नयते ये पूर्वमाहुता स्ते पूर्वकालस्य परिकृता य इगामाभरमव परिकामनावात् १ । ये पुन राहुता आश्रियमावाय ते परिकृता, आहुतानां परिकामनावादेव परिकामनितव, आश्रियमावाना परिकामनावस्य भागमानत्वादिति २ । वृत्तिस्तातु द्वितीयः प्रसोत्तरविश्लेष एवविधो वृत्ते, यदुत आहुता आहरिष्यमावाः पुद्गलाः परिकृताः य रिचम्यमेव यतो यं तमेवं व्यास्यातो यदुत येपुन राहुता आहरिष्यन्ते, पुन स्तेषां कथिपरिकृताः परिकृताद्य ये सम्पृक्ताः क्षरीरेष सह यत् मतायत् सम्पृष्यन्ते, कालान्तरेतु सम्पृष्यन्ते, तेपरिचंस्वसइति, येपुन रनाहुता आहरिष्यन्ते, पुन स्ते मोपरिकृता, अमाहुताना सम्य ज्ञानादेन परिकामानावात्, यस्मा आहरिष्यन्ते, ततः परिचंस्वन्ते, आहुतस्या यद्वयपरिकामनावाविति, ३ वतुचं स्वतीतजविष्यदाहरकमि माया अमायन परिकामानाया दववेयइति यतदनुसारेणैव प्राग्वाक्षतविकल्पाना मुत्तरयूत्राणि वाण्यामीति अथ शरीरसम्यकैतजपपरिकामा

गोयमा णेरद्वयणपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ अ्याहारियाअ्याहारिज्जस्समाणापोग्गला परिणयापरिणम  
तिय २ अ्याहारियाअ्याहारिज्जस्समाणापोग्गला णोपरिणयापरिणमिस्सति ३ अ्याहारियाअ्याहारिज्ज

[illegible]

तु पुद्गलाभा स्वयादयो प्रवर्त्तन्तीति तदर्थं गार्थं प्रसफलाह ॥ गेरद्वयालमित्यादि ॥ अयादिसूत्रादि परिणामसूत्रसमानीति कृत्वा सिद्देशतो ऽचीता  
मीति स्यादि ॥ जहापरिचया तहा धियावीत्यादि ॥ एष पुस्तकेषु वाच्यमानेदो दृश्यते, तत्र न सम्भोह कार्यः, सर्वत्राभिधेयस्य सुस्पष्टत्वात्  
केचन स्परिक्तमूत्रानुसारेण प्रससूत्रादि व्याकरणाभिच मतिमता अप्यानीति, तत्र चिताः शरीरे वर्णयता उपचिताः पुन घंशुशः प्रवेशवामीप्येन  
शरीरेचितामयवति उदीरितास्तु स्त्रजावतो भुदितान् पुद्गलान् उदयप्राप्ते कर्मदक्षिणे करविकीर्षेण प्रविष्टा या न्वेदयते, उदीरकालसक पद  
जकरबेयाकाक्षिप उदयदिग्जहउदीरकायसा ॥ तथा वेदिताः स्वन रसविपाक्षेन प्रतिसमय मनुजयमाना अपरिसमाप्ता शोपानुभावाइति तथा  
निम्नोर्भाः कार्त्स्न्येना नुसमयमक्षेपतद्विपाकइमियुकारति ॥ नाइति ॥ परिकतादिसूत्रावा सङ्गइकाय नाया प्रवति, सावेय परिसमयत्यादि  
व्याख्यातार्था भवर सक्कसिन् पदे परिकतचितोपचितादी न्तुठिषा आइता १ । आइताः आश्रियमाकाह, २ । अनाइता आश्रियमा

स्समाणापोगलाणोपरिणया णोपरिणमिस्सति ४ गेरद्वयाणजनेपुष्पाहारियापोगलाचिया ॥ पुच्छा ॥ जहा  
परिणया तहा धियायि एव धिया उयाचिया उदीरिया येइया णिज्जस्सा ॥ गाहा ॥ परिणतचियायउवचिया

नहीं ॥ इति शरीर सपक्वसक परिणामसक पदस्यो ववादिष इदे त देवाकवागो प्रयवरेइ—गेरद्वयाचमते । मार्वोने हेमगवन् । पुष्पा  
हारिवा । पूर्वपाहारिवा । पोक्कहाचिया । जेपुइक ते चियावकीवे वसपचूपाय्वांकि शरीरेकोविदेचिया । पुच्छा ॥ ए प्रय पूज्यो इति उत्तर वहेइ—  
जहा । जिम । परिचवा । परिचम्मा । तहा । तिहातिम । चिवादि । वयपाय्वा । एवं । इम । चिया । वयपाय्वा । उवचिया । नाठाचिया घचूहदि  
पाय्वा । उदीरिवा । अमावे उदयनहींपाया घनेते उदरपाया । वेइवा । पोतावे रसमिपावे प्रतिसमये भोजन्वा । चिचिवा । रसपरिचामेकरो मिज  
या णोवमदेयवो वडावोपा । गाहा । परिचय । याया । जिमपरिचामे परिचम्मा । चिया । वयपाय्वा । उवचिया । घचूहदियाय्वा । उदीरिया । मावेकरो उदी  
रिया । वेदिवाय । मावेकरोवेदिवा । चिचिवा । इमवयवोपा तेइवो शानिठदि करोने । एचिचमिपचमि । एवेकायदेनेविदे चारि चारिमेदेपुइसकइवा

[illegible]

उद्गीरितायेह्यायणिज्जिह्वा । एक्किक्किमिपदमि चउच्चिहापोगलार्होति ॥ १ ॥ णेरइयाणज्जे कत्तिचिहा पोगलान्जिज्जति गोयमा कम्मदध्ववगणमहिगिस्स दुयिहापोगलान्ज्जति तज्जहा ध्वणूचेव वायराचवे १

[illegible]

किमुपयुज्यते उपपन्नमूत्रे च ॥ आहारद्वयव्यवस्थामिति चेति यदुक्तं तत्राय मसिमायाः, उदीर माभित्य वयोपचयी प्राख्याख्याती, तौचा शारका  
 प्रयेत्यप्यत्र प्रवतो माप्यतो अत आहारद्वयवर्गणा मपि कृत्ये त्युक्तमिति, उदीरणादयस्तु कर्मद्रव्याद्यमेयं त्रय, न्यस्त सारसूत्रे पूषा कर्मद्रव्यवर्गे  
 मपि कृत्येति च उवाच इति ॥ अपयवर्तनं कर्मणा स्थित्यादेरप्यवसायविद्योयेन हीनताकरण, अपयवर्तनस्य वयोपसवयत्वा बुद्ध

आरइयाणन्तेकतियिहापोगलाचिञ्जति गोयमा स्याहारद्वयमगणमहि किञ्च बुद्धिहापोगलाउदीरति तजहा  
 शृणूचैत्र दायराचैत्र २ एव उयचिञ्जति ३ णेरइयाणन्तेकतियिहापोगलाउदीरति गोयमा कम्मवस्यवग  
 गमहि किञ्च बुद्धिहापोगलाउदीरति तजहा शृणूचैत्र दायराचैत्र ४ संसाविपुवचं च भाणियद्वा । वेदति ५  
 णिञ्जरति ६ उयहि सु ७ उयहति ८ उयहति ९ सकमि सु १० सकमति ११ सकमिस्सति १२ नि

वे आचरायवबोधापवेमायमहो, जमाट सोदारिकादि द्वयमांश्चिक्कमइत्यहोच सूखे । चरइयाचंभते । नारकोजे वेमगमन् । कइविहा । केतवे प्रकार  
 पोक्कमाविञ्जति । पुइम विवे इति मय १ गोयमा । वेगोवम । इहाए चमिमाव यरीरपावयो नेवय उपपन्न पूर्ववकास्याहे ते वय उपपन्न आहारद्वयवर्गोच पु  
 वे पयवसायवुवे तेहीच चरेवे — आहारद्वयवर्गोच भावयोने चधिचरीने । बुद्धिहापोक्कमाविञ्जति । चिहुंमकारेपुइव विवे ।  
 तजहा । तेववेवे — पपूवेव । पणववता मूक्क वेवसीणव १ । वादएवेव । वादर कवता कूल चरमचवर्गोच इत्यर्थे २ । एवं इम । उपविञ्जति । उपपन्नपा  
 मे इहिणामे ३ । वेरइयाचंभति । नारकोजे वे भमवन् । कइविवेयोक्कवे । केतलोपकारे पुइव । उदीरेति । उदीरणापामे इति प्रश्न १ । गोयमा । उत्तर वे भी  
 तम । उदीरणादिक कम्म । दय्यगमममहिणव । प्रयमेत्र बुवे तेमाडे कव कल्लव्य वर्तका भावयोने । बुद्धि वे योक्कवे । विवंप्रकारे पुइव उदीरणापामे  
 तेववेवे — पपूवेव । मूक्क । वादएवेव । मोटा ४ । संसाविपुववेव । प्रय वाचता संयकार्गोच इति परे । भाणियद्वा । कइवा ए इम । वेदति । वेदे ५ । चिञ्जर  
 ति । कम्मविमिन् पीम चरवु ते निजरवुवदीये ६ । उयहिंनु । अपयवर्तनते कम्मविमिहि आदिक्कन् अपयवसाय विमिमेकरी होमकरवं इहा

तन्मयोऽदृश्यं, तच्च स्थित्यादेः दृष्टिकरवत्स्वरूपं च संकामेऽस्ति ॥ सञ्चलितवन्तस्तत्र सक्रमणं मूलप्रकृत्यभिज्ञाना मुत्तरप्रकृतीना मध्यवसायविधौ चेत् परस्परं सम्भारणं, तथापि च --- मूलप्रकृत्यभिज्ञानं सक्रमयति गुणवत्तराऽप्रकृतीः सत्त्वात्माभूतत्वा ह्यव्यवसायप्रयोगेन ॥ १ ॥ अपररत्नाश्च मोक्षमार्गप्रदं दसकमोक्षपरिचयोऽयं । सेवाकपणश्च उत्तराधिकारसमोऽपि ॥ १ ॥ एतदेव निर्दिश्यते यथा कस्यचि त्सुष्टेया मनुजवतोऽप्युज कम्पयिष्यति देवविद्या जाता, येन तदेव सुष्टेय मसुष्टेयतया सकामतीत्येव सम्यगापि योऽस्य ॥ निषतेऽस्ति ॥ निषत्ताम् उतवन्त, इह च विभिन्नानां परस्परतः पुद्गलानां निषय कृत्वा धारणं कृतिश्रुत्येन निषय मुच्यते, उद्गतेनापवत्तव्यतिरिक्तकरणाभा मविपयत्वेन कर्मको वत्त्वा भवति ॥ निकाशऽस्ति ॥ निकाशितवन्तो नितरां यदुक्तवत्त्वं, निकाशनञ्च तयासेव पुद्गलानां परस्परविभिन्नाना मेकीकरव मव्योन्यावगादिता, अग्निप्रतप्तमतिहृत्पमानधूर्वाकलापस्येव सकलकरणाभा मविपयतया कर्मको व्यवस्थापनमिति पावन् ॥ प्रकृतीत्यादि ॥ पदानां सङ्ख्या

हस्तिषु १३ निहसति १४ निहसिस्सति १५ निकाइसु १६ निकायति १७ निकाइस्सति १८ । सहेसु वि

अपवत्तनां उपसक्तवत्को उत्तम पवित्रेऽ उत्तमते शिवादिक्त्वं वधारय । उच्यते । शिवादिक्त्वं शीमकरयू शीततकासे । उच्यते । शिवादिक्त्वं न करे वत्तमानकासे २ । उच्यते । शिवादिक्त्वं करणे धनागतकासे ३ । सकामेति । सक्रमयति अस्मिन् उत्तरप्रकृति बोधे शब्दवसावविप्रेकरी मं वा मांश्च संभारिवा सक्रमय कर्तुमे संक्रमादौ शीततकासे । १ संक्रमाये वत्तमानकासे । संक्रमापये धनागतकासे ११ । विहसति । शीकरा पुद्गलकमे ने माहा मांश्च निषय कर्ता एकतो धारवा तेजने कठियन्ते निषत्तकौवे शीततकासे एकठायाया १२ विहसति । ३ वत्तमानकासे एकठायायेति विहसिस्सति १ । ११ धनागतकासे एकठा यापये । निवारयु ४ । १२ निकाशितकर्म क्रिम सरना मुच्यते अस्मिमांश्च तयाबीजे ठपौजे तिवारे माहा कठिनहाय निवाया शीततकासे । निवायति । निवाये वत्तमान कासे । निवारस्सति ३ । १८ निवायये धनागतकासे । सहेसु विहसत्तवत्तवत्तममि विप । एवं सब्रह्ममद्वयमया श्रौतार करीने वध्वो । गाहा । माया । मेदिया । चिदा । चिदा । उच्यते । पुष्टकोधा । उदीरिया । उदीरि

यथा ॥ प्रेरणइत्यादि ॥ गायत्र्या गतार्थो मवरं अपयर्गमसुठमनिषमिबावनपदेपु त्रिविधः कातो निर्देष्टव्यः, प्रतीतवर्तमानाभ्यागतकालनिर्देशेन  
तानि याच्यामीत्यर्थः इहच अपयर्गमनादीनामिव प्रेदादीनामपि त्रिकातता युक्ता न्यायस्य समानत्वात् कोमल मविद्यया वा सत्त्विवैद्य सुत्रे  
इत्यहति अथ पुन्र्नापिबारा दिवं मूत्रचतुष्टय माह ॥ नेरइयावमित्यादि व्याप्त मवरं ॥ तेषां काम्मेषां शरीरतया तद्रूपतये  
त्ययः ॥ प्रतीतकालममयति ॥ कालरूपः समयो नतु समाचाररूपः कासोपि समयरूपो नतु वर्णादिस्वरूपइति परस्परैव विशेषया त्काल  
ममयः प्रतीतः कालममयो गतीतकालस्य चोत्सृप्यस्यादेः समयः परमनिष्ठो ह्योतीतकालसमयः साह ॥ परुष्यस्यति ॥ प्रत्युत्पद्यो वर्तमानो नो

कममद्वन्द्वमगणमाहिकिञ्च ॥ गाहा ॥ नेदियचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिस्सा । उव्वहणसकामण  
णिहसुणिक्कायणेतिथिहकाडो ॥ १ ॥ नेरइयाणनतेजेपोगला तेषां कममस्राएगिगहति तेकि तीतकालसमए  
गिगहति परुष्ययाकालसमएगिगहति श्रुणागयकालसमएगिगहति गोयमा णोतीतकालसमएगिगहति पट्टु

यात्रेदिवायवेदिया । निज्जिस्सा । निज्जया । उव्वहण । होनकरा । सकामस । विज्जस । समुत्तरा । विजाय । निजाया एसवपदे ति  
विहकाडो १ । प्रतीतपन्नागतवर्तमानकप चिक्खिक्कासकह्वं ॥ द्विवे पुहसमां चविचारको एवारसूचकहे—वेरएवाचंभते । नारको समयवन् । की  
यवनातेयाकचत्ताए । अपुहस तेजस मरीर तथा काममरीर तेषां काममरीरं करोने एवेहे एतावता तैजसकालं च मरीरकप पुहस । यिचइति ।  
एवेह । तेविं । तेषु प्रतीतकामकप समयपचि समाचारकप महीं कासो समय ते परमपचि समयकपपचि वर्षादिकपनई तेमाओमाहि वि  
मेववको कालसमयइति प्रतीतकाल जे कसिप्पिक्काविज्जना समय ते परमनिष्ठपथ ते प्रतीतकाल समयकहिदे तेषोतीतकाल समयेपहेहे । पट्टुप  
याव समय निचइति । गुहेहे । प्रयागयकालसमए गिचइति । प्रयागयकालसमं गुहेहे इतिप्रथ १ । मीयमा । जेगौतम । प्रोतीतकालसमए ।  
प्रतीतकालसमये । निचइति । एवेनहीं १ । पट्टुपकालसमए । वत्तमानकाल समये करोने । गिचइति । गुहे । योपयागयकालसमए । पन्नायतकास

तीतकालेत्यादी अतीतानागतकालविषयपर्यवस्यति चेत् विषयपक्षीतत्वात् द्विपयातीतत्वस्य तयो विनष्टानुसंगत्वेना संशयोदिति प्रत्युत्पत्तत्वं व्यभिमुगान् गच्छति नान्यत् ५ गृहसमयपुरस्कृतेति ॥ गृहसमयः पुरस्कृतो वर्तमानसमयस्य पुरोक्तो वेयान्ते गृहसमयपुरस्कृताः प्रास्तव्याः देय निर्देवो ऽप्यया पुरस्कृतगृहसमया इति स्यात् गृहीप्यमाकाइत्ययः उदीरबाच पूर्वकालवर्हीताभाभेय प्रवति यद्गृहपूवकत्वा दुदीरबायाः अतउक्त अतीतकालसमयपरीता मुदीरयन्तीति यत्तमाकाणं गृहीप्यमाकागा बायवहीतत्वा दुदीरबाप्राव अतउक्त ॥ नोपमुप्यकोत्यादि ॥ वद

प्यसकालसमपुगिराहति गोक्षुणागयकालसमपुगिराहति १ णेरइयाणजनेजेपोगला तेयाक्ममप्राएगहिणउदीरति तेकि तीतकालसमयगहिणपोगलेउदीरति पनुप्यसकालसमयधिप्यमाणेपोगले उदीरति गहणसमय पुरस्कृपोगले उदीरति गीयमा तीतकालसमयगहिणपोगले उदीरति गोपमुप्यसकालसमयधिप्यमाणेपोगलेउदीरति णोगहणसमयपुरस्कृपोगलेउदीरति २ एय वेदति ३ णिज्जरति ४ णेरइयाणजनेजीवानुकिच

मनये करीने निववति । गृहेनहीं । णेरइयाच भते । नारकीने हेभयवन् । जेपाय्का । जेपुदगस । तेकाककाताए । तेकास कामेचपचे । उदीरति । उदीरे । तेजितोव्यानसमयगहोए । तेष् पू अतीतकालसमये गुणा । पोम्बे । पुदगस । उदीरति । उदीरे । पनुप्यसकालसमये । वर्तमानकालसमये । वेयमावे । वेताबका । पागले । पुठनस । उदीरति । उदीरे । गृहसमयकौ पायससमये । पागले उदीरति । पुदगसनी व णोरबाकरे इतिमत्त, उत्तर। गीबमा । हेगीतम । तीवकालसमय गहोए । अतीतकालसमय मुहीत । पोम्बे । पुदगसमते । उदीरति । उदीरे । पीपहुप्य कवाकममर वेयमावे । वर्तमानकालसमये गृहीप्यमाच कज्जता यहीता । पोम्बे । पुदगस तेहनी । उदीरति । उदीरे । बागइचसमय परस्कृते पागमे । जेगृहसमयकौ पुदगस भामन्ये केसमय तेहनेभिवे गृहके जेपुदगस तेहनी । उदीरति । उदीरे । इम । वेदति । वेदे । विज्जेरति । इमवनिखरे वेदमानिकरा मनेपचि उत्पत्तिणहोय बायवो । धिवे कर्माधिकारवचो एषट्ठसुबोक्कहे—वेरइयाचभते । नारको हेम



नाभिगण (मृग्ये रम्ये पापपत्तिरिति) यद्य क्मापिकरादेवेय मष्टसूत्री ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यास्ताच भवर ॥ औवायुकिचलियति ॥ औवप्र  
दनाय दन्तिं तेष्वनयम्यानशील मादितर आचमिति यदाह-ऊरुदेवैस्वकदे शास्त्ररागादिपरिषतोयोग्य । वप्रतिपोमभूतोः क  
मन्त्रेष्टात्ताइयभयम ॥ १ ॥ यव मुदीरपावेन्यापयतमासकमण्डपिपत्तिमित्राचनानि प्राख्यानि मिर्बराणु पुद्गलाना निरनुप्रावीकृताना मात्मप्रदेष्टे

लियकममग्रयति शुचलियकमग्रयति गोयमा जोचलियकमग्रयति शुचलियकमग्रयति १ नेरइयाणन्नतेजी  
धानिक्रिचलियकमउदीरति शुचलियकमउदीरति गोयमा जोचलियकमउदीरति शुचलियकमउदीरति २  
तय वेदति ३ उपहति ४ सकामति ५ निहति ६ गिकायति ७ सर्वसुशुचलियणीचलिय ॥ नेरइयाणन्नते  
जीवानु कि चालियकममणिज्जरेति शुचलियकममणिज्जरेति गोयमा चलियकममणिज्जरेति गोशुचलियकमम

ममन् । औवापा । ज्ञानप्रदेगवको । विनित्यव्य । सर्वसूत्रम ते । वधति । श्वे पञ्चा । पञ्चदियव्य । औवप्रदेगवको । सर्वसूत्रो तेकम । वधति । वी  
दे । इतिप्रय उत्तर । यावमा । जेगोतम । पाचलियव्य । तेजसकमने यमिकरो चलितकम । वधति । वधितव्य । पञ्चदियव्य । पञ्चदितकम । वधति  
वधि । एमूचपहिमोऽम्नो १ । वीरइयाणन्नते । आरको जेभनवन् । औवापो । औवप्रदेगवको । विचलियव्य । वलितकमनो । वदौरेति । उदीरवाकर  
पचनित्यव्य । पचन । औवप्रदेगवको पचनित्यकमनो । उदीरेति । उदीरवाकर इतिप्रय, उत्तर । यावमा । जेगोतम । औवप्रदेगवको उदीरेति । वलित कम  
नो उदीरवा करेनको । पचलियव्य । पचनित्यकमनो । उदीरेति । उदीरवाकर एवौजोपचकको २ । एव । इम । वेदेति । वेदे एवौजो ३ । उवधि  
ति ४ । जेभनवन् । मकामेति ५ । मकामे । विचलियेति ६ । धारणो । विचलियेति ७ । निष्ठाचे । सण्वेसु । एवमेविविदे । पचलित । पचलितकमनेवो  
जोचनित । मजोचनितकर्म ८ । द्विदे पाठमो मूचकपेदे-वेरइयाणन्नते । आरको जे जेभनवन् । औवापो । औवप्रदेगवको । विचलियव्य । पचलित  
कम । विचलियेति । विचले । पचनित्यव्य । पापचलितकर्म ८ । विचलियेति । विचले इतिप्रय, उत्तर । जेगोतम । पचलियव्य । वलितकर्म । विचलेति ।

त्र्यः ज्ञानं माच निपया दृष्टितस्य काम्यो मापक्षितस्येति इह सकृद्वर्णीयाया धन्योक्ते त्वादि ज्ञातितार्थां केवलं मुदयशब्दे नोदीरवा  
 युधीनति उक्ता नारकवक्ष्यताया अथ यत्तु विमुक्तिदेवकमनगता असुरकुमारदत्तव्यतामाह ॥ असुरकुमारादभित्यादि ॥ तत्रासुरकुमारयक्षप्रता  
 नारकयक्षप्रताद्व्यता, यतः ॥ ठिइइसावाङ्गारेत्यादि ॥ गाथोक्तानि धूशवि ४० ॥ परिणयपिएत्यादि ॥ गाथायष्टीतानि ६ ॥ जेइयपिएत्यादि ॥  
 माया परोतानि १८ ॥ बंधोदयेत्यादि ॥ मायायष्टीतानि ८ ॥ तदेव द्विगुणतिः सूशवि नारकप्रकरबोक्तानि, त्रयोविंशता असुरादिप्रकरबोपु सुमानि

णिज्जरेति ८ ॥ गाहा ॥ यधोदयवेदोवह सकमणणिहृष्टणिकाएसु । अचलियकममनुजवे चलयजीवाउणि  
 ऊरए ॥ १ ॥ असुरकुमाराणजते केवइयकाल ठिई पखुत्ता गोयमा जहसुणदसवाससहस्साइठिई पखुत्ता

निजरे पदि । चापचनियकथ । चैवहितकथ । निजरेमही एपाठसूचकथा ॥ इहगाहा । सगृहबीगाबाकहेडे—वर्षति । नवाकमना गृह  
 १ । उडव । उडवतेविपाक वेदनकथ उडवेमही पाज्यो ते पाकबी उडयेपाचीवे तेउदीरवा २ । वेइ । तथा वेइवो ३ । अवह । कमनास्त्रित्वादि अथ्यव  
 माव नियेपजरोनकत्वं ते पपमन ४ । सकने । मनेषकमते पचरेषपवे सकमावे ते सन्नामपकहीये ५ । तड । तथा । बिइत । वोखरा पुदय  
 मना सांभानादि समूहकरी धारवू ते निषण ६ । बिआए । वोखरावे पुदय तेमाहीमाहि एकीभावकरीवे एनिकापन जिनसूरीनो समइ पन्विचू त  
 पावे वूटो एकीभावेकांति तिम ए सातने विवे ७ । पचबिमबभतभने । पचवितकसंखोवे पने पाठमी सूष निषरा । चखिव । चखितवर्मे । जीवापी  
 जीवपदेगबो । निखरए । निखराकरे ८ एनारकीनो यत्तव्यताकही ९ विवे पचबीस दडव कमागत असुरकुमारनो यत्तव्यता कहेडे—असुरकुमारा  
 १० । पमदनिक्काबने तिदे अपमा पने कुमारनो परेखडे तेइया देव त असुरकुमारदेव कहीवे, असुरकुमारनो । भते । हेमगवन् । केवइयकाव । केत  
 माकासनी हिइ पवत्ता । स्थिति कही इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । जेनोतम । कहेकेण । जवव्यता । दसयाससइस्था ॥ दससइसवयनो । हिइ पवत्ता ।  
 स्थिति कही । उक्तासेवमातिरेगसामराकने । उरउएवकोतो एवसामरोपम म्माभेरो स्थितिकही ते उत्तरयेयोना यखोन्ने प्रायोने, जायवो । वसो गो



गणिष्ठासि एय । तत्पण जेसेष्ठाणाचोगणिष्ठासि ए सेष्ठाणसमयस्थासि एयिहाएष्ठाहारठेसमुप्यजइ । तत्पण जेसेष्ठा  
 नोगणिष्ठासि ए सेजहणेणधउत्थनत्तस्स उक्कोसेणसाइरेगस्सवाससहस्सस्सस्थाहारठसमुप्यजइ । असुरकुमा  
 राणर्त्तत्तेकिमाहारमाहारोति गोयमा वद्धत्तअणतपएसियाइवसाइ खेसकालजायपसुवागमेण सेसजहाणेरइ  
 याण जात्र तेणत्तेसिपोगलाकीसत्ताभुज्जोनुज्जोपरिणमत्ति गोयमा सोइदियत्ताए सुअत्ताए सुवत्ताए इठ

निवत्तिनवरोमी ते पमागनिवत्तित वहीये । पमाभोग । पमावत्ता पाहार ते पनाभोगनिवत्तिन वहीये ।  
 तत्तत्त । तिक्खि पाहारनहि, वइसे वाक्कासकारे । जसेपमाभाजिक्खित्तिएसे । जेकोप पमाभोग वयज्जावता पाहारनकरे ते पनाभोगनिवत्तिन  
 पाहार । मेअकुसमव । ते जोव समवसमय प्रते । पविरहिण । पविरहितयका करे तेइने समवे २ पनाभोगनिवत्तिन । पाहारउ । पाहारनु पमे  
 समुप्यजइ । उपमे । तत्तसंवेसे । तिक्खो १ पमाभोगनिवत्तिन । पामने जावता पाहारनो निवत्तिकरे । सेअइयेव । ते जवसवकीतो । पसवमत्त  
 म् । पतुअमत्तए एक उप वाननो संअणे एकदिनेपाहारकरो पहे बीजोदिन पतिकमो बीजेदिनवहो पाहारकरे । उक्कोसिप । उठउठवकीतो । साइरे  
 मत्त । नातिरेकाई पदिक् । वासवइसइ । वयसइसे । पाहारउ । पाहारनोवाहा । वसुप्यजइ । उपवे पतुअमत्तए जवसविक्रिति पात्रयोहि पनेसा  
 धिकवय सइसइ ते उरकटक्खित्तिपात्रवो जाववो, ववो गीतम पूइसे—अनुरक्कमापपमत्ते । अनुरक्कमार हेमगवत्त । किमाहार । कोइ पाहारमत्त  
 पाहारतेति । पाहाररेमुवे इदिमत्त, उत्तर । मीयमा । हेगीतम । इवपपो । इवववो । पवत्तपएसियाइवसाइ । पनतपदेयाअव इवपत्ते पाहारि । कत्तकास  
 भावपववागमेय । सेपकास भाववो किम योआमापाववत्त पवववा रोआलपांगमाहि कइसे — तिम विचारवो । सेसं । ग्रिय वावता । जहा । जि  
 म । बेरइवाय । नारकोने पूवकका विचार तिम इहीयवि करवो । जाय । जावत्त । तेव । तेकारपववो । तेसिं । तेअसुरकुमारदेवताने । पीगमहा । पुट  
 मत्त । पयापववम कीवता । मुक्काइ । जिसेतेरे वारवार । परिपमत्ति । परिपमे पुटहीय । इमपूव्वा, उत्तर । पोयमा । हेमीतम । सोइदियत्ताए

[illegible]

मम जहमोणमसराइयीयाण  
उक्कोसिणमज्झपक्काहस्सण्णमातिवा पाणमातिवा ऊससतिवा नीससतिवा ।

पागव्हमाराणचतुंश्वारणी हता श्वाहारणी । पागव्हमाराणचतुंश्वारणी हारठेसमुप्यज्झइ गीयमा

पागककुमाराणदुयिहस्थहारेपयन्ते सजहा स्थानोगणिष्ठास्तिएय स्थानोगनिष्ठास्तिएय । तत्यणजेसेस्थणानोग

नामकमाराचभते । नामकमारादेवते हेमगवन् । केदारकाष्ठपाचमतिथा ४ । केतसेकाचे सासाक्षात् भवे इतिप्रश्न । उत्तर । गावमा । हेमोत्तम । जव  
जेवमतपद्मकाच । अध्ये सते स्नात्वा सासाक्षात् जाच्यो जवत्यस्मिन्ति पायसीने । उवासेवमुद्रतपुद्रतपाचमतिथा ४ । उरकाष्टकाको ती सेवोससे  
तिद्रुत्तर नामाध्यासे एव मुद्रत ते प्रयकजे केववो माढो भवताई सस्नाद्विषमो विहातमाचि एवका संघाछे ए उरकाष्ट स्मितिर्माचमोने हुवे, वही मीत  
म पूढे—वागकमाराचभते । नामकुमारने हेमगवन् । पाचारणी । पाचारनो वकाचे ? इता । किम नू कचे ते तिमज इसे कचे ईता इही कहीयेछि  
पाचारणे । पाचारनोकाका, वही मीतम पूढे—वागकुमाराचभते । नामकमारने हेमगवन् । केवइयांकाष्ठपाचारणे । केतसेकाचे पाचारनो इच्छा  
ममुपप्यइ । अपचे इसे पूद्याचका उत्तर । गावमा हेमोत्तम । वागकमाराच धुविचे पाचारणे पछते । नामकुमारने विहुंभेदे पाचार कजो । तजका । ते  
कहेछे—पाभाभनिवर्तिएय । पर्यासा वकाचे तदकावकाचे जाचता पाचारकरे ते आभोगनिवर्तित । अवाभोमनिवर्तिएव । जपकमाने समये व  
पर्यासा वकाचे पचवा जाचता पाचारकरे ते अनामाभनिवर्तित । तत्त्वसेसपकाभोगनिवर्तिए । तिर्का जे पकाभोगनिवर्तित पाचारकरे । सेचण  
ममयदिदरिद्र । तेओव ममय मते अविदितका करे निरतरकरे । पाचारणे । ते अविच्छिन्नपणे निरतर पाचाराभिधाय । समुपप्यइ । जप  
व । तत्रने छेने पाभाभनिवर्तिए । तिर्का जे आभोगनिवर्तित पाचार करे । सेअइसेव पचतमस्तथा । ते जघव पचुंयंमत्त एकांतरे पाचारनो इच्छा  
अपने । उवासेव दिवसपुद्रतका । उरकाष्टकाकोती दिवसपुद्रते केवोमाढो भवताइ एवका कहीजे तेतसे । पाचारणे समुपप्यइ । पाचारनो इच्छा व

मन्त्र्य उद्गाविशेषः समप्रमसिद्धः ॥ एव सुवक्त्रुमारारुहति ॥ भाग्यकुमारारुहति स्थित्यादि वाच्यं इत्यत्र कियदुर यावद्वाच्य  
मित्याह ॥ आयपविपद्गुमारारुहति ॥ यावत्करुणा विपद्गुमारारुहतिपरिपद्गु एषां चेद्वायक्रमो वसेयः - असुरा १ नाम २ सुवक्त्रा ३ विज्जू ४ अग्नी  
य ५ दीव ६ उवदीप ७ । दिसि ८ वाक् ९ यक्षिमाविप १० दसनेपाजवववासीव ॥ ११ ॥ अथ नवमपतितवक्त्रुतानन्तर दशवक्त्रुमादेव पृथिव्यादीनां  
स्थित्यादि निरूपयन्माह ॥ पुत्रोत्पत्त्यादि ॥ अथ यावनस्यतिसूत्रा कवर ॥ अतोमुद्रुतति ॥ मुद्रुतस्या सा रत्नमुद्रुते नित्यमुद्रुतमित्यर्थः ॥ उक्तो  
मन्त्रं वावीत वाद्यमधस्तादिति ॥ यदुक्तं तत् परपरिषी माभित्या वक्तव्यं यदाह - सप्तदश १ सुद्र १२ बालुय १३ मर्दोविला १४ सक्कराय १५

णिहति ॥ सेय्यगुसमयस्यविरहिण्युहाहारं समुप्यज्जइ तत्पणजेसेय्याजोगणिहति ॥ सेजहसेणचउत्त्यजस्य  
उक्कोसेणदिवसपुक्कासस्सय्याहारं समुप्यज्जइ सेसजहा असुरकुमाराण जाय वलियकम्मणिज्जरेति ॥ एव सु  
वक्त्रुमारणयि जाय थणियकुमाराणति ॥ पृथविकाइयाणभते केवइयकालठिईपक्खसा गीयमा जहसेणस्य  
तोमुज्जत्त उक्कोसेणथावीसवाससहस्साइ । पुठविकाइयाणभतेकेवइयकालउत्सय्याणमंतिवा पाणमतिवा ऊ  
पजे । मम जहा । वाजता मवं विस । पसरइमारारं । असुरकुमारो कक्षा तिमसवक्त्रो । काव वक्षिं कर्ष । बावत् वक्षितकम । विव्वरेति । नि  
वरे वयकरे इत्यह । एवं सवक्त्रुमारारुहति । इम सुवक्त्रुमारोनेर्षि कर्षसा । काववक्षितकमारारुहति । बावत् स्थितिकमार ताई कर्षो । ए सुवत्  
यतीनो यत्तवक्त्राजही ॥ द्विजे वक्त्रकमारभत इविवीनो वक्त्रवक्त्रा कर्षेहे - पुठविकारुवाय मंते । इविवीवायनो वेभगयन् । केतवाकासनोक्किति कर्षो  
इतिवद । उत्तर । पोयमा जहसेवं अतामुद्रुत । वेगीतस । जवमवक्त्रो अतमुद्रुतं । उक्कोसेववावावीसं वासवक्त्राह । उक्कटवक्त्रो वावीसवक्त्रवय  
परविवीवावपात्री कर्षो । पठविकाइकाचंमंते । इविवीवाव वेभगयन् । वेवरवक्त्रावक्त्र पाणमतिवा । केतवेकाने सावाध्याम के मंते इसे गीतम  
पुटोयवा भववंग उत्तर कर्षेहे - मायमा वेमायाय पाणमंतिवा ॥ वेगीतस । केवकां वासीवाकनो मर्दोवाजर्ही विविध माया काव विमान एतवे

सरपुद्गी २२ । एतं पारसबोधम् सोलसछन्दारवाकीरुति ॥ १ ॥ वमायाएति ॥ विपमा विविषाणा सात्रा कासविमानो विमात्रा तया इदमुक्तं  
 त्रयति विपमकासा पृथिवीकायिकाना मुञ्जासदिक्किया इयत्तोसा इति न निरूपयितुं शक्यते ॥ जहानेरहयावमित्यतिदेशान् ॥ जेतुं असक्तं  
 आनयमो गात्राद् बालसुं चककरिदंयाह इत्यादि ॥ दृश्य ॥ मित्रायाएव छद्दिशिति ॥ व्यापात आहारस्य लोकात्मनिर्गुटेपु सुलभयति नान्यत्र  
 ततो निरुदज्यो त्वय पदसु विषु कपं चतसपु पूर्वोदिदिशु ऊपु सपय पुद्गलपदं करोति तस्य स्थापना ॥ वायापयपुषति ॥ व्यापात म्रती  
 त्वमापातय निरुपु तत्र ॥ विपमितिदिशिति ॥ स्यात्तद्विषयसु विषु आहारयइव लभति, कथं यदा पृथिवीकायिको जसने उपरितनेवा

सुसतिवा नीससतिवा गोयमा वेमायाएस्थानमतिवापाणमतिवा ऊससतिवानीससतिवा । पुढाचिकाइयाण  
 जतेश्याहारठी हतागोयमा आहारठी । पुढाचिकाइयाणजतकेवहयकालस्सथाहारठेसमुप्यजाइ गोयमा छ  
 णसमयश्चिविरहिणुस्थारठेसमुप्यजाइ । पुढाचिकाइयाणजतकिमाहारमाहारेति गोयमा दसुठंजहाणेरइयाण

दृष्टिवीकाराने एतवेकासे साक्षात्साय यइवो कचो सकोयि मही ॥ यवो यीतम पूबेहे । पुढविवाइवाचंभते पाहारठी । दृष्टिवीकावना जीवने डेम  
 वरु । पाहारठीएप्पावे । मयनत कवेहे—इतामोयमा पाहारठी । इतीतम दृष्टिवीकाइया पाहारनी पवीहे । पुढविवाइवाच भते सेवइव । पु  
 विभो कारवा जोइने डेमगवन् । जेतवे । कानस पाहारठे समुप्यार । कास पाहारठीएप्पा अपले इतिप्रय उत्तर । जीवना पणसमयं पविरहिण  
 पणुनभने सातत्वपने पविदित निरुदे । पाहारठे समुप्यार । पाहारायिक्काव अपले । पुढविवाइवाचं भते । पृथिवीकाइया जीव डेमगवन् ।  
 किमाहार माहारति । सं पाहार पाहारे लो इत्यव इतिप्रय उत्तर । गावमा दम्भपोववा वेरइवाचं । डेमतीतम । द्रव्यको किम नारकीने पूर्वोक्ता  
 तिम इतीयनि जानवो । विक्कायाएव छद्दिशिकावायपद्वय । आधात पाहारठी साक्षात्तमिज्जुठेविणे संभवे बोवेजानके मही तेमाटे लोवना जिम्बु  
 टटानो बोवेजानके छद्दिमिना पाहारठेते किम पूर्वोदि ॥ ऊव १ पथो १ एव छद्दिमिनो पणसमयइव करे व्याधातपात्रो सोकातने खे । सिव



कोचे दस्थितः स्या तदा । पक्षा दसोक्तः पूर्ववर्षिकयोः शासोक्त इत्येवं तिवृक्षा मसोक्तेना वृत्त्या तदव्याप्तु तिस्रपु पुटलपञ्च मेवमुपरितनकोचो  
 वि वाच्यं यदा पुन रप उपरि शासोक्तो जवति तदा जतसपु विशु यदानु पूर्वोदीना यक्षां दिशा मन्यतरस्या मसोक्तोप्रवति , तदा पञ्चस्त्रि  
 ति । फासतुं प्रकटावति । इह ककशादयो कृत्वाः स्यर्वा वृक्षयाः ॥ सेसतदेवति ॥ अय प्रवितावक्षेप तथैव , यथा नारकाणां तथा पृथिवी  
 कायिकानामपि तथैव ॥ आह जल सुखाह आहरेति ताहं कि पुठाह अपुठाह अह पुठाह कि ठंगाडाह इत्यादि ॥ नावतति ॥ नामात्वं  
 भेदः पुनः पृथिवीकायिकाना मारकापक्षया इतर प्रतीह यथा ॥ कश्चात्तमित्यादि ॥ तत्र ॥ फासाहिति ॥ स्पष्टं कुवन्ति स्पष्टायन्ति स्पष्टोन्मि

गिष्वाधाएणठदिसिधाधायपहुच्च सियतिदिसि सियपचदिसि वसुतं कालनीलपीशुलोहियहा  
 छिहसुक्लिण गधतं सुभिगधदुरन्निगधाइ रसतं तिस्राइ फासतं करककाइ ८ । सेसतहेव पाणस कइजाग

तिहिति । वदाचित् तां दधिना आहारले विचारविचारे पूर्वोक्तारका जोष मोचसे तदाजपरसेषूष अपवे विचारे मोचे पक्षाक पूर्वोदि विदि  
 मिये पक्षाक इवे तिवारे तौनदिधिना आहारले तथा । सियचउदिसिधरपचदिसि । अपरे तथा मोचे पक्षाक नये तिवारे चरिदिधिनो आहार  
 ने तथापि छडिधिमोचिहो जनेरौ एकदिगे पक्षाकइवे तिवारे पचदिधिना आहारले विहो काकांत जिम्बुटइवे तिहां विचारे भजनाकरवौ । वस  
 पाकावनीनपोपनाडिभइसडिक्काय । पचिहो आहवा यनवेले तेकहेव - वर्यवोकाया आवायतु १ मोवा मोक्कमससरोखा २ पोवा सुवच  
 मरोडा ३ काहित इसपाकमन मिहमरोग्ना ४ कककटिब रमाधिक सरोखा ए पचप्रकारे पइसआइरे । गवथासुभियं २ । गवचकी सुमय १ दु  
 गीध २ जेभनकारे आइरे । रसपोतिताइ ५ । रसवो तिक्तादि पोष सूठ आदिसेह तेनोपरे । कामपाकमहाइ ८ । अयथो इहं ककये आदिदे  
 कचपसत पाठेरगुक्का । मेर्मतजेव पाचन । ककवावो गेप नारकोनोपरे कावो इतकाविगेन आहारपात्री एव । कइभाग आहारैति । केतकामान  
 आइरे । कइभाग फासाइ ति । केतका भाय आसाइ इतिप्रथ सतर । गोचमा । जेमोतम । पचसेवइथाग आइरेति । पुचसने पचंजातमो भा

येवाहारापुद्गतानां कतिनामं स्पृष्टवन्तीत्यर्थः अथवा स्पृष्टवन्तीत्या प्रासयन्ति स्पृष्टव्या आहवति गच्छ मृत्युपलजभाहति  
कामाहति ॥ इदं मुक्त भवति यथा रसमेन्द्रियपर्याप्तत्वा रसमेन्द्रियद्वारेणा हारमुपपन्नत्वाणा आश्वाद्ययन्तीतिव्यपदिश्यते, एव मेते स्पृष्टवने  
न्द्रियद्वारभवति ॥ सर्वज्ज्ञानेन्द्रियार्थं । पुढविश्रयावपन्नते । पुढाहारियायोगत्वा परिक्रया इत्यादि ॥ प्राग्वच्च व्याख्ययमिति ॥ एव चाव  
यवमश्रुवाइयाकृति ॥ अनेन पृथिवीकायिअश्रुमिवा व्यापिकादि इत्यादि सूत्राणि समानी त्युक्त, स्थिती पुन विंशेपो तएवाह, नवर ॥ ठिइ  
तलपत्ता जाअरसमिति ॥ तत्र अपन्या सर्वया मन्तमुंहुत भुक्तत्वा त्यपा सतवर्पसइस्मादि, तेजसा महोरात्रयं, वायुना त्रीचि वर्षसइस्मादि, वनस्पतीनां

आहारेति कइनागफामाडति गोयमा असखेज्झागअहारेति अणतजागफासाइति । जाव तेणपीग्गला  
कीसत्ताएनुज्जीनुज्जीपरिमति । गोयमा फासिदियवेमायाएनुज्जीनुज्जीपरिमति सेसजहाणेरइयाण जाव  
पोअचालियकम्मणिजेरेति एवजायणस्सइकाइयाण णवर ठित्तीयसेतद्धा जाजस्स उस्सासीवेमायाए येइ

[illegible]

इति, उक्ताचेयं पृथिव्यादिभिरुक्तं—वादीसाहस्रसंख्या १ सप्तसहस्रसंख्या २ तिस्रिहोरता ३। वाएतिविश्वसंख्या ४ दशवाससहस्रिमाहसंख्या ५ ॥ १ ॥  
 येइदियावटिइनिषिद्धकसोवेमायाएति ॥ वचन इतिशेष स्थितिश्च द्विभ्रियावां द्वावधवयोश्चि, द्विभ्रियावां माहारसूत्रे, यदुक्तं—तत्त्वसंज्ञे  
 मे यान्तोगनिर्दिष्टे ॥ येवं असंख्येयसंज्ञेय वेमायाए आहारठे समुप्यज्जइति ॥ तस्या यमर्थः, असङ्कतसामयिक आहारकालो ज्ञ  
 यति सवा वसुप्यस्यादिद्वयो प्यसी तत्त उच्यते यान्तमीर्षुर्तिन सप्तमि विमात्रयान्तमुर्तसमयावट्कालत्वरया संज्ञेयमेवत्या विति ॥ येवं

दियाणाठितीनापियद्वा कसोवेमायाए । येइदियाणस्याहारपुच्छा अणानोगणिह्वसिपुतहेव । तस्यणजेसे  
 अणानोगणिह्वसिए सेणअसखेजसमइए अतोमुज्जतिपुवेमायाए स्याहारठेसमुप्यज्जइ सेसतहेव जाव अणत  
 नागस्यासायति । येइदियाणजतेजेपोगलेस्याहारत्ताएगिरहति तेकिससेस्याहारति णोससेस्याहारति गीयमा

ज्जावतो तोन अहारादि वाज्जावतो तोनसहस्रवप वनसोत्तायतो इयसहस्रवप पविषोपाविरेइ पचिरेतो भेत्ति किति कवेहे—वादीसाहसं  
 ख्या १ सप्तसहस्रार २ तिस्रिहोरता ३ वाएतिविश्वसंख्या ४ दशवाससहस्रिमाहसंख्या ५ पंचकावरतो वससंख्याकरो ६ दि  
 वे इरद्विवादिक्वेहे—येइद्वोनो किति वारेवरसो कहनी । ज सासवेमायाए । ससो सामपवि मर्बादा रहितहोय । येइदिवाच पाहारि पुच्छा ।  
 मयादिने पाहारतो पुच्छा पाहारतो मन्त्रकोपी । अणानोविविधतिपु वसेव । यथावता पाहार करेते सामाचारतो अपेसायेकसं अणववा ओवा  
 हार तो समयाहेनेइ तोत्रसोवं कहनी । तत्त्वं जेवे आमजविज्जतिपु सेवंपसेजसमइए । तिहाजे जे पाहारकरे तेपसंज्ञातसमयिक पाहारका  
 सपुवे तेता एइमल्लिहोपासवदि पसंज्ञात समयिकहे तेमाटेक्वेहे—अतोसुप्तिहेमावाए पाहारसेसपुज्जइ । तिहापवि वेमावावे अंतमुक्कतने वि  
 वे समय अंसंज्ञात पवेकरी । समतवेव । ओववावता तिमकोवकहयो । जावपचंतभावपामावति । यावत् पूर्वोक्तसंज्ञकयो अनंतमाय आवादेताक  
 वे कहनी । येइदिवाचभते जेयोक्वे पाहारताए गिरहति । येइदिय वेमवक्क । जेपुइवक पाहारपवे वहे जाय । तेविं अणेषावरिति । तेवं सर्व

दियाचं बुद्धिरे आहारे पकते सोमाहारे पखेवाहारेयति ॥ तत्र सोमाहारः सर्वोपतो वर्षादिषु यः पुद्गलप्रवेग्य असूबादवगम्यतइति , प्रवेपा  
हारलु कावसिक सत्र प्रवेपाहारे बहवो शृणुयादव सरीरा वृत्तवर्षिस विष्वसन्ते स्वीत्यसीष्माज्यां अतएवाइ ॥ से योगले पक्खेवाहार  
साग तेरंतीत्यादि ॥ अबागाइचयं मागसइस्साइति ॥ असङ्कयामाभा इत्यर्थे ॥ अबासाइज्जमाकाइति ॥ रसनेभिप्रयतः ॥ अपासाइज्जमाकाइति  
अपानंभिप्रियतः ॥ अपरत्यादि ॥ अत्यद तदेवं वृष्यम् ॥ अपरेकपरेरिंते अप्यावा अडुयावा तुहावा विसेसादिमावति ॥ अयत्तम् ॥ सवृत्तोवापो

येइदिपाणदुयिहेअ्याहारपयस्ये तजहा लोमाहारेयपस्केवाहारेय जेपोग्गलेलोमाहारस्यएगिगहति तेसस्येअ्यप  
रिससिएअ्याहारंति जेपोम्मलेपस्केवाहारस्यएगिगहति तेसिणपोम्मालाणअ्यसस्वेज्जइनागअ्याहारंति अ्यणेगाइच  
णनागसहस्साइअ्यणासाइज्जमाणाइ अ्यफासाइज्जमाणाइ विरुसमावज्जइ एएसिणजंतेपोग्गलाणअ्यणासाइज्ज

[illegible]

भगता अवासायुज्जमावेत्यादि ॥ ये अमास्याद्यमानाः क्षेत्रस रसनेन्द्रियवियया स्ते स्तोका आरुपुष्पमाद्याना भगन्तज्जागयर्तिन इत्यप्य , ये स्वरुपुश्य माद्याः क्षेत्रत्वं स्पष्टनदियया स्तेननुबुद्धाः रसनेन्द्रियविययेत्यः सकाद्यादिति ॥ तेर्ददियधर्तरदियायं भावतं ठिर्हयति ॥ तथेद ॥ अहोरेख अ तोमुपुत्तं उक्तोसेख तर्ददियायं यदुब पय्यावराहदियाधुबर्तरदियाय खमासा ॥ तथा आहारेपि नामाख तत्राप ॥ तेर्ददियाय प्रते । जेपोग

माणाण स्फुफासाइज्जमाप्पाणय कयरंरंरुहितोष्प्याथा यज्जलावा तुप्पावा विसेसाहियावा गोयमा ससुत्थोवा पोग्गलाच्चणासाइज्जमाणा स्फुफासाइज्जमाणाच्चणतगुणा वेहदियाणनतेपोग्गलाच्चाहारप्पाएगिरुहति तेण तेसिपोग्गलाकीसप्पाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति गोयमा जिस्सिदियफासिदियवेमायाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति । वेइदियाणनंतपुस्साहमरियापोग्गलापरिणयातहेव जाव खलियकम्मणिज्जरेति । तेहदियच्चउरदियाणणान्त

[illegible]

ने पापराताय मेवर्हति इत्यत आरभ्य तावत् पूत्रं वाच्य यावत् ॥ अथेगादृष्य मागसहस्वाह आवापाद्व्यमावाह इत्यादि ॥ इत्यत्र श्रीमि  
 पमूत्रावेत्तया ज्ञाप्यायमावाहीति अतिरिक्त भवतो भावात् एव मत्पुत्रदुस्त्वयूत्रे परिबामयूत्रे परिबामयूत्रे ॥ अस्मिन्दिप  
 साय पाविदियसाय ॥ इत्यधिकमिति मानात्वमिति पञ्चमिदित्यर्थसूत्रे ॥ ठिइ अस्मिन्दिपति ज्ञायेव अतोमुत्त उक्तोवेयं तिक्त्रिपमिष्ठवमाहं

ठिइए जाय अथेगादृचर्जगसहस्वाह अथणावाहजमाणाह अथफासाहजमाणाह अथि  
 समाधज्जति । एएसिणनेतेपोगलाणअथणावाहजमाणाण अथफासाहजमाणाणायपुच्छा  
 गोयमा सवत्योवापोगलाअथणावाहजमाणा अथफासाहजमाणाअथणतगुणा ते  
 इदियाणघाणेदिय जिस्मिदियफासिदिय वेमायसाए जुज्जोनुज्जोपरिणमति । अउरिदियाणअस्मिदियघाणि

मानात्व म्पिति ते इम अहवेवं अतोमुत्त उक्तोवेयं इदियाव सवापवदिवाह ४८ दिनवठरिदिवाह अथासापाहारनेविमेषि मानात्व वाच्य अवेगाह  
 एवंमानमहस्वाह । यावत् अनेव इतावता अथा मागसहस्व । अथावाहव्यमावाह । अनावाहमान ते प्राचेद्विये । अथावाहव्यमावाह । अनावाह  
 मानते रत्तनेद्विये । अथामाहव्यमावाह । अस्मन्मानते अथनेद्विये । विस्वसमावज्जति । विस्वसविनायपति । एएसिचं भते । एहने जेमगवन् । पोम  
 नाच अथावाहव्यमावाह । पदमसान अनावाहमानने । अथावाहव्यमावाह । अनावाहमानने । अथावाहव्यमावाह्य पुच्छा । अस्मन्मानने मा  
 हामीदि अथ अत्तुल इत्यादिपत्र उत्तर । नावमा । वेमोतम । सवत्यावा पावगता अथावाहव्यमावा । सवतो वावा पुत्रव अनावावमान प्राचेद्वि  
 ये । अथामाहव्यमावा अनामान । अनावाहमान रत्तनेद्विये ते अर्जतगुणा । अथासाहव्यमावाअथतमुवा । अस्मन्मान पुत्रत अथनेद्विये ते अर्जत  
 गवा । तेरिदियाव । तेरिद्वोने । प्राचेद्विये । जिस्मिदिय फासिदिय । जिस्मिद्विये अथनेद्विये । वेमावसाए । अनेकविष वाकविभागपचे । मु  
 ज्जा २ परिणमति । आरवार परिचसे । अउरिदियाव । अठरिद्विये । अस्मिन्दिप । अठरिद्विये । अठरिद्विये । अठरिद्विये । अठरिद्विये । अठरिद्विये ।

इत्येतद्रूपा स्थितिं प्रब्रूयता ॥ वस्त्रासोसि ॥ उच्छ्वासो विमाधया धाव्यइति ताया तियङ्गपम्बेन्द्रियाया माहाराध्यप्रति यदुक्तं ॥ सक्रोदेऽहं कुरुजत  
स्वप्ति ॥ तदेवकुर्वताकुर्वतिर्यहं सज्यत, मनुष्यसूत्रे यदुक्तं भट्टमजस्तस्येति तद्वक्तुर्वोदिभियुगलनरा नाभित्य समवस्यमिति, ॥ वायमतराण

द्वियजिप्रिदियफासिदियस्ताए नुज्जोनुज्जोपरिणमति । पाचिदियतिरिक्कजीणियाणिठिईनणिऊण ऊसासीवे  
मायाए ध्याहारोष्णगानोगणिद्धिसिए ध्यणुसमइयथ्यविराहिते ध्यान्नोगनिद्धिसिने अहरेणअतोमुज्जत्त उक्कोसेण  
वठन्नत्तस्स सेसजहाचउरिदियाण जाव वलियकम्मणिज्जोरेति एवमणुस्साणावि णत्तर ध्यान्नोगणिद्धिसिए जह  
येणअतोमुज्जत्त उक्कोसेणथ्यठमन्नस्स सोइदिय ५ वेमायाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति संसतहेव जावचलियक

पासिदिबत्ताह । समयेक्षिते । भुज्यामुज्यापरिबर्मेति । दार २ परिबर्मे । यथेष्टितिरस्त्वजोपिवाच । यथेष्टितिर्येवबोनिक्ते । द्विदं भविज्जब । स्मि  
तिमते बहवो ते जहसेवंपयोमुद्रुत उबोसेव तिषिपिषिपावमां पक्षयोक्किति बहोये । अवासेवेमावाप । उत्साव विमाभाये मर्वादार्दित बहवो ।  
पावाटोपचामागदिभ्यन्ति । आहारते मज्ज ते चामाग पक्षापपवे बरता । पक्षसमदय अपरिदक्षिणा । अनुसमय प्रतिसमय तेसावज्जवाववानेपवे  
दिरव विना ते निरतरकरे । आभोगनिव्यन्तिपा । आभोने जावपवे करे ते पाभोगनिव्यन्ति बहोये । जहसेव पंतोमुद्रुत । जहसेवो पंतमुद्रुत करे  
उबोसेव हइ भत्तव्य । उतहटवो पटमज्ज ते देवकुवत्तरकुवमा तियेवपायो जाववो । सेसत्रहा पठरिदिवापं । येव जज्जावो बावो ते विम पठरि  
द्रिब जज्जं तिम जावव । जाववस्मिज्ज जज्ज गिज्जेरेति । वावत् जोवपदेमवो वसितजमनो निज्जेरे सयकरे । एव मपुष्ठावदि । इमहीअ तिर्यवमोपदे  
मनुष्येपवि जाववो । यवर पाभागविबन्ति । एतन्ना यिमेय जावना पावारभियत्त करे । जहसेव पतामुद्रुत । ते जहसेव पंतमुद्रुत । उबो सेवंप  
इम भत्तव्य माह दिय । उतहटवा यटमपते एपि वेगज्ज- उतरपुष मनुषपायोवाववा सुगसने इवे पावमा जोव जान तहोव दक्षीय । वेमावाप  
मुज्जा २ परिबमति । वेमावाह दार २ परिबम यरोर पुठकरे । सेसतदेव । येपवाकता तिमवोज । जाववस्मिज्ज जज्ज विज्जेरेति । यावत् वसितजमने

विन्यादि ० पाठमंतरादां स्थितौ नामात्वं ॥ अथममति ॥ स्थितेरवद्यंय मायुष्यवज्जमित्यथा, प्रागुक्त माधारादियसु यथा - नागकुमारदीनां  
नया दृश्यं व्यक्तरादां नागकुमारवाच्यं प्रायः समाश्रयस्तथा, तत्र व्यंतरादा स्थितिर्नप्येव दृष्टव्यं इत्युच्यते, अस्मिन्मति ॥ पत्योपममिति ॥  
जोदमिषापर्ययित्वादि ० न्योतिष्कादा अपि स्थिते रवदायं तथैव यथा - नागकुमारवा, तत्र न्योतिष्कादां स्थितिर्नप्येव पत्योपमादृजग  
नरूपैष पत्योपमं पयस्तदापि कनिति, मत्रं ॥ उरमासति ० केवलं मुद्रायं संपां न नागकुमारसमागः, किंतु दक्षयमायं संपाधाद ॥ लक्ष्म्येय  
मुद्रायुक्तसत्त्वादि ॥ पृथक् विद्वन्मनिति रानवप्यं सप्त पञ्चगव्यं मुद्रायुक्तं सत्त्वा मुद्रताः, यद्योक्तं तदर्थं नववेति, आशारोपि

ममणिञ्जरोति धाणमतराणछिदएगागतस्य ययसेसजहाणागकुमाराण एवजोइसियाणयि पत्रर उस्साओजहणे  
 गमुजतपुजतस्मउक्तासेणविमुजतपुजतस्स आहारोजहणेणदिग्गपुजतस्स उक्कोसेणविदियसपुजतस्स से

निजोत्पत्तये । बाबमगराज द्विदण्डाक्ष । बाबव्यत्यरने पाबुक्षय वर्या सय सरोखु स्थितिने विप जागलभेद जायवो । प्रत्येस कडा बागकुमा  
राच । येव पाहारादिन दनु जिद नागकमारने कप्र निमत्र जायवो व्यंतरने नागकमारने प्राय समानधमख चने स्थिति खवव्य व्यतरने दमसच  
दसव डाकड एकपण्यामनोखे । एवत्रादविगावरि । इसनागकमारनो परे ज्यातियो जायवा स्थिति खवव्ये पण्यामनो पाठमा भाग उत्तखड एक  
पण्यामन नावि वरने पथिज । ववरं उन्नामा खवव्येन मुचनपुहुतव । एतलो विवेद उत्सास खवव्येपवि मुकत पूवता वेववोमोको भवताई न  
पूवज मन्नाखे पविदवो खवव्ये मुहुत श्रीववा । ठाकोपेविमुहुतपुहुतव । उत्तखग्यवो पवि मुकत पूवले सासो त्सायखे रवां उत्तखटेमुहुत पूव  
ने पाठ त्सागत मकत जायवो । पाहारा खवव्येय दिवमपुहुतव । पाहारापवि खवव्य दिवस पूवता वेवो मोको भवताई पूवतासंमोखे तेखवव्ये  
वे तथा लोनदिवस जायवो । ठाकोपेवि दिवस पहुतव उत्तखटापवि दिवसपुवता ते पाठ तथा नवदिग जायवा । संसतवेव । येववाक्यो ति  
मत्र पृठिनीवरे । वेमाथियावदिई माविबथा पोटिया । वेमाभिजनी स्थिति खववो पोथिब एतले सामाग्ये सव भात्रो तेदस खवव्यो एवपण्णोपम



विश्रापितगव तयावाह ॥ आहारोहत्यादि ॥ देमाक्षिणांठिर्द्वित्राक्षिणांठिर्द्विति ॥ भौपिनी सामाग्या साक्षयस्योपमादिवा, त्रयस्त्रिंशत्सागरो  
पमास्ता तत्र अपन्या सीचमे माक्षित्यो एकदा वानुत्तरविमानानीति, उच्छ्वासप्रमादं तु अपन्यं क्षपण्यस्थितिकवेवा माक्षित्ये तरुणु उत्कृष्टस्थिति  
यमास्ता तत्र अपन्या सीचमे माक्षित्यो एकदा वानुत्तरविमानानीति ॥ उच्छ्वासप्रमादं तु अपन्यं क्षपण्यस्थितिकवेवा माक्षित्ये तरुणु उत्कृष्टस्थिति  
ह्य नाक्षित्येत्यर्थं अप्रमादा - तस्य ब्रह्मागारा तस्य ठिर्द्वित्राक्षिणांठिर्द्विति ॥ अतिरेकवाक्येन दर्शिता साक्षेनो विवरण  
प्रत्येनोक्ता तर्हि चैव तिरस्कारवत्प्रता इत्यर्थं केपुचित् सूत्रमुक्तोप ॥ एवठिर्द्वित्राक्षिणांठिर्द्विति ॥ अतिरेकवाक्येन दर्शिता साक्षेनो विवरण

[illegible][illegible]

यस्या दयमेयति उक्ताः मारकादिपरमवत्त्वयते यस्मात्तन्मयूषिकोति आरम्भनिष्पद्ययोगाद् ॥ श्रीब्राह्मणे । नि आचारजेत्यादि ॥ आरम्भो आद्योपपात उपपदकवन्निमित्त्यः सामागयेनवा श्रवद्धारप्रवृत्ति स्तत्र आत्मान मारजन्ते आत्मनावाः स्वय मारजन्त इत्यात्मारम्भा स्तथा परमारजन्ते परेवद्या रभयभाति पतारम्भा स्तदुजय मात्मपररूप मंदुजयेमवाः रजन्तइति तदुजयारम्भा आत्मपरोजयारम्भवच्छिता स्त्वनारम्भा इतिप्रसङ्गः अत्रोत्तर रजटमय मंदर अस्ति शाष्प्याव्ययत्वेन बहुत्यार्य त्यावस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थः अथवा अस्ति अय म्भणो यदुत ॥ एगपति ॥ एकका एके केवने त्यः गोया आत्मारम्भा अपीत्यावा अपिशब्द उत्तरपदपयेद्यया समुच्चये स आत्मारम्भत्वादिवर्मावा मेकात्रयतामितिपादुत्तार्थः । त्रिक्रात्रयतामिति पादनार्थोवा यकायपत्वन कालजदेना वगभाव्य तथाहि—अवाचि आत्मारम्भाः कदाचि त्वरारम्भाः कदाचि मंदजयारम्भा अतएय नो अनारम्भा

आहारुहसएतहानाणयथा एतोआवक्षोणेरडयाणजतेआहारठी जावदुक्ताएनुजोनुजोपरिणमति जीवा  
णजनेकिआयारचा परारचा तदुजयारचा आणारचा गीयमा अत्येगइयाजीयाआयारचाविपररचाधितवुन

३ । परदशवर्षभूते अष्टाष्ट । नारको वैभगवत् । आचारान् अर्धो ह्ये । नाव पुरुषाण भुज्वा २ परिवर्त्मनि । यावत् दु खपदे अमोक्षिपदे चार २ परि  
पदे पदिना । नारकोनो वज्रव्यतामहो ते भारम पूर्वकदे तेमाडे आरभनिरूपय करेहे । जीवाथ मते किं पायारभा । जीवा च इत्ते वाक्कावकारे हे  
भगवन् । स्वजीवना घात आपणपे करे ते आकारभी हे । परारभा । अनेरापास जीवघातकरावे ते परारंभीहे । तदुभयारभा । आपणपेपरवि जीव  
घातकरे अनेरापासेपरिण करायें त तदुभयारभी हे । अकारंभा । जीवनाघात नकरे न करावे न अमुमावे ते अकारभीहे इतिप्रत्य उतर । गोवमा । हे  
गातम । परव गइया जीना आकारभावि । कैरंएक जीव पातासे अर्ध आकारभी परिण ह आपणपेक सकसौने जीवभो घातकरे हे । परारंभावि ।  
परारभीपरिण आदघात करावळ । तदुभयारंभावि । तदुभयारभीपरिण हे पायणपे जीवघातकरे अनेरापासपरिण जीवघात करावे । या अयारंभा । प  
नि अकारभा नही । परवेनइयाजीवा । हे कैरंएक जीव । आचारभा । नही आकारभा । यापरारभा । नही परार

त्रियाग्रयत्य त्वेव यद्ब्रूयात् अथयताइत्यर्थं, आत्मारम्भावापरात्मावेत्यादि अर्थेकस्रजायत्यात् भीमाना जेद मसम्भावयन्नाह ॥ सेकेबडेइति ॥  
 अथ कल कारकनत्यय ॥ दुविहापकृतति ॥ मया चाप्येय केवलिभि रनेन समस्तसुखविदा मताम्रेदमाह अतर्जेदेतु विरोधिवचनतया तेषा मसत्य  
 वचनतापत्तिः पाटनिपुत्रभ्यः पात्रिपायबधिरुदयचमपुसपकदम्बकवदिति, प्रमत्तसयतस्यद्विष्टुजो शुभ्रव योगः स्या त्सयतत्वात् प्रमादपरत्वा चेत्य

यारन्नायि गोश्रुगारन्ना श्रुत्येगइयाजीवा गोश्रुयारन्ना गोपरारन्ना पातदुन्नयारन्ना श्रुणारन्ना । सेकेणठेण  
 नतणयथुच्चुड श्रुत्येगइयाजीवाश्रुयारन्नायि एवपफिउच्चरियहं गोयमा जीयादुविहा पसुत्ता तजहा ससार  
 समाथणगाय श्रुससारसमाथयगुगाय तत्थणजेतेश्रुससारसमाथयगुगाय तेणसिद्धा सिद्धानणोश्रुयारन्नाजाय  
 श्रुणारन्ना । तत्थणजेतेमसारसमाथयगुगा तेंदुविहा पणत्ता तजहा सजयायश्रुसजयाय । तत्थणजेतेसजया

भी चमगयान आइवान नकरावे । जातदुमवारभा । नही तदुमवारभी पापज्जोवधात नकरे पनेरापासपि नकरावे । चकारमा । एतकामाठे चमा  
 रभाहे । मैकचइयभने एवकचद । योतम पूहेवे तेवे चहे वेभयवन् । इमकपू । अत्येयइयाजीवा चारकरमावि । केतकाएव जोवप्राप्ती पात्मारभी पचिहे  
 पाताने पच पारभकरे । एवंपट्टिचरियव्वं । इमकपू पूर्वकत्ता तिमपाहिबू कइवू इमप्रय पायकपचि सबपायि कइवू उत्तर । भीयमा । वेगोतम । जो  
 वादुविहापकृता तजहा । जोव वेपकारना कत्ता मै पचवा पन्व वेवकीये एतवे समस्त तोयिकरना मवने विवे मदनही इमकपू तेकहेहि—संसारसमा  
 रचनाद । पञ्चओग देव १ मनुष्य २ तिरिच ३ नारकी ४ कय चारियतिने विवे संसरचकरे तेसंसारसमापककहिदे । यससारसमावचनाद । यो जा  
 ओय चारिगतिम वेमनाहे एतमि मुक्तिववा ते चमसारसमापक कहिवे । तत्थ च जेते चसंसारसमावचना । तिहा च इहे वाक्कासकारे जेवीव चारि  
 मति कय मसार तिहा पनतोवार भमाभमीने समस्त कसपयकप कानक पायां । तेवसिद्धा । ते पनरिभेदे सिद्ध कवा । सिद्धाचं चो पायारंमा जाव  
 प पागभा । तेमिह पात्मारभी नही एतवे परारंभी पच नही तदुमवारभी पचि नही एतावता सिद्ध कइवा चारथ रचितहे । तत्त्वचं जेते संसारसमा



कारकमिति ॥ यद्विरहपदमुच्यते ॥ इहा यन्मात्रो यदा व्यसयतामा मूर्त्येकेन्द्रियादीनां नास्मात्काकादित्य साक्षादस्ति तथा व्यविरति म्यती त्येत  
दस्मिन्तेषां नदि ते ततां निरुद्धा अतो सयतानां भविरति स्तत्र कारकमिति भिवृत्तानां तु कथञ्चि द्वासाधारम्भकत्वे व्यनारम्भकत्वं यदाह - वा  
अप्राप्यस्मज्जदे विराहयास्तुतविद्विषमन्तरम् ॥ यन्मोदविज्वरकसां चण्डालविमोदिषुत्तरसति ॥ १ ॥ सेतबहिर्बलि ॥ अथ तत्र कारकेनेत्यर्थं , अथ  
यास्मात्प्रभक्त्या दिव्यमय मारकादि चतुर्विक्रान्तिदशबद्धे भिन्नपयलाह ॥ नेरहपावमित्यादि ॥ व्यस्त कवर ॥ मनुस्तेत्यादौ ॥ अपमचयः मनुष्येषु

जाय गोश्चणारत्ना सेतेणठेणगीयमा एधवुच्चद्वि व्यत्येगद्वयाजीया जाय च्यणारत्ना ॥ नेरहयाणनतेकिञ्चाया  
रत्ना परारत्ना तदुन्नयारत्ना च्यणारत्ना गोयमा नेरहया च्यारत्नाविजावणोश्चणारत्ना सेकेणठेणनतेएववु  
चुह गोयमा च्यविरतिपदुच्च सेतेणठेणजावणोश्चणारत्ना एधजावपचिद्वियतिरिस्कोजोणिया मणुस्साजहाजी

नो कारककाचवा । तल्ल केते पसवयाने चविरति पदुच्च । तिहा पवे क्का के वेपयमाचे पसवतो हे ते चविरति चात्रोने एताववा चविरतोहे ते  
चाधारभावि जाव वा चकारभा । चाकारभीहे जावतुयन्दे वदुभवारभी हे पवि चकारभी नहो । सेतेपदुच्च । तेचे कारके करी । गोवमा । सेगीतम ।  
एधवुच्च । इने मकारे क्का । अरहेमद्वयाजीया जाव चकारभा । केतकाएव जीव चाकारभी चादिदेरे जावतु यन्दे चारमरचितहे एतकावाए क्कावा  
नेरहयाणभते विंषाचारभा परारभा तदुन्नयारभा चकारभा ॥ द्विचे चाकारमकादि एध तेचीव नारकादि वदुवीयद्वद्धे क्काहे - नारको हेमयवदु ।  
वृथाक्कांने चहे चारमपापक्के पचका पचारभीहे चारकेवाको मावदकार्यकरे वेचने पवे पापकार्यकरे चववा चकारभीहे चारमरचितहे इतिप्रय  
भगवत वहे - गाथमा । नेगातम । नेरहया चाधारभाणि जाव चाचकारभा । नारको चाकावेपवि चारमवतहे इम जावतु परारभीपचिहे तदुभ  
वावभीयदि हे पवि चारमरचित नकीव एतावता चकारभी नहो । सेकेचदुच्चभते एववद्व । तेविसे पच सेमयवत् । इमकच्च इतिप्रय भगवतवहे -  
गाथमा । नेगातम नहो चिरति जेइने ते चविरती क्कादि चविरति पचावी चाकारभी चादिदेरे तानेहे पवि चकारभीनहो । सेतेचदुच्चजाव जीव

सयतायंतप्रमत्ताप्रमत्तनेदाः पूर्वोक्ताः सन्ति तत स्ते यथाश्रीवा स्वया ध्येतव्याः किन्तु सुखारसमापन्ना इतरेष ते न याव्या नयवर्ततेत्या वेय  
तेषा मित्येतदेवाह ॥ सिद्धविरहिएत्यादि ॥ अन्तरादयो यथा मारकासया ध्येया असयतत्वसाधर्म्योदिति, आत्मारम्भकत्वादिति चेर्मे श्रीवा  
निरूपयिता स्तेष सस्तेषया दालेष्टयाच नयन्तीति सुसङ्गा स्ता स्तीरेव निरूपयकाह ॥ सलेषाज्जहाष्ठवियति ॥ लेष्टया ज्जहादिद्वयसाज्जिप्यज्जति  
जीयपरिचामो यदाह -- ज्जहादिद्वयसाधिष्या त्परिचामोयद्यात्मन । स्वटिकसेवतत्राय लेष्टयाज्जहाः प्रपुस्यते ॥ १ ॥ तत्र सलेष्टया लेष्टयावतो जीवा-  
॥ ब्रह्मर्तुवियति ॥ यथा मारकादिविशेषव्यवस्थिता जीवायचीता ॥ जीवाह जते । किं आयातरत्ना परारम्भेत्यादिना ॥ दबज्जनेन तया सलेष्टया  
जीवा छापि वाच्या, सलेष्टयाना मसुखारसमापकत्वस्या सम्भवेना सुखारसमाप्यत्वे त्यादिविशेषव्यवस्थिताना ज्ञेयावा सयतादिविदोपमाना तेवपि  
मुन्यमानत्वा तत्राद्य पाठकन ॥ सलेष्टयाह जते । जीवा किं आयातनेत्यादि ॥ तदेव सुख भवर जीवस्थाने सलेष्टयाहति वाच्यामिति, अयमेको

वाणवरसिद्धिरहितानाणेयम्हा वाणमतराजाववेमाणिया जहाणेरुद्धया सलेस्साजहान्हिया कियहलेसस्स  
नील्लेसस्स काउलेसस्स जहान्हियाजीया यथरपमप्त्यपमत्ताणज्जाणियम्हा तेउलेसस्सपम्हलेसस्ससुक्कालेस

भारभा । तदेवाराव यावत्तम्ये एभाव च विरतिगत ते अचारो हुवे एजे जे अचिरतो ते अचारभोगो इत्यर्थ । एवंभाव पचिविद्य तिरिक्खजोविया ।  
इम यावत् तम्ये अचरकमार भादिदेह पचिविद्य तिसच यानिक खगे जाववो अविदति पचावो आत्मारभो परारभो तदुभयारभो होय पचि अचारभो  
नही इमकचवो । मनुस्या ज्जहाजीवा भवर सिद्धविरहिया भाषेयम्हा । मनुष्येनविजे सयतासंयत प्रमत्ताप्रमत्त ए चारभेद पूर्वे कदाह -- तेमाटे किमसग  
ने जीवसाजीवम्हा विममनुष्य जायवा चारेभाये एतत्तोविशेष सिद्धारभाये रहित तेमाटे सिद्धविना कहवा । वाचयतरा जाव वेमाविद्या ज्जहादेह  
वा ससेम्हा ज्जहा पाणिद्या बिक्खसेसख जीवसेसख । यागयतरापादिदेह यावत् वेमानिकताह तिम कहवा विम मारजीवम्हा तिमच जाववा एव  
द अचिरतिपण्णे साधर्म्ये तेमाटे आत्मारभपचैवरी जीवकाणा तिजे सजेगो अलेष्टोहुवे तेमाटे सजेगो जहेह -- सेव्यासहित तेविमपोषे सामाम्येवरी

द्रव्यः कृष्णादिसेव्यादेहात् तदभ्येयत्, तदेव मेते सप्त तत्र ॥ क्विहसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवस्य नीलसेवस्य कायोत्सेवस्य च श्रीवराधो देवको  
 ययोपिबन्धीदव्यक्तं साया व्येतव्यः प्रमत्ताप्रमत्ताविद्योपवक्तव्यः ॥ कृष्णादिपुत्रि अग्रद्वालाजावसेवयास्तु संयतत्वं नास्ति यद्यो व्यते ॥ पुत्रपक्षिवकठपु  
 त्रकपटीएतसेवाएति ॥ तद् इत्यसेवया स्मृतीत्येति भक्त्य, तत स्तास्तु प्रमत्ताद्याभाव स्तात्र यूत्रोत्सादभवेवं ॥ क्विहसेवायं ज्ञते ! जीवा किं भ्राया  
 रंजा ? ४ गोयना आयादंजावि जाव नो खकारंजा ये केकेठेवं ज्ञते ! एवमुक्तं ॥ नोयना आनिरहं पशुह ॥ एवं नीलजापोत्सेवयादव्यक्ता व  
 पीति तथा सेवोत्सेवयाद ३ श्रीवराधो देवको ययोपिबन्धीया कृष्णावाच्या भवरं तेषु सिद्धा नवाच्याः सिद्धाना मसेवयत्वा, तेषैवं ॥ तेउत्सेवाय  
 ज्ञत ! जीवा किं आयादंजा ? ४ नोयना कलेवहया आयादंजावि जाव नोचकारंजा कलेवहया नो खकारंजा कलेवहया नो आयादंजा कले  
 ककारंजा ये केकेठेवं ज्ञते ! एवंमुक्तं ॥ नोयना दुबिहा तेउत्सेवा यकता तत्रहा सत्रयाय सर्वकयाएत्यादि ॥ त्रवहेतुनूत भारत्ननिरूप्य प्रवाजाव  
 हेतुनूत जाणादिपत्नर्नकृष्णः किरूपयत्वा ॥ इह प्रविष्ट इत्यादि ॥ अथ कवरं इह प्रवे वर्तमानवत्तनि यद्वर्तते ननु प्रवास्तरे तदैहजिविक  
 नाकुपाठा वेह प्रकटावसेया, तेन किमेहजिविक ज्ञान मुत ॥ परप्रविष्टि ॥ परमवे वर्तमानात्तत्तजिवि व्यनुगमितया य इहते तत्पारप्रवि

स्त जहाटीहिभाजीया जवरसिंहाणजाणिपद्मा इहनेविपुनतेभाणे परनविपुणाणे तदुजयनविपुणाणे गोयमा

कक्षा सूत्रविमर्शाचो ॥ इहसेवी श्रीकलेमीने आयातलेमीने । अहा श्रीहिदाजीया जवर प्रमत्त ययमत्ताय माविबया । विम श्रीविक समुच्चये श्रीवक  
 द्या तिम जाबया पवि गतको विमिव प्रमत्त ययमत्त वर्तितकृष्णा ज्ञायादि तीन ययमत्तभाव येमात्रे विदे यवतययं भवो यने ये कर्तं पुत्रपक्षिव  
 ययोपुत्र यववरतेकलेमी इति ॥ ते इत्यसेवया पात्री कर्तं । तेउत्सेवया पञ्चसिख सुकलेवह ॥ तेउत्सेवीने पञ्चसेवीने इहसेवीने । अहापादियाजीया ।  
 विम श्रीविक सामाव्यद्वि श्रीव कक्षा विमकृष्णा । जवर सिंहावभाविबया । एतकोविमिव सिह मकृष्णा सिहकोत्सादचित्ते तेमाटे । इहमविपयतेवा  
 ये परमविपयवे । भवहेतुमुत पादंम कर्तौने भवपमावहेतुमुत आगादि कर्तौने — कतमानभवनेविने येभक्तवत् । जेमानवीव तेइहमविमभाज कर्तौने यने

बं चाक्षीक्यत् ॥ तदुभयपक्षयो रिह परस्परद्वन्द्वो प्रैवयो यदनुधाभितया कर्तते तदनुभयनविकं इदन्वीव अपारमयिका द्विधात  
 रति परस्परजयेपि यदनुधाभितयापि इह प्रव्यतिरिक्तत्वेन परस्परमवस्थापि परमवस्थात्, इक्षतानिर्वैवा येह सर्वत्र प्राप्तात्पादिति, प्रप्रतिप  
 वनमपि सुगम कर्तरे ॥ इहमविकं यदिहा शीत मानान्तरमे भुयाति, पारप्रविकं यदन्तरजये भुयाति, तदुभयप्रविकं तु य  
 दिहापीत स्परप्रवे परस्परप्रवेचानुवर्ततइति ॥ इंसंखपि एवमेवेति ॥ इमं विह सम्पन्न अवसेयं सोऽभाप्यधिकारत्, यदाह - सम्पद्व्यंभान्न  
 चारिवावि मोक्षमार्गः यच्च ज्ञानदर्शनयोरेव यद्वक्तव्यं तच्च इक्षं सामान्यावलोचय्य अवसेयमिति ॥ एवमेवेति ॥ ज्ञानव त्यागनिर्वचनाभ्या समवसेयं  
 चारिचमूत्र निर्वचने विक्षेप, क्षणादि, चारित्र्य सैहस्यिजमेव नहि चारित्र्या मिह ज्ञूत्वा तेमेव चारित्र्येव पुन चारित्र्यी प्रवति यावन्जीवतावधि  
 क्षात्वा तस्य द्विष्ट चारित्रिकाः सदादे सर्वविरतस्य देकुविरतस्य च देवेदेवोत्पादा, तत्रच विरते रत्यस्त मजाया श्लोक्षयतावपि चारित्र्यसम्भावनाया

इहमन्यद्विधियारणे परप्रविण्विषाणे तनुनवनविण्विषाणेय । वसुणपिण्विषाणेय । इहमन्यद्विधियारणतैव परप्रवि  
 एवचरिते गीयमा इहमन्यद्विधियारणतैव पोतदुनयनविण्विषाणतैव । एवतवेसजमे । अस्वपुण्ण

मत्त यत्तद भवे ज्ञेयान ते पारमभिविषाणतैव । तदुभयभिविषाणे । इहमन्यद्विषाणे । तदुभयभिविषाणतैव ? उत्तर । गीयमा  
 वेमोत्तम । इहमने भव्यं परमने चादे मत्ताव ते इहमभिविषाणतैव । पारमभिविषाणे । ज्ञेयान्तरमने ज्ञानर्थाय तेपचि ज्ञानर्थाय । तदुभयमभिविषाणे  
 अर्था भव्ये तेपरमने परतदभवेपचि यन्मुक्ते तेपचि ज्ञानर्थाय । इहमन्यद्विषाणे । ज्ञेयान्तरमने ज्ञानर्थाय । तदुभयमभिविषाणे  
 विषा ज्ञेयमभ्यन् । चारित्र्याव भवता । परमभिविषाणतैव । पारमभिविषाणतैव इतिपुत्र उत्तर । यावमा । इहमन्यद्विषाणे । पारमभिविषाणे  
 यत्तोऽप्यपचिपचिपचि । चापरमभिविषाणतैव । महीपदमभिविषाणतैव । चारित्र्याव चारित्र्यावतमो यदा पारमभिविषाणतैव । चातदुभयमभिविषाण  
 तैव । एवंतवेसजमे । मही तदुभयभिविषाणतैव चारित्र्याव चारित्र्याव तैव तपसंयम भेदयो वेपकारिते तेमादे इम तप इमर्थाव संयमपचि ज्ञेयार्था । यत्तो



धारित्रिचि चर्मचपकाया मुष्टीपत मोक्षेन तस्याः किञ्चि त्वारत्वात् पावज्जीवमिति प्रतिष्ठासमाप्ते सादन्यस्या दायद्वयात्, अनुष्ठानरूपत्वाच्च वा  
 रिचस्य क्षीरामावेच तदयोना दतयोच्यते ॥ चिद्रे मोक्षरिसो नोच्यरिसो ॥ नोच्यरिचोतिचि अविस्ते रजावाति, अनन्तर च्चारित्र्यमुक्त गत  
 च द्विषा तपः समयमनेदादिति तयोन्निरूपकायातिदक्षमाह ॥ एवमेवेवंमेति ॥ प्रसन्ननिवचनाभ्या चारित्र्यतपः समयो धार्यो चारित्र्यरूपत्वा  
 तमोरेति ननु सत्यपि चालादेर्मोक्षहेतुत्वे दक्षेणय पतितव्य तस्मिन्मोक्षहेतुत्वा द्वादाह—मोक्षेचरिचालाठे सुषुप्तरवसंभंगेयम् ॥ चिच्छक्तिचर  
 चरिचिया दंष्ट्रचरिचालादिविच्छतीति ॥ १ ॥ योमन्येत तन्निश्चयितुं प्रसन्नमाह ॥ असुवच्छेदमित्यादि ॥ व्यक्त्य कवर ॥ असुयुक्तेचंति ॥ असंयुतो ऽनिकटु  
 अवद्वारः ॥ अचानरोति ॥ अविद्यामानकः साधुरित्यर्थः ॥ चिच्छाति ॥ चिच्छति अवाप्तचरमवकतया चिद्धिगमयोग्यो जयति ॥ बुद्धिहति ॥ स मय  
 यदा अनुत्पन्नबोक्स्तज्ज्ञानतया अपरपरयोपोयता चिच्छितान् बोवादिपदार्थान् क्षानाति तदा बुध्यतहति व्यपदिपत ॥ मुहुरति ॥ स एव सञ्जात  
 केवलमोक्षो ज्ञवोपयाचिच्छन्मभिः प्रतिलभ्यं विमुच्यमानो मुच्यतहस्युच्यते ॥ परिनिष्ठाहति ॥ स एव तथा कुर्मपुद्रस्ताना मनुसमय यथा यथा एव  
 माप्नोति तपातया प्रीतीनवन् परिनिर्वातीति प्रोच्यते ॥ सधुदुष्काकर्मतंकारहति ॥ स एव चरमजवायुयोनिमसमये क्षपिताग्रयकर्मोऽगः सधुदुःखाना  
 मन्त करोतीति प्रसन्न इतिप्रसन्नः उत्तरगु क्कठ कवर ॥ मोहकठंमसति ॥ मोहैव ॥ इच्छतेति ॥ अप मन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोर्षो प्रावः समयो

नतेश्युणगारे चिज्जति युज्जति मुञ्चति परिणिष्ठाति सधुदुस्त्राणमन्तंकरेति गोयमा णोडण्ठेसमठे सैरुण्ठेण

पूषे १ समुद्रबेभभते चरगारे । असन्न जेवे पावचरार क्कया भवो समगवन् । एवो साह । भिच्छति बुध्यति सयति परिनिष्ठाति । मिदुममन  
 चाप्यहाय केवलमोक्षो ज्ञोमादिपदाभावे भवमवरो कूटे कमपुत्रचयचरो सौतबोभूत इवे । सधुदुस्त्राणमन्तंकरेति । पाञ्चगाने छेदरे शेषक  
 मीगना यन्त वरे इम मोतम पूजा यका उत्तर भयवत क्कवे—मायमा । जेगोतम । चारिच्छेनमह । एवम सममनर्षी बसवत भवो । मेवेचिहं भते  
 चाचप्रतंनकरेति । ते स्वेकारे वेमगवन् । चावतयन्ते भतगकरे । भवतकवे उत्तर । गोयमा । जेगोतम । सधुदुस्त्राणमन्तंकरे । चरंभत जेवे पात्रयवार क्कयान

यनयान् वक्ष्यमाबद्धपुत्रमुद्रप्रहारज्वरितत्वात् ॥ घातयज्जाठरिति ॥ यस्या रेकत्र प्रवगहरे सुरुदेवात्सुर्दुर्त्तमात्रमासएवायुपीकन्य स्तत उक्तमा  
 पुधन्वाइति ॥ विविलबबबद्वाठरिति ॥ ययवन्धन रुपुहतावा बहुतावा निपसतावा तेन बहुता आत्मप्रदक्षीपु सम्बन्धिता पूर्वा वस्याया मभुजतर  
 परिकायस्य कयन्वि देनावाइति द्विधिसिद्धयन्बहुता यता द्यामुजाएव ब्रह्म्याः असकृतमावस्य निष्ठाप्रदावात् साः क्षिमित्या ॥ पक्षियवचय  
 हुठरपकरेइति ॥ गाढतरवन्धना बहुतावत्त्वावाः निपतायत्त्वावा निष्ठापितावा प्रकरोति प्रयद्दस्यादिकर्त्तार्यत्वा स्वर्तुमारभ्यते वापुवतत्वस्या  
 आत्मयोगकूपत्वन गाढतरप्रकृतिवन्धनेनृत्वा दाइव - लोगापयक्रियपवति ॥ पीकः पुण्यजावेत्स्वकृतत्वस्य साः करोतीत्येवेति तथा ब्रह्मकालस्य  
 तिवा दीपकास्तस्मिन्तिवाः प्रकरोति तत्र स्थितिरयातस्य कस्मदो भवत्यान ता महपकालांमहर्त्ती करोतीत्यर्थे असंकृतत्वस्य कपायकूपत्वेन स्थिति  
 दम्बइनुत्वा दाइव - छिद्रमनुभागकसायठकुइति ॥ तथा ॥ मदाबुमावेत्यादि ॥ इहानुजावो विपाको रसविशेषइत्यर्थः ततश्च मन्वानुजावा  
 परियेत्तवरसाः सती माडरसाः प्रकरोति असंकृतत्वस्य कपायकूपत्वा देवा नुजानकन्यस्य कपायप्रत्यपत्वाविति ॥ अप्यपसेत्यादि ॥ अल्प म्मोक्ष

अते जाय अतनकरेति गीयमा अ्यसुवुन्धुणगारे आउयवज्जाठरुसक्तमपगानीठरिचिह्निलयधणय्छाठ धणिय  
 यधणय्छाठपकरेइ हस्सकालठितीयाठ दीहकालठितीयाठ मदाणुजायाठ तिष्ठाणुजायाठपकरेइ अ

श्री दइकाभापु । पाउयवज्जाया सनकमपगनीया मिहसकमपगनीया पकरेइ इत्यवाकडितीयाया शीककासडितीयापो पकरेइ । पावुकमडाकोने  
 सातकमनो प्रकृतिवाधीइवे जेमाटे प्कमभनेविगे एवबार भतमुइत्तकाखने विवेदीक पाजकानोबधके तेमाटे पाजखं वल् तेषेइवो बोवीके सिद्धि  
 बधबेकरोने बाधीइवे ते गाढा पबवा निकाचितबधन करे भवी इत्यकाश कहता बोडाकाखनो क्षितिइती तेइनो शीयकास घषोकाखनो क्षितिकरे  
 पतायता वचीविति बहारे । मदाडभावायातिष्ठाणुजायायापकरेइ । कमना जेमद पनुभावकर्म महरमकमनी इवे ते तीसपनुभाव तेकमनो तोवरसक  
 रे । पयपरेसगपोमइपदेसगायापकरेइ । पयकाको प्रदेय भाग कमदसिक परमांयं सुती ते चर्चाप्रदेयभागकरे कमबधारे इत्यव । पाउयवचयकमपसि

अग्नेर्देहाय द्रुमवृक्षिऋषिमात्रं यासता सता ता वपुर्ग्रमेक्षणायाः प्रकरोति प्रवेक्षन्त्यस्यापि योगप्रत्ययत्वा वृषवृत्तत्वस्यच योगरूपस्यादिति ॥ अत्र  
उपवेत्यादि ॥ आयुः पुनः कर्मस्याप्यत्रादि इति स्यात्प्रति, यस्याः विभागस्याद्यत्रोद्यायुः परजवायुः प्रकुत्रति तेन यदा विभागवि सता  
वपुर्गति अन्यदा नवप्राप्तीति तथा ॥ अथाएत्यादि ॥ असातवदनीयत्वं दुःखवेदनीयं द्रुमं पुन प्रुयोभूयः पुन उपचिन्तति उपचितं कुरोति ननु  
कर्मभ्रमकामावृत्तिस्वा दसा तवेदनीयस्य पूर्वोक्तविधेयबल्यस्य तदुपपत्त्यप्रतिपत्तेः किमतद् यद्वेदनेऽप्यत्रोक्तं, असद्वृत्तोत्पन्नदुःखितो जवतीति प्रति  
पादनेन प्रयजनना दसद्वृत्तत्वपरिहारार्थं भिद् नित्यदुःखमिति ॥ अत्रादिव अविद्यामात्रादिवं अज्ञातिकावा अविद्यामानस्वजन प्रवृत्ता  
अतीतं अत्रादिव्यदुःखं स्वतात्तिकात्तदुःखताभिन्नतयति अज्ञातीत, अत्रंवा, अत्रं पापमतिशयेनेतं गत अज्ञातीतं ॥ अत्रवयगंति ॥ अत्रवयगंति दे  
योवचनो तवाचक सत सत्रियचात् अत्रवयग्य अन्नमितिः अयथाः अन्नमत्तमाचक मय मन्तो यस्य तत्तया तत्किवेवा दन्नमत्ताय सतदेव सताया  
दन्नमत्तायमिति, अयथा अन्नमत्त मपरिच्छन्न मय म्यरिकात् यस्य तत्तया, अतएव ॥ दीहमंति ॥ दीहमंति ॥ वपाद्वीकालदीपांश्चंवा दीर्घमार्गे ॥  
वाचरंतति ॥ चतुरस्त देवादिगतिभेदा त्पुर्वादिद्विधेदाश्च चतुर्विभाग तदेव त्वायिंकाश्चप्रत्ययोपादाना वातुरस्तम् ॥ संसारचंतारति ॥ अत्रा  
रस्यं ॥ अत्रुपरिपदइति ॥ पुनः पुन अन्नतीति, असद्वृत्तस्य तावदिवं अत, सद्वृत्तस्य तु यस्या तदाह ॥ सद्वृत्तेऽन्नमित्यादि ॥ अत्र अत्र, सद्वृत्तो

पुष्पदेसगान् पुष्पदेसगान्पकरेइ स्याउयचणकम्मसियथघइ सियनोयघइ स्यासायावेयणिजाषणकम्म नुज्जो नुज्जोउयचिणइ स्याइयचणस्यणवदग्गदीहमरु चाउरतससारकतारस्यणपरियइति । सेतेणठेण गोयमा

यवग्रह । चपुन चशब्दालंकारे पायुक्तम किवारे बाधे । निवनादपद । जितारे नबधि । असाधावेविविधवचनको । असातावेदोब चपुन चशब्दालंकारा रे वम । मूल्यामुज्जी उवचिन । बारवार बकीबसो पुट बसिट करे । असाहबवच भववच्यदोबम । जिन ससारनी पादिनको चपुन चशब्दालंकारा रे पावे येननर्पी रोगवचन । बाउरंत संसारवतार धनुपरिवहति । सारमतिकप भव ससार अरक्त उत्राड बारवार परिचमन करे । सेतेबेव गो

नगरः प्रजासमयसाहिः, सब परमशरीरः एसा दहरमशरीरः, तब य धरमशरीरः सदेवेकयेद भूष, य स्ववसरमशरीरः सदेवपक्षया परम्परया भूषार्थी वसेयो ननु पारम्पर्येवा संबतस्यावि भूषोक्तार्थेसा यइयभावी यतः शुक्लपादिहरपादि भोषोवइय भावी, तदेव सबताउंयतयोः फल तो नेवानावयेति ? यत्रोच्यते कस्य किन्तु परसंबतस्य पारम्पर्ये आदुतकर्मतः समाप्तजनयमात्र यतो वदयति ॥ अइकिय चारितारारइव भारा

अस्युक्तैस्थानगारेणोसिज्जइ सयुंण जतेस्थानगारेसिज्जइ हतासिज्जइ जाव अतकरेइ । संकेणठेणजतेएववु  
इइ गोयमा सयुंणेस्थानगारे अउयवज्जाठं सप्तकम्मपगानीठं धणिययधणयछाठं सिठिलयधणयछाठं पक  
रेइ दीहकालाठितायाठं हस्सकालाठितायाठं पकरेइ तिह्वाणनावाठंमवानुजावाठं पकरेइ यज्जपदेसगाठं अण्य  
पदेसगाठं पकरेइ अउयवणकम्मनयचइ असायावेयणिज्जावणकम्मणोनुज्जोउयचिणइ अण्णादीयचण  
वमा यमभुव पचमारवाभिज्जइ । ते तेवेसं जेनीतम । जरे पाववगार कच्चागरी तेपचमार साहु सोममहा इत्थादि पूर्ववत् कइवा वावत् संतकर  
नहीं वनी गीतम पूजे—समुदेवमंते पचमारसिज्जइ । जेवे पाववगार कच्चावे वसिकोधावे पात्सा जेवे हेमगवन् । एइवी चररचित पचमार साहु  
सोमं इत्थादि सवकइया इतिमत्त उतर । वताविज्जइ जाव संतकरेइ । इमीतम संतत पचमार हीमं यावत् पतकरे इम सर्वकइयो । जेवेचिणइ मते  
एवभुवइ । तेव्वाभाटे मयनन् इम कइ संततपचमार सीमं । यावमा । जेगीतम । सववचमार वसिकोधीवे पात्साजवे एइवीसाहु पाठकमं भादि  
वा पाचमी पाठकमं ठानी सात कर्मप्रकृति ते । धकियवचवसापासिठिलयवचवसापा पकरेइ । निविड सोखवे संवचे वधीवे तेमंते सिठिलयवचवकरे  
तेइमठोकाकरे इत्थव । दोइकासठितायापा । दोवकाल वपुकावे वेपल्लितिइ ते । पछायासठितायापी पकरेइ । इल बोठाकावेच यित्तिकरे ।  
तिव्वाछमावापा अइछमावापा पकरेइ । तीमरलवे वेमइरवकरे । वहुवदेसगापा पण्यपदेसगापी पकरेइ । पचप्रदेशेइ भुवे ते पचप्रदेशेइ करे शुभ  
पण्य प्रदेशयंत मते पचप्रदेशेयवंतकरे । पाववच कण मववइ । प्रकृतिपारित पायुक्तम तेइने नवधि । प्रसायावेयविज्जइवचवसा योमुक्खोमुक्खो एव

चित्ता नतनप्रपणपविष्टं निष्कृतिः ॥ यथा सर्ववृत्तस्य पारम्यं तदुत्कर्षतोपादेः पुद्गलपरावर्तमानमपि स्या द्विराचमामसत्त्वा तस्येति ॥ यदीदृश्य  
 इति ॥ व्यतिप्रवृत्तिरप्यतिशयमतीत्यय अनगारः संवृतत्वा रिसृज्यतीत्युक्तं, यस्तु तदन्यः स विक्षिप्तगुणविकलं सन् क्षिप्तेवः स्या श्वेति प्रस  
 यन्नाह ॥ त्रीवेधमित्यादि ॥ अथ न्ययः ॥ अयं प्रवृत्तिः ॥ असाधुः समयमरहितोवा ॥ अविरत्यति ॥ प्राचातिपातादिविरतिरहितः, विज्ञेयेष्वया त  
 यमिरतो यो न भवति सो विरतः ॥ अप्यक्रियत्यादि ॥ प्रसिद्धं विराक्तं मतीतकालकृतं, निष्कृदिकरकेन प्रत्याख्यातम् अर्जितं अनगत  
 कानविवर्षं पापकर्म प्राणातिपातादि येन स प्रतिष्ठतप्रत्याख्यातपापकर्मो तत्रियेषा वप्रतिष्ठतप्रत्याख्यातपापकर्मो अनेना मीतानागतपापक  
 मानिपपपुक्तः असयतो विरतये त्यनन वर्तमानपापासंवरब मभिरहित, अथवा न नैव प्रतिष्ठत तयोविधानेन नरबकाशादारात् कृपित प्र  
 त्याग्यात न्य नरबकासे व्यामर्शनिरोधन पापकर्म येन सतया अथवा न नैव प्रतिष्ठत सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तिः, प्रत्याख्यातम्, सर्वविरत्यङ्गी

श्रृणवदृग्गदीहमद्ध चाउरतससारकतारवीहययइ सेतेणठेण गोयमा एवसवुंछ्णणगारेसिज्जइ जाव श्रुत  
 करेइ । जीवेणनतेअसजएअयिरएअप्यमिहयपच्चस्कायपावकममे इतोषुते पेक्षा देवेसिया गोयमा श्रुत्येग

निपद । अमाता देद्वेनोयकमगतं नर्वा वारवार पुटकरे । अनादोयच पवददम दोहमहं चाउरतससारकतार वातोवयति । इमवेइनौ आदि  
 नभो जेइना पारमवो एइना दोव चानगतिं न नानारवातासते व्यतिजमे एइवो अे सगार ते अम्यकरे इतिमाव मोचकायइत्तव । सेतेणठेव गोयमा  
 एवमवण पचगार मिच्छइ जावपतकरेइ । ते तेणेकारवे जेगोतम । इत्येकारे संवराद्धे इदोनेवे एइवो अचगार साधु चरमयरीरी सोक्के मोचप्र  
 ते जाव इत्यय सावत् मवदु गुनार्थतकरे चचगार ते यंमतयन्तो सोक्के इसोक्कयो तेइवो वीजो तेविग्रियणुण विक्कमवका खं । जोवेवभते यमअए च  
 निरएअप्यदिहयपचकायपावकमे । देवइवे अथवा नइवे इमा प्रम्यकरे—इमगवन् असाधु समयमरहित प्राणातिपातादि विरतिरहितं नवीइक्का  
 चाप भिंदोवेकरो तथा पचकाचिकरो पापकम जेने । इतोपते । इइयो मनुष्यतिर्देष मरौ । यिमा देवेसिया । यद्धे देवकोच । गोयमा । जेजोतम ।

करणत पाप नर्मज्ञानावर साक्षात्कार कर्म येन स तथा ॥ इति ॥ इति ॥ प्रज्ञापय प्रत्यक्षा तिर्यग्मया न्मनुष्यनवाहा श्रुती सूतः ॥ चेति ॥ अस्मान्त  
 रे देव स्यादिति प्रमा ॥ चेदेवेमीदृशति ॥ य इम प्रत्यक्षासत्राः पञ्चम्रियतिष्वो मनुष्यावाः ॥ यगयेत्यादि ॥ यामादि वषिकरज्जुनेषु, तत्र यामी  
 अनपवमायजननामित्तानयिष्येय, याकरो लोहाधुप्यत्तिस्थानं, नकरं कररहितं, निमनो वषिजगमप्रधानं स्थानं, राजधानी यत्र राजा स्वय  
 वसति छेटं पूलीमाकारं कर्षटं कुनगरं, मळस्यं सर्वतो दूरवर्ति सखिवहाम्लरं, द्रोवमुळं जलपथस्थलपथोयेतं, यतनं विविधवेष्टागतयस्य  
 स्थान, तत्र द्विधा जलपतन स्तपतनं चेति, रज्जूमि रित्यये, चाग्रम सापसाविस्थानं, सखिवेष्टो योपादि देवां द्रष्टुं क्षतं करोषु, अथवा

इष्टदेवैस्त्रिसिया श्रुत्येगहृणोदेवेसिया संकेण्ठेण जाय इतीचुते पेसाश्रुत्येगहृएवेवेसिया श्रुत्येगहृणोदेवेसिया  
 गोयमा जेइमेजीवा गामागरनगरनिगमरायहाणिखेटकसुक्रमयवोणमुहपहुणासमसखिवेसेसु श्रुकामतरहा

केतनागकदंबहाय । अरवेमहावा वादेवेमिवा । केतनाएक देवता नहाय । सेवेवैवैववावहायते । ते जेवैवैवैववावहायते । इमकसुं वावत् इहावको यवो  
 मरोने । येवापरयेगएदेवेमिवा । यव वाताएक कोव देवताबाय देवतापयेअपजे । अरवेमहावादेवेमिवा । केतनाएक कोव देवता नहाय । मोवमा  
 वेगौतम । जे/मजोवा । जे ए प्रत्यक्षकोव एवेद्री तिर्वेव मनुष्य । यामपाकरमगरनिगमरायहाविखेटकसुक्रमयवोणमुहपहुणासमसखिवेसेसु । जे ए प्र  
 त्यक्षकोव पचेंद्री तिर्वेव मनुष्य नामदेयमे यामरज्जन यादितहाय जिवां रक्षा वृग्गाविगुव ते गाम कोहादि सातवातुना उत्पन्न ज्ञानव तेपागर वा  
 रचिततेमगर जिवां याविवा प्रथम तेनिगम जिवां सत्येव राजावसे काठसहित तेराकधानो जिवां पूढिना वावाकोट तेखेटक कुचितनगर तेव  
 वव वसतीवा दूरहाय नगरको कामपडाइ मजा तीज सराव हाय तेमद्वय जलमार्गनां भगरे जलको वसु पावेजे प्रोचमुख पट्टप ती मानाप्रकारना  
 वेमधी विरिवावा पाव तेवेमकारि एकजमपतन वीळाफलपतन एके वाइइक रजभूमियव वसेजे—भायम तापसाविस्थान योरादिकनां गाम ती  
 इनविदे । यवामतवरापचजामकुहाए । यवामनिवरा मरमनिवाविना जया वसे मरमभिलायविना वृधासुमे भूखेयोहातां कमइसुवापडे । यका

यामादपा य मयिद्यया स्ते तथा तपु ॥ अकामतवहायति ॥ अकामाना भिक्खराद्यनभिलापिका सता, वृणा सुट्, अकामतुणा तथा, एव मका ममुपा ॥ अकामयमवेरवासयति ॥ अकामाना भिक्खराद्यनभिलापिका सतां अकामोवा निरजिमायो प्रकमय्येव ख्मादिपरिजोगात्राधमाश्रयते तेन यामा रात्री अयत मकामत्रप्रववासी श्वे स्तेन ॥ अकामप्रववाहवसेयअमयअरिदाहेवति ॥ अकामा ये अकामकादय स्तेष्वो य परिदाह मतया तम तत्र स्वेइ प्रव्वेइ पतिव लगतिवेति यद्वो रओमात्र अस्तः कठिनोनुत रजएव, यद्वो मलएव अवेदनाद्वीभूतइति ॥ अप्यतरोवा नुज्जतरोवा कासति ॥ प्राकृतत्वेन विनखिरिकात्मा दल्पतरया नूपस्तरया बहुतर हुल्ल यावत्, वाशब्दो देवत्व प्रत्यक्षेतरकासयोः समतान्निधाना यो कवन इत्यस्य सामान्यतः सत्यपि अल्पतरकास भक्षामिज्जरायता मविच्छिद्य तस्या शितरपागु विच्छिद्यमिति ॥ अप्याहपरिकिलेचितिति ॥ विद्यापायति ॥ फालमामेति ॥ कासो मरव, तस्य मास प्रकमादवसरः कासमास सत्र ॥ काल किंचिति ॥ सुत्वा ॥ वाक्यमतरेश्चुति ॥ वनान्तरपु पनयिदावेय तथा यक्षांगमकरणा हुतमन्तराः अप्यत्वाहुः - वनपु प्रवा वाया स्तेष्वत व्यन्तरायति वाक्यन्तरा स्तेषा मेते वानमन्तरावा अ

ए अकामतुहाए अकाममयवेरवासेण अकामसीतातवदसमसग अरहाणगसंयजल्लमलपकपरिदाहेण अप्यत रोयानुज्जतरायाकालप्रप्याणपरिकिलेसति परिकिलेसद्धत्ता कालमासेकालकिञ्चा अस्सयरेसुवाणमतरेसुदेवलो

मभभवेरवाग्निं ॥ यनमिन्नते ओ प्रमुकुना भाग चितवता प्रह्लाषव पावे । यकामं सीतातव संयमसग । वनो मनप्रभिसाप्रविना ग्रीत ठाडि घातप तावडा इति मसा रत्वादिक्कना पराभव अग्ने । यक्काणगसंयजल्लमलपकपरिदाहेण अप्यतरोवा भुज्जतरोवा कासंयप्याणपरिकिलेसति । जानने यक् अग्ने मनकरो अत्रपामे परमेसा कठिनमम । प्रव्वेइवते गोसाभम एकपामे वस् इम सीते भववा अग्ने वृष काधामे जूतं एकवार यववा वेवार रमविचारमि वाडोकाश पवरा चर्णेकाय पाकाग्ने बसेगकरे । परिकिलेसद्धत्ता । वनेयक्करोने पोडाक्करोने । काकमासे । मरव तेवना भवसरतेइनेवि प । वामकिचा । जानयत करीन । यक्करोम याचमन्तरेमु देवपाएव देवताए वज्रतारा मवति । अग्नेरा वाचवन्तररुग्निं वननेविने एते तेसाडे वानम

तन्मेपु इतजोकेपु देयाग्रयपु ॥ देयत्वाग्रयपुत्तारोऽग्रयति ॥ अहमेष्ट्यत्र यच्छ्रुतोपादाना ते दत्तयोपपत्तारो भयगतीति द्रष्टव्य ॥ तसिति ॥ य इत्यनोक्तं सत्तामनिगारायन्ना द्यतयो त्पदान्त तोयामिति ॥ मेऽज्ञासाधमसति ॥ सेति ॥ अथ यथा येमप्रकारेण ॥ नामेति ॥ सज्जावने वाक्यालङ्कारेया ॥ यइति ॥ ग्रामगदाकायः अलङ्कारापर्ययवा ॥ इइ मन्त्रमोक्षे ॥ असोऽगयसेइत्यति ॥ अक्षोऽक्यन, इतिवाच्य उपप्रदर्शने, अनुस्वारमायः यंपिय प्रारुतस्यात् याइति यिञ्स्वाथ अथवा असोऽगयसइत्यत्र प्रथमैकवचनकृत एकार इवशब्दसु वाक्यालङ्कारे, अशोकादयस्तु प्रसिद्धागय, नयर ॥ मन्त्रवसति ॥ सप्तपङ्कः सप्तशब्दइत्यर्थः ॥ कुसुभियति ॥ सज्जातकुसुम ॥ माइत्यति ॥ मयूरित, सज्जातपुष्पविविधोयमित्यर्थः ॥

एतुद्वयत्ताएउत्रयत्तारोऽग्रयति । केरिसाणन्तते तेसियाणमत्तराणदेवाणदेयलोगा पयसत्ता गीयमा सेजहानामए इहमणस्मलोगमि असीगयणेइवा सप्तयणवणेइवा चपयवणेइवा चूपवणेइवा तिलगवणेइवा लाउयवणेइवा निगोहवणेइवा ठतोहवणेइवा असणवणेइवा स्यसिवणेइवा कुसुमवणेइवा सिद्धत्यवणे

तर कवोये त व्यतरनेजिरे शतापरे उपज्जणकार णाय उपज्जणत्तव । केरिसाण भते तेसि वाचमत्तराण देशाण देवसाक्षा पयसत्ता । केइवाके हेभगवन् । त चजामनिजरायको व्यतरदेशता माहि अपमा ते वानव्यतरदेशतामा देवमाक जज्जा एतस व्यतरोकदेवताना भवन केइवाके इतिमय्य । गीयमा । सेजहानामए । ते सज्जातामेति कामसाधमेव । इहमणस्मलोगमि । एह मणस्मलोकागमि । एसागवणेइवा । अगोऽक्यनना बने इवाक्यालङ्कारे वा यथया । मन्त्रवसनेइवा । मन्त्रपङ्क माटो पुण्यश्रुतिविशेष तेजसा यन अथवा । उपज्जण उपज्जा । उपज्जवणेइवा । अंमवन । तिलगयवणेइवा । तिलकहत्तनावन । माउज्जवणेइवा । हत्तविशेष तेजसा यन पात्रीतरे लोगवन । नियोऽवणेइवा । वटहत्तना बनेनेविधि । एतोऽवणेइवा । अयवणेइवा । यममहत्तविशेष तेजसा यन । मन्त्रवणेइवा । ग्रन्थहत्तमावन । अयसिवणेइवा । अयसोऽक्यननावन । कुसुमवणेइवा । कुसुभवणेइवा । धीनामरमव तेजसावन । यपुत्रोऽवणेइवा । नापहिरिवाज्ज विशेष तेजसावन । मिसइसुमिय । सदेव वारेमास पूजायका १ मा



सपश्यति ॥ तवचित्तं सञ्जातपञ्चवक्त्रं चकुरवदित्यर्थः ॥ यवव्यति ॥ सञ्जातं सञ्जातं सञ्जातं ॥ गुप्तुइयति ॥ सञ्जातगुप्तमुक्तं, गुप्तमुक्तं सञ्जातगुप्तः ॥ युञ्जति ॥ सञ्जातगुप्तं युञ्जति यव समूहं यद्यपि सञ्जातगुप्तो रविष्यो नाम कीदृशं भीतं सञ्जातं पुण्यपत्रं तो यिज्ञोया मावनीयः ॥ अयमियति ॥ यमसतया समवेक्षितया तत्तद्वत्त्वा व्यवस्थितया स्वव्यतिरक्तत्वेन यमसित ॥ युवसियति ॥ युगसतया तत्तद्वत्त्वा सञ्जातत्वेन युवसित ॥ विवसियति ॥ विवसेय पुण्यवत्त्वधरेण नमित्तं मित्तकत्वा विवसितं ॥ यवमियति ॥ तेनैव नमयितुं सारव्यत्वा रम्यमित्तं मत्तव्यस्या दिक्कर्मोपत्त्या विति तथा सुविप्रत्वा अतिविप्रत्वा मुनिप्यवत्तया विवसितं प्रतीता ताएवा वत्तसकां श्रेयस्करा साङ्गं धारयति यत्तं ह्युविप्रत्वापिरोमकर्मवत्तवत्तर ततः कुसुमितादीना कर्मधारयइति ॥ सिरीएति ॥ म्रिया वनसत्त्वा ॥ उव

इवा दधुजीववणेइवा निम्नकुसुमियमाहयलयहयगुलुहयगोष्ठियजमलियजुवलिययिज मियपणमिय सुयिजसपिणिमजरिविगधरे सिरीए अतीवअतीवउवसोन्नमाने उवसोन्नमाने चिठइ । एवामेवतेसिवाण मतराणदेवाणदेवलोया जहखेण वसवाससहस्वठिईएहि उक्कोसेण पालिनुवमठिईएहि धञ्जाह द्याणमतराह

इयववदव । मरुता पूजकपना यवव । ववइव । भिवव पूजकति । गुहव । कतासमूह । गाण्डव । पञ्चसमूह । वमसिव । समवेक्षोवचरत्वा । जमसिव । द्यावकावहच एवठावे । विवमिव । पूजकवने भारेनत्वा । पञ्चमिव । मारेकरो प्रवर्धनत्वा । सुविमत्त । अतिप्रगट । विवमिवरिविजवरे सुविवा मरुता मत्रकपदना धरवहार एवतम मुकुट तेजप्रते धरे । सिरीए अतीव २ उवसोन्नमाने ३ चिठइ । वनसत्त्वोन्नमाने अतिही अतिही इ इतिववमत्त ते चम्ववके एतमेवका मद्रपवे रहे । एवामेवतेसिवाणमतराण देवाण देवलोया । इमत्र निये तेवना वानवत्तर देवताना देवलोका पूजकता तेइवात्र जीवणा । जहखेण वसवासमज्जक द्विरीएहि । अयववको वयसइव । वरवनी अतिवोवको अतिवोवकीये । उक्कोसेण पक्षिपाव नहिनीएहि । पाञ्जका उववटवको पञ्चापमनो अतिव जीवने । वट्टे व वानमंगरेवि । वण वानवत्तर । देवेइव । देववरी । देवोविम । देवोव

मोक्षेमाप्तेति ॥ १ ॥ दिव्यं च न मानीरत्ये प्रसूते इत्ययः ॥ आह्वयति ॥ क्वचित्प्रदेशे देवानां देवीमात्रं वृन्दे रास्त्रीयास्त्रीयावाचसर्पादापुमङ्गुनेन व्या-  
 सा, आह्वयश्चेत् नमोदावृत्तिः, तथा क्वचित् ॥ विप्रवृत्तिः ॥ तैरेव वृन्देभिर्जावासर्पामोङ्गुनेन व्यासा विप्रवृत्ते चित्तोपवाची, ॥ उच्यते ॥  
 उपस्तीर्णो उपसृष्टः सामोप्यार्यं सुहृन् आन्नादनार्यं स्नातव्यं तत्पत्तिं किंपतत्रिया नवरत्नकीलासुत्तं रूपं पुनरिच्छादितं ॥ समरुति ॥ सस्ती-  
 र्णः सबाध्यः परस्परसम्प्रेषार्थं, स्नातव्यं क्वचि तैरेव श्रीलक्ष्मणे रस्योन्यस्पर्शेया समन्ततः प्रसृज्जि राष्ठादिताइति ॥ सुकृति ॥ स्पृष्टा आसनस्यनरम-  
 कपरिभोगद्वारेण परिपुष्ताः स्सुदावाः समन्ताशा व्यन्तरसुरनिकरकिरवाविसरविराहताभ्यकारतया ॥ अथगाढगाढति ॥ नाड गाढं भवगाढा स्मरे-  
 व सुकस्रीमास्थानपरिभोगनिहितमनोनि रपोयि व्यासा, गाढावगाढा इतिवाच्ये प्राकृतत्वा दृढगाढगाढा, इह च देवत्वयोग्यस्य जीवत्स्याजि-  
 पानेन तद्व्याप्यः सामर्थ्यां इवसीयतएवेति ॥ अन्तेगहए मोदवेसिए इत्यतस्यावा तुक्तस्य पक्षस्य निर्वचनं कृत इष्टव्यमिति, अथो देवकनिगमना

देवेहित्य देवीहित्य श्रुतिस्था यितित्या उच्यते सयना फुडा व्युत्पन्नगाढासिरीए अतीवअतीवउच्यसोक्षेमा  
 पा उच्यसोक्षेमाणा चिह्ति ॥ एरिसगाण गीयमा तेसिवाणमताराण देवाणदेवलोगा पयस्र्णा संतेणठेणगीय

करोने । आदिता विदिता उच्यते । सवता फुडा भवगाढातिरीए भतीव २ उच्यसोक्षेमा २ चिह्ति । आप्रभो मरजादासगो देव देवीने पृथ्वरीने  
 च व्या प्राप्योन्मिबो मरजादासगो व्यावा आह्वयदेवीने उग्रभावाया परस्पर प्रभो दूरगो रमता सवारानो परे पावराया परसा प्रासन  
 सवच रमच भावशरीकरो भावमती तका अवकार उच्यत सवसकोडा अभिवाया देवता गोचरादे व्यावा गाढ प्रसृष्टपरस्परसा सुक्ष्मीरुवरी भतीव २  
 यामता २ यका रवेहे । एरिसमाच । एहवा प्रेमभक्त्याप कवे । गायमा । गीतम । तेसिवाणमताराच देवाच देवलोगा पयस्र्णा । तेहना यानय्यतर  
 देवना देवलाक भवन कक्षा । सेतेकद्वच भावमा एवमुचर । ते तेवेकारवे हेगीतम इम इवेप्रकारे कर्तुं । जोदेव पयस्र्णा । जीव पयस्र्णा । जावदेवेसि  
 या । यावन् देवतापञ्चपञ्चे । सेवमते २ पितृभवन गोयमे । जाते पञ्च सोमगवतेकर्तुं इतो इमज्ज चय्यका नवो । एतत्ते समयतनो यहुमीन देवाया

र्यमाह ॥ सेव प्रते । सेवजतेति ॥ यस्माया पृष्टं तद्गमनमिति प्रतिपादितं तत् एव मित्यसेव प्रवृत्त । ज्ञान्यथा, ज्ञानेन प्रगवद्वृत्तने यद्गुमान दर्शो  
 यति दिव्यचनम्बह प्रविशुचमस्त, एव कृत्वा प्रगवद्वृत्त गीतसः अमल प्रगवत अष्टावीर वृत्तते नमस्तितिचेति ॥ प्रथमशते प्रथमोद्देशकविव  
 रण समाप्तमिति ॥ १ ॥ अस्यात् प्रथमोद्देशको ऽय द्वितीय आरज्यते, अस्य चोव सुख्य प्रथमोद्देशके वस्तनादिधम्मक कर्म्म  
 कपित तदेवेह निरूप्यते तपो वृद्धकार्यसङ्ग्रहस्या ॥ दुष्खेयति ॥ यदुक्तं तद्विदोष्यते तत्प्रस्तावनार्यम् पूर्वोक्तमेव गुन्य स्मरयन्नाह ॥ राय  
 गिहे इत्यादि ॥ पर्ववत् ॥ जीवकमित्यादि ॥ तत्र ॥ सयकठदुष्कृति ॥ यत्परकृत तत्कवेदयतीति प्रतीतमेवातः स्वयकृतमिति पुष्कलित्स ॥ दुष्क  
 ति ॥ सासारिक सुखमपि यस्तुता दुःखमिति दुष्कवेदुत्वा दुःखं कर्म्म वदयतीति काकुपाठा स्मरः नियचनंतु यदुदीक्षं तद्वेदयति अमुदी

माएववुच्चड जीवेणस्यसजएजायदेवेसिया सेवजतेजतेतिजयवगोयमे । समणजगवमहावीरवदइ णमसइ व  
 दिता णमसिहा सजमेणतवसा स्यप्याणजावेमाणेविहरइ पठमसएपठमोउद्दीजोसम्मत्तो ॥ १ ॥  
 रायगिहेणयरसमोसरण परिसाणिगया जायएववयासो जीवेणजते सयकठदुस्क वेदेइ गोयमा स्यत्येगइ

इसवञ्चो भगवत योतम । समसं भनव मङ्गवीरवदइ । समसं भगवत श्रीमङ्गवीरस्वामीने वदि । बर्मसइ ममस्कारकरे वदिता । वीदीने । बर्मसिता ।  
 नमस्कारकराने । सजमेवं तवनाथप्याव भावेमाचे विहर । सजमेकरो मवाकमठपावेनञ्चो तपेकरो पुगतनकम निजरे एववा श्रीगौसमस्वामीया  
 र्मामे भावतायदा विहरे । पठमसए पठमाठइशा सयता ॥ १ ॥ प्रथमशते प्रथमठइयना विवरणा समाममिति ॥ १ ॥ पस्तना  
 दिव कक्षा तेचम ठ'पुगा हेतुमको दृ'खनी यधिकार जसेहे—पवा ठयेयञ्चाव संपइप्पि याषानेविचे । पुष्केति । इधोवेकञ्चो तेकसेहे—राबगिचेव  
 रे समासएव । राबयइ अगरे श्रीमङ्गवीरस्वामी समीसया । परिमाचिक्कवा जावएववयासो । परिपया वीदीने यापयापये वरमया पूवलीपरे गो  
 तमस्वामि श्रीमङ्गवीरस्वामीने वीदीने यावए इम चै तिसिगे कइवा । जीवेचमंते मयकठं पुक्क वेदेइ गावमा । जीव' केणवण । जेने जे जीवो कर्म्म ते

आरपटि 'हर्ममोक्षो मेन्दनमेव मालि' तस्या दुर्दीणवेत्यति आमुषीकं, नपथस्यामसरमेवोदेति, अतो याव्य वेद्यामपि एकं वेदयति, एकं अवेदयतीत्यं व्यपदिश्यत अयमयं यद्यमयं कर्म—कलापकमात्रं मनोबुद्धो अत्यन्तिवचनादिति ॥ एवं जाव वेमाणिष इत्यमेन चतुर्विंशतिवपदका मूढितः, मरैव ॥ मेरवयुवं प्रत । सुयंअमितादि ॥ एव मकरवेत दकलन सथा यदुत्वे मान्यः, सुबैव ॥ जीवाव प्रते सुयकाठ दुक्ल वेपेतीत्यादि ॥ तथा मररयावे प्रत । मयकठं दुक्लमित्यादि ॥ मयैकाल्य पौर्णो यदुत्वेयि सएवेति किं यदुत्त्वममेमिति ? अत्रोच्यते अपि हसु न्येकाल्ययदु

ययेदेदु अत्येगइयनोवेदेइ संकेणठेणजतेएवधुसुह अत्येगइयवेदेति अत्येगइयनोवेदेति गोयमा उदिअवेदे  
ति गोद्युणदिअवेदेति । संनेणठेणएवधुसुह गोयमा अत्येगइयवेदेइ अत्येगइयनोवेदेइ एवचउवीसदरुएण  
जाययेमाणे । जीयाणजतेसयककदुस्सवेदेति गोयमा अत्येगइयावेदेति अत्येगइयाणोवेदेति । संकेणठेण  
जनेणयधुसुह गोयमा उदिअवेदेति गोअणुदिअवेदेति एव जाय धेमाणियाजीवेण जतेसयककइअउयवेदेति

नवेदे इमाता प्रमिहणे पनि पतिबोधो धा मुक्क नवेदे इतिप्रत्य । हेगीतम । जेतसाएकजोव स्रक्तवर्मवेदे । परवेमइवर्नोवेदे । जेतसाएक  
जोव स्रक्तवर्म मु प नवेदे । नेकेनइवभति एवमुक्क । गीतम प्रवेदे - ते खांमाटे हेमगवन् । इम कथुं । परवेगएवेदेति । जेतसाएक वेदे । परवेग  
इयमवेदेति । जेतसाएक स्रक्तवर्म नवेदे । गायमा । भगवतकथुक्क - हेगीतम । कदिन् वेदेति । स्रक्तवर्मात्तेकर्म वेदे । श्री स्रक्तवर्म वेदेति । नहे  
उदय पाया तेचम वेदेनहीं । अतिनइव एवमुक्क । तेचकारवे इमकथ । गायमा । हेगीतम । परवेगएव वेदे । जेतसाएक जोव स्रक्तवर्म वेदे । प  
जेगइवर्नोवेदे । जेतसाएकजोव स्रक्तवर्म नवेदे उदय माया तेमाटे । एववसोवस्रक्तवर्नोवेदे कथवो । आव वेमापिए । याव  
नू वेमानिकनो जायवा ए एववस्रक्तवर्मो कथ । हिने स्रक्तवर्मपायो कथवे - जोवाचभतिसयत्तवर्मवेदेति । जोव हेमगवन् । पोते कृतवर्मवेदे इ  
तिप्रत्य भगवतकथवे - मोयमा । हेगीतम । परवेमइवर्नोवेदेति । जेतसाएक जोव स्रक्तवर्म वेदे । परवेमइवर्नोवेदे । जेतसाएक जोव स्रक्तवर्म वेदे ।

स्वयो रपविशेषो दृष्टो यथा—सम्पन्नादेरेक जीव माथित्य षट्पट्टिसागरोपमायि साधिकाभि स्थितिकाल उत्तरो नानाजीवा नाथित्य पुनः सधो भूति, एव नचापि सम्भवे दितिद्यद्गुणा म्बुत्वप्रप्तो मदुष्टः, आत्मन्त्याव्युत्पन्नमतिश्चिप्यव्युत्पादनार्थत्वा द्वेति आया युःप्रधानत्वा कारकादिव्यप दशस्या पुराप्रित्य दबकद्वयम् ॥ जीवकमित्यादि ॥ एतस्य पेयं दृढोक्तमावना, यदा सप्तमधिता धायुर्मद पुनश्च आसाभारे परिक्रामविशेषा नु तीयपरवीमायोग्यं निर्वाहित धासुदेयेनेव, तत्तावृथा मङ्गीकृत्योच्यते पूर्ववत् सदि कवेदय त्यनूदीर्णत्वा तस्य, यदापुन यंत्रिययद् तत्रैवो त्यद्य ते तदा वेदयतीत्युच्यते, तथैव तस्यो दितत्वादिति अथ ऋतुभिर्गतिवक्रक साहारादिति चिर्कूपयकाह ॥ भेदइत्यदि ॥ व्यस्त खवर ॥ न

गीयमा व्युत्प्रेगइयवेवेति व्युत्प्रेगइयजोवेवेति जहादुस्केणदोवक्रगा तहास्थाएणवि एगस्त पोहत्तिया एगक्षेण जात्र धेमाणिआ पुञ्जसेणवितहेव । जेरइयाण जते सधेसमाहारा सधेसमुत्सास्मणिस्सासा गो

नबहे । सेवेचिभमते एवचइ । मोतमकइव—ते जामाटे जेमगवन् इमकइ । नोवमा । जेगौतम । उदिकवेवेति । उववधाया ते वेदे । पोचकुदिक वेदेति । नही उदयपाया ते नबहे । एवंजावयेमाबिया । इम चउबीस दइव जावत् वैमानिकबमे । जोवेबमते सवकच चाउव वेदेति । विवे नार कादिकने धादुकम प्रधानवे तेमाटे पाऊका पावी दइकविजे कइवे—जोव जेमगवन् सवकत धादुगते वेदे भगवत कइवे—जेगौतम । षट्जेगद च वेदेति । केतसाएव वेदे उदय धाम् ते वेदे इत्यव । पारेनहवबो वेदेति । केतसाएव नबहे उदयपाया बिना नबहे । अहादुस्केव दोवकगा । विम द्धुचनेति वेदकककका एवचपने म्बुचपने अयवा उदयपायं वेदे उदयपायं वेदे उदयपाया ते वेदेनही । तहा पाऊएवविदेकया । तिम पाऊयानेविदेपवि दोव दइव कइवा । एमत्त । एवचपनपायी एकजीव । पोहत्तिया । यहुचपनपायी चवा जीव । एयतेच जाप जेमाबिया । एवचपने एवजोव धावो जाय त् वैमानिकतादि जाववा । पुहुतेचवि तहेव । एवजे चवा जीव पायी पवि तिमजोव एतसे वैमानिकतादि कइवा । जेरइवाचमते सधेसमाहारा । दिने चउबीसदइव पाहारादिकरो कइवे—भारको जेमगवन् । सगमा सरीया पाहारावेतहे । सधेसमकरीरा । सनवा सरीवे गरीरेजोय । सधेसस

ब्रह्मरीरायप्यमरीरायेत्यादि ॥ इहलपत्य महत्तया चेति न तत्र अपत्यमत्यस्य भगुलासङ्केयज्ञागमायस्य मुरकलन्तु महत्तय स्पष्टपनुः छतमा  
 नत्त मतस्य प्रपारणीयगरीरावेष्टया, उत्तरयेष्टियायस्यानु अपत्यमनुवसङ्कतज्ञागमायस्य नितरानु चनुःसङ्कतज्ञागमायस्य एतेनच किञ्चमस्य  
 रीरा इत्यय मस्य उत्तरमुक्तं शरीरयिपमतात्रिपानेसति याद्वारोष्ठासयां येष्य सुप्रतिपाद्य जयतीति शरीरमस्यस्य द्वितीयस्यानोक्तस्यापि प्र  
 यमं नियचन मुक्त यथा शरीरोष्ठासमग्रयो निर्देयममाह ॥ तत्त्ववमित्यादि ॥ ये यतो महासरीरा स्ते सवयेष्टया धनुतरा मुद्रला नाहारयन्ति  
 महासरीरत्वादेव इदमपि तांस्ते दृष्ट्यरीरो यथा इत्ययगरीरया स्पन्तोषी इतिशब्दाकवत् वाहुत्यापेक्ष चेदमुष्यते अन्त्या दृष्ट्यरीरोपि

यमा गोद्विण्ठेसमठे सेकण्ठेण जते एवयुच्चद्विण्ठेण गोसहस्रसमसरीरा गोसहस्रसमुत्सासाणि  
 स्सासा गौयमा गेरुदयादुविहा पण्णता तजहा महासरीरायस्यप्पसरीराय तत्थणजेतेमहासरीरातियच्चतराए

त्वावित्तिमासा । सगजाने सरीरा ज्ञमास मोसामहीय एवमे प्रयोजीया भयवत कवे—गौयमा । गौयमा । गोद्विण्ठेसमठे । एवमेकं समवर्तनी बुद्धमही  
 इत्यह । सेकण्ठेसमठे एवयुच्चद्वि । तं विवेकारण वेमगवत् । इमकक । वेरसापोसखीसमाहारा । भारको सब सगळा खरीळा याहारवद नवी । बी  
 मवेममरीरा । मगमा सरीचे प्ररीटे नचाय । बासवेममुखासविध्यासा । सगळा सरीखे ज्ञमास मोससे नवीय इतिपूळा मगवत कवे । गौयमा ।  
 वेवीमस । वेरसा द्रविडा पक्कता तजहा महासरीराय पयसरीराय । नारको वेमकारे कळा ते कवेहे—इहा पयपण् तजा महत्तयपण् पयेचा स  
 दित्त तिका अपस्य पयपण् मगम चमत्तमासा भाग शरीर क लम्बुट महत्तयपण् पांचसे धनुयमाय ए भवधारपीय शरीरानो पयेचाये कळा उत्तर वे  
 द्विष शरीरानो पयेचाये कवम्य भगुनने पमत्तमासे भाग शरीर छरकट सङ्कसधनुय इवे तैमाटे नारको महाशरीरवतळे बीया पञ्चमरीरवतळे एवं  
 वेभेदे । तत्रच वेमममरीरा तेद्विद्वाराए पाळने भाकारेति । तिहा पूर्वोक्तेपयमाहे के महाशरीराने ते पयसतयचा पुङ्गनमी याहारकरे खोक्तमाचि  
 पचि दोमेके मोटागरीरानो धनो यचा पुङ्गनमी याहारकर दावीनोपरे तथा शयनानोपरे ते नारको पसावावेदनीय कमसहितळे तेजिम मोटागरी

क्रिये इत्य मभ्राति प्रत्यक्षरीरापि कथितं पुरि पुच्छे तथाविधमनुयवत् मनुनेवमिह बापुस्वपदस्यैवा अयदात् तेव नारकाउपपातादिष्वेद्या  
 नुनवा दन्यत्रा स्रष्टेद्योदययित्वेने कानेन यथा-महाक्षरीरा दुःखिता स्त्रीत्राहाराप्रिलापाद्य प्रवर्त्तति ॥ बहुतराएयोगलेपरिकामेति ॥  
 आहारपुद्गलानुसारिखात् परिकामस्य धुतरा नित्युक्तं परिकाम बापुहो व्याहारकाय मितिकत्वोक्तं, तथा ॥ बहुतराएयोगलेठस्ससति ॥  
 उच्छ्वासतया पृच्छति ॥ निरसद्वंति ॥ किद्यासतया विमुञ्चति महाक्षरीरत्वा देव दुःख्यतेहि-दृष्टक्षरीर सत्त्वान्तीयेतरापेक्षया वधूच्छ्वासनिः  
 द्यासद्वंति दुःखितोपि तथैव, दुःखिताय नारकाद्वंति, बहुतरा सानुच्छ्वासति, तथा हारस्यैव कालकलं वियम्यमाह ॥ अमिस्त्ववद्याहारति  
 ति ॥ आत्मीइत्यं पीन-पुम्येन यतो महाक्षरीर स तदपेक्षया स्त्रीप्रक्षीप्रतराहारपदइत्यर्थः ॥ अमिस्त्ववकसतिअप्रिस्त्ववमीससति ॥ एतेहि  
 महाक्षरीरत्वन दुःखिततरत्वा द्वाहीइव भनवरतनुच्छ्वासावि कुवन्तीति, तथा ॥ जेतैइत्यादि ॥ येते इह ये इत्येतावतै वाप्येविद्वी यतेइत्युच्यते  
 तन्नापानात्रमेवति, ॥ अप्यक्षरीराअप्यतराएयोगलेआहारंति ॥ ये यतो भ्यपक्षरीरा सौ तदहारवमिपुद्गलापेक्षया इत्यतरान् पुद्गला नाहार

योगलेआहारंति यज्जतराएयोगलेपरिणामेति यज्जतराएयोगलेऊससति यज्जतराएयोगलेणीससति अग्नि  
 स्कणआहारंति अग्निस्कणपरिणामेति अग्निस्कणऊससति तल्यथजेतेअप्यसरीरा तेण

र्ना धर्मीइत्य तेमहावुक्तीवका तोव्याहारना अमिस्त्ववोह्वे ॥ बहुतराए पाप्मलेपरिणामेति ॥ माटागरीरना नारकोति वषांपुद्गल ग्रोरे परिणमे आ  
 हारपुद्गलेन धनुबारवको परिकामने बहुतरपण्कजं ॥ ववतएयोगले ॥ इम नारको वषांपुद्गल बारदार ॥ ऊससति ॥ ऊससं उसासरूपे ग्रहे ॥ बहु  
 तराए पाप्मन योमसति ॥ पम्पन वषापुद्गल बारदार मोससं निस्वासरूपेधरे तथा भाहारनोज बासकतवैवम्य वध्वे ॥ अमिस्त्ववद्याहारंति ॥ बारदार  
 व्याहारपदे ॥ अमिस्त्वव परिणामेति ॥ एमाटागरीरना ववो धने अतिदुःखितयथा बारदार परिणमे ॥ अमिस्त्ववकवसति ॥ ववो अतिदुःखको बार  
 बार ऊमास ये ॥ अमिस्त्ववमीससति ॥ बारदार नोसासादिधरे ॥ तद्वववोतेपण्कजोरा ॥ तिम पूर्वोक्त वेपथमादि जे प्रथमरीरो कोटागरीरनाधर्मी जे

यति सत्यशरीरत्वा देव ॥ आश्चर्यादहंति ॥ अक्षयि दाहारयन्ति अक्षयि आहारयन्तीति, महाशरीराहारयद्दाम्भरातापयः ॥ ३० ॥  
 साम्भराततयेत्यर्थः ॥ आश्चर्य ऊचसंति आश्चर्यं वीक्षसन्ति ॥ यतो ह्यस्यशरीरस्यैव महाशरीरायेत्यर्थः सत्त्वा दाह्य अक्षयि ह्यस्य शरीर-  
 मित्यर्थः, उच्छ्रामादिक्रियन्ति यच्च भारकाः सन्ततमे वीक्ष्मासादिक्रियन्तीति, प्रायुक्तं तस्मादाशरीरायेत्यर्थे त्यवगन्तव्यमिति, अथवा अपर्याप्तता  
 ते सत्यशरीराः यतो सोमादारापयया वा शारयन्ति, उच्छ्रामापर्याप्तत्वेनच मोक्षसं त्यम्यवा त्वाहारयत्युच्छ्रसन्ति ते त्यत आहत्याहारयन्त्या  
 इत्युच्छ्रसन्तीत्युक्त ॥ सेतेऽवचनोपमा । एवंबुद्धं शरण्या सर्वेभोसमाहारस्यादि ॥ निगमनमिति, समकल्पसूत्र ॥ पुष्टीववक्ष्यमाणपक्षोववक्ष्यमाण  
 यति ॥ पूर्वोत्पत्त्याः प्रथमतस्तुत्पत्त्या आदयेणु पचादुत्पत्त्या तात्र पूर्वोत्पत्त्यानां मायुय सारव्यकल्पकान्च अतुरवेदना वस्यकर्मत्वं, यथा दुत्पत्त्या

अप्यतराएपोगले आहारैति अप्यतराएपोगले परिणामेति अप्यतराएपोगले अससति अप्यतराएपोगले ले नीससति आहच्च आहारैति आहच्च अससति आहच्च नीससति सेतेणठेण गोयमा

नारदादयः । तेष्वप्यतएव पाप्मन्ते आहोति । तेनारकी च इह पाप्मन्तकारं परपतर छाडापुत्रसन्तो परकारं तेखाटा यरोरमाट महायरीरनो च  
पेसाये खाडा पुपुर्ना पची खे तेमटिख इम तेनारकीने । पाप्मतराएपाप्मन्ते परिबोमिति । परपतर खाडापुत्रस परिबोमि बोधा भाहारमाटे तेनारकी । च  
चतराए पाप्मन्ते ज्ञानसति । परपतर बोडापुत्रस ज्ञानसपये वहे । अप्यतराएपाप्मन्तबोससति । परपतर खाडा पुत्रस बोसासपये धरे । भाषस भाहार  
ति । रकी २ पाहारकर परतरासहित भाहारकरे । भाषस परिबोमिति । चतरासहित परिबोमि रकी २ परिबोमि । पाषसखससति । चतरासहितअ  
मने ज्ञानसपये । भाषसबोमसति । चतरासहित बोसासपये । सेतेबहुल गायमा । ते तेबेप्रबोजने हेमोतम । एवमुपर । इमबहु । बेरयाबोसखे स  
माहारा । नारकी सगला सरोखा भाहारवंत बोबनहीं । नारबोसखेसमुखासबोसासा । पापतयखे सगला समयरीरनहीं सगला समखसास बोसास  
बतनहीं । दिने नारकोने वनप्ररूप पूजे । बेरयासंभते सखेसमकथा । नारको हेमगवन् । सगला सरोखा वनवतखे उत्तर । गोबमा । हेगोत



नाथ्य नारकाबा मायुकादीना मस्ततराका वेदिताना न्याकाकर्मस्थं एतत् सूत्र समागच्छितिका ये नारका स्नागनीरुत्य प्रवीत, मन्ययाहि रत्नाय माया मुक्तहस्तिने नारकास्य बहु म्यायुचि कथयिते यस्यायमावद्येव तिष्ठति तस्यामेव रत्नप्रभाया दृश्यवर्षसहस्रस्थिति मारको इम्य कस्यि दुत्प स इतिकत्या प्रागुत्पत्य यस्तोयमायुय नारक मयेश्य किञ्चक्षु क्षम्य महाकर्मैति, एव वर्षापूर्वे पूर्वोत्पन्नस्या एव फलं सप्त सास्य त्रिविधुने त्रयः

एव बुद्धि षोडश्याणोसहस्रसमाहारा जाय णोसहस्रमुम्भासणीसासा । षोडश्याण जते सहस्रसमकम्मा गोयमा णोइणठेसमठे सेकंणठेण जते एवं बुद्धि गोयमा षोडश्यादुयिहा पक्खसा तजहा पुब्बीयवसुगाय पक्खोवव सुगाय तत्यज्जेतेपुब्बीयवसुगा तेण स्यप्यकम्मतरागा तत्थणजतेपक्खोववसुगा तेणमहाकम्मतरा सेतेणठेण

म । नारकहसमह । एष्व समकमर्मा । सेवे बुद्धमते । ते जेपवे वेमग्गवग्ग रमकम्मा । एवववर । एव नारको सरोवा समवत मर्मा उत्तर । गोयमा । वे योतम । वेररवा द्दिका पकता तजहा । नारको वेदि कक्षा तेजवेदे—पुब्बीयवसुगाय । एव पूर्वे पक्खा कपमा ते पूर्वोपपन्न कहंयि । पक्खाववग्ग माय । वेनारको पक्खे कपमा एकोका मेद २ । तज्जं जेतियवोववसुगा तेव । जेपूर्वीक वेपचमाहि तेपूर्वे कपमा तेनारको एवव बोडा समवतवे ते किम जेपवे कपमा तेहने पावुक्कम तथा बोकाकम तथा वेपाहि बोडारहे तेमाठ । पण्णकत्तरागा तज्जवज्जते पक्खोववसुगा तेवंमहाकम्मतरा । एवपक्खो कक्षा तिक्का पूवकक्षा जे वेपचमाहे जे पक्खे कपमा तेनारको महाकममा बभौ कक्षा तेकिम पक्खे नारकोमे पाउडा वादिदेर बने खाडा वेवा । जे घना रे तेमाटेमहाकर्मो कक्षा एवव सरोको कितिमा बभौ वेनारको ते पायोवारकोने कक्षोवे पक्खवा रत्नप्रभा पुब्बिनेविने कोर एव नारक जीवमो वरज्जटी एवसागरापमनो कितिजे तेमाहे घबौल्लिति मोगमो येव एवपक्खोपमरज्जोवे एतते तेजीव रत्नप्रभा नारकोमेविने एवववसुक्कमनो किति बो जीवोव कपमा ते पूर्व कपमापक्खोपमयेपपावुक्कनारकोनी अपेचमे एवं महाकर्मो कद्विद्विजे एतावता कक्षोगसविने एम वर्षसूचनेदिने यदि कक्षो सेतेचहे मोबमा एवंववर । ते तेवेकारवे वेगोतम रमकम्मा । वेदो गोतमपूर्वे—वेररवाचभते एवंयमवववना । नारको वेमग्गवग्ग । कपमा जरीवेवव

पद्यावुत्पन्नस्य च बहुकामत्वा दक्षिणुत्तरदोषकस्ति एवं तेज्यासूत्रेण, इहयं तेज्यासूत्रेण प्रायश्चेष्टायाद्या वाद्यश्रवणेशयातु सर्वद्वारेषु यो नस्ति ॥ समवेयकस्ति च समवेदनाः समानपीकाः ॥ सुखिनीयति ॥ यच्छा सम्यग्दर्शनं, तद्वत् सञ्चिन्ना सञ्चिनोक्तताः सञ्चित्यभूताः, सञ्चि

ગોયમા એવયુમ્મદ્ ગેરહયાણજતેસદ્દેસમવચ્ચગા ગોયમા ગોહ્ણઠેસમઠે સેકેળઠેણતહચ્ચ ગોયમા જતેપુહ્ણોવ  
વચ્ચગા તેણવિસુદ્ધવચ્ચતરાગા તદેવ સેતેળઠેણ ગોયમા ગેરહયાણ જતે સદ્દેસમલેસ્સા ગોયમા ગોહ્ણઠેસ  
મઠે સેકેળઠેણ જાય ગોસદ્દેસમલેસ્સા ગોયમા ગેરહયાદુવિહા પચ્ચાસા તજહા પુહ્ણોવચ્ચગાય પચ્છોવચ્ચ  
ગાય તત્ત્યળજેતેપુહ્ણોવચ્ચગા તેણવિસુદ્ધલેસતરાગા તત્ત્યળજેતેપચ્છોવચ્ચગા તેણચ્ચવિસુદ્ધલેસતરાગા સેતેણ

हीन उत्तर । गीयमा । हेमौतम । बाइबडे समझे । एपक समझनहीं सुझनहीं । सेवक व तक्षक गाथमा । ते ज्ञकारहे हेमवन् । इमकहु इत्यादि सब पठिसोपर कहवा हेमौतम । जेते पुण्याककगततेबिद्विगुहवचतरागा । जेपूर्व जपमा ते तेबने अक्षयर्म बाकोरछाहै तेमाटे भकावबहे जे पहे जपमा ते इने वबाकमहे तेमाटे विगुहवच तछने । तछेव । एसक तिमजककवा । सेतेबडेव मीयमा । त तेवजारचे हेमौतम । नारको सब समवच नही । जेर दबाबमते नखेससकेखा । नारका सेमगवन् । समता सरोको सेमाना वयोहे सेमायहे भावसेमा कहवौ । गाथमा । हेमौतम । बाइबडेसमझे । एपवै समझनहीं सुझनहीं । सेकबडेव । ते सेकारक समगवन् । इमकका जाव चासखससकेखा । बावत् नारको सगकाई समसेमझानहीं । मीयमा । हेमौतम । जेरदबादुविवा पबता तवडा । नारको के प्रकारमा कछा ते कहेहे—पुण्यावचमाय । ०५ नारको पूव सपनाहे । पख्यावचमाय । बीजा नारको पके उपनाह । तखइजेते पुण्यावचमा । तिजा बेपथमाहि जे नारका पूर्व सपनाहै । तथविगुहसेसतरागा । ते नारको विगुहसेमान । पबौ मीव पथप कर्ममाटे निमजमेम्यावतकछा । तखइजेतेपख्यावचमा । तिजा बेपथमाहे जेत पहे जपनाहे । तेव थविगुहसेमतारागा । ते नारको थविगुहसेमोहै पबौकममाटे निमजससावतनहीं । सेतेबडेव गाथमा । तेमाटे हेमौतम । नारको सब सन्नेमोमहीं । जेरदयाचमते सखेसमवेदवा । नारको से

नूता एषया असम्भ्रानः सखिनोऽनूताः सखीनूताः प्रियस्ययोगात्, मिथ्यादृष्टान्न मपहाय सम्यग्दर्शनजन्यमा समुत्पन्नाइति यावत् तेषां पूर्वोक्तकामविषाद मनुस्मृता मरीमद् दुःखसकटमिव मरुसा वस्साव मापतितं, न ह्यतो भगवद्दर्शत् प्रवीत-सकलदुःखपथरो विपपयि प्रमविपपरिप्रोगविप्रलब्धेति चेत् यमं इत्यतो मद् दुःखं मामस मुपजायते, अतो महावेदना को ऽसखीनूतासु मिथ्यादृष्टय कोतु स्वरुतस मताः इत्यन्मिदं मित्येव मज्जनलोऽनुपपत्तमानसा चक्षयेदनाः स्वयित्येव चक्षयेत्वाहुः सखिनः सखिपञ्चमित्रियाः सन्तो भूता नारकस्य मताः सखीनूता सो महावदना स्त्रीप्रागुनाप्यवसाये नागुजतरकम्यन्यनेन महापदकेपूल्यादात् असखीनूतासु अनुभूतपूर्वोऽसिद्धिना कोवा सखित्वा

ठेणं गोयमा । णेरइयाण जत सखेसमवेदणा गोयमा णोष्ठण्ठेसमंठं सेकेण्ठण जते गोयमा णेरइयादुविहा पसुप्ता तजहा सखिनुयाय व्यसखिनुयाय तस्यणजेतेसखिनुयातेणमहावेदणा तस्यणजेतेस्यसखिनुया तेण

भवन् । सगदायपेया वेदनायत पोकायत षाव । उत्तर । गोयमा । वेगोतम । पादवेदमहे । ए एवं समयनहीं दुक्तनहीं । सेवेवेदभते । ते वेदो चारवे वेभगज्ज इमकथे उत्तर । गावमा । वेदोतम । वेररकादुविहा पवता तवहा । नारको वेमिदे कक्षा तेववेदे-सखिभूयाद । सम्यग्दृष्टो नारको तवा सरो । चनविमूहाय । मिथ्यादृष्टो नारको तथा सखो । तज्जखवेतेसखिभूया तेव महावेदणा । तिहा वेपचमादि जेनारको मिथादयनकोडो सम्यग्दयन उपमा तेहने पूर्वगत कामविषाद संभरवासो महादुख ते । विमले । पक्कणात् सखदमाचे पया तेहम पवाप्तापकरे मे परिहयकयो धमे मयालो तो तिबबारवे सखग्दृष्टोने मानसी दुखधवा । मयाववेते सखिभूया तेव भयवेदनायतरामा । तिहा पूर्वोक्त वेपचमादि सखिभूत कविदि मिथ्यादृष्टो ते पोताना कोकावम पदमा पजायता मानसीपोका कोडोवेदे तेमाटे चक्षयेदनायतकक्षा पजवा कोरेण इमकवेदि-संज्ञो पवेदिव कक्षा मरो नारकपथं पाप्मा ते सखीभूत कहीये ते महावेदनायत कक्षा तेकिम तीत्रपथमपञ्चबसाये एवं सखप्रक्रमेणो सखकोपो तेवेकरो नरकनेविदे उप ना चने पमंकोभूत वे उपमा तेवे पदिका पसकोपको भागयो तेमाटे पत्थत सखमपञ्चवसाव महता ते रजमभावे भिने उपवे तेमाटे पसकोमी प

देवा त्यस्तामुजाप्यववायात्रावा इन्द्रप्राया भनतितीव्रवेदनरक्षेयू त्वाहा दसपदेना, वयवाः सुज्जीजता पर्योसकीजता वसन्तिनस्त्वैपर्योसका  
 स्तेच क्रमेण महावेदना इतरच जवत्सीति प्रतीयतयेवेति ॥ समा सुत्याः क्रियाः कर्मव्यमित्यभजता आरम्भिकादिवा येयान्ते  
 समन्विताः ॥ आरम्भिकः पृथिव्याद्युपमर्हः स प्रयोजन कारक यस्याः सा आरम्भिकी ॥ पारिणहियति ॥ पारिणहोपमोपकरकवक्कवकु  
 स्तीकारो धर्मोपकरकमुष्णाच, स प्रयोजनं यस्याः सा पारिणहिकी ॥ माया धमाज्ज्वल मुपससयत्वात् कोपादिरपिच सा प्रत्ययः

अप्यधेयणतरागा सेतेण्ठेण गीयमा । नेरइयाण जते सवेसमकिरिया गीयमा णोइण्ठेसमठे सेकेण्ठेण जते गीयमा नेरइयातिविहा पखसा तजहा सम्माविठीय मिच्छविठीय सम्मामिच्छविठीय तत्थणजेतेसम्म विठी तेसिण चत्तारिकिरियात्तं पक्खसात्तं तजहा स्थारजिया परिगाहिया मायावसिया अपपञ्चकाणकिरिया

वे साये अस्वदेदनाय त होय प्रववा सन्नोभूत सेयबीसा तेहने महावेदना होय पने ससरीने अपयीसा तेहने प्रववेदनाहोय ते तेवेचवें हेमोतम ! इम वज्र नारको सयठा सरीया वेदनायंतनहीं । छेतरेवुंछ मोबसा । बहो मोतम पूछेदे— नारको हेमगबन् सगठा सरीको बिबा अमंदबनहेतु चारमिको पादिदेई होय । उत्तर । मोयमा । हेमोतम । जोरचवुंछ सवुंछ । एषय समझनहो हुबनहीं । सेवेचवुंछोपमते ते छेपवें हेमगबन् इमकचुं नारको समझि पनहीं उत्तर । मोयमा । हेमोतम । अरहबातिविज्ञापयसा । नारको तोमैपकारे कइया । तज्जहा सचदिहोय । तेकरेछे—सम्यग्हो समझितो चौवे मुब ठावे बर्त्ते ते । मिच्छदिहोय । मिच्छाहटी पहिखे मूबठावे ते । सम्यामिच्छदिहोय । समझिमिच्छाहटी मिचभावे बर्त्ते । तत्त्वयजेतसचदिहो । तेपुर्वीत्त तौनय सम्राजि जेनारको सम्यग्होवैसमझितोवे । तेसिचयत्तादिबिरियापापयत्तापोतज्जहा चारभिया । तेइंन तेनारकोने चारबिबा कमदबनहेतु कइया तेकरे देवे—पुबियादिबने उपद्रव तेहोज कारबवे जेहनो तेचारमिको । पारिपह ते अमोपकरववजित वसुनो अमोकारकरवो प्रववा धर्मो पकरचनेबिं पुच्छ । ते पारिपहिको बिबा । साधारणतिया । अनाजवयवा उपससचवधी काधादिक्कपण तेहोच प्रस्यवहोये कारपछे जेहने तेमायाप

[illegible]

प्रमाणायुषो युगयोस्तथा इतिप्रथमम् । तेनैव युगवयसस्तत्पु नारणे एक प्रथमतस्तथा अपरतु पद्या दिति द्वितीया, अग्रे चिंयसमा युभिषद् द्वेवि युगवयसस्तत्पु, त्रिचि युगवयसस्तत्पु त्वत्ति पुनर्युगप दितितृतीया, क्वचि त्सागरोपमस्तितयः, क्वचि युगवयसस्तत्पु, इत्येवं विषयायुषो विषयमेव चोत्पत्त्या इतिचतुर्थः, इह सङ्ग्रहाया-आधारार्थस्तु ३ समा कर्मवयेतदेवलेसाय । वेयवएकिरि यात् आउयवयसिचउत्तमी ४ १ ५ अमुद्रुमारार्थं प्रते । इत्यादिना अमुद्रुमारप्रकाश मापाराविपदमवकोपेत सूचितं, तत्र भारकप्रकरवलेयं, एतदेवाह ४ अङ्गनेरहइत्यादि ४ तथा शारकसूत्रे नारकनूयसमानेयि नावनाविबोदेव तिस्यते, अमुद्रुमारका मरुपक्षरीरत्वं भयपारखीयशरी

णठेणजतेणययुच्चइ गीयमा णेरइयाचउद्धिहा पणत्ता तजहा अत्येगइयासमाउयासमोवयसुगा अत्येगइया समाउयायिसमाययणगा अत्येगइयायिसमाउयायिसमोवयसुगा सेतेणठेण गीयमा । अमुद्रुमारणजतेसंखेसमाहारा संखेसमसरीरा जहाणेरइयातहान्नाणियद्धा णधर कम

पनादि ते समाउया समावयसमा कइवे एयइविभागा १ । पटवगइया समाउया विममावयसमा । कइएव नारकीनां जोव सरीखे भाजखेखे विम मेअजीर इयमइयववने पाउउणेइ विषम उपमादि एक्कपइलेसमये उपमा बीजा बीजसमये पयवा समयांतरे उपमा एबीजाभागा २ । अत्येगइया विममाउया समावयसमा । अतसाएव नारकीनां बीज विषम पाउखेखे विम एक्कजीव इयमइयववने पाउखेखे बीजी इयारसइसवय पाउखेखे अ ने एवै समये उपमादि एबीजाभागा ३ । अतसाएव नारकीनां बीज विषम पाउखेखे विम एक्कजीव इयमइयववने पाउखेखे बीजी इयारसइसवय पाउखेखे अ ने पाइ पने एवमागारापमने पाउखे उपमापि विषमदि एक्कपइले समये उपमा बीजी समयांतरे उपमा एबीजाभागा ४ । सेतेबट्टेव मोयमा । ते तेनेपये वेगेतम । नारकी सगमा समाउया समावयसमा नही ४ इवे मोतम अमुद्रुमयो अमुद्रुमारना प्रत्य करेखे-अमुद्रुमारव भंते सवेसमा हारा । अमुद्रुमार वेभयवन् ! सगमा सरीखापाहारवन्ने । सवेसमसरीरा । सगमा सरीखे । गरीरे इत्यादि विहा अमुद्रुमार प्रकरवनेवि

रापयया नपम्यतोमुत्तावेयप्रागमानत्वं महाद्वरीरत्वन्तु त्वर्पतः सप्तदशप्रमादत्वं मुत्तरेविक्रियापयया त्वपयद्वरीरत्वं नपम्यतोऽपुलसद्वैपप्राग  
 मानत्वं, महाद्वरीरत्वंतु त्वर्पतो योजनसजमानत्वमिति तत्रैते महाद्वरीरा बहुतराण् पुद्गला नाहारयन्ति मनोजससप्तदशाहारापेक्षया देवा  
 नां द्रव्योत्पादप्रमाणं प्रयानापेक्षया च द्वाकोभिर्द्वौ यस्तुना विधीयत ततो क्षपद्वरीरपादाहारपुद्गलापेक्षया बहुतरां स्ते ता नाहारन्तीत्या  
 दिप्राक्तत्वं अमीत्वं नाहारयन्ति अमीत्वं मुच्यन्ति ते स्य ये यनुर्पादे इय यांहारयन्ति कोकसप्तकादे द्योपरि उच्यन्ति तानामित्या प्रीष्ट  
 मित्युच्यते तत्त्वर्पतो ये सातिरेकवयवइत्यो परिणाहारयन्ति; सातिरेकवयवस्योप्युच्यन्ति ता नक्षीकृत्यै तेषामेकपक्षासीनाहारोच्यन्तावत्वेन  
 पुनः पुन राहारयन्तीत्यादि व्यपदेशविवक्ष्यतादिति तथा क्षपद्वरीरा अपततरा पुद्गला नाहारयन्त्युच्यन्ति ता इयद्वरीरत्वादेव यस्तुन स्ते  
 या कादाचित्कत्वं नाहारोच्यन्ते सप्तदशा द्वरीराहारोच्यन्तावत्तरासापेक्षया बहुतमान्तरासत्वा तत्र इत्यन्तरास्ते तेना हारादि कुवन्ति, तद

वसलेस्वाष्टपरिधयेयद्वातं पुद्गोवयवसुगा महाकम्तरा स्थितिसुष्टयसुतरा स्थितिसुष्टयसुतरा पच्छोवयवसुगाप  
 सत्या संसर्तइव एवजावयपिचकुमाराण पुढविकाइयाण प्रतेसत्वेसमवेदया हतासमवेदया संकेणठेणनतेसत्वे

नवपद कइया । अहाचेरइया तथा भाविकत्वा । किम तेनारकोना प्रकरणेनिवे कइया पचि एववावियेय समुत्तुमारने प्ररोरनी पक्षपक्षौ ते मव  
 धारकोय प्ररोर वयवको पंगुकोनो पसंज्जातनी भाग मान घने महाभरीरपण्ठ कइयाको सावदाय प्रमाण उत्तरवेक्त्रियरोरनी पपेसाये पक्षपक्षू प  
 वयवो पंगुकोना पसंज्जातनीभाय महाभरीरपण्ठ कइयाको लयभाजन मान तिहा के महाभरीरपण्ठ ते धर्वापुद्गलमते धाहारे मनोसत्त्व धाहारनी  
 पपेसाये । पमिक्खर पाहारेति । इहां चतुस्रपादिदेहि धाहारे । पमिक्खर असंघति । ते सातप्योक्त पादिदेहि धाहारे कइयाको जे साधिकवयवसइ  
 खे धाहारे तेसाधिकपये कइयासजे इत्यादिक भारकोनी पपेसाये समुत्तुमारने विपरीतकइया तथाहि भारको जेपूँ उपनी तेवयपक्षमक प्रइतरनच  
 प्रभतरकेमी कइया घने समुत्तुमार जेपूँ उपनति । महाकम्तरा पचिसुष्टयसुतरा पचिसुष्टयसुतरा पच्छोवयवसुगापसत्वा । महाकम्ती पक्षपक्षौ प

न्यत्र नूनं नीत्येव विपनभावेति महाशरीराणां मय्याहारीष्णुमयो रन्तरात्मसिद्धिं किन्तु तत्रत्य मित्यविषयत्वादेवा मौल्यं मिरयुक्तं सिद्ध्य  
महाशरीराणां तेषां भाषारोष्णुसयोरव्याप्यतत्त्वं अरपक्षरीराकाण्डं मदान्ततत्त्वं यथा-सौधम्मदेवाणां सप्तहस्तमानतया महाशरीराणां तयोर्नरं  
क्रमेण ययमहस्त्रय पञ्चदशम् अनुतरसुराकाण्डं इक्षुमानतया श्वपक्षरीराकां त्रयस्त्रिंशद्वयं त्रयस्त्रिंशदेवप पञ्चदशम् महा  
शरीराणां मयीक्ष्णाहाराष्णुसाधियानेना स्पस्थितिकस्य भवसीयते, इतरस्याणु विषययो यैमाभिकवदेयति, अपवा ; सोमाहारायेतया अनीत्य  
मनुममय माहारयति, महाशरीराः पयासकावस्थाया उष्णससु यथोक्तमानेनापि भवत्यरिपूर्वमवापतया पुनः पुन रित्युच्यते, अपयोर्योसकाय  
स्थायां त्यक्पक्षरीरा सोमाहारतो माहारय प्रयोजयाहारतयवा इरकाविति कवाचि त आहारयसी त्युच्यते, उष्णसापयोर्योसकावस्थायाञ्च नो  
ष्णुम भ्यन्यदान् शुभ्रगतीत्यागुच्यते आहत्योष्णुवस्तीति ॥ कम्मवस्सेसाठुपरिवेखेयसुमुत्ति ॥ कम्मोदीति नारकापेक्षयाविषययेक्याप्यानि तयादि  
भारजा य पूर्वोत्पन्नाः सोऽप्यकम्मकम्पुतरयसुशुभ्रनतरलेखया उक्ता अमुराणु य पूर्वोत्पन्नाः सो महाकर्मणोः अशुभ्रनतरलेखयावेति ,  
अथ चेदि पूर्वोत्पन्ना अमुरा सोऽतिरूपदणोष्णातचित्तया आरब्धान् अनेअप्रकारया यातनया यातपन्नाः प्रभूत मनुम इक्षुमंसविव्वन्तीत्यतो  
निर्णीयन्ते त महाकर्मावः अथया ये उद्गापुय सो तियंगादिप्रायोप्यज्जमप्रकृतिधम्ममा त्मसाकम्मास ताया अमुहुवणां अशुभ्रनलेखयाग ते पूर्वो  
त्पन्नानो दि पीकस्या अमुनकर्मणः पुनो यर्को सदयाच प्रसतीति, पदाहुत्पन्ना स्वप्रदुपुपो ष्वप्रकम्मावो अतुतरकम्मणा मन्थात् शुभ्रकम्मणां

शुभतरमेवमायतल तैकिम ज पूरे उपना त धर्मा करपना तपशी धर्मा शुभकम सरेके तेमाटे महाकमी पयवा तिये प प्रसुखना आसु वाधा तेमहा कमजत तवा शुभवचन शुभसखाया ते पक्षिमा उपना गभकम चीबयवा माटे पळे उपना तेच तिर्गणा दिहना आसु बाधोनवी पयवा शुभकमची पयवा नवी तेमाटे बर्णादिक्कशुभवेदना सूबनेवियै मारकीमो परे प्रसरकुमारळे तथापि भावनानेजियै धिमेयळे ते हण्णे --जि तेमसोभत ते महावेधना धतवे



लीकत्वाद्यनुमयार्थादयः स्मुरिति वेदनामूत्रं यद्यपि भारकाद्याभिर्या हुरुणाराद्यामपि तथापि तद्भाष्यमाया विक्षेपः सचाय ये सम्बन्धीभूता  
 स्त महावेदना द्यारित्रविरोधनाश्रयचिन्तसन्तापात् अथवा सम्बन्धीभूताः समिष्टपूर्वमवाः पयासावा ते क्षुप्रवेदना भाषित्य महावेदना, इतरे  
 स्वल्पवेदनाइति, एवं नागकुमारद्वयोः प्रीक्षित्येन नवदशकावाण्या ॥ पुढविज्ञाद्वयाद्य आहारकमवस्थेइत्या जहा वेरइयाइति ॥ चत्वार्यपि  
 मूत्राणि नारकमूत्राणीव पृथ्वीकायिकानिस्त्वायेना दीयन्त इत्यर्थः केवलमाहारदूत्रे जावगेव पृथिवीकायिकाना मगुलासङ्केपप्रागभाप्रधरीरस्त्वे  
 व्यस्यधरीरस्त्व मितरवेत प्रागमवचना इवसय ॥ पुढविज्ञाद्वय पुढविज्ञाद्वयस्स ठेगाइकथयए चठठाकवक्रिएति ॥ तेचमहाद्वारीदा सोनाइरतो  
 यदुतरान् पुढला नाइरयन्ती रमुष्कमन्त्रिणा मीरवमहागरीरस्त्वादव अस्पञ्जरीराका मरपाहारीष्कुसुत्व मरपञ्जरीरस्त्वादव, कादाचित्कत्वच  
 तयोः पर्याप्तमेतराद्यस्यापेच मवसेयं तथा कर्मोविभूतेषु पूषपद्यादुत्पन्नानां पृथिवीकायिकानां कर्मवकसेदपाविजायो भारकैः समएव वेदनाकि

वे एव अथानेविये चारित्रिविराधनाबी उपना चित्तवैतापयो पञ्चवा पूर्वमे सप्रोहता अथवा यदांमाहता ते ग्रमवेदनाभायी महावेदनावतकक्षा  
 गते पवप्रोने चरपमाता वेदनीइवै तेमाटे चरपवेदनावतकक्षा । सेमंतेइव । काकता सय तिमज ककना । एवकावकविद्यकुमारराच । इमनागकुमार  
 पादिदेह नवप्रानितकुमारपदत ककवा । पठगिज्ञाद्वयाद्य आहारकमवस्थेइत्या जहा वेरइयाइति ॥ पुढविज्ञाद्वय जीवने पाइर कर्म वं सेया एचारेइ  
 म् नारकमूत्रनीपर ककवा परं पाआरमूत्रनेविये णवो भावनाकरनी पृथिवीकाइयानी भंगुलनी चसक्यातमी भाग ग्रोरेवे तेमाटे चरपग्रोरेर महा  
 रोपवं पापमवचनबी प्रभाककरवा वेदना क्रिया मूत्रनेत्रिये नागाल सेयावेले । पुढवीकाइयाचमते सन्ने समवेदना । पृथिवीकाय सेभगवन् । सवने  
 मरीगी वेदनाइय इतिप्रय उत्तर भगवत कहेइ—इतायमवेदना । ॥ गौतम पृथिवीकाइया सवने सरीखो वेदनाइ । सेकेचठे चमते सन्नेसम  
 वेदना । ते ये भारवे नेमगवन् । पृथिवीकाइय मगसा जगीनी वेदना भोगवे भगवत उत्तर कहेइ । यायसा । सेगौतम । पुढवीकाइया

योऽनु नानास्य मतप्रवाहः ॥ पुढयिकाइयावन्ते । सहेयमेवयेत्यादि ॥ असुखिति ॥ अमस्कावा, ॥ असुखिजुतरे  
 समभित्ता या प्रायते तामित्यर्थः एतदेवयनक्ति ॥ अविद्वारयति ॥ अमिद्वारयति वेदना अनुभवतोपि न पूर्वोपाशाशुभकर्म  
 परित्यजति रियमिति मिथ्यादृष्टिणा एवगच्छति विमनस्त्वत्वाद्वा । अमिद्वारयति वेदना अनुभवतोपि न पूर्वोपाशाशुभकर्म  
 या त्यदागते यदाह - उभयगदेसठम मकासयधुठदियममादलो सुदवीशोयससलो तिरियाठवधुठवीकोति ॥ १ ॥ तत स्ते मायिन सप्यन्ते, अथवा  
 मायेह समस्तानुवधिरुपायोपतसह सतो नमतामुवधिरुपायोदयवन्तो असएव मिथ्यावृष्टयो मिथ्यात्वोदयवन्त्यसि ॥ तादृक्प्रियमाठति ॥ तेपा

समयेयणा गोयमा पुढविकाइयासहेअसंखिन्नया अणिदाए वेदणवेदेति सेतेणठेण पुढविकाइयाण नतेसहेस  
 मकिरिया हुता समकिरिया सेकेणठेणनतेपुढविकाइया गोयमा पुढविकाइयासहेमार्हमिच्छधिठी ताणणेय  
 तियाणपचकिरियाठकजाति तजहा अरानियाजावमिच्छादसणवसिया सेतेणठेणपुढविकाइयासमाउयासमो

सखे समसोमविभूय पविदाएवेदवेदेति सेतेणठेण । सगतालोव पसोभूय मिथ्यालोवे मनरहित पसोभावे खेवोहीय तेहवी वेदे  
 तेकोअदवेदे निहारविना वेदना भोयवेदे पविपूर्वकपावा खेयभुभकमे तेहमोएवरिचामहे एहव् मकापे मिथ्यादृष्टिपचावी मनरहितपचावी ते तेगि  
 पये रसवधुठ वलो गीतम पूवेहे - ओमहाओरमाओ प्रत । पुढवीकाइयावन्ते सखे समकिरिया हुतासमकिरिया । पविबीकाविमनीव हेभगवन् सग  
 ना मनकिरावतहे इगीतम पविबीकाविम सगता सरोखाविवावतहे गीतमअहेहे । खेवे गहुधमते पुढविकाइया । ते बिसेभये हेभगवन् पविबीका  
 पिच मयंसमकिरियहे उत्तर । गोयमा । हेगीतम । पुढवीकाइया सखेमार्हमिच्छधिठो । पविबीकायिक सगता माभावंतहीय प्राये सप्ये मिथ्यादृष्टिहे स  
 वा उभयदेमचाम मचामपामठदियममादलो मठमीकावममजो तिरियापोधधुठवीका ॥ १ ॥ तादृक्प्रियमाठति तजहा । ते पुधि  
 गोवाविचन निये निर्तरं पचकिरियाको ने कहेहे - पारंभवीलिबा । वायगये परियव्वको २ मावाप्रत्यविमो १ पय

पृथिवीकायिकाना नैयतिक्या मियता ननु यिप्रयत्नः पञ्चदेवताः ॥ सेतेखेदेखेसमभिरियति ॥ निगमनं ॥ आध्वजधरिदियति ॥ इह महाशरीरस्व  
मितरय स्वस्वययाज्ञानानुसारेण यद्ययं आहारय हीम्निप्रयादीना समसपलस्यकोपीति ॥ पचिदियतिरिस्कजोषियाजहाभेरियति ॥ प्रतीत खबर  
भिहममशरीरा यन्तीन्व माहारयान्त छज्जुसन्तिवेति यदुच्यते तत्सङ्कासवर्णायुयो ऽपेक्षेत्यवसय तथैव दर्शना या सङ्कासवर्णायुप खेपा प्रवे  
पाद्वारम्य यदस्या परि प्रसिपादितात्त्वन् चक्षुष्यशरीराकां त्वाहारोष्णसयोः कादाचित्कत्वं वचनप्रामाण्यादिति, सोमाहारपेक्षयानु सर्वेपा

यययसागा जहाणेरइयातहानाणियसा जहापुढविकाइयातहा जाव चउरिदिया पचिदियतिरिस्कजोणिया  
जहाणेरइया णाणत्तक्रियासु । पचिदियतिरिस्कजोणियाण जत्ते सखेसमक्रिया गोयमा णोइणठेसमंठे सके  
णठेण जत्ते गोयमा पचिदियतिरिस्कजोणिया तियिहा पयासा तजहा सम्महिठी मिच्छाहिठी सम्मामिच्छा

त्वास्यानको ॥ मिच्छाद्यमप्रव्यविको ए एकइको । सेतेखेदेख पुठको जाइया समाजवा समावचनना जहावेरइया तजामावियमा । ते तेवेपथे इतकहु  
इको योतम पुठेव—यविदोकायिक सवमरीके पाखवे सरोकाजयनाहे विमगारलोकाजा तिमपुविदोकायिकनाकोवपवि जाइया तिमहीव इहां प  
वि चठमगो कइको । जहापुठदोकाइया तजजवचरिदिया । तिम पविदोकायिक कइया तिम जावतयवे पय्वाबतेखकाव वाककाय बनसतो  
जाव वेइइ । तेइइो चउरिदोसरे इमजकइया इहां महायरोरपथ् घने पय्वायरीरपथ् पाता पाताको पयगाइगले यजुसारे कइय् पाहार वेइइोने या  
निदेइने एइत प्रचेप नचवपविइवे । पचिदियतिरिस्कजोणिया जहावरइया जाणत्त किरियास । पबइो तियेखेयोमिक औप जिन मारलोकाजा ति  
म जाववा इहां माटापरीरना धको यमिक्क इयाइरेति इत्यादि खेइकोये ते सम्पात वर्णायुपको पयेछायें जाणको विजेय ते क्किलने विवे जावया  
तेकोत्र ठेनु।डेके । पचिदिवतिरिस्कजाविय।यभते यवेसमक्रिया । पबइो तियेखयानिक जेभयवन् । पयगा समक्रियवे सरोकी जेइया कइतां क  
राय जेइता भगवतकवेदे --गावमा । जेयोतम । पाइवइे रमइे । एपरं समजमही युलनवी । गकोण्डेख भते । ते खपय १ जेभनपन् तिवेचकोजिया

मयजीरुन मिति पटत मय मरुपकारोराखान्तु य द्वादाचिक्तत्व य वपपासकत्वे सोमाहारीष्ठाख्यो रप्रवनेन पर्याप्तकत्वे य तद्भायेना वसेयमि  
ति तथा कन्मसूत्रे यत्पूर्वोत्पन्नाना मलयकामत्वं मितरपास्तु महाकम्पत्यं, तदायुष्मादि तद्भवयेद्यकमार्पेक्षया वसेयं, तथा वसेल्लेइयान्मप्रयो य  
त्पूर्वोत्पन्नामां ग्रामयस्माद्युक्तं तत्तारुस्यात् पदादुत्पन्नामा मशुप्रवर्णावि धात्वादवसेय, सोमे तथैव इक्षोमादिति, तथा य सत्रयासजयसि ॥ देवा  
विरताः न्युना त्प्राञ्चातिपाताद भिरास्रत्वा दितरस्मा दनिवृत्त्याद्येति य मरुत्सजानेरेहयसि ॥ तथा धाव्या इतिगम्य, नागाव्य जेदः पुमरय

द्विठी तत्पणजेतसम्माद्विठी तेदुविहा पणसा तजहा असजयाय सजयासजयाय तत्पणजेतसजयासजया  
तेसिणतिथिकिरियानुक्कजति तजहा छारजिया परिगहिया मायावसिया असजयाणचसारि मिच्छद्विठी  
णपच सम्मामिच्छद्विठीणपच मणुस्साजहाणेइया णाणत्तजमहासरीरातेआहञ्चआहरेति ४ जेअप्पसरीरा

मन ममकियनको । उत्तर । गावमा । जगोवन पचिद्वितिरिस्त्राशिया तिविहा एखरा तजहा । पखेहो तिर्वेयानिस्त्राव तीनेमेदे कम्मा ते क रेहे - मन्महि । मन्मगहटो बोचे पचिमे गुणठावे रखाते । मिय्याइजो पडिखेठावे रखाते । सयामिष्कहिहो । मियहटो बोजेयवठावे हुँ । मन्मजजेते मन्महिहो । तिहा पूर्वोत्त तोनपसमावे चे मन्मगहटो समजितोह । ते पुविहा एखता तजहा । तेकना मेमेद कम्मा तेकहेहे - एस जयाय । ए ३ पसजती रिरतिरहित बोखेगणठावे रखा । संजया सजयाय । बोखादेगिरती खून माषातिपातबको निवज्जाहे तेमाटे संवतो सुख पको निवर्त्तानको तेमाटे एसवतो कम्मा । मन्मजजेतेसज्जासज्या । तिहा पूर्वोत्त सेपसमावे जिचे खयतासंवतो देगविरतोहे । तेसिखतिखिखि रिहाया कम्मति तजहा । तेथाने तोनकिया उपजे ते कहेहे - भारभिया । पारिपक्षकोकिया २ । मायाबतिजा । मा पापसविबोजिया २ । पसजयाणपमारि । एसयतो बोचे गणठावे तेहने तोन पडिहो बोको समखास्यानको एवंवारिकियासागे । मिष्कहिहोबप न । मिय्याहटीने चारि पडिहो पंपसो मिषादशन प्रत्यमिको एय ५ भागे । सयामिष्कहिहोबप ५ । मिय्याहटो छतोसगुणठावे रखा जोवने मिया

तत्र ॥ मकुन्दाय जते । सर्वेसमाहारना इत्यादि ॥ प्रश्नाः ॥ मोहबन्धेसमवेदस्या ॥ युत्तर ॥ जाय दुविहामदुस्सा पयसा तंजहा महासरीराय सप्पसरी  
राय तत्तय जे ते महासरीरा ते वुत्तराय पोम्भले आहारति एव परिचामति खससति बीससति ॥ इह स्थाने मारकसूत्रे अभिष्यब्धंमाहारती  
त्यपीत पिदुतु आइवेत्सपीयते महासरीराहि देवकुर्वाविमियुनका सप्त कदाचिदवा हारयन्ति, कावत्तिकाहारेण, अष्टमप्रसस्साहारोत्तिय  
बनात् सत्पयरीरा स्खन्नीएव महत्पण्ड आसाना तथैव वर्धनात् समूर्ध्वमनुप्याया मत्पयरीराया मनवरत माहारसम्भवाच्च यथेह पूर्वोत्प

तेत्युप्यतरापुपोगलेऽप्याहारेति ४ अग्निस्कण्डाहारेति सेसंजहाणिरेइयाण जाववेदणा । मणुस्साणजेतेससेस

लोनीपरे पयत्रियासामे । मत्पयावहावेदरवा आचत् जेमहासरीरातवाइय आहारैति ४ । मनुष्येने विम मारकोने कक्षा तिमजाचवो एतथोविशेष  
वे ते कहेवे— मत्पयावभतेसव्यसमाहारणा इत्यादि प्रश्न । माकमा बाइबो समेइत्यादि । उत्तर । जाय दुविहा मत्पया पयसा तंजहा महासरीराय  
पयसरीराय तत्तयजते महासरीरा वुत्तराय पाम्भले आहारति एव परिचामेति खससति बीससति । इवे स्थाने मारक सूत्रेनैवै अभिष्यब्धंमाहार  
रेति इसाज्जहा पने इहां पाइय इत्थो कप्पो तेमहासरीरावत देवकुर्वा युगसक्केण पादि दुमत्तिकाकक्षा ते विबारे ते आहारिहे कावत्तिकाहारेण सप्तम  
मत्पय आहारति पयनाद् । जेपयसरीरातेपयतराय पाम्भले आहारैति ४ अभिष्यब्धंमाहारैति । जे पयसरीराया पाम्भो ते पयतर पुत्तसमाहारै वा  
रवार आहारै पयप्यतरने वारवार ते माककनी अपेकारे ते तेजवा काकनविनै पयिदीसहे समप्पिम मनुष्येने पयसरीरीने निरंतर आहारना स  
भयवन्ती जेइहां पूरे जपना तेजने सुत्तवर्षादिहाव ते योयनपकांवा आचवा पयवा समप्पिमनी अपेकारे जाचवो । सेसजहावेदरवाच जाववेदवा ।  
याज्जतोसय विम मारकोने विदे कसु तिमज्जइवा जायत् वेदनासु तंजमी । मत्पयावभते सव्येसमक्किरिया । कसो गोतमपुत्तहे मनुष्य हेमयवन् सगळा  
मरीणा विपावतहे । उत्तर । मोकमा । जेगोतम । पोरचोसमंहे । एषां समज्जणी सुत्तजणी । सेवेचोवर्धमंति । ते ज्जांमिटे । हेमयवन् इमकस उत्तर  
। गोयमा । जेगोतम । मत्पयातिविहा पयसा तंजहा । मनुष्यना तोमंहे कक्षा ते कहेवे—सपपिडो । समज्जइही समक्किती । मिप्पा



[illegible]

नुरतिराग मायाग्रान्ध्याय तत्प्रगर्जते गजया मज्जया तेषि गश्पादिमानु तेषि किरियानुक्लज्जति अत्तजयाण  
प्राप्तिरिगिरियानुरागति निच्छुद्धिं गपच मग्गामिच्छुद्धिं गपच वाणमतरजोइसवेमोणियाजहा अत्तुरकु

[illegible]

पि तप्येवाप्येतस्या, यतो गुरुरादियु व्यन्तरान्तेषु देवेषुसंछिन्नं उत्पद्यते, यतो ज्ञेयो देवान्तेषु ज्ञेयसंछिन्नं उत्पद्यते ॥ अससीक ज्ञेयसंछिन्नं प्रत्यववासीसु रक्तोर्ध्वं  
 प्राग्वर्ततेसुति ॥ तेना गुरुरामरमररणीकपुष्पे रस्ययदना जयन्तोत्यवसेय यत्तु प्रागुक्तं संछिन्नं सस्यगृष्टयो संछिन्नं स्विस्तरवसि, त इदं  
 व्याख्यानमररयेयति त्यातिष्ठदेवान्तेषु त्यमल्लितोमोत्पद्यन्ते, स्तोत्रेवनापयदस्यचीयते ॥ दुविद्याजोदसियामायिमिच्छद्विहीठवत्रसुनायेत्यादि ॥  
 तत्रमायिमिच्छादृष्टयो स्वयदना इतरं महावेदनां शुनयदनामायित्येति, एतदेवमर्थोयथा, मवर ॥ वेपथ्याएत्यादि ॥ अथ चतुर्विंशतिदण्डज  
 मय सत्रयानेद्विद्वज्जग माशाराविषदे निरूपयन् वक्तव्यसक्तमाह ॥ सतसाधनते । सरया सर्वसमाहारगति ॥ जनेना हारशरीरोच्छ्वासकम्पयसे  
 सत्रयायदनाक्रियापपात्मापूरीकनवपदोपतमारकाविषतुविंशतिपदकको सेवयापदयिजेयितः सूचित, सदन्यच कजसेवयाविद्विवापिताः पू  
 रीकनयपदोयेता एव यपासम्पय नारकाविषात्मकाः पद्वक्तकाः सूचिता सदेव मतया सप्ताना दक्तकाणा सूत्रसङ्केपायै यो यथा ज्येतव्य स  
 तया वदयत्राह ॥ उद्विद्याकमित्यादि ॥ तस्मिन्पिपकानां पूर्वोक्तानां नियमोयकानां नारकादीनां, तथा ससेययानां मपिकृतानामेव, शुक्लसेवयाना  
 तत्रयमद्वक्तव्याच्याना मया प्रयाया मेवोगमः सक्तः पाठः यन्तेत्यः सक्तदेव ये त्वेगविषविज्ञेयकृतएव तत्रनेद, श्रीपिपदककसूत्रय दनयोः

मारा णत्र वेदगाण्माणत्त मायोमिच्छद्विहीठवत्रयगाय श्रुप्यत्रेयणतरा अमायीसम्मद्विहीठववसुगाय म  
 हावेयणतरान्नागियद्वा । जोइत्येयमाणियाय । सलेस्साण जते णेरद्वयासहेसमाहारगा उद्विद्याण सलेस्साण सु

वय द्यात्रोदेवता ते सातावेदतो यात्रो जायवो । यमायीसम्मद्विहीठववसुगाय महावेयणतरा भाविष्या । यमाईपले सम्मद्विहीठ जयना तेजने विधे  
 वे सातावेन्नोप पवित्रतर इय उरक्तनी छितिमाटे सध्वयुषाज माटे । आइसवेमाणियाय । ए ज्योतियो वैमानिकनेविषे प्रसरकयारवो विधेय जायवो  
 मदेव्यावधते वेदरना सलेसमाहारमा । सेव्यासहित जे नारकोपसुख योय ते सलेयो हेमयवन् । नारकोसयकानो एवसरोपो भाहारहे । मोदियाय ।  
 ममुपसवोपना पृष्ट नी । सलेसाह । सेव्यासहितने । एएविष तिषह एकोममी । ए विपुनो एक जहता यरीया गमी जहयो



मृगमिति नृप तपः ॥ उम्भन्ति ॥ इत्येतस्य वक्ष्यमाणपदस्यैव सम्भवा आस्य भुक्ताश्चापि स एव तादृशकले प्रत्यक्ष, स्तनेऽप्येन्द्रियतियेन्द्रोममुष्या  
 येनान्तराद्य याप्या भारकादीनां भुक्ताश्चेष्टयाया अप्राप्यदिति ॥ किञ्चलेसनीसलेस्साह पि एगोभसो ॥ श्रीपिक्कयेत्यथ, विशेषमाह खट्वः ५ येयका  
 पदस्यादि ॥ कान्तनेष्ट्यादवहने मानसतदपादकलेव येदनासूत्रे ५ दुविहा खेरव्या पक्षता सन्निभूपाय असन्निभूपायति ॥ श्रीचिकवस्यकाधीत ना ज्ये  
 ताव्य धमन्निभना स्रपमप्यपिप्या मेवोत्पादा वसन्तीयलुपठभमितिवचनात् प्रथमायाञ्च कृष्णनीसलेष्टयायो रजावा तर्हि हि मध्येतध्यमित्याह ॥  
 मायीमिच्छद्विद्विउयलगायेत्यादि ॥ तत्रमायिनो विध्यदृष्टपद महावेदना भवन्ति यतः प्रकर्षपर्यन्तवर्तिनी स्थिति मनुजा तेनिर्वर्तयन्ति प्रक  
 शापान्द तस्यां महती वदन्ता सम्भन्तीतिरेपानुविपरीतति तथा मनुष्यपदे विद्यासूत्रे यद्यप्यीचिकवस्य ॥ तिविहानमबुस्वा पक्षता तज्जहा सज्ज  
 या ३ तत्त्वमेत सज्जया ते दुविहा पक्षता तज्जहा सरामसज्जया वीयरानसज्जया तज्जहावेतसरायसज्जया ते दुविहा पक्षता तज्जहा पक्षतसज्जया  
 स्रपमसज्जयायति ॥ पठितं तथापि कृष्णनीसलेष्टयादवहक्यो नान्येतव्य कृष्णनीसलेष्टयोदये स्रपमस्य निपिटुत्वा द्वाप्यते - पुष्टपठिवकठपुष्ट  
 वयरोयडलेस्सादति ५ ४ हरुप्तादिद्रव्यरूपा द्रव्यलेष्टया भङ्गोरुप्य मनु कृष्णादिद्रव्यसाधिव्यवगितात्मपरिहामरूपा मावलेष्टया मैतव्य प्राणप्युक्त  
 मिति एतदेव दृगयव्याह ५ मनुस्वेत्यादि ५ तथा आपोतलेष्टयावहक्योपि नीलसहयावहक्यस्य द्रव्येतव्यो खर नारकपदे वेदनासूत्रे नारका श्रीचिक

क्लृप्तेस्साण एगुसिणतिरहृक्कोगमो क्लृप्तलसुणील्लेस्साणपिणगोभसो णवर वेदणाए मायीमिच्छद्विद्विउयवस्य  
 गाय श्रमायीसम्मिद्धिठोठयवणगाथनाणियह्वा मणुस्साकिरियासु सरागवीतरागश्रुपमत्तापमसाणनाणियह्वा

पाठकज्जया । खरइमेमनोमसह्वापि एवोभमा । क्लृप्तलोभो मानसुभो ए वेदना पणि एगोभमा एतल्ले सरोखो पाठकज्जयो । खर वेदणाए । एतको  
 निमेव वेदनामेविदे । माकोमिच्छद्विद्विठयवणगाय । माकोयमे मिथ्याहटो क्लपना तेहने महावेदना हुवे क्लृप्तो स्थितिप्रते पांमे तिहा मोठो वेदनासं  
 भये पने । पमयोसम्मिद्धिठोठयवणगाथ भावित्वा पमयोपय सममहटो जपगा तेहने पण्यवेदना हाय इत्यादिकल्पू । महसाविरिबासुनरायवोत

दत्तद्वयद पाप्या मन्त्रं ॥ नरद्वया दुविद्या पशुता तत्रा सकिन्नुयाय अस्किन्नुयायति ॥ अस्किन्नां प्रथमपृथिव्युत्पादेन कापोतलेद्वयाय  
 भया दत्तया ॥ काउनेरमाय्यात्यादि ॥ तथा तत्रोत्पत्त्यापत्तयाच अस्म्यजीयविज्ञोपस्था स्ति त मरिभ्य यथीपिको दृष्टक स्ताया तपो दृष्ट  
 की प्रगित्यो, तदमित्या येन मारकायां विजलेन्प्रियतजोवापूमाच प्राद्या स्तिस्तथ्य, प्रथमयतिपृथिव्यभ्युधनस्यतियन्तराया माथा द्यतस्त्र, प  
 व्यन्प्रियतियमनुयायां पद, न्यातिपो ते ज्ञानेद्वया, वंमानिनामा तिष्ठः प्रशस्तादिति, द्याह-विश्वानीमाकाक तेजस्तेसायप्रयवधतरिया । लोह  
 मसाहमीमा येतेजन्मामुपयव्वा ॥ १ ॥ कप्यसुखदुमारे मरिदेयेवजस्तोनेय । एरुपुपभइतया तेवपरमुक्तेसेवाठ ॥ २ ॥ तथा पुठवीघाठववस्वइ  
 वापरपुपपनेमनतादि [ तेजोमेद्वयान्ताः ] गन्धयतिरियमरेतु कलेसातिखिलेसाव ॥ १ ॥ केयलमरीपिकदरकते क्रियासूत्रे मनुष्या सरागवीतरायवि  
 ज्ञपया कपीता, इदनेरयामरुगेनु तथा न याथा तेज पद्वलेद्वययो दीतरागत्या सुमता धुक्तेद्वयायामव तस्यवीतरागस्यसम्भवा हप्रमता प्रमम

काउलस्साणित्रि एमेग्रमो गवर गेरदृणु जहानुहिणुदृणु तेउलेस्सापम्हलेस्साजरसस्युत्थिजहा

एत पयमता पमता नभाविषया । मनुष्यद क्रियासूत्रनेविषे यथापि द्याविद्वद्वे सराग दीतराग प्रमम त प्रम त कथावे तत्रापि कथनोचयेया दे  
 द्वनेविषे ए न इदवा कथनोचयेनानि उन्नेये सुप्रमना प्रभावबको । काउलेस्थापवि एमेवगमा नवर गेरदृणु कथा योहिणु दृष्टए तदा भाविषया ।  
 प्रापातमेगमा दृष्टकयवि भोजयेद्यादद्वनीपरे कथा एतस्याग्नेय मारको विम योपिकद्वदे कथा तिम कथवा ते इम रेरया दुविद्या यद्यता  
 तत्रा वनिभूयाय पसन्मिद्वयादिति । प्रसंगीया पद्विन्तो द्रविषीये उपजवेकरो मापातमेगमा सभवदे तथा । तेउलस्यापम्हलेस्थापस्य अतिजवापोहि  
 या तत्राभाविषया । तेजानेया पद्वेन्या लेजीवभियेने के तेपात्रीने विम योपिकद्वदे कथा तिम ते वेजनों कथयो ते सेया विमदे तिम कथे  
 मारकोगिगेनेदी तेउत्रात्र एहनैवद्विषो तीमसेवाइवे तथा भवनपतो पृथिवी अप् यमसतो एहने तथा अतरने पृथिवी पारसेया पुवे पंचेद्वीतिवेच म  
 नचने प्रमेगानुने स्वातिपोने तेजीसेय्यापुने पैमानिबने केद्वीपयस्त तीमसेय्यापुने । एतस्यायिगेय के ॥ योपिकद्वद्वनेविषे । मनुष्यासराग

ता स्तुभ्यमस्मि एतदेव द्रष्टव्यम् ॥ तेन ते सायकस्येतित्यादि ॥ गच्छति ॥ उद्देश्योदिता सूत्रार्थसङ्ग्रहाया गतायापि शुद्धीकार्ये मुच्यते, दुःख  
मायुप उद्देश्ये वदयती त्यक्त्ययुत्वाभ्यां इत्युक्त्यनुष्टुभ्यमुक्तं, तथा ॥ आहारंति ॥ नेरइयाविसमाहाराइत्यादि ॥ तथा ॥ विसमबन्धा ॥ तथा ॥  
विसमयज्जा ॥ तथा ॥ विसमसरसा ॥ तथा ॥ विसमवेयका ॥ तथा ॥ विसमकिरिया ॥ तथा ॥ विसमाठपासमोवयसगति ॥ नाथायां, ॥ प्राक्स  
सइया नारका इत्युक्तं मय संशयानिरूपयका ॥ तथा स्मि कम्पुद्रुसागा सेयमात् संशयका ज्ञश्या, योगपरिहामा, वेता यो  
गनिराधे सेरपाता मनावात् योग्य शरीरमाम कम्पपरिचितिविद्येय ॥ सेस्सावधीठठवेयठति ॥ प्रजापनायां सेवयापदस्य बहुवचनेसकस्येइ द्विती  
यादेयवा तइयास्वरूपावममाय जचितव्यः प्रथमइति क्वाचित् दृश्यते सोपपाठइति अथ कियदूरं यावदित्याइ ॥ जावइन्नी ॥ अद्विवक्तव्यतां याव  
त् मन्वाय मयेपता ॥ कइए जते । सेमाठे पछताठे गोयमा ॥ कम्मसठे पछताठे तज्जा कणइसेसार्ह ॥ एव सर्वत्र प्रस उत्तरव वाच्य ॥ नेरइयाव

उत्तिष्ठतज्ञानिययथा नयरं मनुस्सासरागवीतरागाणनानिययथा गाहा दुस्काउएउदिखे आहारिकममवसुलेस्सा  
य समंयणसमकिरिया समाउयचिययोयथा ॥ १ ॥ कइणजनेलेस्साठेपयताठे गोयमा तलेस्साठेपयताठे

गोतरागा नभानियया । सताग गोतराग मियववे कइए इति ते नकइया तेज्जुमसइरानेविये गोतरामपचना पसमववको यज्जसेयमानेविबेज पोत  
तामयवानी समद्वे प्रसात यममत्त कइया । गाहा । दुस्काउएउदिखे । वीजो उदेयायादिको माओ सूचार्य मावा तेइमो पचती यज्जमे कइया  
तेओइवे पवि मयावनीधमवो ववो कइियेवे—दुस्सापाज्जणू उइय थाभू ते वेदे ए एववचन बहुवचनेवो दइक वारकइया तथा पोहारंति गोइए  
य यभते वि ममाहारा तथा विसमकइया तथा विसमवेयका तथा विसमकिरिया तथा विसमाठपासमोवयस  
यति इत्यादि आकया पूवे संशयोभारकोवे इधोवइया तेमाठे तेसेरया कइियेवे—किहा थामानेविये कर्मपुइकना उदेयववको केइयाकइये । कइएमते  
सेयापापवताया । केरवो वेमगइन् । येयाकवो इतिपय । उइए । भावमा । वेमोतम । कइेयापो पछतापो मन्वा । कइेया कइी ते कइेवि—

तिरिक्कुरसेस्सा ३ तिरिक्कुरसोच्चियाळ ६ एभिदेयाळ ४ पुडविम्राठवळसर्वाळ ४ तेषाठवळदेदियेवचरिदियाळ ३ पचिदियतिरिक्कुरसोच्चिया  
 च ६ ॥ इत्यादि पडुवाच्य यावन् ॥ एयसिचं ज्ञते । जीजाळ कथसेस्साळ नाव सुकसेस्साळ कयरे २ चित्तो अप्पळिया वा मच्चिडियावा ? गोय  
 मा । कथसेचित्तो नीलसेस्सा मच्चिडिया नीलसेचित्तो कावोयसेत्वादि ॥ अप पठावः पडुवा ममुवते । इत्यादिवचनविप्रलम्भा द्यो मन्यते च  
 मादावपि ज्ञत एकपेव जीवस्या वस्थानमिति तद्गोपनार्थं प्रकथयामाह ॥ जीवस्सचमित्यादि ॥ ज्ञत्तं ज्ञवर किञ्चित्तस्य जीवसेत्याह अपविष्टस्य ज्ञमु  
 च्च मारकादे रित्सेव चित्तेपित्तस्य ॥ तीन्द्रायाति ॥ ज्ञनावा वतीतेकाले कतिविच उपाचिसेवा स्फुत्तिनेवः संसारस्य ज्ञवा ज्ञवानरवन्नरकलसकस्य  
 सुस्थान मवचित्तिक्रिया तस्य कालो वसरः संसारस्य स्थानकाल, ज्ञमुप्य जीवस्या तीतकाले कस्यां कस्यां गता ववस्थान मासीदित्यर्थः, ज्ञानोसरन्  
 चतुश्चिपत्रपिनेवा दित्तिज्जावः तत्र नारकज्जवानुगतसंसारवस्थानकालं विद्या धून्वकालो भिन्नकालवेति तिरिया धून्वकालो मात्तो

तजहा लेस्साणवीउउदेसउन्नाणेयद्वो जावइहो । जीवस्सण ज्ञते तीयत्ताएस्थगविठस्स कइविहेससारसंचि  
 ठअकाउपन्नत्ते ? गोयमा । चउच्चिहेससारसंचिठणकाले पयुत्ते तजहा णेरइएससारसंचिठणकाले २ तिरि

सेय्पापदोषा उहेसपा मायेयन्ना जावइहो । पदवचनानेविवे सेय्पापदना दोषा उहेयावो जाववो । एयचिचभते जीवाच कइसेत्थाण जावसुद्धसेत्थावय  
 कवरे कवरेचित्ता पय्पडुवा वा मच्चिडिया वा गावमा कवसेत्तेचित्तो मोलसेत्थामच्चिडिया मोलसेत्तेचित्तो काउसेत्था मच्चिडिया इत्यादि । चिवे के  
 ई एक एवमोमानेचै पयमरौ पयुपपीजपामे तेजने समुत्थाएवाने कइसे — ज्ञोमच्छभते योगेय एयविठ्ठळ कइविहेससारसंचिठणकालेपयुत्ते । जीव  
 ने हेभयमन् । ज्ञनादि चतौतकावनेविवे कइवीसे जीव ए नारकोपादि एइवै विज्ञेयवै सचित्तने कतसेमेदे संसार एकभववको बोजेभये सपरवचचरनो  
 रव्वानीविवा तेजनीकाव चवसर तेससारसंज्ञानकाव कवीसे एतले एजोवने चतौतकावनेविवे कइवीसे विवेरववा कइवो ? भयवत कइसे — गोयमा  
 चेगीतम । चउच्चिहेससारसंचिठणकालेपयुत्ते तजहा । चारेप्रकारे उपाधिमेदवन्नो संसारभयवको भवतीतरनेविवे संसरवा तेचचपकज्जो तेवचेसे — चेरइ

ति तेना द्विययो मनुष्यदेवामातु श्रितिये प्वलि' चाश्च-गुणवयोभीसो तिविहोससारविद्वत्काका' । तिरियाससुखज्जो सेवावहोइतिवि  
 रोपि ॥ १ ॥ तथा धृत्यजास सापदुप्यते चट्वाय्मासशुपपरिचानेचि सती तरौ सुधाभी प्रविप्यतइति, तय वर्तमानकासे सप्तसु पृथिवीपु ये  
 मारकाकान्ते तपो मया द्याय खत्रयि दुवृत्तं मया प्यतप्यते तावन्मात्रा एवते भावते सकाल स्था कारका नक्षत्रित्याभूत्यद्वैतमस्यते भाव  
 ५-पावदुममयाव मरइपावनजाययकोवि । उद्वहृष्टयोवा उदयवज्जइसोचमुकोठ ७१७ निमकासशु तेपामेव मारकाकां मया देकादप उहृता,

रुजोगियससारसचिठणकाले मणुस्सससारसचिठणकाले । णेरइयससारसचिठणका  
 लेण जंते कइविहे पणसे ? गोयमा ! तिविहे पणते तंजहा सुखकाले श्यसुखकाले मिस्सकाले । तिरिरु

ए ममारमविद्वत्काने । मारकीनाभवेने जोवरहे ते समारसेविद्वत्कामकहोये इम । तिरिरुजोविद्वत्ससारसचिठणकासे । तिरियेवना भवनेविये जीव  
 ना रइवा ते तियवममारमविद्वत्काम कइहे । मणुसममारमविद्वत्काम । मणुजना भवनेविये जोवनो रइवा ते मणुसससारसचिठणकाव कइये  
 देवममारमविद्वत्काने । देवना भवनेविये जीवमारइवा ते देवसमारसचिठणकाम कइये । णेरइयससारसचिठणकासिंभते कइविहेपणसे । वसो गो  
 तमयइहे—मारकीममारसचिठणकाव हेमगवन् । केतसाभमारनोकावा इतिप्रम भगवमकहेहे—गोयमा । हेगोतम ! तिविहेपणसेतवइसुखकासे ।  
 मारकीममारमविद्वत्काम तोनेहे कइते ते कइहे सुखकासकइता विरइकाव । पणुसकासे मिच्छकासे । पविरइकाव २ मिच्छकाव ते उदयकाव ३  
 तिइता पणुसकावमावकय काकापणे बीजा देजेमुले कवाये तेमाहे पइका पणुसकावतोखकय कइयेले तिइता वतमानकासे सातवी पृथिवीनेवि  
 ने देवमारकीउते तेमाइवी केतमाताइ काइएवैनही पणैनवाकाई बीवी छपणैनही केतमासे तेतसाकरहे तेकावमरकयतिपानो पणुसकावकहो  
 ये १ पाइव—पाइवमइसाव णेरइयमज्जामयजोवि उद्वहृष्टयोवा उदयवज्जइसोचमुकाव ॥ १ ॥ मिच्छकासकेकहोये तेने जे सातेने मरकभेविये तेना  
 रको माइवी जीव एकादिनीसनी मयंतरमं अपना रावन् एवगेपरइता तेतमाताइ मिच्छकावकहोये २ मणुकाव ते कइये कइारे कइता समवना

याव रेकोपिनीय स्याव म्मिप्रकासं शून्यकाससु यदा तएवादिष्टाभयिका नारकाः सामस्त्येनो हुता प्रवन्ति, नैकोपि तेषा ज्योतिरिति स शून्य कासइति यादव-शब्देयकमिवि ताभीसोपरवजावएकोवि । निरुतिर्यद्विषये विवहमावेदिसुयोत ॥ १ ॥ इदं मित्रनारकासारावस्यानकास वित्ताभूतं, स तमव दार्हमानिकनारकास मभीरुत्य प्रवृत्त, अपितु दार्हमानिकनारकासीवानां गत्यन्तरममेव तत्रैवो त्पत्ति भाभित्य, यद्विपुन सनेव नारकास मभीरुत्ये द युगं स्या तथा शून्यकासावेयया मित्रकासस्यानन्तानुगतसूत्रोक्ता न स्मात्, यादव-एवपुनतेवीवे पशुवसुतं च

जोणियससारसचिठणपुच्छा ? गोयमा ! बुधिहे पखत्ते तंजहा असुसुखकालेय मिस्सकालेय । मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाण । एयस्सण मंवे णेरइयससारसचिठणकालस्स सुसुखकालस्स मीस

नारको समस्तपक्षा मर्ततरे पशुता तिमहिंको जीव एकही मेवरक्षा रहो ते यूककासकरोये यादव-उन्मोहयज्जमिनि तामोसाधरइकावएवोवि छिडे वरुचिठवेहिं वटमावेदिसुयोत । १ । इहा एतको नियेवहे एमित्रनारक सवारायक्यानकास चित्तासुखकरो तेवीव वपमान नारकमवपात्री कच्चो नहे वपमानकासै केनारकीमा जीव ते मर्ततरे जाईनै वकी नरकमयिनेविरे खपने ते जीवपात्री कच्चो जीतेवीव नारक भव पात्री कच्चोहे तो पादे पन्थवपुल सुवनेविपै ययूककासनो ययेदाये मित्रकासने भगतगुणीकछावे ते नकाय यादव-एवपुनतेजीवे पशुवसुतततततववेव उहोर्लतमवर्ततो पचतकासीनसंभवइ १ । ५ तोने मेहे नारकोससारसचिठणकास कच्चो । तिरिक्काजीवियससारसचिठणपुच्छा । तिवेसंससारसचिठणो प्रयवोवी तिवारे ममवर्तकहेहे-जीवमा । देवीतम । बुविसेपवत्ते तंजहा । विवहेहे पात्री तेकहेहे-यसथकासेव । यमूककास । मिस्सकासेव । मित्रकास २ जीव तिवेचने मूक्कासनकी पञ्च-सुखासुखीभीसो तिविदोसंसारसचिठणकासो तिरिक्कासुखकच्चो संसारसचिठणपिक्कावि १ । १ देवाय पावाचेरइ पाय । मनुचने तदा देवतने नारकीने तीनेमेहे संसारसचिठणकासकच्चो तिममनुचने देवनेपवि मूक्कास १ ययूककास २ मित्रकास १ ५ तोनेमेहे पाचको एवने सेभगवन् । नारकीसंसारसचिठणकासने मूक्कासने । ययूक् । यमुक्कासकासने । मीसकासकासने । मित्रकासने । कपरिकयरेविती पाये

[illegible][illegible]





गङ्गायाएवमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यक्तं कवर ॥ अतकिरियति ॥ अस्याः सा पर्यवर्तवर्तिनीक्रिया अन्त्यस्यवा कर्माग्नस्य क्रिया इत्यक्रिया तां कृतप्रवचनफलतयां मोक्षप्राप्तिमित्यर्थः ॥ अतकिरियापर्यं वयवति ॥ तच्च प्रज्ञापमाया विप्रतितमं, तस्यैव जीवेकजन्ते । अतकिरियंकरे ज्ञा ? गोयमा । अत्येगइए करेज्जा अत्येगइए जाव वेमाविए ॥ जव्यः कुर्यावेतरइत्यर्थः ॥ नेरइएवं जन्ते । नेरइएयुं यव्व भाने भंतं करेज्जा ? गोयमा । मोइएवे समवेइत्यादि ॥ नवरं ॥ मङ्कुरवेसुं अंतंकरेज्जा ॥ मनुयेपुं वर्तमानो नारको मनुय्पीजुत इत्यर्थः, कम्मले ज्ञा दन्नाक्रियाया प्रजाये कविन् जीवादेवेयू स्वयन्ते, अत सविद्येयान्निषामाया इ ॥ अइजन्तेइत्यादि ॥ व्यक्तं नवर मपतिपरममार्थः ॥ अर्चव

लरस जावविसेसाहिएया ? गोयमा ! सध्वत्योयेमपुस्सससारसच्चिठणकाले णेरइयससारसच्चिठणकालेअस्युस रेज्जागुणे देयससारसच्चिठणकालेअस्युससेज्जागुणे तिरिकजोणियससारसच्चिठणकालेअस्युणतगुणे । जीवेण जन्ते अतकिरियकरेज्जा ? गोयमा ! अत्येगइएकरेज्जा अत्येगइएणोकरेज्जा अतकिरियापदणेतव्व । अइजन्तेअस्युस

ववाइय वरोपाहाय विपेमाधिवक्कीय इतिप्रत्य उतर । मायमा । जेगोतम । सम्बलोवेमपुसुससारसच्चिठणकावे । सव्वो वाडा मनुयवसारसच्चिठण वानकमो तेइवो १ । वेरइयससारसच्चिठणकावे वमखेअगुणे । नारवोवसारसच्चिठणकाव वसक्कातगुणावे तेइवो २ । देवससारसच्चिठणकावेअस्युससे ज्जागुणे । देवससारसच्चिठणकान् वसक्कातगुणावे तेइवो ३ । तिरिक्काविवससारसच्चिठणकावेअस्युससेअस्युससे । तिव वयोनिक्क ससारसच्चिठणकाव व नंतगुवा ४ । अत्तं ? संसारनेविपे जीवरुवे अथवा मोक्षनेविपेपवि जीवरुवे इयोपार्थकाये पूजेवे — जीवेकजन्ते अंतकिरिय करेज्जा । जीव वेभगवन् । स मयाअमपयवचमोचप्राप्तिरूपक्रिया करे इतिप्रत्य उतर । गोयमा । जेगोतम । अत्येगइएकरेज्जा । जेतक्काएकमव्वजीव मोच अय । अत्येगइएकोकरे ज्जा । अइएवं अंतविपानकरे वमव्वमोचनजाय । अंतकिरियापदणेतव्व । पयववागो जीवमोपदर्थतत्त्विसापद जाववो वमखेपवक्को अंतक्रियानि यमावे केरएव जीव देवमतिनेविपेअपमै तेकारुवे प्रियेव देयावेइ । अइमति वसक्कमनियदव्वदेवावं अतिराविवसक्कमावं अतिराविवसक्कमावं । अथ जेभम

यनयिष्यद्वृद्धपादति ॥ इहमहापनाटीका निरूपते अर्यसा धरुपरिबामान्या मया देवत्वयाणां, अतएव द्रव्यदेवाः समस्यदेवः अस्ययाद्य  
तेनव्यद्रव्यदेवायेति, अस्ययतमव्यद्रव्यदेवा सांज्ञेते अस्ययतमव्यद्रव्यः किलेत्येके यतः किलोक्त-अनुवयमव्यद्रव्येय वास्तवोक्तमनिज्जराएय ।  
देवात्रयविवक्ष्य सुसमिद्धीयजोत्रीतो ॥ १ ॥ एत चायुक्तं यतो मीया मुत्तुष्टत उपरिमयीवेयके पूयपात रुक्त सम्यग्बुद्धीना तु वेदविरताना मपि  
न तत्राही विद्यते वेदविरतमात्राका मन्पुता बूद्ध मगननात्, माप्येतेनिर्जना सेया मिहैव प्रेदेमाजिचामात् तस्मा मिम्यादृष्टयया ऽप्रव्या  
जयावाः अनयतमव्यद्रव्यदेवाः अमरुगुणपरिखा निखिलसामाचार्यमुष्ठानयुक्ता द्रव्यसिद्धपरिको यद्वन्ते ते इमलिकेवलसक्रियाप्रजावतएवो य  
रिमयेवेयक पूयद्यतइति अस्ययाद्यते सत्य व्यमुष्ठाने चारित्रपरिबामान्यात् ननु कथं ते प्रव्या प्रव्यावा अमरुगुणपरिको भवन्ती ?  
त्यजोष्यत तेयाहि महामिप्यादशानमोहमादुर्नादे सत्यपि चक्रवर्तिप्रव्यमेकनूपतिमवरपूजासत्कारसम्मानदानात् साधून् समवलोक्य तदप्ये प्रप्र  
म्यक्रियाकलापानुष्ठानमस्ति मृदुनायाते, ततश्च यथोक्तक्रियाकारिइति, तथा ॥ अविराहियसजमावति ॥ प्रवत्याकासा दारम्या जमनचारित्र  
परियामाना मश्रुतलनकापसामर्थात् प्रमत्तगुणस्थानकसामर्थाद्वाः सत्त्वमायाविदोपसम्भवे प्यनाचरितचरकोपचातानामित्यथ, तथा ॥ विरा  
हियसजमावति ॥ उक्तविपरीताना ॥ अविराहियसजमावजमावति ॥ प्रतिपत्तिक्लासा दारम्या रुचिहतवज्रविरतिपरिबामाना आककासा ॥ विरा

### जयन्नवियदसुत्राणश्चिराहियसजमाणं अविराहियसजमाणं अविराहियसजमास

वत् । चारित्रपरिबामवको मूस्थमिप्याहृष्टो भव्य भववा यमश्च नि केवलसक्रियाना करणकार द्रव्यसिग्धारोपचवा १ तेहने प्रवत्याकासवो भारभो  
निरतोचार पूराचारित्र पादे ते चरिराधितसबमीककोवे तेहने साधुसबनने विराधै पद्विष्ठाचक्षा तेहको नियरोतते विराधितमयमोने । अविराहिय  
मजमामजमान । आककासतर्तने विराधनारहित भव्यवयवे ते अविराधितसदमाससमोने ४ । विराहियसजमासजमाव । आककासत सेह विराधै पू  
र्वोक्त वो नियरोत ते विराधितसदमाससमोने ५ । असच्छोष । मनोव्यविरहितने ६ । तावसाण । पद्विष्ठापाजकाय वास्तवपक्षीने ७ । कंदमियाच ।

विपुलं जमासज्जमाकंति ॥ उच्छ्रयतिरेचिकां ॥ अश्लीकति ॥ मनोस्तब्धिरहिताना सन्नागनिर्बरावता तथा ॥ तावसांशति ॥ यतितपप्राशुपमोप  
 यतां वास्तव्यस्त्रिनां तथा ॥ कदप्यियाकति ॥ कल्प्यः परिहाय स ययामति तेनवा ये वरन्ति ते कल्प्यिकाः कान्दप्यिकाः व्यायहारत  
 परवत्तएव कल्प्यकौतुप्यादिकारकाः, तथाहि गाथा-कहकहकहस्सहस्रं कदप्योभ्युप्यायवशाया कदप्यकहाकहस्य कदप्युवएससाय १ ॥  
 भूमनयकवपकदवव अदेविकरपरयकजमाईति । ततकरेकहकह इत्यपरोक्षतकाकहस्य ॥ २ ॥ वायगुहुरठपुण तत्रपइमेवइस्सएभस्यो । नाया  
 विहजीववय दुवइदुइदुरएकवेत्यादि ॥ ३ ॥ जोळंयमुविएया सुखप्यसन्नायुभावककुवइ । सोतविहेहुगव्याह सुरेसुअठंवरणशीकोति ॥ ४ ॥ अतस्ते  
 वाकल्प्यिकाकां ॥ अरगपरिहायमाकति ॥ अरगपरिहायका वाटिपैरयोपलीखित त्रिदक्षिण अणका अरकाः कच्छोटकादयाः परित्राजकास्तु फ  
 पिसमुनिबूनवा । ततोया ॥ क्विविखियाकति ॥ किस्विय पाव तहसि येवा ते किस्वियिका स्मर व्यवहारत यरववन्तोपि जामाद्यवकपादिनो य  
 मोक्त-जाकस्सकैवलीकं धम्मापरियस्सवहुसाहू ॥ माईअवककावे क्विविखियंभावककुवइति ॥ १ ॥ अत सोवा तथा ॥ तिरिक्खियाकति ॥ तिरयां  
 गवाद्यादीनां देशविरतित्राजां ॥ आलीवियाम्कति ॥ पाकविनिविद्योपाको भाष्यपरिहां मोसालकस्त्रियाका मित्यस्ये ॥ आभीयति वा ये अविदे  
 किस्कोकतो लब्धियूजास्यात्मादिनि तेषां अरगपरिहायका लीविका अततोयां तथा ॥ अजिगुगियाकति ॥ अजिगुज्जल विद्या  
 मत्रादिभिः परंपांक्कीकरकादि अत्रियोका सव त्रिषा यवाइ-दुविहोक्कपुअभिसुनो दवभावेयोपनायवो । दवभिहोइजोगा विज्जामतायजनावमि

## जमाण स्यसखीण तावसाण कदप्यियाण अरगपरहायगाण किस्विसियाण तिरिक्खियाण शुजीयियाण

वजतो जाली मसकरो कइरपवकागा कइरवहारने ८ । अरगपरिहायगाण । विदेविका अपिभुजिना सतानोवने ८ । किम्बियाव । ज्ञानादिना  
 परववाद्दकोले तेहने १ । तिरिक्खियाण । तिरिय माय अथादि याववधमपावे तेहने ११ । आलीवियाण । पाण्डोविमेष पयवा गोशानाका भिय  
 तेहने १२ । आभिप्रागिवाव । अत्रकारे आदिपवत कवा मंद यथादिकना अरवहार ११ । सखिगीईसववणकगाण । रजोइएवादि सधु देपडे प

ति ॥ १ ॥ मोऽग्निं येया तेनया चरति य ते नियोगिना एताप्रयोगिताया ते च ध्ययद्वातत परस्वतएव मयादिमोक्तारो यदाह-कोठयन्नुक्त  
 म्य यमिनापमिवमिममाग्नीयी । इन्द्रिमयायकमु अहिमुगनावर्णुवइति ॥ १ ॥ कीतुक्त सीताग्याद्ये अपनक्तं भूतिकम्भ उवरितादिभूतिदा  
 मं प्रयाप्रर्त्तन व्यप्रविद्यादि ॥ मन्निगावति ॥ रत्नाइरत्नादिमापुसिपुवता क्विपिपाना मित्याह ॥ इत्युवाययगावति ॥ दक्षनं सम्यक् व्यापय  
 नष्ट येयान् मया तयां मिश्रयानामित्ययः ॥ एयमिग देयसोममु उवयजामावावति ॥ एनेन देयत्वा इत्यत्रापि केवि दुत्यदानइति प्रतिपादित ॥  
 विराहियमजमान जग्रेणं जययइतु उक्तोमेव मोक्तो कप्ये ॥ इह क्वि दाह-विराधितसयमाना मुरकर्वेव सीचर्मे कप्ये इति यदुक्त त तत्रथ  
 पदते त्रौपद्याः मुकुमानिक्कानये विराधितसयमाया ईगानउत्पादकवणा ? दित्यशेष्यते, तस्याः सयमविराधनोत्पुगयिपया मुकुस्वमाथकारिबी

श्रान्तिर्नगियाण सखिगीदुसणयावयुगाण एएसिणटेयडीएसु उवयजामाणाणकस्सकहिउवयाए पयस्ये ? गो  
 यमा ! अस्सजयज्जाययदहंउवाण जहणेणजवणयासीसु उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जाएसु, अविराहियसजमाण  
 जहणेणसाहमेकप्ये उक्कोसेणसख्ठसिधेविमाण, विराहियसजमाण जहणेणजवणयासीसु उक्कोसेणसोह

वि मस्यज्जो भट्ठे एतमे निज्जरे तेइन १४ । एउमचदेवभाएउउउवज्जमावाचकखड्धिउववाए पयस्ये । एइने वेभगवन् । देवलोकेनेविपे उवयज्जा  
 ने सेइने विव्वाप्पानकनेविपे उवज्जवाकणा ? एतमे देवपति टाळी बीआम्पानकनेविपे पवि केईएवउपये इसी अवाया इतिप्रय भयवतकइहे-गा  
 यमा । हेतोऽस । पमज्जवमदियद्वदेवात्थं । पमवतो भविद्वदेवने । अइसेणमवववासीस । अवस्यवकी भववपतोने विपे उवज्जवाकणा । उ  
 वाभिर्नउरिममेवेअएसु । उरउटवकी अपरित्ते गेउयके एतमे अवसे पेवेयकअपये । अविराधियसजमाण । अविराधित माधुने । अइसेणंसीइन्ने  
 इप्ये । अउपयवकी मोधमनामा देगनासी उरज्जवा इय । उउामेवमवडुमिहेविमाण । उरउटवकी सर्वावसिध विमाणनेविपेजाव उवय । विराधिय  
 मंजमाण । विराधित माधुने वाटिअविपे तेइने । जइनेयं मउववासीस । अवस्यवकी भववपतोनेविपे उवज्जवाकणा । उउामेवमवडुमिहेकप्ये । उरउट

अ मूयगतविरापमति मीपमोत्पादय विजिष्टतरुमभिविरापनाणं स्यात् यदिपुन विरापनाप्रमपि सीपमोत्पत्तिकारकस्या, तदा बहुशायी  
ना मुत्तरमुदादिप्रतिज्ञेयायता कय मथ्यतादिवृ त्यतिः स्या त्वक्यम्ब द्विरापकत्वा तेषामिति ॥ अथसीक अक्षर प्रवक्तवासीसु उक्तोसेव वाच

मेरुप्ये, अधिराहियसजमासजमाण जहयोगसोहमेकप्ये उक्तोसेण अष्टुएकप्ये, विराहियसजमासजमाण  
जहयोगनयनवासीसु उक्तोसेणजोइसिएसु, अथसीणजहयोगनयनवासीसु उक्तोसेणवाणमतरेसु, अथसेसा  
समृजहयोग नयनवासीसु उक्तोसेणजोइसिएसु, कदप्यियाणसोहमेकप्ये, चरगपरि  
ह्यायगाण यन्नलोएकप्ये, किस्विसियाणलतगेकप्ये, तिरिक्कियाणसहस्सारेकप्ये, ह्याजीवियाणअष्टुएकप्ये,

ब। मापमनामा देवताकनेनिये उपजवाहाव । पविटाडिवनजमासजमाच । पविटाडित सवमासंबमी एतके वाचकने । अक्षसेवसाइयेकप्ये । अथव  
मीपमेदेवताकनेउपजवाहाव । अक्षसेव अष्टुएकप्ये । उरकटवकी मथुत वारने देवसेके अपजवकी । विराडिवसजमासजमाच । विराडित संबमा  
मयमीने एतने विराडित याचकने । अक्षसेवमयनवासीसु । अथसीको मयनपतीनेनिये अपजवकी । उक्तोसेवकीइसिएसु । उरकटवकी ह्योतिपीने  
निये उपजवाहाव १ । पमनोच । मयनडितने । अक्षसेव मयनवासीसु । अथसीको मयनपतीनेनिये अपजवकी । उक्तोसेववाचमतरेसु । उरकटवकी  
यानवतरनेनिये उपज । पयमेनासादे उरकटव मयनवासीसु । वाकता मयनवासीको अपजवकी अथग्यकी मयनपतीनेनियेदेवाचकी । उक्तोसेव कीच्छामि ।  
उरकटवकी उपजवा अक्षसेव—तावमाचंआइमिएम । तापमने उरकटवकी ह्योतिपीनेनिये अपजवकी । अक्षप्यियाणसहस्सारेकप्ये । आमाहीपनादिप्रसुति  
नाअरररररर उरकटवकी मीपमनामा देवताकनेनियेउपजने । चरगपरिव्यावगाचं । उरकटवकी अपजवकी । अक्षप्यियाणसहस्सारेकप्ये । आमाहीपनादिप्रसुति  
के उपज । बिबिमियाणसगतगेकप्ये । किस्वियीने उरकटवकी अतकनामा अष्टु देवताकनेनिये उपजवकी । तिरिक्कियाणसहस्सारेकप्ये । मालीविवाचप  
पुत्रकप्ये । तिवनेउरकटवकी सहस्साराणासा आठमादेवताकनेनिये उपजवाहाव । पाजोविकने उरकटवकी मथुतनामा वारने देवताके उपजवकीहाव ।

अतरनुति ॥ इह यद्यपि अमरयतिमारभिरपिमित्यादिवचना दसुरादयो भवन्दिहा, पलितुं वममुक्तीष्वतारियाखतिवचनाच्च व्यन्तरा भव्योद्दिता,  
नामा व्यत्ययययवना न्यध्रीपते कृत्वा व्यन्तरेण्य सकाशा दस्पष्टयो प्रवनपताय केचनेति, असञ्जी देवे पूस्पघातइत्युक्तं सथा युया इति तदायु  
त्रिकूपयकाङ्क ॥ करविदेगमित्यादि ॥ व्यन्त श्रवरं ॥ असञ्जिघातयति ॥ यस्यरमयप्रयोगभाषु ब्रूयति तदर्थइत्यायुः ॥ नेरइयचससिधाउ  
यति ॥ नेरविज्ञापनमर्शपायु नेरयिज्ञासापायु रेय मन्यान्यपि, एतथा सरूपायुः सुस्वश्चाग्नेगापि भवति यथा -- तिष्ठोः पात्र मतस्तस्मान्नत्व

श्यान्निवृत्तिगियाश्चुगकप्ये, सडिगीवसणवाधयागा उवरिमगेविज्जाएसु ॥ कहयिहेण नते अस्ससियाउए पणत्ते  
गोयमा ! चउच्चिहैअस्ससियाउए पणत्ते तजहा णेरइयअस्ससियाउए तिरिस्कजोणियअस्ससियाउए मणस्स  
अस्ससियाउए दयअस्ससियाउए, अस्ससियाण नत्ते ! जीअकिणेरइयाउयपकरेइ तिरिस्कजोणियाउयपकरेइ  
मणस्समदेवाउयपकरेइ ? गोयमा ! णेरइयाउयपकरेइ तिरिस्कमणस्सदेवाउयपकरेइ । णेरइयाउयपकरेइमाणे

[illegible]

तत्तदवसान्यविवीचयनिरूपकायाह ॥ असुखीत्यादि ॥ अथ क्व क्वरं ॥ पक्षरेहिति ॥ भ्रम्रति ॥ दसवासवइत्याहंति ॥ रत्नप्रज्ञाप्रथमप्रतर माभित्यक्तो उ ॥ सप्त पल्लिवमस्तु असुखेज्जद्विप्रवर्ति ॥ रत्नप्रज्ञाचतुर्थप्रतरे मध्यमस्तिष्ठति क्वं मारकमाभित्येति क्वं यतः प्रथमप्रसटे दशवर्षाणां सइत्यादि अथ प्या स्थिति इत्कदा नवतिसइत्यादि द्वितीयेषु दशतणादि अपन्या इतरातु नवतिसइत्यादि एतेव तृतीये अपन्या इतरापूर्वकोटी, एतेव च तुर्यमपन्या इतरातु सागरापमस्त इदानीम एवम्वात्र पक्षोपमासङ्केपनायो मध्यमा स्थिति प्रवति तिर्यक्सूत्रे यदुक्तं ॥ पल्लिवमस्तु असुखे ज्जद्विप्रवर्ति ॥ तन्मिथुनचतितरयो ऽपिक्त्येति ॥ मधुस्वातएविवेकवति ॥ अथन्यतर्जानमुद्गुलं उत्कर्षतः पक्षोपमासङ्केपनागइत्ययं साधना सङ्के

जहखेणदसथासहस्साह उक्खीसेणपलित्थमस्ससखेज्झइ नागपकरेइ, तिरिस्कजोणियाउयपकरेमाणे ज  
हखेणअतोमुज्झत्तं उक्खीसेणपलित्थमस्स सखेज्झइनागपकरेइ, मणुस्साउएयिणवच्चेव, देवाउए जहाणेरेइ

रेर । मारकीना पाठका बाधे १ । तिरिस्त्रमच्छेदवाच्यंकरे । तिरिचनी पदि पाठखोबाधे २ मनुष्यनापदिपाठकाबाधे ३ देवतानोपदि पाठको बाधे ४ । बेरदवाच्यंकरेमाधे । अथकोको मारकीनी पाठका बाधतीबकी । कहयेबदसवाभसइछार्ह । अवश्यको समसहस्रवर्षनाबाधे ते रत्नप्रभाना पदिसामतरभात्री जाचवा । उकोसेबदिषीवमसुअसंखेइभागपकरे । उरकूटकी पकोपमनो असंख्यातमोभाग पाठखोबाधे ते रत्नप्रभाना सोबा मतरनेविधै मध्यमकिदि मारकपात्री जाचवुं बत' पदिहोपावसे अवश्य समसहस्रवर्ष उरकूट नेरुसहस्रवर्ष बोजे अवश्य समसाख उरकूट नेरुसाख तोजे अवश्य नेरुसाख उरकूट पूयकीठि रोजे अवश्य पूयबादि उरकूट एवसागरीयमनाइसमाग इवप्रकारे इहापकोपमनो असंख्यातमोभाग ते मध्यम किदिचुने । तिरिस्त्रभाधिसाठ्यंकरेमाधे । तिरिचना पाठका बाधतीबकी । कहयेपथतोसुपुत । अवश्यको धतमुमस्तनो पाठका बाधे । उकोसेब पदिषीवमसुअसंखेइभागपकरे । उरकूटकी पकोपमनो असंख्यातमोभागबाधे ते दुनखिवा पात्रीने जाचनो । मच्छासवदिपएबयेव देवाउएकका बेरदवाच्य । मनुष्यनो पाठखोपदि इमख अवश्य भैतभैकतं उरकूटकी पकापमनो असंख्यातमोभाग ते दुनखिवापात्री कहये देवतानो पाठको जिम

यमागा विमुनन्नरातामित्य ॥ देवाग्रहानेरहयसि ॥ देवाइति असञ्जिविपयं देवापु सपनारा तपा घाघ्य ॥ अहानेरहयसि ॥ यथा असञ्जिविपये  
नारकापु साच प्रतीतमव चवर प्रवनपतिव्यनारामित्य तदवसेयमिति ॥ यसस्वव अते इत्यादिना ॥ यसस्यापुयोऽ ह्यग्रदुस्वमुक्त तवस्य प्रसू  
दीपंस्वभामित्यति ॥ प्रथममवतद्वितीयः ॥ ३ ॥ द्वितीयोवैद्यवातिससूत्रे वायुर्विंशोपो निरूपितः, सप्त भोइरो

याउए । एयस्सण नंत । णेरइयथ्ससिग्ग्याउयस्स तिरिस्क्जोणियथ्ससिग्ग्याउयस्स मणुस्सथ्ससिग्ग्याउयस्स  
 देवथ्ससिग्ग्याउयस्स कयरेकयरेहिंती जाय थिसेसाहिंएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवेदेवथ्ससिग्ग्याउए, मणुस्स  
 थ्ससिग्ग्याउएसस्वेज्जगुणे, तिरियथ्ससिग्ग्याउएथ्ससस्वेज्जगुणे, णेरइयथ्ससिग्ग्याउएथ्ससस्वेज्जगुणे, सेवन्न  
 नेन्नतेत्ति ॥ थिइउंउहेसोसम्मसो ॥ २ ॥ जीयाणजते ! कस्वामोहणिज्जोक्कमेक्कं ? हताक्कं

[illegible]



येनमिति प्रवर्त्तते मोहनीयविशेष विरूपय आदौ च सङ्ग्रहायाया यदुक्त ॥ कुरुपुस्तसि ॥ जीयायमित्यादि ॥ व्यक्त अयं जीवानां सम्बन्धियत् ॥ कदासाङ्गिच्छति ॥ मोहयतीति मोहनीय कर्म तद्वारिग्रमोहनीयमपि प्रवर्त्ततीति विधिप्राप्त काङ्क्षान्यान्वद्वानपद्य उप लब्धत्वा सास्य आङ्गुदियरिग्र ॥ सत काङ्क्षया मोहनीय काङ्क्षामोहनीय निष्पात्यमोहनीयमित्यादि ॥ कठेति ॥ एत क्रिया निष्पाद्य मितिप्रस उत्तरत् ॥ इताकठेति ॥ एकतस्य कर्मत्वानुपपत्ते इह च वस्तुनः कुर्ये वस्तुभ्योऽपि यथा देशेन इलादिना यस्तुनो दमस्या आदान करोति यथा इलादिदशमेव समस्तस्य वस्तुनः प्रणवाः सर्वात्मना वस्तुदेशस्या यथा सर्वात्मना स्वस्ववस्तुनः इत्येता आङ्क्षामोहनीयमकरयमिति प्रमयकाङ्क्ष ॥ सेजतइत्यादि ॥ सति ॥ तस्य कर्मवः ॥ प्रदत्त । किमितिप्रस देशेन जीवस्याज्ञेन देशे काङ्क्षामोहनीयस्य कर्मवोऽज्ञा एत इत्येको प्रदुः प्रय दान जीवाज्ञेनैव सर्वे काङ्क्षामोहनीयं कृतमिति द्वितीय एत सर्वेषु सर्वात्मनादेशः काङ्क्षामोहस्य कृतइति तृतीयः उत्तराया सर्वेषु सर्वात्मना सर्वेकत मितिचतुर्थः अत्रोत्तरम्, ॥ सर्वेषु सर्वेकमेति ॥ जीवस्याज्ञाया त्सर्वस्वप्रदेशावगाइतदेवसम

सेजते ! किंसेणदेसेकमे देसगसहेकमे सहेणदेसेकमे सहेणसहेकमे ? गीयमा ! गोदेसेणदेसेकमे गोदेसेण सहेकमे पोसहेणदेसेकमे सहेणसहेकमे । जेरइयाणजते ! कस्वामोहणिजेकमेकमे ? इताकमे, जाय सहेण

विप जेकमे, क इपथासति, ते इहादेहे । जीवाकमेतद्विषयमाङ्गिच्छति ॥ जीव हेमवत् । निष्पात्यमाङ्गोयकमे कोधं विद्यानोपप्रादे, इतिप्रय उत्तर । इताकमे । इतीतमकरो । सेभतेकिंसेज । देसेकमे देसेसहेकमे । ते कर्मण भेगवत् । इहा यस्तुने करवानेविदे चउमंगेवे, यथा इप्तादिदेशेकरो यस्तुनदेश पाञ्चादे २ यथा इप्तादिदेशेकरो मयस्तुनशुनेपाञ्चादे २ यथा पाञ्चादे २ यथा समस्तपाञ्चादेकरो समस्तवस्तुने पाञ्चादे ॥ इमचउमंगे जांचा माङ्गोयकमे करवनेविदे कइयो सेदेयादेहे—देशेने जीवोपाय तेवेकरो देश तेजाजाओहनीय कोधू १ य यजमीनां यथादेशेने जीवोपाय ते बीजाभाया २ तथा । सजेसदेसेकमेसजेसहेकमेसजेसहेकमे गोयमा आदेसेनदेिकमे । यजजीव जीवाजाओहनीयको यज जीवीय यजोपाभा

यद्यथानीयक्रमपुद्गमन्यथ सवर्गीयप्रदेशानां व्यापार इत्यत उच्यते । सर्वात्मना सर्वे तदेकतात्पर्यरूपेण स्थायामोहनीयं क्रमकृतं फलमतया बहु  
मतमवबन्धनं ननु इत्यप्रतिवेदयति । अतएवोक्तं—एगपएसोमाह सङ्गपएसोर्हि एकमस्योखोग । अथद्विप्रुतहेतु तिएपएसवगागुति ॥ १ ॥ जीवापेक्षया  
क्रममव्यापकत्वात् य एके प्रदेशे सङ्गवगाह सवर्गीयप्रदेशव्यापारत्वात् तदकसमयअन्यनाहे सुवमितेगम्य अथवा सर्वे यत्किञ्चिदस्मादुभयो  
नीय तदव्यापकता इति नदेश्येति जीवाभा मितिसामान्योक्तो विज्ञेपो नावगम्यत इति विज्ञेयावगमाय नारजादिद्वयकलेन प्रमयकाह ॥ नैरव्या  
कमित्यादि ॥ प्रावितायमेव विपानिप्याद्य कर्मोक्तं तत् क्रियाव चिकालविपया तत्तां दक्षयकाह ॥ जीवावमित्यादि ॥ व्यक्तं कथर ॥ करिरुति ॥  
अतीतकालेकृतवत्ता उतरन्तु इत्ता आदु सादकरये अनादिससारामावप्रसङ्गात् एव ॥ करति ॥ सम्मति कुचति ॥ एयकरित्सति ॥ अनेनच

सर्वेकृते, एव जाव वेमाणियाणदकृतेनाणियहो ॥ जीवाणजते ! कस्वामोहणिज्जकमकरिसु ? हताकरिसु  
तज्जते ! किदसेणदेसकरिसु ? एणस्यन्निछावेणदकृते, जाव वेमाणियाण, एवकरति, एत्यविदकृते जाव

या ३, सब्बा मवपाप्माहे सबकावाभाजनोवकर्म कोधा एषोदात्ताभा ४, वेगोतम । जीवदेयकरो काचामाहनीयनदेय मकोधु । आदेसेवस्येवहे सोस  
विददेसेवहे । जीवदेयेकरो काचामोहनोय सर्वमकरे सबपाप्मायेकरो काचामोहनोवदेय मकरे । सव्येवस्येवहे । सबपाप्मायेकरो सर्वकाचामोहनोय  
कममवजरे ४ । केररनार्बमते कवामोहविज्जेवस्येवहे इताकहे । नारको वेभगवन् । काचामोहनोयकमकरे इतिमञ्च हांगोतम करे । जावसव्येवस्येव  
हे । चावत् सर्वामोहनोय मवकाचामोहनोयकम करे । एवजाववेमाविद्यादद्वेषोभाविज्जो । चावत् वेमानिकताह पठवीसद्वेष अहवा, वखो गौतम पू  
वेहे—जीवाक भति कस्वामाहविज्जकमकरिस । जीववेभगवन् । काचामोहनोय मिथ्यात्वमाहनीयकम भतीतकासे कोधु ? इताकरिस । हांगोतम कोधो  
। तमतेकिदसेवदेसकरिस । तेवेभगवन् । मिथ्यात्वमाहनीयकम अजीवने देयेकरो मिथ्यात्वमाहनीयकम देयेकोधो ? एणस्यमित्तावेणद्वेषाजायवेसा  
विगाव । इवे पान्नायेकरो ददय कइवा चावत् वेमानिज्जने तांभये कइवा । एवकरेति । इमवत्तमानासायेपथि करेहे । एत्यविदद्वेषोभाववेसाविद्याएव

प्रविष्ट्यतानतावरणस्य दीशतति, इतस्तप्य कर्मण ययादयो प्रवर्णीति तान दर्शयत्याह ॥ एवमित्यादि ॥ व्यक्त खवर षयः प्रवेशानुप्रागादे  
 घटन मुपचय रुदय पीनः पुम्येन अन्यत्वाद्भुः--यनं कर्म पुद्गलोपादानमात्र, उपचयमगनु चित्तस्या वायाकास मुक्ता वेदनायं नियेकः सचे  
 य-प्रथमस्थितौ यदुत्तरं कर्मदलितं त्रिपिण्डति ततो द्वितीयायां विक्षेपणीन एव यावदुत्तरायां विक्षेपणीन निविण्डति उत्तम - मोक्षसुख  
 मयाह पञ्चमाह ठिहयदुत्तरं दत्त । सप्तविषेसरीह आनुकोससिद्धादि ॥ १ ॥ उदीरय मनुक्षितस्य करणविशेषा दुदयप्रवेशन वदन मनुप्रवन नि  
 गरव श्रीवमदग्न्य कमप्रदधानायातममिति, इहण सूक्ष्मद्वयमाया मवति साधगाहा ॥ कळेचिएहत्सादि ॥ प्रावितायांच नवर ॥ आहतिरिति ॥

येमाणि याण, एवंकरिस्सति, एत्यादिदफुत्त जाय येमाणि याण, एव चिए चिणि सु चिणाति चिणिस्सति,  
 उवाचिए उवाचिणि सु उवाचिणिस्सति, उदीरि सु उदीरति उदीरिस्सति, वेदिसु वेदति वेदिस्स  
 ति, निज्जारे सु निज्जारेति निज्जारेस्सति, गाहा ॥ कळेचिए उवाचिए उदीरियावेदि यायणिज्जिस्सा । ध्या

वरिस्सति । इहापिच वत्तमानकासेपिच इमज्जारकौपादि यावत् येमानिकपर्यवहक कइया, इम आमाभिजासेपिच करजे । एतदिदहभोवावेमा  
 पिबाचं । इहापिच पनायतकासे मारकौपादिहं यावत् येमानिकतां दिदहक कइयो । एवचिए । इम वत्ते प्रदेशे पनुमानादिकबी वबारवो १ । चिचिसु ।  
 वे पतीतकाने विट्ठा २ । चिचति । वत्तमानकासे चिचिजे १ । चिचिस्सति । पनायतकासे चिचिजे । उपचिए । उपचय तेदीज मारवार पुटकारवो १  
 उपचिचिम । पतीतकासे उपचय कोबी २ । उपचिचति । वत्तमानकासे उपचय करजे १ । उपचिचिस्सति । पनायतकासे उपचय करजे ४ । उदीरि सु  
 वेदिसु पनुमवय भागवत् इहमं पतीतकासे वेदिसु १ वत्तमानकासे वेदिसु २ । वेदिसु वेदति वेदिस्सति ।  
 औनमदेयबी वमरयेय दूरकरे वा पतीतकासे निज्जारे १ वत्तमानकासे निज्जारे २ पनायतकासे निज्जारे १ । गाहा ॥ चिचि पुनीच संगवचोमावा

इत्यचितोपचितसङ्घे ॥ उन्नयति ॥ सामान्यक्रियाकाशत्रयत्रियान्नेदात् ॥ तियनेयति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पच्छिमति ॥ उदीरितवेदितनिष्ठा  
 र्णो मोहप्रदतादितिद्वय ॥ तिर्य्यति ॥ त्रय खिविधा इत्यर्थः यस्याद्य सूत्रत्रय इत्यचितोपचितान्युक्ता म्युत्तरेषु कस्मात्तोदीरितवेदितनिष्ठाकर्णो  
 ति ? उच्यते इतं दित मुपचित कर्मं चिरमप्यवतिष्ठत इति करकादीनां त्रिकालक्रियासाग्रतितिरिक्त चिरादस्थानलक्षणे इत्युक्त्या अभित्य कृता  
 दो न्युक्ता म्युदीरकादीनां नचिरादस्थाननसीति, त्रिकालवर्तिना क्रियामात्रेणैव तान्यमिदितानीति जीवाः काङ्क्षामोहनीयं कर्मवेदयन्तीत्यु  
 त् न मय तद्देवनकारवप्रतिपादनाय प्रस्तावयन्त्याह ॥ जीवाखजतोइत्यादि ॥ अत्र खवर ननु जीवाः काङ्क्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्रान्निक्षील कि  
 पुनः प्रश्नः ? उच्यते वदनीयायप्रतिपादनाय उक्तम् - पुत्रजवियवियथा अजन्मइत्यकारकस्यति ॥ पक्षिवेद्योपपन्ना हेतुविशेषोक्तलभोति ॥ १ ॥  
 तेदितदिति ॥ तैस्ते वदुनान्नरअवयवजुस्तीर्थिकसर्गोविनि विद्वत्प्रसिद्धे द्विवचन चेह त्रीप्याया कारणैः अङ्गविद्वत्तुक्तिः, किमित्याह अङ्गि

दितिचउन्नयेया तियनेयापच्छिन्मातिस्मि ॥ १ ॥ जीवाणभते ! कस्वामोहणिजाकम्म वेदेति ? हतावेदेति !  
 कहणजते ! जीवाकस्वामोहणिजाकम्मवेदेति ? गोयमा ! तेहिसेहिंकारणेहिं सकियाकाखिया विततिगिच्छि

कश्चि - एवं पूर्ववत्ता वेदीत्र द्वे । कश्चिविद्वत्तद्विनाश उदीरिष्यवेदियायचिच्छिन्ना । भावितिएषउन्नयेया तिरिक्तेभापच्छिन्नातिस्मि ॥ १ ॥ कौघो चिच्छि  
 २ उपपन्न कोषा १ उदीरिषा ३ वेद्यु ४ निजगता ५ पश्चिमा कृत चित उपचित लक्षकचिक्तेने चारभेद तौनकाखपाथो एव समुच्चये एवंवार ते स्मो वि  
 सेय एवमै चिरकाम चस्वामहे उदीरित वेदित निजदित एतौनेभेदे तौनकाखदीव कहता, एवमे चिरकाखपयस्थाननही एवियेव जीवकायामोहनी  
 यकम्म वेदे इत्युक्त्या ३ दिवे तैहमा वेदनाकारककहवानेकाजे । जीवाणभते कस्वामोहविज्जं कश्च वेदेति । जीव हेममवन् । मांषामोहनीयकम्म वेदे ४  
 तियत्र । हतावेदति । उत्तर हांगोतस । वेदे । कहणभते । किसेमकारे हेममवन् । जीवाकस्वामोहविज्ज कश्च वेदेति । जीव कांषामोहनीयकम्म वेदे  
 इतिमत्र उत्तर । मावमा । हेमोदम । तेहितेचिंकारणेहिं सजियाकच्छिन्नावितिमिच्छिन्ना । तियेतिचिंकारणेवही संगतिवको तथा परदमं

ता श्रितोक्तपुन्यपान्प्रति मयतो देगतोवा सञ्जातसंशया कष्टिता देयताः सवतोवा सञ्जातान्याप्यसमयशा ॥ विततिर्निश्चयसि ॥ विविचि  
क्रिमिताः मञ्जातकनविपयशङ्काः प्रेक्षसमापयाइति किमिदं विनयासम माहोस्त्रि विं दमित्येव विनयासमस्वरूपं प्रति मते ह्युचीचाव गतो  
मय्यसमाप्यपवा मतिनङ्गताः भयवा यसएव कष्टितादेविकेयया आतएय मते ह्युचीचावङ्गताः कसुपसमापका मतेदेव मित्येव मतिवि  
चिनप्रवेदितया तस्यैव मत्यत्वविरिति तत्सत्यतामव दक्षयकाइ ॥ सेदूबमित्यादि ॥ अथ कवर तदेव लपुकात्तरैः प्रवेदितं दागाद्युपइतस्वेन  
तत्प्रयदितस्या सत्यत्वसम्भवा रसत्वं युनूत तच्च व्यवहारतोपि स्यादित्यतयाइ निःशङ्कं अविद्यामानसर्व्वेइमिति अथ विमप्रवेदित सत्य मित्य  
निप्रायया न्यादूयो प्रवति त इक्षयकाइ ॥ सेदूबमित्यादि ॥ अथ कवर नून निश्चित ॥ एवमवचारेमाहेति ॥ तदेव सत्यं निः शङ्क यत्किञ्चै  
प्रयदित मित्यनन प्रकारेण मनोमामस मुत्पन्न स दुारयन् स्थिरीकृत्यन् ॥ एवपकरमाहेति ॥ उक्तकरेवा मुत्पन्न स ह्यनुवन् विदधान ॥ एवंपि

या नैदसमाययागा कलुससमाययागा , एव स्वाहुजीवा कस्वामोहणिऊकम्म वेदति , संपूणजते ! तमेवससु  
णीसकं जजिणोहपवेइय , हता गोयमा ! तमेवससुणीसक जजिणोहपवेइय , संपूणजते ! एव मणेधारेमा

मीना कवनयवचडकी योतीतराग देवे जेपटाव प्रकथा तेकनेविदै यवाऊपजे देयनकी तथा सबवकी धय्यरुगंन पइबामौ बाबा देगबकी तथा स  
वचडी पयपत्ते सदेकअत्रै पइवा । मेदमभावया । अं ए विनयासमहे पइबादूकी तेविनयासमयतिनो ह्योभावया । कलुसममानया । कलुय  
अपके मतिमनअपव उमहोत्र एवकी मतिविपयास पाया । एवकसुत्रीवा । एवेपकारै एसुवाकासकारे जीव । कस्वामोहविज्ज कचवेदेति । भाषा  
मीहनीयअमहे एकीवने कांचामोहनीयनोवेदवा हमहोव वाचना । सेपुवभति तमेवयवकीसक कजिरेविपवेदिश । विनयपीतकी विनयजनसत्यवकी  
ते माचपयांपत्ते देखेदिहे — ते निदै देमगवन् तेहो जेमापो निःसुदेइ जेविनप्रवेदित विनेकफो अगर्षतकहै । ईता भीयमा । ईभीतम् । तमेवयवकीस

हमालेति ॥ उक्तान्येव यम यष्टम् भान्यभताभि सत्यानी त्यागिचिन्तायां व्यापारयन्, श्रेष्ठभानीवा, विशेषयु तपोध्यानादिषु ॥ एवंसुखरे  
भापति ॥ उक्तवरेय मनः सुख्यन् यताभरेभ्यो विवक्षयन् प्राकृतिपातादीन्या प्रत्याववाखो जीवइतिगम्यते ॥ आवायति ॥ आवाया आनाद्या  
भवात्पुत्रिनोपदस्य ॥ आराइयति ॥ आरापकः पालयिता प्रवतीति अथ कस्मा तदेव सत्यं यत्किनेः प्रवेदित ? मित्यबोधयत, यथाय दसु  
परिचामात्रिचामादिति तमेव दक्षयथा ॥ सेवुमित्यादि ॥ अन्विततन्त्रित्वेपरिचमइति ॥ अस्तिव अनुस्यारं रक्षुत्यादिभावेन स्वत्वं उक्तम्  
मयमस्तिस्त्रयैव परदुयेकनस्तिवः अन्यथासुतेज्जावामा मेकत्वसमसन्त्यते ॥ १ ॥ तदेव अदुल्यादिपर्यायकप मवसेये अङ्गुष्ठादिद्रव्यादित्वस्य  
कथंन्य इदुत्वादिपर्यायानिरुक्त्यात् अस्तिव इत्यादेरवा इत्यादिभावेन सत्त्वे वक्तव्यादिपर्यायइत्यर्थः, परिवचनति तथा प्रवति इदं मुक्त  
भवति द्रव्यस्य प्रकारान्तरं सत्ता प्रकारान्तरसत्ताया वसंते, यथा - शुद्धस्य विवक्षप्रकारेण सत्ता षट्प्रकारसत्तायामिति ॥ नत्यितमन्वितेपरि

णे एवपकरेमाणे एव चिठेमाणे एव सवरेमाणे व्याणाए व्याणाए हता गीयमा ! एव मणेधारेमाणे  
जायनयइ । सेगुणजते ! अत्युत्तंअत्युत्तं परिणमइ परिणमइ ? हंतागीयमा ! जायपरिण

अत्रिचिंत्तवेदिश । तेहीच निचै सत्य निमदेव वेकिनवच्च वेकिनवचोत सन्न इसा अभिभावनीचचो तेहीच इवे तेदेखाछे-सेपूअतेएव मने  
धारेमाणे । ते निचै वेभगवन् । हम मनेविचै वरतावका हम मनेविचै सारमानवा भारवाकरवी । एवपकरेमावे । हम निचैदेइकरौने । एवं  
विठुमाणे । हम तवज्जामनेजिये पवत्तं । एव सवरेमावे । हम पाताने सवरेमावत्तं अकवः प्रापतिपातादिक सवरेता । आवाय आराइयसवति । औ  
भीतरामनीपाचा १ आराय पाछे, आरावेकरौ विजापवेयनी आरायकहाय इतिपय । हंता गीयमा । हंगौतम । एव मनेधारेमावे जावमवति ।  
रनेपकरे तेहीच मत्व निचैअ वेकिनवच्च हम मनेविचै वरता वावत् आरायकहाय । सेपूअत अत्युत्तमन्वितेपरिचमइ । ते निचै वेभगवन् ।  
अनीयथु ते वतापने पचाय पञ्चटावे परि मयकटाय विम आंगुलीआंगुलीपणे परिचये ते आंगुली ते आंगुली अङ्गुलपञ्चधरे तिचारे पर्यायपर्याय प

[illegible]

मह । जतमते । अत्युत्तम्यत्युत्तमपरिमह, नत्युत्तम्यत्युत्तमपरिमह, तकि पठगसा वीससा ? गोयमा

नदाय पवि मत्ताभाय नयनहाय । नम्रितनम्रिते परिचमद । पक्षतोयण ते पक्षतापचे परिचमे, इहाचारचार प्रयागेवरो अम्रिपवू अम्रिपवि परिच मे त्रिमयभचार मृत्तिकादिष्ठ खरो मूढे ते विष्ट पचेपरिचमि परिचमे, अभावे शुभ यशुम पवि वृत्ते, अमावसर्वायातर इतिभाव । इता गोबमा, जा रयटिचमद । इमोतम पांगुडोने पांगुडोकोये पट ते पटकोखपणे परिचमे पांगुडोने खंगुठारी आस्थिचे, पटनई ते पटनईव एसखे । अंतम ते पम्रितपम्रिते परिचमद । अंते हेमयनम् । खतोयण ते खतापणे परिचमे, पर्यावते पयाणान्तरपचाप्रते खाव । अम्रितनम्रितेपरिचमद । अम्रिपयूना न्तिचये परिचमे पक्ष तोयण ते पक्षतापचे परिचमे, विम बंभारने व्यापारबवी माटोवी घडावरे, पांगुडो यूर्वोबाकोवरो घडो त्रिपखवि । तन्निपयोग मारीमथा । तेन् मयाने जोरनेयापादेवरो, परिचाम अनावेवरो परिचमे, विम पाकासैवादक ? छमद । गोबमा पयोनम्रादित । बेगोतम । प्रबोगेव

पूर्णं दृष्ट्वा इहमात्मत्वाद्द्वीपमार्गतिवाच्ये द्वीपसंस्तुतिमिति चतुर्थोक्तम् ॥ पठ्यगसाधितति ॥ प्रयोगेणापि तदस्तित्यादि यथा - कुपान्नव्याधारा  
 न् मृत्युवशो पटतया परिचरन्ति व्यङ्ग्यमिच्छन्मुक्तावा वक्तव्येति अपि-समुच्चय ॥ द्वीपसमाधितति ॥ यथा - शुद्धाच्च मशुद्धाच्चतया नास्तिस्वस्यापि  
 माम्निन्यपरिचरामे प्रयोगेयिस्त्रययोरेता न्येयो दाहरणानि वदत्यन्तरायेकया युतिपक्षादे रक्षित्वस्य नास्तित्यात् सत्सदेवस्यादि-ति व्याख्या  
 कान्तरे प्रीता न्येयो दाहरणानि पूर्वोक्तपक्षयोः सद्रूपत्वादिति यदप्यजावो प्रावण्य स्यादिति व्याख्यातं तत्रापि प्रयोगेणापि तथा वि  
 त्तममापि वन्तादौ जायययस्यात् न प्रयोगादेः साक्ष्यमिति व्याख्येयमिति अथो क्तवत्यो क्तयत्र समता भगवदधिमतताच्च द्वायकाह ॥ ज  
 हत इत्यादि ॥ यथा प्रयोगविल्लमाभ्यामित्यथाः तद्वति तत्र मतेन अथवा ; सामान्येना स्तिवभास्तिवपरिचरामः, प्रयोगयित्त्वसाजन्य उक्तः सा  
 मान्य विधिः क्वचि द्दतिजायवति यत्तु न्यन्यथापि स्या द्दतिजायवाय प्रगवाविति तमाभित्य परिचरामान्यथाज्ञानमानाह ॥ जहातेइत्या  
 दि ॥ तेहति तत्र सच्यन्धि अस्तिवच्य ज्ञेय तथैवति अथो क्तवत्तत्पक्षे वाच्यस्य सत्यत्वेन प्रज्ञापनीयतां दर्शयितुमाह ॥ सेवूकमित्यादि ॥ अस्ति

पनुगसाधित द्वीपसाधित । जहातेभते । अत्यन्तस्यत्यन्तेपरिणमइ, तहाते अत्यन्तस्यत्यन्तेपरिणमइ जहा  
 तेनत्यन्तनत्यन्तेपरिणमइ तहातेअत्यन्तस्यत्यन्तेपरिणमइ ? हता गोयमा ! जहामे अत्यन्तस्यत्यन्तेपरिण  
 मइ तहामेनत्यन्तनत्यन्तेपरिणमइ, जहामेनत्यन्तनत्यन्तेपरिणमइ तहामेअत्यन्तस्यत्यन्तेपरिणमइ, सेणुण

रो ते अस्तिवादि अस्तिवच्य इत्यादि पूर्ववत् । बोधसाधित । स्वभावेपविबुधे वादकनोपरै । जहातेभतेअत्यन्तस्यत्यन्तेपरिचराम । अस्ति ते सेमगवन् ।  
 ययगैवरा तथा त्रियमादे क्वरोतुकारेभते अस्तिपणू अस्तिपवै परिचरामे । तहातेनक्षितंनक्षितेपरिचराम । तिमते तम्भारेभतेभास्तिपणू नास्तिपवै परि  
 चरामे । जहात नक्षितनक्षितपरिचराम । अस्ति तम्भारेभते भास्तिपणू भास्तिपवै परिचरामे । तहातेअत्यन्तस्यत्यन्तेपरिचराम । तिमतुकारेभते अस्तिपणू प  
 ण्तिपवै परिचरामे भगवतक्वहे - हतागायमा । इगौतम । जहामेअत्यन्तस्यत्यन्ते परिचराम । अस्ति तम्भारेभते अस्तिपणू अस्तिपवै परिचरामे



एव यन्मन्त्रे एवमेव प्रसादनीयमित्ययः ॥ दोषासादगति से बूब प्रते अस्मिन् अस्मिन् मित्यादि ॥ पठेगसाधिताभी  
 य पान्तिने एवमेव प्रसादनीयमित्ययः ॥ चहा ते प्रते अस्मिन् अस्मिन् मित्यादि ॥ तदा मेधास्त्यत अस्मिन्मन्त्रिन् ॥  
 ममादिन ॥ इत्येतरन् यः परिष्ठाभमन्त्रादिपानात् ॥ चहा ते प्रते अस्मिन् अस्मिन् मित्यादि ॥ तदा मेधास्त्यत अस्मिन्मन्त्रिन् ॥  
 इत्येतरन्मन्त्रिणीया इतिस्तत्तत्किल्लपरिष्ठाभयोः समताभिषायीयि एव वस्तुप्रसादनीयमित्ययः समतावना प्रगयता निषाया च स्मिन्मन्त्रिणीया  
 तां दृग्गयन्नाह ॥ अहोते इत्यादि ॥ एषा - स्वकीयपरबोयतागनेकतायां समत्वेन विहितमिति प्रवृत्त्या उपकारदुःखाया ते तय नदत ॥ इत्यति ॥  
 एतस्मिन् स्मिन्मन्त्रिणीये अस्मिन्मन्त्रिणीये समनीयं वस्तु प्रसादनीयं तदा तेमेव समतासकप्रकारेण उपकारचिपयावा ॥ इहति ॥ इहा स्मिन् एहिपाकविह  
 काहो नन गमनीयं यस्तु प्रसादनीयमित्ययः चहा ॥ इत्यति ॥ अस्मिन् यथागमनीयं सुखप्रियत्वादि तथा इह परात्मनि अथवा यथा

देवो ब्रह्म गमनीयं यस्तु प्रकाशनीयचित्तमग्राह्यं ॥ एतत्तत्त्वं ब्रह्मात्मनो यथागमनात् सुखं ॥  
नृते ! श्रुत्यस्तथ्यत्यित्तगमणिञ्ज जहापरिणमइ दीक्षाखावगा तहागमणिञ्जेणविदोश्चाखावगा नानिञ्जा ,  
नृते ! श्रुत्यस्तथ्यत्यित्तगमणिञ्ज ! जहातेनते ! एतगमणिञ्ज तहातेइहगमणिञ्ज, जहातेइहगमणिञ्जात

[illegible]

प्रत्यक्षविभक्त्यारोपतया एव नित्यत आच्छन्नरूपमिति गमनीय, तथा एव नित्येन आच्छन्नरूपमिति, सुभाभार्यत्वा इयोरपीति, आशुभाभार्यनीयकमेवेदं नमस्तस्मै नृणां मयं तस्यैव व्यपमन्त्रिष्यामहे ॥ जीवाश्चतुर्लोकस्थेति ॥ प्रमादप्रत्यया एवमस्तत्तात्पर्याद्वा हेतोः प्रमादयमद्यादिः चक्षया प्रमादयश्च न भिष्यात्माविरक्तिकायासत्त्वं व्यपरेषुष्यं गृहीत इत्यनेन प्रमादेनानायास एव यदाह - प्रमादेयमुचिदं हि प्रविशुष्यते ॥ अस्माद्व्यपरेषुष्यत्वात् भिष्यात्मात्वं तद्वैय ॥ रागेदोसोमश्चसो चभस्मियश्चायरो ॥ जीवाश्चतुर्लोकस्थोऽहो ॥ अहोयश्चतुर्लोकस्थोऽहो ॥ २ ॥ तथा योगनिमित्तत्वा योना मन्त्रः प्रवृत्तिव्यापारा स्तेनित्तं हेतु मन्त्र त तथा चमन्त्राति क्रियाविशेषश्च वेत एतेनच योगाख्ययतुर्लोकस्थ इत्युक्तं वा समुपये अथ प्रमादवरेव हेतुफलभाववचनायाह ॥ सेवमित्यादि ॥ प्रमादो भूमी कल्पा एवमिति प्रवर्तत इति

ह्रातेऽह्यगमणिजा ? हता गीयमा ! अहामेदं ह्यगमणिजा तहामेदं ह्यगमणिजा । जीवाणन्तते ! कस्वामीहणि  
जाकम्मथधति ? हता गीयमा ! धधति । कहणन्तते ! जीवाकस्वामीहणिजाकम्मथधति गीयमा ! पमाद

यवस्त पाशुहोमविदे वस्तुद्रुपाये । तत्रातेऽह्यगमणिजा । तिस तुम्हारेमते सुगिष्वादिक्नेविदे प्रकृपेवे ? भयवत्कवेदे - इतागावमा । हा गौतम । अहामेदं ह्यगमणिजा । तिस चत्वारि मते सुगिष्वादिक्ने प्रकृपेवे इत्यादि । आगतह्यमेतव गमणिजा । यावत् तिस चत्वारि मते सुगिष्वादिक्ने प्रकृपेवे इत्यादि । विदे आत्मासावनीयना यव कहंदि - जीवाच मते कस्वामीहणिजा कम्मथधति ॥ जीव इमयवन् । आत्मानोऽहनीय मिष्यात्त्वमोहनीय कम दधि भगवतकवेदे - हतावधति । हनीतमवाधि । कहणन्तते जीवा कस्वामीहणिजा कम्मथधति । स्वेकारेण चहसो याश्चास्यकारे, हेममवन् । जीवमिष्यात्त्वमोहनीय कम दधि । नावमा पमादपचय । हेमोतम । प्रमादप्रत्ययो प्रमत्तात्त्वकवेदुवो प्रमाद ते मद्यादि यववा मिष्यात्त्व परिवरति कमायनयव वपदेत तोनपक्षा, एवमाप्रमादमेविने यतमीवदे यदाह - प्रमादोयसुचिदेहि भविष्यतेऽहमेवमीवकायसस्योवेव मिष्यात्त्वार्थतवेव ॥ १ ॥ रागाशानामधमा धम्यन्निवचचायरो जीवाच दुष्यदीहाच चहहावज्जियत्वापीति ॥ २ ॥ आगमिमिष्य ॥ जीगप्रसुखमा व्यापार तेहीज निमित्त हेतु

किं प्रयत्नः पाठान्तरं किं प्रत्ययः ॥ जोगप्यवहेति ॥ योमो मन्तः प्रवृत्तिव्यापारः सात् प्रवृत्तत्वात् प्रमादस्य, मद्याद्यासेवमस्य मिष्यात्वादिभ्यश्च  
म्यन् भनः प्रवृत्तिव्यापारभ्रमणे प्रायात् ॥ वीरियप्यवहेति ॥ वीर्येणाम वीर्यान्तरापर्यवर्तमानसमुत्थो जीवपरिणामविद्येयः ॥ शरीरप्यवहे  
ति ॥ वीर्ये द्विधा मरुतग मरुतवन् तथा तेजस्य केवलिनः कृत्स्नयो र्जयदुश्चयोः केवलं दानं दानं चोपयुक्तमस्य योसा वपरिस्पन्दो इति  
या श्रीपरिणामविज्ञाय सदकरव्यं तदिह नापिक्रियते यस्तु मनोवाङ्मायप्रवृत्तसाधनः सतेज्यजीवकर्तृको जीवप्रदेशपरिस्पन्दात्मको व्यापारो  
मो मरुतव्यं योयं तव गरीरप्रयत्नं शरीरं विना तदभावादिति ॥ जीवप्यवहेति ॥ इह यद्यपि शरीरस्य कर्माणि कारुणं न कृतवन्त एव जीवः स

पञ्चय जोगनिमित्तत्वं । सेणजते ! पमादिकिपवहे ? गोयमा ! जोगप्यवहे । सेणजते ! जोगिकिपवहे ? गो  
यमा ! यीरियप्यवहे । सेणजते ! वीरिण कियवहे ? गोयमा ! सरीरप्यवहे । सेणजते ! सरीरे कियवहे ?

त्रिहावे इमकन वधि एतत्ते यामनाम शोकाकमवधनादतु कदा । सेवमतेपमादिकिपवहे । ते वरसेवात्मावकारे, सेमवन् प्रमाद विषसूत्रवत् सवदा  
अप्ये इतिप्रयत्नः । मायमा जानप्यवहे । सेमोहम । लोकते मनप्रमुखो व्यापार तेहो प्रमादकप्ये । सेवमतेजयिद्विपवहे । ते वंवा सेमवन् । याग सेक  
रो प्रवत्तं अप्ये ? मोयमा । सेगतम । वीरियप्यवहे । योदं ते जीवातरावकमवधोपयमो अपनो जीवपरिणामविद्येयं तेहो अप्ये । सेवमतेवीरि  
विदवहे । ते वंवासा सेमवन् । वीय जीवपरिणामविद्येयं सेकरो प्रवत्तं गायमा । सेमोतम । मोय वेप्रकारो हे सुकरवयोय ? सुकरवयोय ? ति  
हां पनेगो सेवमो नै मममज्जाप्यत्वा तथा देवो तेहमिदं सेवमज्जाव सेवकदयन प्रयुक्ताने के भावपरिणाम प्रवृत्तिवातो जीवपरिणामविद्येयं ते सुकर  
पथीयकरोय ? तेहमा इहा अधिचार गर्हा इहा अ मरुतवमरुतवसाधन सेवगीवीर्यप्रदेशाच्च व्यापार ते सुकरवयोय ते शरीरप्रवहे शरीरविना तेह  
ना पभापवो । सेवमतेसरीरेद्विपवहे । ते वंवा सेमवन् । शरीर सेकरो प्रवत्तं अप्ये ? मोयमा । सेमोतम । जीवप्यवहे । जीवकोप्रवत्तं इहा यद्यपि य  
रीरगा अमपचि कारवहे निजेदम जीवकोत्र कारव म्हे, तथापि कमनो कर्त्ता जीवहे तेमाटे जीवप्राधान्यो जीवप्रवह यरीर इहो कर्त्तो, । एवं

यापि दमयो त्रीयकृतत्वेन त्रीयप्रापान्या जीयप्रवृत्तिं शरीर नित्युक्तं अथ प्रसङ्गतो गोक्षासक्तमनो नियेषयक्षाप ॥ एवमुक्त्याये  
 न त्रीयस्य बाहुगोहीयकमयप्रवृत्त्ये सति ह्यस्मि विद्यते नतु नास्ति यथा गोक्षासक्तमत मास्ति जीवाना मुत्थानादिपुरुषार्थोपायकत्वा द्धि  
 यतितएव पुरुषार्थसिद्धेः पदाह - प्राप्त्यो नियतियसाययेद्योर्बः सोवशप्रवर्तितमृषाभूजोभूजोवा । प्रतानांमहतिरुतेपिहिमयवे, नाजाप्यजयति  
 मन्नादिनोद्विनाद्यहति ॥ १ ॥ एवहि अग्रमाविद्याया नियते रन्मुपगमः कृतो मवति अप्यसिद्धपुरुषकारापसापय स्यादिति ॥ उचायेहवति ॥  
 उत्थासमिति देतिवाच्ये प्राकृतत्वास्वस्थिसोपाज्या मेवजिद्वैव सात्र उत्थानमूर्धुप्रयत्न इति रूपप्रवर्तने, बाह्यवो विक्षये समुद्येवा; ॥ कस्मैहव  
 ति ॥ कस्मत्तरेपकापसेपकादि ॥ वल्लहवति ॥ वल्ल शरीरः प्राक्कः ॥ वीरिएहवति ॥ धीर्ब जीवोत्साहः ॥ पुरिसकारपरक्रमहवति ॥ पुरुषकारश्च  
 पौकपाजिमतः पराक्रमश्च एव साचिताजिमतप्रयोजनः पुरुषकारपरक्रमः अथवा पुरुषकार पुरुषजिमा एव प्राय लीक्रियात प्रकर्षव  
 ती जयति तत्प्रनायत्वादिति विशेयेव तद्दृष्टं पराक्रमस्तु बाहुगोहीयस्य वेदन बन्धश्च सहेतुक उक्तः अथ तस्यैवोदी  
 रवा मन्यए तद्वतमेव वशापनाह ॥ समूहमित्यादि ॥ अप्यजावेयति ॥ आत्मनैव स्वयमेव जीवो जनेन कस्मलो यन्मादियु मुख्यवत्त्या समएवा पि  
 कार उक्तो मापरस्य भाहव - बहुमतोयिककस्वह बंधोपरवत्पुष्यपामचिठति । वदीरयति करवविशेयेवा कृष्य द्रविप्यरजात्वेद्य उपकाय उव

गोयमा ! जीयप्यग्रहे, एवसह्य अत्युत्थाणेइवा कर्ममेइवा वलेइया वीरिएइवा पुरिसकारपरक्षामेइवा सेणू  
 ण जते ! अप्यणायेवउदीरेह अप्यणाचेवगरहइ अप्यणाचेवसवरइ ? हता गोयमा ! अप्यणाचेवतचेव

इपतिगृहचिद्वया । समयका र्हे क्षमावी, इवाहति रूपनिदग्ने, बाग्यद्विषयभाय । कश्चरवा । कस गमनादि कृतचेपच रि, चवचेपचादि । वरीर  
 वा । गरीरनोममर्सा । वीरिएइवा । जीवमोउक्साह, । पुरिसकारपरक्रमेइवा । पुरुषना अभिमान पराक्रम उह्नो साधना क्तास पूराकीवी ते । सेणू  
 मभतेप्यणाचेवउदीरेह । तेनियै हेमगबन् । आपनर्प नियो सदीरे एतद्य पातैव जीव कामवधादिकर्मैविषै सुखवे, वीजीवीदेमही, । प्रप्यवाचिवगरहइ ।

मावनिष्ठाया प्रवेद्ययति, तथा ॥ मरुद्विनि ॥ आत्मनैव मरुते निवृत्ती त्यागीतकालकृत कम खरूपत कलकारकनईकद्वारेणवा पातविप्रोचनीय  
रामम् तथा ॥ मरुद्वरेति मरुतेति यत्तमानकालिक क्रूरमेककृतत सवेतुसवरकद्वारेणवेति मरुद्वारेण यद्यपि मुखादीनामपि सुखा  
रित्यमस्ति तथापि न तेना व्यापान्य जीवविमर्शयेव तत्रकारकत्वा मुखादीनाम् धीर्यास्मासमाश्रयव हेतुत्वादिति अयोदीरकायेवा श्रित्याह ॥  
जतन्नेत्यादि ॥ अथ कथं अयो दीरयतीत्यादि पक्षयोर्द्वेषाच्चि कस्मात् तन्निवृत्तिविरुद्धदीरेहत्यादिना श्रयद्वैतस्य निर्देशः कृतः ? उच्यते उदी  
र्गदीर्घे कमविशेषचतुष्टये उदीरकायेवा मित्य विप्रोचयस्य सङ्गातादितरयो सु सदाभावा देव तदुद्देशयूत्रेणहेते सद्वीर्ये त्वेतत्पदद्वय कस्मा  
दुपात्तं तत्तरकानिर्देशमावत्वात्तस्येति ? उच्यते कमउदीरकाया मरुद्वरेणवा मित्यभिधानार्थं एवमुत्तरकापिवाच्यमिति प्रमाये  
यको तरकस्यात्माना द्वेदुष्टाः तत्र ॥ गोत्रद्विखतदीरेदिति ॥ उदीरकादेव उदीर्घत्वा प्युदीरवे उदीरकाविरामप्रसङ्गात् ॥ गोत्रद्विखतदीरेदिति ॥

उच्यते यद्यु । जतन्ने ! अथप्याचेवउदीरेह अथप्याचेवसवरह, तकिउद्विखउदीरेह १ अथ  
द्विखउदीरेह २ अथुद्विखउदीरपानाविषयकमउदीरेह ३ उदयाणतरपच्छाककमउदीरेह ४ ? गोयमा ! नोउ

पापको ज पनीमकामेकमकोदातेतरहै, शार २ निर्वातेतरकाः अथवाचेवसवरह । अथको ज सवरे, यत्तमानकावे कर्म मरुते । अतामोवमा । अतामोवमा ।  
पथवाचेवतवेचकारिवर्ध । पात्रादेवरीत्र कर्मचयवरे दम पूषणै कञ्जो, विमल कद्व । अतंमतेपथवा । जेते येममन् । अथचयैक । चेचतदीरेह ।  
निवेददीरे । अथप्याचेवसवरह । अथचयैत्र निवे गरी । अथवाचेवसवरह । अथचयैत्र निवे सवरे । तन्निवृत्तिविरुद्धदीरेह । तो अथचयैत्र उदीरे ।  
यवरा । अथद्विखतदीरेह । अथचयैत्र निवे सवरे । यवरा । अथद्विखतदीरेकामितवकञ्जदीरेह । उद्वचनवीपायं उदीरकायेववे उद्वचयामवाये च  
जमास य ई रक्षाचै तेकम उदीरे । उदयावतरंयथावकञ्जदीरेह । जेकम उद्वचने अततरकमर तेकमिन्निवे यथावत अतोवचयामते यद्युतो तेकर्म च  
दीरे । मोयमा । येनोतम । अथद्विखतदीरेह । उद्वचयाम् ते उदीरे मरुते, उद्वचयामाटे उद्वचयामादे उदीरे ते मरुते । अथचयैत्र उदीरे

इहा मुदीर्षं चिरेण प्रविष्टमुदीर्य मन्त्रविष्यमुदीर्य उच्यते तद्विषयादीरयायाः स्वस्त्यनागततासावासात् ॥ अमुदिच्छंतीरयाप्रविषं  
कर्मन्दीरइति ॥ यमुदीर्षो ह्यङ्गयेण किं स्वन्तरसमयेण यमुदीरबाभविष तमुदीरपति विशिष्टयोग्यताप्राप्तत्वात् तत्र प्रविष्यतीति प्रका येवन  
यिक्ता उदीरबान्तिकाह्येति प्राकृतत्वा मुदीरबाभविष मन्त्रणा प्रविक्तोदीरकमिति स्या मुदीरबायावा मध्य योग्य मुदीरबाप्रत्यमिति ॥ मोद

द्विषाउदीरेइ १ नोऽप्युद्विन्नउदीरेइ २ अणुद्विन्नउदीरानाविषयकममउदीरेइ ३ नोउदयाणतरपच्छाकनंक्रममउ  
दीरेइ ४ ॥ जतजते ! अणुद्विन्न उदीरणानाविषयकम उदीरेइ तकिउठाणेण कर्मणे थलेण वीरिणं पुरिस  
क्कारपरक्कमेण अणुद्विन्नउदीरणानविषयकममउदीरेइ , उदाकतअणुठाणेण अ्यकर्मणे अ्यथलेण अ्यवीरिण्य

१ । उदयनाम्भं तेवचि उदीरे नदी, वचकासे उदयनायसे तेइनेविदै उदीरयानं साप्रतिपसावै । अमुदिच्छंतीरबाभविषयकमउदीरेइ । अरुपे उदय  
पायं नवी किंतु पनतरममवनेविदै से उदीरबापुयें तेकर्म उदीरे, विविष्टयोगनो प्राप्तिवो, यववा उदीरबानै मध्य ककता मोष्य ते उदीरबाभय्य क  
वीरे उदीरबा भावे कर्मउदीरे । कोउदयाणतरपच्छाकनंक्रममउदीरेइ । सेकर्मने उदयने पनतरसमय तेइनेविदै पवायकतकम यवीरययामते पयुतो से  
तद्वि उदीरेनदी, तेइने पतौतपययवो यतौत ते मर्, मर्ते यमुदीरयोव ववो, इहा यवयि उदीरयादिवनैविदै काकसमावादिक्को कारवव,  
तक्कावि साभायपयै पुक्कवीर्यमन्न कारवपयो देवायसे—कतमतेअमुदिच्छंतीरबाभविषयकमउदीरेइ । से ते देमगवद् ! उदयनाम्भं नवी अमंदरसमय  
ते कर्म उदीरयें तेकर्मउदीरे । तकिउठावेच । तेक्कं अमोबाहवो । कमेच । अमयमनादि । वसेच । अदीरलोचमवीर । वीर्य ते वीरनो उक्का  
४ । पुटिपकारपरकमेच । पुक्कपाकार अभिमानविशेष पुक्कयकियानविशेषोक्क नोपकाळो योतानोविषय । अमुदिच्छंतीरयाभविषयकमउदीरेइ । एतवे  
यकारेवरो यमुद्ववै, यनं उदीरबान् भूतवै सेकर्म ते उदीरे उक्कच—यताकताविमसावा । इतिपयनात्, उदाकतपययवोच । यववा ते उद्यानयि  
ना । यक्कमेच । कसविना । यक्कमेच । यक्कविना । यवीरियच । वीर्यविना । यपुरिसकारपरकमेच । पुक्कपाकार पराकमविना । अमुदिच्छंतीरयाभवि

दयावंतरपञ्चाककृति ॥ उदयेना नन्तरसमये पञ्चास्तर मतीकतां गीत य त सथा तदपि नो दीरयति तस्यातीतत्वा दतीतस्यवा सुध्या दस  
तथा मुदीरवीयत्वादिति ॥ इह यद्यप्युदीरकादिषु कासकृतावादीना झारकत्वं मस्ति तथापि प्राधान्येन पुरुषवीर्यस्यैव धारणत्वं मुपदश्रयत्वाह ॥  
अतमित्यादि ॥ यत्तत्त्वं त्वर तत्यानादिनो दीरयतीत्युक्तम् ॥ तत्र यदापका तदाह ॥ एवमिति ॥ एव मुत्यागादिसाध्ये उदीरणे सतीत्यप्य मोय  
तपेय काङ्क्षानाहनीयस्यो दीरकोक्ता अप तस्यैवोपशममाह ॥ सेवकमित्यादि ॥ उपशमन मोहनीयस्यैव यथाह - मोहस्सेवोयसमो रगुयव

अपुनरिस्कारपरक्लमेण अणुविन्तउदीरणाज्जिवियक्रमउदीरेइ ? गोयमा ! तउठाणेणवि कम्मणेणवि वलेणवि  
धीरिण्णयि पुरिसक्कारपरक्लमेणयि अणुविन्तउदीरणाज्जिवियक्रम उदीरेइ, णोतअणुठाणेण अकम्मणेण  
अथलेण अवीरिण्ण अपुरिसक्कारपरक्लमेणअणुविन्तउदीरणाज्जिवियक्रमउदीरेइ, एवमइअत्युत्थितठाणेइया  
कम्ममेइवा थलेइवा वीरिण्णवा पुरिसक्कारपरक्लमेइवा । सेणुणज्जे ! अणुपणाचेवउवसामेइ अणुपणाचवउगरह  
यवमउदीरेइ । उदयवाण्ण नवी ज्जे उदीरवामूतत्वे ते कम्म उदीरे । यावमा । हेमीतम ! तउठाणववि । तेकम्म उतानेकरो पच्चि । कम्मववि । कम्मकरो  
पच्चि । वलेववि । वसेकरोपच्चि । वीरियववि । वीरियवरोपच्चि । पुरिसक्कारपरक्लमेववि । पुरिसक्कारपरक्लमेकरो पच्चि । अकदिअउदीरणमविविदवम  
उनीरेइ । अमुदयव उदीरवा मम कम्मण्णे उदीरे । णोतअउठाणेव । नवी ते अमुतानेकरो नवीविधाविमोये पच्चि । नवीममवादिक्कियाकरो । अ  
वसेव । नवीमयीरवामनंणव । अवीरिण्ण । नवीवीरवमव । अवरिसक्कारपरक्लमेव । नवी पुरिसक्कार परक्लमेकरो । अउदिसउदीरवामवियवअउ  
दीरेइ । उदयरवित उदीरवा मविक उदीरवाविमपच्चि मवमेव कम्म उदयवा । एवमव । इम ववा । अत्तिउठाणीइवा । हे उतानेकरो । कम्मोइवा ।  
कम्मकरो । वमेइवा । वमेकरो । वीरियइवा । वीर्ये करो पुरिसक्कारपरक्लमेइवा । पुरिसक्कारपरक्लमेकरो अमुदय उदीरवा मविक कम्म उदीरे ए क्काचा  
माइमोयउदीरवाकरो । इवि क्काचायोइमोवमाज उपगम वीरेइ - सेवकमित्येवउवसामेइ । ते निदे हेमगण्ण । आपवपेव निदे क्काचामाइमो

मोचउपपादक । उदयस्यपरिणामा आठरदियिहोतिक्कमाळ ॥ ९ ॥ उपग्रमदा उदीस्यस्य एयो पुदीस्य विपाकत प्रदेगताया ननुजननं सर्वे  
 येय विफुन्नितोदयत्यमित्यर्थः अपन्ना नाविमिप्यावृष्टे रीपग्रमिन्स्य सम्यक्तस्य साजे उपग्रमशेषिगतस्येति ॥ अणुदिखंउयसामेइति ॥ उदी  
 रास्य स्यावयं वेदनावुपग्रममात्रावइति उदीसंसेद्यतइति यवनमुत्र तत्र उदिययेयइति ॥ अमुदीस्य येदनात्रायात् अया नुदीगंमपि वेदय  
 ति तर्हि उदीराणांनुदीरायोः को यिक्कोपः स्यादिति वेदितव्यं विजिगीते इतिनिखरासूत्रं तत्र ॥ उदयाकतरपञ्चाफलेति ॥ उदयेना नन्तरसमये  
 यत्यवारस्त नतीतता इमिति तत्तथा त किञ्चरयति प्रदेगप्यः आसयति मान्य इनमुपुतरसत्याविति उदीरयोपग्रमवेदननिज्जरसमूश्रोक्ताय

इ अूप्यणाचेवसवरइ ? हता गीयमा ! एत्ययितहेअजाणियइ , नवर अणुदिन्तउवसामेइ , सेसापक्रिसेहि  
 यइतिणि । जंतंते ! अणुदिन्तउवसामेइ तकिउठाणेणजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा , सेणूण जते ! अूप्य  
 णाचेयवेदेइ अूप्यणाचेवगरइ ? हता गीयमा ! एत्ययिसंयिपरिवाही , जवर उदिसवेदेइ नोअणुदि  
 त्त वेदेइ , एयंजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा ! सेणूणजते ! अूप्यणाचेव जिज्जरेइ अूप्यणाचेवगरइ ? हता

यक्कम उपग्रमावे । अप्यवावेवगरइइ । आआयेकरीनेज भरहे निहे । अप्यवावेवसरइ । आआवेकरीनेज सवे इतिप्रय , । हता मोवमा हांमोतम ।  
 एत्यवितहेअभिचयं । इहांपवि तिमल पूर्वोक्तविधि कइवो । जवरअणुदिक्कउवसामेइ । एतसोविगेय उदयनाब् तंजमे उपग्रमावे , उदयनाब्बोति अय  
 म्मे वेदाय पवि उपग्रमपचानी अमावसे । सेसापक्रिमिहियत्तातिणि । जाकता वरजवा तीन भागा, उदिसउवसामेइ इत्यादि ३ । जंतंतेअणुदिक्कउवसा  
 मेइ । जे ते हेमगवन् ते उपग्रमावे । तर्हिउगुयेवं । ते अणु उत्तामेकरी । आअपुरिसक्कार परक्कमेइवा । यावत् पुक्काल्लार । पराजमेकरी  
 उपग्रमावेतर्हिने कइवो उदयनाब् तंजम वेदे तीमाटे वेदनाधुन । सेकअभीअप्यणाचेववेदेति । ते निवे हेमगवन् ! आआयेकीधो यमाअभयमं ते उदय  
 पाओ आआयेकरीनेज वेदे । अप्यवावेवगरइइ । आआयेकरीनेज गरइ । एत्यविसंयिपरिवाही । इहां पवि इमहोज सगदीही यरिपाटी कइवो ।



ननु इगपा - तदप्युत्तरं नो । अवसामैतियपुबोविधी एव । वेदतिमिच्छरतिय पठमचतयेविधिस्त्वेषि ॥ १ ॥ अथ काङ्क्षामोहनीयवेदनादिक निजं  
 रान्नमूत्रमप्य नारकादिषु धिंशतितदन्ते नियोजयथा ॥ नेरइयावमित्यादि ॥ इहय ॥ अष्टाष्टदियाणीवाहृत्यादिमा ॥ इतावेयंति कइसुनतेनेर  
 इयावरागमोहदिविग्रहमवयति ? मोयमा तेचितेदिंकारवेदिं इत्यादिकृत् ॥ निजंरारायुनान्तं सनितकुमारप्रकरवा तेषु प्रकरकेषु सूचितं तेषुच  
 पत्रयत्रयीपद अगपीतं तप्रतत्र नारकादिपदमप्येयमिति पन्थप्रियाबामेव सुकृतितात्वाद्यः काङ्क्षामोहनीयवेदनप्रकारा घटन्ते मेधेभिप्रयादीमा ,

गोयमा ! एत्यायिसंछेयिपरियाह्नी , जखरउदयाणतरपच्छाकंकमनिजारेइ एव जाव परक्कमेइवा । नेरइया  
 पंनंते ! कंखामोहणिज्जकंमवेदति ? जहा ठंहिया जीवा तहानेरइया , जाव थणियकुमारा । पुठविकाइ

नरउदिववेइइ । एतत्ताविमिय उदसपाका मे वेदे । पापसुदिववेइइ । उदसपाका ते वेदेनहो, पदुइवनं वेदनाहो भमावहे । एवजावपुरिमकारपर  
 खमेइवा । इम यावत् पुबवात्वारपरताममठने कइवो जेकमवेदोये निजरोये तेमाटे मिजंरासव कइहे-वेपूवंतिपय्यवावेदिविजरेइ । ते निजे हेमग  
 रन् । पाकायेकरोमैत्र कम निजरे । अरपकावेगगरइ । पाकायेकरोमैत्र गरहे । एत्वविस्मयेविपरिवाहो । इहापवि इमहोण सगहो परिपाटी जाव  
 हो । खरउदयार्थनरपच्छाककककंविजरेइ । एतत्ताविमिय उदवेकरो भनवरसमयमैत्रिये पकावुल्लव भतीतपं पाखो ते तिम मिजरे प्रदेयहोयातनकरे ।  
 एवंजावपरखमेइवा । इम यावत् पराखमताई कइवो इविमकाए विगीयव सव कइवो, । विजे काङ्क्षामोहनीय वेदनादिकनिजराययंत सूचनो विछा  
 र नारकादिषुत्रयीमदृक्कंनैदिवे कइहे । विररवाभतेवंछामोहविज्जककवेदेति । नारको हेमगवन् । काङ्क्षामोहनीयकमवेदे । अष्टाष्टदियाणीवातडा  
 रइइवा । जिम पौधिकलोव कया तिम नारकोकइवा । जावविथियकुमारा । जावत् सानितकुमार तांकेने कइवो, । एवंविजने ग्रंथितादिदीकइवे  
 तेहो काङ्क्षामोहनीय वेदनाहि इवे पवि एवेद्विवादिक्कंने ग्रंथितादिद्वयमा भमाववो काङ्क्षामोहनीयकर्मनो वेदं नहोइवे जेमाटे एवेद्विजने विधिने  
 करो काङ्क्षामोहनीयन् देवाउहे-पुठविवाइवावार्थनेकंखामाहविज्जककंनैदिवेति । पृबिगोकाव जेमगवन् । काङ्क्षामोहनीयकम वेदे । उतावेदेति । जं

मत् स्तथां विद्येयेकतद्वेदमप्रकारवर्त्ममाया ॥ पुठविकाइयाजमित्यादि ॥ ध्यस्त अस्वर ॥ एवं वक्ष्यमाणोद्देशेन तर्कौ विमर्शौ स्मिन्निर्दिश्य माकृतस्यात् ॥ सख्याइवति ॥ सख्या यावयइरूप स्थानं ॥ पखाइवति ॥ प्रखा अक्षेयिद्येयविषय ज्ञानमव ॥ मवेइवति ॥ मत् स्तथां विद्येयमतिनेदरूपं ॥ मइइवति ॥ वाच्यवर्णं ॥ सेवतव्यवति ॥ सोय तदेव यदीचिकप्रकरवेषीत प्रवेय ॥ इता गोयमा ! तमेव सर्वं नी सख तं त्रिवेदि पवेइय, से दूबं प्रते एवं सर्वं पारेमावेइत्यादि ॥ तावद्वाच्यं यावत् ॥ सेयूव प्रते अप्यखाचेव निष्करेव अप्यखाचेव गरिइइइत्या हेः सूत्रस्य पुरिसक्कारपरकरवेइवतिपदं ॥ एवं जाय चररिवियति ॥ पृथ्वीकायप्रकरणव श्वाभाविप्रकरणानि चतुरिन्ध्रियप्रकरणानि न्ययेयानि

याणजंते ! कस्वामीहणिज्जकमवेदति ? पुठयिकाइयाकस्वामीहणिज्जकमवेदति ? गोयमा ! तेसिणजीवाणं णो एव तक्काइवा सखाइवा मणेइवा वदइवा अण्हेण कस्वामीहणिज्ज कम वेदमो वेदति । पुणते, सेणुणजंते ! तमेवससुनीसक जजिणेहिपवेइय , सेसतवेव जाव पुरिसक्कारपर

मोतम । वेइ । कइवमतेपुठविकाइयाकस्वामीहणिज्जकमवेदति । विसेणकारे हेभगवन् । पृथ्वीकायना औव कांवाभाइनीवकम वेद ॥ मोवमा । वतीतम । तेसिणजीवाणवा । तेइ जोवनै इम भांमं कइते ते नही । एवतक्काइवा । तत्त कइते विचार तेवे रहितवे । सखाइवा । पदं पइवरूप वा न ते नही । पखाइवा । समस्त विषेणान ते नही । मवेइवा । मननवो जातिक्करविषेण मतिभेदरूप नवो । वइतिवा । वचननवो । अक्षेयकखर माइविज्जकमवेदेमोवेदतिपुणते । पके कांवाभाइनीव मिथ्यात्वमाइनीय कम वेदूव् पतखा तेजीव नजासे पुणकइता वनी ते जीव कोवामोहनीव कम वेदे । सेवमतेतमेवससुनीसकमवेदिवेदित । ते निवे हेभगवन् । साधुनै इम कइवा तेहीअ साधु शंकादिदूयचपंवरहित जेज्जिनखेयकोए म इया । सेमतवेव । येम वाकता तेहीण जेवीविज्जकमवेदनेविपै कइं । जावपरिसक्कारपरखमेइवा । खावत् पुणयाक्कार पराज्जमताइ कइवा । एव वावचररिदिवाचं । इम अपकायमो माडो वागत् चररिदीखेमे कइनी । पचिदिवतिरिक्कजोणियावावेमाथिवाजकापाडियाओवा । पंचेद्रीतिवेववी

नित्यं पञ्चनिग्रमरस्यादीनि तु वेदानिकप्रवरखान्ताभि र्गोपिक्रीवप्रवरव तदभिज्ञायेमाष्यमीत्यतएवाह ॥ पचेदित्यादि ॥ नयतु नाम  
 गोपजीवानां काङ्क्षामोक्षमीयेदेत नित्यन्तानां पुन स न सम्भवति जिनागमावदतदुद्रित्या तेषामिति प्रसयकाह ॥ अत्यन्तमित्यादि ॥ काङ्क्षा  
 प्यं अक्षिपयित्ते त्वं पचो यदुत समवा प्रतिकः ॥ अयिष्यथः समवा प्रतिकः ॥ अत्यन्तमित्यादि ॥ काङ्क्षा  
 ॥ नित्यन्ताः मयाध्याज्यन्तप्रज्या क्रिगताः सापवहत्याः ॥ नावतरेदिति ॥ एकस्मा अन्तानां दन्त्यानि ज्ञानानि ज्ञानान्तरादि ते ज्ञानविज्ञेये  
 ज्ञानविज्ञेयेषुवा शङ्किता इत्यादिभिः सम्यन्त एव युवथ तेषु वैयं शङ्कदयः स्यु येदिनाम परमास्यादिवक्तव्यपिद्वय्यावसानविषयप्राहृत्वेन मनःपर्याय  
 मन्वातीतरूपा स्वयपिचानानि सन्ति तत्किमपरव मनायायपचानेन ताद्विषयभूतानां मनोद्रव्यावा मवचिचैव वृष्ट्या? दुष्यते चागमे मनःपर्याय  
 तानमिति कि मत्र तन्म मिति ज्ञानतः यदु ह्यसमाधिः यद्यपि मनोविषय मय्यवधिज्ञानमसि तत्तपि न मनःपर्यायज्ञान मवचा वलान्नैवति

॥ नित्यन्ताः मयाध्याज्यन्तप्रज्या क्रिगताः सापवहत्याः ॥ नावतरेदिति ॥ एकस्मा अन्तानां दन्त्यानि ज्ञानानि ज्ञानान्तरादि ते ज्ञानविज्ञेये  
 ज्ञानविज्ञेयेषुवा शङ्किता इत्यादिभिः सम्यन्त एव युवथ तेषु वैयं शङ्कदयः स्यु येदिनाम परमास्यादिवक्तव्यपिद्वय्यावसानविषयप्राहृत्वेन मनःपर्याय  
 मन्वातीतरूपा स्वयपिचानानि सन्ति तत्किमपरव मनायायपचानेन ताद्विषयभूतानां मनोद्रव्यावा मवचिचैव वृष्ट्या? दुष्यते चागमे मनःपर्याय  
 तानमिति कि मत्र तन्म मिति ज्ञानतः यदु ह्यसमाधिः यद्यपि मनोविषय मय्यवधिज्ञानमसि तत्तपि न मनःपर्यायज्ञान मवचा वलान्नैवति

कस्मिन्त्या , एव जाय चउरैरित्याण , पचिदित्यतिरस्कजोणियाजाववेमाणिया , जहाटीहियाजीया । स्थित्य  
 ज्ञानते ! समगानिगया फखामोहणिजकमवदति ? हतास्थित्य । क्रहणनते ! समगानिगयाकखामोहणिजक  
 मवेदति ? गोयमा ! तोहतेहकारणेहि, नाणतरोह  
 वेमानिकप्रवरवत किम रीचिकमोमवरवे कष्ट तिम इहापचि कष्टो, मेव खोवने निव्यासमोक्षमीयनो वेवो  
 निजप्रवरने चाविदे वायत् वेमानिकप्रवरवत किम रीचिकमोमवरवे कष्ट तिम इहापचि कष्टो, मेव खोवने निव्यासमोक्षमीयनो वेवो  
 चावो, परं ते निपेयने न संभवे, जिनागमने भिन्नगुणिवे वेवो एवो यूक्तो कवेवे—यत्किमभितिसचापिब्यावाकामोहकिजकमवेदति । वे वरवे  
 वास्यामचारि, वेममवन् ! नमव तपस्वो शास्त्रादिकयपि इवे तेसादे कवेवे—शास्त्राप्यतरगुणरहित एववा साधु ते वाकामोक्षमीयकन वेदे, तेहनी छन  
 र भमवत कवेवे—हतापत्ति । इगोतम वेदेवे । कष्टभितिसचापिब्यावाकामोहकिजकमवेदति गोयमा तिरितेकिवारविहिं चावतरेहि । किचेव  
 चारि वेममवन् ! नमवतपस्वो निपेय शास्त्राप्यतरपरिपहरित निव्यासमोक्षमीयकन वेदे इतिप्रत्र, वेगोतम । तेवेवेवे चारवेवरो तेवारवकवेवे—वा



तदनुसरणीयस्य बहुता तदुक्तं तस्या बहुदोषेण शब्दमिति अथवा दृष्टम सम्पन्ना आश्रयः शङ्करः - विष्णुस्तत्रमुद्रिन् तंतीरुपमुद्रिपउधसत  
मित्येव लब्धं आनोपपत्तिमिन्न मौपपत्तिमिन्न मप्येव लब्धमप्येव यदाह - आश्रितिरुद्रिस्मि अमुद्रिज्जातेयसेसमिच्छते । अतोमुद्रिमेत उत्रसमस  
मंसहस्रव्रीको ४ १ ॥ ततो नयो मेविविद्येव उक्तं आसाविति सभाषिय उपोपपत्तिमोमुद्रिदीर्घस्य सयो नुदीकस्य च यिषाफानुपवापपठपाठपगममस्य  
देवानुनवतकूटयोस्त्येव उपपद्येतु प्रदेवानुपपत्तिमिति आसीति उक्तं - यद्यस्यतकम्प कथंयस्यमिपसुनागुनावसी । तयमतकसाठपुण येदेहस्यसत  
कम्पति ॥ १ ॥ तया आरिचं चरत् तत्र च यदि आमायिचं सवेसावविचरितिसह च्छेदीयस्यापीपमपि तन्नसकनेव महात्रताना मवद्यविचर  
तिरूपत्वा तत्को नयो प्रैव उक्त आसाविति अत्र सभाषिः अमुद्रिकवचकककाना मयमचरजत्रिनसाधुना भाषासमाय च्छेदीयस्यापीप मुक्त  
त्रतारोपवेदि ननास्वामिपिकासुद्रावपि त्रताकवतनात् आरिचिको तयचारित्र्यस्य प्रवक्तृत्वा विविचुद्विः स्या त्सामायिकमात्रेण तदमुद्रि  
प्रम नद्यादिचं आरिचस्य सामायिकमात्रत्वा त्रित्येव मनाद्याव कोपा स्यादिति आह - रिउवककककपुरिने परावधामाहपययउह । नकयम

### आरिचसुतररेहि लिगतररेहि

को नशी ते उपपत्ति २ कचच आसापयमना, उपकमचचि हरे चर्चच यने परस्पर विग्रय नकको ती हरी सुदेव लपवै तेहो उभार कनैश्वरानो आ  
रच आसापयम लब्धकोचव अमुद्रिकविपाकनो उपपद्यमपि प्रदेवनो कचचये उपपत्ति प्रदेवनोपचि उह्य नही इतिविग्रय १ २ । अरिततररेहिइति ।  
आरिचपायो तिहां सामायिक सवेसावधमो पककाव तिहां वसो वेदीनै वेसापकापीव कचता महात्रतआरपीये ते किष्ण आरच हरी यका छ  
पके तेहो प्रल्लवत्त आदिनादने कारे ककुलकवीवके, यदे नौमहावीरनौनैवारे बोधा यने कडवे, तिषानि समभाषियानि कारच सामायिकवेदी  
यसापनोवचारिचदीधा चिहे तुमे पंचमहापुत्रचारिच आनवीपस्यो पाछो, आह - रिउवककककपुरिने कुराणसामाहपययउह । मयचविचुद्विचि  
पा सामाहपययउह १ १ । इतिगुतोवपथाह १ १ । अरिततररेहिइति । अरिते साधुनो वेय विहां यावीसतोर्ध्वकटण यारे कचका चकपात्रे तिसापचि

मुदेयञ्च सामरण्यातिशयपार्थ ॥ १ ॥ तथा लिङ्गसाधुदेय सत्रप यदि मध्यमजिने यथासम्यक्कुर्य लिङ्ग साधूना मुयदितु तदा किमिति प्रथम  
 चरमश्रान्त्यां सम्राज्यपक्षलसङ्कपं तदेवोक्त सर्वज्ञाना मविरोधिवशतत्वादिति ? अत्रापि अजुलकव्यक्तप्रसङ्गप्रक्षिप्या नाभित्य प्रगवता  
 तस्यो पदेशे सत्रेय तेपामुपकारसम्पदा दिति समाधि- तथा प्रवचन मत्रा गम सत्रप यदि मध्यमजिनप्रवचनानि धनुर्गोमचर्मप्रतिपादकानि  
 मयं त्रयमेतद्विमतवचने पञ्चपासपथ्यप्रतिपादके सर्वज्ञाना मविरुद्धवचनत्वा ? इत्रापि समाधि धातुर्गोमोपि तन्वत पञ्चयामएवा सौ धनुर्ग  
 व्रतस्य परिप्रेक्षे तानूतत्वा द्योपारिनामपरिप्रेक्षिता नुज्यत इति व्याप्यविति तथा प्रवचन मधीते वक्तिवा प्रावचनः कालापेक्षया अङ्गुलमः पुरुष  
 इत्य एक प्रावचनमिह एव कुरुते अन्यस्त्वेवमिति किमिति तन्वमिति ? समाधिप्रेक्षे चारिप्रमोहनीयकपोपक्षमविशेषेव उत्सर्गापवादादिजाति

### पञ्चयणतरेहि पाथयणतरेहि कप्पतरेहि

रे, एने मज्झिमे तदा वववीसमा तीसीकरनेनारै साधुने धवळावच्छ तेपणि प्रसारवहित पट्टिरे, इहां परस्परविरोध दीसई, इहां परस्पर यका ज  
 पयै तेवना उत्तर इहां पणि अलुवक वकनक अलुपात्र पिच मवोच उपसारकररे वासते मयवंत उपदेयदीषा ते किंगतरकहोये ॥ ३ ॥ प्रवचनतरे  
 दित्ति । प्रवचन ते यामम तिहां पावीसतीईकरनेनारै चार मज्झात कक्षा, एने प्रवचनसमीपकरने नारै पचमज्झातधम कक्षा, इहां जिनवचनने  
 निवे विरोध दीसई, पचपणि यंका अपयै तेहमो उत्तर पूङ्गमो पुरिमावज्जकक्षाओ इतिवचनात् जे चारिमज्झात ते तत्त्वको पचमज्झाततई तेकिम  
 खी जे दरिपट्ट एवोभूततई तेमाटे चारमज्झाततई एने शुदाशुदाविचारोयै तो पंचमज्झाततई, ए प्रवचनतरकहोये ॥ ४ ॥ तथा पाववचातरिहि  
 इति । प्रवचनमयै धववा जरी ते पावचनकहता औताव तेइमाहि एक इमयाडेरो कियाकरै, एक एनेरा धरिरो किया करै, इहां जं प्रमाथ ? इम यो  
 का अपयै तेहमो प्रति उत्तरपूङ्गको, इहांतो चारिचमाइनीयकर्मचयोपयमविशेवै करो अपवादादिमावेकरो औतावाको विविधप्रवृत्तिप्रवक्तवो स  
 ईपापि प्रमाथवै, एमावचनीतरकहोये ॥ ५ ॥ कप्पतरेहिइति । कक्षाकहतां जिनकक्षादि सामाचारौ तिहा जिनकक्षोतो नमनादिमज्झाते प्रवर्ते च



श्रमस्यो तद्वृत्तः षट्पण्येसायरोपमप्रभाजत्या दत्त किं तस्य भित्तिः ? इदञ्च समाधिः पदेवमत मागमानुपाति सदेव सत्यमिति मत्माव्य भित्तर  
 तुल्य वपेच्छरीय मया यदुभूतेन नैतदवसानुं शक्यते तदेव प्राप्तमीदं चापार्थिकां सम्यग्वापादिवोया वय मत्तजेदो जिगानाग्न्यु मत् मेकमेया वि  
 सद्गुण्य रागादिविरहितत्वात् आह- पशुवक्यपरपुण्य परायणार्थजिक्वाव्यवरा । जियरागदोसमोहा यषयद्वाच्चादोतेत्यति ॥ १ ॥  
 तथा भङ्गाद्यादिषयोभजङ्गा साहच ब्रव्यतो नार्थे का हिंसा न जायत इत्यादि षतुर्जैगुक्ता, नच सत्र प्रथमोपि जङ्गे युज्यते यतः क्वित द्रव्यतो  
 हिंसा र्थमसमित्या गच्छतः पिपीत्तिकादिख्यापादनं नचय हिंसा' तत्साहचयोया तथाहि - भोउपमत्तोपुरिसो तस्सवज्जोगपशुवक्येवता । वाव  
 ज्ञातीनियमा तेविबोदिच्छठोहति ॥ १ ॥ सत्तावेय मतः भङ्गा नवेय युक्ता सत्तद्गापोक्खिसासल्लस्य द्रव्यजावहिसामयत्वा द्रव्यहिसायासु मर  
 नानात्रया रुढत्वादिति तथा नया द्रव्यादिरकावय सात्र पविनाम द्रव्यास्तिकमतेन मित्य वस्तु पर्यायास्तिक मत्तंन कथ तदेवा नित्य विरुद्धत्वा

नगतरिह णयतरिह

भद्रवमात्रमव ह्यवकहे शान्ददर्शनना उपपन्ना सुता २ हे सौ समीचेविये, इहां प्रकाशपणें तेव्हा प्रसुत्तर कर्तोविये, जेमत प्रागमने प्रसुत्तर इवे ते दोक सत्यहै बीजा क्हांवयाप्यवै, एने पाचार्थांना समवायपादिदाव मतभेदहै तथा त्रीनोत्तरायनो मत एकहै, तिहां विवरदायादि नवी तयाचो ता - प्रसुत्तरमपरासम्यह परावर्तनाद्विबासुगण्यवरा । कितरामदासभोदा वचसहावाचनतिबति ॥ २ ॥ तथा भगतेरेहिइति । बेभगी वचमगी तेह नो विवाटा, तिहां द्रव्यको एकहिंसापवि भावककी नही इत्यादि वचमगी कर्तो तिहां पविस्त्रोभागा ओवोवै ते किम इवोमुनिविसो साधुवाच तावकां पियोविवायादि विवसे ते हिंसा अवकको हिंसासवय पसागककी द्रव्यभावगी ए सवय तथादि—वाचयमत्तापुरिहा तफ्ठळा गयदुववेमत्ता वाक्पित्तोनिममा तेहिंसाद्विसाहति ॥ १ ॥ तिहां यका छापवै तिहां उत्तर एगाथाभाहे हिंसासवयहै, ते द्रव्यभाव समवसवयपरा नवहै, एने किही निरवसरपवै चोवने इवे ते हिंसाकहीये, द्रव्यहिंसाता मरणाभापयवै क्हांहै ॥ १ ॥ तथा यययेरेहिइति । तयनो विचार, तिहां



वितिगद्गु इयन्ता युक्ता द्रव्यापेक्षयैव तस्य नित्यत्वा त्पयोपापेक्षया जानित्यत्वात् दृश्यते चापेक्षयै कत्रै क्त्वा विरुद्धानामपि पक्षोक्त्यां समा  
वेक्ष्यो यथा - अमन्तापेक्षया ययत्र पुत्रः सत्य पुत्रा पेक्षया पितेति तथा भिर्यमो इमिषश्च सत्र ययिनाम सर्वविरतिसामायिकं तथा किमन्येन  
पीठयादिनियमेन सामायिकेनैव सर्वगुणावाप्त इव दासाविति गद्गु इयन्तायुक्ता यत सत्यपि सामायिकी युक्तः पीठप्याविनियमो प्रमादवृद्धि  
रेतुस्यादिति आह्वय - धामादयदिगुमायञ्च सायद्वेष्टमुक्तावर्यं । अपमायवुक्तिरवग तवेक्षयाबाहुविक्रयति ॥ १ ॥ तथा प्रमायं प्रत्यक्षादि  
तत्रा ममममाद्य मादित्यो नूनं कपरि योजनयते रष्टाभिः सप्तरति बहुः प्रत्यक्षश्च तस्सजुवो निर्गच्छतो यावकमिति किमत्र सत्यमिति सन्देहः ।

णियमतरोह पमाणतरोह , सकिया कसिया धितिगिच्छिया न्नेदसमा ।

वय्या कलुससमावय्या , एवस्त्रुसमथानिमापाकस्वामीहणिज्जकम्मवेदति

इथास्तिकनयमैवरी नित्यवस्तुनै पदोक्तिकनमैवरी किमवयवनिज्जकै इम विरुद्धको इहा गंवा अपलै तेवनी उत्तर ए सुगतयै, इवमो अपे  
चायै नित्यकै पयोक्तनीपपेचायै धनित्यकै हीनैवै पपेचायैवरी एकठा एकदा विरुद्धनैवो समायेय, किम पितानीपपेचायै पुत्र तेहीव पुत्रनी अपे  
चायै पिता इति ॥ ११ ॥ तथा नियमतरोहइति । निजम धमिषवविशेष ते किम वा सत्रविरतिसामायिककै ते पोरिखीपादि बोक्षापबन्धावनी कि  
मो विगियकै, इहा यका तेवनी उत्तर पोरिखीपादि पबन्धावविशेष तपप्रमादटाकवामवी सुतकै, आह्वय - धामादयचाविदिह सायव्यवागद्वेष्ट  
मुक्तावर्यं । अपमायवुक्तिरवग तवेक्षयाबाहुविक्रयति ॥ १२ ॥ तथा पमाणतरोहइति । प्रमाद्य प्रलयादिह, तिहा प्रलयाधनुमाने पौतरी तेकिम  
त्रिम धाममममापे मूमिबी खपरि खको पाठवेवाजन धुर्यवाकै, धने ते वस्तुपय्यकै मूमिबी नोक्तावतो दोषवे इहा सदेवखपलै तेवनी उत्तर दूरव  
को मय्यवत्राचोयेनही, तिहा इदिसमै ॥ १३ ॥ संख्या । निजपचीतपदार्थनैविये यत्काखपलै ॥ १ ॥ संख्या । मिथ्यादयनगुणवानी पाका ॥ २ ॥ वि  
तिमिच्छिना । धमैवा पवनी सदेव अपलै ॥ ३ ॥ मेवसमावय्या । ए निजग्रासनै यववा पूको निजग्रासनकै तेमापे धू साचोदवनी सतिमैभिर खपलै

अथ समाधि, अदिसुख्यम्प्रत्यकमिदं दूरतरदेशतो विज्जमादिति ॥ प्रथमद्वारे सुतीयोद्वेसकाः ॥ ३ ॥ अतन्तरोद्देशे कर्मस्य उदीरयवे  
दनायुक्तमिति, तस्यैवेदादी स्वययितुं तथा द्वारगाथाया ॥ पण्डित ॥ यदुक्तं तथा त्रिधातु माह ॥ कश्चिन्मित्यादि व्यक्तं सवर ॥ कम्मपगली  
एति ॥ प्रगापनायां त्रयोविधकृतितमस्य कर्मप्रकृत्यप्रिधानस्य पदस्य प्रथम उद्वेसको नेतव्य एतद्वाच्याना चार्यामां सुद्धुद्गाथा स्तीत्यत आह ॥  
माहा ॥ आचयेयं ॥ कश्चिदित्यादि ॥ तत्र ॥ कश्चिपगलीति ॥ द्वार तस्यैव-कश्चिद्व प्रते । कम्मपगलीति पण्डित ॥ गीयमा । अतः तः भाषावरचिज्जममित्यादि

सेणूणजते ! तमेवसच्चनीसकजजिणेहिंपयेइय , हुता गीयमा ! तमेवसच्चनीसक, एव जायपुरिसक्कारपरक्कामे  
इथा, सेवजते ! जते ! त्ति ॥ पठमसए तइत्त उद्वेसत्तं सम्मत्तो ॥ ३ ॥ कतिप्य जते ! कम्मपग  
लीत्तंपखत्तात्त ? गीयमा ! अत्तकम्मपगलीत्त पण्डित ! कम्मपयलीए पठमोउद्वेसोनेयव्वी , जावस्युणुजा

कठमसमावणा । मतिनेविदे भस जपवे ए सर्वभागवो रहवो मतिविपरीस पामे । एवंउससमवाचिषणा । इमं निवे न्नु वमवतपसो निर्पेव माग्ना  
भतरपवरहित । संक्कामोचिज्जमव्वेदेति । मिक्काल्लोइनीयकम वेदे । सेव्वभतेतमेवसत्त । ते निवे वेमगवन् । तेहीच साचो । सोसत्त । यंकारहित ।  
अजिचिचि । केव्वी मगवते । पवेदित । प्रकम्पे इतिप्रत्त । हुता गोयमा । इगीतम । ए सर्वोवमवचन । तमेवसत्त । तेहीच साचो सत्तवे । सोसत्त । यवा  
रहित । एवंजावपुरिसक्कारपरक्कमेतिवा । इमं जावत् पुबयाव्वार पराकमसर्गे । सेव्वभिभवेति । गोमगवते कच्छो ते तिमज्ज सर्व सत्तवे यचि चम्पवा न  
हीवे । पठमसवसत्तइपोसरेयो । ए पच्छिक्कायत्तकनां तोजाउद्वेयानो टब्बो सिख्खो ॥ १ ॥ पाच्छिक्काउद्वेयानेविदे कम्मो उदीरवा  
वेत्तना कव्वी, चिवे तेइत्ताव सेव्व देसाउद्वे, तथा सपइचिगासानेविदे कच्छो । पण्डित । तेदेसाउद्वे, गीतमपुद्वेदे । कश्चिमतव्वमपयलीपोपणत्तापो । जेतथो  
वेमगवन् । कर्मे प्रव्वति कव्वी इतिप्रत्त, गोयमा । वेगीतम । अट्टकथापयलीपोप । आठ मूळ कर्मप्रकृति कव्वी, धमे पववा चमततोद्वेकरे । कम्मपगली  
एपठमोउद्वेयसेयव्वो । पववचना केव्वीसमी पद कम्मप्रकृति तेइत्तो पच्छिखो उद्वेयो जावयो । जावपसुभागोसक्कतो । यावत् भनुमागसमे कव्वो, ए

विद्यं पश्यति ॥ द्वार मिदं चैव-कश्चं प्रते ! अदि अठकम्पगणीउं यं पद् गोयमा ? नाकायरविज्जस्स कम्मस्स उदण्ड दसकायरविज्ज कम्मं नि गण्ण ॥ विस्मिदोदयायत्वं जीव सा दासादयतीत्यर्थः । इरिसकावरविज्जस्स कम्मस्स उदण्ड दसणमोहविज्ज कम्म निगण्ण ॥ विपाफाऽवस्य करोतीत्यर्थः ॥ दंसकमोहविज्जस्स कम्मस्स उदण्डं मिच्छत विगण्ण इमिच्छतेऽव उदिकण्ड ग्यं सलु जीव अठकम्पगणीउं यं पद् ॥ इत्यादि मन्वेव मिहेतरेतराश्रयदोषः कम्मबन्धप्रदाइस्या भावित्वादिति ॥ कश्चिं व ठावेइति ॥ द्वार तसैव-जीवण प्रते ! नाकायरविज्ज कम्मं कश्चिं ठावेइं यं पद् ? गोयमा ! दोहिं ठावेइं तज्जा रायेवय दोसबो त्पादि ॥ कश्चयइवसि ॥ द्वार मिदं चैव-जीवचं प्रते ! कद् कम्मपगणीउं येयद् ? गोय मा ! अत्येवइय वेयद् अत्येवइय बोवइय से यइय से अठ इत्यादि ॥ जीवेव प्रत ! नाकावरविज्ज कम्मयेयद् ? गोयमा ! अत्येवइय ठेयद् अत्ये नइय नोवेयद् ॥ केवसिनी अवेदनात् ॥ नेरइयचं प्रते ! नाकावरविज्ज कम्मं यइय ? नायमा ! नियमा वेयद् इत्यादि ॥ अयुज्जागो कश्चियिहो कस्सन्ति ॥ कस्स कम्मं कः कतिविचो रसइति द्वार इदं चैव-नाकावरविज्जस्स च प्रते ! कम्मस्स कश्चिं अयुज्जागे पकसे ? गोयमा ! दसयिं ॥ जीवेवमित्यादि ॥ मोहविज्जेइति ॥ मिच्छात्वमोहनीयेन ॥ उदितेन ॥ अवसाएज्जति ॥ उपतिष्ठेत् उपस्थान स्मरसोकक्रिया स्य

गोसम्मसो ॥ गाहा ॥ कतिपगणीकहिधधद् कतिहिठाणे हिधधएपगढी । कद्देवेदइचपगणी अणुज्जागो कति विहो कस्स ॥ ५ ॥ जीवेण ज्जेते ! मोहयिज्जेणं करुण कम्मणे उदिकेण उयथाएज्जा ? इतागोयमा ! उयथाएज्जा ।

पयमो संगइयाबाइं तेवइहे-गाहा । कतिपगणीकहिधधइइति । केतसो कम्मपकतिना केतसा भेद १ पकति केम बाधे, ए बीजो द्वार २ कतिविं डावेइवधएपमसो । जीव केतसे स्मामे बाधे कम्मपकति ३ कतिवेदेइएपयडो । कोवे केतसो पकति येदीये ४ अणुभावाकतिविहो कस्य ५ १ ॥ पनमान कइतां रस ते केतसाप्रकारो विसाकर्मना दिवे कम्मपिताय विचारमवो माहनीयथायो कचेइ । कोवेअतेमाइविज्जेवअडेव । जीव ने

[illegible]

मेनते गोयमा ! किं वीरियत्ताए उयठाएज्जा उयठाएज्जा ! वीरियत्ताए उयठाएज्जा, नोच्चयीरियत्ताए उयठाएज्जा, जइ वीरियत्ताए उयठाएज्जा, किंवाळवीरियत्ताए उयठाएज्जा, पफित्ताए उयठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उयठाएज्जा

भगवन् । मित्यात्मनाहनाय साधो । खद्योतचरणेन । कमलै उदयेकरो । परमात्मनो होव । इता मोयमा । हा  
गोतम । उग्रहाएव्वा । परमात्मनो । यमोकारकरै ररे । नेमतेकिचोरित्तताएवगुणएव्वा । ते हेभगवन् । भूँ वोयसहित यमोकारकरै ररे, पचमा ।  
दोदित्तताएवगुणएव्वा । यमोकारकरै ररे । नेमतेकिचोरित्तताएवगुणएव्वा । ते हेभगवन् । भूँ वोयसहित यमोकारकरै ररे, पचमा ।  
दोदित्तताएवगुणएव्वा । यमोकारकरै ररे । नेमतेकिचोरित्तताएवगुणएव्वा । ते हेभगवन् । भूँ वोयसहित यमोकारकरै ररे, पचमा ।

इ ० सोयमाइत्यादि । उपस्थानविषयो ऽप्यत्र न सतः सदाप्रित्याह ॥ नीवेकमित्यादि ॥ अथक्रामे दपसर्व्यत् उत्तमगुणस्थानका  
 नुनितरं गच्छेदित्यर्थः ॥ दासवीरियत्ताएयवक्कमेज्जति ॥ मिप्पाल्लमोहोइये सुय्यत्तात्सयमा हेइससंयमाद्वा ? ऽप्यक्रामे मिप्पावृष्टिं प्रवेदिति ॥  
 बोपक्रियवीरियत्ताए यवक्कमेज्जति ॥ नचि पच्छित्तत्वा एप्रपासतरं नुत्तयान्न मस्ति यतः पच्छित्तवीर्यत्ता पसर्व्यत् ॥ सियवात्सपरिहयवीरियत्ता

वीरियत्ताएउवठाएज्जा , दालपक्रियवीरियत्ताएउवठाएज्जा ? गोयमा ! दालवीरियत्ताएउवठाएज्जा गोप  
 क्रियवीरियत्ताएउवठाएज्जा नोदालपक्रियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । जीवेणज्जेते ! मोहणिज्जेण कक्केण कक्के  
 ण उदिन्नेण सुवक्कमेज्जा ? हुता सुवक्कमेज्जा । सेज्जेते ! जाव दालपक्रियवीरियत्ताए सुवक्कमेज्जा ? गोय  
 मा ! दालवीरियत्ताएसुवक्कमेज्जा नोपक्रियवीरियत्ताएसुवक्कमेज्जा सियदालपक्रियवीरियत्ताए सुवक्कमेज्जा

देयविरतयावव तेदे संगोकारकरे इतिप्रश्नः । मोक्षमा दालवीरियत्ताएउवठाएज्जा । हेमोतम । मिप्पाल्लमा उदयवो मिप्पावृष्टिपदाबोध चोक्ते वाह  
 मोक्षकरीव संगोकारकरवू ङीव चित्तिरवैवे पचि । बोपच्छिववीरियत्ताएउवठाएज्जा । सर्वविरति साह परलोकाक्रिया करे नहि, इमपचि स्थिति चाव  
 वी । नावाववद्वियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । वाहपच्छिठ बोयपेव पचि एतवे देयविरतोपचि परलोकाक्रिया संगोकारकरे पचि चित्तिनरवे, उपस्साम र  
 इवा तेवना देपव अपन्नमव पाच्छोउसरवी तेववेवे । नीवेचमंतिमोहविषयवैवेचंनवेवेउदिवेचंनवेवेज्जा । ओव हेमगवन् । मोहनीय यद्वावीसभेदे  
 वनवीवेवते ते कम्मने उदयववसे अतिक्रमे उत्तमगुणवठापाववो अतिहि ङीव गुणवठावे जाय इतिप्रश्न उत्तर । इतागोपमा यवक्कमेज्जा । विधीतम अति  
 क्रमे जाव उत्तमगुणवठापावी होननुवठावे जाय, ववी मोतम पूववे । सेमंतिजाववावपच्छिववीरियत्ताएयवक्कमेज्जा । ते हेमगवन् । वावतयवेद बोयपवे  
 अतिक्रमे, यवना पच्छिववीर्यपवे अतिक्रमे, वाहपच्छिववीर्यपवे यवना अतिक्रमेगुणवठापावी हीनतरगुणवठावेजाव इतिप्रश्नः । मोयमा । हेमोतम । वाह  
 वीरियत्ताएयवक्कमेज्जा । मिप्पाल्लमाइहोयने उदयववे अथवा उदयवो यववा उदयवो यववा देयविरतिववो अतिक्रमे मिप्पावृष्टोइवे ते वाहवीर्यपवेइवे प

च यग्यमेवमिति ॥ स्या रक्तदात्रि द्यौरिवाहनीयोद्भवेन संपन्ना वृषणस्य बालपङ्क्तिवीर्यस्य देशविरतो ज्येष्ठिर्नि, वाचनान्तरेत्वेव ॥ बालयीरिय  
 नाय नापङ्क्तिवीरिरिपताय नाग्रासपङ्क्तिवीरिरियतायमिति ॥ तत्र च विध्यात्त्वसोद्देश्य बालयीर्यस्यैव प्रायावितरयीयद्वयमिमेपयति, उदीरविपक्षत्वा  
 दुपगान्नाभ्ये त्सुपगान्नामूदयं तपेव, सबरं ॥ उवहापत्रपङ्क्तिवीरिरियतायमिति ॥ उदीर्यास्तापज्येष्ठया उपस्थानासायकयोरयं विज्ञेयः, प्रथमास्तापजे  
 मयदाभोहनीयेनो पञ्चास्तेभवता उपमिष्टेन विद्यासु पविष्ठतवीर्यैवउपदानामोऽवस्थायां पञ्चिप्रतयीयस्यैव जायावितरपोषाभायात्, पूर्वेषु कान्चि  
 द्वाचना याग्रियदं ध्यात्वात् मोहनीयेनो पञ्चास्तेन विध्यादृष्टि जायते, सायुः प्रावकोवा जवतीति, द्वितीयास्तापकेतु ॥ अवक्रमेकावासापङ्क्ति  
 वीरिरिपतायमिति ॥ मोहनीयेन द्युपग्राह्येन सयतत्वा बालपङ्क्तिवीर्येण पञ्चम भ्येग्रवयतो जवति, ऐक्यत सास्य मोद्देश्यतामसुद्धायात्, मनुमिष्या

जहा उदिन्तेण दोष्प्राधायगा तद्वा उपसतेणचि दोष्प्राधायगा जाणियस्सा, नगर उवठाएज्जा, पङ्क्तिवीरि  
 यत्ताएश्वयक्कुमेज्जा बालपङ्क्तिवीरियत्ताएश्वयक्कुमेज्जा । सेज्जे ! किश्यायाएश्वयक्कुमेज्जा

नि । चत्वंदिग्रशोरिरिपताएवमज्जा । जहो पङ्क्तिवीर्यवद पतिक्कमे, पङ्क्तिपञ्चावी पतिप्रधान दुवस्थानज्जे, तेसादि पङ्क्तिवीर्यपदे पतिक्कमे नहो ।  
 निवशान्वेष्ठियशोरियत्ताएवमज्जा । जहाविण्वाचिमाहनीयेने उदयेकरो सवमयो मटवद बाहवपङ्क्तिवीर्यपणेकरो दमरितोद्भवे, वाचनान्तरे इम  
 के बाहवोरियतापवापङ्क्तिवतामशोरियताएव जागमवट्टिनोरियताएति, तिक्का निव्यात्त्वमाहनीयेनेउदये बाहववीर्यग्रीवज्ञेय, बीजा दोवशौयभोजिदिधवे  
 मदीय विवपञ्चो उपमात, उपमातमूद देवे । जहा उदि तत्र उपासाउगातहाउवसतत्वावितापालाधगा भावियत्ता एवद उपधाएज्जा । किम उदये वेदासा  
 गात्रा निम उवमातनेमिप यदि वेपान्नाया जइया । एवद उगु एज्जा । पङ्क्तिवीरियताएवमज्जा । उ । एव बाल्याशनी अपेसाये उपमातना के  
 पालानात्रमिपे वगनाचिमेमवे पङ्क्तिवापाकाशानेति मवदामाहनीय उपमातवयारइ विधानेनिपे पङ्क्तिवीर्येकरो तेसादि उपमातमाह भवस्थानेविमे  
 पङ्क्तिवीर्येनात्र भावजे, वेदापभाएजे, बीजापाकाशानेति । बाहवपङ्क्तिवीरियताएवमज्जा । मोहनीयउपग्रम्या उवतपत्तादौ बाहवपङ्क्तिवीर्ये करो

दृष्टिर्मात्रोपपन्नं तस्य प्राया न्योरोपपन्नस्य चेद्वा चिह्नतत्त्वाविति, यथा पक्कामतीति यदुक्तं तत्र सामान्यं प्रपञ्चयन्नाह ॥ से ज्ञते । किमित्यादि ॥ मति ॥ समीचीनः अपार्थक्यं नैशब्दः ॥ आयायति ॥ आत्मना ॥ आयायायति ॥ आत्मना परतद्व्यर्थः अपक्कामति अपसर्प्यति पूर्वव्यक्तितत्त्वविज्ञूत्वा पदार्थमिष्यद्वि मिथ्याकृष्ट्या प्रवर्तति कोसावित्याह, मोक्षनीयं क्लृप्तं मिथ्यात्वमोक्षनीयं चारित्र्यमोक्षनीयं वा वेदयन् इदोक्तमोक्षइत्यर्थः ॥ वेदकर्मपदंतेति ॥ अथ कथं वेदं प्रकाशय एतदपक्कमम् ॥ एवति ॥ मोक्षनीयवेदयमानस्येति ? इहोत्तर ॥ गोयमेत्यपि पूर्व मपक्कमत्वा त्मात्मना वपक्कमपञ्चारी ज्ञीय एतज्जीवादि अर्थित्वादित्या वस्तु एव यथाजिने कृष्ण रोचते क्लृप्ते करोतिवा इदानीं मोक्षनीयार्थपञ्चाने मत्रीय एतज्जीवादि अर्थित्वादित्याः एव यथा जिने कृष्ण मोरोचते मक्लृप्ते मकरोतिवा । एवं क्लृप्ते कृष्णमकारेण एतदपक्कमम् एव

गोयमा ! श्यायाएथ्यथक्कमड् गोश्याणायाएथ्यथक्कमड्, मोहणिज्जा कम्म वेदमाणे । से कहमेय ज्ञते ! एव ? गोयमा ! पुच्छिसे एयएथरोयड् इयाणिसे एय एवनोरोयड् एयस्सलु एय । एव से णूण ज्ञते ! नेरड्ठयइसवा ति

पनिजमता ऐमदित्तोपे ऐमको तेइने माज्जोयक्कम उपयमना मज्जावक्को, पवि मिथ्यात्वी नपुवे, मोक्षने उद्वेख मिथ्यात्व भावमत्रै चनेइहो माहवइता मिथ्यात्वे तेइना उपयमनात्र पविचारवे । द्विवे अपक्कामतिइमा जे क्लृप्ते ते सामान्ये पूछेवे । सेमतेहिंसावापपक्कमम् । ते जीव ऐम पयन् ! एवंजायेइतो पयक्कुमे ? चीनर इहा नवाय पक्कवा । अथावाएपक्कमम् । पराये आत्मावे अपक्कुमे जीमवाय इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । ऐमी तम । आत्मायेइतो पयक्कुमे जीमवाय, पश्चिमा पश्चित्तविवर्तने पक्के मित्रवधि पक्कवा मिथ्यात्वकृष्टिवाह । अपवायाएपक्कमम् । पवि अर्थे पराये आत्माये इतो पक्कम जीमवाय, तेइव । माहविज्जेवंअपवेडेयावे । मिथ्यात्वमोक्षनीयं पक्कवा चारित्र्यमोक्षनीयं कर्म वेदतोवक्को उद्वेखपञ्चो मोक्ष इत्यर्थः । सेवइने र्वमतेरवं । तेहिम एव ऐमगज्ज । माहनीयता वेदवक्कारे ऐम काहि जे पूवे पश्चित्तपञ्चानो वविवर्ततो चने पक्के मिथ्यात्वमो वविवक्को इतिप्रश्न, गोय मा । ऐमीतम । पुच्छिसेएवंएवरायड् । अपक्कमवक्को पश्चिमापपक्कमवक्को जीव एज्जोवादिपदाह पक्कवा अर्थित्वादित्तु विम जिनेम एवमपक्कमम्

मोक्षनीयेनेहस्यर्था, मोक्षनीयकर्मोपिकारा एवाध्यात्म्यशुद्धिविनायकाः ॥ सेषूक्तमित्यादि ॥ नैरइयस्सवेत्यादी ॥ नास्तिमोक्ष इत्येवसम्बन्धा स्पष्टो  
 त्रेकगति ॥ तैरव यद्वद ॥ पार्येकगति ॥ पाप मशून यरगत्यादि स्वमेववा ; पार्यं दुष्टं, मोक्षयापातहेतुत्वात् ॥ तस्सति ॥ तस्सा त्पार्थव- सकाया  
 ॥ ५ चनेइयति ॥ तत्तद्वर्गानुग्रह ॥ एवं यलुति ॥ यस्यमायप्रकारेण एतन् वीक्यालङ्कारे ॥ मयति ॥ मया अनेमव वस्तुप्रतिपादने सयस्यत्वे  
 ना त्वमाः श्रान्तंय्य प्रतिपादयति ॥ पयसकम्पयति ॥ प्रदत्ताः कम्पयुद्गमा बीधप्रवेक्षे द्योतयिता सादृष दुर्लभं प्रदेयकर्म ॥ अमुनागकम्मेयति ॥ अ

रिरकजोगियस्सया मणुसस्सया देयस्सया जे करुपावे कम्मे णत्थि तस्स अवेइयत्ता मोस्को ? हुता गीय  
 मा ! नैरइयस्सया तिरिक्कमणुस्सदेयस्सया जाय मोस्को । सेकेण्ठेणजते ! एययुस्सइ नेरइयस्सवा जाय  
 मोस्को , एयरालुमए ? गीयमा । दुयिहे कम्मे पणत्ते तजहा पएसकम्मेय अणुजागकम्मेय , तत्थणजतं प

नवावरे । इवाचिवेयएवचारायइ । इवानो दिवे माहभोयमा उदववाकनेविदे एजीय एवीवादिएवार्थं पयवा पडिंसादिअणु इत्ययोतोर्वकरे कण्ठे  
 नइपे । एवंयदुग्रयएवं । इमनिचे उक्तप्रकारे पयकमव मोक्षनीय वेद्वे इत्यव, माहभोयकमर्मा पधिकारयको सामान्यजन चितवतो कइहे—सेषवर्भते  
 परइयस्यशतित्तिअत्रोविदपयवामपुण्यमवादेवअवा । पने निचे वेभगवन् । नेरइयस्यवा इत्यादि अतिमोक्षो, इव सर्वथयोपट्टिविभिद्धि, नारकीनेति  
 वेवशानिबने मनुष्यने देवने । त्रेइवेपावकवेवजित्तण । तिचे जेवाध्यापयअम पाप पणुमनरजगत्तादि सयसोही पाप वुइहे, मोच व्यापातइतु  
 गही नही तेइकमने । पदेइयभाएमीसा इतागायमा नेरइयस्यवातिस्मिणुदेवमवावायसीको । भोगव्याविना वूट्टिवीगही इतिप्रय, इगीत  
 म नारकीने तिवेवअ मनुष्यने देवने त्रेपापकमकोधा ते भागव्याविना । अत्थि । नही माच, एतावता कोधाअम भोगव्याविना वूट्टिवीगही । सेवेवइए  
 भतेववववएइएयमवाजावभापो । तिवेवअ वेभगवन् ! इम कर्म नारकीने यावमदेवताने कोधा कर्म भोगव्याविना मोचनही वूट्टिवीगही । एवं एव  
 मए, मायमादुनिवेववेववतेतजहा । इम पणु यएवमाचकारे मे इगीतम । वेप्रचारै कमजगता तेइइहे । पएसकम्मेयपणुभागकम्मेय । कमपइम तिवे जे



मुनाग सोपामेव कमप्रदेशानां सवद्यमानताविषयो रस साद्रूपं कर्मां नुजागकर्म्मं तत्र यत्प्रदेशकर्म्मं तन्निष्पन्ना द्वेदयति विपाकस्या ननुजनने  
 पि कम्मप्रदेशानां भवश्यं उपधा त्प्रदेशेभ्यः प्रदेशावित्याह आतातयतीत्यर्थो ऽनुजागकर्म्मं तथाजाव वेदयतिवा नवा तथा मिथ्यास्व तरुदयो  
 पयमकारो ऽनुजागकर्म्मतया न वेदयति प्रदेशकम्मतयातु वेदयत्येवति इह हि विविचयि कर्म्मणि वेदयितव्ये प्रकारद्वय मस्ति तथा इतिव ज्ञाय  
 तदति दृष्टयथाह ज्ञातं सामान्येना वक्त मेत इत्यप्याह वेदनाप्रकारद्वयं ज्ञाता किनेन ॥ सुयति ॥ स्मृत स्मृतिपादित अनुविधिततया तत्र  
 स्मृतमिव स्मृत केवसित्वेन स्मरकानावेपि विनस्यात्यन्तमव्यभिचारसाधर्म्यादिति ॥ विवक्षयति ॥ विविचप्रकारे देशकालादिविनागरूपे ज्ञातं वि  
 ज्ञातं तदेवाह ॥ इमं कम्म स्यंभीवेति ॥ सनेन ह्येतेरपि प्रत्यक्षतायाह कवसित्वा दईत ॥ अज्ञोवगमियाएति ॥ प्राकृतत्वात् अश्रुपगमाः प्र

एसकम तनियमा वेदेह , तत्पण जत्त स्युजागकम तस्युत्थेगइयवेदेह , स्युत्थेगइयनोवेदेह , णायमेयस्युरह  
 या सुयमेयस्युरहया विखायमेयस्युरहया इमकम स्युजीवे स्युप्पोधगमियाए वेयणाए वेयहस्सइ , इमकम स्यु

वप्रदयनेविपै प्राया तेरूप कम ते प्रदेशकम कइवे तेहीव कमप्रदेशानां सवेद्यमानताविषयरस तेरूप जे कम ते अनुभासकम् । तद्वर्त्ततपपसव  
 कतविबभावहेह । तिहो पूर्वोक्त वेपथमाहे जते प्रदेशकम ते नियमं विखायमकोवाहे तिसावेदे । तत्त्ववक्तपपुभागकवत्तं । तिहो पूर्वोक्त वेपथ  
 नाहे जते अनुभागकमहे , ते कमप्रतै । सत्थेगइयवेदेह । वेतमाएव तत्कारुप वेदे । सत्थेगइयवेदेह । वेतमाएव तत्कारुप नवेदे जिस मिथ्यात्व  
 यापममकाने अनुभासकम नवेदे , प्रदेशकमवेदे , प्रकार कमवेदनाना अतिवृत्तावे । सायमेयपरइया । आख्यापरइते । सगमेयपरइया । उपदेश  
 परइते पबवा अनुचितन कोवा । विखायवेदेपरइया । पमकप्रकारे देय जेव कात्त प्रत्यादिविभागकरो विषयेज्जिण्णो यो अरइति ते ज्जंते अवेहे—इम  
 पबंजीवे । एवम ए जीव कम पने जीव सान् वेपथोने प्रत्यक्षहे । सधीयममियाएवेदवाणवेदइयुरह । अश्रुपगम पप्रत्यावाकवो मोहो मइयवर्चं मू  
 मिमयन वेदवाचनादिजनो समोकार , तिचे निर्णेत ते सस्यु रगमको तिचेकतो वेदना वेदक पबवा । इमेवर्त्तं पयमोवेदकमिवा इवेदवाएवेदकरकार

ब्रह्माप्रतिपत्तितो ब्रह्मण्यप्रभूभिर्ज्ञायमानोऽस्तु ब्रह्मादीना मन्त्रीकारेण निवृत्ता आन्युपगमिकी तथा ॥ वेद्यद्वयस्त्विति ॥ नविव्यक्तत्वात्तिर्विश्वं नविव्यक्त्य  
 दार्थी विमिश्रितानयतामेव ज्ञेयो ऽतीतो यत्तन्मनस्य पुनरनुभवद्वारेण व्यस्यापि ज्ञेयः सम्भवतीति ज्ञापनाय ॥ उपक्रमियाएति ॥ उपक्रम्यते ऽनेने  
 त्पुष्पकः कमवेदनोपायः सत्रजनवा श्रीपक्षमिकी स्वयं मुदीर्क्षस्य उदीरकाकरखेनको ; इयं सुपनीतस्य कर्मणो भुजस्य सत्या श्रीपक्षमिक्या वदनया  
 घेदयिष्यति तथाच ॥ अष्टाकर्ममिति ॥ यथाकम्म यदुक्तमोमतिरुमेव ॥ अष्टानिगच्छति ॥ निरुपपन्ना देशकालादीनां करुणाणां विप  
 रिक्कायैरुत्तमा मनतिरुमेव ; यथा यथा तत्कर्म मणवतावृष्टं तथा तथा विपरिचस्यति इतिद्वयं वाक्यायसमाप्तमिति अमन्तरं कुर्मं विनिति  
 तं तत्र पुनस्तस्मात् निति परमास्वादपुद्गलां यित्तयकाच अथवा परिक्कामाधिकारात् पुनस्तत्परिक्काममाह ॥ एसकन्नतेइत्यादि ॥ योगक्षेपेति ॥  
 परमावु सत्रस्य रक्त्यग्रहकात् ॥ तीतति ॥ अतीतं इत्येव सर्वव्यावकासा इत्यनेना चार्देद्वितीया ततस्य सर्वस्मि कतीत इत्यर्थः ॥ अर्चतति ॥ अथ

यजीये उद्यक्तामियाएवेयणाएवेयद्वस्सइ ; अष्टाकम्म अष्टाणिगरणं जहाजहा तन्नगवयादिठं तहातहा तथिप  
 रिणमिस्सत्तीति , सेतेणठेण गीयमा ! नेरइयस्सवा जावमोस्सो । एसणज्जते ! पोम्मले तीतमणत्तं सांसयं सम्म

एजीय एज्जम सवमेव कम उदयपाव्या वेदुल्लं, उपपन्नम कहीये कमवेदनापाय तिर्हाकुवे ते श्रीपक्षमिकी, पाते उदयपाव्या अथवा उदीरकाकरखेनको  
 उदयपाव्याकामना भागवता ते वेदना वेदुल्लं । अष्टाकम्ममार्गाभगरव । जिनं कर्म वाध्यावे विमं, जिनं कर्मणा वेयकासादि अथवा नवाय विपरिचदेय  
 कामने परिचाने भावपद्धारवै । अष्टाकम्म कर्त्तव्यमवकादिइ । विमं विमं तेकममत्तं भयवत्तं दौठावे । तहातहा तथिपरिचमिच्छतीति । तिमं तिमं  
 विरोपपवे परिचमवे, हायव्या वाक्कावसमाने । सेतेरुवे गोवमा खेरइयव्यावावमाक्का । ते तेने पवे जेगीतम । नारकोने यावत् वेवताने बोधा क  
 मविममोगखो माचमही छुटिपोनही इत्येव, अमन्तरं कमचित्त्वं ते कम पुद्गलरूपवै तेमाटे परमावु धादि पुद्गल चिंतयतोक्तेरुवे—अथवा परिक्काम  
 पधिकाररुको पुद्गल परिक्काम कहेवे—एसकन्नतेपोमसेतीतममन्तरसांसयसमय । एव हेमयवन् । सवपुद्गल अतोवकासनेविये अपरिमाव अर्चतपपाव

तदेवैशकर्म तद्विषया हेदयति , विपाकस्या मनुजवने  
मेष तथाप्राय वेदयतिवा नवा ; तथा विप्यास्व तद्वयो  
अपि कर्मणि वेदयितव्ये प्रकारद्वय मस्ति तच्चा ईतैय द्याय  
प्रता विनेन ॥ सुयति ॥ सुत अस्तिपादित मनुविन्निताया ; तत्र  
यादिति ॥ विष्ठापति ॥ विविधप्रकारे दैयकासादिविज्ञानरूपे द्वांत वि  
नाह वेवसित्वा दईतः ॥ अन्नोवगमिपाएति ॥ प्राकृतत्वात् अज्युपगमः प्र

गर्गकम तस्यत्येगइयवेदंइ, स्यत्येगइयनोवेदेइ, णायमेयस्यरह  
नकम स्ययजीवे स्यस्रोवगंभियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमकम स्य

तीव्र कामप्रदेयानां सर्वेषामानताविवक्षदस ते रूप णे क्षम ते चतुर्भागवत् । तत्त्वव्यवतपपरसुख  
 प्रदेयवत्तम ते निवयन् विसाकमकोषाहे तिसावेदे । तत्त्वव्यवतपपुभागवत्तम । तिहा पूर्वोक्त वेपथ  
 मरववेदे । केतमाएक तवाकप वेदे । यत्नेनहत्वयावेदे । केतमाएक तवाकप नवेदे विन निव्यात्वज  
 तन्ममवेदे, प्रकार कामवेदेयानां परिपुतवावे । सायमेवपररका । जाकापटिहते । समेयपररका । उपदेया  
 विवाकमेवपररका । यनकपकारे देय केन काक प्रकाविद्विभागकरो विप्रधेवांस्त्री यो चररते ते स्त्री ते कवेवे—इम  
 , काम यने ज्यो वान् केवसीजे प्रकवहे । यमीयनमिसाएवेदकापेयइसह । यधुपगम प्रतव्याकाकनो मीटी ब्रह्मचयभू  
 यो यमीकार, तिरे निर्वत ते यम्पुगमको तिषेवते वेदना वेदुज यवना । इमीकथायवजोवेदयकमिना इवेकथाएवेदरका

साधा । बुद्धिस्तु । प्रतिपादयाम्बा । आबसज्जदुक्तायम  
 गे । हेगौतम ! एषज समयनहीं बसवतनहीं, युद्धन  
 पेवरी सीधा । तंवेज्जावधत्तंकरेसु । तिमहीव या  
 णातम । जेजेरे ससारणा पंतना करवधारहे ते  
 पोदिवा ।

मायेपयापि नवनीत्यतथा ॥ यतिमसरीरियावति ॥ अणिम क्षीर येयामस्ति तेमिमक्षरीरिका यरगदेहाइत्यर्थः, यावाही गमगमे ॥ गागु  
 क्तापमत करिमुदत्ताही ॥ विज्जसुविज्जोतोत्यायपि द्रष्टव्य, विद्यायविनाश्रुतात्वा स्ववदुशान्तकरवत्येति ॥ उप्पयनानादगबागरा ॥ अत्यथे प्राग  
 मीति ॥ सर्वप्राः ॥ विज्जतीत्यादिषु पनुपुं पवेपु वर्तमानमभिदूषस्य क्षेपोपसववत्यात् ॥ मिज्जिंसुगिकितिसिक्किस्समती त्यप मतीताविभिर्दिक्षी द्रष्टव्यः ॥

कारितिया करिस्सतिथा सहेत उप्पन्वानाणदसणधरा स्यरहा जिणेकयलोअ यित्ता तत्तपच्छा सिज्जति युज्जं  
 ति मुच्चति परिनिज्जायंति जावसहदुस्काणमतकारिसुवा करितिया करिस्सतिथा । सेतेणठेण ? गोयमा ! जाय

सहदुस्काणमत करिसु, पनुपवेवि एवचेव, नयर सिज्जति जाणियव, अणगागुरयि एवंचेव, नयर सि

प न कामनो पवेपावेविपि पुवे तेमाटे कहेदे—कवमाहे मरीरववना वरसगरोरो इत्यव, यागव्द समुपवने पय । सव्वदुक्कावमततपरिसुगाअरेतिथा । तिब  
 नेरवदयन तेवना अरवधारपदि पयादि मंमिअणमनवी । यरवविवेविमलोअयिथा । एतथामाटेअ पूजामेयाव राग वेयनाओपवधार इता कयवप  
 विववे एतथामाटे कहेदे—मवअ इंने । तथापच्छासिज्जति । तिवारपको सिदिगमनवीववीव । दुअंति । माधपामे । अयंति । वेवअनानेवरो म  
 ववववती मूकाय । परिक्कयायति । कम पुअन वववरी अीतवीभूतवाय । जावमयपुक्कावमततकरमुषा । वावत् वववदु ववो यंतवीओ यंतोतका  
 य, पवना । अरेतिथा । वतमानकाहे पतकरेहे । अरिण्यतिथा । पनामतकाहे यंतकरेहे । सेतेणठेण गोयमा जावववपुक्कावमततकरिसु । तेवे अ  
 वेयोमम । इमअव शानत् सर्वदुग्गना यंतवीओ एतथानो मववववो । पक्कयवेविपववेव । अणयानकावेयवि मिचे एवअ ववना । अरवजिक्कमितिअ  
 रिपय । एतथाविमोअ निगमनेन ज्ञानवे विज्जति कवथा । पचागएविगएवेव । अनागतकावनेदिचे अवि मिचे एवअ वववो । अरवजिक्कमितिअ

पतपय ॥ मयुक्तगामित्यादी पञ्चमपदे स्त्री विहितइति ॥ अष्टाश्रुतमयोइत्यादे ॥ रिय प्रायमा ॥ आहोदियकर्मते । मणूसेतीतमद्यतसासपमित्यादि ॥  
 इत्युक्तत्वं तत्र एषः परमायचे रपहता शोयचिः स्त्री शोयचिः सोन योव्यवहर तस्या बाधोयचिः ॥ परिमितशेषविपयावचिः ॥ परमाहोदित  
 ति ॥ परम प्रापोयपिमाद्यः ॥ परमापोयचिः ॥ प्राकृतस्याव व्यत्ययनिर्देशः ॥ अत्रि त्यटो व्यत्यय सच समस्तद्रष्टिद्रव्यासङ्गतसो  
 बभ्रासोऽप्यवकासङ्गतावस्यिणीविपयावचिः ॥ तिष्ठिप्रालावगति ॥ कासत्रयवेदिनः केवसिनो व्येत एव व्योदकका विज्ञेपसु सुधोक्त

जिक्स्सति नाणियत्तु , जहालउमत्यो तथा आहोहिउवि , तिन्नितिन्ति आलावगा ना  
 णियत्तु । केवलीण जते ! मणूसेतीतमणत सासय जाव अंतकरेसु ? हता गोयमा ! सिज्जसु जाव  
 अंतकरेसु एते तिन्ति आलावगा नाणियत्तु , लउमत्यस्स जहा नवर सिज्जसु सिज्जति सिज्जस्सति । से

त । पतपयविषय सिक्खिरसति कर्त्तुं भोक्स्सति । अष्टाश्रुतमलोतथाआहोदियादि । विम कसक कसो तिम बाधोवचिः यचि कसो, एमावना क  
 रतो पाहाहिउदभतेमणुरसेतीतमणतममदमित्यादि, तोनइउक बाधोयचिः परममयचिःको एव कसो के कसो ते बाधोवचिः कसोचे, ति  
 चनइति विचरे ते बाधावचिः, परिमितशेषविषय अत्रि तेपचि तेपचि नसोभे । तत्रापरमोदियादितिस्त्रिपासावगामावियमा । तिम परमाव  
 दिक् करत्तुपचि ते परमावचिः तेसमस्त कपीद्रव्य अउत्थात लोकाभाष अलोवइउ पवस्यिणीविषय अत्रिपचि नसोभे, एपचि क  
 प्रत्यमोपरे नाणियो पतीत पनागत वत्तमानकाल तोनतीत आलावा कसवा । केवलोकभतेमणूसेतीतमणतसासयसम्यंवावचंतकरेसु । केवलीनायचि  
 एकीउ तोनइउक अहेवे - केवली, न गाम्यासकारे ईमयवत् । मनुष्य पतीत अपरिमाष पणत आश्रताकास तेइनेविये यावत् अतकोधो एतसातीर क  
 दया, रतिपय । ईताविमिन्न । ई भोतम सीवा । आपयतकरेसु । यावत् अंतकोधो मोचमया । एतेतिस्त्रिपासावगामावियमया । एतीनेरपचि  
 पानापवा कसता एधिकार सतिपदे अत्रवा पतीत कर्त्तमान अनागतवाउभेदे । अउमज्जकअहावरसिब्बिसुसिब्बिइतिस्त्रिभिरसति । विम कस

पूणजते ! तीतमणंत सासयं समय, पनुप्यन्तवा सासयं समय अणुणागयमणंतवा सासयसमय, जेकेइ अत  
कराया अतिमसरीरियावा सधुदुक्काणमतं करिसुवा करितिया करिस्सतिवा सधेते उप्पणानाणदसगधरा  
अरहा जिणे केवली नयिसा तणपक्का सिक्कति जाव अतकरिस्सतिवा ? इता गोयमा ! तीतमणत सासय  
जाव अतकरिस्सतिवा । सेणजते ! उप्पन्नानाणदसगधरे अरहा जिणे केवली अलमत्युत्ति वसधु सिवा ?

अन अत्ता तिम केवलीं पचि अइया, एतहाविशेष पतीतकासे निहिताय इयावे, पनागतकासे निज्जितायइत्ये इ  
सव । सेइमतेतीतमणतसासयसमयपुण्डवासासयसमय । वहीगोतम पूवेइ—इमयवन् । तेजिये पतीत पनत प्रायतां समवकासे पनमान वा  
पनवा प्रायतां सदातमसमवकासे । पनागत सासयि पनत पयार वा पयवा प्रायतां पदिनामो समयकासे  
जेवेरपंतकरावा । जेवेर एकजीव सवदुक्का पंतनाकरावहार एतावता नुतिनामो । पंतिम वेइमो प्रांत प्ररीरे जेइने एत  
से चरमयरीरो ते । सवदुक्कापमंतकरेसु । सर्वदुक्कां पत जेतवे एकजीव कीवा पतीतकासे पंतमानकासे । करतिवा । जेतवा एक करेवे । करिस्स  
तिवा । प्राणानिकासे जेतवा एक करेवे । सखेतेउपपत्त्यावदंतवचहरा । ते सगहारं जपनो जेवसपान जेवसयन जेइने तेइना घरवहार । घर  
वाजिजेवेइवोभविता । पूजाने वाय्य राव देवनां जोपवहार सवच्च धरने । तथोपव्वासिक्कति । तिपार पवो सोमं । जावपंतकरिस्सतिवा । पंत  
करेवे एतावता मुक्किवासे इतिप्रश्न । इता गोवमा । हां योतम । तीतमणतसासयंममवावपंतकरिस्सतिवा । पतीत पनत गाम्भता समवकास  
वावत् प्राणानिकासे पत करेवे माचकासे इत्यथ । मेइमते उप्पत्त्यावदंतवचहरा । तेजिये जेमयवन् । जपनो जेवसपान जेवसयन तेइनां घरवहार  
र । परवाविजेवेवली । इत्थं पणायोय्य राव देवनां जोपवहार सवच्च । पनमवतिपत्तमममिया । पूर्व जेवसपान पाय्यो एइवी उपरीत कोर वा  
म पाम रोनवो पवीम मवन् अरुपवकासे जेइना एइव् वहीये इतिप्रश्न । इता वायमा उप्पत्त्यावदंतवचहरा परवाजिजेवेवली पनमत्युत्तिवसावडिया ।

पवेति ॥ सेवकमित्यादिषु कास्तत्रयमिदं गी वाच्य एवेति ॥ असमस्तु पर्याप्तं भवतु गाताः परं किञ्चि उद्यानान्तरं प्रातः सप्तमस्तु पर्वतः ॥  
एत इत्थं स्या त्रये त्वत्पत्न्या दसेति ॥ प्रथमयते चतुर्थतदेकाः ॥ ४ ॥ अन्तरेद्वैश्वस्यसिन्धुसूत्रे चर्चरावय  
उत्ता सेव पृथिव्या प्रयत्नो त्ययवाः पृथिवीतो पृथुता मनुजत्व मयासाः सत सो प्रवर्त्ततीति पृथिवीप्रतिपादनाया ॥ तथापुठविति पृथुवे  
ग्रन्थसूत्रस्या मुक्तं तत्प्रतिपादनायवा ॥ अद्वैतमित्यादि ॥ तत्र रयकप्यप्रति ॥ मरुतवो प्रायः प्रथमकावड इन्द्रनीलादिषु विषयसम्भवात् रजा  
नां प्रजा दीति यस्यां सा रजप्रमा यावत्परका विवं दृश्य अर्कराप्रमा वानुकाप्रमा पृथुता प्रथमा तमाः प्रवेति अर्ग्यं रजप्रमाविति ॥ त  
मतमिति ॥ तमस्तमः प्रनेत्यर्थं सत्र प्ररुह तम सामस्तम सास्येव प्रजा यस्याः सा तमस्तमः प्रजा एतासु च नरकावासाः प्रवर्त्तन्तीति ता नावासाचिका

हता गीयमा ! उप्पन्नानाणदसणधरे अरहा जिणे केवली अलमसुत्ति वत्तसु सिया ॥ सेवन्तं नतेति पठम  
सए चउत्थो द्वैसोसम्मत्तो ॥ ४ ॥ कट्ठण व्रते ! पुढवीत्तं पक्खिणात्तं ? गीयमा ! सप्तपुढवीत्तं

वा गीतम सप्तसकमना चयवकी जयता केवलमज्ञान धने केवलमर्थज्ञानं तद्वनाधरचकार गीतुं वेदितं विम समर सरवादिषु प्रतिशयवत्तं राम द्वे  
ना कीपचकार केवली सबपदावना कीच पर्याप्तवता एवकी उपरीत ज्ञान बीजा कारं पामवा राखवो एवकी कहीये एवव सपोहै । सेवन्तं नतेति ।  
भगवंत कक्षा ते सव मावीत्तं तद्वत्तं चत्तं ज्ञानको । पठमसन्नत्तं सत्तुत्तं चोवा एवकी विवरचवोसिस्वा ॥ ४  
व इवभतेपुठवीचा पक्खिताया गीयमा सप्तपुठवीची पक्खिता तवहा रयकप्यमाकावयमतमा । शक्तिता एवमाता एतनेविदै चरन्तादिक कक्षा ते ए  
विगीनेविदै इवे चक्का इववीचकी पवि चवीने मनुचयपुं पाम्मावता ते चरन्तादिक इवे एववा पठविति इसा एवेयव सप्तपदावानेविदै कसुं ते  
माटै ते इविगीना स्वरूप कहीयेत्तं केतको हेमयवन् । पविवीचकी इतिप्रयु, हेगीतम साव इविचो कही तेवदेहे-रतानोकाति ते रजप्रमा १ काव  
रानी प्रभा तिचरेविदै ते मकरप्रमा २ इमवेसुनोप्रमा ३ कादमनोप्रमा ४ धूमसरीसोप्रमा ५ चंभारोप्रमा ६ महाचकारोप्रमा ते तमतमप्रमा



कार्यसङ्ग्राह्य नापाह ॥ पुण्यीत्यादि ॥ तत्र पुण्यीति सुप्तविजित्कत्वा चिद्देशस्य पुण्यीषु उपलब्धत्वा चास्य पुण्य्याविषु क्षीयावाधेयिषि त्रोट

इसिययिमाणावाससयसहस्वा पण्यज्ञा । सोहम्नेणजते ! कद्विमाणायाससयसहस्वा पण्यज्ञा ? गोयमा !  
यष्टीसयिमाणावाससयसहस्वा पण्यज्ञा , एव , यष्टीसठाधीसा दारसञ्चठचउरोसयसहस्वा , पण्यचत्ताली  
सा लञ्चसहस्वासहस्वार ॥ १ ॥ श्याणयपाणयकप्ये खत्तारिसयारणञ्जुएतिणि । सप्तविमाणसयाइ चउसुवि  
एएसुकप्येसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमएससुत्तरथमज्जिमए । सयमेयउत्तरिमए पचेन्नय्यणुत्तरयिमाणा ॥

ससयसहस्वा पण्यज्ञा । सावत् पचप्रकारेणा ज्ञानिचो चद्र सूर्ये चद्र नचच तारा तेइना विमान चावासज्जान पसज्जाना सासहस्वा, मी पचवा पनत  
तोईचरे वसीयोतम बारदेवसाक मत्तयेवक पंच यमुत्तरविमान चायोने एवेवे । साहचयमतिकरविमाणावाससहस्वा पण्यज्ञा । सोधमदेवकोवे वे  
ममवत् । केतवाविमानावासज्जानना पास कक्षा इतिप्रयु । यायमा वसीसविमाणावाससयसहस्वा पण्यज्ञा । हेयोतम । वसीनकाख विमान तेरेपत्तर  
वे, प्रतरे प्रतरे मियविमानवे तेपूर्व केवसीए चने कक्षा इम सयच गावाकौ जाचवा, । माहा । वसीसठाधीसा बारसपठचउरोसयसहस्वा । प  
चाचत्तालीसा जससहस्वाचहस्वारे ॥ १ ॥ सोवमे वसीसकाख विमान ईयाने २८ काख विमान, सनत्तुमार ११ काख विमान, मावेद्रे पाठकाख वि  
मान, वञ्छेद्रे चारकाख विमान ए पंच देवकावे वई ८८ काख बदा, कातिके पचाससहस्वा, सुत्ते चासीस सहस्वा, जसहस्वा पाठने देवकोवे विमानकाच  
वा । चाबबपाचकप्ये वत्तारिसयारणञ्जुएतिणि । सप्तविमाचसगाई चठयुविएएसुजप्येसु ॥ २ ॥ यागत नवमोदिसोव याचत ययमोदेवसीव एवेअ  
मिमी ४ विमानवे चारच ११ मे देवसीवे पञ्चत ११ मेदेवकोवे एवेअ मिमी १ विमानवे, एसातसे विमान चारदेवकोवे मिमीन बदा २, वेठि  
वे गेवेबबनैविदै एतसे पचिसे भीले भीले वेवेबबमिमी । यकारयुत्तरं हेडिमएससुत्तरचमज्जिमए । सयमेयउत्तरिमए पचेन्नय्यणुत्तरयिमाणा ॥ ३ ॥  
एवसीइत्यरे विमानवे मज्जम देवेवकोवे एतसे चोदे पचमे वञ्छे एतोमिमिमी एवसासात विमानवे, चपरले गेवेबब चिखे एतसे सातमे पाठमे नवमे एतो

प्यनिति ॥ ठिइति ॥ मूकता स्तुत्रमिति न्यायात् स्थितित्यानां विवाचनीतिः ॥ अथ गणनास्थानानि, शरीराविपर्ययानि  
 मन्त्रान्येय यकाराणाञ्च पद प्रथमैकवचनान्तरद्वय इत्येव मेतानि स्थितित्यानादीनि दशवस्तुनि बहो वेश्मणे विचारयितव्यानीति गायत्र्या  
 सार्थाः विस्तराद्यन्तु मूककारः स्वपमेव गच्छतीति तत्र रथप्रज्ञापयिष्यां स्थितित्यानां तत्त्वप्रकरणपञ्चाङ्ग ॥ इमीश्वरमित्यादि ॥ व्यक्त, नवर ॥  
 एवमर्गसिनिरयाथासंसिद्धिः ॥ प्रतिनिरयाथासंसिद्धिः ॥ ठिइति ॥ धातुयो विचाराः ॥ असंख्येयमिति ॥ सङ्कतीति, कश्च प्रथमपृथिव्यपेक्ष  
 या कथन्या स्थिति दंसकपेक्षत्वाच्च उत्कृष्टानु धातुरोपम भेदस्या भेदेकसमयवृत्त्या ऽसङ्केपानि स्थितित्यानां प्रवृत्तिः, असङ्केपत्वात् सागरे

३ ॥ पुठयिठिइतंगाहण सरीरसधयणमेवसठाणे । छेस्सादिठीणणे जोगुवतुगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण  
 नते ! रथणप्यन्ताएपुठवीए तीसाए निरयाथाससयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयाथाससि नेरइयाण केवइया ठि

नमित्तो एवमाविमान, धनुस्तरविमान पक्षीकवे पूर्वोदि विजय । पञ्चवत २ जयत २ अथराजित ॥ विजये सर्वावसिद्धि ५, एवमित्तो खसंख्ये ८४८  
 ००२१ विमानवता । पुठविठित्तुमाहण सरीरसधयणमेवसठाणे । छेस्सादिठीणणे जोगुवतुगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इति छेयकाय उपपन्नैकावे शरणावा  
 कइये—पुमि शदिक्कोवना वाठनै विवै कितिकान कइवा २, यरीर कइवा २ सयसव कइवा ३ निवै संज्ञान कइवा ५ सेव्या १ कइवी, हुटो १  
 कइवी ० ज्ञान ते कइवा ८, बीय ३ ते कइवा ८ उपबीय २ ते कइवा १, व पासपूरवे ए दयज्ज्ञान शर कइवा, पुमिवी भादिदेई सवनेविदे । ५  
 नीनेरभतेरवप्या १ पुठवीए । गीतमपूरवे—एवने वभगवन् । रजमभा पूजिवीनेविदे । तीसाए निरयाथाससयसहस्सेसु । बीसठाए शरणावासानेवि  
 दे । एवमित्तो निरयाथाससि । एवेका एतसे प्रलेखे २ शरणावासनेविदे । शेरशवाकवेदयाठिइडावा पञ्चमा । शरणीना जेतवा कितिकवता भाष  
 याना ज्ञान कइता विमागकइवा इतिप्रश्न । गीयसा भसंख्येयाठिइडावा पञ्चमा । जेगीतम । सख्यायो अतिवत्स्या उक्त्या तेमाटे भसंख्याता  
 पाचकाणा ज्ञानविभाग कइता तेजिन १ यद्विखी पूजिवीनी अपेवाये कथक दम सइसयवर्गो कितिवे ते एव समय वधारतां उरज्ज एव यामरो

पममपमाभा मित्येवं नरजावासापेक्षया ध्यसङ्केया न्येवतानि, केवल तेषु अपन्योत्तरुष्टविभागो ग्राम्यान्तरा व्यवसेयो यथा - प्रथमप्रसटनरत्नेषु अप न्या स्थिति दृगवयंसदृक्षा स्युररुष्टानु नवतिरिति एतदेवद्वयं यथाच ॥ अहस्त्रियाठित्वादि ॥ अपस्यास्थिति वंशवयंसदृक्षादिना इत्येक स्थिति स्थान तच्च प्रतिनरत्नं त्रिखरूप सेव धमयापि केति द्वितीय मिदमपि विचित्र एव यावदसङ्केपसमयाधिकता सा सर्वाभिनमस्तिस्यतिस्थानवद्वयमाया इ ॥ तस्याउगुक्कोसिपति ॥ उत्तरुष्टा साधनेकविधेति विद्येयते तस्य विवक्षितनरकावासस्य प्रायोग्योचितता उत्कर्षिका तत्प्रायोग्योत्कर्षिका इत्य पर स्थितित्थान मिदमपि विचित्र विचित्रत्वा दुरवयंस्वितरिति एवं स्थितित्थानानि प्रकृत्य संश्लेष कोपाद्युपयुक्तत्वं नारकाबा विनामेन इच्छे

इठाणा पसुता ? गीयमा ! अस्सखेज्जा ठिइठाणा पसुता तजहा जहस्त्रियाठिइ समयहिंया , जहस्त्रिया ठिइदुसमया हिंया , जाव अस्सखिज्जासमयाहिंया जहस्त्रियाठिइ , तप्पाउगुक्कोसियाठिइ । इमीसेण ज्ञते !

पमनो स्मितिर्ह ते वानपुपमना असत्त्वावाचमय बुद्धे तेभाटे असत्त्वाता स्मितीजान कक्षा, इम नरकावासानो धयेकावे यदि असत्त्वातादुये, इहा ब्रह्म उत्तरुष्ट विभाग यत्नान्तर वो बाधको, विम रत्नपमाना पक्षिना यावदानेवि एवम्य दयसदृखवय उत्तरुष्ट नेव सङ्खयन स्मितिर्ह, एवोक्त दे पाद्वै - अहस्त्रियाठिइ इत्यादि तेकदेवे - ब्रह्मस्मिती ए एकास्मितीजान कक्षा तेषु प्रतिनरत्ने मिदमित्येव, इतो तेहोक्त एकसमय अधिक एवोक्तो स्मितिस्थान क्वा तेषु विम रत्नप्रकारनाहे । अहस्त्रियाठिइ समयाहिंया अहस्त्रियाठिइदुसमयाहिंया । इमवोक्तो स्मितिस्थानकवो, एवपि विविचनै एवोक्तसमयाहिंया अहस्त्रियाठिइ । इम यावत् समयावसमय धधिक ब्रह्मस्मिती प्रतिनरत्ने मिदमित्येव स्मितिस्थानकवै, एव पाद्वै २ पवि मिदमित्येव स्मितिस्थानकवै तेभाटे, इति सर्ववो वेदसो स्मितिस्थान देखावेहे । तप्पाउगुक्कोसियाठिइ । विवक्षित नरकावास न रास्य उदिन उत्तरुष्ट स्मितिस्थान तेषु विम रत्नप्रकारनाहे, उत्तरुष्टस्मितिस्थानना विविचनपक्षवो इम स्मितिस्थान प्रकृत्योने तेहोक्त स्मितिस्थानन विमै खायादिमदिन नारकोने विभागेजतो दृष्टावता इया कवेहे - इमोवेधतएवम्यभापुठनीएतोसाएनिरयावाससससदृसेसु । एवोक्त इमगवन् ।

यत्रिदमाह ॥ इमीसेवमित्यादि ॥ अहंक्रियाएठिइएहमासति ॥ या यत्र नरकावासे अपन्या तस्यां वर्तमानाः ॥ किंसोहीवउतेत्यादि ॥ प्रमे ॥ सर्वे  
वीन्यापुतरं तत्रच प्रतिनरक अपन्यस्त्वितिजानां सर्वयमाया तेपुच कोषोपयुक्तानां यहुत्वा त्ससविशतिनङ्कका एकादिसङ्कगतसमयापिकताप  
म्यस्त्वितिजानां तु कादाचित्कया तेपुच कोषाद्युपयुक्ताना मेकत्वानेकत्वसम्भवा दशोतिर्नङ्कका एकेन्त्रियेपुतु सर्वकपायोपयुक्ताना अत्येक यहुना  
भावा दनङ्कक माइच-धनयइचिइविरहो प्रसीतिर्नगतश्चिरञ्जाहि । अरियंनहाइविरहो अन्नगयंससवीसावा ॥ १ ॥ अयन्त तत्सतापेक्षो वि  
रहो द्रष्टव्यो नतू त्यादापेक्षो यतो रत्वयमायां चतुर्विंशतिसुता उत्पादविरहकाल उक्त कतय यत्र सप्तविंशति नङ्कका उष्यगते तत्रापि विर  
हनाया दशीतिः प्राप्नोति सप्तविंशतेया प्रावएवेति, तत्र ॥ सहेवितावहोन्कोहीवउतसि ॥ प्रतिनरकं स्वकीयस्वकीयस्त्वित्यपेक्षया अपन्यस्त्विति  
जानां नारकावां सर्वयहुनां सङ्गावा आरक्तजवस्वच कोषोदयग्रपुरत्वात् सर्वेव कोषोपयुक्ता प्रवेपु रित्येको नङ्कः ॥ अहवेत्यादिना द्वित्रिचतुः

रयणप्यन्ताए पुढवीए तीसाए निरयाथाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयाथाससि जहसियाए ठिइए वहमा  
णानेरइया किंकोहीवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता ? गोयमा ! सहेवि ताव होजा कोहोव

रत्वमा इद्विशोने विवै बोमनाच नरकावासानेविये । एयमेगसिभिरकाथाससि । एकेक एतसे प्रत्येक नरकावासानेविये विक्का जे नरकावासानेविये  
त्रइभियाएठिईएवहमाचानेरइया । अचक्यविक्के, तेहनविवै वत्तमान नारकीमां । विक्कोहावउत्ता । जूं माधवाळा घबाई ? मायोवउत्ता । जूं मा  
नशानाघबाई ? मायावउत्ता । जूं माकाशमा घबाई ? सोभोवउत्ता । जूं सोभवाळा घबाई ? इतिपत्त, । गोयमा सग्गेवितावहोन्कोहीवउत्ता । जे  
मोतम ! प्रतिनरके पोता पातामो स्मितिगो भवेपाये अवयव्विति नारकीमो घबानो सङ्गावहै भने नारक भवनेविये कोषमो उदय घबाई तेमाटे  
मगमाइ माधमहित । पनवा इत्यादि । विविचतु सयोगमा भाया देखावा तिका चिकसयोगनेविये कायवत घबा तेमाटे कोषे चङ्कचनहोज कोम,  
काधपंतघचा मानवतएव एज्जमाणा १ । सग्गेवितावहोन्कोहीवउत्ता । उत्तर तिहा प्रतिनरकेअवयव्वित्तिना नारकीमो सदैव सङ्गावहै चिरइनयो, तेहनवि

मयोगनङ्गा नमिता स्तत्र द्विदशयोगे यदुपपन्नान्तं प्रोचममुच्यता यद्भङ्गाकार्यं साधारं कोचोपपुष्पाद्य सामोपपुष्पाद्य तथा कोचोपपुष्पाद्य भा

उत्ता १, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्तये २, अहवा, कोहोयउत्ताय माणोयउत्ताय ३, अहवा, कोहोयउत्ताय मायोयउत्ताय ४, अहवा, कोहोवउत्ताय मायोयउत्ताय ५, अहवा, कोहोयउत्ताय मायोयउत्ताय ६, अहवा, कोहोयउत्ताय माणोवउत्ताय ७। अहवा, कोहोवउत्ताय माणोवउत्तये मायो

वे आद्यन च १। तेमाटे सत्तावोस भाया ज्ञे, यने एकयादि सस्यातसमवापिच यद्यन्यस्यतिता मारकोवे तेने कदाचित्पचावे, तेने को विवारे बहिरुपदि चरेते तेमाटे तिहा कोधमहित एकपदिचै—यने यनेचपचोपदि संभवे तेमाटे ययोमायापविचपने, यने एकोद्वैमिवि चरिरे कयाबस हित प्रवेडे चयाचामिवे तेमाटे। यमगद। भांगोनचपने वत—संभवज्जहिरहो ययोदसमातर्षिकरिज्जाहि। जहिवंगहोहविरहो यमयससवोसा य १। १। एहिरुपदि सत्तावोसो ययेचावे कइवा यदि उत्पादो ययेचावे विरुचनकइवो, तेखिन रजमयावे चरवोस सुज्जतनी उत्पाद विरुचनको यवि जिहा सत्तावोस भाया कइता तिहा यणि चरवोस सुज्जत विरुचना समवचो ययोमाया यामजे तिवारै सत्तावोसो यमावहोचपुजे, यइवाको जोउत्ताय। ययश जोधवतवचा तिये कोवे यदुवचनपासो। माचोवउत्ताय २। यने मानवत यवि ययापासोवे एवोकोमायो २। यइवाकोहोवउत्ता य माचोवउत्ताय ३। यइवा कोधवतवचा यनेमायावत एक एहिक सयोवोमो चोकोमायो १। यइवा कोहावउत्ताय माचोवउत्ताय ४। ययवा को धवतवचा तेमाटे यने मावयत यवि यया तेमाटे यदुवचन एवोकोमायो ४। यइवा कोहावउत्ताय कोहोवउत्ताय ५। यइवा कोधवतवचा तेमाटे यदुवचन यने आमवत एक तेमाटे एकवचन ए पाचयोमाया ५। यइवाकोहावउत्ताय ६। यइवा कोधवत यचा तेमाटे यदुवचन यने। कोमो वउत्ताय। सामवतवचा तेमाटे इहापदि यदुवचन ए द्विसंवागो ज्ञोमाया ६। एव ७। मागाबदा ८। यिवे चिकसंवागो चोरेमागा देवावे ज्ञे—ययवमनि कोवे यदुवचनहोय। यइवाकोहोवउत्ताय माचोवउत्ताय ९। यइवा कोधवतवचा मानवत एक मायावत एक एव एवकस

नोपपुक्ताय २, एवं मापयैक्यवदुत्पाज्यां द्वौ लोकेनच द्वौ, एव मेते द्विकयीगेयद् त्रिकयीगेतुद्वावृण्यनयन्ति तथाहि - कोचे मित्यं बहुवचनं  
मानमापया रेकवचनमित्येको मानैकत्वे मायावदुत्वेव द्वितीयो मानेच बहुवचनं मायाया मेकत्वं मितिपुतीयो मानवदुत्वे मायावदुत्वेव चतुर्थे,  
पुनः कोपमानलोके रित्समेव चत्वारः पुनः कोपमायालोके रित्समेव चत्वारः, एव मते द्वादश, चतुर्दशयोग्यं स्वष्टी, तथाहि-कोचे बहुवचनेन मानमा

[illegible]

पामोत्रपु वैश्वपचने मंत्रः इत्यमेव मन्त्रेणुपपन्नमेव गृह्णीय एव मन्त्रा वेदवचनान्तमायया ज्ञाती एव वदुवचनान्तमायया ज्ञाती एव मन्त्रे वस्त्यार  
पञ्चवचनान्तमात्रम ज्ञाता एवमेव वदुवचनान्तमानेन वस्त्यार इत्यवमष्टौ एव मन्त्रे वपम्यस्थितिव नारकेषु सप्तविंशति प्रवन्ति अपम्यस्थितौ

स्ता २, अहवा, कीहोयउत्ता माणोयउत्ते ३, अहवा, कीहोवउत्ता माणोयउत्ता  
ते मायोयउत्ता लोन्नोयउत्ता ४, अहवा, कीहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते ५, अहवा,  
काहोयउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ते लोन्नोवउत्ता ६, अहवा, कीहोवउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ता  
लोन्नोयउत्ता ७, अहवा, कीहोवउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ता लोन्नोवउत्ता ८, एव सप्तवीसजगा ने  
यह्वा । इमीसिण ज्ञते । रयणप्यन्ताए पृथ्वीए तीसाए निरयाथासयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयावासासि सम

मानवत एक । मायावउत्ताय । मायावत ववा । माभाउत्ताय ८ । साभवतववा ए बीबाभागा ९ । अहवाकाहावउत्ताय । अहवा काधवतववा । मा  
नामउत्ताय । मानवतववि ववा । मापोवउत्तय । मायावत हव । लोन्नोवउत्तय । लोन्नोवउत्तय एक एपावमीभागी १ । अहवाकाहावउत्ताय । अहवा  
काहावउत्ताय । मानवत ववि ववा । मायावउत्तय । मायावत एक । लोन्नोवउत्ताय १ । लोन्नोवउत्ताय ववा एह्वाभागा १ । अहवाकाहा  
वउत्ताय । अहवा काधवत ववा । मायावउत्ताय । मानवत ववा । मापोवउत्तय । मायावत एक एमावमी भागी ७ ।  
अहवाकाहावउत्ताय । अहवा काधवत ववा । मायावउत्ताय । मानवत ववा । मापोवउत्ताय । मायावत ववा । लोन्नोवउत्ताय ८ । १० । एवसत्तावा  
ममतागेदवा । माभवत ववा एवत मयामीना पाठमी भागी ८ । इम चसंगी १ दिक्कसंगी १२ । अतु संगी ८ । ए सर्वम  
नो २० भागा जवग्यन्ति नारकोने दिये वुने जवग्यन्तिना ववा नारको ववावुने तेमाटे नोपनेविने ववुववतहोव वुने कोधी ववावुने तेमाटे,  
ववायोतन पूछे—इमानेवभतेरयव्यभाएपृथ्वीए । एहीज वैमगवन् । रत्नप्रभा वविवीनेविने । तीसाएनिरयावासासयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयावासं





४ एव कोपमाययोः ४ एव कोपलाभयोः एव मानमाययोः ४, एवंमानलोचयोः ४ एव मायालोचयोरेति द्विकयोर्ने षतुर्विधमिति लिख्य  
योग द्वित्रय त्रयाणि—कोपमानमायाना मेकत्वे नैव एवेव मायाबहुत्वेन द्वितीय एव सेतौ मानैकत्वेन द्वाववा न्यौ तद्वहुत्वेन एवमेतेष  
त्वारः कोपैकत्वेन चत्वारएवा म्यकोपबहुत्वेने स्वेव मष्टौ कोपमानमायायिद्वेजाता सार्थवा म्ये द्वौ कोपमानलोचोनेषु तर्था न्ये द्वौ कोप

नगा ज्ञाणियक्षा । इमीसेण न्रंति । रयणप्यन्नाए पुठवीए तीसाए निरयाथाससयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयावास

प्रसयादौ कक्षा । प्रबवा ब्राधवत एव मानवत एव एपिष्ठा भागा १ । तथा द्विकसयोयौ भागा २४ त देखावेहे—ब्राधमान एकवचन बहुवचनेकरी  
भागा चारइव इमकोप भावा सूचार, ब्राधलोमसूचिचार, इम मानमायासूचार, मानलोमसूचार, एषठवीस दिक्संवीनीकक्षा । त्रिकसवीनी  
११ । भावाबुदे तेदेखावेहे—ब्राध मान भागा एकवचने एकवचने परिखोभाया १ । कोपमान एकवचने भावा बहुवचने २ । इत्वादि सबसौ जायवा ।  
चत्वार सबोदो भागा १६ । ब्राधदिक्चारदेह एक वचने १ । कोपदिक् १ एकवचने दोभे बहुवचन २ एपिष्ठा भागा सबसौ जायवा । एकवचिन्नी ८ भा  
मायाव, चइवाकोहोवकत्तेव । प्रबवा ब्राधवत एव । भावोवकत्ताव २ । मानवत बवा एवोकोभागा १ । एवंप्रसौतिभंगोपेववा । इमप्रयोभागा जा  
बवा । एवंकावसखेखप्रमहादिवा । इम बावव् जवम्यक्लिनिविदे एकपादिदेह संख्यात समय परीत प्रयोभागाबवा । द्वितोप्रसंखेखसमयादिवा  
द्विए तप्याचव्वासिवाएद्विएसत्तावीसमंभाविबवा । चने संख्यात समयाचिक् जवम्य क्लितिको प्रारभी बावव् छरव्छटिमितिहे तिर्वा स  
नने मन्नावीस भागा द्वाव पूरे कक्षा तेहीव विरइनी असमयहे सत्तावीसहीव भागा जायवा चार एकवचनो १ । द्विदे प्रवमाइना चारवइहे—  
। इमोमेवभंतेरवप्यभाएणठओए तीसाएभिरबावाससवसहस्सेसु । वेममवन् । एवोखरजप्रभा एधिबीनेविदे बीस नरबावासाभा यतसइसखइतीसचम  
। एगमेगसिभिरबावाससि । एवेका नरबावासाने विदे । चरइवाचभतेकेवइयाठव्वाइचावापणता । नारकोने चेभमवन् । केतवा ग्ररीरनो भाधार  
भूत चेव तेइनीजानव प्रदेशे हवेकरी विभाग ते प्रवमाइना ज्ञान कहौवे ते प्रवमाइना ज्ञान कहौवे इतिप्रत्य । गायमा प्रसखेज्याउमाइव



| क्र० | मात्रा | काम | क्री | मा | बतुसंबीणी १६॥ | श्रीम |
|------|--------|-----|------|----|---------------|-------|
| १    | १      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २    | १      | २   | १    | १  | १             | १     |
| ३    | २      | २   | १    | १  | १             | १     |
| ४    | २      | २   | १    | १  | १             | १     |
| ५    | १      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६    | १      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७    | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८    | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९    | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ११   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| २९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ३९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ४९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ५९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ६९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ७९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ८९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९०   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९१   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९२   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९३   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९४   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९५   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९६   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९७   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९८   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| ९९   | २      | १   | १    | १  | १             | १     |
| १००  | २      | १   | १    | १  | १             | १     |

शाबापक्षता तजडा । हेगौतम । पमज्जाता अवयाहना आगव थावासवज्ञा तजहे । अहियाठयाहवाधगुहस्यप्रसंखेज्जहमाग । अवम्य अवगा  
इना चंगुलने एसस्पातमे मये सगखै । परसाहियाजहियाठयाहवा । ते एवमेवपथिअ अवम्य अवयाहना आगव । दुपदेमिअजहसि  
याठयाहवा । वेप्रदेमै पथिअ अवम्य अवगाहनाआगव । जाव एसखेज्जपदेसियाजहियाठयाहवा । यावत् एसज्जात प्रदेगापिअ अवम्य अवगा

सि नेरुइयाण केवइयानुंगाहणठाणा प० ? गोयमा !  
एसखेज्जानुंगाहणठाणा प० त० अहसियानुंगाहणा

मायासीजेपु तयेवा न्ये छी मानमायालोनेवितितुगविश्रुत् बतुक्योने  
पाछा तयाहि-कोपादि देकले नेको सोअस्य बहुल्लन विलीय  
एवमेतौ मयैकत्वेअ तथा न्यी मायावपुल्लेअ एवमेते बल्लारो माने  
कत्वेअ तथा न्ये बल्लारएव मानवपुल्लेअ एवमेते अही कोपेअत्वेअ  
एव मम्म छी कोपयपुल्लेअनेति पोछा एवमेते सर्व एवा गीतिदिदि एते  
व अपन्यस्थिता वेकादिसङ्गातामसमयाविकाया स्मवति एसङ्गातसम  
याविकायास्तु अपन्यस्थिते रारम्यात्कमुस्मिति याव त्सप्रविंसति अङ्का  
सएव तत्र नारकाकां बहुत्वादिति अथा वगाइनाद्वार तत्र ॥ ठयाइ  
बराअति ॥ अवगाइस्त आसते यस्या सा वगाइनातनु स्वदाधारजुत वा  
खेअ तस्या त्यानानि प्रदेअवया विज्जागा अवगाइनात्त्वानानि तत्र ॥  
अहसियति ॥ अपन्यांगुलासवेयभगसात्र सर्वनरकेपु ॥ तप्याठगुकासि  
यति ॥ तस्य विवधितनरकस्य प्रायोण्या या उत्कापिक्का सा तरप्रायो



चा श्रीति रिति विरोधः ? प्रश्नोच्यते अपत्यस्वित्तिज्ञानमपि अपत्यावगाहनाकासे ऽशीतिरेव, उत्पत्तिकालजाचित्वेन लघस्यावगाहनात् सत्यं  
 स्वादिति याच अपत्यस्वित्तिज्ञाना समर्थियति। या लघस्यावगाहनत्वं यत्किञ्चात्माना भित्तिप्रधानीय शरीरद्वारे न सत्तावीर्यजंगति ॥ अनेन यद्य  
 पि वैद्वियरीरे समर्थियति अङ्गना उक्ता अथापि या स्वित्ताभ्या भवनाहनाभ्याच अङ्गप्ररूपका सा तथैव दृष्ट्या निरवकाशत्वा तस्याः

रयणप्यन्नाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि जहस्सियाउगाहणाएय्ह  
 माणा नेरइया किंकोहीवउत्ता खसीइजगा नाणियह्वा, जाव सखेज्जापदेसाहिंया, जहस्सियाउगाहणा,  
 खसखेज्जापएसाहिंयाए जहस्सियाए उगाहणाए य्हमाणाण सप्पाउम्मुक्कोसियाए उगाहणाए य्हमाणाण ने  
 रइयाण दोसुवि सत्तावीस जगा । इमीसेण जते ! रयणप्यन्नाए जाव एगमेगसिनिरयावाससि नेरइयाण  
 कइसरीरया पयुत्ता ? गोयमा ! तिस्सिसरीरया पयुत्ता तज्जा—वेउत्तिए तेयए कम्मए । इमीसेण जते !  
 जाय वेउत्तिस्सिसरीरे य्हमाणा नेरइया किंकोहीवउत्ता सत्तावीस जगा, एएणगमेण तिस्सिसरीरया ज्ञा

हा उतर असम्भित्तिनां नारवान यदि लघम्ययवगाहना कासनेविदे यगोहोवमाणा बुवे, उत्पत्तिवास भाविपदेवरी लघम्य यवगाहनापदि वा  
 गो बुवे, जेज्जववत्तिने सत्तावीसर्भाणा कक्षा जेज्जम्य यवगाहना पत्तिजातने बुवे इत्तो मादना करवो, ए बोवोवार कक्षा । इदे शरीरवार  
 कइसे—इमीसेर्भातेरवचममाएकावयमेर्गसिनिरयावाससिचेरइयावहस्सरीरकापयत्ता गोयमा । एहोव हेमवयण । एज्जप्रमापुचिवोने विदे बोसका  
 य नरकावाचने एवे का नरकावासनेविदे नारवोना जीवने पंचशरीरमिदि केतवा शरीरकक्षा इतिमय उत्तर हेगोतम । पांचशरीर मांदिता । ति  
 स्सिसरीरकापयत्ता तज्जा । तोन शरीर कक्षा यगते खेवस ज्ञानोए तेकवेवे—वेउत्तिव । वैद्विय शरीर १ । तेवए । तेवस शरीर २ । कम्मए । कामच  
 यटेर १ । इमीसेकर्मते जाववेउत्तिवसरीरे य्हमाणाचेरइया विज्जीवो यवतासत्तावीसभया । यत्तोसोतमपूजेवे—एहोव एज्जप्रमा पुचिवोने विदे यावत् वैद्विय

शरीरामययायाय सावकाशत्वा देव मन्त्रमपि विमर्शनीयमिति ॥ एष्वगनेकतिक्षिपरीरपात्राद्विद्यमिति ॥ वैदिक्यशरीरसूत्रपाठेन श्रीवि श्वरीरका वि वैदिक्यतेमसर्वाभ्यानि ज्ञप्तिगम्यानि शिष्यपिजङ्गमसविद्यति वाच्येत्यर्थः ननु विद्यहन्ती केवलं ये तैजसकाम्मवशरीरे स्याता तयो रल्पत्वना मीति रपि जङ्गकामासम्भयतीति वाच्यमुच्यते तयोः सप्तविंशतिरेवे ? त्यजोच्यते सत्य मत रवेकलं वैदिक्यशरीरागुगतयो सप्तो रिशामयव क्षेत्रस्यो या नामयवमिति सप्तविंशतिरेवति यव द्वयोरेवा तिहेइत्यत्र श्रीबीत्पुत्र तत्त्वपात्रामपि गमस्या त्वत्तसाम्योपदक्षनार्थमिति सङ्गनद्वारे ॥ इतरे सप्तयवार्थं अस्ययवमिति ॥ यथा सङ्गनाना वत्तश्चयजनाराधार्थोर्मां मप्या दृक्तरैवापि सङ्गनेना सङ्गनानीति, कस्मादेव मित्यतआह ॥

नियथा । इमीसिण ज्ञते ! रयणप्यज्ञाए जाव नेरङ्गयाण सरीरया किसययणा पखुत्ता ? गोयमा ! ठरहस घयणाण अस्ययणी, नेवठीनेवच्छिरानेयराह्णणि, जेपोग्गला स्थिण्ठा स्थकता स्थप्विया स्थसुहा स्थम णुस्मास्थमणामा, एणसिंसरीरसचायप्ताएपरिणमति । इमीसिण ज्ञते ! जाव ठरह सययणाणं अस्यययणे व

यतेरे वत्तमान नारको एव वाच उचित यदा इवे ? इहां सत्तावीस भांमा खपजे इहां यद्यपि वैदिक्यशरीरने विदे सत्तावीस भांमा कक्षा तदा वि वास्ति पात्री पवगाइना पायो भांमाणी प्ररूपवाक्यो विद्या तिमहीव कइयो बीव् किहाई तेइनी अवकायनही यनैयरीरा वरात सावकाशदे इम मयवे विनासो दुति कइयो । एष्वगनेकतिक्षिपरीरपात्राद्विद्यमिति । इवे प्रकारे वैदिक तेजस कांमव तोमयरीर कइवा, तोनाइरे निवे सत्तावीसभां मा कइवा, इहां काईव पूकजे विपइयतिनिविगे क्षेत्र के तेजस कामयशरीरके जेहाने एखपकरो यशोभांमा समवे तो तेजस कामयशरीरने विवे सत्तावीसहीअर्माया विमकक्षा इहां उत्तर तुनेकछो तेसावो पवि इहां केवस वैदिक्यशरीरागुगत तेजसकार्ययरीर पायोक्कंछे, यने केवस तेजस कामव यरीरनी इहां पनाययवछे तेमाटे सत्तावीसहीव भांमाकक्षा । इवि बोवासवववहारकहेवे—इमीसेवंतेजावरेरयावशरीरयाजिसवयवा पवता । एहोउरजग्गमा एविबोनेनिवे इमभवन् । वावत् नारकीना यरीर खे संवयवेकक्षा इतिप्रश्न उत्तर हेगीतम । वषट्ठइम नाराच पादिदेई व

भेयहोत्यादि ॥ नैवा ह्यप्यादीनि तेषांसन्ति अस्मिन्सम्बन्धरूपम् संक्षमम् बुध्यत इति ॥ अथिच्छति ॥ इत्यग्रे स्वेनीष्टा सम्यक्वेया दनिष्टा, अनिष्टमपि किञ्चिदस्मदीयं प्रवर्तीत्युच्यते अस्मात्ता अस्मात्तमपि किञ्चिदकारणवशा एतदेव प्रवर्तीत्याह [ धन्य २००० ] अप्रिया अमीति इतवो अप्रिय एवं नैवा दुनो यतः ॥ यत्सुनति ॥ एतदुक्तमस्मात् सोऽयं सामान्यापि प्रवर्तो त्यतो विज्ञाप्यन्तः ॥ न मनसन्तः सर्वेदनेन भुभुदया प्रापन् इत्यमनोष्टा अमनोष्टता चेदद्यापि स्या दतयाह ॥ अयमायति ॥ न मनसा अस्मन्ते अस्मन्ते पुनः पुनः स्वरक्षतो ये ते अमनोमा एका पि का येते ह्यत्रा अनिष्टताप्रकपप्रतिपादनाद्यो इति ॥ संपायता इति ॥ सहाततया गरीररूपसम्बन्धतयत्यर्थं वस्त्यामद्वारे ॥ किञ्चिच्छति ॥ किं मस्तिव मत्स्यानं देया आनि किञ्चिद्विद्यतानि ॥ प्रवचार्थिच्छति ॥ प्रवचार्थं निजजन्यतिवाहनप्रयोजनं येया तानि प्रवचार्थीया म्वाजन्मधरणीयानीत्ययः ॥ उत्तरविश्विदमिति ॥ पूर्ववैश्विण्यायेकया उत्तरादि उत्तरकात्मनामीति वैश्विण्यादि उत्तरवैश्विण्यादि ॥ बुद्धसंछिद्यति ॥ सर्वव्यापुज संस्थि

हमाणाण नेणइया किंकोहोयउत्ता सप्तावीसन्नगा । इमीसिण नत्ते ! जाव सरीरया किसठिया पयसप्ता ?  
गोयमा ! दुविहा पयसप्ता तजहा-नयघारणिज्जाय उप्परवेउच्चियाय , तत्थणज्जेत्तेनवधारणिज्जा तेक्कंरुसठि

नन्दनके हाडना मरवकय तैसयय कहीये । गीयमा कयसयववाचपसयवबोचवहोबेदधिर । ते सययबबूहीमाहिबो कोर संवयवनी तेमा  
टे पमयवबो मारबो कहीये स्वाबको तेकहेई—मारकोने हाडनही माडोनही । येववहाकबि । तयाकास नही । जे पोगयवाचबिडा । जेपुइव  
वाडा जइने नकोजे ते पनित कहीये । पथता । महाकृप । अपिया । धर्मोतिना कारय सखामबा । यसहा । जेदोठा यका रोसखपजे । धम  
पुबा । मनेहोकरो तेराते यमन जाविय । पमबामापसिसरीरमघायताणपरिचमति । हुंस वबोकरे पबियकापूरोबायनही, एहाने पुबभोमवता  
माटे पनवउरोखे पनि जविदेखे संसदवहे एहवा होखेइ इतिमाव । इमोसेचमते जावबबूंसयवनाण । एइ हेमयवन् । रकप्रभा पबिवोने विदे या  
५१ कटमयवसेकरो यत्तमान । एसयउखेइइमा राचएवाकिमाहोवउतासतावोसमगा । जएसंयवखेकरो पसंयव खेनारको ते क कोपवुलब ? इइ

तानि, इष्टिद्वारे ॥ सगामिच्छादसखेच्छसीद्वजगति ॥ निमग्नद्वीपा मक्ष्यत्वा तद्गावस्यापि च कासतो श्यत्वा देवीपि सप्र्यत इत्यवीति संक्राः  
 चानद्वारे ॥ तिष्ठिगावाहनिमयति ॥ ये ससम्पन्ना मरुते पूत्यद्यन्ते तेषां समयमसमया वारन्य प्रवप्रत्ययस्या वशिष्ठाभस्य प्राया चिन्ताभिमण्य ते  
 येतु निष्पान्दृष्टय स्ते सञ्चिन्त्यो ऽसञ्चिन्त्य योत्पद्यन्ते तत्र ये सञ्चिन्त्य स्ते प्रवप्रत्ययादेव विप्रङ्गस्य प्राया दृष्टान्तिनो, ये त्वसञ्चिन्त्य स्तेषां माया

या पयुता, तत्पज्जेतत्तरवेउद्विष्या तेविज्जलसठिया पयुता । इमीसिण जाय ज्जलसठाणे वहमाणा नेर  
 इया किकोहोयउत्ता ! सत्तावीसजगा । इमीसिण जते ! रयणप्पज्जाए पुठवीए नेरइयाण कइलेस्साउ प०  
 ? गोयमा ! एगाकाउलेस्सा पयुता । इमीसिण जते ! रयणप्पज्जाए जाव काउलेस्साए वहमाणा सत्तावीस

पवि सत्तावीसभागा कइवा दार ४ ॥ इति सञ्चान दार पाचमो कथह—इमासेषभतेजावसरीरवाक्खिसठिया पयुता । एहीअ रत्तमभा एविवीने इ  
 भगवन् । गरोर ये सव्याने पाकोरे कज्जो इतिमय । मायमा दुविद्धा पयुता तंजहा । हेगोतम । नारकोने वेपकारमा प्ररोरकज्जा तेवहेहे—भव  
 धारविज्जाय उत्तरवेउद्विष्याय । भवधारवीय प्ररोर त जज्जतांइ दारवा माय्यते पूठिवा वैजियनो चपेदाये पाविसेकासे वाव ते उत्तर वैजिय कइवीये  
 तत्रजतेभवधारविज्जा । तिहा च माक्खासकारेभवधारवीय उत्तर वैजियगरोर वमाचे जेभवधारवीययरोरवंत । तेहुंउठठिवायउत्ता । तेहुं सव्याने इहे  
 सव्यानेकज्जा । तत्तरंजतेउत्तरवेउद्विष्यातहुंउठठिया पयुता । तिहा जेभेद माहे जे उत्तर वैजियवद तेपवि पुंउठठानवंतइय नारकोनो सयसे विज्जो  
 च सव्यान कज्जा वज्जोयोतम पूरेइ—इमोसेषभतेजावपुंउठठकावेजहमाचलेइरयाक्खिकोइवउत्तासत्तावीसभागा । एहीअरत्तमभाएविवीनेवि जेभगवन् ।  
 रयाचकनेखाया पयुताया । एहीअ जेमयवन् । रत्तमभा एविवीनेवि नारकोने केतसी सेखा कइते, इहेखाभाहिदो विणकरो कमेकरी चासिं  
 गीवे तनेगाकइते इतिमय उत्तर । मायमा एगाकाउलेस्सा पयुता । हेगोतम । रत्तमभा एविवीनेवि एव कापोतसेखाकइते वज्जोयोतम पूरेहे—



दत्तमुद्गते त्वरतो विनङ्गस्यो त्यतिरिति तेषां पूर्वं मन्त्राण्ड्यं यथा द्विजङ्गोत्पत्ता वज्रान्त्रयमित्यत उच्यते ॥ तिस्रिस्त्रिंशदाङ्गजयथापत्ति ॥ ज्ञान  
या विरुज्जयनया कदाचिद्दे कदाचिद्भीषी त्यथाः अत्रार्थे गाये स्याताम्—सखीवेरवयुषु उरसपरिवापयन्तरेसमय ॥ विभ्रगठद्विवा अविगगद्विगगरे  
मवव ॥ १ ॥ परमकीनरएणु पञ्चतोत्रेणसहविद्वन् ॥ नावातिशयेवतठे असावादेतिशयेव ॥ २ ॥ एव ॥ तिस्रिस्त्रिंशदेत्यादि ॥ आग्निनिबोपिहृष्टा  
मव तस्यविशुतितनङ्गोपेतानि आद्यानि श्रीचिद्विद्वाना व्यग्रामाभिवेति एवमश्रीचिद्विद्वानागीति यदुक्तं तद्गार्जनिप्रोपिग्रस्य पुनर्गर्हणेना, न्य

ज्ञंगा । इमीसेणं जते ! जाय किसमविठ्ठी मिच्छविठ्ठी ? गोयमा ! तिस्रिवि । तिस्रिवि । इमीसेण  
जाय सम्मद्वसेणं यहमाणा नेरइया सत्तायीसजगा, एवमिच्छदंसणेवि, सम्मामिच्छदणे असीइजंगा । इमी  
सेण जाय किनाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नाणीयि, अण्णाणीवि, तिस्रिनाणाइ नियमातिस्रिअण्णाणाइ

इमीसेभनेज्जावडाउखाइइइनावाधत्तावीसभंका । एव हेमगवन् । एवममाविविजेविदे खापोत खेखामेविदे वत्तमान नारकी अं कुंधयुज बुवे  
इतिप्रय उत्तरं इहापदि सत्तावीस सांगाववे एखेका वार कट्ठी । द्विवेइदि वारकवेहे— इमीसेभनेजावकिंस्सविठ्ठीमिच्छादिहो । एव हेमगवन् । र  
ज्जभा इदिगोनवि वत्तमान नारकी अंसुस्यगट्टोववे ? पबका मिच्छादहो बुवे पबका । सम्मामिच्छादिहो । सम्मामिच्छादिहो बुवे इतिप्रय । मायनाति  
विदि । हेमोनस । तोनेरे इटो बुवे मम्मगट्टिपादिदे, वसोगोतम पबवे— इमीसेभंकाव । एवमज्जमा वदिवीजेविदे यावत् । सम्मसंस्सवइमावावेर  
यावत्तावीसभंका । मम्मद्वयेने वत्तमान नारकी अंजाववंत बुवे इतिप्रय उत्तर पबको रीते सत्तावीससांगावाव सम्मगट्टोना निरंतर पयावो । एवं  
मिच्छदंमवेदि । इम मिच्छादट्टोमैविदे एवि निरंतरको सत्तावीसभागा बुवे । स्यामिच्छासंस्सवेपसीतिभगा । तथा सम्ममिच्छादहो एतसे मिच्छादिने  
गिंवे पयोभागा कवका, मिच्छादहो नारकी पाडावे मिथमावका कासपदि पबवे तेमाटे इटोवार सातमी । द्विवेज्जाववार पाठमी कवेहे— इमीसेभं  
तेज्जावकिंसा तो पयावो । एव रज्जममाविविजेविदे हेमगवन् । यावत् नारकी अं जामीवे ? पबका अज्जाजोवे इतिप्रय उत्तर । मायमा वापीवि स

या द्वे एव ते वाच्ये स्यातामिति ॥ तित्तिङ्गलाकारः ॥ इत्यत्र यदि मत्पञ्चागधुताद्याने विजङ्गाण्यपूर्वकालजाविनी चित्रह्येते, तथा क्षीतिर्जङ्गलान्नस्यसेष  
 स्यत्या तेषां किन्तु ऋषस्याववाइना सो, ततोऽप्यपावगाइनाभयेदीवा क्षीतिजङ्गका रूपा भवउपादति, योग्वारे ॥ एवंकायजीएति ॥ इह यद्यपि  
 कवसज्जनैरुकाययोने द्धीतिर्जङ्गाः कुलवलि तथापि तस्या विखड्डका त्सामाभ्यकाययोगोपाग्रपशाश्च समधिप्रति कृन्नेति, उपयोग्वारे ॥ साया  
 प्रथमाप । तप्तीजेनैः

नयन्नाए । इमीसेर्नन्ते ! जाय स्यान्निबोहिणणणे यहमाणे ? गोयमा ! सत्तावीस जगा , एवतिस्सि  
पाणाइ तिरिस्सुखाणाइ नाणियद्दाइ ! इमीसेण जाय किमणजोगी वयजोगी कायजोगी ? गोयमा !  
भीदि । बेमोतम । आनापविसे सप्पाना पबिन्ने । विदि ।

श्रीगोविन्द । इमौतम । ज्ञानापरिच्छेद अज्ञाना परिच्छेद । तिष्ठित्वाचार विद्यमा । अ सम्यक् नरकने विदे अपत्ते तिष्ठने प्रबल समयवती चारंभीकरो भवप्र  
 त्व परविद्यानहाव तेमटे तौनप्राप्त निवर्तयेइहा । तिष्ठित्वाचार मन्त्राए । तथा तौन पञ्चाननौ मन्त्रा ते कदाचित् होय कदाचित् तौन, तकिम  
 विद्याइहो एव सन्नो जगत्वे एव परसन्नो जगत्वे जे संज्ञोवा अपत्ते तेहने प्रबलसमयवती चारमोकरो विमगसेतो तौन पञ्चानहाव भवप्रत्ययवो, पत्तेजे ए  
 सन्नोवो अपत्ते तेहने चामुंइतंनो परे विमयज्ञाननो उपपत्तिहाव, तमाटे तेहने पूर्वैयेपञ्चान हुता एहे विमगपञ्चान ज्ञपनो एभजना जाववो । इमो  
 सधमतत्रापचाभिदिवादिह शब्दइमाशावत्तानोसंभवा । एह एवमा सुविज्ञानविदे देभमन् । जावत् चाभिविवाधिक ज्ञाननेविदे वत्तमान नारको  
 सं जाववतहाव इतिप्रत्र एहापवि सत्तावोसर्मागा दुवे । एवतिष्ठि हावाइ । इस चाभिविवाधिक ज्ञाननोपरें तौनप्राप्त तौनपञ्चान कहवा, इहांवीन  
 ज्ञान इवंबुद्धंते चाभिविवाधिकज्ञान घेरो नक्खे भग्गवा वेहीक कहवा । तिष्ठित्वाचार भाविपथाइ । इहांवा मति पञ्चान श्रुत पञ्चान एवेइ विमं  
 मनवो पूरबासे सावना विवसावावे ता चयोमाया पामीवे तेहना भक्त्यपचावकी, किन्तु ते जगत्त्य पञ्चमाइनाहे पने जगत्त्य पञ्चमाइना चात्रीव ए  
 मोमाया जाववा, हाइ ८ । इमीसेप जावविमयवकीवो कयजागो जावकीमो । एह एवमापुजिवोने विदे नारकी जावत् खंमनबोगीवे, वचनबोगीवे,  
 जाववागीवे इतिप्रत्र, उत्तरं । मोरमा तिष्ठि । हेमौतम । वोमेई एतले मनोबोमो परिच्छेद, वचनबोगीपरिच्छेद, जाववागीपरिच्छेद । इमीसेप जाव मय

रोचन्मसि ॥ आकारो विदोवांशयश्चक्षुः सौन सहेति साकार साद्विकसो जगत्कार सामान्यग्राही त्वर्थः ॥ बाणसोसासुति ॥ रवमनापु  
चिबीमकरपव च्छेपपिपीमकरा न्ययेयानि केवल सेश्यासु विजय स्तासा निखत्वा दत्तएव तद्वर्णनाय याथा ॥ काश्चोद्व्यादि ॥ तय ॥ त्वयाए

तिथिपत्रि । इमीसेणं जाय मणजोए यहमाणा सत्तावीसजंगा, एव कायजोए । इमीसेण जाव नेरइया किं  
सागारीयउसा झुणागारीयउसायि ? गोयमा ! सागारीयउसायि, झुणागारीयउसायि । इमीसेण जाव  
मागारीयउतै वहमाणा सत्तावीसजंगा, एव झुणागारीयउतैवि सत्तावीसजंगा, एव सत्ताविपुववीरुनेनय

अ-८-६६ना-८१ सत्तावीसजंगा एव इवइयाए । एव रज रजमापुविबोनिद्वि बावत् सत्तावीसजंगा कत्तमाज आरका झू दुलहुवे इतिप्रत्य उत्तर इयोत  
य ! सत्तावीस भांगा इवे इम सकन्याने पविमत्तावीसयोया, इमकायजोए यदि सत्तावीसभांगा इका यथापि केवल कामच कायजोए यमीभांगावुवे,  
नेरइयाविमागारावकता । एव रजमभापुविबोनिद्वि बावत् आरको झू पाकार ककता विधेयार्थ पञ्चयन्ति तिवै सद्धित ते सागार एतलं सानोप  
यम कशेये तत्ता । पचागारावकता । यमाकार ते सामाग्राव घाही ते स्यनापयोग कशेये तेमाटे तेनारको ज्ञानोपयोगीवै विवा स्यनोपयोगीवै,  
इतिप्रत्य, उत्तर । गोयमा मामारावकतावि । इ मोतम । साकारापदुलपविबै, एतले विधेयावयाही ज्ञान तेवै सद्धितयसिबै । पचागारावकतावि ।  
पचागारापदुल पविबै सामाग्रावयाही उयन ते सद्धितयसिबै, कको गौतमपुल्लवै—इमीसेणकावसागारावकतेवइमासासतावीसजंगा । एव रजमभा  
विबोनिद्वि आरको सवत् साकारोपयोगी सत्तावीस भांगावुवे तेकवै—इतिप्रत्य, उत्तर । सत्तावीस भांगावुवे । एवं पचागारावकते  
विमत्तावीसजंगा । इम सत्तावीस भांगावुवे पवि सत्तावीस भांगावुवे तेकवै—इतिप्रत्य, उत्तर । । किति याविदेइ इयहार रजमभावे कक्षा । एव सत्ताविपठवो  
या वेरवापा सवत् सभासु । इम रजमभा पविबोपचरनभौपरे सातेऽ पविबोनिद्वि स्य इयहार यावता कइता, निखेवस सैमानेविधे विधेय

भीसियति ॥ बालुक मन्नाग्रकरणे उपरितनभरणेपु कापोती अपस्तनेपु नीली भवतीति ते यथासम्भव अग्रसूत्रे उत्तरसूत्रेण चोत्तये इत्यपः  
यच्च सूत्राभिसारेपु नरबावावसङ्क्रान्तात्त्व तत् ॥ तीक्ष्णपद्मदीपादित्यादिना ॥ पूर्वमवर्द्धितान् समवसेयमिति एवम्ब सूत्राजित्वापः कायः - स  
करप्पमायकप्रते । पुढीए पढवीसाए नरयावासवयसहरसेसु एवमेगसि मिरयावाससि कलसकाठं पकसाठं ? गोयमा ! एगा काठसेसा पकसा  
सकरप्पमायक प्रते ! काव काठसेसाए वहुमाका मरुपयाकिमोरोवठसा ? इत्यादि ॥ काव सत्तावीसिप्रगा ॥ एक सर्वपृथिवीपु माथानुसारं वा

छाठं, गाणसलेसासु ॥ गाहा ॥ काठयदोसुतइयाइ मीसियानीलियाचउत्थीए । पचमियाएमीसा कएहात  
सीपरमकफ्हा ॥ १ ॥ चउसठीएण जते ! असुरकुमारायाससयसहस्सेसु एगमेगसिअसुरकुमारायाससि असु  
रकुमाराण केवइयाठिइठाणा पकसा ? गोयमा ! असुसखेजाठिइठाणा पकसा तजहा-जइसियाठिइ जहा

ते सुवोद्यदो, तेसाटे माकावे देवावे-काठयदोसुताबाए 'नीसियाची'दियाचउत्थीए पचमियाएमीसा कएहाततापरमकफ्हा ॥ १ ॥ कापात से  
या पचिचो बीकी एचिवीनेविं पुवे, तीको वाहुकप्रमाने छपरिले पावे के कापोतसेका पुवे, गोचरे पावे नीलसेका पुवे, ते बवासमे प्रसूच व  
इया, बीकीनेविं एकको नीलसेका पुवे, पचमीने विं नीलकण मिय कोरैविं एकको कणसेकापुवे सातमीनेविं परमकखेका पुवे, ए नारकी  
ना चधिकार कयो । इविं चतुक्रमको भवनपदोना चधिकार कहे-चउसठेबंभते असुरकुमारावाससहस्सेसु । चउसठे हे भवनन् ! असुरकुमार  
ना बाबास काचनेविं । एयमेनंविं असुरकुमारावाससि । एकेका असुरकुमारना आवासनेविं । असुरकुमाराबेकवइयाठिइठाणा पकसा । असुर  
कुमारने बचाकाचकारे केतसा स्मिस्मान् भाजकाणा विमान कया इतिप्रश्न । गोयमा असुसखेजाठिइठाणा पकसा तजहा जइसियाठिइकावेर  
यातहा । हे भीतम ! असुस्वाणा स्मितस्मान् कया तेकहे-अथस्मिस्मिति इत्यादि किम नारकीकया तिम असुरकुमार पचिक्कवा, । ववरपडिओ  
माभगामाचिरया । एतसोविंयेव प्रतिहोम कहता उपरीठा मांसा कह्या, ते किम नारक प्रकरबंभे विं कोपमानादि चतुक्रमे मांगा मांयागा निद

यं पशुकुमारप्रवरवे ॥ पशितोममंति ॥ नारदप्रवरवे हि शोधमावादिना जनेन भङ्गनिर्दिष्टा हती, शशुकुमारादिप्रवरवेपु लोचमायादिना  
 शीवायात्यर्पितएवाह ॥ सर्ववितायहोष्यतोहोवतति ॥ देवाहि प्राणोसोमबभोप्रवति तेन सर्वे पशुकुमारा लोचोपयुक्ताः स्युः द्विकसयोगेन  
 सोमोपयुक्तत्वे यदुवचनमेव मायोपयोने त्वेकवचनत्वाप्यागृहीतकृत्वा देव समविद्यति भङ्गत्वा कायाः ॥ ववरकाउतत्राखिपवति ॥ नारकाया  
 पशु कुमारादीनाम् परस्परं भागारं ज्ञात्वा प्रहृष्टा स्युतरपूजयन्ति शण्डेयानीति इदं तत्र नारकाया मसुरादीनाम् सहनसंस्थानत्वेनयासू  
 श्नु प्रवति तदैवं-चरवरीयं व्रते । पशुकुमारावसयसहस्वेन एवमेव हि पशुकुमारावासहि पशुकुमारावं सरीरगा क्लिप्तपयवी ? मोय

नेरइया वहा, नवर पशितोमात्रगा ज्ञाणियहा, सर्ववितायहोज्ञा लोचोयउत्ताय माणोवउत्तेय एए  
 जगमेणनेयह, जाव यणियकुमारा, नवर नाणस्तज्ञाणियह, अस्खेजेसुण भंते ! पुढविकाइयावासस  
 यसहस्वेसु एगमेगसि पुढविकाइयायासंसि पुढयिकाइयाण केवइयाठिइठाणा पसुत्ता ? मोयमा ! अस्खे

यवीथा यने पशुकुमारादि देव प्रवरवरवि काम माका पादिहे भोवाका निर्देयवरवो, तेवीज वरेह-सर्ववितायहोज्ञा लोचोवउत्ता । देवता प्रा  
 ॥ लोमो वचाह, तिवेकारवे सयवाह पशुकुमार लोमवतह, ए पशवीमो एकभाया ववा ॥ हिने द्विकसयोगेर्माया ॥ पुवे, कामवत ववाव पुवे तेमा  
 टे साभे यदुवचनहीज पुवे, ॥ पइया लोमोवउत्ताय माकावउत्ताय एएयमेव वेयवं ववर वावत जावियण । मायानेविने एकवचन तवा यदुवचनवो  
 माका पुवे, इन सब सत्तावीसर्माका करका एतवो विवेक नारद यने पशुकुमारादिकने मांजी मचि माकाज जापी पशुकुव वचवा, नारजी यने व  
 मरइमाटादिकन सबइवसजानवेकासुनेविने माकाजवा एनिमेपछे तेविचारोने वचवा । जाव वचिवकुमारा । वावत् पशितकुमार मीह वचवी  
 । एमयेगेनिपुढविकाइयायावचि । एवेका एविनेकाविक माकावने विने । पुढविकाइयाया वचवा ॥ पशवी-पशिवचना सीताया विने

मा । अथपयसी जेयोगता इहा कता तेतसिं संणयताएपरिबमति एव संठाणेवि नवर प्रवकारिबिब्लासमवरसंठिया उत्तरवेठविद्या अस्समर  
 नठिया यवसेसासुयि यत्र असेसाठ पकसाठ १ गोयमा । यत्तारि तजहा अशानीसाकातेतेसेका पठसहीएवं आवकयइसेसाएवहमाका किबोको  
 वउता २ ४ । गोयमा । सवेयिताय होखलोहोवउताइत्यादि ॥ एव भीसाकातेतेवि ॥ मागकुमारविमकरकेपु तु - बुलसीएमागकुमारवासासयसह  
 मसु इत्येवं, अउठोयसुरावंतागकुमारकोइबुलसीति ॥ इत्यादे येषमा एमसयूयेपु प्रवनसङ्गा नामात्त मवगम्य सूत्रानिस्सायः कार्यइति ॥  
 एवपुबिबिब्लासयसुठोकेसुचनययति ॥ पविबीकायिका एवेकसिन् कयाये उपपुष्पा यइयोत्तप्यन्त इत्यजङ्गलं यइस्ववि स्यानेपु, नवरं ५ ते  
 उमेसाएचमीइनगति ॥ पविबीकायिकेपु सेइयाद्वारे तेकोसेइका वाच्या साव यदा देवलोका ऋणुतो देव एको मेकोवा पविबीकायिके पूरपद्य

ऊा ठिइठाणा पयसुता तजहा—अहसिण्याठिइ जाय तप्याउगुक्कोसियाठिइ । असस्वेजेसुण नते ! पुठविका  
 इयायाससयसहसेसु एगमेगसि पुठविकाइयावाससि जइयाठिइए यहमाणा पुठविकाइया किंकोहोवउत्ता  
 माणोयउता मायोयउता छोन्नोछउता ? गोयमा । कोहोवउतावि माणोवउतावि मायोवउतावि छोहोय  
 उतावि, एवं पुठविकाइयाण सवेसुयि ठाणेसु अन्नगय, नवर तेउलेस्साए सुसीइजगा, एव स्याउकाइ

विस्मान कम्म इतिप्रउत्तर । माबम। असवेसा। विहावा पउता तजहा । हे मातम । अससाया कितिस्यान कद्धा तेवरेइ—अइविद्याहिरे । अथव  
 विवि । आबतप्याउमुबाधियाहिरे । यायव तेकाव्य उत्तरउ कितिस्यान । असवेजेसवभतेपुठविकाइयावाससयसहसेसु । असंजातामेविदे हे भयवन् ।  
 इबिबोबाविकाबाव यतनइल सपमेविदे । एमवेगसिपुठविकाइयाससि । एवेका पु बमोकाइकावासने विदे । अइविहिरेएवहमावापुठविकाइया  
 वि काइवउता मायोवउता । अइवलिनिमेविदे बतमानकपापविबोकायिक अ कोचवंत बुवा मानवत बुवा । माथावउता । मावासहित बुवा । को  
 भोरउता । मोभसहित बुवा, इतिप्रउत्तर । माबमा । काइवउतावि । हे गोतम ! कोचवंतववाहोव । माचोवउतावि । मानवंतहो ववाहोव । माभोव

ते तथा नयति तस्य भदेभ्योऽपि प्रयत्ना दृष्टीति प्रकृता भवतीति, इह पृथिवीकायिकप्रकारे स्थितिसामान्यतः साक्षा क्षिप्रितमेवास्ति क्षेपा  
 विलु मारुतस्य द्वाप्यानि तत्रच यदरे भाग्यर्थाविपुलमेत्येतस्यां मुपुले मर्मास्य निह प्रसृत उत्तरत यावसेयम्, तत्र शरीरादिषु सप्तसु द्वारे  
 द्विरे - समनेनेमुपनंते । पुढविनाइयावामसयइस्वेसु जाव पुढविकाइयाव काइ शरीरा यथा ? गोयमा । तिमि तजहा उरासिए तेयए  
 कथए ॥ यतपुत्र ॥ कोरोयउतामि माकोवउतामोत्मादि ॥ बाधं तथा ॥ असंखेजेसुखं जाव पुढविकाइयाव शरीरमा कि सुपयरोत्सावितमैव  
 चहरे ॥ पागना मपुसा समपुसा शरीरसपायसमे परिणमति एवं सत्त्वानुदरेयि किंनूतरे - इमसंठिपात्तावववाच्यं ननु दुविहा शरी  
 रमा ययता तंजहा यवपावखिज्जाय उतरयउविपायेत्यादि ॥ पृथिवीकायिकाया तदभावा दिति लेहयद्वारे पुनरेव वाच्य पुढविकाइयाव नते -  
 कानेकाठं पयताठं ? नायमा । चत्तारि तजहा कइलेसा जाव तंउलसा ॥ एतासुच तिसय प्रकृजमेव तेजोसेइयाया त्वस्तीति प्रकृता, ए  
 तव मागवो त्वमिति दृष्टिद्वारे इदं वाच्य - असंखेजेसु जाव पुढविकाइया कि सत्त्वदिहो सत्त्वामिच्छादिहो ? गोयमा । निच्छदिहो  
 होयं तपेव प्रानद्वारेयि तपेव एवर पुढविकाइयाव नते । किं नाकी सत्ताकी ? गोयमा । नो नाकी सत्ताकी निदमादुपकाकी योगद्वारेयि  
 तपेव, मवर पुढविकाइयाव नते । किं मवजानी पइजोणी कायजोणी ? गोयमा । मीयजोणी मोवइयोणी कायजोणी ॥ एव साचकाइयाचिति ॥  
 पुयिवाकायिजव दप्कपिमा अयि पाया सति दशसुपि स्थानके वनप्रकृता कोकोलेइयायाया प्रीतिप्रकृजवन्तो यत कोयपिदेव सत्त्वद्यतइति ॥

याचि, तेउकाइया याउकाइयाग ससंसुधि ठाणेंसु अग्रगय, वणप्फदकाइया जहा पुढविकाइया, येइं

उतादि । मागवतहो सर्वाशयः । कोभावकतादि । साभवातको यवो होय । एवउठविकाइयावसमेसुविज्ञायेवयमय । इम पुढिरोकायिक एवं स्थान  
 बनेरिये चर्ममकके, प्वांमटे यकिचोकाडिज एकेव कयावसहित चरां पामोदे तमाटे इयेर कागकनेमिये यमगकइवे । चरतेउठेआएपयोउमना  
 तजोविमये तेजोमोयानेविमै पयोमोगा कइया, पृथिवीकायिकनेविमै केय्याहारे तेमसिमा कइजो, तिको को देवगतिवो चवो देवता एक भयया च

ते उक्ता इत्युत्तरी ॥ मन्त्रे सुविधाये मुक्तिः ॥ स्थितिस्थानादियु दक्षस्य व्यज्रपुङ्खं क्रीडाद्युपयुक्ताना मेऽन्यथा नोत्पद्यन्त इति ।  
 तेऽन्येऽन्यथा सपु नास्ति सत स्तरसम्भवा व्याधीतिरपी त्यनङ्गकसेवेति एतेषुप मूत्राणि पृथिवीक्रियिष्यमग्निं क्षेत्रलं वायुक्रियामूत्रेषु शरीरद्वारे एव  
 मध्येयं ॥ घनमेजेऽनुत्तुर्त्तुं नत । आद्य याता इयाखं कश्चरीरा पण्डिता ? जीयमा । चत्वारि तज्जा-ठराखिए यज्जियं ते ए कम्मएति ॥ घण्डकइकाइए  
 त्यादि ॥ यत्तरपत्तयः पृथिवीक्रियिष्यमायकव्या दगस्त्रयि स्थानकेषु जङ्गलानायातेऽलोक्षयापाम्ब तपीवा क्षीतिजङ्गलरुद्धायादिति, ननु एयि  
 व्यम्बुवक्ष्यतीनां दृष्टिद्वार सास्यादनजायेन सप्यज्ञ द्रुमपत्र्ये वानुपगम्यते ततएव ज्ञानद्वारे मतिज्ञान भुतज्ञानम्यालया द्यौतइत्ये वमञ्जीतिजङ्गलः  
 मय्यादक्षनानिपोषिचक्रुतज्ञानेषु प्रयन्तु ? नैव पृथिव्यादियुसाश्चाह्ननावस्या स्यन्तपिरसत्वेना यियिखितत्वा ततएवोच्यते उभयानाया ॥ पुढवा  
 इवसु विगमसु होज्जमययस्यति ॥ उभय अतिपद्यमानपूर्येतिपक्कएपमिति ॥ वईदिएत्यादा येव ॥ महरपठना ॥ वेईठालेई नेरइयाखं असि  
 इतया तदिं ठाकइ येईदिएतेईदियवउरियाखं असिरेयेवति ॥ तत्र एकाविंसहस्रतान्तसमयाविकाया अपन्यस्वित्ती तथा अपन्याया मवगाइना

द्विय तं द्विदिय घउरिदियाण जं हिठाणेहि नेरइयाणं असीइचेय , नवर अय्झहि

न च पृथिवीऽपानेविने अत्रमे ताहाव तिवरे तेइता एवपणायो अयोभागा इय । एवपाउकाइयावि । इम पृथिवीकायनोपरे अप्कायिष पयिक्कइया  
 । तेर स्थानके अभयक तेअनिम्योपयोभागा, अयोभागा अप्कायनेविने एवदेउताखपखे तेमाटे । तेरवाइयवाउकाइयाखन्मेसविडुबेसुपमय । तेउ  
 कायन याउवाउने मगसेर उयेर स्थानकनेविने अभयक एकायेविने काधेखरौसुद्धित वषावने, इवा देवता न उएजे तेमाटे तेकासिक्का तेइनेविनेई, वा  
 यनेतिने शरीर ॥ खइया, पीरादिक । वेकिय २ तैजसइ कामर ॥ एव ॥ तक्कएकाइयाजहापुठविकाइया । वनप्यनीकायिष पृथिवीकायिष समा  
 मक्कइया, उमेर स्थानके भागाव । यमावसो अभयक, तेकासिक्कनेविने तिमकीज अयोभागाओव देउताना अप्कणामाटे जिह्वा नारकीने अयोभागावे  
 तं स्थानके । नेउदिब तेरेदिय वउरिदिवाव अहिठानेविने येरइयाण पसोइमगातेईडावेहि यवीइयेन । चेइमो तेइमो चउरिदोने अयोभागा कइया



पाच तत्रैव मद्रूपानमप्रदेशयुगाया ३ मिथकृष्टो ४ न मारकाबा मशीति जङ्गना सुक्ता विकसेन्त्रियाबा मयेतेषु स्थानेषु मिश्रदृष्टि वर्म घडीति रयात्पया तथा मनेत्र्यापि ओपाद्युपयुक्तस्य समवाय् मिश्रदृष्टिस्तु विकसेन्त्रिये मेकेन्त्रियेषु न प्रवर्ततीति न विकसेन्त्रियाया मत्रा घीति नङ्गममयवर्तति यदे स्तिव मूत्र कुतोपि पाचनाविषेपात् यत्राशीति सत्रा एवजङ्गमिति व्याख्यात इहैव विषेपाभिधानायाह ॥ मवरमि त्यन्ति ॥ एवमपः दृष्टिद्वारे दान्द्वारे च मारकाबा सप्तविंशति रुक्ता विकसेन्त्रियाकास्तु ॥ अन्नद्विपति ॥ आप्यथिकाऽन्त्यशीति प्रङ्काना स्मवति हेत्याह मय्यतो चल्पीयस्यैव विकसेन्त्रियाबा साध्यादननावेन सप्यना स्मवति अल्पत्वाच्च तेषा मकत्वस्यापि सम्भवेमाशीतिजङ्गनामा स्मवत्ये य मात्रमित्रोपिके मृतवति तथा ॥ येहीत्यादि ॥ यषु स्थानेषु नैरेपिकाबां सप्तविंशति प्रङ्ग सोषु स्थानेषु द्वित्रिचतुरिन्त्रियाबा मङ्ककानाव

याममत्तं श्यान्निघोहियनाणे सुयनाणे एषु हेच्छसीङ्गना , जेहिठानेहि नैरइयाण सत्तावीस जगा तेसु ठाणंसु मन्नेसु सुजगय , पचिठियतिरिस्कजोगिया जहा नैरइया तहानाणियछा , नवर जहि सत्तावीस जगा ,

नवर मारकोने एकादि संवत्सरात् न ममदात्तः अत्र स्रक्कित्तिनेविदै एव तथा अथ नव पयगाहनानेविदै इत्यतः सप्येवहि अथ नवे पयमाहनाने विदै तोन, मिश्रदृष्टिनेविदै चार, पयोभागा कछा, तेविजखेदोने पचि ए मिश्रदृष्टि वजितस्मानमनेविदै पयोभागावकाय, तेदना अन्नपयवां वकी ते रनेविदै एखेदना पचि खोचादिमहितना समवर्तते पने मिश्रदृष्टिनी विकसेन्त्रिय तथा एखेद्विनेविदै तपुवे । नवर पयस्रद्विवाचकते । एतखी विमेष दृष्टि इते तथा ज्ञानद्वारे मारकोने सत्तावीसभागाकछा, मिश्रा विकसेदोने पचिका एतखे पयोभागा, तेविम विकसदोने सप्यकसासादनमने इवे ते पयवां ना मनेरै पचि ते पयपुवे तेदने एकमोपचि समवर्तते तेमाटे पयोभागा कछा । भाभिपिबोहिवाबावेमुपकायेएविपयोदमया । मतिज्ञानमेविपे पचि रमधीन पयोभागा कछा, युतज्ञाननेविदै पच इमदोज पयोभागा कछया । वेहिद्वारेविपेइरयापसत्तावीसभागा । खेवे स्थानके मारकोनेविपे सत्ता वीसभागापयव, । तेमुडावेसुपयवमपयव । तेव ज्ञानकमविदै वेददो तेरदो पचरिनीनेविदै भागानो पभाबळे । पचिद्वियतिरिस्खलीचिया । पचेदो

सामिन् प्रागुक्तास्तीति नङ्कस्यान्तावशिष्टानि सप्तव्याप्तिं प्रकृत्यानायथ श्रोत्राण्युपपुक्तामा मकद्वेय यद्भूना आयादिति विकलेन्मिग्रययुग्रादिषु प  
 चिदीत्रायिस्सूत्रादी प्राप्येयानि नवरमिन् सेराद्वारे सेज्जोनेया नाप्येनया दृष्टिद्वारे ॥ येददियाकजते । किं सम्मदिही मिच्छदिही सम्मा  
 मिच्छदिही ? गोयमा । सम्मदिहीवि मिच्छदिहीवि नोसम्माभिच्छदिही सम्मदसबबहभाका बोदविया किं बोदोवठसा ? इत्यादि प्रसे उत्तरमयोति  
 जङ्गा तथा प्रान्द्वारे ॥ येददियाकं जते । किं मागोचयादी ? गोयमा । नादीवि सभादीवि सभादीवि दुआदी सभादी सुपनादीय ॥ ज्ञेय त  
 येव प्रसीत्तिनङ्गा इतिमोगद्वारे ॥ येददियाकं जते । किं मबज्जो यद्भोनी कायजोनी ? गोयमा । नोमबज्जोनी यद्भोनी कायजोनी ॥ ज्ञेय त  
 येव यय धीन्मिग्रयवतुदिन्मिग्रयसुत्रास्सपि ॥ पचिदियेत्यादि ॥ यद्भोनीकायां सप्तविंशति जेङ्गा स्तत्र पम्भन्मिग्रयतिरथा मज्ज  
 ज्जं तच्च अपम्भस्सित्यादिषु पूव दक्षितमेव जङ्गाजायथ श्रोत्राण्युपपुक्तामा यद्भूना मेकद्वेय तेषु प्रायादिति सूत्रादिषु वेद नारक्तसूत्रव दप्येया  
 नि नवर शरीरद्वारे षय विलेय ॥ असुखज्जमुकजते पचिदियतिरिक्खज्जोविद्यावेसु पचिदियतिरिक्खज्जोविद्याव केवइया सरीरा पखत्ता ?  
 गोयमा । चत्तारि तज्जा-उरालिय वेउव्विय तेयए कम्मए ॥ सवत्र चान्ज्जमिति तथा सहनद्वारे ॥ पचिदियतिरिक्खज्जोविद्याव केवइया सप  
 यथा पखत्ता ? गोयमा । स संपयका तज्जा-यद्भोसहनाराय काव केवसति ॥ यच्च सत्थानद्वारेपि ॥ खठाया पखत्ता तज्जा-समचत्तरे ६ ॥  
 एवं सेहमद्वारे ॥ कवलेसाठं पखत्ताठं ? गोयमा । कलेसा ६ ॥ मबुस्सवविति ॥ यथा नैरयिमा दमसु द्वारे वपिदि

तहिस्सन्नगय कायसु , जत्थ सुसीइ तत्थयुसीइमणस्सावि , जेहिठानेहि नेरइयाण सुसीइनगा तेहिठा

विर्यंयानि ॥ यद्भोसहनाराय । विम आचवा । यवर जर्हिठतापौसभेगातविप्रभगवचावव । एतथाविशेय वि  
 म नारकोने सत्तावीमभागा जङ्गा, तिहा पचिद्वी तिर्यवने यमगक ते जयमखिआदिक् पचिद्या देखायावे— तिहा भागानो यभावळे । जत्थपसोइत  
 लपयोएव । तिहा नारकोने ययोभागाजङ्गा तिहा पचिद्वी तिर्यवने पचि ययोभागाजङ्गा । मण्णसाविजेहिहावेहिरेरयावंमसोतिभमा । विम

ता मया मनष्यायपि नम्रितया इतिप्रक्रम एत देवाः ॥ जेहीत्यादि ॥ तत्र नारकाबा जपन्यस्विता वेकादिसङ्ख्यान्तसमयाधिवायां ॥ १ ॥  
तया जपन्यावगाहनायां ॥ २ ॥ तस्यामेव सङ्ख्यातामप्रदग्माधिवाया ॥ ३ ॥ मियेष ॥ ४ ॥ अशीति संस्कारा उक्ता मनुष्याबा मय्येते दृशीतिरेव  
तत्कारणस्य तन्मयस्यमेवेति नारकाबा मनुष्याकोष सुवया साम्पपरिहारायाः ॥ जेसुसमायीवेत्यादि ॥ समविक्षतिजङ्गस्थानानिष नारकाबां ज  
पमस्वित्यमद्वातमयापिजपन्यस्वित्यितिप्रयतीति तेषुच जपन्यास्वित्ती विक्षेपस्य वक्ष्यमाणत्वेन तद्वर्गेषु मनुष्याबा मजङ्गमं यतो नारकाबा बा  
हुन्येन कोषादययव प्रवति तन तथा सुसंविशति जेङ्गबा उक्तस्थानेषु पुन्यस्त मनुष्याबांस्तु प्रत्यक्ष कोषाद्युपयीगवता बहुमां जावा क मया  
पा दये विद्रोयास्मि तन तथा तेषु स्थानेषु जङ्गमाजावहति इहैव विक्षेपाभिचानायाः ॥ नवरभित्यादि ॥ येषु स्थानेषु नारकाबा मझीति  
जपु मनुष्याबा मय्यगीति स्मया ॥ जेसु सहावीसा तेषु राजनयनित्युक्त कयल मनुष्याबा मित् मय्यधिक यदुत - जपन्यकस्वित्ती तया मझीति

ननु नारकाबां तव सुसंविशति रुक्ते त्यजङ्गक तथा आहारकक्षरीरे अशीति राहारकक्षरीरेवतां मनुष्याबा मय्यत्वा कारकागान्तु तत्वास्त्ये वेत्येत  
न्यपिने मनुष्याकामिति इहैव नारकयूनाकाभमनुष्यूनाकाभ प्रायः क्षरीरादिषु वतुषु ज्ञानद्वारेणच विक्षेप स्थापि ॥ असंकेजेसुखं प्रते ।  
नवरमायावेतु मरुतमार्गं कइ क्षरीरा पक्षता ? गोयमा । पच तंजहा - ठुरासिय वेठक्षिण आहारए तयए कलए असंकेजेसुख जाव ठुरासियस  
रीर कहमाका मबूमा कि कोहीवउतावि ४ ॥ एव सुवक्षरीरपु नवर माहारकेकीति जेङ्गकाना माथा एव सहननक्षारेपि नवर मनुस्वाय जते  
यहमपमगा पक्षता ? गोयमा । ज मपयका पक्षता तंजहा - वररोसइभाराए जीव ज्येयठे ॥ सुखानद्वारे ॥ असठाबा पक्षता तंजहा - समचउरसे  
जाय जुठे ॥ सैरयाद्वारे ॥ असमउठे तंजहा - कइहलेसा प्राव सुकलसा ॥ ज्ञानद्वार ॥ मनुस्वाबं भते ! कइमाकावि ? गोयमा । पच तंजहा - आभि  
पियोहियनार्गं ॥ एषुच केयलवर्जं यमङ्गक केवसेतु कयायीवपण्य नासीति ॥ वाकमतरेत्यादि ॥ जतारादयो वक्ष्यपि स्थानेषु यण - ज

वमवाचिन सायावाप्या यथा सुरादीना मनीति प्रज्ञा यत्र सप्तविंशति सप्तत्रय व्यन्तरादीना मपि ते तथैव वाप्या प्रज्ञा सु सोममादी  
विषया ध्येतव्या सत्र प्रवक्तव्यविधिः सह व्यन्तरादां साम्यमेव ज्योतिष्कादीना तु न तथेति ते सया सवया साम्यपरिहारसूचनायाश्च ॥  
वयदं नात्यत प्रादियद् अस्सति ॥ यज्ञेययादिगत यस्य ज्योतिष्कादेर्नानात्वं सितरापेक्षया प्रेव सज्ज्वातव्यमिहेति परस्परतो विज्ञेय छात्वा  
एतेषा मूषा स्याप्ययानीति प्राय सत्र सेवयाद्वारे ज्योतिष्कादा मन्त्रेय तलोत्पदावाप्या ज्ञानद्वारे श्रीविद्याना न्यज्ञानान्यपि ब्रह्मस्यैव अस्मिन्  
नां तत्रोपपाताभावेन विप्रकृत्या पर्याप्ततावस्थायामपि प्रावात् तथा येनाभिज्ञाना सत्याद्वार तेजोलेइयादय सित्तो लेइयावाप्या ज्ञानद्वारेव

णेहिं मणुस्साग्रि असीद्वनगा जाणियद्धा , जंसुसत्तायोसा तेसुअन्नगय , नय्वर मणुस्साण अस्मिहिय जह

नारको दयहारनेर्दये कक्षा तिम मनुष्य पवि कङ्कवा तेहोव खेहे—विष खान्ते नारकोने ज्योतीना कक्षा । तेहिहाराहेइमसुख्यावविषसीरम  
नामावियवा । तिचे खान्ते मनुष्यनेपवि ज्योतीनमाया हुवे खेकारवे एहना पक्षपक्षामाटे नारको पुने मनुष्यने सब समयको परिहार करतो  
खेहे—अससत्तायोसातमुपमतवं । जिह्वा नारकोने सत्तावीसर्मायाकक्षा, तिह्वा मनुष्यने पक्षगव भयानो भभाव । एवरमसुख्यावमहिषजहखिवाए  
हिरेपहारपरमोहभया । एतदाविशेय मनुष्यने अविद्या मनुष्यने खवस्वकित्तनविवै ज्योतीनाहुवे तथा पाहारकयरीनेविवै पवि ज्योतीनाहुवे,  
वचमासी । वातव्यतर ज्योतिवो वैमानिक एतोन विम भवजपतो कक्षा तिमसङ्कवा, जिह्वा अक्षरादिक्के ज्योतीना पक्षवा सत्तावोस मागा  
तिह्वा अक्षरादिक्के पवि तिमसङ्कवा, कामपादिदेई कङ्कवा, मयजपतो व्यतरनेतो सरोकापकाहे पवि ज्योतिने नही तेहने सर्वथा साम्यपरिहा  
र करतो खेहे—एवरपक्षपक्षमाविविषजलकक्षापक्षतर । एतदाविशेय मामात्र जाणवो खे जेहमेविशेय जाणवो खेहमेविमत जेहमे बीजानी अपे  
मायेभेदवे, तेविशेयको एहना सूत्र कङ्कवा इतिभाव । सेवमति भतेति । यावत् अगुत्तर देवसमेवपक्षवा गौतमकई तइति हेममवम् । तनेकहुं ते सत्यवे

श्रीविद्याना न्ययानामिनेति वैमानिकसूत्रादिवैभवमप्येयानि ॥ सखेज्जेसुखं जते ! वैमाद्वियावाससयसस्सेसु युगमेगंसि वैमाद्विया वाससि केवइया  
 ठिइठावा पवता । इत्येवमादीनि ॥ इति प्रथमश्लोके पञ्चम उद्देशः ॥ ५ ॥ अथ यद्वै वैमाद्वियावाससयसस्सेसु युगमेगंसि वैमाद्विया वाससि केवइया  
 न्यो नन्तरोद्देशके ज्ञानमसूत्रेषु ॥ अस्मिन्नेषुच जते जोइसियविमावावासेसु ॥ तथा ॥ सखेज्जेसुखं जते ! वैमाद्वियावाससय सस्सेसु इत्यतद्वीत  
 तेपच ज्योतिषविद्यानावावाः प्रत्यक्षायेति तद्वैतद्वीत स्मृतीत्य तथा आवासे इतियुक्त माद्वियावाया तच्च दत्तायितु माइ ॥ जाव इयासुइत्या  
 दि ॥ आवाइपाठेति ॥ यत्परिमावात् ॥ उवासतराठेति ॥ अवावावावात् आकाशविशेषा दवकाशरूपान्तरावावा याव त्वकाशाशान्तरस्थित इ  
 त्यर्थः ॥ उदयतति ॥ उदय सुदुष्कल ॥ चक्षुषोऽप्युपार्थति ॥ चक्षुषो दृष्टेः स्पर्शेव स्पर्शो ननु स्पर्शेव चक्षुषोऽप्युपार्थति ॥ अत्रात्रकारित्वादिति चक्षुः स्पर्शो स्त ॥

शिष्यठिइए आहारएय असीठजगा , घाणमतरजोइसवेमणिगया जहा जगगवासी , नथर नाणह ज्ञानियह  
 जजस्स , जाव अणुत्तरा , सेवनेते जतेसि ॥ पढमसए पचमोउद्देशो सम्मसो ॥ ५ ॥ जाय  
 इयाउण जते ! उवासतराठे उदयते सूरिए चस्कुफास हइमागच्छइ अत्यमतेयियण सूरिए तावतियाठे

पढममस्यपचमा १ ए पडिवा यतकना पोचमा उद्देशागा ठव्वाव विष्णा ॥ ५ ॥ द्विवे जहो उद्देशो कथेवे -- तेइनो ए सवव  
 पडिवा उद्देशे पंतमूचनेविवे ज्योतिषीना विमानकडा ॥ द्विवे तेइनो प्रमचगति कथेवे -- जावतियापोचभते । निच परिमाचयो जेमगवन् ! अक्कार्या  
 तरवको चरवायकप चतरासवकी । उवासतराथासद्वतेसूरिएचक्षुफासहमागच्छइ । जगवो सुव इटिअय योप्रपावे सोखिम चिवारे मूय सुव य  
 अतरमंडले जय तिवारे ४०२६९ बाजज बोसठीया २१ भाग अगता मूय इटिपावे । पळमतेविचयचसूरिए । पावमता यदि इमज मूय । ताविवाचो  
 वेरउवासतरापीवकुप्पासअज्जमानच्छइ । तेतवाहीव बीवन ४०१६९ बोसठीया २१ भाग अक्कार्यातातरवकी चक्षुअय अनावकोहीज पावे ववा बी  
 आर्मइवनी विगतिपनेरा मूचवकी आपवो इतिप्रच उत्तर । वंता गोयमा । जावतियापोचउवासतरापीवद्वयेतेसूरिएचक्षुफासहमागच्छइ । वंतीयो

इवति ॥ श्रीं किससर्वाङ्ग्यसारमण्डले सहस्रवर्गिरेणित्यीजमाना सहस्रेषु द्वयोः शतयोः स्त्रियष्टौ च साधिकाया वक्षमान उदये वृश्यते, असासम  
 मय्येव एवं प्रतिमण्डल दर्शने विज्ञेयोस्ति सप्त स्थानान्तराक्षयेः ॥ सवृत्तं समतति ॥ सर्वतः सर्वासु दिक्षु समन्तात् विदिक्षु एकामोवेती ॥ उन्नासह  
 त्यादि ॥ अत्रमासपति इत्यप्रकाशयति यथा - स्युत्तरमेव वस्तु वृश्यते उद्गोतयति प्रक्षमभाश्रयति यथा - स्थूलमेव वृश्यते तपति अपनीत  
 गीत इति यथाया मूलं पिपीलिकादि वृश्यत, तथा करोति प्रजासयते, अतितापयोगा द्विदोपतोपनीतयति विधत्ते यथाया मूलमतर  
 वस्तु वृश्यते तथाकरोतीति एतदेवमेवा भित्ता ॥ तंजते इत्यादि ॥ एतदेव सकजासयति उद्गोतयति तपति प्रमासयति च तदेव विं प्रदत्त ।

येय उवासतरां चस्कुप्तासं हवमागच्छह ? हता गोयमा ! जावइयाउण उवासतरां उदयंतेसूरिण  
 चरकुप्तास हवमागच्छह, स्यत्यमतेयि जाय हवमागच्छह, जावइयाण जते ! खंत्त उदयते सूरिण स्याय  
 वेण सवृत्तसमता उन्नासेह, उज्जोएइ तवेइ पनासेह, स्यत्यमतेवियणंसूरिण तावइयचेव खंत्त स्यायवेण  
 सवृत्तसमता उन्नासेह उज्जोएइ तवेइ पनासेह ? हता गोयमा ! जावइयाण खंत्त जाय पनासेह तजते  
 तम । जिच परिमापणी पवकायांतरवको जयता सूव हटि अर्य योस पावे ८०२६१ बाजन २१ भाग । अत्यमतेविजावइवमागच्छह । पावमता  
 यदि इमज जावत् उवावका चहुसय पावे ८०२६१ बाजन २१ भाग । जावतिवापावमतेसुत । जेतसू वेमववण । खेव । उदयतेसूरिणपातयेवउव्यपो  
 समतापामासेह । जयतां सूय पातपैकरी सूवने तेजेकरी समनो विग्गिनेविगे विदिग्गिनेविगे बाळासा प्रकाये जिसवसु हटिपावे । उज्जोवेइ तवेइ पमा  
 सेह । यथा उवातकरे गीतदूरकरे जिस सूख कोठकादि सीसे विग्गिणीतदूरकरे जिस सूखसु पणि हटिपावे । अत्यमतेपियवसूरिण । पावमतो पवि  
 सूव । तावतिवसेवसेत । तेतसीज निगे सेवपते । पातवेवसव्यपोसमतापोमासेह । सूवने तेजेकरी सवदिग्गिनेविगे विदिग्गिनेविगे बाळासा प्रकाय करे  
 उज्जोवेइ तवेइ पमासेह । । अत्यत प्रकाये उवातकरे गीतदूरकरे जावजमान तवे इतिप्रत्य उवात । हता गोयमा । हता गोयमा । जावतिवसेवसेत ।

स्पृष्ट मयन्नासयति अस्पृष्ट मयन्नासयति इह यावत् करवा विद् दूषय - गोयमा ! पुठ ठंजासेह नो अपुठ तजते ! ठंगाढ ठंजासेह अखोगाढ ? गोयमा ! ठंगाढं ठंजासेह को अखोगाढ एव अखतरोगाढ ठंजासह कोपरयरोगाढं तजते ! किं अन्तु ठंजासेह धायर ठंमासेह ? गोयमा ! अणुपुणि ठंजासह धायरपि ठंजासह त जते ! उळं ठंजासह धारे ठंजासह ? गोयमा ! उळपि ३ त जते ! आह ठंजासह भळं ठंजासह अते ठंजासह ? गोयमा ! आहपि ३ त जते ! आणुपुणि ठंजासह अलाणुपुणि ठंजासह ? गोयमा ! आणुपुणि ठंजासह खोअलाणुपुणि त जते ! आह दिशिं ठंजासह ? गोयमा ! नियमा अक्षिसिंति ॥ एतेपान्ध पदाना मयमाहेअकनारखारसूअस्यावृयेति ॥ अप ठंमासह इत्यनेन सह मूत्रप्रपन्ध उक्त. सद्व उल्लोयइहत्यादिना पदत्रयेण वाच्य इतिवत्सं यत्काह ॥ एव उल्लोयेइहत्यादि ॥ स्पृष्ट चेन्न मयन्नासयतीत्युक्त मयस्पृष्टनामेव दहायकाह ॥ सखूअमित्यादि ॥ सवृत्तिति ॥ प्राकृतत्वात् सर्वता सर्वसु दिष्ट ॥ सवृत्तावति ॥ प्राकृतत्वादेव सर्वात्मना सर्वकवा तपेना पति व्यसिं यस्य चेन्नस्य तत्सर्वसि अथवा सर्वं चेन्न इति अर्थो विषयभूत चेन्न खव नतु समस्तमेवेत्यस्यो पप्रदञ्जनाय सया सर्वकवा तपेना पो व्यसिं यंस्य चेन्नस्य तत्सर्वसि इतिगच्छः सामान्यत सर्वकवातवेन व्यसिं नंतु प्रतिप्रदेवा सर्वकवेत्यस्या अर्थस्यो पप्रदञ्जनायो ऽथवा सह व्यापे

કિપુઠ ઠંનાસેદ્દ સ્વપુઠ ઠંનાસેદ્દ આવ ઢાદિસિ એવ ડજોવેદ્દ તવેદ્દ પન્નાસેદ્દ, જાવ નિયમા ઢાદિસિ સેણૂ  
નતે ! સઘ્ઠતિ સઘ્ઠાવતિ પુસમાણકાલસમયસિ આવદ્દયસેત્ત પુસદ્દ તાયદ્દયપુસમાણે પુઠેત્તિત્તસેત્ત સિયા ?

यावत् प्रकाशे एतौ वचेन आयौहो । तमतेऽपि पुष्टाभास इ । से सेवप्रते प्रकाशे लघोतकरै लघोतकरै । लू फरलो लघोतकरै  
 पपईपीमासेइ आनमेकदिसिं । किवा विना फरलो लघोतकरै यावत् छदियि ऐसो पाठ ताकनै कहवो । एवल्लोवेइ सेइ यमासेइ । इम लघोतकरै  
 तपे प्रकाशे । आवचिबमाछदिसिं । यावत् निचब लू छदियि तिम कहन् । सेलूचभतेसुगति । ते नियाे हेमगबन् । सकवो सुगलोद्विगिनिविये । सुखावति ।  
 सुगने प्रातयेकरो प्रकाश सबसेन । पुसमाचकाससमर्थसि । फरसता काश समनेविये । कावइयसेतपुसइ । जेतलोचन सेये सुय । तावइयफुसमाये

ना तपव्यास्या यस तस्याप्यं इति शब्देषु तथैव ॥ फुसमाकाशसमयसिद्धिः ॥ स्पृश्यमानवच्छेदयवा स्पृशत मूर्धस्य स्पृशनाया फालसमयः स्पृश  
ग्रामालसमय इत आतयेनेति गम्यत यावच्छेद स्पृशति सूयइति प्रकृत तावच्छेद स्पृश्यमान स्पृशमिति वक्ष्य्य स्यादिति प्रश्नः ॥ इतेत्याद्युत्तर  
म् स्पृश्यमानस्पृश्यो दोक्तव्यमयमूत्रा इव नान्यमिति स्पृशनामेया चिकित्सा ॥ सोय ते ज्ञते । अलोयतमित्यादि ॥ लोकात्तः सवतो लोकाव  
सानं धर्मोभाषणं तदनन्तरयति इहापि पुठफुसइत्यादि मूत्रप्रपञ्चो द्वयो इत्येवोक्त ॥ जावभियमावद्विसिति ॥ एतद्गायनाचैवं स्पृष्ट मलोका  
म् स्पृशति स्पृष्टत्वम् व्यावहारतो दूरस्थस्यापि दृष्ट यथा-बभ्रुः स्पृश इत्यत उच्यते अवगाढ वासकमित्यायाः अवगाढत्वम्वा सतिमात्रमपि स्या  
दत उच्यते अमन्तरावगाढ मध्यवर्पानेन सम्बद्ध भूत परस्परदावगाढ शुक्लाकटिकाइव परस्परसम्बद्ध तन्वा दु स्पृशति अलोकात्तस्य अचिद्धि  
पक्षया प्रवदामात्रत्वन सूक्ष्मत्वात् वादरमपि स्पृशति कृषि द्विवच्छेदेव बहुप्रदेशत्वेन वादरत्वात् त एव सच स्त्रियैकैव स्पृशति अर्द्धोदिविद्धि  
साकाशस्या लोकात्तस्य जावात् तन्वादो मध्येनैव स्पृशति अथ मयस्त्रियैर्गुणैर्लोकात्ताना मारिमध्यास्तत्त्वत्वात् तन्व स्वविषये स्पृशति

हता गीयमा ! सृष्टि जाय वक्षस्यसिया । तजते ! कि पुठ फुसइ जाव नियमा वद्विसि । लोयतेजते !  
अलोयतं फुसइ अलोयतेयि लोयतं फुसइ ? हता गीयमा ! लोयते अलोयतं फुसइ अलोयतेयि लोयत

पठितवत्त्वमिहा । तेतमा चैव परमा बहोये इम कइवा जाव इतिप्रत्य उत्तर । हता गीयमा ! हा गीयमा ! सवतिवावत्त्वमिहा । सवयी सगली  
दिग्गिनेवियै वावत् परलो इमाकइवाहोव । तंमतेकिपुठपुसइ । ते हेभगवन् । त्वं परमा परसेछे ? जावपियमावद्विसि । वावत् नियेत्वं वद्विसि परसे  
व्यापेतकमइ । पमाकात पमाकना छेइहा तेयदि साकनाधेतमते परसे इतिप्रत्य उत्तर । हता गीयमा । हागीतम । कोधेतपमाधेतपुसइ । सोबनी  
पेत पडोदमा पतमते परसे । पडोयतविज्ञायतपुसइ । पमाकना धेतपदि सोबनाधेतमते परसे तमतेकिपुठपुसइ । ते हेभगवन् ! त्वं परमा ? पर



स्पृष्टायगात्रादौ नाविपये अरस्पृष्टारदिविति तस्या मुपूर्वा स्पृष्टति आनुपूर्वौ चेह प्रथमे स्थाने लोकान्त स्ततो नन्तरं द्वितीये स्थाने अलोकान्तइत्ये  
व भवत्यागतया स्पृष्टति अन्यथातु स्पृष्टमेव न स्या तच्च पटसु दिक्षु स्पृष्टति लोकान्तस्य पार्श्वतं यद्यतो अलोकान्तस्य प्रायात् इहैव विदि  
तु न स्पृष्टमादिना दिशा लोकविक्रमप्रभावात् द्विविद्याच्च तत्परिहारेण प्रायात् एव द्वीपान्तसागरान्तादिसूत्रेषु स्पृष्टादिपदप्रावनाकार्यो  
भवत् द्वीपान्तरान्तादिमृत्रे अदिविद्यत्यस्यैव आत्मना योजनसहस्रावगाहा द्वीपाश्च समुद्राय प्रवृत्तिं तत योपरितना भवजनां च द्वीपसमुद्रा  
प्रदेशा भासित्यो र्नामो दिक्पुस्त्य स्पृष्टां ताच्या पूर्वोदिविद्यान्तु प्रतीतेव समन्तत स्तेषा भवत्यागात् ॥ उदयंतपोयतति ॥ मद्यादुदकान्तः यो  
ताम्रं भीषपवसान निहा मूर्ध्यायेसया अर्द्धद्विस्पर्धना ताच्या प्रसन्नमज्जनेवति ॥ विद्वत्तदूखतति ॥ विद्वान्तोदूष्यान्त वद्वान्त स्पृष्टति  
इहापि पद्दिविस्पर्धना भावना यत्तोरूपपरोक्षया ऽथवा कन्वतइपयच्छपोहसिकाया तन्मध्योत्पन्नजीवजगणेन तन्मध्यर प्रापेक्षया लोकान्त  
मूत्रवत् पद्दिविस्पर्धनां प्राकयितव्या ॥ जायतेभाववर्तति ॥ इह आयाजदेव एकद्विग्नभावमेव आतये व्योमवर्षिपदिप्रवृत्तिद्रव्यस्य या आया  
तदन्तःप्रातपात्तान्ततदपु दिक्षु स्पृष्टति तथा तस्याएव आयाया मूमे वकाहा तद्रव्य पात दुष्करोस्ति ततश्च जायान्तातपात्तान्तमूद्रमयदस्पृष्ट

फुसइ । तर्जते ! किं पुठ फुसइ अयुठफुसइ ? जाव नियमा ळादिसि फुसइ । दीवते जते ! सागरत फुसइ  
सागरतेतिथि दीवत फुसइ ? इता जाव नियमा ळादिसि फुसइ, एव एण अज्जिजावेण उदयतेपोययंतं,  
विद्वत्तेदूभत, ळायतेअ्यायवत, जाव णियमा ळादिसि फुसइ अय्यिण जते ! जीयाण पाणाइवाएण किं

ये । पयइसुसइ । पयया पयपरका परसे । जावविजमाहसिपिषसइ दोवतभतेसायरतफुसइ । जावत् निजववत् अदियि परसे वसोभोतम पूहेसे -- यो  
पात होयना चत देमगवत् ! नागरना चतप्रतं परसे । सागरतेविदोभतफुसइ । कायरनो र्जतयवि होयनाचतप्रतं परसे इतिपच्छ उत्तर । इता गीयमा ।  
यो भोतम । जावविजमाहसिपिषसइ । जावत् निजये अदियि परसे ते सइसयाणम दोप वसुद खटाहै तिजिबको कर्णविथि यवोदियि पर्मादि ४

सि, ययवा; मासादवरशिक्षादे याद्याया तस्या भित्ते रवतरस्या चारोदग्यावा धनप्रातयात् मूढ मयव स्पृष्टतीति प्रावनीय, ययवा  
 लयोरेय व्यापातपयोः पुद्गलाना मयङ्गुपप्रदेशावगाहित्वा युष्मत्सङ्गाव सत्यङ्गावा सोदुर्जोविप्रायकतव व्यायान्त आतपान्त मूढे मयव स्पृष्टती  
 ति स्पृष्टगाभिसारादय प्राचातिपातादिविपापस्थानमयवमरुदरपदंभा मयिस्स्यात् ॥ अत्योस्यादि म अस्त्विति ॥ अस्त्ययमयवः ॥ क्षिरियाकज्ज्वइति ॥

रिया कज्जइ ? हता स्थित्य । सान्ते ! किं पुठा कज्जइ धुपुठा कज्जइ ? आव निष्वाधाण ठाक्षिसि आधा  
 य पनुच्च सियत्तिदिसि सियच्चउद्विसि सियपचविसि । सान्ते ! किं कनाकज्जइ शुकनाकज्जइ ? गोयमा !  
 कनाकज्जइ नोशुकनाकज्जइ । सान्ते ! किं शुकना कज्जइ परकनाकज्जइ तदुन्नयकनाकज्जइ ? गोयमा !

दियि इम छदियिनी समयना कइवी । पनदरवमिस्वानेवउदगतेपाथत । इम रवेयकारेकरो पचीना धत भावभापतप्रते परसे । छिबतिदूसत । छेद  
 ना पतते कयवना पतप्रते परसे । कायतेपातवतवावविरमाहविधियुक्तर । कावार्गधव धूयनापतप्रते परसे खं यवी मायाद भौतवेविये धूप वठवी  
 उत्तरतो काइवी मायत् विवे छदियि समयनापुवे, समयनाया पचिवार ववीव प्राचातिपात पाविदेरं पठाद पापकानक ववी कयनो वनं समयना  
 तेइप्रते पचिकरी कइवे — पचिकरं भतिवीवायं पाचारवाएवं किरवा कज्जइ । पचि कइतावे वरति वाक्कासंकारे एपव देमयवन । जीव प्राचातिपा  
 तिनी दिवा पापचवे वेडोवे साकिवा कइये, कसकरी क्रियावीव इतिप्रत्त । उत्तर । इता अस्ति । भागीतमवे । सान्ते विपुडाकज्जइ । तिवा हेमग  
 वन् । मूफरवीववी इव । पपुडाकज्जइ । अथवा पचकरीवी इय । आवविवायाएवकविधिं । मायत् विवा पचोव जेजोनको तिवां छदियिने पचरी  
 क्रियामगे । वावतपकम सिबतिदिसि सिबचठदिसि सिबपंचदिसि । व्यावाव पायो पचाव जेजोवे तिवां किवा एव तोनदियि मेपदियि पचोवमाटे  
 नपुवे, दिवावे वावदियि विवावेवे पंचदियि एवम पाचारनी परे विवारीने कइवी । सान्ते विवकाकज्जइ । ते हेमगवन् । मू प्राचातिपातिवी  
 क्रियावीवी इवे पचवा । पचकाकज्जइ । पचवीवी इवे प्राचातिपातिवी क्रिया इतिप्रत्त उत्तर । गोयमा कडाकज्जइ बोयकडाकज्जइ । हेमोतम ! को

क्रियतइनिद्रिया कस माक्रियते प्रयति सुमेयादे ध्यानापूर्ववत् ॥ कथाकथइति ॥ कथाप्रय त्यक्तस्यकर्मोचो जावात् ॥ अतःकथाकथइति ॥  
 प्राप्नोतमेव कसमवति मान्यया ॥ अथापुविबकाकथइति ॥ पूर्वपथा द्विभागो यत्रनास्ति तद्वानुपूर्वो सुन्देभोव्यतइति ॥ अहानेरइयातहा

अथकथाकथइ गोपरकथाकथइ । सानते ! किं स्याणपुष्टिकथा कथइ स्याणपुष्टि  
 कथा कथइ ? गोयमा ! स्याणपुष्टिकथाकथइ नोस्याणपुष्टिकथाकथइ । जायकथा जायक  
 जित्सइ सहासा स्याणपुष्टिकथा नोस्याणपुष्टिकथानिवससिसिया । स्याणपुष्टिकथा नोस्याणपुष्टिकथा

भा विद्या प्रागे यनकोथा कसमा यमावसादे, यदि यनकोथी प्राचातिपातको विद्या गसाये । सामतेविषयकथाकथइ । विद्या हेमगवत् । अं प्रापयो  
 कोथीविद्या नागे यनका । परकथाकथइ । पारकोथी प्राचातिपातकोविद्या सामे यनका । तदुभयकथाकथइ । यानपर ते वैश ज्ञत प्राचातिपाति  
 को विद्या सागे इतिमथ उत्तर । याममा यनकाकथइ । हेमोयम प्रापयो कोथी प्राचातिपातको विद्या साग यदि । गोपरकथाकथइ । पारकोथी  
 प्राचातिपातको विद्या गसाये । गोतदुभयकथाकथइ । वेजमिथो विद्याकोथी ते एवमे दुषवायव गरीव जेहमो मय यधिको तेहने घरी । सामतेवि  
 दाखपरकोथीकथाकथइ । अथापुष्टिकथाकथइ । तिका हेमगवत् । अं प्राणपूर्विक यनकोथी सामे यदिविद्याकोथी पदे प्रापसागे यनका यनानुपूर्विक  
 कोथी ते विद्यानागे यनसागे यनक्रियासागे इतिमथ उत्तर । गोयमा प्राणपूर्विककोथी यतोतकाये विद्याकोथी । यानुपूर्विकोथी विद्याकोथी यदि  
 नोपप्राणपरकोथीकथाकथइ । यनानुपूर्विकविद्या गसाये । अतःकथा । विद्या विद्या पूर्वकोथी यतोतकाये विद्याकोथी । अतःकथइ । विद्या यननाम  
 काये करै । अतःकथइ । विद्या प्राणामिकाये करै । स्याणपुष्टिकथा । तस्यकोथी प्राणपूर्विक यनकोथी यदि । योपप्राणपुष्टिकथा  
 तिरपुष्टिकथा । यनकमररहित यनानुपूर्विकोथी तेकोथी रम कथीये, यनकोथी रम कथीये, यनकोथी रम कथीये, यनकोथी रम कथीये । यानुपूर्विक  
 प्राणपरकोथीकथाकथइ । प्राचातिपातकथ जोयविद्याकथ विद्या कथइ । अतःकथइ । इतिमथ उत्तर । इतिमथ । इति गोयम है । सामतेविषयकथाकथइ ।

पणिदियवज्जाप्राविपयन्ति । भारक्य दसुरादयोविवाण्या एकेन्मियवज्जां स्तेत्त्वन्पणा तेपाणि विष्णुपदे - मित्रापाएवं छदिसिं वापायं पणुषु  
 सिमतिदिशिइत्यादे विद्वपाप्रिसापस्य जीवपदोक्तस्य ज्ञावादतएवाह ॥ एगिविया जहाजीवातज्ञाप्रविपयन्ति ॥ जाय मिच्छादसुखसहे ॥ इहया  
 वत्तकरात् ॥ मावनायासोप्रयेजे, अममिव्यव सायासोप्रसमाव भजियङ्गुभाघमम दोसे, अणजियवज्जाओपमानस्वरूप ममीतिमाग्रद्वेयः कसही  
 राटिः, पद्मत्तावे प्रसदोयाविकरव पेहुके, प्रव्वण नसदोयाविकरव परपरिवाए, विप्रकीर्णं परेपाङ्गुबदोपववण वरइरव वरलि

किरिया कज्जाइ ? इता ! ख्यलिय । सानते ! किं पुठाकज्जाइ अणुठाकज्जाइ जाव नियमाळोविसि कज्जाइ सा  
 नते ! कि कठाकज्जाइ अणुठाकज्जाइ तचेवजाव नो अणुणपुण्ड्रिककातिवतइसिया । जहानेरइया तहाएगिं  
 दियवज्जा ज्ञाणियहा जाव वेमाणिया । एगिविया जहा जीवा तहानाणियहा, तहापाणाइवाए तहामुसा  
 वाए, तहाअदिने, मेज्जणे, परिगहे, कीहे, जाय मिच्छादसुखसहे । एव एएण अणुठारसचउहीस वरुगा

तिजा हे भयवन् । एं सुटवकी साने ? अणुठाकज्जाइ । अथवा असुट साने । जावविज्जासाविसिज्जाइ । सावत् निवै एं वट्ठिंम प्रते साने । सामते  
 विज्जावज्जाइ । तिजा विजा हे भयवन् । एं कीवी साने । अथवा अणुठोवी साने । तयेव । तिमज सव वज्जावो । जावकोपवाअपुब्बि  
 कदातिवतवविजा । जावत् अणानपदीदे नकोवी एववं वज्जा । जहावेरया तहा एगिविज्जाभाविज्जाजाववेमाविजा । जिन नारकोवज्जा तिम  
 एवेदो ववीं अमुरवसारविज्जा यावत् वेमानिज परेत सर्व वज्जा एवेदोवज्जा तिमटै उकेदोने विधिपदे । जिवावाएव छदिविवाचावं पणुषुसिवितिदि  
 सि इत्यादि । एमिविज्जावज्जावतज्ञाभाविज्जा जहापाचारवाए । एवेदो जिन जीवज्जा तिम वज्जा, जिन पाण दय तेज्जो विज्जा तेज्जे पाणा  
 तिपात वज्जावे बीज्जाम विजावज्जावे विज्जापावतिपात । तहामुसावाए । तिम सयावाद् जाववा । अथापदेसादावे मेहुवे परिक्खे कोसे । तिमज  
 पवत्तादान पवदीवी वलुगावेवा, इमज मेमुन कोनामोग, परिपइ मूण्णां क्वाध जीवजेद । जावमिच्छादसुखसहेएव एएअणुठारसचउहीसदवगाभाविज्जा

मोहनीयोदपायितोद्वयः तत्त्वना रति विधयेषु मोहनीयोदपात् चित्ताभिरतिः भरतिरतिः मायाभोसे सुलीयकपायद्वितीयप्रवयोः सुयोगो  
 ज्ञेयः स्वयमयोगाउपलब्धता यथाया यथाभारप्रापान्तरकरवेय यत्परवर्णनं तन्मायायुपति मिथ्यायुक्तं द्वायमिव विविधव्यपानिवन्धमाया  
 मिथ्यादशनगस्यमिति एवं ताव द्रीतमद्वारेण कर्म प्रकृषित तदप्रवाहत आसक्त मित्यतः आद्यज्ञानेव लोकादिभावात् रोहकाभिधान मुनि  
 पुंगवद्वारेण प्रकृषयितु म्यस्तावयमाह ॥ तेवकासेकमित्यादि ॥ पञ्चजलस्यति ॥ स्वभावतएव यदोपकारकरकलीलः ॥ पगइमस्यति ॥ कज्रावत  
 एव ज्ञायमाद्विभो इत्यय ॥ पगइविदीयति ॥ तथा ॥ पगइउवसपवति ॥ क्रोचोदयाप्राधात् ॥ पगइपपबुकोहपावनयालोह ॥ सत्यदि कपायोदये  
 प्रतनुजोपादिनामः ॥ विठमइवसपवेति ॥ यदु यन्मातेव अत्यर्थं महलतिष्ठत स्तत्सम्बन्धः मासो गुरुपदेशा यः सतथा ॥ यन्नीलेति ॥ गुरुसमा

ज्ञाणिग्रह्या । सेवजते २ । जगव गोयमे समण जाव विहरइ ॥ तेणकालेण तेणसमएण समणस्स जगवउ म  
 हायीरस्स छुतेवासीरोहेणामच्छुणगारे पगइजइए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसते पगइपयणुकोहमा

इहा यावत् ग्रन्थेनात्ता काम दाग देव बराह पञ्चाङ्गान पैसूय परपरवाद परतिरति मायाभोस मिथ्यायुक्तमय इत्यए कठार पापकानव  
 बडबोमउवे कहवा । सेवभते मतेति । तद्वति, ते भवन् । तुल्येइहा ते सबसमवे पञ्चकानहो एकाकहो । भवणोदये समबभमममहावोरवदइजानवि  
 हरइ । भवत गीतस जमव भगवत श्रीमहावीरने वदी यावत् विवरनाकाया, इम पण्डिता भौतमने अविचारं जम प्रकृष्य । कोही ते कम प्रवाहवो  
 यावताहै एतना मटिजगायता आकादिकना भाइ राखकनामा साहु तेइने प्रयात्तरकवे--तेवकाले ॥ तेवकाले ॥ तेवकाले ॥ ते समरने  
 विपे समअणमममयोमहावीरख । समअ तपखो भवतत ज्ञानवं एखवोदिवंत श्रीमहावीरजो । पतिवासी राखेवामंपरबारे । मिय रोहानामे साहु  
 पगइमइए । मनाहै पट डयबारी । पगइमउए । अभाववो कामकभाक । पगइविणीए । अमाने मिममवत । पगइउवसते । अभावै कोधउदयनहो । पग  
 एपयउकाहमाचमासमोम । अभावे पावता बाहा कालनाज मावा कोमहै । मिठमइवसते पयोधि मए विणीए । यदु चे मारद पत्यर्थं पञ्चकारो ज्ञा

णमायालोने मिउमहुवसपन्ते स्थलीणे नद्वए धिणीए समणस्सजगवत्तेमहावीरस्स धुदूरसामते उहु जाणू  
 स्थोसिरे ज्झाणकौठोगगए सजमेण तवसा छुप्पाणनावेमाणे विहरइ । तएणसे रोहे झुणगारं जायसहुं जाय  
 पज्झासमाणे एवययासी पुंविज्जते ! छाए पच्छास्थलोए पुंविज्जते ? रोहा ! लोएय स्थलोए  
 य पुंविज्जते पच्छापेते दोधेएससयानाया झुणाणपुट्ठीए सारोहा ! पुंविज्जते ! जीया पच्छा झुजीया

व सयय मुक्कपदेयवौ गुरुसमीपरज्जा पडवा सखीने गवदत्त प्रतरावन्न गद सेवा गुणपते । समसकमववणमहावीरस्स । जमव समवत नीमहा  
 वीरवामीने । धदूरसामते । यतिवियसीनो यति ठूळानही । उहुवापूणोसिरे । खवा ठीपव नीपो मायो । अथावोडावयए । ध्यानरुप कोठाने  
 बिंदे धमज्जान विदे खिरावित्तववा । सवमेवंतववा पयाउभावेमावेविहरइ । सुतरमेदे सवम तेवे नवा यावता कमवारीदे तेवेकरी तथा तय वारे  
 भेदे तिचे मुसमा कम निवारीये तेवे करो पाप्मा जीव ते प्रते मखी मावनावे मावताववा विपरै । तएणसेरोहिणमपवणारे जावसहुं । तिमारे तेरोहा  
 नामे साधुजपनी यहा एतसे पाप्मावे सहित । जावपवववासिमाए । यावत् भन्दे सेवा करताववा एवव सीतमनीपरै कइवो । एवववासी । इम वयवमा  
 न कइता इवा । पुंविभतेसाए । पडिसे हेमगवन् । खोवइ । पच्छापसाए । पडै पसीजइ । पुंविज्जते । पडववा पुंवे पसीवइ । पच्छाखीए । पडैखी  
 वइ इतिमय उत्तर । रोहा साएय पसीए । हेरोहा खोक वपुन पसीक । पडिजेते पच्छापेते । पुंवे पडिए पडैपडिए । दोविएससयामावा ।  
 पडनाव तथा पडनाव वेइ शास्त्रताभावइ इहा सदेइ नही । पडनावपुसीएसाराहा । पडिसे पावे विहा उत्तर नही एतसे दोनूवरावरइ एवमावे  
 पडिना पडि खोर कइवाय नही । पुंविभतेजीया । वखीराहोपुंवेहे—पडिना हेमगवन् । जीवइ । पच्छापजीया । पडै पजीवइ प्रयवा । पुंविपजी  
 वा । पुंवे पजीवइ । पच्छाजीवा कइव कोएव पसीएव । पडै जीवइ इतिमय उत्तर कइइ—विमहीक खोक धने पडाव पडिना पडै नकइना । तइव  
 खोरावपजीवाय । तिमहीत्र जीव पजीव एहीन यावतामावइ एहानेविदे पूर्वापरविभासपणो पडि करो नसइ । एवमयविचिहियाय । इमइसे सि

प्रितः मलीनीया ॥ प्रदृष्टि ॥ अनुपतापको गुरुशिष्यानुयात् ॥ विधीयति ॥ गुरुसहागुणात् ॥ प्रवसिद्विधायति ॥ न विष्यतीति प्रवा प्रया सि

पुष्टि अजीना पच्छा जीया ? जहेघलोएय अलोएय तहेव जीयाय अजीयाय, एव जत्रासिद्धियाय अजयसि  
 णियाय सिद्धासिद्धी सिद्धा असिद्धा । पुष्टिजते ! अरुए पच्छाककुली पुष्टिकुली पच्छा अरुए ? रोहा !  
 सेण अरुए कत्त ? जयव कुलीनी, साणकुलीनी कत्त ? जते ! अरुयात्त एवामेव, रोहा ! सेयअरुए सायकुलीनी  
 पुष्टिपेते पच्छापेते दुयेएससयानाया अणणपुष्टीए सारोहा । पुष्टिजते ! लोयते पच्छाअलोयते पुष्टिअलो  
 यि जहने ते मनसिदि कहती भव इत्थं । अभवसिद्धियाय । नरोबाव सिद्ध जहने त अभव इत्थं । सिद्धि सुद्धि पसिद्धि सवार तेमा  
 व । मित्रा पसिद्धा । सिद्धासिद्धजोद पसिद्धा ससारीवोव तेमाहे एसव वसोराही पूवेहे — पुष्टिभतेयइए । पूवे हेमगवन् । इह । पच्छावकुली । पूवे  
 इहकुली । पुष्टिजकुली । भवना पूवे पसिद्धा कुलीही । पच्छाअरुए । पूवे इहहे इतिपत्र सत्तर । राहासेव र्धएकथा । हेराहा ! ते पंवाकासकारे  
 ईह बिद्धावो वना एवाकामोवे पूछा । भववकुलीनी । तिवारे राही कर्हि — हेमगवन् । कुलीनी ईह कथा वलीमयवतकहे — सायकुलीनीकी ।  
 पूवको बिद्धावो इहे ? तिवारे रोहा कहे — मतेपंडयाया । हे भववन् । इहावो कुलीनीही । एवामेवराहा सेव चडए । इमव हेरोहा । ते इह । साय  
 नवको । तिहा कुली । पुष्टिपेते पच्छापेते । पसिद्धा पसिद्ध पुष्टिपसिद्ध । मीपेतेसासवाभावा । सानए यावताभाव यावता पदावं । अवाणपुष्टीएसा  
 राहा । एरहा पूवे एरही पानपुष्टीव रहितहे हेराहा । पसिद्धमतेकोयते । वसोराहा पूवेहे — हेमगवन् । भोवना चतहे । पच्छाअसायते । पूवे अ  
 नाकनेपतहे पवना । पुष्टिपनायत । पूवे पनाकनो र्धतव । पच्छानाचते । पूवे कोकना र्धतहे इतिमदन । रोहा सोपतेय पलीयतेय । हेरोहा ! सोव  
 नायत धने पनाकना अण एरान् पसिद्धा पूवेगही । काव अवावपुष्टिपराहा । सावए पनामपुष्टीहे पूवे पसिद्ध एवना कही भवकोये हे रोहा वली  
 राहा पूवेहे — पडिठे हेमगवन् । साकनायत । पच्छाअमतेपसावतेपच्छा । पूवे सातमो पुष्टिपुष्टी हेठिना भाकायातिर इसेमदन कोवे भयवतकहेहे —





धम्मिस्सत्ताः पञ्च ॥ भयपति ॥ क्षातविनागाः क्रमांस्सष्टीं सेवयाः पट्, वृष्टयोसिष्णादृष्ट्यादय स्तिस्रः दृष्टोभामिषत्वारि भ्रामामिपञ्च, सञ्चारः गरीराणिपञ्च, योगात्म्य उपयोगेन्द्रो, द्रव्यादिपट् प्रदेशा ज्ञानत्ताः, पर्यया ज्ञानम्मायव ॥ अहसि ॥ अतीताद्या ज्ञानगताद्या सङ्घोद्वा भेति ॥ विपुष्टिमायतेति ॥ अयं भूवाजिनापनिर्गुण सतीव पयिमभूवाजिनापं द्योयन्नाह ॥ पुष्टिजनेतोयतेयञ्चासवुद्धसि ॥ यतानिच सूत्राणि भूयन्तान्निवादिनिरामन विचित्रयाद्याप्यामिअनुसत्ताधिधानार्थानि ईश्वरादिकत्वभिरार्थेन ज्ञानादित्वाभिधानार्थानीति लोकान्तादिलो

ठोदसगणाणा समसरीरायजोगउत्तुगे वृष्टपएसापज्जाअ अरुकिपुष्टिलोयते ॥ २ ॥ पुष्टिजते ! लोयते पच्छासवृद्धा ? जहालोयतेण सजोयया सवृठ्ठाणा, एते एव अलोयतेणवि सजोएयद्धा सवृ, पुष्टिजते ! सत्ते उयासत्तरे पच्छा, सत्तमेतणुयाए एव सत्तम उवासत्तरसवृहेहिं सम सजोएयहे, जाय सवृद्धाए पुष्टिजं ते ! सत्तमेतणुयाए पच्छासत्तमेघणवाए, एवपि तहेव नेयह्व, जाय सवृद्धा, एव उवारिह्व एक्कोक्क सजो

आम १ मंश १ मरार १ अपन बाग १ उपयाम २ इय १ प्रवेय ज्ञानता एवाव ज्ञानता अतोवपद्वा ज्ञानवपद्वा सवृद्धा एवहा ज्ञानव पूजवा खू ? पडिवा कोजात २ पवदा । पविभतिनोपते । एक्कोव विमोद होइकोसूच देकाउहे—पूर्वे हे भयवन् ! कोजात । पच्छामज्जाहा । पहे सवपद्वा इत्थादि स १ वज्जो । ज्ञानापतेजसंजोइयामहेठ्ठाका । विम कोकनापत खू मेणा कोळा समहा ज्ञानव सातमा अक्कायांतरादिव तिम । एतेपवपद्वापतेव विमज्जोएयथा । ५ इमज पनीजना भंतवज्जो यधि मनीपट्टेविशारीते खाडया मेजवा, वनीरोहो पूहेहे—सेयविभतिसत्तमेसवासत्तरेपच्छासत्तमेतणुवाए । ते पडिवा हे ममवन् सातमोपविहीनो आकायांतरहे पहे सातमोपविहीनो तज्जात पडिवा सातमो आकायांतर इमपूज्जा भगवत वहेहे—ए वा पडिवा एहे कही ममकोये । एवमसत्तमेउत्तमत्तर । इम सातमो आकायांतर । अत्तेहिसमसंजोएयवकावसव्वथाय । सगंहे ठामे ओळवो कोसमे म गहा तान्ने अइया, वसोराहोपूहेहे—पयिभतिसत्तमेतणुवाए । पडिवा हेमगवन् सातमो पडिवा पडिवा सातमो तज्जातहे । पच्छासत्तमेतणुवाए ।

कपदायप्रमाणा दय गीतममुद्येन लोकरिस्थितिप्रस्तापनाया ॥ कद्विहासमित्यादि ॥ आकाशप्रतिष्ठितो वायु समुदातपनवातरूप सस्या यथा  
 ज्ञानगोपरिस्थितत्वात् आकाशानु स्थमितिष्ठितमयेति मतप्रतिष्ठाविनाल्लतति तथा वातप्रतिष्ठित उदधिर्चनेदधि समुपभवतोपरिस्थित  
 त्यात् २ तथा उदधिप्रतिष्ठिता पृथिवी पनोवपीना मुपरिस्थितत्वात् ३ रवप्रभादीना धातुस्यापेक्षया वेदमुक्त मन्मथे यत्प्रामाण्यपृथिवी

य तेन जोजोहेठिद्वी ततठळ्ळेतेण नेयसु, जाय छृतीयछृणागयथा पच्छा सव्वा, जाय छृणाणुपुद्धीए सा  
 रोहा, सेयनतेर जाव विहरइ । जतेसि जगवं गोयमे समण जाय एवययासी, कइविहाण जते ! लोय  
 ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! छृठविहा लोयठिइ पणत्ता ? तंजहा ! आगासपइठिएवाए १, वायपइठि

पक्षे भातना यतवातस्य चववा पश्चिमासातना वजवातस्यै पक्षे सातमा तनुवातस्यै १ भगवतकक्षे—एवपित्तैवचैवव । एवपि तिमज आषवा पश्चिमा  
 पक्षे न कइवा । आवसव्वा । यावत् सबवा एतवी कइवा । एवतवरिणएवसव्वीय । इम जपरिणो एवज्जाइवो जेसवो । तिचवीवीडेठिनी । तेसवो  
 जेडे ठेठिनी । ततंठळ्ळेएवसव्वीय । तेते वीरवी परइमिखवी, इम विचारी सेवो, वाकगेज्जवा । जाव यतोतययववा । यावत् पश्चिमा यतोत यथा पक्ष  
 यनामतपवा, यववा पश्चिमा यनामतपवा पक्षे यतोतपवा । इम पश्चिमा यनामतपवा पक्षे सर्वावा, यववा पश्चिमा सर्वावा पक्षे यनागतपवा  
 आवयवापुप्पीएसारोहा । यावत् एमव यनागुप्पीइ चैरोहा एवमे पश्चिमापक्षे कञ्जोनसवीयो, सदा ग्राय्यता भावइ चैरोहा । सेवमेतेभेतित्तिजाव  
 रिहरइ । रावा कइइ—तइति । इममवन् तुम्हेज्ज ते सवसव्वे पण्वावानही एसोकञ्जो यावत् विचरै । भेतित्तिमगवगीयमे समसभमवमकावीर आपएवंव  
 यावो । साकंतीइ आकपदार्प प्रसाववो कइवा । इवै योतम मुखहारै साकसित्तो सव्वपण्वायै कइइ—हे भगवन् । एववा ज्ञानवत योतम, यमथ  
 भगवत योमहावोरस्सामै प्रतेवादी यावत् इमकइ । कद्विहासभेतोअडिइयवत्ता । जेतसेमेदे हेभगवन् सोकनोस्सिति कइी इतिप्रत्य जतर । गोसमा  
 पइविहासीपडिइ पणत्तातववा । हेयोतम याठेभेदपअदराजवाकनो स्सिति रइवो कइवा तेकइइ—आगासपइठिएवाए १ । आकाशपक्षपर तनुयात

प्राधान्यमिति चेत् तया पृथिवीप्रतिष्ठिता रागपादराः प्राणा इदमपि प्राथिकमेवा न्यथा प्राकाशपथविविधमप्रतिष्ठितामपि तेवन्तीति ४ तया पञ्चीया शरीरादिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिता जीवेपुतेयास्तित्वात् ५ तथा जीवा कमप्रतिष्ठिता कमसु समुद्रयावत्सकम्पुद्गलसमुदाय रूपेण भूभारिणीयानामाचितत्वात् अन्येष्वाहुः—जीवा कम्पन्नि प्रतिष्ठिता भारकादिजावेना वस्थापिता इ तथा पञ्चीया जीवसङ्गृहीता मनो नायान्पुद्गलाना ऋतेः मङ्गरीतत्वात् पञ्चीयाजीवप्रतिष्ठिता स्या पञ्चीयाजीवसङ्गृहीता इत्येतया कोनेव ७ उच्यते पदस्मिन् वाक्ये आचाराप्ये वसायताम् उभारण मङ्गलमङ्गलकताव इति चेद पद यस्यमङ्गलार्थं तत्तस्या चेयम प्रयोपपत्तित स्या अथा—अपूपस्य तैल मित्वाचाराचेयज्ञा

तदुन्ही २, उद्विपड्ठियापुतुयी ३, पुतुयीपड्ठियातसायावरापाणा ४, अजीवाजीवपड्ठिया ५, जी याकमपड्ठिया ६, अजीवाजीवसगड्ठिया ७, जीवाकमसगड्ठिया ८, संकेणठेणजते ! एवमुच्चैश्च अष्ट

तदुन्ही २ याकामयानैश्च प्रतिष्ठितं तस्मात् प्राकाशप्रतिष्ठितमो चिता नकोवा प्राकाशविबन्धी ऊपर रक्षा नवी । वातपईष्टिगुहकी २ । तनय त वनयान ऊपर वनान्धि प्रतिष्ठित कक्षता रक्षा ३ वनादधि ऊपर रक्षभादि दृषियोरक्षो । कल्पिपद्विष्टिपुढो । तेमाटे छवधि प्रतिष्ठित दृषिवी वधी, परवगभादि क्वात दृषिवीवायसीने क्वासे वनयपचीमाटे पञ्चया रातमाभारा दृषिवी प्राकाश प्रतिष्ठित १ । पठवीपड्ठिवातसावरापाणा ४ इति ५ अद्विष्टा वन्याररजीव व यदि शाकवचने कक्षते पञ्चया प्राकाशवयत विमाननेविये परिरक्षे ४ । पकोवा जीवपद्विवा ५ । शरीराणि परवचन पञ्चीव ते जीवनेविये प्रतिष्ठित रक्षा ६ जीवा कम्पपद्विवा ६ । जीव संसारो कम पद्विष्टिपुढेविये प्रतिष्ठितरक्षा, पञ्चवा जीवकम प्रतिष्ठित नारको पादिभावेरक्षा ७ । पञ्चीवाजीवयुगविवा ८ । मन भापादि पद्विष्टि जीव ग्राह्ये पूर्वकक्षा पकोवाजीव पड्ठिया तिम पको रिरे क्वादि क्वा ८ मोतम क्वा ९—मैत्रेयमतेपपुष ६ । ते ष्ये शारणे वे मगवन् दसकम् । पड्ठियाजीवकोवाक्यमंगविवा । पाठमेवे कोकस्विति

षो प्यमरयास्ये दृश्यति ३ तथा जीया कामसङ्गहीताः सुसारिजीवाना मुदपप्राप्तकर्मवशात्तित्यात् येन गृहशा स्तोत्रप्रतिष्ठिता यथा-पठे  
 मूपादय इत्यय निदाप्यापारापयता दृश्येति ॥ सेजहानामगच्छति ॥ स यथानामको घटप्रकारमामा देवदत्तादिनामेत्यर्थं अथवा ॥ सेवति ॥  
 न ययति दृष्टान्तायः मामेति मन्त्रायनाया ए इतिवाक्यालङ्कार ॥ वन्यति ॥ यस्तिदृति ॥ आलोवेवसि ॥ आढोपये द्वायुना पूरयेत् ॥ उष्यसि  
 ययंपठति ॥ उपरिमितं पिकृत्त्यन इतिवचनात् अत्रत्यस्यैव प्रायायत्वा रज्ज्मार्गेत्याह्वा यत्प्रक्षुपिमित्यर्थः वप्राति करोतीत्यर्थः अथवा ॥  
 उष्यमियति ॥ उपरि वमिति यति ॥ सेजहतयाएति ॥ सो ऽप्याय सस्यवायुकायस्य ॥ उष्यति ॥ उपयुपरिजावद्य व्ययहारतोपिस्मा दित्यत  
 आह ॥ उपरितमे सर्वोपरीत्ययः यथा-वायु राधारो जलस्य दृष्ट एव माधारोपयत्रायो प्रवति आकाशपनकातादीनामितिभावः आया

यिहा जाय जीवाकमसंगहिथा ? गीयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे वतियमामोवेइ ? हाउप्यसिइयथइ ? ता  
 मज्जंगतिग्रथइ ? ता उयरिसंगतिमुयइ ? हा उयरिसदेसथामेइ ? हाउयरिसदेस स्याउयायस्सपूरेइ ? हा उप्पि  
 सियग्रथइ ? सामज्जिइ गतिमुयइ । सेणुण गीयमा ! सेस्याउयाए तस्सवाउयायस्स उप्पि उयरितले चिठ्ठइ ?

क्वी यागत् जीवकमे संगच्छावे मोतम हसे प्रधावका भगवत कजेहे-उत्तर । गायमा सेवहानामए । सेमोतम ते ववा इटाते नामरति कामकामेन  
 ॥ केइपुरिसे वतियमामोवेइ । वारि देवदत्तनामै पुण्य दीवडोवावेकरी फूजेकरी पूरे । वतियमावावेत्ता । दीवडोवावेकरी पूरीने पड़े । उप्पि सियकवइ २ ता  
 उयरिसे तेजनामुत्त वाधै मुत्ते पखवाधै बाधीने । मज्जेमण्डिवंधइ २ ता । मज्ज माठि दीवडोने विचे वाधै बाधीने । उवरिजमेठिमुयइ २ ता । पळे सुखकी  
 उयरिनी गठि मूजे गठिगामै ग्गानोने । उवरिजदेसथामेइ २ ता । उपरिना देयवी वायरोकाटे आढोने पड़े । उवरिजदेसथाउयाएसपूरे २ ता । ऊ  
 पन्थिवादेगनेविधै यहुनेविधै पाचोम भूदेपाचोम भूरीने । उप्पिमितवंधइ २ ता । उपरसी सुखनी गाठिवाधै बाधीने तिवारे पड़े । मज्जिमगठिमुयइ ।  
 विनयोगाठि खासे छ डे । सेलून् मायमा । ते निधै सेमोतम । मेधाउयाए । त अयजाय । तस्यनाठयाउछत्पिउरिमितसेविइइ । तेइने वाउजायने

राधयन्नावय प्रागेव सर्वपदेषु व्यञ्जितवृत्तिः ॥ अन्ताव मविद्यामानस्ताव भगावमित्यर्थं अन्तावोवा निरस्ताव  
 सत्समित्ययं अतएवात्तार तरीतु मन्त्राय पाठान्तरेण अपार पारव्यञ्जिनं पुरुष प्रमादमस्येति पौरुषेयं तत्प्रतिवेवा वपौरुषेयं तत  
 कम्मपारयो इत सप्त मन्त्रार येवासाविक्रिक एव वाइत्यत्र वाक्छब्दो दृष्टान्तात्तरतावूचनाय लोकस्थित्यधिकारा देवदमाह ॥ अत्यथमित्यादि ॥  
 अन्येत्याहु - अजीवाजीवपद्विदित्यादि पदचतुष्टयस्य प्रावणार्थं निवृत्ताह ॥ अत्यथमित्यादि ॥ योग्यवृत्तिः ॥ कम्मपरीरादिपुद्गलाः ॥ अकम्मस्य

हताचिच्छिदं । संतेण्ठेणजाव जीवा कम्मसगहिंया , सेजहावा केइपुरिसे वल्लिमाओवेइ २ ता कलीएअथइ अ  
 त्याहमन्त्रारमपोरिसिय उदगसिउम्माहेज्जा । सेणूण गोयमा ! सेपुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चि  
 छिइ ? इन्ता चिछिइ । एवंवा अछ्छियिहा लोपछिइं पसुत्ता , जाव जीवा कम्मसगहिंया । अत्यिणज्जते ! जी

ऊपर उपरैकैवै पाबी रहै इवै योमहावीरदेवे कच्चा मोतमकहै । इताचिछिइ । हां भगवन् रहै, तिवारै भगवतकहै—संतेवइवं जावजीवाकम्मसगहिं  
 बा । हे मोतम ! जिन बाहुने पावारै कछनेरहुं दीठू तिम पावारोवेयभावै पाकाय बनवातादिब पबिकहवा, यावत् जीवकर्म सयच्चा तसिगे कइव  
 वसो गोवा इटात कहेइ—सेवकावाकिएपुरिसे । ते जिन बाह पुरुष देवदतादि नामै । बलिमाओवेइ । दीवकी वायेकरीपूरै पछे ते दीवकी । कछिएव  
 धर । कछिसेतोवधिं पछे । पत्ताइ मन्त्रार । अहापाबी पगाव तरानजाव पाठातरे अपार पाररहित । मपोरिसियसिउदगसि । पुरुषप्रमावधी अ  
 थिअ पाबीनैविदे ते पय । उवाहेज्जा । अत्राहै पाबीमांदिपेसे । सेजहावमासेपरिसे । भगवतकहै तेनिवे हेमोतम ! ते पुरुष । तच्छपाठयाबच्छुठ  
 बरिमतसेचिछिइ । तेइ पाबीनै छपर रहै पाबी पयनाइता रहै छंवा रहै इसा भगवतेकच्चा तिवार मोतमकहै । इता चिछिइ । हांभगवन् तेपुरुष पा  
 बी उपररहै । एववाअहुविहामासहिं पसुत्ता । तिवारै भगवतकहै इस वा थप्प इटातां तर सूचमाकइ इस इच्छेपकारे पाठभेदे सोबस्मिति कही । जा  
 वजीवाकम्मसगहिंया । यावत् पाकाय पदछिएवाते इत्थादि जीवकर्म सयच्चा एतका सगे कइवो, छावस्मिति अधिकारवोध कहेइ—प्रत्यिबभतेजीवा

यदुत्ति ॥ अन्योन्य जीवाः पुद्गलाणां पुद्गलाय जीवानां सम्बन्धादित्यर्थः कथं यद्वा इत्याह ॥ अखमखपुष्ठा ॥ पूर्वं स्पर्शानामाश्रया न्योन्य स्पृष्टा स्त  
तो न्योन्य वद्वा मादन्तरं सम्बन्धादित्यर्थः ॥ अखमखमोगादति ॥ परस्परं लोसीपावयता अन्योन्य स्पर्शप्रतिष्ठा इत्यत्र रागादिक्रयः स्पर्शः यदाह  
स्पर्शान्तरादीरं स्पर्शानामित्येतेषां रागादिक्रयः ॥ रागादिक्रयः स्वस्मत्स्वयोजवत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अखमखपुष्ठाएति ॥ अन्योन्य घटासमवायो

वाय पोगलाय अखमखयथा अखमखपुष्ठा अखमखसिगेहपक्रियथा अखमखयक्रुता  
ए चिठति ? हताश्चत्यि । सेकेणठेणनंते ! जाव चिठति , गोयमा ! सेजहानामए हरेदसिया पुखे पुखप्य

पौषसावपखमखयथा ॥ १ ॥ अथान्तरं सम्बन्धादित्यर्थः कथं यद्वा इत्याह ॥ अखमखपुष्ठा ॥ पूर्वं स्पर्शानामाश्रया न्योन्य स्पृष्टा स्त  
तो न्योन्य वद्वा मादन्तरं सम्बन्धादित्यर्थः ॥ अखमखमोगादति ॥ परस्परं लोसीपावयता अन्योन्य स्पर्शप्रतिष्ठा इत्यत्र रागादिक्रयः स्पर्शः यदाह  
स्पर्शान्तरादीरं स्पर्शानामित्येतेषां रागादिक्रयः ॥ रागादिक्रयः स्वस्मत्स्वयोजवत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अखमखपुष्ठाएति ॥ अन्योन्य घटासमवायो

चेरात् न्योन्यगन् स्मद्गायन्ता तथा ।म्योन्यपठतया ॥ हरयुगियति ॥ इदो नवः स्या ब्रूवेत् ॥ पुणेति ॥ घृतो जलस्य स किम्पित् यूनोपि  
 यत्राहृत म्यान्तया ॥ पुन्यपमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥ पूर्यमावेति ॥  
 मन्तरा पदमानजमइत्यपः ॥ दोसहमावेति ॥ असमापुर्णदेव विकसन् स्फारीमवन् बहुमागदत्यर्ष ॥ समज्ररघरुताएति ॥ समो भविष्यो य  
 ते इत्त मनामित्यन प्ररो अन्वसमुदायो यत्र स समज्रः सर्वथा घृतोवा समज्र समज्रस्य सर्वथाघृतायत्यात् समभर खासी पटयेति स  
 माभ मन्तरपण्डय मन्तरपट स्मद्गायन्ता तथा समज्ररपठतया सर्वथाघृतपटाकारतत्पर्यः ॥ अदेवेति ॥ अदेवेति ॥ अयगब्दसा

माणे बोलहमाणे दोसहमाणे समज्ररघरुताएचिठइ । अहेणकेइपुरिसे तसिहरदसि एगमहनाय सदासव सय  
 च्छिइ नुगाहेज्जा सेणूण गीयमा ! सानावा तेहिंस्यासवदारेहिं स्यापूरमाणी २ पुया पुसप्यमाणा बोलहमाणा  
 योगहमाणा समज्ररघरुताएचिठइ ? हताचिठइ । सेतेणठेण गीयमा ! अत्यिण जीवाय जाय चिठति ।  
 अत्यिणजंते ! सदासमिय सुज्जमेसिणेहकाये पय्ठइ ? हताअत्यि । सेजंते ! किउहेपवळइ अहेपवळइ ति

इरो भरतो बडो २ पूषघाव । पयप्यमाणा । अगार पांवीकरीजंनवो । वासहमाणा । तिहा पांवी च्छासपांमेहे । बोसहमाणा । नखाता पांवी भ  
 नका एजवी नाचहे । मममरचडसाठचिठति । इह सेपवावडो पांवीभरतो जिस तखेवसे तिम ते नावा पांवीबो भरीयडो पांवीमादि रई, तियारे  
 । तस बरेइ—हताचिठति । हां ममवन् रई । मेतेबडो गाबमा । भगवतबडो ते तेवै पवै हेगोतम । अत्यिण जीवायजायचिठति । यस्ति छे च्छमीवा  
 गान्धारि ओष पने पडव वावतरई एतनामनो कइवा । अतिपमतेसुदाममित । बडोसोअस्मितिनेविपज अछेहे—यस्ति छे हेभगवन् । मया सवदाका  
 म पमानमित भगवो अजनेविपै । महमेसिचिइपवडइ । मय्यापावो सोम यपकाव विपेय इत्थव, पठेहे इतिपय, उत्तर । अंताअतिमेभंतेकिउहेपय  
 २१ । इतिगतम पठेइ, वडो गीतम अछेहे—ते हेभगवन् । अय्वाटया देताअदि पबतमेविपै पठेहे । अहेपवळइ । परोमोके अधोपामादिअमेविपै





रपान् ॥ त्रिदशममण्डप इति ॥ व्यत्यया तस्य ॥ इति प्रथमगोपसु उद्देशः ॥ ६ ॥ अथ सप्तम आरज्यते तस्य चै वसम्बन्धी  
निमगन्धती त्युक्तं प्रा गिरुतुतद्विपय उत्यादोन्निधीयते अथवा सोकस्थितिः प्रागुक्ता इहापि सैव, तथा नरहरति यदुक्तं सङ्ग  
इत्या अत्रा यनरायात मिहोष्यतइति तत्रादिमूय ॥ नेरइएवंमत । नेरइयसुववज्जमायेसि ॥ ननु त्वयामामएव कथं नारकइति ध्यपदिश्यत  
नृत्यकला त्रिपगादिपत् ॥ इत्यग्राप्यते उत्पद्यमान उत्पन्नएव तदापुञ्जीइया दस्यपतिर्यगाद्यापुञ्जात्रावाकारकापुञ्जीवेयि यदि नारको न  
मी तदस्य कामादिति ॥ किदसेवदममयज्जइति ॥ वेद्येनच २ यदुत्यादन प्रवृत्त तवेद्येनदेशं, अत्रांदसत्वाद्या व्ययीनावप्रतिकूपः समस्त एवा  
मुत्तरत्रादि तत्र त्रीन बिंदुमेव व्यधीणवयेन दक्षेन भारकावयविनो शतयो त्वद्याते अथवा दक्षेन वेद्यमाधित्यो त्वादयन्वे तिस्रोप, एव मन्य  
गापि तथा ॥ देववज्जइति ॥ देवमनच सर्वकच यत्प्रवृत्त तदेवानं सव तत्र दक्षेन स्वावपवन सर्वतः सर्वोत्पन्ना नारकावयवितयो त्वद्यान इत्यथाः

पदमसए ठठो उद्देशो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ नेरइएसु उयवज्जामाणे कि दसेण दस

वज्जारे पात्र अत्रादना विवसुपात्र तेदना शिग्रवो अन्धनवामाट अगवना विवसुपात्र योतम कहेहे—सेवभते २ ति । तइति चै ममवन् ! तुम्हे व  
प्र तेमस्य तेमस्यै पञ्चवानही । पठममयज्जइहाउद्देशः । एषाद्विवा यतकनो वडा अयेमानो विवरच कनो । ६ । द्विवे सातनो व  
रमा मारनियेहे तेदना एववद पाविना अयेमानेश्वि विवसुनो यालोकही, इहाता तेदको विपरीत अपज्जानो वातकहेहे—वेरवाचंमत वेरए  
मममममाये । नारको हेमवन् । नारकोनेद्वि अपत्रवा माथोकको इहा काएएव पूज्जे अपज्जतोवकोव नारको किमवहीवे अपमोनको तेमा  
दे नियोचदिक्को परे तिहा उत्तर अपज्जवामाथो ते अपनोव कहेये तेदना पाज्जकाना उदयवको पञ्चवा तिर्यादि पाज्जकाना भभाववको ना  
रचना पाज्जगाना उदयवगा, पन्नि वा नारक नकहीये ते तेचकको सोकोपुन कहीये । किदसेवेदसंउववज्जइ । ओवनोपय नरकनोपय तिहाओवन्  
पाताने देसीवरो पवणैइपो नारकोने अययउपण अउत्रे ए प्रवमंयो १ वेमेचसत्यंउववज्जइ । ओवनोपय नरकना सव एतसे ओवनो चवववमाच २

आहोतिः । सर्व्वेन सर्वात्मना देदातो भारकागतयो त्यद्यते अथवा सर्व्वं सर्व्वत्मा सदातो भारकतमिति प्रश्न  
 त्यद्यते यथा न परिवादिभारकावयव न कार्योपपत्तौ निवृत्त्यतः तन्मुना पटाप्रतिग्रहप्रदेशावत् यथाहि-पटदेक्षजुतेन तन्मुना पटाप्रतिग्रहः  
 पटदेक्षो न नि यत्यते, तथा पूर्वावयवविविधत्वात् तद्देक्षो न निवृत्त्यतः इति भावः तथा न देक्षेन सदातयो त्यद्यते अपरिपूर्णा  
 रत्नात्मा तन्मुना पटदेक्षेति, तथा न सर्व्वं देक्षतयो त्यद्यत सम्पूर्णपरिवादिभारकावयव स्वमस्तपटकारके पटदेक्षवत् सर्व्वत्तु सर्व्वं उत्पद्यते  
 पूर्वाकारवयवयापात् पटव दिनिर्गुणव्याख्या टीकाकार स्वयमेव -- किं भवति सदातयव जीवो देवा मपनीय यत्रोत्पत्तय तत्र देक्षत उत्पद्यते  
 अथवा दानं सदात उत्पद्यते अथवा सर्वात्मना यत्रोत्पत्तय तस्य देक्ष उत्पद्यते अथवा सर्वात्मना सर्व्वेति एतेषु पाद्यात्पनङ्गी ग्राह्यी  
 यत् सर्व्वं मयात्मप्रदेशायापारके लिकायती यत्रोत्पत्तय तस्य देक्ष उत्पद्यते तद्देक्षेन उत्पत्तिस्थानदेक्षस्य व्याप्तत्वात् कन्दुकागतीवा सर्व्वं  
 मयत्रो त्यद्यते विमुक्तयेन पूर्व्वस्थानमिति एतत् टीकाकारव्याख्यानं वाचस्पत्यखिययमिति उत्पादे वापरक इत्याहारसूत्रः, तत्र देक्षेन देवा

उग्रयज्जइ १ देसेण सव्व उग्रयज्जइ २ सव्वेण देस उग्रयज्जइ ३ सव्वेण सव्व उग्रयज्जइ ४ गोयमा ! नो दे  
 सेण देम उग्रयज्जइ १ नो देसेण सव्व उग्रयज्जइ २ नोसव्वेणं देस उग्रयज्जइ ३ सव्वेण सव्व उग्रयज्जइ ४ ज  
 हानेरइए एवजाययेमाणि १ ॥ नेरइएण जते ! नेरइएसु उग्रयज्जमाणे किं देसेण स्याहारिइ देसेण सव्व स्या

ने नरक नवदना अपत्रे । मादेवदेम उग्रयज्जइ । अथवा जीव सगना नरकनापय तेदपत्रे अपत्रे एषो जीवमा ३ । सर्व्वेवसर्व्ववज्जइ । जीवसव नर  
 कना उग्रयज्जमा न न तेदपत्रे अपत्रे इतिप्रश्न उग्रयज्जइ । वासमा योदेसेवसर्व्ववज्जइ वासमेवदेसर्व्ववज्जइ । ज्योतम । जीवने पदययैकरो नारकने  
 मरपत्रेवरो उग्रयज्जइ २ । जीवमव यने नारकने देमपत्रे अपत्रे नही ३ । सर्व्वेवसर्व्ववज्जइ । जीवसव यने नारकने सवपने अपत्रे ४ । अहावेरइ  
 ए । जिन नारकी कप्पा । एवजाययेमाणि १ । इमजीव यावत् वैमानिक पर्यंत पलवीस ईडव कइवा । १ । वज्जो गोतमपूछेदे -- वेरइयाज्जमते वेरइ

हारेडु गंगेण देस आहारेडु सधुण मन्त्र आहारेडु नो देसेण सधु आ  
 हारेडु गंगेणया देस आहारेडु सधुणया सधु आहारेडु तवजाधवेमाणिए २ ॥ नेरइएण भते ! नेरइएण भते !  
 उधुट्टमाण किं देमेण उग्रहइ अहा उयग्रज्जमाणे तह्य उयग्रहमाणेवि ठरुगो जाणियहो ॥ नेरइएण भते !

नम उग्रज्जमाण । नारका वेममन् । नारकावेममन् । चिदेसेण देसपाहारेड । तेषु ओवेसेकरी पाहार करगमीय, लोपाहार तेह  
 ना दम पाहारे । दमेणमपपाहारे । पयडा ओग्रदेसेकरी मव पाहारे २ । मवेसदेसपाहारेड । पयडा ओव सब पाहारनो देस पाहारे १ ।  
 मारनकापाहारेड । पयडा ओव सब पाहारना मव पाहारे ४ । गायमा भादेसेलमपाहारेड । वेगौतम । ओव देसेकरी पाहारवा योग्य वेपाहा  
 र न देसेदे पाहारेनही । भादेसेलमपाहारेड । ओव वेसेकरी पाहार मव पाहारे २ । सवेसवा देसपाहारेड । ओव वेममवेनेविदे जयनो  
 तेहवा चनररहितममस एतने वाजे ममये मव पाहारेवेसेकरी वेमना एव पाहार पदमपतेपह वेमना एवपते मूकै दृष्टीत कहेवे — तप्ततापिकागत  
 तेन पाहारे गिमाव पदमानी परे एतन्नामेट्ट कहेवे देसे पाहारे । मवेसवागव पाहारेड । ओव मवपाजप्रदेसेकरी उयतिवासे पाहारपुट्टन सब  
 यव दममयोक्क तेनयो क्काहीमादि पदिय ममये पुट्टनो पयो तेन मवपहे परे मदेकरी तिमसीव पवि जाववा एतसे लोमान ओव पविसेसमेवे  
 उग्रवावओ मव पाहार पहे पदिये ममय काएएव गहे काएएव मूकै । एवजाववेमाविए २ । इम यावत् वेमानिकवीह वठवोसदुहस कइवा, जपज  
 वा पने पाहार तेनेकरा मडितएव दइकइवा । द्विजे चदिवा ते पाहार मडितकइव — गेरएवावभते गेरएवितोठजट्टमावे । नारकी वेममन् ।  
 नारका पओ पदिवा मीपारओ । किंदेलेगडेमडागट्ट । म्पगारओना ओव जेयेकरी पने नरकावामानो देयकाओ मोकसेचवे इत्यय । जहाउववज्जमावे ।  
 तिमन्ने उग्रया मीपा निहा चयो तिमपाका चदिवा मीपा । तवेवउग्रहमाणेवि । तिहा पविनिमज कइयो । दइगभापियवा । एदइक सरोकाज  
 चइवा । १ । वेरएए — नते नारएवहिता । उग्रहमानन पाहार पुट्टे — नारको वेममन् । नारकोवेममन् । उग्रहमानन पाहार २ । उग्रहमानन

निति प्राप्तामदोना यत्राप्युद्वेगमित्येय गमनीय उत्तरं ॥ सध्वेनवा देसमाहारेइति ॥ उत्पत्त्यनन्तरसमयेयु सवात्माप्रदेओ राहारपुद्गलान्  
 कानि दादते कानि द्दिमुदति तसतापिजागततमयावकविमोचकापूपय इतउच्यते यदा माहारयतीति ॥ सध्वेनवा सध्वति ॥ सयात्मप्रदो  
 न्यत्तिममय पाहारपुद्गला नादतपय प्रयमत स्तैलभृततसतापिकामयसमयपतितापूपव दित्युच्यते सर्वमाहारयतीति उत्पाद सादाहारेव सध्व

नेरडणहिहती उग्रहमाणे कि देसेण देस आहारिइ तहेत्र जात्र सध्वेण या दस आहारिइ सध्वेणया सध्व आ  
 हारिइ १ एय जाय येमाणिया ४ ॥ नेरडणुस उवयणे कि देसेण देस उवयणे एसोवि तहेव  
 जाय सध्वेण मध्व उवयणी जहा उग्रहमाणे उग्रहमाणेय चक्षारि दणगा तहा उवयणे उग्रहणे वि चक्षारि  
 दणगा जाणियहा , सध्वेण सध्व उवयण सध्वेणया देस आहारिइ सध्वेण सध्व आहारिइ एणुण अन्निहा

विशमापिवाक्या म ओवदेने पाहारता देय पाहारिइ एयवि । तहउवावमयेवडा दस पाहारेइ । तिमहीव यावत् सव पाहारदगे पाहारे । सविचवा  
 मम पाहारेइ । मयओय पाहारमम पाहारे एमव पुठिनी परैवडवा । एव काववेमाणिया ४ । इम यावत् वैमानिक मयै सववोसदंडव विस्वार  
 यो डडवा ४ विवे जपना तवा जगमाणा पाहारे पायो वडडव कडेइ - परएणभते चेरएणवववये । मारको वेममवत् । मारकोनिवियै अपनो  
 । त्रिदेमिनेमडवये । तेव ओवदेमडतो मारकोने देगेणये जपना इत्यादि वडमओ कडवी इतिप्रय । एमावितहेव । एयवि तिमहीव हेसेव देसेउवव  
 ने । आरमयेवमडवडवये । यावत् मोमभांगा नियजवा धने सावच मवडवडवे एभीगीलेओ । अहाउवज्जमाणे उवग्रहमाणेवचक्षारिदंडगा । जिम  
 उग्रहमाणेया १ धने तिहा पाहार २ तवा चविशमाणा २ तिहा पाहार ४ एवारि दंडवज्जया । तहा सववये उवग्रहववि चक्षारि दंडगा भाविवड्या ।  
 तिम उवमा १ तया तिहा पाहार २ तया तिहा चडिया १ धने तिहा पाहार २ एयवि चारि दंडकवड्या, तिहा उपनो घडवा यव्यो एवेदंडव  
 नेरिपे वडमओमाइ तीतभांगा निवेध धने चोणाभांगा सेरा तेसोअकडेइ - सववेवसवडववव । ओवसव धने मारकोपणि सव उपमा ए १ दंडव तया

प्राग्भूतान्मा मूर्धो योस्यादयमित्यपत्त्या द्रुतमानक्रान्तनिर्देशसाधय्या योद्धसमादयकञ्च सदाधारदयकञ्चनेन सह, तदनन्तरम् नोद्धतना मुत्पन्नस्य  
 म्या दित्यपत्त्यागधारभूतस्य युत्पद्यमित्यपत्त्या योद्धततदाधारदयकञ्चविविति, पुस्तकान्तरे तु उत्पादतदाधारदयकञ्चानन्तर मुत्पादे सत्पुत्पन्नः  
 म्या नित्यपत्त्यागधारदयकञ्चो तात मत्पदादयमित्यपत्त्या दुद्धतनाया उद्धतनाया योद्धतः स्या दित्युद्धततदाधारदयक  
 चो कश्चादयकञ्चो पठं ताव दृष्टानि दयकञ्चो द्वैगसयोम्या मुत्पादादयचित्ता मया दृष्टिरया दुसर्वाभ्या मुत्पादाद्येव चिन्तयन्त्याह ॥ नेरह  
 नायमित्यादि ॥ अक्षपदमित्यपत्ति ॥ यथा-देहो ननु देहस्या दुस्य को विशेषः ? उच्यते दक्ष लिङ्गादि रनेकधा द्वे स्वेकमेवेति उत्पत्ति  
 नद्वयनाय प्रायोक्तिपूर्विका प्रजतीति गतिमूलादि ॥ विग्रहो यत्क मत्प्रधाना गति विग्रहगति स्तत्र यदा यच्छेद गच्छति

येण उग्रयणे उद्धेयि नैयम् ॥ नेरहपुण जते ! नेरहपुसु उग्रयज्जमाणे कि अद्धेण अद्ध उग्रयज्जह अद्धेण  
 नम् उग्रयज्जह सद्धेण अद्ध उग्रयज्जह सद्धेण सद्ध उग्रयज्जह जहा पठमिद्धेण अद्ध दग्गा तहा अद्धेणचि  
 अद्ध दग्गा नाणिद्धा, जवर जहि देसेण देस उग्रयज्जह तहि अद्धेण अद्ध उग्रयज्जह त्तिनाणियम्, एव णा

पादर दयकञ्चो पठिमी परे देभाया निर्वेदया धने वेभाया खेवा तदेवहिदे-सर्वेववादेवपादरेर सधेववासम्भवाहारे। सर्वं योवपादरानो  
 देम पादरे यवत्रोवपादर यवपादरे एवम पृष्ठिमीपरे पूषा तेजने इष्टो ज्ञातवा। एवमपठिमीपठववेववेवविचितम्। ए इवेमकारिकरी वि  
 मवेदनाया उग्रयमित्ये कस्या तिम बन्धामेविये पवि देवसावा ज्ञातवा निमदेय धने सर्वो पाठ पाठावा कक्षा तिम भव धने स्वकी पवि  
 पाठ पाभाया कक्षा, तेष्टोत्रमेवै-वेरएवमतेवेरएमुत्पवज्जमापोक्तिपदेवपाठंउग्रयज्जह। गारको द्वैभयवन्। गारकोनेयिदे उपजतो यवी खूखोव  
 पद गारकोने पठे उपवे। पदेवमगदउग्रयज्जह। यवया जौव धने गारको सर्वरम उपवे २। सर्वेवपाठंउग्रयज्जह। यवया जौव धने गारकोना भवे  
 रम उपज २। मयेवमदेउग्रयज्जह। यवया जौवतय धने गारकोना सर्वरम उपवे ३ एवमभेनो ज्ञातवी। अक्षपदमित्येवपाठंउग्रयज्जहपाठेवविपदं

नारा विपद्गतिममापय उच्यते प्रविपद्गतिममापयसु अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिनिषेधमाश्रयणा द्यविषा विपद्गतिममापयसु भुगति  
 वश्यते चेत् तदा नारकादिपदेषु मयनेया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति त अ स्या दशादीनामपि तेषू त्पादयवशात् टीकाकारेण  
 कना प्यनिमायेना विपद्गतिममापय अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग  
 नतिमतां तत्रिपययताम् यदूना आयादाह ॥ विपद्गतिममापय अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग  
 मामपि तेषा आया विपद्गतिममापय अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग

गत्त एव सद्येयि सोलस देहगा नाणियक्षा ॥ जीयेण जते ! किं विपद्गतिममापयसु अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग

यस्यात् ? गोयमा ! सिययिगहगडु समायसु सिययिगहगडु समायसु एवं जाववेमाणि ॥ जीवाण  
 उगाभानियत्वा । तिम देहेकरो पाठदृष्टककथा तिम देहेकरो पवि पाठदृष्टक कथा इमकारं एव पूजये देय यने पक्षमाहिवो वियेयते तिहा  
 इम करोते देयमा विपद्गतिममापय अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग
 तिवे देहेकरो देयमा विपद्गतिममापय अमुगतिः स्थितोया विपद्गतिरानां य द्रुतं यत्यति ॥ जीयाहं जते इत्यादि ॥ प्रत्य सत्र जीवाना मानन्त्या रप्रतिसमय विपद्ग
 पतना भेदने । एवंमादिविमानमदमाभाविबन्धा । एम मयमा । मानेदृष्टकविचारीने उपयोगमहित कथा ॥ जीवेकभतेविपद्गतिममापयसु एव । एव  
 त्रिहा चविश मादेवतिदृष्टक कथेन तेमाटे गतिमन कथेन -- एवकोन हेमगवन् । प्यर्वाकोगतिकारी जीवचते तिवारे विपद्गति समाययकरोते । य  
 विपद्गतिममापयसु । सूरीमतिवरे जीवचमे पत्रवा यतिनेयि रसायको पवि प्रविपद्गति समाययकरोते । य  
 पागवोने पविपद्गति समाययकरोते, विपद्गतिममापयसु कथेन सजुगति कथेन जीवचकोने तोमरकादि पक्षनेयि सदाई प्रविपद्गतिव को  
 रमा नेरदृष्टक तेनद्वान एकादिकना पवि आरजादि गतिनेयि उपजवा कथेन तेमाटे इतिमय उत्तर । गोयमा सियविपद्गतिममापयसु । जेगीत

नत पाद ॥ एवमित्यादि ॥ श्रीवानां निर्दिष्टोपाद्या मेकैर्निष्पाद्या चोक्तपुस्त्या विपद्गतिस्मापयत्ये तत्प्रतिपेक्षे च बहुत्वमेवेति न प्रकृत्य, तद

नते ! किं विपद्गहगइ समावसुगा अविगहगइ समावसुगा ? गोयमा ! विपद्गहगइ समावसुगायि अ  
विपद्गहगइ समावसुगायि ॥ नेरइयाण नते ! किं विपद्गहगइ समावसुगा अविगहगइ समावसुगा ? गो  
यमा ! सवेयि ताव हीजा, अविगहगइ समावसुगा अहवा अविगहगइ समावसुगाय विपद्गहगइ समा  
यसुगीय २ अहवा अविगहगइ समावसुगाय विपद्गहगइ समावसुगाय ३ एव जीय एगि दियवज्जोति

म । विपदि कैत्राव विगुगति सयुक्त इति १ । निवपदियइयइसमावसुगा । एनेविगारे कैत्रोव अविगुगति सयुक्तइय २ । एवज्जोतिवमाविद्या । इ  
म मारको पादिदेर बागत् देमानिकताइ वउबोस वउक सइया । विदे वउवउल सइये—कोविपभतिकविपद्गहसमावसुगा । सवकोव सवाक्याइ  
वउरे ऐमगउव । एव विगुगति सइतइय १ सइया । अविपद्गहसमावसुगा । अविगुगति सयुक्तइय इतिप्रउ उत्तर । गोयमा विपद्गहसमावसु  
मावि । ऐमोतम ! कोव एनताइ, तेमाटे प्रतिसमये विगुगतिवत पवि सवा पायिये २ । अविपद्गहसमावसुगावि । अविगुगतिवत पवि प्रतिस  
मये सवो पायिये एकादिना संमउरहो । मोतमपूजे—देरइयावमतेकिविपद्गहसमावसुगा अविपद्गहसमावसुगा । मारको कोव सवाक्याइइरि से  
मउरहो ! एव विगुगति सइतइय १ सइया । अविपद्गहसमावसुगा । अविगुगति सयुक्तइय इतिप्रउ उत्तर । गोयमा विपद्गहसमावसु  
ओरते अविगुगतिवत सइये इतिप्रउ उत्तर । गोयमासमेवितावउका अविपद्गहसमावसुगा । ऐमोतम ! मारकोनेविये अविगुगतिवतकोव सवा  
३ एनकोव तेमाटे अविगुगतिवतनेविये वउवउलहीसइोव एने विगुगतिवत कोका तेमाटे विगारे को विगुगतिवत कोयमा पसंभवोमउवे पव  
वा इवेता एकादि पविइवे तेमाटे विगुगति सयुक्त कोवनेविये एकावउल पविइवे तेमाटेकपूजे—सयकाईकोवकोव अविगुगति सयुक्त पववा । पव  
माअविपद्गहसमावसुगाय विपद्गहसमावसुगाय १ । अविगुगतिवत एव इहा अविगुगतिवत मारको सवाकोवउवे एनेविगु

[illegible]

यन्नगो ॥ देवेण नन्ते ! महहिणु महज्जुहए महसुले महाजसे महेसरके महाणुजावे अविउक्कतियं चयमाणे किं

इमतिवन्तवो व एवादिपदिद्वये तेमाटे किनुइकतिवत एकपचिद्वये एइको युक्तपूर्वेखिखीवले । पइकापविषयइसमावखगाय विम्वइमतिवसमावखगा  
व । पइका अपविमुइकतिवन्त वखाइये खने किनुइकतिवन्त पविषयाइोव ए तोनभांगा खपने खसुरादिखदइकनेवियै पचि इमहीव भांग्राइये ते देखा  
उये—एवओविएमिदियवखारवमंसी । इम खीवने एतले विषयरहितखीवने तखा एखेक्षीमे ए वेकनेवियै विषयगतिवन्त तखा पविषयगतिवन्त वखाइो  
अइवे, तेमाटे तोनभांगा नइने, एतखामाटे खीव एखेक्षीवखीं खीव खदइकनेवियै तोनभांगाइवे मतिगा पविकारवो खवनसूखइये—देवेपमतेम  
इटिए । देवखनाख्खान्दकारे हेमपवन् । विमानपरिवारनी पयेमायेकरी । मइखुए । मइविख शरीर थाभरखंनो पयेमाये ख्यातिवन्त । मइखव ।  
शरीरनी पयेमाये मइावसवत । मइावसे । मोटा यखवत माटोप्रसिद्वले । मसैसखे । मइाईखरइे पखवा माटा सुखनीधखीजे । मइाखुभावे । प्रभा  
न वैवियादि खरवनेनिये समख । अठिखइयेपलंखसमावेकिंविखाखिहरपतिव । देवता मरखनेवियै शरीरखाइता एतले खीवतोयखी पचि मरखना



रूपं जिहति त्रिधा च भाहारयतीति यथा सुगुप्ताप्रत्ययं गुप्तसामितिह भुक्तावे कृत्यसिद्धकारकस्य भुक्तावे कृत्याहृतत्वात् ॥ परीमहवतिपति ॥ इह प्र  
 क्रमा तपरीयहभादेना रतिपरीयहो पाह्य स्यात धारतिपरीयहभिहितं दृश्यते चारतिप्रत्ययालोको व्याहारयहखर्वैमुस्यमिति आहार ममसा त  
 याविषयपुनोपादानरूप ॥ ग्रहेति ॥ अथ सज्जादिकबानर भाहारयति युजुषावेदनीयस्य चिर सोयु मशब्दात्वादिति ॥ आहारिण्यभावे  
 आहारित्येत्वादेरी नावार्यः प्रथममुद्रव इमेव च क्रियाकासमिष्टाबाहयो रजेवाभिप्रायेण तदीयाहारकारकस्या स्वतोष्ठा तदभस्तर ॥ परीयेयसा  
 उपनवइति ॥ चः नमुक्षये मदीय मदीयंवा आपु नवति ततय यत्रात्यपत्ते नमुमत्वादी ॥ तमासयति ॥ तस्य मनुमत्वादे रायु स्तवायुः ॥  
 प्रतिमंयदय त्वनमवतीति ॥ तिरिस्वआखियाडयैत्यादी ॥ दवनारकायुयोः प्रतिपेक्षो देवस्य तत्रानुरपादादिति उत्पत्त्यधिकारा विदमाह ॥

चिकाल हिरवत्तिय दुगठावत्तिय परिसहवत्तिय आहार नोआहारेइ अहेण आहारेइ आहारेज्जमाणे आहा  
रिए परिणामिज्जमाणे परिणामिए पहीणेय आउएज्जइ जल्यउधवज्जइ तमाउय पणिसवेइ त तिरिख

ननेविषे केतना ० ककास पाङ्गारलेवेनही इतिवाच सामाटे तेवढेहे—सव्या प्रत्यय आपणो उत्पत्तिस्मान् देखो, मातापितांना स्त्रीहानीस्मान् क जा नो तिहानीच्या रूपजे शुद्धादि पद्यम उत्पत्ति कारक देखी। दुमव्यावत्ति। दुमव्या थावे। परीसहवत्तिपाङ्गारपोपाङ्गारे। इहां परीसह गन्धे परति परिमदमेग तिगटे परतिपरीसह भिमिल पाङ्गार शुद्धय नवरे पाङ्गारमनेकरी तथा पुद्गल शुद्धरूप। पदेवंपाङ्गारेद पाङ्गारिज्जमावेपा णारिए। पडे मरकनमसे मव्यादिक चवतीरे पाङ्गारमेय पुमुचा वेदनीयमा चिरमास मववा असमय पयाचकी पाङ्गारिज्जमावे इत्यादिकना मात्रा य पहिमा मूत्रो परेआइवा एतसे क्रियावाक्य यने निहावाक्ये धमेदकववे, तेवगी पाङ्गारकासनी पद्यताकही। परिवाभिल्लमावेपरिवाभिए। परिमववांमांया ते परिमव्या कहीये। पडिबेवपाउणकठडकळर। तिवाएपडे पडोवे प्रसौबभामदुवे तिवाएपडे विवा मनुवादिक्तेनेविपे छपजे तमाउवपडिमवेदे तत्रहा ते मनुवादिक्ता भाउपु। प्रते यनुमवे भागवे ते जेवढे—तिरिस्त्रजोचिवाउववा। येवमरी देवतवा नारळने भाउखे छ

जीवेषमित्यादि ॥ गच्छं वक्त्रममावेति ॥ नमो ब्रुत्वा मन् गच्छं उरपथमाग इत्यर्थः ॥ दक्षिदिशावति ॥ निर्वृत्त्युपकरबलवशानि तानिहीन्द्रियपयोहो सत्या मविष्यन्ती त्वमीन्द्रिय उरपथते ॥ प्राविदिशावति ॥ लब्धुपयोगलक्षणाणि तानिच सचारिणः सर्वावस्थानावीभीति ॥ ससरीरेवति ससरीरी इन् समासाल्पमावात् ॥ ससरीरिति ॥ शरीरवान् सरीरी तन्निषेधा दसरीरी ॥ वक्त्रमवति ॥ व्याप्तामतिउरपथत इत्यर्थः ॥

जोणियाउयथा मणुस्साउयथा ? देवेण महहिण जाव मणुस्साउयथा । जीवेण जते ! गस्सं यक्कममाणे किं सइदिणु यक्कमइ अणिदिणुयक्कमइ ? गोयमा ! सियसइदिणु यक्कमइ सिय अणिदिणु वक्कमइ । सेकेणठेण ? गोयमा ! दक्षिदिशाइ पणुच्च अणिदिणु यक्कमइ जाविदिशाइ पणुच्च सइदिणु यक्कमइ सेतेण ठेण । जीवेण जते ! गस्सं वक्कममाणे किं सरीरीयक्कमइ असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सियससरीरी वक्कमइ सियअसरीरी वक्कमइ । सेकेणठेण ? गोयमा ! उरालियवेउसिय अ्याहारयाइ पणुच्च अ्ससरीरी वक्कम

पणे तेमाटे एकादिक तिवचना आजका भासने तथा । मणुस्साउयथा । मनुष्यना आजका पणुमवे इतिप्रत्य उतर । हुता गावमा । देवेषमा इदिण जावमणुस्साउयथा । देव महर्षिक बावत् यदे मनुष्यना आजका पणुमवे भीमवे इत्यर्थ । जीवेषमतेगस्यवक्त्रममावे । अपविशाना अधिकारय वी एकदेवे — जीवेषु भगवन् । मर्मेनैवियै अपवथा वक्का । किंसइदिणवक्कम । अं सइदिणु इदिबसहित उपजे भवथा । अविदिणवक्कम । अनिद्रिय इद्रो रवि त उपजे इतिप्रत्य उतर । गायमा सियसइ दिववक्कम । हे गौतम ! कदाचित् इद्रोसहित अपजे । सियअविदिणवक्कमइ सेकेषुपमते । कदाचित् इद्रिबसहित उपजे तिवारे मौतमक्कहे तेजामाटे हेमयवन् । इमकसु इतिप्रत्य उतर । गावमा दन्विदिशाइपणुसइ दिणवक्कम । हेगौतम ! निर्वृत्त्युपकर सचच अयनरसनाय चत् आनेन्द्रिय ते पर्वीस वक्का पुवे ते द्रव्येद्रो कहीवे, माझेद्रो पायोइ दिव रवितरणजे । भाविदिशाइ पणुसइ दिणवक्कमइ सेतेषुदेवं गोवमा । सच उपयाग सचच भंतगत प्रागरूप इन्द्रिय ससरीजीवने सब भवस्थानेवियै पुहवे ते पायो इद्रियसहित अपजे भगवत कहेवे —

तप्यदमयायति ॥ तस्य परंज्युक्तमवस्य ग्रथमता तत्प्रथमता तथा, किमिति प्राकृत्य त्वर्थ ॥ मातुरोति ॥ मातुरोति जनन्या भार्तेवं श्रोयित  
मित्य ॥ पित्रुसुकृति ॥ पितुः शुभं इव यदित्येव ॥ तति ॥ आहार मितियोग ॥ तदुजयससिर्हति ॥ तयो रुजयं द्रुयं तदुजय तव त लस  
मिष्टस्य सस्ययाः सस्ययत् तदुजयससिर्ह तदुजयसस्यया ॥ जसेति ॥ य तस्य गर्तस्यस्यया ॥ रसविगर्हति ॥ रसकृपा विक्रान्तो दुर्गपाद्या

इ तेयाकम्माइ पनुच्च ससरीरी वक्तुमइ सेतेणठेय गोयमा ! जीयेणं जते ! गप्पवक्काममाणे तप्पठमया  
ए क माहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउठेय पिउसुक्कं त तदुजयससिठ कलुसकिस्सि तप्पठमयाए आहार  
माहारेइ । जीयेण जते ! गप्पगाए समाणे कि माहारमाहारेइ ? गोयमा ! जसे मायानाणाविहाइ रसविगइउ

तवे कारवे हेमौतम । इत्वादि पूवत्तु, वसोमौतमपूवहे — आवर्ततेनघवक्तममावे । जीव हेमनवन् । गभनेविषे उपज्जते वक्को । विससरोरीवक्तमर ।  
सू यरोर सजित उपवे पवतरे पवका । यसरीरोवक्तमर । यरोररचित उपवे इतिप्रत्य उत्तर । गोयमा विससरोरीवक्तमर । हेमौतम । कदाचित् य  
रोर सजित उपवे पवतरे । विससरोरीवक्तमर । कदाचित् यरोररचित उपवे गौतमवक्कहे — उक्केवउपमते । तेष्वाभाटे हेमगवन् । इनकसु इत्वादि  
पूवत्तु उत्तर । गायमा सोराविवेवच्चिद आहारवार पवुव यसरीरोवक्तमर । हेमौतम । सोदारिक वेदिक्य आहारव ए तौन यरोरनौ उपेचाये यरो  
ररचित उपवे वेमाटे वाटवईता जीवने ए तौनयरोरनौ यमावक्त तेमाटे ययरीरोवक्का । तेषावक्काह यदुवसरोरीवक्तमर । तेजस वामेवएव यरोर  
जीवने सनार यवक्कानेविमै सर्ववामि पुवेवे तेमाटे । सेतेवउव मायमा । तेषेवे पवे हेमौतम । इमवक्कं विवारे यरोररचित विवारे यरोररचित उप  
वे यमोमौतम पूवहे — जीवेवंमतेगध वक्तममावेतपठमयाए आहार माहारि । जीव वंवाक्कावक्कारे हेमगवन् । यमनेतिवै उपज्जताजीवने यमनेविमै उप  
मागे तेजममौव भू आहारपते आहारि गृहेमै इववै इतिप्रत्य उत्तर । गायमा माथोपाव । हेमौतम । यतागे अतुसर्वधीवधिर । पिचमुव । पिता  
तानो एक । तंतदुमवईवइववविदतपठमयाए आहारमाहारि । ते आहारते मावानो अतुसर्वधी वधिर, पितानोवोयं, ते वेव मांजीमादि

रमयिभारा स्ताः ॥ तदेगदेसेव ॥ तासां रमयिस्तीना मेकदेवा स्तदेकं ॥ उवागेदयति ॥ उवागे विद्या इतिरूप  
प्रवृत्तौ पाविकरूप येनो निष्ठीवन विद्वान् नासिवासेया ॥ नृपयशूनि कुरुकक्षा रोमाणि कक्षादिकेयाः ॥ स्त्री

श्याहरेइ तदेगदेसेणय नृयमाहरेइ । जीयस्सुण जंत ! गप्पगयस्स समाणस्स स्थित्यउच्चरेइया पासवणेइया  
खेइइया सिघाणेइया वंतइया पित्तेइया ? गोयमा ! गोइणठेसमंठे, सेकेणठेण ? गोयमा ! जीवेण गप्पगए  
समाणे जमाहारेइ तंचिणाइ तं सोइ दिवत्ताए जाय फासिदियत्ताए, स्थिस्थिठिभिजकेसमसुरोमनहत्ताए से ते

मिवा मसिनसहित किस्सिदकप तेने प्रबननो ओव एइया पाहारपते पाहारएणै इत्थं । जीवेभतेपभगपसनावेकिमाहारमाहरेइ । वखो गो  
तनपूखे—ओइय इदे वाक्काहारे वेमवन् । गभमाचे अपनोवको स्वं ? पाहारपाहारै गइ इतिमय उत्तर । गोयमा असिमायावाविवापोरस  
वइयापाहरेइ । वेमातस । जेतममतजौवनो माता पनेअ प्रकारनो रसरूप विवति सुतकुम्भावि रसविकार पाहारपसेकरै । वदेगदेमेवयोवसाहरेइ ।  
निनि विवतता ननु एकदेय पाडा तिदिमहित यात्र पाहारै पाहारपइ, वखोगोतमपूखे—वावसुभतेमभगयसुसमावसुप्रस्थिउचरेइया । ओव  
ते वंशस्वाम्यहारे वेमवन् । गभनेदिदै अपनाक्का मी एतायता गभनेविने रक्षावकाने वद्विगीतीकरे इतिरूप प्रवयने वा विकसे । पासवचेइया । सुवु  
नोतिअरे परियमनकरै । ऐसइया । बूअभिनेवन् । सिवायएइया वतेइया । नाक्का येणनाये वमनकरै । पितेइया । पित्तनाये इतिमय । मगवतक्के  
खे—भायमा पाहणैमंठे । वेगोतम वपअ समवननो वतनहो । सेअभतेएवकुवर । गोतमकउखे—तेत्तामाटे भुभमवन् इमक्कसु गभगत ओवने उवा  
र दिवतहो । गोयमा जोदेवपप्रएएमभाचे कमाहारेइ । वेगोतम ओवगभनेविने रक्षावका नो पाहारकरै । तविवाइ । तेपुठिअरे । तजइ सोइ दियत्ताए ।  
ते कहे—गोवद्रिय गभ कामपने । कावफासिदियत्ताए । यावत्तुगुळ वत्तुरिद्रियपणे प्राचेद्रियपणे रसनेद्रियपणे अयनद्रिय पणे । पडिपडिमिळ । य  
स्त्रिहाड वाउमहिओ मीओते वेगटपणे । केसमभरामनसत्ताए । वेय विखीमभरनाकेय कमावाअ रोमक्कपादिवाअ मक्कपणे पुसकरै एतसेवोकेपरिष

येनमित्यादि ॥ सुधृष्टंति ॥ सर्वस्मिन् ॥ अत्रिष्यस्यति ॥ पुनः पुनः ॥ आह्वयति ॥ कदापि दाहारयति कदापि दाहारयति तथा स्वाध्यायत्वात्  
यत्नः सप्त दाहारयतीत्यादि ततो मुखेन न प्रभुः कावलिः माहार माहर्तुमितिभावः अथ कथमेतत् दाहारयतीत्याह ॥ मातृजीवरसहरको  
त्यादि ॥ रथो विप्रेते आदीपत यथा सा रसहरको मातृजीवरसहरको मातृजीवरसहरको, निमित्याह पुत्रजीवरसहर

पठेण ॥ जीजीविण जते ! गङ्गागए समणे पञ्चमुहेण कायलियआहारं आहारित्तए ? गोयमा ! गोइणठस  
मठे सेकेणठेण ? गोयमा ! जीविण गङ्गागए समणे सव्वत्तं आहारेइ, सव्वत्तं परिणामेइ सव्वत्तं उस्ससइ स  
व्वत्तं निस्ससइ, अन्निरुक्कण आहारेइ, अन्निरुक्कण परिणामेइ, अन्निरुक्कण उस्ससइ, अन्निरुक्कण निस्सस  
इ, आहस्स आहारेइ, आहस्स परिणामेइ, आहस्स उस्ससइ, आहस्स निस्ससइ, माउजीव रसहरणीपु

मे । मतेवहेव गोयमा । तेमाटे वेगीतम जीजे गभमाहिबबाने उबारदिब नपुवे वसोमौतमपूवेवे—जीवेवमतेगममएवमावेयमुसइव । जीव हेमगव  
न ममेवेदेवे रसोवका समर्थवे सुवेवरो । कावलिंवाहार माहारित्तए । कवसाहारो पाहारोवने एतवेजीव गभमाहिबको कवसाहार वेवने  
ममपवे इतिप्रत्यु उत्तर । यायमा आहवेसमं । वेगीतम । एवम सममनी वत्तनहो । सेवेवहेवमतेएवमुसइ । तिवारै मौतमबवेवे—तेस्वामाटे वेमगव  
न । एम कम्म दावत् कवमाहारनही इतिप्रत्यु उत्तर । गोयमा जीवेवंगममएवमावे । वेगीतम । जीव कवसाहारो गमनेविवे रमायको । सव्वपोधा  
हारेइ । मगमे पाव्यावेवरो पाहारो । सव्वपोधपरिवासेइ । सब पाव्यावेवरो परिबमवे । सव्व पाव्यावेवरो उवापवे । सव्वपोधोसस  
इ । सर्व पाव्यावेवरो नौमामवे । पमिक्कव पाहारो । बारवार पाहारै । पमिक्कव परिबमवे । बारवारपरिबमवे । पमिक्कव उवापवे । सव्वपोधोसस  
मामवे । पमिक्कव नौसम । बारवार नौसामवे । पाहवपाहारो कदाचित् पाहारै । पाहवपरिबमवे । कदाचित् परिबमवे । पाहवउवापवे । क  
दाचित् उवापे । पाहवनीवसइ । कदाचित् नौसवे । माउजीवरसहरको । मातृजीवरसहरको । पुनः पुनः जीवनी रसहर

नी पुण्य रसोपादाने कारयत्या एकमेवमित्याह मातृजीवप्रतिपदा सती सा यत् ॥ पुतजीवपुनरुत्ति ॥ पुत्रजीव स्पृष्टवती इह प्रतियपदा  
मातृसम्यग् स्तर्दशत्वात् स्पृष्टताव सम्बन्धमात्र मतदशत्वा दयथा मातृजीवरसहरणी पुत्रजीवरसहरिणीचेति द्वे नाहो स्त स्वयो या या मा  
तृजीवप्रतिपदा पुत्रजीवरस्पृष्टेति ॥ तद्वदिति ॥ यस्मा देव तस्मात् मातृजीवप्रतिपदाया रसहरणा पुत्रजीवरस्पृष्टतात् आहारयति ॥ अतएवियति ॥  
पुत्रजीवरमहरस्यापि पुत्रजीवप्रतिपदासती मातृजीवरस्पृष्टवती ॥ तद्वदिति ॥ यस्मा विनोति अरीरं, उक्तं तत्रासरे--पुत्रस्यमात्रीमातुय इदिना  
म्रीनियप्यते । ययासीपुष्टिमात्रेति वेदारहस्यमुच्येति ॥ १ ॥ गर्जापिकाराववेदमाह ॥ अहमिति ॥ मातृगति ॥ मातृविविहारबहुलानीत्य

सजीवरसहरणी, मातृजीवप्रतिपदा पुत्रजीवपुनरुत्ति, तम्हा आहारैश्च तम्हा परिणामेह, अविरावियण पु

सजीवपनिधया मातृजीवपुनरुत्ति, तम्हा विणाह तम्हा उवाचिणाह, सेतेणठेण जाय नो पञ्चमूहेण कावलि  
य आहार आहारित्तए ॥ कइणं जते ! माइयगा पसुत्ता ? गोयमा ! तत् माइयगा पसुत्ता तजहा मस

नो भासितात् । मातृजीवप्रतिपदा । मातृजीव प्रतिपदा यको । पुतजीवपुनरुत्ति । पुत्रजीवसो फरसो । तम्हापाहारैश्च तम्हा परिणामेह । अविरावणी इमहेते  
कारणयो मातृजीवप्रतिपदा रसहरणीयेकरी पुत्रजीव अय नवको पाहारकरे तेमाटे अविरावियण । नौको मातृजीव रसहरणी पवि पसुत्ता  
वपनिधया । पुत्र जीवते प्रतिपदा यको । मातृजीवपुनरुत्ति । मातृजीवसो फरसो । तम्हाविणाह । तम्हाविणाह । तम्हा मरीर पो  
टिबरेनभारे । तेनेबरेण गायमा आवचोपम् । तेनेबरेण येमोतम । यावत् मही समं । मुनेबकाविविधाकारमाहारित्तए । सुखेकरी कवलाहार कर  
वाने पतायता मुचे कवलाहार करे मही इत्यर्थे यथेना अविचारवकीव एवम् गीतमपुनरुत्ति--अर्थभतेमईयगापसुत्ता । केतला अविवाक्यालकारे इम  
मवन् । मातृजीवप्रतिपदा विचार बहस कदा इतिप्रश्न उत्तर । गायमा तपोमाइयगा पसुत्ता तजहा । हेगोतम ! तोन माता सबधी भग कदा  
ते कहेते--मंसवापिएमरबसुमं । मांस १ बरि २ मायानो मीको अथवा कोकसदि अथवा कासेका वसगोतमपुनरुत्ति--अहमतेपेइयगा पसुत्ता । के

[illegible][illegible]

तिष्ठेयः ऽ वगएइति ऽ न गर्जोर्राजोदिगर्भरूपः, सञ्चित्वादिविद्योपशानिच गर्जस्वस्यापि तरकाप्रायोगकर्मव्यसम्भवाभिप्रायकतयो स्तानि, वीये  
मह्य्या वेत्तिपनव्या सङ्ग्रामयतीतियोगः अथवा वीयलब्धिको वेत्तिपलब्धिकश्च सञ्चिति परामीक द्वात्रैस्य ऽ सोचति ऽ प्राक्स्व मन  
मायपाप्य ॥ पयमेनिष्पुनइति ऽ गद्वदेश इतिः क्षिपति ॥ समवहन्ति समवहन्तोभवति तथायिपुद्गलपहवाये सङ्ग्रामसङ्ग्राम

મકાલસમયસિ યોચ્છીનો જયહૃ ॥ જીવેળ જતે ! ગણ્ણગણુ સમાળે નેરહણુસુ ઉવથજોજ્ઞા ? ગોયમા ! છત્યે ગડણુ ઉવથજોજ્ઞા , છત્યેગહણુ નો ઉવથજોજ્ઞા , સેકેળઠેળ ? ગોયમા ! સેળ સઘીપણિદિણુ સઘાંહે પજ્ઞા સ્તીર્ણહે પજ્ઞાસણુ થીરિયલ્ણીણુ ઘેઝણિયલ્ણીણુ પરાણિય સ્થાગય સોસા નિસમ્મ પણસે નિચ્છુનહ, ઘેઝણિયસ મુઘાણુ સમોહણહ સમોહણહણુ , ઘાઝરગિળીણુ સેળાણુ વિઝણ્ણ વિઝણ્ણિત્તા ઘાઝરગિળીણુ સેળાણુ પરાળી

॥ दिव षडति वाक्काम्यकारे उपपन्नना अतिमसमय भक्तो अनवर ए मातापितासंबंधा शरीर ह्रासमागवातायवा छ हृत्काकाह समवनेविपै वा च ययामे एमायता जेओबने पाञ्चखाने छेइसे समवे शरीरमिटै जाय इच्छव, गर्भाधिकारबकौख वखोमीतमपूछेहे - जीवबभतेगभएसमाहे । जीवबभेम वद् यभभाहेवका । नेरइएमुठववखेव्या । जमरी भारकनेविपै नारकीपचे छपले इतिप्रत्यु उत्तर । गीयमा चखेगरएठववखेव्या । हेमीतम वाइएकजीव भारकोनेविपै छपले । चखेगरएपाठववखेव्या । जेतसा पञ्च जीव नखपले तिवारे गीतमपूछेहे—सेखेबहुभतेएवबुचइ । तेज्जामाटे हेमगवन् इनकाइका इएक अपजे जाइनअपजे इतिप्रत्यु उत्तर । गीयमा सेबसखोपबिंदिएसव्याहिपज्जत्तए वीरियसखीए परापीयें भागवसोवा बिसय पयंस नच्छ महजिन्दभरत्ता । हेमीतम वाइएकजीव राचीनां गभनेविपै पाइ एतथै राजपुत्रहुये ते जीव बवाक्काकारे सखीयो पचेदो सर्व खेपोतानो पवसिति ने खरी पयाति भावपते पांखा तेजीव बोवसबिखरी तथा वैजिबबबिखरी पववा वीर्यबबिखत तथा वैजिबबबिखतवको यजुनो सेना चटक भावत मोमभोने मगमे भवधारीने जीवना प्रदेग गभनो वाहिर काठे काठीने । वेठम्विससमुग्धाएबसमोइरएइसमोइरइत्ता । वैजिब समुवातेकरो समवव





पविष्णा न्यादितानि करणानि त्रिषाणि कृतकारितामभतिक्षयान्त्या यन् स तथा ॥ तद्वायवान्नयिष्यति ॥ अमरं दनादिर्ध्वरे तद्वाजानयना  
पांदिनश्चारेण प्रायितो यः स तथा ॥ पर्यसिष्यत्तदभिति ॥ पतसिष्यत् सप्तमकरतायवरे काल मरुभिति ॥ तद्वायवस्त्विति ॥ तथाविषस्य सवि  
तस्य त्वयः, ययमस्य मापः, यावददरे देवमोतोत्पादङ्गुत्य मति अमरमाह न यवनयो सुस्थस्यमन्नामायः ॥ माद्वस्त्विति ॥ मा इने त्वेव  
मादित्ति, अयं स्युभमाकातिपातादिनिवृत्तत्वा एव स माह न अयथा द्राक्षको द्रक्षवपस्य देवतः सद्वायात् द्राक्षको देवयिरत सास्यवा

नेरुडए सुउयधज्जडु सेतेणठेण गोयमा ! जायअत्येगडए नोउयधज्जेज्जा । जीवेण नते ! गप्पगए समाणे देव  
 लागे सु उययज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्येगडए उवमज्जेज्जा अत्येगडए नो उवधज्जेज्जा ? सेकेणठेण ? गोयमा !  
 सेणमणी पंचिदिण सत्ताहि पज्जसीहि पज्जसए तहाकमस्स समणस्सवा माहणम्सवा अत्तिए एगमवि अया

तुमिह । तमिने तन्मन । पर्यादिकनदिये दितइ जेइना पर्वाधिकपर मनखे जेइना । तजेसे तदम्भइसिए । धर्मादि परसेआछे जइनौ प्रयादिविये प  
प्रमास भामादि निमित्त दियखे जइना । तनितम्भइसमाये । तिसा प्रयादिकने तीव प्रार्दन खतन विगेषकरै । तद्व्यावृत्तसे । तिसा पर्यादिकनेविये  
उपसङ्ग । तद्विषयकरये । तिसा पर्यादिकनेविये इहो व्याख्या प्रथमा करण करायण अननायुगादय । तगभावनाभाविये । तेहीज प्रर्वादिकनी भावना  
भाषाछे पनादिसंभारनेविये तेओइ । एयमिचं पतरमि । उइवा मगुमकरय पदभरनेविये पतरनेविये । कार्त्तकरेखा । मरखभमपतै पमै तो तेओव  
मरोने । मरएमउउवस्यइ । मरकनविपै मारकपये अपये इत्यर्थ । सेतेकेइय गाअमा जायधरसेइएणाउवयलेखा । ते तेके कारये सेगौतम इमअज्ञो याव  
तु आइ एउ ओइ यमभादिसयो मारकोनेविये अपये आइ एकओव नखपजे । आवेअभतेगभगएसमावेदेषोएसुठवयलेखा । वयोमौतमपूछे—ओव  
केभमन । यमभादिरज्जापको देवनाजनेविये देवतापने अपजे इतिप्रत्य उत्तर । गोअमा पारवेगइउठवयलेखा । हेगौतम । कीइ एकओव गंभर्माधियको  
मरी देवभाकनेविये देइपने लपण । पारवेगइएनाउउवयलेखा । आइएक नखपजे । सेयेओभमतेएकवुइइ । गोतमपूछे—ते खेकारये हेभगवन् । इमकअ

अतिरिति ॥ सुमीचे एकस प्याला मनेक भाये आराधाता पापकर्मेज्य इत्यापे अतएव पार्थिकमिति ॥ तठिति ॥ तद्वनत्तरमेव ॥ सुवेगआपसुष्टे  
ति ॥ सुवेगेन जवजयेन जावा अहुा अद्धान बर्मादिपु अस्य स तथा ॥ तिविषमभाबुरागरतेति ॥ तीन्नी या धर्मानुरागा धम्मवपुमान सेन रक्त  
इय य सुतया ॥ धम्मकामरुति ॥ धम्मो अतवारितसकथः पुस्य तत्कलभूत ज्ञानकर्मेति ॥ अदमज्जएवति ॥ आश्वफसवत्तुअः ॥ अत्येज्वति ॥

रिय धम्मिय सुधयण सीच्चा निसम्म तन्न ज्ञवह सर्वगजायसहे तिसुधम्माणुरागरत्ते सेण जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सम्मकामए मोस्ककामए धम्मकस्सिए पुण्णकस्सिए सम्मकस्सिए धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सम्मपिवासिए मोस्कपिवासिए तस्सित्ते तम्मणे तस्से तदज्जवसिए तदठोद्यउत्ते तदप्पियक

[illegible]

पानीत सामान्यतः पतयेय विनियत उपपत्ते ॥ चिह्नजति ॥ ऊर्ध्वस्थानेन ॥ निमीयजति ॥ निपदनस्थानेन ॥ तुयहेजति ॥ झयीत ॥ समभागजति ॥ मम पणियम मार्चनियाठ मय्यत्र पनुपपातहेतव्या दागजति ॥ तिरियभागजति ॥ तिरिदीनो मूला ॥

रणं तन्नायगात्तायिण एयसिण अंतरसि काल करेज्जा देयलोएसु उयवज्जइ सेतेणठेण गोयमा ॥ जीविण जने गप्पगए समणे उत्ताणएवा पासवएवा अयसुजएवा अय्खेज्जाया चिठेज्जाया निसीएज्जाया तुयहेज्जाया माज्जा तुयमाणीए सुयइ जागरमाणीए जागरइ सुहियाए सुहिए जवइ दुहियाए दुहिए जवइ ? हता गोयमा ! जीविण गप्पगए समणे जाय दुहियाए दुहिए जवइ , अहेण पसयणकालसमयसि सीसिणया

तथाप पय्यमायजे जेइने । तदहावज्जे । तेहोण पर्ये करो सजित्थे । तद्विपवकरवे । तेहोण पयनेविदे वर्यित दोधावे करपइ द्रीय खेइना । तत्तव नाभाविद । तेहोत्र भारवाये करो भागित्थे । एवंसिचं चतरंसि । एववा पंतरनेविदे एतत्थे एववी भावनाये भावतोववी । कार्वकरेव्वा । कासकरे मर वरामे ना तेओव । देववाएमउववइ मेतेवहेवं सोयमा । देवमोवनेविदे देवपत्ते अपत्ते ते तेचे पर्ये जेगोतम । इमक्कसु कोई एकजपत्ते कोइएक न ऊ पत्ते वनी मोतम पूइजे—ओविबभाने गभगणसमाने । जीव वंवाक्कावकारे मभनेविदे रओवको । उत्तावएवा । अंभीपत्तो हए तेइने पावारै । पाविबगवा । पावाने भारे । पंगुपुजएवा चत्तेव्वा । पंगुपुजनीपरै कूववी सामाये पैसिको एहोण विसेयवी कहेत्ते—चिठेज्जा । अइत्थानवे खडो वाव । तिवोएज्जा । मनीपरै पैने । तवहेज्जा । मरककरे मूये । माउएतुयमावीएखइ । माता मूवतायका मूये एतत्थे मातामूये तिवारेमूये चानदमानोएज्जामरए । ज्ञापतावका आमै एतत्थे माताजामै तिवारे मभपचिजाने । सवियाए सविएमवइ । माता सुणिनीये पच पणि सुणिगो पूवे इवियाएइविए भवइ । माता दुणिवीजे पुवपवि दुणिया पूवे इतिपय उत्तर । हता गायमा । जगोतम । जीवेणमयएममाने जाव दुवियाएइविए भवइ । ओर मभमार्जि रखायका यावइ माता दुग्गेये पुवपवि दुग्गेवने एतन्नासगे कइवी । पहेर्णपसवकाभुममयसि । पय इविये वंवाक्कावकारे प्रमत्ति

ठरा क्रिगन्तु स्मवर्तते, यदि तदा विमिषात मरुत मापद्यते निर्लभाभावादिति गर्भो विगतस्य च तस्या हताह ॥ यथायथाविधिपति ॥ यथाः  
 साया यच्यो इत्यव्यो येयां ताभि वस्येय्यानि यथा यथा हास्यानि यथैवासा भ्यधुजानीत्यर्थः यद्यदो वाक्पाभरत्वद्योतनार्थ ॥ अति ॥  
 तस्य यत्नमिदं तस्य यदाति सभाभ्यतो वृत्ति ॥ पुत्राति ॥ पोपिताभि गाढतरकथतो निचसति उद्वर्तनापवर्तनकरषवर्जसपकरखयोग्यस्येत  
 व्यवस्थापितानीत्यर्थः यथा यथा भुगुनि कथ यत पूर्व स्पृष्टानीति ॥ कथाति ॥ निष्काचितानि सुवर्करबायोग्यत्वन व्यवस्थापितानीत्यर्थः ॥ पट्ट  
 विपाति ॥ मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजतिवसादिनामकर्मोदिना सङ्गोदयत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थः ॥ अग्निनिविठाति ॥ तीव्रानुजावतया निवि  
 हाति ॥ अन्निसमन्वापयति ॥ उद्विषाति उदीर्घानि स्तत उदीरबाकरणेन नो दितानि व्यतिरेकमाह ॥ नात

पाण्डिवा श्याच्छइ सम मागच्छइ तिरिथ मागच्छइ विणिहाय मावज्जइ वसुवज्जाणिय सेकम्माइ थ  
 छाइ पुठाइ पिहिहाइ कठाइ पठवियाइ अग्निनिविठाइ उद्विषाइ जीउवसताइ भवति

बान ममनेनिवै। सोखेयवा पाण्डिवा धामच्छइ। मल्लकेकरो वा यववा पगेकरो वा यववा भावै समविपमनीं यववा। सव्यमायच्छइ। मनी प  
 रे वातना हेतुनही तिमभावै माताभा उद्वरको कोनिकरीनिबले। तिरिवमायच्छइ। तिरिवाहाव नौकसे। विविक्कायमामच्छइ। वो मरुषपांमै  
 नौकसुशाना पमावही ममवको नौकस्थाने जेवाय ते कहेहे—वसुवज्जाणियसेकमाह। यथ ज्ञावा ते वस्य इववायोग्य जेइने ते वस्यवज्ज यववा वस्यवकी  
 बाय पमम वयद ज्ञाव्यातिरपचाना सूचवज्ज सेति। तेइ ममै कर्म तेजप्रते। वहाई पहाई विक्काइ कठाइ पट्टवियाइ। सामान्यवकी वांध्या गाढा  
 रीया यवगेकरो साया निष्काचितकर्म बांध्या मनुष्यगति पथेदोजाति वसादिनामकर्म करो जेसङ्गोदयपसे व्यवस्थापित कीवा। अभिनिविहाइ।  
 तोव पनभावै वरी साया। अभिसमन्वायसाइ। उद्वर सव्यव इवा तिवारपछो। उद्विषाइ उदीरवसताइ भवति। यापनीज उदीरवा करेकरो उद  
 व पाया, हिवे व्यतिरेक कहेहे—उपप्राति मज्जा हुवे। तथाभवइ दुक्खे दुक्खे दुरसे दुक्कासे यन्निं यज्जते यन्निप यन्नुमे। तिवारपछे हुवे जेजमना उद

वसतावति ॥ अनिष्टादीनि व्याप्याताम्यो वैद्यार्थानिवा ॥ ह्रींस्वरिति ॥ अस्यस्वरः ॥ दीनस्येव दुःस्थितस्येव स्वरौ यस्य स दीनस्वरः ॥  
 प्रबादेयवपवापाएविति ॥ इदं मन्त्रपठना प्रत्यावातद्यापि समुत्पन्नोपिवा नादेयवपनो प्रवति ॥ इति प्रथमस्तोत्रे सप्तमः ॥ ९ ॥  
 गर्भयन्त्रमता सप्तमोद्वाकस्यान्त उक्ता गर्भवास द्यायुधि सती त्यायुनिरूपकाय तथा दिगाथाया यदुक्त ॥ भासेति ॥ तदन्विचानाय चाष्टमो वृंश

तत् नवह्र , दुर्धवे दुष्टयो दुग्गधे दुरसे दुफासे स्थण्ठे स्थकते स्थपिए स्थसुने स्थमणुखे स्थमणामे हीण  
 स्वरे दीणस्वरे स्थण्ठस्वरे स्थकतस्वरे स्थपियस्वरे स्थसुनस्वरे स्थमणुस्वरे स्थमणामस्वरे स्थणाएज्ज  
 वयणं पच्चायाएयिन्नवह्र वसुवज्जाणिय सेक्कमाह नोयदाह्र पसत्य नेयह्र जाय स्वादेज्जवयण पच्चायाए  
 यि नवह्र सेव नति नते ॥ पवमसए सत्तमो उहेसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ एगत्तयालेण नते !

यतो दुष्टरूप भूषा गंध मुखवास भूङ्कारस भूँको फरस जटकंटाकानो परे पणिह असुखकारी सदरता रहितपुवे देहवावोप्यनहो दोठा मवचपकावे । प  
 मणुखे चमचामे ह्रींस्वरे दोबस्वरे प्रविट्स्वर प्रवठस्वरे धर्पटस्वरे । अगापंगी यामवासरीसा सबने चमच प्रत्यस्वरपुवे भूँको दरिद्रौसरीखोस्तर  
 वाकनोपै समुलकारी सुदरतारहित जटनोपै स्वर नुमाख यन्त्रो परे प्रपौतिकारो स्वर । प्रथमस्वरे । प्रथमस्वर कामे असुखामचो लागे । प्रमह  
 चन्दरे । प्रमनाञ्च स्वर ज्वर चवराटनोपै । प्रमचामस्वरे । सबने प्रमाचस्वर । प्रचाएज्जवयव पच्चायाएविमवह्र । प्रनादेवचन इसापुवे ते वचन  
 काईपादरैगहो तेहना वचनकाह मांनैनहो एतसे प्रथम चमना फल एकज्जा । वचनकाखिसेवकाह ॥ धिरे चर्चवध प्रथमचमनेनयो बांध्या तेजोवने  
 चोबहाह पसटवलेवव । एतसे प्रमचमनो उदबले जेहने तेहनेमखो जाचवो सुवर्णरूप सुगंध इत्यादि सब मसाकज्जा । ज्ञावपादेज्जवयव पच्चायाएवि  
 मवह्र । यावत् प्रादेव वचन सबमनुष्यादिने मानवावोप्यपुवे, एतसे प्रमचमनाफल कज्जा । सेवमते २ त्ति । तहति सेमववन् ! ए पण्डिता यतकना सा  
 वमा उषेयाना ट्यासिस्सा ॥ ० ॥ पाणिहा उषेयानेविदै गर्भनो वल्लव्यता कही , तेयम पाज्जसेपुवेहे तेमाटे पाज्जसानी प्ररूपका

न सत्रच सूत्रम् ॥ एगतवासेत्यादि ॥ एकान्तथासो मिथ्यादृष्टि रविरतोवा एकान्तपक्षेन मिश्रता व्यभिचिनति यत् कान्तबासत्वे समानेपि मानाविश्यापुत्रभ्यन्तं त स्महारम्माद्युन्मानेदेखनादितनुकपायत्वाद्यकामजिर्जरावितदेतुविद्येयवज्जादिति अतएव वासत्वे समाने प्यविरतसम्यग्दृष्टि मनुष्यो देवापुरेव प्रकरोति न ओयादि एकान्तवासप्रतिपक्षत्वा देकान्तपक्षितयूत्र तत्रच ॥ एगतपक्षिएवंति ॥ एकान्तपक्षित सापुः ॥ मनु

मणूसे कि नेरइयाउय पकरेइ तिरिश्चाउयपकरेइ मणुष्याउयपकरेइ देवाउयपकरेइ नेरइयाउयकिञ्चानेरइए सुउनयज्जइ तिरियाउयकिञ्चा तिरिएसुउववज्जइ मणुयाउयकिञ्चा मणुएसु उववज्जइ देवाउय किञ्चा देवलो एसु उववज्जइ ? गीयमा ! एगतवालेण मणुस्से नेरइयाउयपि पकरेइ तिरिमणुदेवाउयपि पकरेइ नेरइया उयपि किञ्चा नेरएसु उववज्जइ तिरिमणुदेवाउय किञ्चा देवलोएसु उववज्जइ । एगंतपक्षिण जते ! मणुस्से

बरेइ - एगतवासेचमतेमन्ने । एकांत वासक मिथ्यादृष्टी तथा अविरतोक्तं एकांत पक्षे करोने मिथ्यपू गयो एवमो हेमयवन् ! मनुष्य । किरिरेरबाउये पकरेइ । मंनारकोमा पाखखोकरे १ । तिरियाउयपकरेइ । अथवा तिरिवेना पाखखोकरे २ । मणुपाउयपकरेइ । अथवा मनुष्यनो पाखखोकरे ३ । देवाउयपकरेइ । देवतानो पाखखोकरे ४ । ऐरइवाउयकिञ्चा । नारकोनो पाखखो करोने । ऐरइएसुउववज्जइ । नारकोनेवि नारकोपये उपजे । तिरिवा उयकिञ्चा । तिरिचन पाखखो करोने । तिरिएमउववज्जइ । तिरिच गतिनेवि तिरिचपबं उपजे । मणुयाउयवावेदेवाउयकिञ्चा । इम मनुष्यनो पाखखो करो मनुष्यगतिनेवि मनुष्यपबे उपजे यावत् देवतानो पाखखो करोने । देववाएउववज्जइ । देववावेवि देवपबे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । योवमा एगंतवासेचमन्ने । गीतम ! एकांत वासक मिथ्यादृष्टी अविरतो मनुष्य तथा । ऐरइवाउयपिपकरेइ । नारकोनो पाखखो पबि करे । तिरिमणुदेवाउ ययिपकरेइ । तिरिचनो पाखखोपबि करे मनुष्यनो पाखखो पबि करे देवतानोपाखखोपबि करे । ऐरइवाउयकिञ्चा । नारकोनो पाखखो करोने । ऐरइएसुउ ववज्जइ । नारकोनेवि उपजे । तिरिमणुदेवाउयकिञ्चा । इम तिरिचनो मनुष्यनो देवनो पाखखो करोने । देवलोएसुउववज्जइ । देवलोनेवि देवताप

स्वेति ॥ बिद्धेयं स्वरूपज्ञानार्थमेव धनमुच्यते ॥ काण्डपवित्रतास्वायीया तद्योगव सर्वविरते इत्यस्या प्राकारिति ॥ शर्गतपक्रिएषमनुस्वेप्राउय  
सियपकरेइसियनोपकरेइति ॥ सम्पन्नसत्तके धपिते न वप्रास्यायुः साधुः अर्वाण् पुन र्गन्ताती त्यतठप्यते स्या एषाकरोती त्यादि केवतमेव ॥ दोगएउ

किं नेरुयाउयं पकरेइ जाय देवाउय किञ्चा देवलोएसु उवयऊड ? गोयमा ! एगतपक्रिएण मणुस्से स्या  
उयं सिय पकरेइ सिय गोपकरेइ जइ पकरेइ गो नेरुयाउयं पकरेइ जोतिरियाउयपकरेइ गोमणुयाउ  
यपकरेइ देवाउयं पकरेइ गोनेरुयाउय किञ्चा नेरुएसु उवयऊड, जो तिंरि नेमणु देवाउयं किञ्चा देवेसु

ने छपवे । एमतपक्रिएकभतेमबूते बिबेररडाउवपकरेइ । एकांतवास प्रतिपद्यवकी एकांत र्पडितलूकबूते—एकांतपडित ते सावुमनव, मनुष एवकी  
विमेषवचै सकपकावमाने एवै मनुष विना एकांत पडितपयाना अबोनको एने मज्जनविषै एपि सर्व विरतिटाको बोजाने एकांतपयाना अभाववै  
इस एकांतपडित मनुष हेमपवन् । एं नारकोना पाउछाकरे । इस तिव न मनुष देवको पाउछाकरो तथा नारकोनी पाउछोकरो नारकोनेविषै छप  
जे । जावदेनाउवकिञ्चा । देवपाउउवववव । इस वावत् तिय न मज्ज देवको पाउछाकरो देवसावनेविषै छपवे इतिप्रश्न उत्तर । गोवमा एगतपक्रि  
एकमवेषाउवसियपकरेइ सियपापकरेइ । हेमोतम । एकांतपडित मज्ज सबविरलो साधु पाउछो किबारे वाचै विषै मनुषे सातप्रव्रति छेपबोवने न  
नतानबधी जाय मान माया सोम ४ मिषालमाइको १ मियमाइको १ समवितमाइको ० ते पाउछाना बध मकर एने इयन सतव मयकोषा पडिछा  
बाधै तेमाटेबहु किबारे बाधै मियारेनबाधै । अइपकरेइ बाबेररपाउवपकरेइ । जोबाधे ती नारकोना पाउछो नबाधे । बोतिरिवाउवपकरेइ । वकी ति  
य एको पाउछा नबाधे । सोमवागाउवपकरेइ । वकी मज्जनो पवि पाउछा नबाधे तोन पाउछा नबाधे । देवाउवपकरेइ । एव देवतानो पाउछोबाधे  
बोनेरपाउवकिञ्चा । नारकोना पाउछोकोरीये । नेरएसुउवववव । नारकपणे मज्जपवे, इस तिर्यग्नेविषै मज्जपवे । बोतिरि बोमबुछ देवाउवकि  
या । इस मनुषनेविषै पवि मज्जपवे, देवतानो पाउछो करीने । इनेसुउवववव । देवभतिनेविषै छपवे । सुकेण्डेवभतेवावदेवाउवविषा । गोतमकइ





पापकृति एवान्तपशितो द्वितीय स्थानवर्तिता द्वास्तयशितस्य वास्तपशितसूत्र तत्र ॥ वास्तपशितसूत्र ॥ वास्तपशितसूत्र ॥ वास्तपशितसूत्र ॥  
विमक्तिपरिचयानात् देवा दुपरयत विरतो भवति ततो देवा स्थूल आकाशपातादिक अत्याख्याति वर्जनीयताप्रतिज्ञाभीते आयुर्वन्धस्य कि  
याः कारकमिति क्रियायुग्राहि पञ्च तत्र ॥ कर्मासिद्धि ॥ कर्मे नदीत्रलपरिवेष्टित वृक्षादिति प्रवेस ॥ दहसिद्धि ॥ इदं प्रतीति ॥ उदगसिद्धि ॥  
उदगे वलाग्रयमात्रे ॥ दवियसिद्धि ॥ द्रविक वृक्षादिद्रव्यसमुदाये ॥ वास्तपशिवति ॥ वलये वृत्ताकारनद्यायुदकुटिलगतियुक्तवेसे ॥ दूमसिद्धि ॥

उय किञ्चा देवेषु उवयज्जाह ? गोयमा ! आलपन्तिण मणूसे तहारायस्स समणस्सवा माहणस्सवा स्थिति  
एगमवि श्यारिय धम्मियं सुययण सोस्सग्निसम्म देस उवरमह देस णोउवरमह, देस पस्सुस्काह देस णोपस्स  
स्काह, सेतेण देसीवरमह देसपस्सुस्काणेण णो णेरहयाउय पकरेह जाव देवाउयं किञ्चा देवेषु उवयज्जाह

बावत् देवताना पाखो करीने देवगतिनिवि देवपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । आरमा वास्तपशितसूत्रे तहारायस्स । देवोत्तम । वास्तपशित मनुष्य  
एतत्त देवविरतो वाक्क तवानिह तथा रूपे । उमबरसवा माहबरसवा । समर तयसीने माहबने । एतिण एगमवि । समीपे एवपवि । पारि  
वं धम्मिव सुवव सोचा । पाय उत्तम धर्मसंबंधी मळोक्कन सो साभसीने । विसवा । मनने अपथारीने । देसउवरमह । देवयवो निवत्ते । देसबोसव  
एतत्त । देवबवो ननिवत्ते । देसपस्सुस्काह । कुत्तमावातिपातादितो पक्कसावकरे । देसबोपक्कसाह । देये एक पारम सुक्कनो पक्कसाव नकरे । सेतेव  
देसावरमहदेयपक्कसाव । ते वास्तपशित जिणे कारवे देवबवो निवत्ते । देवबवो कुत्तमावातिपातादितो पक्कसावकरे तिवेकारे । कोणेरयाउवपक  
रेह । मळी मारकीनी पाखसावरे मळीपे । जावदेवाउवज्जाह । जावत् देवताना पाखया करीने । देवसउववज्जाह । देवगतिनिवि देवपणे उपजे । से  
तेवदेव गोयमा जावदेवसुउववज्जाह । ते तेरे पणे देवोत्तम । वास्तपशित यावत् देवताना पाखया मळी देवगतिनिवि देवपणे उपजे । पुरिसेवमतेव  
वसिवा वृद्धिवा उदर्सिवा । पादुबंशमा क्रिया कारवणे तिवेकारी क्रियासूत्रपक्कसावरे—कोरे एक पुषय देमगवन् । मदी जसे वोया ठप्पादि प्रदे

मूने चवत्तसे भाडतसे ॥ गहबसिवति ॥ यहेने वृक्षकीसतावितानवीरुसमुदाये ॥ गहबविदुग्गसियति ॥ गहबविदुग्गसिय  
 पत्स्यादिसमुदाय ॥ पद्वयसियति ॥ पवते ॥ पद्वयविदुग्गसिवति ॥ पर्वतसमुदाय ॥ गहबसिवति ॥ वने एकत्रातीपद्वयसमुदाये ॥ गहबविदुग्गसिव  
 ति ॥ नामाविषयसमुदये सुते हरिसे वृक्षि वीचिका यस्य स सुमृत्तिः ॥ सुब सुगरककोपि स्यादित्यत्राह ॥ मियसकप्येति ॥ सुगेपु सुदुस्सो  
 यचाप्पवसाय भेदेनंवा ॥ यस्मा सो सुबसुदुस्सः सुब बलचित्ततयापि ज्ञवती त्यत्राह ॥ मियपखिदावसि ॥ सुगवदेकाग्रचित्तः ॥ मियवहाएति ॥ स  
 सुगवचाय ॥ नतति ॥ गत्वा कच्चावा वित्तियीयः ॥ कूटपासति ॥ कूटपास सुगपहकारक गतोदि पाप्माय तद्वन्धनमिति कूटपासं ॥ उव्वाएति ॥ स

सेतेण जाव देवेसु उवयज्जाह ॥ पुरिसेण जते । कच्छसिवा दहसिवा उदगसिया दवियसुवा यलयसिया गाम  
 सिवा गहणसिया गहणविदुग्गसिवा पद्वयसिवा पद्वयविदुग्गसिवा वणसिया वणविदुग्गसिया मियविही  
 ए मियसकप्ये मियपणिहाये मियथहाए गंताए एमिणसिकाठे अययरस्समियथहाए कूटपासउक्काइ ।

ग्रने इहप्रसिद्धनेविदे पद्वयज्जाहेइनेविदे । दवियसिवा वणिंसिवा वूमसिवा गहबसिवा । उव्वादि समुदाय इव्यनेविदे वाटुसे भाकारे नदी जल कु  
 टिष्ठमति सजित प्रदेहे निवाच मूमिनेविदे सुब बहो उतादि समुद्रनेविदे । गहबविदुग्गसिवा पद्वयसिवा । पर्वतने एकदेशे पद्वयज्जादि समुद्रनेवि  
 दे पर्वतनेविदे । पद्वयसिवा पद्वयविदुग्गसिवसिवा । पवतनेविदे पवतना दुग्गमप्रदेशनेविदे एकत्रातित्वसमुदायनेविदे । गहबविदुग्गसिवा मियवती  
 ए । नामाप्रकारना सुचनासमूहनेविदे सुबसकता हरिष तपेवरो इति धावोविवाहे जेइने । मियसकप्ये । अग्रनेविदे सुबसय बवनी पद्वयसाय जेइ  
 ने । मियपखिदावे । सुग बधने एकाग्रचित्तहे जेइना । मियवहाए । अग्रनाबध भयो । यत्ताएएमिणसिकाठ । जाये एय सुगदीसेइ इव कच्छादि  
 बनेविदे इतिबोग इमकरो । पद्वयरस्समियवसवहाण । पनेरा कोइएव समना बध भयो मृग मारवनेवाजे । कूटपासउक्काइ । कूटते मृग पद्वयाना  
 कारक घर्तासुब पामते मुबवाधवाना रथे । तएवमतसेपुरिसे । तिवारे हेमनवम् । कूटपाय करबहो तेषुबयने । कविकिरिण । केतही क्रियाबहो बि

इदानीं रचयिष्येति ॥ ततः कूटपाद्यकरणात् ॥ कश्चिरिति ॥ कतिप्रियाः क्रियाश्च कायिकादिक्ताः ॥ जेज्विरिति ॥ यो ज्यो यो ग्यः कर्तृतिपावत् ॥ जावचरमिति द्वेयः पावन्तः कुलसमित्यर्थः कस्याः कर्तृत्याह ॥ उद्वययाएति ॥ कूटपाद्यकरणात् सा प्रत्यय योश्च स्त्रीर्थकः ॥

तर्जन्ते ! से पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए । सेकेणठेण जत ! एवधुञ्चइ सियतिकिरिए तियचउकिरिए सियपचकिरिए ? गोयमा ! जेज्विए उक्कयणयाए पोय धणयाए पोमारणयाए तावचणसेपुरिसे काइयाए छहिगरणियाए पाउसियाए तिहिकिरियाहि पुठे जेज्वि ए उक्कयणयाएवि अघणयाएवि नोमारणयाए तावचण सेपुरिसे काइयाए छहिगरणयाए पाउसियाए याते बादिस्सार्हि इतिप्रश्न उत्तर । नोबमा सियतिकिरिए । जेगोतन ! कदाचिद् तोन क्रियाबागे । सियचउकिरिए । कदाचिद् चारिक्रियादान । विरपचकिरिए । कदाचिद् पोरिजिबाबागे गीतनकहेहे—जेकेरुइरुभतेएवचस । ते जे कारसे जेमगवन् ! इमचस । सियतिकिरिए । कदाचिद् तोन क्रियाबागे । सियचउकिरिए । कदाचिद् चारि क्रियाबागे । सियचउकिरिए । कदाचिद् पावक्रियाबागे । गोयमा जेमविएउद्वययाएरोवंधवयाए । जेमोत न ! क्रिया भव्ययोग कर्त्ता इति बावट्, जावचर इति जेज्वि, जेतसाकास इत्यस्य स्त्रीनोकर्त्ता ते कहेहे—कूटपाद्यकरणात् तोन भाव पवि नहीबंधनो कर्त्ता । जो मारचयाए । नही मारचनाकर्त्ता । तावचउपुरिसे । जेतसाकास तेपचव । काइयाए । जमगुहि चेदा रूप ते काविकोक्रिया । चङ्गिरचियाए । कूट पायबरो जे नीपनी चविकरचको । पायाधियाए । प्रदेवने मगनेदिबे दृष्टभाय तेजेगोपनो ते प्रोविको । तिभिकिरियाहिपुठे । एतोन क्रिया सधा ते करको । जेमविए उद्वययाएवि । कूटपाद्य करणो पवि कर्त्ता । बबचयाएवि । बधनो पवि कर्त्ता । बामारचयाए । पवि मारचनो कर्त्ताजही तावचउपुरिसेकाइयाए । जेतसाकास ते पुरव काविकोक्रिया । चङ्गिरचियाए । चविकरचको क्रिया । पायाधियाए । प्रदेवको क्रिया । पारिता वचियाए । पारितापन तेहोच प्रयोजनहे जेहने ते पारितापनको । चउचिकिरियाहिपुठे । चारिक्रिया सधाते करको जगदीधेहे । जेमविएउद्वय

तावच्चरति ॥ तावन्तकांसं ॥ काइयाएति ॥ गमनादिकायबेष्टाकपया ॥ अचिररक्षियाएति ॥ अचिररक्षयेषु निर्वृता या सा तथा तथा ॥  
पाठसिपाएति ॥ मद्देयो सुनेपु इष्टप्राय स्तेन मिषुताः प्राद्वेषिणी तथा ॥ तिदिद्विरियादिति ॥ क्रियन्तवति क्रिया देष्टाविशेषाः ॥ पारिताययि  
याएति ॥ परितापनप्रयोजना पारिताययिनी साच बद्धे सति सुगे प्रभवति प्राकृतिपातक्रियाय पतितइति ॥ छसविगति ॥ छसुष्ये ॥ छसिकि

पारियायणिपाए घडाहिकिरियाहि पुठे जेनायिए उम्वयणयाएवि मारणयाएवि तावचणसे पु  
रिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचाहिं किरियाहि पुठे । सेतेणठेण जाव पचकिरिए । पुरिसेण  
जेते ! कच्छसिया जाव वणविदुगंसिवा तणाइ ऊसवि २ झुगणिकायसि निसिरइ तावचण जेते ! से  
पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए । सेकेणठेण गोयमा ! जेन

याएवि । जेमजवायवकर्त्ता इष्टपाम जरणनो पचिकर्त्ता । गंजवाएवि । वचननो पचिकर्त्ता । मारणनो पचिकर्त्ता । तावचणसेपुरिसे  
जारवाए । तेतखोवाव ते पुबय काविनी क्रिया पादिदेहि । जानपावाइवावकिरियाएपचिद्विरियाइणे । वावत् प्राकृतिपातकी क्रिया मूमवव  
दीनाने प्राचने वातकीवे हर्षयक्रिया करवा, एतावता तेने पचक्रियावागे । सेतेचउब गोयमा । ते तेरे चरे हेगोतम । आवपंचकिरिए । सियचउ  
विरिएमिदपचविरिए इमकअं, वखोसोतम पूबेहे - पुरिसेबमतेकअसिवा । पुबय हेममवन् । नदी जव योवा लयवत प्रदेयनेवियै । जाववचविदु  
गंसिवा । वावत् नानापचार इष्टनासमूहेनेवियै इष्टपयताहिं समस्त कइनी । तवाइ ऊसवि २ । निधीत लवा कदी २ ने । प्रमचिकावमिदिरिए ।  
पमिचकावपते माइवासे । तावचणमतेसेपुरिसेकइकिरिए । तेतवाकावताहिं वपम ववाकावताहिं जेममवन् । ते पुबयने जेतखोक्रियावागे इतिपय ७  
सर । नोबमा सियतिकिरिए । हेगोतम । बदापित् तोनक्रियावागे । सियचउकिरिए । कदाचित् पार क्रियावागे । सियचउकिरिए । बिवारेके पा  
च क्रिया वागे । सेकेचउबमते । तेजामाटे हेममवन् । इमकअं । गोयमा जेमविष्टवचणयाए । हेगोतम । जेममवोयव कर्त्ता इत्यर्थ, जेतखोकाव लवा

अगत्यादि उद्गोस्तेति या ॥ निरिहति ॥ निरुति विपति यावदिति ॥ उरुति ॥ वायु ॥ आययकषाययति ॥ कयो याव दायतः आकटः कषायत ध्यायत म्रपययत् यथा प्रवतीत्येवं कर्षायत , आयसकषायत स्त ॥ आयामेति ॥ आयस्या रुय ॥ मग्गति ॥ पृष्ट ॥ सयपादि यति ॥ म्यकपादिना म्यदस्तन ॥ पुद्गायामकषायति ॥ पूर्वार्कपदेन ॥ सेवजतपुरिसति ॥ सशिरम्भेता पुरुषः ॥ भियवेरति ॥ इह वीर वीरहेतुत्वा इयः पापवा ; वीर वीरहेतुत्वादिति अथ शिरम्भेयपुरुषहेतुत्वा विपुनिपातस्य कथ धनुर्देरपुरुषा युगययेन स्पृष्ट इत्याकृतवतो नीतमस्य तद

थिए उस्सवणयाए त्तिहिं उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहि जेन्नविए उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि दहणयाएवि तावचण सेपुरिसे काइयाए जाव पचाहिकिरियाहि पुठे सेतेणठेण गोयमा ! पुरिसेण कच्छेसिया जाय यणविदुग्गसिया भियथित्तीए भियसकप्पे भियपणिहाणे भिययहाए गताए

उ वाकरे ततथा वाउताह प्रहपकी । तिहिउखववाएवि । तान जियावाने पडिआवाने वायिका १ पविक्करपवकी २ प्रदेयकी ३ विवारे विवां उ वा पचकरे । निमिरपवाएवि । यने अम्मियवि माहिआसे पचि । सोदहणयाएविपचहि । वाउतातवो ततथा ताह वारिकिवाने करसे कायिका डि । जे रविपउखववाएवि । जेमवकणां उवापचि उ वाकरे । निमिरपवाएवि । अम्मिमाहि पचिमके । उदहणवाएवि । यने वासेयपि । तावचवसे परिते काइयाए जावपचहि किरियाहिपुठे । ततसाकास तेपुरुष कायिको आदिहेर वाउत् प्रावतिपातवो जियावाहिं करणो एतावता तेइने एचजि यामायै । नेतेपइव मायमा । ते तेने पवे हेगोतम । इमकास । सियतिकिरिए सियवचकिरिए सिवपचकिरिए इत्यादि । वसोगोतमपूजेहे—परिसेणभ तेकच्छेमिना । पवप हेमववन् । वंथास्याउकरे भोजवसेगोवा । उवादिवत प्रदेयनेविषै यावत् भागाप्रकार उचवा समइनेविषै । भियवत्तोए । सुयनो इति पासीविवाहे जेइने । भियसकप्पे । वासमाहि पाउख यववा ग्रैकरो इवप्पं एइवाव सुयनो सकळा कहतां यधमा पध्ववसावहे जेइने । भिय पविहाणे । सुगमारवानाव प्रविधान चित्तजनहे जेइने एवाग्यपित्त । भिययहाए । सुगववमवो । गता एएमिएतकाहं । सुगवा दीसेहे इमकरोने । य

एमिएषिकाउं श्यन्तयरस्समियस्स यहाए उस्सुनिसिरइ, ततोण जते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय  
 तिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए, सेकेणठेण गोयमा ! जेन्नविए निसिरणयाए तोहि जेन्नविए निसि  
 रणयाएयि विद्धसणयाएयि नोमारणयाए चउहिं जेन्नविए निसिरणयाएयि विद्धसणयाएयि मारणयाएवि  
 ताअचण सेपुरिसे जान पचहिंकिरियाहिं पुठे सेतेणठेण गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियप  
 चकिरिए । पुरिसेण जते ! कच्छुसिवा जान श्यन्तयरस्समियस्स यहाए श्याययकस्सायय उस्सु श्यायमेत्ता चि

वररस्समिक्खरइए । पनेटा काई एक भगना वधभन्नी मृगने मारवाभन्नी । उस्सुनिसिरइ । तोरपत्ते काठे प्रखवा सेवे । तताअभतेसेपरिसे । तिवारे हे  
 भगवन् ! तेपुइय । करकिरिए । जेतन्नोक्खिवाना करचइए कइवे इतिप्रत्य । मायमा सियतिकिरिए । जेगोतम । किवारेनै तोनक्खिवाना करचइए  
 जइवे । सियचउकिरिए । किवारे चारिकियाना करचइए । सियचउकिरिए । किवारे पांच कियाना करचइए, सौतम कइवे—सेजेणठेकभते । तेखा  
 माटे भयवन् ! इमकण्णु । गावमा अभविणिसिरचवाएविचि । जेगोतम । जेमव्वकर्त्ता वाचवाटेइ तइने कायिक्खादि तोनक्खिवावे फरखो कइये । जे  
 भविणिसिरचवाएवि । जेमव्वकर्त्ता वाचवाटेइ पाचिसे सुवाच यकी । विवसववाएवि । पनै विवस पमाठे वोडाइवानैकाजे । नोमारचयाएचउहिं ।  
 पयिमार नहीइ तेतमाक्खानइगे तेइने कायिक्खादि चारिकियाखानै । जेमविणिसिरचवाएवि । जेमव्वकर्त्ता तोरपचि काठे । विद्धस  
 यान पमाठेइ । मारचवाएवि । पनै माटे पचिसे । वावचउसेपुरिसे । तेतखावाअ ते पुइय । वावपचउकिरियाहिंपुठे । यावत् कायिक्खादि पंचकिया  
 मं फरखा तेइने पंचक्खिवा भागे । सेतेचइय गोयमा । ते तेवे चउं जेगोतम । इमकण्णु । सियतिकिरिए । किवारे तोनक्खिवा भागे । सियचउकिरिए ।  
 कठाचित् चारिकियाखानै । सियचउकिरिए । कठाचित् पांचकियाखानै, यन्नोगोतम पछेइ— । परिसेअभतेकच्छुसिवा । पुरइ जेमववन् । कचचिक्खनेवि  
 मे । आरपचउरस्समियएइए । सावत् पनेटा काई एक भगना वधभन्नी सुगमारवानैकाजे । श्याययकस्सायतउंमुंपावासेत्ता । दोष कानताइ ते तोर

ન્યુપગતમેવાય મુક્તતયા પ્રાદ્ય ક્રિયામાર્ગ ધનુ-કાવઠાદિકૃતમિતિ આપદિદયતે, યચ્છિશુ પ્રાપ્ત્ય તથા સુત્રીયમાન અત્યપ્ત્યાયા મારોપ્યમાઠ ક્રાપ્ત સ્વમુર્તિ રોપ્યમાઠપ્રત્યપ્ત સન્નિતહતસન્ધાન પ્રવર્તિ તથા નિર્વૃણમાન નિતરો ધનુસીક્રિયામાર્ગ પ્રત્યપ્ત્યાકપણેન નિવૃત્તિત વૃત્તીકૃત મરવ સાકાર કૃત પ્રવર્તિ તથા નિસુગ્મમાન નિહિપ્યમાઠ ફૂલરહનિષ્ઠ ધ્યયતિ ધદાઃ નિસુગ્મમાન નિસુઘ તદા નિસુગ્મમાનતાયા ધનુરુરેય કૃત ત્યા તેન કાવઠનિસુઘ પ્રવર્તિ કારઠનિસગોઢ યુગ સ્ત્રોતેય મારિત, કાત ધોષ્યતે ॥ ૬૪૪ ॥ ક્રિયાઃ પ્રક્રાન્તા સ્તાયા બન્તા

ઠિજ્ઞા શ્રુત્યયરંપુરિસે મગગ્નુ શ્યાગમ્મસયપાણિના શ્વસિના સીમઢિદેજ્ઞા સેધઽસૂતાએચેવ પહ્વાયામળયાએ ત મિયવિધેજ્ઞા । સેગન્તે । પુરિસે કિ મિયવેરેળયપુઠે પુરિસવેરેળપુઠે ? ગોયમા ! જેમિયમારેઈ સેમિયવેરે ણપુઠે, જેપુરિસમારેઈ સેપુરિસવેરેળપુઠે । સેકેળઠેગન્તે ! એવલુસુદ્ધ જાવ સેપુરિસવેરેળ પુઠે । સેપુણ ગો

પ્રતે જાવીને પાકર્પીને । વિઠેજ્ઞા । કઠોરતે એતથે । યવરેપુરિસેમ્મમા । ધનેરો કાર્દ મઝ પુરુપ પૂઠાઠી । યાગથ । યાવીને । સરયાવિવાપરિવા । પાપને જાકેકરો તરકારેકરો । સોસહિદેજ્ઞા । તેજ્ઞા મચ્છાપતે જેવે તિવારે । સેવસૂતાએવ પુહ્વાયામળયાએ પૂર્વે યાકર્પી જ તા તે પુરુનાજાવત્રી જૂઠા તિવારે તિવે । તમિયવિધેજ્ઞા સેકર્મતેપુરિસે કિમિયવેરેળપુઠે । તે સુગપતે ગોવે તે ચવાકાઠવારે જેમગવન્ પુરુવમાયાનો જેદ જજારા મ્ સુજનાવેતે રજા વેરતે વેરનાજેતુ મઠી રજજીવે યજવા પાપ તે કરજી યજવા । પરિસવેરેળપુઠે । પર્યમે વેર યાવેકરો કરજી રતિમય ઇત ર । મોરમા વેમિયમારેઈ । જેમોતમ કિલે પર્યે સુગ યજવાજેકાવે તોર સાધાજવા । સેમિયવેરેળપુઠે । તે પુરુપ સુગર્મેવેર પાપ તિલેકરો કરજી । જેપુ રિમ મારેઈ સેપુરિસવેરેળપુઠે । ધનૈ જેવે પુરુપ પર્ય મારા તેપુરપ યરુપનેવેરેકરો કરજા તેજ્ઞા તેજ્ઞા પેરુપ વેરજામે । સેજેજેવેળપેતે એવંજવા । તેજ્ઞામાટે જેમગ રન્ । રમજ્ઞા સુગના મારજજારને સુગના પાપજામો । જાવસેપરિસવેરેળપુઠે । યાવત્ પુરુપના મારજજારને પુરુપનો પાપજામો રતિમય ઇતર । સેજ્ઞા યાવમા જ્ઞામાલેજ્ઞે । તે મિવે જેમોતમ ધનુપતોર કરવામાઠા તેકોખાજીવે । સવિલ્લમાલેસંધિય । ધનુપમેવિવે તોર સધવામાઠા તેસાઠી સજીવે



रोप्ते मृगादिवसे यावत्यो यत्र यत्र कान्तवित्रागे भवन्ति तावती स्तत्र दर्शयन्नाह ॥ अतोऽथ ब्रह्ममित्यादि ॥ परमासान् यावत्प्रशरहेतुक मरण परतन्म परित्यामान्तरापादितमितिरुत्वा परमासा इदं आद्यातिपातक्रिया न स्यादिति इदं य मतस्य व्यवहारनयावेष्टया प्राञ्चातिपातक्रियाय

यमा । रुज्जमाणेकद्वे सधेज्जमाणेसाधिण निष्ठासिजमाणेनिष्ठासिण निस्सिरेज्जमाणेनिस्सिरेसि यत्तस्यसिया ।  
हता जगव । रुज्जमाणेकद्वे जाव निस्सिरेसि यत्तस्यसिया सेतेणठेणं गायमा । जेमियमारिइ सेमियवेरेणपु  
ठे, जेपुरिसमारिइ सेपुरिसवेरेणपुठे, अतोऽथ ब्रह्ममासाणमरुड, काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुठे,

याताया कहोवे तथा । निम्बत्तिज्जमावेनिम्बत्तिण । वनपुनविसे अपपच तेखापीने वनपुनमाठवाकारु करवा मांघो ते बोधावहोवे । निस्सिरेज्जमा  
वेनिम्बत्तिज्जत्तवमिया । वनपुनबड्डीनोसरवामांघो वाच ते नोवळा कहोवे एहवो वल्लव्णता कहवा हुये, इसा भगवत गौतमनेक्कम्पु तिवारे भौतम क  
हेने—इता भगव । ज्जमावे कड । वनपुतोऽथ करवामांघा तेवीधी कहोवे । जावनिस्सिरेसि वल्लव्णसिया । यावत् वनपुवो तोरभीसरवा मां  
घा ते भीमया कहोवे, ते नोसरवानी ज्जियाना करवहार वनपुनरहे तेमाटे कांडना नोसरवावो सुग तेवेहोक्कपुणं मांघो । सेतेणं गौवमा जेमिय  
मारिइ । तेमाटे वेवौतम । इमक्क जेमवमारि तेपरय । सेमियवेरेणपुठे । तेमूने वेरेकरो पापेकरो करवो । जेपुरिसमारिइ । वनं जेपुपुप खड्डवत तेवे  
पत्ते वनसर मारा । सेपुरिसवेरेणपुठे । तेने पुटुपना पापसाया तेमाटे पुपुपेवेरेकरो करवो । अतोऽथ ब्रह्ममासांघेनरखायाए जावपचहि किरि  
याहिण्ड । ज्जमावमांघि ज्जामममारि ता तेइने जावत् पंक्कियाळागे ज्जमासताहि मूयने प्रहार हेतुक मरणक, तिवारपुणं परिचामांतरयको मरण इवो  
करी ज्जमाववो उपरांत प्राञ्चातिपातको ज्जियाते वनपुनमरणकहे तिवारेही प्राञ्चातिपातको ज्जिया मांघे यावत् कायिको पादिदेह पचजिया मू प  
मांघे गेगाडगाने ज्जमा पचवा जिवारेही प्रहार हेतुक मरणकहे तिवारेही प्राञ्चातिपातको ज्जिया मांघे यावत् कायिको पादिदेह पचजिया मू प  
रत्वा कहोवे । वाहिइ ज्जमासांघमरुडकाइयाए जावपाठिवावविद्याए चण्हिज्जिरियाहिपुठे । जा वाहिइ ज्जमासके मरेता तेपुणं ज्जामिको पादि

पद्ममात्रोपदशनाय मुक्त, मन्यथा यदाबद्धा प्यचित्तप्रहरणेण मरु प्रयति तदेव प्राजातिपातत्रियति ॥ सतीयति ॥ अतया प्रहरणविशेषे  
न ॥ ममनिपमन्त्रति ॥ इत्यात् ॥ सपायिजति ॥ इत्यहसोन ॥ सेति ॥ तस्य ॥ काइयाएति ॥ कायिक्या सरीररुपस्वरूपया आपिकरविक्थया वा  
निरपक्रुप्यापाररूपया प्रादुयित्वा ममोदुःप्रस्थिपानन पारितापमिक्थया परितापमरूपया प्राजातिपातत्रियया मारुवरूपया आसञ्जेतिइत्यादि श

याहि ठएहमासाण मरुइ, काइयाए जाव पारियाधणियाए चउहिकिरियाहि पुठे। पुरिसेण जते! पुरिस  
सत्तीए समजिधसेज्जा सयपाणिणाया से अस्सिणा सीसज्जिदेज्जा। तउणजते! सेपुरिसे कइकिरिए? गोय  
मा। जावचण सेपुरिसे तपुरिस सत्तीए समजिधसेइ, सयपाणिणावा सेअस्सिणा सीसज्जिदेइ। तावचण  
से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइयाए पचहिकिरियाहि पुठे। आसयावहरणय अणवकस्वस्त्रीएण पुरिस

इदं वाच्यं पारितापनको क्रिया ताहि चारत्तिकानी करसे उठलेकोभाइ जमावपळे मरेता तेमुयवाचको मूषानको तेमाट प्राजातिपातको क्रिया  
भागेनको वसोभातमपूछे—पुरिमिन्नभतेपुरिस सत्तीणममभिधसेज्जा। पुबय इभगवन्। पुबयप्रमते यत्ति मासी तिणे इहे यववा यत्ति प्रहरणविशेषेकरो इ  
न बरे इभगवन्। तेषवपने जेतनी किन्नामागे इतिप्रश्न उत्तर। मायसा जावचणसेपुरिसे। जेगौतम। जेतकोबास तेपुबय। तंपुरिस सत्तीए चभिधसेइ।  
तेपबयप्रमते यत्तिप्रहरण क्रियेकरो इहे। मयपाणिना। धनरा। पाताने जयेकरो। सेयमिन्नासीसज्जिदेइ। तेपुबय तत्सारसवाते। तावचणसेपुरिसे। ते  
ममाजान ते पुबय। काइयाए। कायिकोक्रिया। अधिहरणकोक्रिया। जावपाणाइयायजिरियाए। यावत् प्राजातिपातको क्रि  
या। पचविजित्तिराहिण्डे। पचविषा मंवाते फल्लाज्जहीये तेहने पंचविषासागे। आसज्जइएवय यवकस्वस्त्रीएवपुरिससेरेचपुठे। आसय ठंउको  
यथबने जेइइधव एतसे तत्तासज्जआ जेजोय तथा जे पुपुयको बधकोधोले तेइइको भायी जे पापटासिवागेदिये जिरसेचमत्ति यापवा पराया प्रापनी

तया घनिष्ठमन्त्रो मिना याः शिरश्चेत्ता यन्मन्त्रिः क्रियाभिः स्पृष्टः, साया पुरुषवैरेव सृष्टोः सारितपुरुषवैरिघ्रावेन क्षिप्तमूतेभेत्याह आसन्नो दधो यम्मा हूरा त तया तेना सुखदयपकेन प्रवर्तिष घैरा घृषो वषकस्य तमेव वष्य माधित्या व्यतोवाः तत्रैव जन्मनि जन्मान्तरेवा यदाह -- तद्वमारब्धस्तथा यदावपरपक्षविलोयनार्थेन । सध्वजहृषोठहृठ दसपुच्छिठएकसिक्यावति ॥ १ ॥ यस्समुद्यये धनवकाङ्क्षया परमावनिरेवेष्टा स्रगतापापपरिहृतरतिरेष्टावा दृत्ति यत्तेन यथैव वैरे त तया तेना भवकाङ्क्षवृत्तिहेनेति क्रियाधिकार एवेदमाह ॥ सरिसयति ॥ सर्वशक्तौ क्षीयतममाकादिना ॥ सरित्तयति ॥ सर्वदृष्ट्यती सर्वदृष्ट्यती समानयौवमाद्यवस्थौ ॥ सरिसन्नकमतीवपरकृति ॥ आरब्ध प्राञ्जनं सुलपादिमात्रो मात्रायक्त उपधिः सः कात्स्यमाजनादि प्रोक्तनक्षत्रिका माफकमात्रावा भविमादिद्वयव्यक्त्यः परिच्छेद उपकरवा ज्यनेक पा वरबाभरबादीनि ततः सर्वस्वगति प्रायकमात्रोपकरवानि ययो सौ तया ज्यनेक समानविवृतिवत्त्व तयोर्निश्चित ॥ सर्वोरियति ॥ सर्वीर्यः

धैरेणं पृष्ठे । दीनते ! पुरिसा सरिसया सरिसहृया सरिसन्नकमन्त्रोवगरणा व्युत्समस्त्रेण सद्धि सगा मसगामेह , तत्यण एगेपुरिसे पराहृणह , एगेपुरिसे पराहृज्जह , सेकहमेयजते ! एव ? गोयमा ! सर्वीरि

परेष्टा चककरो पुपुय वैरसकते करणा क्रियाधिकारभेदिवैव कथे—सोमतेपुरिसासरिसवासरित्तया । हेमवन् पुपुय वैर सरोखा प्रमाधादिहरी वासनवै मरोजो त्वया हृदिबि जेहनौ । सरिसववा सरिसन्नकमन्त्रावगरणा । सरोखी वयना वयोवे, भर्तृ मूक्यादि भाजनमात्र माधमिकरो उप धि बाभ्यमात्रनादि मोञ्जना भागा यन्मिमादिद्वयव्यक्त्यपरिच्छेद उपकरवा धनप्रकारना प्रहरणादिव तेवेष्टना सरोखा एतसेमानविवृतिपयो वेष्टनो कथो । चकमवेष्टमर्धिसमार्मसमाभेह । तेवेष्टमात्रोमाधि सघाते संघाम सग्यामे एतसेमोहोमाधि युक्तवै । तत्त्वव्ययेपरिसेपराहृणह । तिष्ठा ववा स्तामकारे, वैकपुपुयमात्राहि एकपुपुय खोपे ज्यपामे । एगेपुरिसेपराहृणह । एव पुपुय वारै पराववपामे । सेकहमेयभेति एव । तेविम एव सेमगवन् । एव योहविमकारे रतिपयन उन्नर । मोदमा सर्वीरिएपराहृणह । हेमोतम । योववत पुपुयते ज्यपामे ज्योपै । योवोरिएपराहृणह । योववहितपुपुय ते परावव

धीरिययज्जाहंति ॥ धीर्येवर्जं येपान्ताभि तया धीयप्रस्ताया दिवसाह ॥ जीवायमित्यादि ॥ सिधुर्बन्धधीरियति ॥ सुखरणीवीर्याभावादवीर्यो सिद्धः ॥  
 सेतेमिपक्रिययापति ॥ इतिशः सुवसंवरूपपरकमनु तस्येय भवत्या भोसेत्री भोसक्षोवा मेरु सस्येय या वस्या स्थिरता सापम्या रवाधोलेक्षी

एपराइणइ, सुवीरिए पराइज्जाइ । सेकेण्ठेण जाय पराइज्जाइ ? गोयमा ! जस्सणवीरिययज्जाइ कम्माइ  
 णोयछाइ णोपुछाइ जाय नोसुत्तिसमयागयाइ णोउदिग्गाइ उयसताइ नयति सेण पराइणइ, जस्सणं  
 धीरिययज्जाइ कम्माइ यछाइ जाय उदिग्गाइ नोउवसताइ नयति सेणपुरिसे पराइज्जाइ, सेतेण्ठेण गो  
 यमा ! एववुसुइ सवीरिएपराइणइ सुवीरिएपराइज्जाइ । जीवाण जति ! किं सवीरिया सुवीरिया ? गो  
 यमा ! सवीरियाधि सुवीरियावि, सेकेण्ठेण जति ! एववुसुइ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पयससा तजहा-

योमे इर, मतमयूहमे - सकलकृतेवाकपराइणइ । ते आमाट इभयन् । इमकस्य आवत् सवीय जीवे यवीय इरै । मायमा असुबंवारितवक्साइव  
 भाइ । हेमातम । जेपुटुपने नवाव्वा/नइरै, वीयइय वीयइयवांनव एववाकमजति । वाववाइवापइर । बावाकवी करस्मानवी । आववाअभिसम  
 कसपाइ । वावत् माइमानवी पाव्वा । वाठटिकाइ । उदव नवी आवा । उदसताइ भवति । उययात ययाव्वे । सेवपराइणइ । ते पुटुप जययामे  
 जीवे । अस्सवीरिययज्जाइ कम्माइ यछाइ । अपुटुप वीयइय वीयइयवांनव । एववा कन बाधिजे । आवउदिग्गाइ । वावत् उदव पाव्वा । वाठव  
 सताइ । उययम्यानवी इरे । सवपुत्तिपराइणइ । ते पटुप ववाव्वाककारे, परावययामे इरै इत्थं । सेतवइण गोयमा एववुसइ । ते तेरे यमे हेमौत  
 म ! इमकसं, सनोरितपराइणइ । वीयइय जेपुटुप ते जययामे जीपेइत्थं । धनीरिएपराइणइ । यवीरं वीवरिया तपुटुप परावययामे इरै इत्थं  
 वीयमा प्रसाववी एवइरे - जीवाअभते किमवीरिया । वीय ववाव्वाककार हेमवन् । अंसवीवइ ? वीयसहितव यववा । यवीरिया । यवीयइ वीयर  
 इतिइ इतिमय उमर । मायमा सकोटियावि । हेमौतम । वीयसहित पविइ । वीवरइत वमतेएववुसइ । ते से येवे

मात्र भवया पायमिरोचे पण्डित्वाचरोक्षारकासामा स्मृतिप्रका ये ते तथा ॥ सद्दिवारिण्यसंबंधीरियति ॥ वीयास्तारायज्ञयज्ञयोपगमतो या वीर्यस्य सविः सेव तदुत्था द्वीपे सन्धिर्वीर्यं तेन सर्वार्थो एतेषाम्वा जगिज्जमेय सन्धिर्वीर्य ॥ करववीरियति ॥ सन्धिर्वीर्यकायंप्रुता क्रिया करव

ससारसमाधयगाय , असारसमाधयगाय , तल्यणजेते असारसमाधयगा तेणसिद्धा , सिद्धाण अनी रिया , तल्यणजेते ससारसमाधयगा ते दुषिहा पसुत्ता तजहा—सेलेसिपिक्वयगाय असेलेसिपिक्वयगाय , तल्यणजेते ससारसमाधयगा तेण लुद्धिवीरिण सवीरिया , करणवीरिण अवीरिया , तल्यण जेते असेलेसिपिक्वयगा तेण लुद्धिवीरिण सवीरिया , करणवीरिण सवीरियावि अवीरियावि , से

हेभगवन् । इमकसं जीव मवीर्यपिबि पशयपिबि इतिप्रत्यु उत्तर । गावमा जोवाकुविहापकत्तातलहा । हेगौतम । जीवना हेभेद वज्जा तेवहेव— संसारसमाधयगाय असारसमाधयगाव । जेवोव चारजतिनेविपै रज्जा ते ससार समापयकरीये, जेवोव चतुयति अमचरुपसंसार तेववी रक्षितवया ते पमसारसमाधय गतने माधपर्ववा ते जोवकरीये । तल्यणजेतेससारसमाधयगा । तिहा चवाक्कासकारे, वेपचमाहे जे पसमारममःपववीव चतुर्मैतंसंसार अमचरुपको रक्षितववाहे सुद्धिप्रया । तेवविहा विहावपवीरिया । ते चवाक्कासकारे, सिद्धवहीये, सिद्धने करववीर्यना अभाववी प गीये । तल्यणजेतेससारसमाधयगा । तिहा वेपचमाहे जे चतुर्गतिस्मारमचरुप समारसमापय जीवहे । ते दुविहा पकत्ता तज्जहा । ते पबि हे प्रकारा कज्जा तेवहीये । सेलेसिपिक्वयगाय । चतुर्मेगुठाने चयासीना जोव ते येवोवो प्रतिपक करीये । असेलेसिपिक्वयगाय । तेवहीये विपरीत ते पमैस्यो प्रतिपक करीये, प्रबमगुठ ठावावी मांको तेरमावहि । तल्यणजेतेसेलेसिपिक्वयगा । जे विपचमाहे जेवोव येवोवोप्रतिपकहे तेमवसामते पाप्याहे तेवज्जिवीरियसंबंधीरिया । गोयान्तराणना चवककी जेवोवहे ते जिवीव करीये तेचे सवीर्यहे । करववीरिण्यसंबंधीरिया । उत्त्यानादि जे को जे ते करव मोर्वकरीये ते करवमोय पवीर्यहे । तल्यणजेतेसेलेसिपिक्वयगा । तिहा वेपचमाहे जे पसेलेसो प्रतिपकहे । तेवज्जिवीरियसंबंधीरिया ।

तद्रूपं वीरं ब्रह्मवीर्यं ॥ अरुणवीर्यमयोरियायिष्वरीरियाविति ॥ सत्र सुवीर्यो मत्स्याभादिक्रियायत्नो धीर्पांसु उत्थानादिक्रियायिकला स्तेषा

तेण० गोयमा ! एवमुच्चुड जोयादुघिहा पयाता तजहा—सयीरियायि सयीरियायि ! नेरइयाणनते ! कि  
सयीरिया सयीरिया ? गोयमा ! नेरइया लछिदीरिएण सयीरिया करणयीरिएण सयीरियाय सयीरियाय  
सेकेण० गोयमा ! जेसिण नेरइयाण अत्यउठाणेकमे वले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तेण नेरइया लछि  
यीरिएणयि सयीरिया करणयीरिएणयि सयीरिया , जेसिण नेरइयाण नत्यउठाणे जाय परक्कमे तेण नेर  
इया लछिदीरिएण सयीरिया करणयीरिएण सयीरिया , सेतेणठेण जहा नेरइया एव जाय पचिदियतिरिस्क

ते वशात्तान्मज्जरि, नखिशोर्वै करो सवीयवै । करणवीरिएण सवीरियावि पवीरियावि । करणवीरै करो सवीयपण्डितुवे, उत्तानादिक्रियावत ते सवीय पनै उत्तानादिक्रियावै करो विद्वान ते पवीयपण्डितुवे, ते पण्डित्यादिकाखे जायवा । सेतेवठेचं गोयमा एवंपुवइ । ते तेसेपवेकरो वीवीतम । इमकहुओश दुविवा पणत्ता तंज्जा । लीव वेणकारना कट्ठा, ते कहीवै—सवीरियावि पवीरियावि । एक्खोयंसहितपण्डितै एक्खोयं रसितपण्डितै, वखीगोत मण्डितै—वेररवाचभते किंसवीरिया पवीरिया । आरकी हेममवन् । एक्खोय सहितवै ? पयवा वीयरहितवै इतिमय उत्तर । गोयमा वेररवाचसि शीरिएण मशीरिया । वेगोतम । नारकी नखिशोर्वैकरो सवीयपुवे, एतवे वीयसहितपुवे, पनै । करणवीरिएण पवीरियाव सवीरियाय । करणवीय करो पवीयपण्डितै वीयमहितपण्डितै । सेतेवठेचंभते । ते व्वामाटे हेममवन् । इमकहुं इतिमय उत्तर । गोयमा जेसिपवेररयावपण्डिय । जेगोतम । जेइ नार कोदेवै । उठाने कखे पनैशीरिए । उत्तान कम वमशीय । पुरिमआएएरजमे । पुट्टपाकार पराकमवै । तेणवेररवाचसिशीरिएणं सवीरिया । तेवे नारको मगिगोयै करो मशीय वीर्यमहितवै । करणवीरिएणवि मवीरिया । पनै करणवीय करो पण्डितै तथा । जे सण्णेररयावजत्वित्ठपणे । जेइ नार कोने नशी उत्तान । जाणपरइमे । यावन् पराजम ताई कहवा । तेववेररयावजिवीरिएणं सवीरिया । तेवे नारकी सखिवीयै करो वीयसहितवै । कर

पयासादिहासेऽवयवत्वमिति ॥ यवर्षिद्वयव्यभिचयति ॥ श्रीपिबजीवेपु सिद्धा सन्ति, मनुष्येषु तु ते नेति मनुष्यव्यभिचयेवीयममिति पितृस्वरूप  
मायेममिति ॥ प्रथमं यते अष्टमं उद्देशः ॥ ८ ॥ अष्टमोद्देशकान्तोद्योयमुक्त वीर्यव जीवा गुरुत्वा व्यासादयन्तीति गुरुत्वादि  
प्रतिपादनपरं स्यात् सङ्गहस्या यदुक्तं ॥ गुरुति ॥ तत्प्रतिपादनपरं नवमोद्देशकं सात्रयं सूत्रं ॥ कश्चनित्यादि ॥ गुरुत्वमनुज

जोणिमा, मणूसा जहा दृहियाजीवा, नवर सिद्धज्जानाणिपद्या, वाणमतरजोहसवेमाणिमा जहा नेरड्या  
सेव जतेर ति ॥ पठमसपु अठमोद्देशो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ कहणजते! जीवागरुयत्त हव्यभागच्छति ?  
गोयमा ! पाणाइवाण मुसावाण अदिन्तमेकणपरीसह कोहमाणमाया लोह पेजादोसकलह अस्सस्काण

बभोरिएव पयोरिवा नेतेषु य जहावेररत्वा । करणवोनेकरी वीर्यवतमहो ते तेरे पंच ज्योतम । इमकणु इत्यादि पूर्ववत् किम नारकोकथा । एवका  
यचिंदिवतिरिक्तादिवा । इम वापत् पचेदो तिक्चयोनिक्तादि कहयो । मणूसाजहापोदिवाकोवा । मनुष्यविये किम समुचे श्रीवेजीवकथा तिम  
मनुच कहवा । यवरसिद्धज्जानामादिरत्वा । एतत्ता विमेष समुच्च वीर्यवकमाहे सिद्धे ते एककमाहे सिद्धनकहवा । वाचर्मतरजीहस वेमादिराकथा  
वरत्वा । पानवतर १ व्यातिथो १ पैमानिक् १ एतोर्दृक्कि तिम नारकोकथा तिमकहवा । सेवमते र ति । तद्वति हेमगवन् । तुमेकणु ते सत्वहे च  
न्यावा नही । पठमसवस्यपठमो । एपहिता यतकनो पाठमा उहया चबवो कथो ॥ ८ ॥ पाठमा उहयाने भंते वीर्यकथो तेवोव  
वो वीर्य गत्तादिहावे तेकहेहे मौतमपुहेहे—अहवमतेजीवाययुयत्तइकमानचवति । विर्यप्रकारे जवाज्जवाकारे हेमगवन् ! अष्टमकर्म सपचवकप  
पथानतिगमनकप ते मुकपचू छतावकोपाभि इतिप्रश्न उत्तर । मायमा पाचाइवाएवं । हेवोतम । प्राचो जोबने भतिपात इववेकरो १ । मुसावाएवं ।  
भुत्त वचन मा वाचवावो २ । भदिवाकावेच । अचदोद्योयमुना सेगवो ३ । मेहवेच । मेयगवो ४ । पस्मिन्नेच । परिचववो परिग्रहते इवकप ५ । जो  
इ माच माया काम पेक्क दास कहइ अस्सत्ताच । पेसुचपरइएच । आवेकरो ६ मानेकरो ७ मावावेकरो ८ जोमेकरो ९ प्रमेकरो १० प्रमेकरो ११





पौन पुन्येन जन्मन्तीत्ययः ॥ यीद्विपर्ययमिति ॥ व्यतिग्रन्थित्व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः ॥ पसत्याचक्षारिति ॥ सधुत्वपरीतत्यङ्गस्यत्यव्यतिप्रजननद्वयका  
 प्रगल्भा मायाद्वयत्वात् ॥ यपमस्याचक्षारिति ॥ गुणत्वानुसक्तदीपत्वानुपरिवर्तनद्वयकाभाप्रयत्नात् ॥ यमोषाङ्गत्वादिति ॥ गुणत्वमपुल्याचिकारा दिद  
 माह ॥ मन्मथेचमित्यादि ॥ इह येयं गुणत्वपुल्या-निष्कपठयधुगुणं सवत्तुयानवित्त्वयवह ॥ यवहारखड्गुणह ययरखड्गुणह ॥ १ ॥ अगुण

करेति, हस्तीकरेति, एय अगुणपरियहति, एयवीद्वययति, पसत्या चक्षारि अप्यसत्या चक्षारि, सत्तमेण  
 अगुणयलज्ज ॥ सत्तमेणज्जे तणुवाए यलज्ज ॥ गोयमा ! नोगरुए नीलज्ज ॥ नोगरुए नीलज्ज ॥ नोगरुए नीलज्ज ॥ नोगरुए नीलज्ज ॥  
 एय सत्तमेचणयाए सत्तमेचणोदही सत्तमापुठवी उवासतराह सवाह जहा सत्तमेउवासतर जहातणुवाए,  
 एय गुरुयलज्ज ॥ घणउदहिपुठवीदीयायसागरायासा । नेरइयाण ज्जे ! किगरुया जाय अगुणयलज्जया ॥  
 जायसा । परवत्ताचक्षारि । गत्त १ चावमी २ वीवत्त १ अगुणवत्तन १ एवार्ति सुत्ति वेवुज्जे तेमटे अग्रयत्त जायसा । गुणल सवत्त अचिक्कार

रो एववत्ते—सत्तमेणमतेउवासतर । मातमी एतवे मातमी वज्जिमीनी मीयसा हेममवन् अचकायातिर । चिक्कार सधुए गदुय सधुए । सधुए गदुय सधुए । सधुए गदुय सधुए ।  
 हे दावगुणे । अयदुवत्त । अयदुवत्त इतिप्रय उत्तर । मातमा अगुणवत्त सधुए गदुय सधुए । सत्तमा हेममवन् तणुवात मातमी वज्जिमीनी मीयसा हेममवन् अचकायातिर ।  
 ने एववत्त इहे मुरवत्तमी अगुणवत्त । सत्तमेणमतेउवासतर । मातमा अगुणवत्त सधुए गदुय सधुए । सत्तमा हेममवन् तणुवात मातमी वज्जिमीनी मीयसा हेममवन् अचकायातिर ।  
 मरुए अयान्दुर । सधुए गदुय सधुए । सत्तमा अगुणवत्त सधुए गदुय सधुए । सत्तमा हेममवन् तणुवात मातमी वज्जिमीनी मीयसा हेममवन् अचकायातिर ।  
 मरुए गदुय सधुए । सत्तमा अगुणवत्त सधुए गदुय सधुए । सत्तमा हेममवन् तणुवात मातमी वज्जिमीनी मीयसा हेममवन् अचकायातिर ।  
 वीगी । उवासतराह मधार । अचकायातिर अग्रयत्त । जिय मातमी अचकायातिर । सत्तमे अचकायातिर । सत्तमे अचकायातिर । सत्तमे अचकायातिर ।

सुखदयाया शक्तियद्वयार्थीतिमायया । सेषादकष्टकासा गुरुतदुयाभिष्यस्यपश्य ॥ २ ॥ अथकासति ॥ भूतमयरेवामानि ॥ अहकासति ॥ वाद  
राशि गुरुलपुत्रव्य रूपि अगुरुलपुत्रव्यव्यवस्थमिदृशपिबेति व्यवहारतस्तु नुवादीति चत्वार्यपि सन्ति तत्र निदृशमानि गुणसौष्ठो योगमना, इषु पुंम  
उग्रममतात् गुरुतपु र्वागुक्षित्यप्यममात्, अगुरुल प्याकाष्ठं तत्कृतावस्थादिति, यत्तानिवा यकाफास्तरादिभूया व्यतद्राथानुसारेणा वगन्त्यानि  
तद्व्या - उमाधवापचकठर्दि पुरुषीदीक्षापथगारावासा । नेद्वयाव्यस्त्यिष सपथाकागाइलेषां ॥ १ ॥ विदीयस्यकाळे सज्जरीरामजोगतवठने ।  
दक्षपएसायज्जव तीर्याकातमिदृशवृत्ति ॥ १ ॥ वेदवित्तयार्थपुरुषमि ॥ नारका वेद्वित्तलसरीरे प्रतीत्य सुखस्तपुकाएव, यतो वेद्वित्तलसर्वने  
कात्मने ते एताव गुरुस्तपुकाएव वराह-उरगसिखेवविविध आहारगतेयगुरुलपुत्रवृत्ति ॥ जीवकामधपुरुषमि ॥ जीवापेक्षया कामवसरीरापव  
याच नारका अगुरुलपुकाएव जीवस्या कपित्तेना गुरुलपुत्वात् कामवसरीरस्यच कामवसनेकालमत्वा त्कामवसनेकाला अगुरुलपुत्वा, वाह

गायमा ! नोगुरुया नाळक्या गरयलळक्यावि अगुरुयलळक्यायि । संकेणठेण गीयमा ! वेउच्चियतेयाइ प  
हुच्च नोगुरुया नोळक्या गरयलळक्या नोस्थगुरुयलळक्या । जीवचकममचपहुच्च नोगुरुया नोळक्या नो

अिम तद्वदत्त कच्छ । एव गुरुलपुत्र एव चत्वार्य कठर्दि । इम गुरुलपुत्र वनकात अनीद्वि । पुर्ववीदीवावसागरावासा । इद्विनी दीप सत्तर सस्र वा  
सा मरतादि सेव दमन गुरुलपुत्र पदे कच्छा, यदीदीतमपणेव -- सररवावमतेविगुरुवा जात्रपगुरुलपुत्रा । नारको हेममवन् । अ गुरुलपुत्र ? अथवा अथुवे  
यववायल्लपुत्र वायल्ल अगुरुलपुत्र इतिप्रत्यु कतर । नावना वायल्ल वायल्लुवा । हगोतम । गुरुनही अथपविनहो । गुरुमस्यसुधावि । पतसे गुरुलपुत्र  
पविष । अगुरुलपुत्रावि । अगुरुलपुत्र पविषी, नोतम कच्छे -- संकेपहुचमिती । ते से अये हेममवन् । इमवत्तु । गीयमा वेद्वित्तयतेयाद पुरुष । हेगोतम । नार  
कोने वेद्वित्तय तेजत गरोरवे ते पायकोने । नोगुरुवा नाळक्या । गुरुनही वयमहो । गुरुलपुत्र वायल्लगुरुलपुत्रा । गुरुलपुत्र अगुरुलपुत्रावे केसाठे वेकि  
यतेजस वनवायव ते एतसा गुरुलपुत्रावे । आवेच अथव पुरुष नोगुरुवा वायल्लपुत्रा नोगुरुयल्लपुत्रा अगुरुलपुत्रा । नोयनो अयेसावे अयुन अम

च-कमगमकनागारे पपाइभगुरुमहुपाइति ॥ नाकलत्राखियंशरीरेइति ॥ यस्य यानि शरीराणि प्रवन्ति तस्य तानि क्वात्वा भसुरादिभूया स्य  
 ध्यायानो तिइइय तथा भुरादिदेवा मारकव्याख्याः पृथिव्यादयस्तु शरीराण्येवमेव प्रतीत्य गुरुसप्तधो जीव कामकण्ड प्रतीत्या गुरुसप्तधो ध्याय  
 वस्तु शरीराण्येवमेव प्रतीत्य गुरुसप्तध एव पञ्चभूतियन्त्रोपि, अनुप्या स्वीकारिकैकियतैत्रसाधारकाणि प्रतीत्येति ॥ चन्मत्तिय  
 क्षायति ॥ इह यावत्कृत्वा दक्षन्मत्तिकाय आगसन्मत्तिकाय निवृत्तय ॥ चतुस्रपण्डति ॥ एते भगुरुसप्तधुत्येन पदेन वाच्याः क्षेपाकान्तु निर्येचः

गुरुयलञ्जया श्रुगुरुयलञ्जया । सेतणठेण एवं आव वेमाणिया । नयर पाणस्त जाणियह्व, सरीरेहि धम्म  
 त्तिकाए जाव जीवत्तिकाए चउत्तपण्ण । पोगलत्तिकाएण जत्ते ! किं गरुए लञ्जए गुरुयलञ्जए श्रुगुरुयलञ्ज  
 ए ? गोयमा ! नोगुरुए नोलञ्जए गुरुयलञ्जएवि श्रुगुरुयलञ्जएवि । सेकणठेण गोयमा ! गुरुयलञ्जयदव्वाइ

च मरीरनो पवेचवे मारको मुठनही सहुनही गुरुसप्तधुनही गुरुसप्तधुनही तेमाटे भगुरुसप्तधुनही, एते कामचयरीर कामचयवयवाक्य  
 पचांको कामचययाने भगुरुसप्तधुनही। सेतणठे च गावमा । ते तेवे एवं वेमोतम । मारको गुरुसप्तधुनही, भगुरुसप्तधुनही । एव कामवेमाणिया चवर चाव  
 तत्राचित्तम सरीरेहि भन्मत्तिकाए काम जीवत्तिकाए चउत्तपण्ण । एत मावत् वैमानिकताइ चतुस्रपण्डत चववा एतत्ताविमिय मानालपण्ण मरीरे चइ  
 न जे तत्रामरीरपुवे तेइने तेतका जाकोने चववा चउत्तकुमारविदेवता मारकोमोपरे चववा, धुवित्तादिक्खने तो शरीराणि तेकसपायो गुरुसप्तधुनही चने  
 कामचयरीरपायो भगुरुसप्तधुनही मारकाय शरीराणि वेअिय तेवउपायो गुरुसप्तधुनही कामचयानो भगुरुसप्तधुनही, एत एवंवेमोतिवेच पचि अनुच शरीरादि  
 चवत्तिय चाकारव तेकसपायो गुरुसप्तधुनही, कामचयानो भगुरुसप्तधुनही । एवंवेमोतिक्काव २ पाचायासिक्काव ३ जीवासिक्काय ४ एक्केने  
 पक्को पचमो भगुरुसप्तधुनही एनियवे चाकरा यानो तोनपद निर्येचकरवा । पायत्तासिक्काएचमंति । पुइन्नासिक्काव वेअगवन् । भिंभुगुए महुए । भूभुगुए ?  
 पचराकवुवे । भुगुइए । पचरा भुगुनपुवे । पचरा भुगुइए । पचरा भुगुइए इतिप्रश्न उत्तर । गावमा चोभुगुए चाकइए । वेमोतम । गुरुनही महुनही

आपो पमोत्तिमायादीना मरुपितया प्रगुल्लपुत्तादिति पुट्टसस्त्रिकायसूत्रे उत्तर निवृत्तमपायित मेकान्तगुरुसमुहो सत्यतेमा प्रायात् ॥ गुरु  
 यमदुपवसावति ॥ श्रीदारिकादीनि ४ ॥ अथगुरुपदद्वयवति ॥ कामकादीनि ॥ समयकमादिपञ्चतयपण्यति ॥ समया समूर्ताः कामोविष का  
 मवयवकामकात्री त्यगुल्लपुत्तमयो ॥ दक्षतेसप्यगुरुतयपण्यति ॥ द्रव्यत रूपनेत्रया श्रीदारिकादिशरीरवर्ग श्रीदारिकादिकम् गुरुसञ्चिति  
 तया गुरुतत्त्वित्यनेन यतीयविक्रयन व्यपदेशा प्रावत्तयपण्य गीवपरिकति सत्या द्यमूलत्वा दगुरुसञ्चित्यनेन व्यपदेश इत्यलपा ॥ जावले  
 मंपुत्रवत्तयपण्यति ॥ विहीदसवेत्यादि ॥ दृष्ट्यादीनि जीवपण्यत्वेना गुरुतयत्वा दगुरुतयलक्षण अनुपपदेन वाच्यमिति अज्ञानपद स्थिर

पमुच्च योगरूप गोउज्ज्ज गुरुयलज्ज्ज नोअगुरुयलज्ज्ज, अगुरुयलज्ज्जयद्वयाइ पमुच्च नोगुरुए नोलज्ज्ज नो  
 गुरुयलज्ज्ज्ज अगुरुयलज्ज्ज, समयकमाणिपञ्चतयपण्ण । कस्सलेसाण भते ! किं गरुया जाय अगुरुय  
 लज्ज्ज्ज तहयपण्ण, जावलेस्सपमुच्च चतयपण्ण, एव जाव सुक्खलेस्सा । विहीदिसणनाणअन्नाणसम्प्राप्तवउ  
 त्तरुयलज्ज्जि । गुरुवपण्णिवे । अगुरुवपण्णिवे । सेवेवई भते । ते कामादे वेमगवन् । इमस्सुं इतिपय उत्तर । गोवमा ननुवसइव  
 दवार् पमुच । वेगीतय । श्रीदारिक १ वैक्खि २ पाहारक ३ तेवस ४ इत्थपायीते । गोगुरुए वोवइए ननुवसइए । नहो गुर नहीस्सु गुरुसपुवे । वा  
 पमदुसइए । अगदुनयुनहो । अगदुसइवदवार् पमुच । कामव मम भाया एतोम पायीते । गोगुरुए वावइए । गुरुभहो सयुनहो । गोगुरुवसइए ।  
 मुदुनयुनहो । अगदुसइए । अगदुसइए । कामव मम भाया एतोम पायीते । कामव मम भाया एतोम पायीते । गोगुरुए वावइए । गुरुभहो सयुनहो । गोगुरुवसइए ।  
 अभतेदिगारया जाव पमदुसइए । अगदुसइए । कामव मम भाया एतोम पायीते । कामव मम भाया एतोम पायीते । गोगुरुए वावइए । गुरुभहो सयुनहो । गोगुरुवसइए ।  
 मायमा भागइया कामइया । वेगीतय । गुरुनहो सयुनहो । यवससइवदवार् । गुरुवपण्णिवे । अगुरुवपण्णिवे । सेवेवई भते । ते

[illegible]

ત્યપણનેયમ્નાઈ, હેઠિલા વત્તારિસરીરા નાયલા, તદ્દણપણ, કમ્મય ચત્યણપણ, મળજોગે વઢજોગે  
ચત્યણપણ, કાયજોગે તદ્દયણપણ, સાગારોચઠેગો છુણાગારોચઠેગો ચત્યણપણ, સદ્દલા સદ્દપ  
દેસા સદ્દપજ્જવા જહા પોગલિયકાઠે, તીત્ત્તા છુણાગયદ્દા સદ્દયા ચત્યણ પણ । સેણ નત । લાઘ

त्वामाटे हेमगवन् । हमकहुं इतिप्रश्न उत्तर । नायमा द्रव्यस्यपुरुष राह्यपण्य । उद्योतन । द्रव्यतो साखलेखा औदारिक्यरीर बदे छ पने यो शक्ति नवकपुदै तेमाटे मुबनपु एतौवेपदे कइवा, औगपरिचाम विमोप ते समूलपक्षाबी । भावलेखपुव । भावलेखपण्य । बोधि च परलव रवे पदे कइना । एव काम सुखलखा । हम यावत् मुखलेखा ताइ कइवा । दिहोससखावेपखाबसखाबीचठपण्यवेयव्यापी । दृष्टि र दूर्यन २ प्रान १ चप्रान ४ संश्रा ५ ए औगपर्याय पक्षाबी अगुरुवसखन बीजेपदे कइवा अज्ञानपद इहांविमु ते ज्ञानना विपक्षपक्षाबी कहुं, अन्वया इारनेवि वै ज्ञानपदहोत्र दीसिजे । हेडिशापत्तारिसरीरावेतना तइएकपदेव । वेठिखा एतले औदारिक १ वैखिब २ तैवस ३ कामब ४ एवारि पक्षिछायरीर मुग्नपुपदे कइवा । कथइचठपण्यपण्य । कामबयरीर बीजेपदे अगुरुसहु द्रव्यपक्षाबी कार्मिक्यरीर ने । अयजोमे बखजोमे चठपण्यपण्य । मनयोग बचनपान ए वेज द्रवने अगुरुसहु पक्षाबै तेमाटे शोकेपदे कइवा । कायजोभातरएव पदेव । कायजोय कामबवर्णीनि मुगुरुपक्षाबी तेबना द्रव्यनेबै ते माटे बीजेपदे । सागारावभागी । ज्ञाशापसाग । अनागारावभाया चठपण्य सखदव्या । दूर्यगोपवीग एवळ बोले अगुरुपुपदेकइवा, यमीछिवावा

मयूनि इतराणि गुरुसंपूनि प्रदेशपयवास्तु तत्तद्गुण्यसम्बन्धेन तत्तत्प्रमाणाहति गुरुसंपुत्वाधिकारादिदमाह ॥ सेषूचमित्यादि ॥ सापयि  
यति ॥ सापयमेव सापयिष्य भस्वोपपित्त ॥ अप्यिष्यति ॥ भस्वोमिलाप आहारादिषु ॥ भस्वुच्छति ॥ उपया वसरसकानुवन्धः ॥ अमेहिति ॥ जो  
त्रादिषु परिजोगकाले अनासनि रमतिष्ठता स्वजगदिषु छेदाप्राप्त इत्यत स्पष्टं मितिगम्य असकाना निर्यन्यानाम्नस्तु सुन्दर मय

यिय अप्यिच्छा अमुच्छा अगेही अपक्रियया समणा निगगाण पसत्य ? हता गोयमा ! लाघविय  
जात्र पसत्य । सेणूण जते ! अक्रोहत्त अमायस अलोजत्त समणा निगगाण पसत्य ? हता  
गोयमा ! अक्रोहत्त जात्र पसत्य । सेणूण जते ! कखापदेसे स्त्रीणे समणे पिगगये अतकरेजयह अतिमसा

दि पटदस्य । मयपदमा मापयसा । सगकाप्रदेश खंडना भावबोधनकाव र्णादिक तथा उपयागादिव द्रव्यधर्म । अहपात्मवैयबाधो । विम पु  
इवादिजायना कमा तिमक इवा, तथा नूयद्रव्ये तेहने अनुपुन्यभाव अनेरा बादर कषुद्रव्ये गुरुत्वभावाप्रदेश अने पवीय ते केद्रव्य सवधिपये व  
रो तेहने सभावेक इना । तोतहा अचागवहा सवहा पचत्तपयस । अतोतपहा अनागतपहा सर्वाहा एषीक्षेपदे एतसे अगुसुधु कहवा, गुरुत्वबोध एव  
अहै—मेकूचभतेकावदियं । ते निवै हेभयवन् । अमुत्त अकप उपवि । अपिच्छा । आहारादिकेनिवै अरपराहा । असुच्छा । उपवि आदि एराकवाभा  
मूर्खीरहित । अनीही । मावन चादि कोमचवेका सोभरहित । अप्यिच्छाया । अजगदि सनेह रहित । समबाव । अमच तपकोने । विमबाव । बाह्या  
अनर पचरहितने । पमत्त । सुंदरै इतिप्रय उत्तर । हता मायमा कावदिव । हां गोतम । अतो अमुत्त अरपउपवि बायत् प्रयस सुंदरै एवाधवि  
अने सइरता अही, ते कोषादिकनाभाबकिना बाय तेमाटे कोषादिप्रायो अभाव देखाहै—सेषूचभते अकाहत्त अभावात्त अमायत्त अलोभत्त समबा  
अपिच्छाया पमत्त । ते निवै हेभयवन् । अजापयवी आगरहितपवी आगरहितपवी आभरहितपवी अमचने निपचने सुंदरै इतिप्रय, उत्तर । इता  
मायमा अकाहत्त । हां गोतम अजापयवी । आवपसत्त । बायत् प्रयसपवी सुंदरै । सेषूचभतेकहा । ते निवै हेभयवन् । अन्यदर्थमनोभावा तथा

[illegible]

रीरिपूया यज्ञमीदधियण पुष्टिविहरिता अहपष्ठा सयुक्तेकाल करेइ तवपष्ठा सिज्जेइ युज्जेइ मुज्जेइ जाव  
 अतकरेइ ? हुंता गोयमा ! कंखापदोसे स्त्रीणे जाय अंतकरेइ । अखउलियायाण जते ! एवमाइस्कंति एव  
 नासति एव पखर्वति एव पखर्वति एवखलु एगेजीवे एगेण समएण दोष्ठाउयाइ पकरेइ तंजहा-इहजवि

[illegible]

वि दीक्षाउपादपकरोदिति । कीदृशी स्त्रपार्यापसमूहात्मकः सच यदीक सायु पर्यायं करोति तदाव्यमपि करोति स्त्रपार्यापत्वा वृष्टानसम्यक्पार्यायवत् स्त्रपपायकवृत्त्यन्व लीवस्या म्रुपगन्तव्यमेवेति न्यायः सिद्धित्वादपार्यापाका मनुत्पावप्रसङ्गसिन्नाकः, उक्तायस्यैव प्राक्तनार्यमाह ॥ जनि त्मादि ॥ किन्तुत्तरिकाभा इस्मि इवमये इहप्रवो यार्त्तभाक्तवो यन्नापुपि विद्यते प्रसन्नता तदिहप्रथायु रेव परमवायु रप्यनेनचैहप्रथायुः कर वसमये परप्रवायुः करव नियमित, सच परमवायुः करवसमये इहमवायुः करवं निपुणमयाह ॥ जंसमयपरमविधाउयमित्यादि ॥ एव सेकसमय कावता इवो रप्यन्निचायै कृत्रिपाकार्यतामाह ॥ इहजनिविधाउयस्सेत्यादि ॥ यकरववाएति ॥ करणेन एव कृत्रित्वादि निगमनं ॥ जस्यतेप्रकठत्विपा

याउयच परन्निविधाउयं च, जसमय इहजनिविधाउय पकरोद तंसमय परन्निविधाउय पकरोद, जंसमय पर न्निविधाउय पकरोद तंसमय इहजनिविधाउय पकरोद, इहजनिविधाउयस्स पकरणयाए परन्निविधाउयपकरोद परन्निविधाउयस्स पकरणयाए इहजनिविधाउयपकरोद, एवस्वलु एगेजीवे एगेणं समणं दोस्थाउयाइ पकरोद तजहा — इहजनिविधाउयं च परन्निविधाउयं च । सेकहमेय जते एव गीयमा ! जस्यते श्युक्छउत्थिया एवमा

मेव समएव दायाउवाइ पकरोद तजहा । एम जिवै एकजीव एवैसमये भाऊकावाचै तिहा विराधनहा जोवबे ते स्वयंवाच समूहात्मकवै तेजिवारे धा जखोवाचै तिवारे देमवनावाचै तेकईहे — इह भविष्यकव । इवि भवतो काऊकावाचै चपन । परमविधाउयव । पर भवतो भाऊखोवाचै पूर्वै कछा पबनौख मावना कईहे — जसमय इह भविष्यकवपकरोद । जेसमयनेविचै चलमानभवतो भाऊका वाचै । तसमयपरमविधाउयपकरोद । तेसमयनेविचै धा माभिभवतो भाऊखोकरै वाचै । जसमयपरमविधाउय पकरोद । धने जेसमयनेविचै पर भवतो भाऊका करै । तसमय इह भविष्यकवपकरोद । ते समयने विचै इह भवना भाऊका वाचै । इह भविष्यकवपकरोद । एम एवै समये भावपयो जेहजोवकीने एकाजिवा कायणचै कईहे — एह भवना वा ववानो किया करतो । परमविधाउयपकरोद । परमवनाभाऊकाभीवचकरै । परमविधाउयकपकरणयाए । पर भवना भाऊकाभी वधनपबं करतो । इ



एवमाहुरासीत्याद्यनुवाददास्यस्यास्ते ताप्रतीत भवेत्तस नित्यं दारुणोद्योगः, अतएवमार्हसुमिच्छते एवमाहसुति ॥ तत्र ॥ आहसुति ॥ उक्तं वन्तो यदार्थं वसमाननिर्देशोऽपि कृते तीतनिर्देशः सर्वो वसमानः आसौ तोतो प्रवर्ती तस्या र्थस्य ज्ञापनार्थो, मिथ्यात्वञ्चा स्यैव-एकेनाप्यवमायेन विरुद्धो रण्युयो वन्त्ययोनात् यद्येव्यते पर्यायान्तरत्वे पर्यायान्तर करोति स्वपर्यायत्वादिति तदनेकान्तिः सिद्धत्वरत्वे स मारित्याकरणादिति टीकाकारव्याख्यानम् इदमवापु र्गवा प्रकरोति वेदयत इत्यर्थः, परमवामु सादा प्रकरोति प्रवर्तनीत्यर्थः, इदमवापु रुप

इस्कृति जाव परन्निवियाउयच जेते एथमाहसु मिच्छते एवमाहसु, अहपुण गीयमा! एथमाहस्कामि जाव पन्थमि, एवखलु एगेजीवे एगेण समएण एगस्याउयं पकरेइ, तजहा-इहन्नवियाउयवा परन्निवियाउय वा जसमय इहन्नवियाउयपकरेइ, जीतसमय परन्निवियाउय पकरेइ, जसमय परन्निवियाउय पकरेइ जीत समय इहन्नवियाउय पकरेइ, इहन्नवियाउयस्स पकरणयाए णोपरन्निवियाउय पकरेइ, परन्निवियाउयस्स णोइहन्नवियाउय पकरेइ एवखलु एगेजीवे एगेण समएण एगस्याउय पकरेइ तजहा-इहन्नवियाउयवा पर

इमविवाचपकरेइ। इह भवता वाचकाना वचकरे। एवखलु एगीजीवे। इमनिवे एक्कोव एगीसमएव। एक समवनेविदे। दापाउमाइ पकरेरत जहा। वे पात्रपाना वचनमते करे तेइवे-इहमविवाचयं। इह मवनी वाचको वपुन। परमविवाचयव। परमवनी वाचको। वेकइमे इमएव। तेकिमवे एव हेमवन्। इम इतिप्रश्न उत्तर। गायमा कवते पक्कवत्तिवा। वेगीतम। वेकारवववो ते चव्ययनी दीतरामना भासनवो एवेता ते। एव माइवत्ति। इम वईवे सामाववो। जाव परमविवाचयव। जाव परमवनी वाचकोवापे एतथा तदिं सुववववो। जेतेएवमाइसु। जे चवत्तीयो इमववव। मिच्छते एवमार्हसु। मिथ्यावृत्तवई-एवंपुण मोवमा। इ ववो वेगीतम। एवमाइव्वामि। इम वववू सामाववो। जावप ववेमि। दावत् प्रकृपंइ मेव वववावो। एवखलुएगीजीवे। इम निवे एक्कोव। एगीसमएव। एवे समवे। एग पाउवपकरेइ। एक पाउववानी वच

नोनेन परप्रयासु धम्रातीत्यर्थी मिथ्यानीत त्परमत यसा ल्वातमात्रो बीव इहमवायु वेदयते तदेव तेन यदि परमवायुर्बद्धं तदा दानाच्ययना दीनां वीर्यये स्यादिति यतदा युक्त्यन्ताला दम्यत्रा ववेय मथ्यथायुर्बन्धकाले इहप्रवायु वेदयते परमवायु सु प्रकरात्येवेति अन्ययूयिकप्रस्ता पा दिदमाह ॥ तेनमित्यादि ॥ पासावद्विज्जति ॥ पासावपत्याना पासावमिश्रित्याना मयं पासावपत्सीयः ॥ घेरति ॥ श्रीभस्महावीरखिमश्रिण्या-

अविधयाउयया सेव नते नतेति ॥ नगव गीयमे जाय विहरइ ॥ तेणकालेण २ पासावमिश्रितो कालासवेसिसियपुत्ते णाम छुणणगारे जेणेवयेरा नगवतो तेणेव उवागच्छइ २ सा धेरं नगव एवथयासी , येरासामाइयणया णति , येरासामाइयस्स छुठ णयाणति , येरा पञ्चस्काणस्स छुठ णयाणति

करै । तज्जहा इहमविधाउववा । ते कथेइ—इह मवना पाच्छखी बाधै । परमविधाउववा । पर मवनी पाच्छखी बाधै । जंसमयइहमविधाउवपकरे र बीतसमयपरमविधाउवपकरे । जे समयनेविधै इवि मवनी पाच्छखी बाधै नही ते समयनेविधै परमवनी पाच्छखी बाधै । जंसमयपरमविधाउवपकरे इ । जे समयनेविधै परमवनी पाच्छखी बाधै । बीतसमयइहमविधाउवपकरे । नही ते समयनेविधै इहमवनी पाच्छखी बाधै । इहमविधाउवपकरे बाए । इह मवना पाच्छखाने बाधैकरौ । बीतरमविधा उवपकरे । पर मवनी पाच्छखी नबाधै । परमविधाउवपकरेबाए । पर मवना पाच्छखाने बाधैकरौ । बीइहमविधाउवपकरे । नही इहमवनी पाच्छखाबाधै । एववहरगीकोवे । इम निवे पूर्वोक्तप्रकारे एवकीव । एगीचंसमएव । एके समये एगपाउवपकरे तज्जहा । एव पाच्छखीबाधै इम खीकेवसज्जानीनो मत जाववो तेकथैइ—इहमविधाउववा । इहमवसंबंधी पाच्छखीबाधै । परमवसंबंधी पाच्छखाबाधै । सेकमति रति । तइति हेममवन् ! तुल्लेकसु ते सत्त्ववे प्रत्यक्षानहो । मगवसंबंधी जावविहरइ तेनकासेव । मग वत मोतम बावत् सप्याचभावमावे विहरइ इतसा नगवइवा तेकासनेविधै । तेणसमएव पासावमिश्रित्या । पासावमवना प्रपत्स्यिय । कासासवेसिय पत्तेकाम भवनारे । कासासवेसिय पत्तेकामे गृहवास रहित साहु इत्यव । जेणेवयेराभमयवता । जिहां खविर महावीरना यिय सुतहइ भगवत भानव

युतपदुः ॥ सामाहयन्ति ॥ समभावरूपं ॥ अयावन्ति ॥ न जानन्ति सूक्ष्मत्वा तस्य ॥ सामाहयस्त्वग्रहति ॥ प्रयोजनं कर्मानुयादानभिर्जन्मरक्षय ॥  
 पदव्युत्पत्ति ॥ पौष्ट्यादिनिर्माणं तदर्थेणा भवद्वारनिर्माणं ॥ सज्जति ॥ पृथिव्यादिसर्ववस्तुषु तदर्थेणा भाग्यवत् ॥ स्रवरति ॥ इन्द्रियानोद्  
 निर्यन्तिवत्तनं तदर्थेणु भगवत्त्वमेव ॥ क्विमेति ॥ विशिष्टयोष तदर्थेणा त्वान्यत्याकादिक ॥ वितरसृगति ॥ व्युत्सर्गं कृपादीना तदर्थेणा

येरा सयम जयाणति, येरा सजमस्स स्युठ जयाणति, येरा सवरं जयाणति, येरासथरस्स स्युठ नया  
 णति, येरा विवेग जयाणति, येरा विवेगस्स स्युठ जयाणति, येरा विउस्सग जयाणति, येरायिउ  
 स्सगस्स स्युठ नयाणति । तएण तेयेरा जगवत्तो कालासवेसियपुत्त स्युणगार एवजयासी, जाणामोण

त । तेवेउडागच्छ २ ता । तिहा पावे तिहा पावोने । जलवत्त्वएवदासो । अतिर मयवत्त्वते इमवत्ते । वेरासामाहयनकावति । अतिर समवामा  
 वरूप जामादिक ते नकावे । वेरासामाहयस्यपुत्रकावति । अतिर सामादिकनी एवमसावन नकावे वमपुत्रपाशनरूप । वेरापवत्त्वकावरावति ।  
 विर इतिवो यादि एवाकवत् ते नकावे । वेरापवत्त्वकावत्त्वकावति । अतिर एवत्त्वकावो एव पायवत्त्वति निर्माण नकावे । वेरासजम इवावति । अ  
 शो एते नाइद्रोवना निपट ते नकाव । वेरासजमस्यपुत्रकावति । अतिर सजमना एव जमावत्त्वयो ते नकावे । वेरासवरकावति । अतिर इ  
 ववतो विमिह वाव ते नकावे । वेरासवरस्यपुत्रकावति । अतिर संवरनी एव जमावत्त्वयो ते नकावे । वेरासविवेगकावति । अतिर विवेक  
 नकावे वायाना त्वामकप । वेरासविवेगस्यपुत्रकावति । अतिर विवेकना एव जमावत्त्वकावति । वेरासविषयवत्त्वकावति । अतिर काठसय  
 भमवत्त । काठसमेनिवपुत्तपक्काह । काठसवेसित एव पक्काहप्रते । एवंकासो । एव काठता पूजा । काठामावत्त्वका सामाहय । काठानी च काठ  
 नकावे इयाय । समवरिवाप्तकप सामादिक । काठामोवत्त्वकासामाहयय ॥ काठानी च काठकावे ते नकावे । काठविक्रमो एव जम जमुपाया

पने प्राकृतत्वात् ॥ वेनेति ॥ किंभवता मित्यर्थ ॥ आयावेति ॥ आत्मानोऽस्मान् मते सा  
 ऽठियस्ससामहयंति ॥ सामायिजाप्येपि जीवएव कर्मानुपादानादीना जीवमुक्त्वात् जीवाव्य  
 यमनन्वय ॥ जइनेपण्णोति ॥ यद्विप्रवता हेत्वार्योऽः । स्वविरा- सामायिक भात्मा तथा ॥ अथ

सामाहयस्सस्युठ, जाय जाणामोण स्युज्जो विउस्सगस्स स्युठ । तए  
 रे जगधंते एववयासी, जइणस्युज्जो तुप्पेजाणह सामाहय, जाणह  
 जान केने विउस्सगस्स स्युठ ! तएण तेथेराजगवतो कालासवेसियपुत्त स्यणगार एववयासी, स्यायाणेस्य  
 ज्जो सामाहए, स्यायाणेस्युज्जो सामाहयस्स स्युठ, जाय विउस्सगस्सस्युठ । तएणसे कालासवेसियपुत्ते

न निजराकप । जायजायानावपज्जावउसम्यस्युठ । वायत् जायज्जावरे हे पार्ये । वाउसम्य जायजायवक्य तेदनी अथ । वएववेकावा  
 मवमियपुत्तेपचमार । तिवारे तेकावासवेसित पुत्तनामै साह । तेवेरेमवते एववयासी । ते सखिर भगवतमते इम कहतापुया । जइवपज्जोतुप्पे । जो  
 वं वाक्कासकते हे पाव । तुप्पे । जायज्जासामाहव । जायज्जासामाहवस्युठ । वसो जायज्जो सामायिकनी अथ । जायजायववित  
 प्यम्यस्युठ । वायत् जायज्जा वाउसम्यनी अथ । केमेपज्जोसामाहए केमेपज्जोसामाहवस्युठ । तो स्यु तुम्हारे हे पाव । सामायिक स्यु तुम्हारे  
 हेपाय । सामायिकनी अर्थ । केमेपज्जोवाववितसम्यस्युठ । कां तुम्हारे वायत् वाउसम्यनी अर्थ । तएवतेवेराभगवतो कावासवे सिवपुत्तपच  
 मार । तिवारे ते सखिर भगवत कावासवेसित पुत्तनामै साहपत । एववयासी जायवेपज्जोसामाहए । इम कहतापुया अन्तरेमते चहीपाय !  
 पाया जीव सामायिक मुर प्रतिपवहुवे, तिवारे सामायिकनीज कहोये । जायवेपज्जोसामाहवस्युठ । पाया अन्तरे हेपार्य । सामायिक

इदं ॥ अथ इत्येतत्त्या क्रोपादीन् किमर्थं गच्छे ॥ निदानिगराणि व्याख्यायितव्यानि ॥ अथवा अथमिति गम्यते अ  
थमनिर्मायः यः भावयित्वा न त्यक्तक्रोधादियं सकृद्विनिर्मुक्तिं किमुपेयमवेति ? अत्रोत्तरं सुयमायमिति, अथवा यदि ते  
संयमाः त्रयानि अवदानुमते व्यप्यवदानात् तथा गर्हायम सद्येतुत्या अ वेवस मसी, गहाकर्मानुपादानेतुत्या रसमोपवति ॥ गरहावियति ॥  
गर्हाय मने ॥ दासति ॥ दोष रगादिष्व पूर्वकृतपापयाः द्वेषाः प्रविमयति व्यपयति ॥ किमुपेयमिति ॥ वास्यं व्यासतां मिथ्यात्वं  
प्रविरतिष्व ॥ परित्यागं व्यपिरिचया व्यास्य प्रत्याप्यायेति इह गहाया समुह्यते व्याप्यते ॥

अथगारे धरेन्नगयते एवं ययासी, जहन्नेच्छज्जोश्यायासामाह ए श्यायासामाहस्व श्युठे, जाव श्यायायि  
उत्सगस्व श्युठे, श्युठहु कोहमाणमायालोने किमठ श्युज्जो गरहइ ! कालासा ! सजमठयाए ! सजते ?  
किं गरहासजमे श्युगरहासजमे कालासा ! गरहासजमे नोश्युगरहासजमे, गरहावियण सव्व दोस पविणेइ  
सव्वं थाळिय परिणाए । एव खुणे श्याया सजमे उवहिणु नवइ, एवखुणे श्याया सजमे उवच्चिए नवइ,

ना पथ । अथ विउत्तवस्वपणे । वाक्क भामाज्ज भन्तरे काउत्तवस्वना पथ । तएवसकासासवेसिक्कपुत्तेपवगारे । तिवारे तेकासासवेसितपुत्र सावु  
तवरेभमवते एवंशपावो । ते स्विदिद भमवतमते इम वववाइया । जहन्नेच्छज्जोश्यायासामाह । जो तुन्तरे वेपारो । आकाशामादिय । पायासामाहवच्छपणे ।  
ज्जो आकाशोत्र सामाविकनी पथ । जाव थासाविउत्तवस्वपणे पवइइ कोइ माव मावा सोभे विमई पव्वोगरइइ । यावत् आकाशोत्र आउत्तव  
ना पथ स्वज्जोने भाव मान माया साभ विसेपव्वे वेपय । गरहावो । निदासि गरहासि पव्वाव वोसरामि इत्तादि, निदा सापविदे समवे गरहा  
जे जोइने सावप सामे ते नरहोवे गुहमाणे सामाये इतिपत्र, । आकासासजमहाय । अथमनेपवे अथवापय नरहिवो सजमइदे  
नेमतेकिंगरहासजमे । ते वेभमवन् पव्वं गरहा संयमवै नरहोवो पववा । पयरहासजमे । पयरहा संयमवै । आकासासजममे । आकासासवेसित

परिप्रायेत्यत्र ब्राम्हण्यविधिं ररुदृष्टति ॥ एवमुच्यते ॥ एवमेव वेदव्यवसाह ॥ आचार्यजनेष्ववशिष्टे ॥ उपहितः प्रशिष्टो न्यस्तो प्रवति अथया आ स्मरुपः संयम उपहितः प्राप्नोन्नवति ॥ आचार्यजनेष्ववशिष्टे ॥ आत्मा समयवियये पुष्टो प्रवति आत्मरूपोवा ; समय उपचितो प्रवति ॥ अथ द्विष्टति ॥ उपस्थितो इत्यन्तायस्यायी ॥ एवमिष्टंतेपपावं इत्यस्य अविष्टावमित्यादिना सम्बन्धः, कथमदृष्टाणा मित्यतश्चाह ॥ अस्यावधारति ॥ अष्टानो निष्ठानं सस्य मावो ऽष्टानता तथा ऽष्टानतया स्वरूपेणा मुपलभ्यावित्यर्थ, एतदेव कथमित्याह ॥ असववधारति ॥ अमलवः मुतिवप्लि त साक्षात् स्वज्ञा तथा ॥ एवमिष्टेति ॥ अतोपि विनश्चर्मोक्तसि रिष्टतु प्रकृता न्नाहवीरविलिपल्लानवाप्ति क्षया अथवी त्यक्तिकमाविदुच्यमावे न ॥ अथमित्येवति ॥ विस्तरवोपानावन हेतुना अदृष्टानां साक्षा स्वरूप मनुपलब्ध्याना, मनुताना मभ्यतो भावित्वेनाना ॥ अदृष्टयावति ॥ असूतता

एवंस्वुणेस्थायसजनेउवाठिअन्ववइ, एत्यणसेकालासवेसियपुंसेस्थणगारेसनुद्धे धेरेनगवते ववइ णमसइ व० ज्ञा णमसइत्ता एवययासी, एएसिण जते ! पयाण पुंसे अखाणयाए असयणयाए अवीवहियाए अणजिगमेण अदि ठाणं अस्सुयाण असुयाण अविस्सायाण अहोगणाण अहोच्छिखाण अणिज्झाण अणुवधारियाण एयमठ

पुन गरहा संबन्धे । आपगरहासकमे । यदि समरहा समयनवी । गरहाशिव । गरहा तहोव मवदाय रागादिष्व अथवा पूर्ववत्तपाय । सम्बदासपवि चेह । अथवा देव तेजप्रते सेयवे । सम्बदाशिवपरिवाव । अपरिवावे आचोने प्रत्याख्यान परिवावे पदस्वी । एवंसेवावासवमेवविष्टमवह । इम नि से पन्ने आत्मा समयनेविये चत्तंठ निरुद्धाय । एतवसेवासासवेसिवपुंसेअवगारे । इहा सं वाक्काधकारे, ते वाक्कासवेसितपुन अवागरसाहु पाञ्चनाव ना अपत्त । संवेदे धेरे मगवते वंघर चर्मसह वदिता चमसिप्ता एवंवयासी । असोपरं बोधपात्रो स्मविर मगवतप्रते यदि ममस्कार करे बादीने नमस्का रवरीने इम कइताइया । एवमिष्टंतेपयाअमुनिपलाययाए । एवना अवाक्कावेकारे हेमगवन पदाना पडिहा इया पदानेविये आचपयोमवो स्त रुदेपासस्यानवो । असववसाए अवीवहिए अचमिनसेव अदिवाए । पुंसे सुखागवो भिन धमनो धमनो धमनो धमनेविये विस्कार बोधरहित



बलुमहात्रतान् पार्श्वनाथजिनस्य हि जल्वारि महात्रतानि ना परियहीता स्तीमुन्यत इति मैथुनस्य परिणहं तर्जावदिति ॥ सपत्तिक्रमवति ॥ पा  
 दनापपमोहि सम्पत्तिप्रमदः न्यारयय प्रतिक्रमवकरवा दन्यथा त्वकरवा न्यहावीरजिनस्य तु स प्रतिक्रमकाः कारयं धिमा प्यवययं प्रतिक्रमवका

स्थणगारे धेरेजगवतो वदद नमसइ व० हा णमसइत्ता एवययासी, इच्छामिण जते ! तुझे स्थतिए चाउज्जामान  
 धम्मानु पचमहसुइयं सपत्तिक्रमण धम्म उवसपज्जिज्ञा णविहरित्तए अहासुह देवाणुप्पया मापत्तिवध करेह,  
 तएणसे कालासवेसिएपुत्ते स्थणगारे धेरेजगवते वदइ नमसइ व० ता नमसइत्ता चाउज्जामानधम्मानु पचम  
 हसुइय सपत्तिक्रमण धम्म उवसपज्जिज्ञाण विहरइ, तएणसे कालासवेसियपुत्ते स्थणगारे वल्लप्पिवासाणि सा

पववी सभाव बोधववा एयम पवधारी एपवं सहस्रं प्रीति विवव करूँ राचेहे । एवमेते सेवहेव तुषेवदइ तएवेवेराभगवतो । पवजिम एवात  
 तुने कहीवी तेसवं तिमवखे इतिमाव तिबारे ते खविर भगवंत । कावासवेसिवपुसपचगार । कावासवेसित पुन साधुमते । एवववासी सहस्रादिचव्वी  
 पतिया । सेपव्वी रोपदिचव्वा । इम कव्वता कव्वान् । सहस्रादि । यहावत बापी देवाव प्रतिविमय करि देपावं बबिबकि देपावं । सेवहेवपमेवदानो ।  
 एयव पने कइइ तिम । तएवेवकावासवेसियपुत्तेपचगारे । तिबारे तेकावासवेसितपुन पचगारसाधु । बेरे भगवतेवेदइ वमसइ २ सा । खविर भगव  
 तमते बदि भमस्सारवरे बाटोने भमस्सार करीने । एवववासी । इम कव्वता कव्वा । इच्छामिणमते तुछपत्तिए वाउज्जामापो धव्वापो पंचमहसुइयं सप  
 दिउमचचवंडवसपत्तिताव विहरित्तए । बाबइ हेभयवन् । तुकारे समीचे चारि महावत वकीवेमाटे पाच्छनाव क्षामोने चार महावतव्वे, मैथुनमो प  
 रिणइनेमिये धतमीवहे तेहवी पंचमहात्रतकप औणासनाव क्षामोना साधुनेकारव खपना पच्छिन्नमपो कइओ पने औमहावीरक्षामोना साधुनेकारव  
 वना पदि चव्वसे पत्तिक्रमपो करवा ते पादरीने विचारकं । पहासइदेवावप्पिया । विम सुख खपणे तिमकरी देवदानुप्रिय । मापच्छिन्नवतएवंसेवा  
 वासवेसियपुत्तेपचगारे । प्रतिवंध प्याधात मकरखे तिबारे तेकावासवेसितपुन साधु । बेरेभगवते बइइ वमसइ २ सा । खविर भगवंतमते बांदि भम



रग्यदिति ॥ देवान्बुध्पियति ॥ प्रियाममब ॥ मापक्रियति ॥ माय्यापातं क्रुद्धे तिगस्य ॥ मुळजावेति ॥ मुळजावेति ॥ फलगासज्जति ॥  
 प्रतन्यायति विष्णुवदन्तादृश्या ॥ कठसज्जति ॥ अर्धरुतकादृश्याम कटवाप्यावा' अममोक्षा वसतिः ॥ सद्वाक्यसद्दोति ॥ सव्यम् लामोऽपलब्धिवा  
 मान्नाऽपरिपुण्वानोवाऽलप्यस्यिः ॥ उवाक्यति ॥ उवाक्या अनुकूलमतिकूला' असुमवसावाऽ ॥ गामकटयति ॥ गामसेम्भियसमुहस्य कंठ  
 का इव कटवा वापकाऽशब्दो गामकटवा कएतइत्याह ॥ वावीसपरीसहोवसज्जति ॥ परीपयाऽशुवावय सएवो पसर्गो उवसज्जोभा दुर्मेधश्वा

मयापरियाग पाउणह पाउणइत्ता जस्सठाए कीरु नग्गजावे मुळजावे अज्जाणय अदतधुवणय अक्खत्तय  
 अण्णीयाहणयं नूमिसंज्जा फउहसेज्जा कठसेज्जा केसलोह यजचेरयासो परचरप्यवेसो लुहावल्लही उज्जायया  
 गामकटया थायीसपरीसहायसग्गा अहिंया सिज्जइ, तमठ आराहेइ आराहेइत्ता वरमोहि उस्सासनीसा  
 सेहिं सिद्धे युद्धे मुक्ते परिनिहुए सधुदुक्कप्पहीणे ॥ जंतोस्ति जगव गोयमे समणजगवमहावीर ववइ नमसइ  
 वं०त्ता गमसइत्ता एवधयासी, सेण्णं जंतो! सेठिस्सयतणुयस्स किंयणस्सय सान्णियस्सय समावेव अपसस्सकाण

म्या (करे वांशेने नमस्कार करोने। वाठव्यामाथावमाथो पचमइत्ताव ॥ बार मज्जावत्तए वमवो पचमहावत्तरूप धर्मे। सपडिक्कमवंधव ॥ पडिक्कम  
 वामदित धम। उवमपज्जितान्निविहरइ। पादरीने विचरे। तएववेवाकामवेसिबपुत्ते चवगारे। विचारे तेकावासेवसितपुच साधु। वड्डिवासादि।  
 यथा वरन। नामनपरिवागयाउवइ २ ता। सापुनो वीषानो पर्याय पावे पाळीने। अक्खहाएवोरइ। जेइने पवे करे। वक्कभावे। वक्करहित पवो  
 मवभावेपवकावव। होचापवो यरीर पचान्नामही। पक्कतव अवावाकवव मूमिसेज्जा। कव मराखवो उपायमइ रचित पगे उठुपायो विरे भूमि स  
 रता। पनपसेज्जा। कटुमेज्जा, वेमनाउवमचेरवावा। पवव पाटीवे सूदवा कावसेज्जावे सूदवो जेयनो कोवकरिवो वक्कपवे वसवो पाळवो। परचरपव  
 मा मवहावमवो उवाव नामवदया। पावारेने पवे परचर प्रवेयवीवे सामे पववा नवामे पववा परिपूर्णवामे वगुवुव प्रतिज्ञव पववा असमवव इरीय

ना त्वरीपरीपयर्गा भयवा ह्राविंशतिः परीषदा साया उपसर्गो दिव्यादयः बालास्य वैश्विफपुत्र प्रत्यास्यामक्षिपया सिद्धति तद्विपर्ययज्ञता  
प्रत्यास्यानक्षिपया निरूपयवृत्त ॥ प्रतद्वत्सादि ॥ तत्र ॥ जतेति ॥ हेनद्वत्सादि एव मायज्योतिष्येयः भयवा प्रतदा इति कत्वा गुरु रितिकृत्वेत्यर्थ ॥  
सेठिस्सति ॥ श्रीदेवताप्यासिलसीब्रह्मयद्विज्जुवित्तिप्रिरोसेहनोपतपीरलनमायकस्य ॥ तद्वत्सादि ॥ इति ॥ ॥ किवत्सादि ॥ रद्वत्सा ॥ सन्निपत्स्य

किरियाकज्जइ ? हता गोयमा ! सेठियस्स जाव सुपच्चरकाणकिरिया कज्जइ, सेकेणठेण ! जते ? गोयमा !  
सुविद्व पफुच्च, सेतेणठेण ? गोयमा ! एव वुच्चइ, सेठिस्सय तण जाव कज्जइ । स्याहाकम्म ण जुजमा  
णे समणे निगगये कि यच्चइ किपकरेइ किचिणाइ किउपचिणाइ ? गोयमा ! स्याहाकम्मे णनुजमाने स्याउ  
ययज्जाउ सप्तकम्मपगानीनु सिविलयधणयराउ धणिययधणयराउ पकरेइ, जाव सुणपरियहइ । केसेण

ममुहने हांटागेपरे वाधक बिदा तेकरीसे — जावोसुपरीसहावसगापदियाचिक्खइ । वावोसपरीसह सुवादिक् तेवीव वम वंयवो परीवहोपसग  
यववा वावोस परीसह तथा उपसर्ग देवादिक्का बोधा ते जपना ववा चमेसइ । तमहापराहेइ २ ता । ते धाकाने यवे भारावै पारावोने । चरि  
नेहिंवाव चोसासीहि सिहे वुवे सुवे यरिचिक्खइ । हेइसे जसास नीसासेकरीने सिववईने तल्लगा जाववरेने कमवो रचितवईने योतसीभाववईने । चरि  
। सत्त्वदुस्सपपजेचे भत्तेत्तिमगवयोक्खे । सव दुक्खवो रचितवया मोच पणंताइत्त्व हेमगवन् इसो धामभव चववा भदंत इसो गुपते कत्वाचकारी व  
नवववो भयवत योतम । सप्तकम्ममवमहावीर । समव भयवत नीमहावीरस्सामो मते । बद्ध वमसह २ ता एवययासी । यदि नमस्कारकरे सोदीने न  
नमस्कार करीने इस कइतां पूया । सत्त्वमतेसेइअववतचववय विवचय्य विवचय्य । ते निसे हेमगवन् । सोदीनेनीमूर्तिनमा याटा जेइने न  
सासे तेसेठ तेइने तथा हरिद्वीने वि रक्खने राजाने । समाचेव चपसाक्खाचकिरियाक्खइ । सरोखो निसे चपसाक्खानक्षिपया नो भमाव चववा चप  
साक्खामवो जपमो कमवंध ते कपजियाकरे । इया यावमा सेइसय्य । हीनोतम ! येइने । जाव चपसाक्खाचकिरियाक्खइ । यावत् चपसाक्खान वि

ति ॥ रात्रिः ॥ उपपत्त्यादिकिरिति ॥ प्रत्याख्यामक्रियाया अज्ञातो प्रत्याख्यानजन्योवा कर्मोदयः ॥ अविरतिरिति ॥ इच्छाया अनिवृत्तिः सा हि व  
र्त्तनां समेवेति, प्रत्याख्यामक्रियाप्रसङ्गा विदुषा ॥ आह कर्मामित्यादि ॥ आचार्य साधुप्रविधानेन यत्सचेतन मचेतन क्रियते अचेतनमयः पश्य  
त चीयतेवा यद्विद्वत्कृतेषां कृत्यतेषां ब्रह्मादिकं त वाचाकर्म ॥ किंचिदिति ॥ प्रकृतिकर्ममाश्रित्य स्पृहावत्साधोपपादा ॥ किंपकरोति ॥ स्थितिच

ठेण जाव आहाकम्मं नुअमाणे जाव स्युणपरियट्ठइ ? गोयमा ! आहाकम्मं ननुअमाणे स्यायाए धम्म  
स्यइक्कामइ स्यायाए धम्म स्यइक्काममाणे पुढविकाय नावकस्सइ, जाव तत्तकाय नावकस्सइ, जोंसपियण  
जीवमाणं सरीराइं स्याहारमाहरइ तेयिजीवे नावकस्सइ सेतेणठेण गोयमा ! एव बुद्धं आहाकम्मं ननुअ

वा करे मोतम कइरे—सेवणइवमते । ते अ एव हेभवन् । इमकं इतिमत्त उत्तर । गायमा अविरत्त पबुव । हेमोतम । इच्छानो निवृत्तिते सर्वजिह  
ते अविरति पाथो । सेतेवट्ठेवं मायमा एव बुद्ध । ते तेव एव हेमोतम । इमकं । सेट्ठिकस्स तत्तवस्स नावकस्स आहाकस्सेवमुजमाचे । सेट्ठिनेद  
रित्थेने वावत् प्रत्याख्यान विवाकरे प्रत्याख्यानविवा प्रस्थावन् एवइ—एवित्थं पेढीने वचित्तकरोनेदरे ते जीमोतवन् । समवेयिअर्थाविकव  
र । माहु ब्रह्मात्मन्तरं गंवरहितं प्रकृतिकं आयवीने खंवि । किंपकरोत् । क्खित्तवन्तो अपेचाये खंकरे । विविपाइ किंठवविपाइ । धनुमानवन्तो  
पपेचावे तवा निवत्तं दूरं वेगोवत् प्रदेयवन्तो अपेचावे इतिमत्त उत्तर । गायमा आहाकस्सेवमुजमाचे । हेमोतम । आधा कर्म्मोपाहार जीमोतवन्तो  
वाउयवन्त्वापो । पाउपा कम्मज्जीने । उल्लापणकोपासिद्धितववन्त्वापो । सात कम्मो प्रकृति विविठं मंचये वीणावुवा । भविष्यवपवदाधीपव  
रेइ । इउवदनं वधिं इतुवा कम्मने सुधा ताचेवधिं किम रेयमो गंठं वीधीवे । ज्ञानपसुपरियट्ठ । वावत् सुसारनेविदे भनतोवार ममै । सेवेवइ व वा  
दपाहाकस्सेवं भंयमाचे जावपसुपरियट्ठ । ते एव एव हेमवन् इमकं वावत् पाधाकर्म्मोपाहार जीमोतवन्तो साहु वावत् चतुर्गतिव संसारनेविदे  
चनंतोवारममै इतिमत्त उत्तर । बोधमा आहाकस्सेवं मुजमाचेपाताएवपववमत्त । हेमोतम । पाधाकर्म्मोपाहार जीमोतवन्तोसाहु पाधावेकरो वारि

માળે છાડયથજ્ઞાનું સત્તકમ્મપગઢીને જાત્ર શુણપરિયહહ ! ફાસુસણિજ્ઞાનતે । નુજમાણેકિર્યધહ ? ૪ જાવ  
 ઉગ્રચિનાડ ? ગોયમા ! ફાસુસણિજ્ઞા નુજમાણ છાડયથજ્ઞાનું સત્તકમ્મપગઢીને ઘણિયથધણયઠાઈ સિદ્ધિ  
 વ્રધણયઠાનું પકરેહ , જહા સેસવુઢેણ , જયર છાડયથવળં કમ્મ સિયયથદ્ધ સિયનોયથદ્ધ સેસ તહેય જાવ વી  
 દુયયદ્ધ ! સેઢેળેળેણં જાય ઘીહયયદ્ધ ? ગોયમા ! ફાસુસણિજ્ઞા નુજમાણે સમણેનિગ્ગંથે ષ્યાયાઁ ઘમ્મં નાદક્કા

७  
८  
९  
१०  
११  
१२  
१३  
१४  
१५  
१६  
१७  
१८  
१९  
२०  
२१  
२२  
२३  
२४  
२५  
२६  
२७  
२८  
२९  
३०  
३१  
३२  
३३  
३४  
३५  
३६  
३७  
३८  
३९  
४०  
४१  
४२  
४३  
४४  
४५  
४६  
४७  
४८  
४९  
५०  
५१  
५२  
५३  
५४  
५५  
५६  
५७  
५८  
५९  
६०  
६१  
६२  
६३  
६४  
६५  
६६  
६७  
६८  
६९  
७०  
७१  
७२  
७३  
७४  
७५  
७६  
७७  
७८  
७९  
८०  
८१  
८२  
८३  
८४  
८५  
८६  
८७  
८८  
८९  
९०  
९१  
९२  
९३  
९४  
९५  
९६  
९७  
९८  
९९  
१००

अपेक्षया यद्वास्तव्यपेक्षया ॥ त्विच्छिकाइति ॥ अनुनागयन्त्यापेक्षया निचसावस्थापेक्षया ॥ चिठयचिकाइति ॥ प्रदेक्षयन्त्यापेक्षया निचानना  
पेक्षयावेति ॥ आयापति ॥ आत्मना चमैवादिचपत्त ॥ सुद्विच्छिकायनाकसइति ॥ ना पेक्षत ना मुकम्पत इत्यथ आभाकर्म विपथ  
य ग्रामुक्तेयवीपमिति ॥ ग्रामुक्तेयवीपयूय चमत्तरसूत्रे सद्यारव्यतिप्रवममुक्त तच्च कर्मको ॥ स्थिरतया प्रलोठने सति प्रवती त्यस्थिरसूत्र तच्च ॥ अ  
चिरति ॥ अस्याञ्जु इयं सोष्टादि प्रलोठति परिवर्तते ॥ आत्माचिन्ताया स्थिर कर्म तस्य जीयप्रदेक्षेन्या ॥ प्रतिसमयवसनेना स्थिरत्वात् प्रलोठ

मइ, आयाए धम्म अणहक्कममाणे पुढाधिकाय अग्रकखइ, जाव तसकाय अग्रकखइ, जेसिपियणजी  
वाण सरीराइ आहारइ तेविजीवे अग्रकखइ सेतणठेणजाववीद्वयइ ॥ सेणुण भत ! अग्रिरे पलोहइ नो  
ग्रिरेपलोहइ अग्रिरेजजइ नोग्रिरेजजइ सासए वालए घालियस असासय सासए पक्रिए पक्रियस असा  
सय ? हता गीयमा ! अग्रिरेपलोहइ जाव पक्रियत असासय सेव भते नतेसि जाव विहरइ ॥ पढम

तरे ॥ गायमा यामूरसद्विज्जमुज्जमावे ॥ हेमत्तम ! आसूखवाच पाव ॥ रकरता कोमतावका साधु ॥ समवेचिन्ते ॥ अमर निरंश ॥ आयाएचमनाइकम  
इ ॥ पाकवेचरे धम्मचारिण दुतधम पक्कवन्तो ॥ आवाएचमंशवचरकममापेठुनिकायपक्कइ ॥ पाक्कावे दुतचारिणरूपपमं पनइवन करतावको,  
इविचोकावो ठवापावे जीवमोरवाकरे ॥ जावतमकावपक्कइ ॥ यावत् पक्कावो होदिवादिक् जीवमी रवाकरे ॥ असिपिक्कलोवाचसरौराएवा  
भारेइ तेविजोवेपक्कइ ॥ वेइमा पवि कपन पक्कावार्कभारे, जीवना यदोरजो पाव्वाकरे तेपवि जीवमोरवाकरे विनाये नही ॥ सेतेचइ चोवीववी  
इववति ॥ ते तेच पवे हेमत्तम ! इमकंशं मायत् सद्यार पारपामे मोयकाय इवइ ॥ सेवभतेअग्रिरेपकाइइ ओहिएपकोइइ अग्रिरेमखइ ॥ पावे सं  
नार नंवनकका ते कर्मने पम्भिर पवेकाय तेकईवे—ते भिवे हेममवन् ॥ अग्रिरइव्य सोव्वादि प्रवत्ते यकटे अग्राम् धावाय तथा पक्काव चितानेवि  
चस्थिर कम्मजीव प्रदेशो समवे २ चवे पाव्वाको विनादि रमैयको पक्कावमचिगनेविदे कसएइत जीवना उपयाग च्चैनको अग्रिरे अग्रिरेभाजनम

ति १ यत्रोदयनिरुद्धादियदिनामैः परिवर्तते स्थिर क्षिणादिनामोदति स्थिरात्मविनायानु स्थिराणीय कर्मोद्येपि तस्य व्यस्थितत्वा द्यासी  
प्रमोदति, उपयोगतत्त्वनाया अपरिवर्तते तथा स्थिरं मरुत्सभाव मृषादि मन्यते विदुषमपि अप्यात्मविनाया मस्थिर कर्मं तद्वन्व्यत व्यपेति  
तथा त्पिद ममगुर मफःदानादि न प्रज्यते अप्यात्मविनाया स्थिरोद्योव सुख न प्रज्यते आशुतत्वादिति जीवमस्ताया दिवमाह ॥ सासयवालेए  
ति ५ यामको व्यवहारतः त्रिभु निययतो ऽसयतो कीयाः सच ग्राह्यतो द्रव्यत्वात् ॥ बालियतति ॥ इवै कर्मत्ययस्य स्वायिकत्वा द्वातस्व व्यवहारतः  
दिद्वत्त्वं निययत सत्यमयतस्य तद्वा आशुत पर्यायत्वादिति एव यकितसूत्रमपि नवर पकितो व्यवहारए आरुको कीयाः निययतस्तु सयत ॥  
इति प्रथममतेनयनः ५ ८ ॥ अमन्तारोदुगे ऽस्थिर कर्मत्सुत कर्मोदियुष कुलीयिका विप्रतिपद्यते एत सन्निप्रतिपत्तिनिरावप्रति

सए नयमो उदेसो सम्मप्तो ॥ १ ॥ अशुउल्यियाण भते ! एव माइस्कंति जाव पकवति ,  
एव स्तु वलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे अुनिज्जिणे , दोपरमाणुपोगगला एगयनं न साहणति ,  
कम्हा दोपरमाणुपोगगलाण गल्य सिणेइकाए तम्हा दोपरमाणुपोगगला एगयनं न साहणति , तिसिपर

भाव द्वादितेभाडे, पध्दारमभितानविये दस्थिरकमभाजै अभजन सभाव साइमइ मसाकारिइ तेमभाजै, पध्दारमभितानेविये बीरभावैमहो ग्राह्यत  
पमाना निययो पमयतभाव ममासता व्यवहारको समएणइए पंडितकर्ममसासयं । व्यवहारको साहक ग्राह्यता तथा निययो ग्राह्यताजीव द्रव्यको वासकभाव  
सयको मयतभाव ममासता इतिप्रय कतर । इता मायमा पविरेपमाइइकाव यद्वियत मसासयं । इगीतम । पविर पकटे वायव पकितपक् मग्रास  
त इममवकइवो । सेवमते र ति आवविहर । तद्वति ईमगवन् ! तुम्हेकसुं तेसर्व सव्ये पव्यवानको वायव वदोने विहरैरमसवकइवा । पठमसयस्य  
पममोउदेसामभतो । एवदिना मयकना मयमो उदेयो द्वायो सिप्या । ८ । पकटवियवाभतेएवमाइकति । नयमे उदेये प

पादनाय स्या सङ्गस्या बलवताति यदुक्त तत्प्रतिपादनाय यक्ष्मोद्देशको व्याख्यायते सप्रच सूत्र ॥ अत्रोक्त्यायमित्यादि ॥ बलमात्रे च  
 पमिति ॥ बल त्वन्मां बलित बलता तेन बलितकार्योक्त्यायान् वर्तमानस्य चातीततया व्यपदेशु मन्त्राख्या देव मन्त्रप्रति वाच्यमिति ॥ एगयते  
 वमाइकति ॥ एकत एकत्वेन एकस्त्वपत्तेत्यर्थः न सह्यते न सहती मितिती स्याता ॥ अत्यसिद्धेकाएति ॥ क्षेत्रपयवराशि नोस्ति सूत्रम्

माणुपोगला एगयते साहणति, कम्हा तिखिपरमाणुपोगला एगयते साहणति, तिखिपरमाणुपोगला  
 ण ध्यत्य सिणेहकाए तम्हा तिखिपरमाणुपोगला एगयते साहणति, ते जिज्जमाणा दुहायि तिहायि क  
 जाति, दुहाकिज्जमाणा एगयते दिव्हं परमाणुपोगले नवइ एगयते दिव्हं परमाणुपोगले नवइ,

बिबरभमिवि कुतोर्बो प्रवत्ते तेमाटे कुतोर्बोना चबिकार कइहे—पयतीर्बो कुतोर्बो बं बालासकारे हेभगवन् । इम सामाख्यो कइ । जावएवपक्व  
 ति । दावत् इम मेद्वीकइ । एववहुइलमाचैबहिए जावबिज्जारिज्जमाचैपबिज्जिबे । इमनिये यलवामाचा खेकमं ते यच्चू नवइवी, वलमानकासने य  
 तीतज्जामपवे बजोनसकीवे, जावत् बिबरवामाचा निजया नवइवी, एतसे वला ते यचो कइवी निजया ते निरवराकइवी, यचो पयतीर्बो इमकइ  
 दावमाहुपागमताएनयपाचइवति । बेपरमाचू पुइठ एकचपवे स्खपवे इत्यथ, मिहित नइवे भेदानवाव । कम्हादापरमाधुपोगलाएनयचोच  
 माइवति । ध्वी बचो एतल बेपरमाचू पुइठ एकठा स्खपवे जिम नमिये ते कइहे—दीव्हंपरमाधुपोगलाच बलिसिद्धिवाए । वे परमाचू पुइठ  
 न नही खइ पयवीयनो रागिनहो सूखपवांभवी, तोन प्रसुखने माये खेइ पयवीयनो रागिणे खूनपवांभो । तम्हादापरमाधु पोगमलाएनयचोचसाइवति ।  
 तमाटे बेपरमाच पुइठ एकठा नमिठ स्खपवज्जवाव इत्यथ । तिचि परमाच पागमनाएनयचोसाइवति । तोन परमाच पुइठ एकचपवे मिये स्ख  
 पवेवाव । कम्हातिचिपरमाचपागमता । खीमाटे तोन परमाच पुइठ । एनयथासाइवति । एकचपवे मिये स्खपवेवेवाय, ते कारव कइहे—तिचि  
 पागमनाचैपबिज्जिबेइवाए । तोन परमाच पुइठने खेइपयवीयनो रागि वाइएपवांभवी । तम्हातिचिपरमाधुपागमता एनयचोसाइवति । तेमाटे





विरूपयति च मन्मथप्रचय इतो नेहो पयति रत्यये मयेयनीया एयं सर्वेप्रापीति' तथा ॥ प्रासिद्धमासीत् प्रासाधमासति ॥ निरुज्यमानयान्द्रव्या  
 श्रमाया यतमानममप्यया तिमूढस्वेन ध्वजहारानुगत्यासिद्धिः ॥ प्रासाधमयविविक्तकृतं चरति ॥ इह क्षम्यत्यस्य प्रावार्यत्वात् विभक्तिपरिभाषा  
 प्रासाधमप्यतिशये ॥ प्राप्तिपति ॥ विग्रहा सती प्राया प्रवति प्रतिपाद्यस्या प्रियेये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति ॥ अत्रासठयप्रासति ॥ अत्रापमा  
 यत्त माया प्रापना त्वयै पदाय तदनुपगमात् ॥ नोयमुप्रासठति ॥ मायमायाया सस्या अमन्युपगमादिति तथा ॥ पुष्टिकिरित्यादि ॥ किं  
 या वादित्यादिका मा याव यत्रिपत्त तावत् ॥ दुर्गाति ॥ दुर्गुहः ॥ क्षिपमाका क्षिया ननु का नदुःसङ्गतः क्षियासमयव्यतिक्रान्त  
 च क्षियायाः क्षियमावताव्यतिक्रमे च क्ता सती क्षियादुःखेति इदमपि तन्मतमाश्रमेव भिरुपपत्तिक मयवा पूव क्षिया दुःखाभन्यासात् क्षिय

त्रामा अत्रासठेण सात्रासा णो खलु सात्रासठे जासा पुष्टिकिरिया दुस्का कज्जमाणी किरिया अदुस्का किं  
 रिया समययीति कृतचण कजा किरिया दुस्का जासा पुष्टिकिरिया दुस्का कज्जमाणा किरिया अदुस्का किं  
 रिया समययीति कृतचण कजा किरिया दुस्का साकि करणत्वं दुस्का अकरणत्वेण सा दुस्का

भाषा ते भाषा इव करोये । आमायिंभामामाभा । एते यनो तेहने जेयोथा पङ्क्तो भाषा ते भाषा करोये । भासिज्जमासीमासाधमासा । बाहोतो  
 भासा करोय तेभाषा यमाषा करोये । भासाममववोतिहत्तचभासिवाभासा । भाषा समये व्यतिवर्तितये बोहो जेते भाषा करोये । साकिमास योमा  
 मा । ते भू भाषकनो भाषा । यमास यामाभा । यज्जवा च यामायकनो भाषा इतिप्रश्न । यमास योर्धभाभासा । तिवारे तेहको उत्तर यग्गतोर्धो इम  
 करो ते यभाषकनो भाषा करोये । यानुयमाभासमाभासा । पङ्क्तिहो गिये तेभाषकनो भाषा नकरोये, यसो यग्गयोर्धो इमकरो । पुष्टिकिरियापुक्का ।  
 वादित्यादिजिवा आनमे मज्जाये ताम्पनी दुपुक्का हेतुवै । अज्जमासीकिरियापुक्का । अरवामासीते क्षिया अदुक्का जेतु तेहना यम्यासमाटे । किरि  
 याममपविनिर्बत्तचक्राकिरियापुक्का । क्षिया समये व्यतिवर्तित यया अपुन च वाक्कासंजारे, कोपीचको जिवा । पुक्कति । पुक्कितु करोये । आसापुष्टि

माया क्रिया नदुःखा चमत्सारात्, कृता क्रिया दुःखानुतापसमादेः ॥ करणद्वयव्यति ॥ करणमात्रित्य कर्तृकाले कुर्वतइत्यर्थः ॥ अकरणद्वयव्यति ॥  
 चक्रव भावित्य चक्रवत् इतिभावत ॥ मोक्षमुपाकरणद्वयव्यति ॥ अक्रियमात्रतु दुःखतया तस्या अभ्युपगमात् ॥ सेवयतइसिया ॥ अथ एवं पू-  
 र्णत ब्रह्म वक्ष्यं स्या दुपपन्नत्वा दस्येति, अथा अप्युचिक्तातरमसमाह ॥ अकृत्य मनागतकामायेण्या अनिर्वर्तनीयि जीवैरिति गम्यं दुःख मसा  
 तं तत्कारवदा कन्म तपा अकृत्यत्वा दवा इदमय मन्मनीयं तथा जियमायं वर्तमानकाले कृत चातीतकाले तत्क्रियेका वृत्तिमभाचकृत कालत्र  
 यवि कन्मको यन्मनियेका दकृता इकत्वा कामीवस्यो द्विर्वचनं दुःखमिति प्रकृतमेव, कोइत्याह, प्राणभूतवीवस्थाः प्राणादिवक्ष्यं चेद-प्राणाद्विनि  
 चतु प्रोक्ताः प्रूतास्तुतरव-स्मृताः । वीधाः पञ्चन्द्रियाद्येयाः शोपाः सत्त्वाद्यातीरिताः ॥ १ ॥ वयवति ॥ शुभाशुभकर्मवेदना पीकांवा वेदय त्पनुमव

पोस्वदु सा करणद्वे दुस्का सेव यत्सुसिया अकिञ्च दुस्क अफुसदुस्क अकज्जभाणकक दुस्क अकदु अकदु

किरिवादुक्का । जे पडिवा क्रिया दुखना हेत । कज्जभाणोकिरिवापदुक्का । करवाभाणो तेविवा दुखनोहेत नहो । किरिवासमयवितितवचयंक्का  
 किरिवादुक्का । क्रिया समय वितिकोवचवा, यपुन व वाक्यासकारे कोधो क्रिया दुखना हेत । साविअरवपादुक्काअवरवपादुक्का । ते क्रिया स्व व  
 रन भायो दुक्कनोहेतु अयवा अवरव भायो अवरतो दुखनो हेत । अकरवभाणसादुक्का । अवरता ते दुखनाहेत । अकसुसाकरवभाणदुक्का । नको  
 निव ते विवा अरता दुखनोहेतु । सेववन्मविसिवा अजिबदुक्का । हिवे एवं इम पुनोत्तवसु वक्तवता इवे, एयवे छपवे अयवीधा दुख । अमुसदुक्का । न  
 हो करवा दुप एतावता अरि पडंता ते दुख । अकज्जभाणवचदुक्का । अक्रियभाणकोधो दुख । अकदु । अकरोने । पाणभूयसत्ता । इहां प्राय भूत जो  
 व चस । वेडवेदोतिवतावसिया । यम अयमकम पेणना पोछापते वेदे अमुभावे एवमव्यताइवे । सत्तइमेवमतेएव । अथ ते विम एह हेमयवन् । इम  
 गावमा अचतेयवउदिया । ऐगीतम । जेमाटे ते अग्यतीर्थी । एवमाइवसति । इमकहै । जाववेदवेदतितौवत्तवसिया । बावत् यम अयमकम ये  
 वनापते अमुभावे एहो वज्जयताइवे । जेतएवमाइव । जे अग्यतीर्थी इम कहैवे-मिच्छतेएवमाइव । मिच्छा मूठा ते इम कहैवे-अपपुष गोधमा । ए

ति इत्यत्र दृश्यते सा दम्पती पपदमानस्या द्याहृष्टिकहि सवलोकौ सुखदुःखमिति यदाह-अतकितोपगम्यमेवसर्वं बिभ्रन्नानामुसुदु सजात कावम्यतानेनपयानिपाता मनुद्विपूर्वोद्गृधामिमातः ॥ १ ॥ सेहहमेयति ॥ अय कथमेतत् सदन्त । एव मन्ययूषिकोन्नत्यायेनति प्रश्नः ॥ जसुते पण्डित्यि ॥ त्यादुत्तर व्याख्यायास्य प्राग्वत् मिथ्या सैतदर्थं यदि बलदेव प्रथमसमये चसित न प्रवे तथा द्वितीयादिष्वपि तदचक्षितमेवेति न कदापनापि नने इतएव यतमानस्यापि विवक्षया अतीतत्वं नाविकृद यतश्च प्राप्तव निर्वातिमिति मनुनठध्यते यद्यो ज्यते चलितकार्योकरवा इ चनितमयेति तदयत्नं यत प्रतिष्ठत मुत्पद्यमानेषु स्वाधबोगादिवस्तु वस्त्यवकजादि वस्तु आद्यावते स्वकार्यं न करो त्सेवा सत्त्वा इतो यदत्य ममपचनितकार्ये विवक्षित परेव तदाद्यममयचसित यदि मकरोति तदा कश्च दोषो न कारवानां स्वस्वकार्योकरवस्तुजावत्वादिति यद्योक्तं द्वी परमाणु न मंडम्येते मूलतया खेदाभावा, तदयुक्तं मेकस्यापि परमाणो कश्चसजवा ह्वाहपुटलस्य सृष्टतत्वेन तैरवा न्युपपमाव यत उक्तं ॥ ति

पाणभूयजीत्र सप्तविंशत वेदति त्रिचक्षुसिया, से कहमेय जते ! एव ? गीयमा ! जसु ते अक्षुउत्थिया एव मादरकति जाय येदण वेदति वसुसुसिया, जते एव माहसु मिच्छते एव स्याहसु, अह पुण गीयमा ! एव मादरकामि १, एव खलु चठमाणे चलिण जाव णिज्जरिज्जामाणे णिज्जिखो, दोपरमाणुपोगालाएगयउ

वदातिपामि । १ प प वेतीतम । इम कश्च च मामाकरो । एवंउत्तरवकमावेचकिण । इम निवे वसुवामाद्यो ते वल्लू कश्चोवे प्रथमो अपेचावे । जाव बिज्जरिज्जामाणेदिज्जिबे । यावद् मिज्जरवामाया ते निजरो कसु तिम जायवा । दोपरमाणुपोगालाएवसजवासावचंति । वेपरमाणु पुइव एकठा मिसे वसुदापरमाणुपोगालाएवसजवासावचंति । सां माटे दापरमाणु पइव एकठामिसे । दोरुपरमाणु पायज्जावचसिधिवेइकाए । दोय परमाणु पुइवने वे वेइकायपर्याव नो रामि एकको परमाणुने गीत १ उज्ज २ खिण्ड ३ कच ४ एवार अगमादिवा अविरोधो समीदीयइवे एकवार तिबारे वेवेने प पि येइरामिसे ए परमतोनी अनुवति यज्जा यथथा वेपरमाणु कचपचे एकठामिसे । तथा दापरमाणुपोगालाएवसजवासावचंति । तेमाटे वे

वि परमायु पोमसा एग्यटं साहसति तेनित्जमाकादुहावितिहायिकज्याति युहाकज्जमाकाएगयटंविक्खेति ॥ अनेन हि सादुपुद्गसस्य ससतत्त्वान्नुप  
 गमन तस्य खेहोन्नुपगतएवे त्यतः कथं परमाखोः खेहाभावेन सङ्गताभावइति ? यथाऽन्त मेकत सार्धं एकत सादइति, एतद प्यथाऽ परमाखो  
 रदुर्गकरवे परमाबुत्वानावप्रसयान् तथा यदुक्त पण्यपुद्गसाः सइताः कम्मंतया प्रवन्ति, तद प्यसङ्गत कम्मंतो मन्तपरमाबुतया नन्तस्सन्धरूपत्वा  
 त्यथादुक्तस्य च स्सन्धमात्रत्वा तथा कम्मंतवीवावरबसमाव भिय्यसे, तच्च कर्त्त पण्यपरमाबुत्सन्धमात्ररूप सवसस्यातप्रदेशात्मक जीव माट्टबुयादि  
 ति ? तथा यदुक्त कम्मंतं सासत्तं तद प्यसमीचीनं कम्मंतः सासत्तत्वे सयोपववमाद्याभावन ज्ञानादीना ज्ञाने कत्कर्त्तस्य चाभावाप्रसङ्गाद् दृश्येतेष ज्ञाना  
 दिहानियुद्धी तथा यदुक्त कम्मंतं सदा बीकते अपधीयतेवेति, तद प्येकातसासत्तत्वे नो पपद्यतइति यद्योक्त ज्ञापकात्पूर्वं ज्ञाया तदेतत्त्वा तदपु  
 क्तमेवो पचारिकत्वा रुपचारस्स च तत्त्वतो ऽवस्तुत्वा त्किंचो पचार सात्त्विके वस्तुनि सति प्रवतीति तात्त्विकी ज्ञायात्की तिक्खिं यद्योक्तं ज्ञाय

माका ज्ञानाया वर्तमानसमयस्या व्यावहारिकत्वा तदप्यसम्यक् वर्तमानसमयस्यै वास्तव्येन व्यवहाराङ्गत्वा इतीतामागतयोद्य विनष्टानुत्पन्नतया  
 सत्त्वेन व्यवहारानङ्गत्वादिति यद्योक्तं, ज्ञायासमयेत्यादि तदप्यसाधु साध्यभावाभावाया अभावे ज्ञायासमय इत्यस्या प्यमिलापस्या भावप्रसङ्गात्  
 यद्य प्रतिपाद्यास्या निषये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति हेतुः सो नैकान्तिकः करारिबेष्टाना मजिषेयप्रतिपादकत्वे सत्यपि मायात्वाच्चिदे तथा यदुक्त  
 मज्ञापकस्यमादेति तदसङ्गततर नेवदि सिद्धस्या चेत्तत्त्वत्वा सायाप्राप्तिप्रसङ्गइति एवं ज्ञियापि वर्तमानकालस्यैव युक्ता तस्यैव सत्त्वादिति य  
 दानन्त्यासाज्यासादिककारणमुक्तं तथा नैकान्तिक मज्ञायासादावपि यत काचित्सुखादिकुर्येव तथा यदुक्त मवरयत क्रिया दु खेति तदपि प्र  
 तीतिवाचित यतः करणकालस्यैव क्रिया दुःखावा सुखावा हृदयते न पुनः पूर्वं पश्चाद्वा तदसत्त्वादिति तथा यदुक्त मकिंचमित्यादि यहव्या  
 दादिमताभयथा तद प्यसाधीयो, यतो य द्यकरबादेव कम्म दु ख सुखया सा तदा विविचैहिकपारलोकिकामुष्टामाभावाप्रसङ्गः स्यात् अन्नुपप

तच्च विभिन्नपारमोक्षिकानुष्ठानं तैरपि चेति एव मेतरस्य भाषानविजिम्भित उक्तस्य वृत्ते - परतित्थियवत्तवय पढमसएदसमयस्मिठइडे । विपुप्पगी चाग्गमा मइमआयायिमासव्वा ॥ १ ॥ सद्धवमसद्धए जयावत्तारिइतिविपुप्पगे । उल्लसवायसरिखं तोअसाकतिमिच्चिठ ॥ २ ॥ सद्धते परमाओ असद्ध तममुगदि सद्धत मयमात्मनि सद्धत वेतन्य सद्धते परमाओ सद्धतं नि प्रदेयत्थ असद्धते सवगात्मनि असद्धत मकटत्वमिति ४ ॥ अइंयुगो पप्पा । पयमाइत्तामी ॥ त्वादित्तु प्रतोतायमेकति नवर ॥ दोइपरमापुपोमलाअत्थिसिखइकाएत्ति ५ एकस्यापि परमाओ ओतोअस्सिग्यसुअ इयत्ताना मयत्तरदयिकइ इयत्ताद्वय मेकवैवादिअ ततो हुयोरेपि तयोः खिगत्थमावात् ओइकायो स्येव ततच्च ती विपमसेवा त्सहन्येते, इदम्ब परमतानुवृत्तोअ नन्वया कृतावपि कृत्तव्येवम्ब सइयेते एव यदाइ - समनिदुयाइअओ महोइसमभुक्कयाइविनइरेइ । वेमायनिदुलुक्क तवेण

साहणति, कम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयन् साहणति ? दोरुह परमाणुपोग्गलाण अत्यिसिणेहकाए, तम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयन् साहणति ते जिज्जमाणा दुहा कज्जति, दुहा कज्जमाणा एगयन्ति वि परमाणुपोग्गले एगयन् परमाणुपोग्गले जवइ, तिखिपरमाणुपोग्गला एगयन् साहणति, कम्हा तिखिपरमाणुपोग्गला एगयन् साहणति ? तिरुह परमाणुपोग्गलाण अत्यिसिणेहकाए तम्हा तिखि परमाणुपोग्गला एगय

परमानं पुत्र एवमिति । ते भिन्नमात्रादुक्तमिति । त भेदात्तत्रा वेगकारे भवे । दुष्टाव्यवस्था । विश्वप्रकारे करोतावका । एवमप्यभिप्ये  
भादप्यव्यम । एकपाने पवि एक परमाधु पञ्चभवे । एवमप्येवपरमाधुप्येवमभवे । पञ्चात् वेवेपासे पवि परमाधु पुत्रल भवे । त्विष्टपरमाधुप्ये  
मन्त्रावगयपामावगति । तोन परमाधु पवि एकठामिते । वक्तानिष्टपरमाधुपायसाएवमप्येवमभवे । स्त्री माटे तोन परमाधु पञ्च एकठामिते ।  
तिनिष्टपरमाधुपायसाएवमप्येवमभवे । तोन परमाधु पुत्रलनेवे वेवपयावनी रात्रि । तन्नातिष्टपरमाधुप्येवमप्येवमभवे । ते माटे तोन  
परमाधु पञ्च एकठामिते । ते भिन्नमात्रा दुष्टावि । ते भेदात्तत्रा वेमिटे पवि । त्विष्टाव्यवस्था । त्विष्टे पवि भवे । दुष्टाव्यवस्थाएवमप्येवमभवे ।

વંધીકરણપાત્રતિ ॥ ૧ ॥ સ્વધેવિપદ્યેષસાસરુતિ ॥ ઉપજનાપદ્યિકલા દત્તવાદ ॥ સયાસમિયમિત્યાદિ ॥ પુષ્પિજાસાધમાસતિ ॥ પ્રાપ્યત્ત્વેતિ ॥ પ્રાપ્ત પ્રાપ્ત્ય પૂર્વ ન પ્રાપ્યત્ત્વેતિ ન પ્રાપ્યત્ત્વેતિ ॥ પ્રાપ્તિમાત્રીમાસતિ ॥ શ્રાવણ્યપત્તેઃ ॥ પ્રાપ્તિયાધમાસતિ ॥ શ્રાવણ્યવિયોગત્ ॥ પુષ્પિકિ

તે સાહજતિ, તે ત્રિજ્ઞમાણા દુહાવિ કહ્નતિ, દુહા કહ્નમાણા ઇગયત્ત પરમાણુપોગલે ઇગયત્ત દુપદેસિણ સ્વધે ત્રયદ્વિ, તિહા કહ્નમાણા તિહિપરમાણુપોગલા ત્રયતિ, ઇવ જાવ ત્રયારિ પચ પરમાણુપો ગલા ઇગયત્ત સાહજતિ સાહજિત્ત સાધપત્તણ કહ્નતિ, સ્વધેવિયંણ સે સ્વસાસણ સયાસમિય ઉવચ્ચિજ્ઞદ્વિય સ્વ વચ્ચિજ્ઞદ્વિય ॥ પુષ્પિ જાસા સ્વજાસા ત્રાસિજ્ઞમાણી જાસા જાસા ત્રાસાસમયવીતિક્તત્તવણ ત્રાસિયા જાસા સ્વ જાસા, જા સા પુષ્પિ જાસા સ્વજાસા ત્રાસિજ્ઞમાણી જાસા જાસા ત્રાસાસમયવીતિક્તત્તવણ ત્રાસિયા જાસા

માનુષ્યાત્ત્વે ॥ જનદે કરોતાત્ત્વજા પદ પાત્રે પરમાત્મ પુત્રકપૂર્વે ॥ દમજપાતુર્વેસિણસ્વધેમવદ ॥ એક પાત્રે રેમદેયોસ્વધ પૂર્વે ॥ તિહાકલ્પમાત્રા ॥ તોત્રે ને દે કરોતાત્ત્વજા ॥ તિહિવિપદમાત્રુપોગલેમવદ ॥ તોત્રે પરમાત્મ પુત્રકપૂર્વે ॥ એવં જાવત્તારિયંવપરમાત્રુપોગલેમવદમાત્રાત્ત્વજાતિ ॥ જન દાવત્ત વાર પરમાત્મ પુત્રકપૂર્વે એકઠા મિત્રે ॥ સાહજિત્ત ॥ મિત્રોત્રે ॥ સ્વધેવિયંણ સયાસણ ॥ સ્વધપદિ પદ્યાસતોદ્ધે, ઉપદવ પપચવ પર્ણાત્રી ॥ સવાસમિયંવવિચ્ચાત્ત્વ પવચિચ્ચાત્ત્વ ॥ એત્તજામાત્રેવ કહ્નતે—સદેવ સમયમાત્રે જપજે પુત્રકારી સ્વધે રોત્રકારી સ્વધે ॥ પુષ્પિ ॥ પર્ણિજા માસાધમાસ ॥ માયા પર્ણોત્રે તે જમાયા કહ્નતે ॥ પ્રાપ્તિમાત્રીમાસામાસ ॥ માપતાત્ત્વજાં રોત્રોત્રે તે માયા કહ્નતે ગ્રાદ્ પદ્યનો ઉપદવિત્ત જાવ તેમાટે માસાસમયવૌતિક્તત્તવમાસિજામાસાધમાસા જાસાપુષ્પિ માસા ધમાસા ॥ માયા સમય સ્વતિજાતત્ત્વજા પર્ણિ પુણ ચ વાત્ત્વાસકારે, માપિત જે માયા ધમાયા તે કહ્નતે ગ્રાદ્ પદ્યજા વિભાગી જિજ્ઞા પૂર્વે માયા તે જમાયા કહ્નતે ॥ પ્રાપ્તિમાત્રીમાસામાસ ॥ રોત્રોત્રે જે માયા તે માયાકહ્નતે ॥ માસા સ મવરોતિક્તત્તવમાસિયામાસાધમાસ ॥ માસા સમય સ્વતિજાતત્ત્વજા પર્ણિ પુણ ચ વાત્ત્વાસકારે, માપિત જે માયા તે જમાયા કહ્નતે ॥ સાંકિમાસાધમા

रियाण्डदुर्गति । परमा सूर्ये त्रिवेव नास्ती त्यसन्वादेव न दुःखा सुखापिना सा यसन्वादेव कोषं परमसानुवृत्त्या दुःखेत्सुक्तम् अज्ञानावेति यचनाम् ॥ कर्ममायोदिरियादुःखा । सन्वात् इहपि य द्रिग्यमाका क्रिया दुःखे तुल्य ना त्परमसानुवृत्तेवा न्यथा सुखापि क्रियमाकेव क्रिया मया ॥ बिरियामपवित्तिहंतपचमित्यादिदृश्य । बिषदुःखमित्यादि । अनेनच कम्मसत्ता वेदिता प्रमायसिद्धत्वा यस्य तपसि - इह यद्दयो रिष्टा प्राप्तादिविषयसुखसापनमेतयो रेकस्य दुःखसख्य यस्य मयस्ये तरलतद्विधिरेते भन्तरच सुखाव्यते कायत्वा दृष्टव दद्या सौ विक्षिप्तो हेतु सख भवति आह - ओतुवसाश्वाचं यसेविषयोवसोविवाहेव ककतकठणोपम पछोवरेकपरेकम् ॥ १ ॥ पुन रप्यन्ययुक्तान्तरमत मुपदर्शयका ॥

अज्ञासा, सा किं नासन् नासा अज्ञासन् नासा ? नासन्ना नासा सा णोखदुसा अज्ञासन् नासा । पुष्टि किं रिया अदुस्का जहा नासा तथा नाणियद्वा, किरियावि जाव करण्णेण सा दुस्का नो खलु सा अकरणन् दुस्का, सेव यत्तवसिया किम् दुस्क दुस्क फुस दुस्क कज्जमाणकक दुस्क कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्तावेदण वेदत्तिहि

भाषा । ते व भ्रायकबो भाषा । यभाषपाभाषा । यभायकबो भाषा । मासपायवामासा । भायकबो तिवाभाषा । बोवसुपमासपाभाषा । नहो न ये ते यभायकबो भाषा । पुष्टिवित्तिपायदुःखा । पहिवा क्रिया दुःखो करचकरो । अज्ञासासातवामाविषयवित्तिपायि । विन भावाकबो तिम व इवो विवायवि । जावकरचपायदुःखा । यावत् करचवो ते दुःख । बोवसुपायकरचपादुःखा । नहो निवे विवायिया यकरचवो दुःख । सेववत्तव विवा । इम वत्तवता इवे । बिषदुःखमुदुःख । कावो दुःख सय्यो दुःख । कज्जमावकदुःखकट्टु । करवाभाषो बोधोदुस इम करोने । पावभूतजीव ममावेदववेदितिवत्तवमिया । माव भूत जीव सख वेदना वेदे इम वत्तवताइवे । पचसत्तिवाचभतेएवमाइएवति ४ आव । वको पचयुवित्तिरनो मत करेदे - पचतीर्णी च वाक्कावकारे, वेमववम् । इम कवै सामावबो यावत् भेदकरी कवैदे - एवंकणुणेवोवे । इम निवे एवजीव । एगेवसमएव याविरियापोपचरेर तत्रवा । एव समवे सो विविवा करेदे ते कवैदे - इरियावविदेव सपरारव । जावो ते विवव पचा मागते इवो पच कवोवे ते

अकुत्सित्यावन्तित्यादि ॥ तत्र ॥ इरियावर्धियंति ॥ इर्या यमन तद्विषयः पन्था मीर्ण ईर्यापण स्तत्र भ्रता ऐर्यापयित्री लेवसकाययोगप्रत्यय ॥ क  
 म्भान्यइत्यय ॥ सपराइयचरति ॥ सुम्यरेति परिच्यमति प्राची भवे एभि रिति सुम्यरायाः कयाया का एप्रत्यया या सा साम्यरायित्री कयायये  
 पुनः कनकम्यइत्ययः ॥ परतुल्ययवतवुभेयवृत्ति ॥ इहयूने धन्ययुषिष्ककण्ड स्वयमुद्यारबीय, यन्मयोरवजयेका स्तिक्षितत्वा तस्य तवेद-वं सुमय  
 सपराइय पकरेइ त समय इरियावर्धियं पकरेइ इरियावर्धियापकरयाए सपराइय पकरेइ सपराइयपकरयाए इरियावर्धियं पकरेइ यव ससु  
 यने वावे एतेक समएक होकिरिपाठ पकरेइ त० इरियावर्धियं सपराइययेति सुसमपवतवुयाए वेयवुं, यूत्र नितिगम्य, सावर्ध-सेकइमेय

यससृत्सिया । स्युसुडतिययाण जते ! एवमाइस्कति जाय एवसलु एगेजीवे एगेणसमएण दोकिरियासुपकरेइ  
 तजहा-ठरियायहिपच सपराइयच, जसमय इरियावर्धिय पकरेइ तसमयं सपराइय पकरेइ, जसमय  
 सपराइयं पकरेइ तसमय इरियायहिप पकरेइ, इरियायहिप पकरणयाए सपराइय पकरेइ, सपराइय  
 पकरणयाए इरियावर्धिय पकरेइ । एवसलु एगेजीवे एगेणसमएण दोकिरियासु पकरेइ तजहा-इरियावर्धि

इने दिवैद्वेते ईर्यापयित्री ककीवे, केवळ भावमाग प्रत्ययकमव इत्यथ, भवमविने परिच्यमे प्राचा इत्येवरेने ते सपराव कयाव तेवको इह तेसपरायि  
 की ककीवे, कयाययेतु कममथ इत्यर्थ । असमयइरियावर्धियपकरेइ । जे समयनेविने इरियावर्धी जियाकर् । ते समयनेविने स  
 पराविकी कियाकर् । जसमयसपराइयपकरेइ । जे समयनेविने सपरायिकीकियाकर् । तसमयइरियावर्धियपकरेइ । ते समयनेविने इरियावर्धीजिया क  
 रे । इरियावर्धियपकरयाए सपराइयपकरेइ । इरियावर्धीकिया करतोयका सपरायिकी कियाकर् । सपराइयपकरयाए । सपरायिकी किया करतो  
 वका । इरियावर्धियपकरेइ । इरियावर्धी किया करे । एवससुएगेजीवे । इम निने एवजीव । एगेणसमएकदोकिरियाभापकरेइ तजहा । एक समये का  
 वेकिया मते करे तेकरीवे-इरियावर्धिय सपराइयच २ । इरियावर्धीजिया यपुन सपरायिकी किया यपुन । सेकइमेयभतेएव । ते किसे प्रकारे एपर्य



प्रत ? यय गीयमा । ज्ञुतेष्वडस्त्रियास्यमाह्वसति ४ जावसपराहयच जेतैजवमाहसु मिच्छातेएवमाहसु अहपुण गीयमा । एवमाह्वसामि ४ एवपलुणगेजीदेयगेवसमएव युगकिरियपकरव तलहा इत्यादि पूर्वोक्तासुरवा ज्येयमिति मिध्यास्व चास्येवं-येर्यायिबीजिया अकपायायोदय प्रनवे तरातु कपायोदयप्रमवेति कच मेवस्यैकदा तयो सम्भवो विरोधादिति अनन्तरं जियोष्ठा जियावतां पोत्पादो प्रवती त्युत्पादविरहप्र

यच १ सपराहयच २ । सेकहमेय जते ! एव ? गीयमा ! जसते अक्षुडत्तिया एवमाह्वसति तच्चेव जाव जेतै एवमाहसु मिच्छातेएवमाहसु । अहपुण गीयमा ! एवखलु एगे जीवे एगसमए एकु किरिय पकरेइ ससमयवत्तसुयाए नेयसु, जाव हरियावहिंय सपराह्वयवा ॥ निरयगईण जते ! केनइयकाल

हेमयसन् ! इतिप्रयु उतर । यावना जकते पकठजिया । हेमोतम । जेमाट अन्वतोयी । एवमाह्वसति । इमकई । तचेवकावलेतेएवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु । तिनहीज कइवा मायसु जिवे इमकक्षा मिखा भूडा तिवे इमकक्षा ते जिम हरियावना सवयाय प्रमवई धन सपराविकजी कपाव प्रम वकै ते एके समवे पकठौ जिम जयजे परिरोष । अहपुव मोबमा एवमाह्वसामि ४ एवंखलुएगे । इू खसो हेमोतम । इम कइसु इम निये एक । जीवे ए गसमवेएव किरियजरेइ ससमयवत्तसुयाए नेयसु । जीव एवे समये एक जिया वरे ते कइजे-जरियावही सववा सपराविको जे समयनेविदे हरि यावको बिदाजरे ते सनबनविदे सपराविको जिया मकरे, जे समयनेविदे सपराविको जिया मकरे, पूर्वोक्त अनुसारै पोताना सासननो वल्लभता कइवो । जाव हरियावहिंवा सपराह्ववा बिरयगइमते केवइयकासविरहियालपणाएकपक्षता गावमा अइजेएव समये छको सेवधाममुहुना एववत्त तोपव भावियव बिरयसेस सेवमते २ ति कावबिहर । बावत् हरियावही सववा सपराविको जिया एवकरे मोजीमकरे, य नतरे बिदा कइवो ते जियावतनो उत्पादइये, ते उत्पाद विरहप्रकपणावाजे कइजे-जरकगतिनेविदे जेभगवन् । केतनोकाव विरह पतरकास छप जसमाजस कक्षा इतिप्रयु हेमोतम । जरकगतिनेविदे छपकपणाविरह जयजे एक एकसमय उरजटको यारहमुहुना कइवो, इम कइवुंति जीवनो

रूपवामाह ॥ निरपमइत्यादि ॥ यकृतीपयति ॥ व्युत्क्रान्ति जीवना मुत्याह सादये पद प्रकरव व्युत्क्रान्तिपद तच्च प्रज्ञापनायां पद तथा यत्ने  
 क्षत यत्नं त्रुष्टम् - यत्नान्त्रिपतिपंगतो मनुष्यगती देवगती बोत्कपेती द्वादश मुद्रातो अपम्यत सत्वेकसमयउत्प्राह विरहइति, तथा - यत्नवीसहं  
 मुद्रता १ मत्तप्रहोदत २ तदपपकरस ३ । मासोय ४ दाय ५ बतरो ६ कामासा ७ विरहकालोठ ८ ॥ १ ॥ उक्तीसोरयबाइस्तु सहायुजकठेजयसम  
 थ । मर्मवयउवहव सहायुजसुरवरतुगा ॥ २ ॥ साबैय-एगोयदोयतिजिय सकमसहायमसमएव । एववप्यतेइया उवहतावियमेव ॥ १ ॥ तिर्यंग  
 तोच विरहकालो यया-निकमुद्रतोविनलि वियावसमुच्चिभाकयतहेव । बारसमुद्रतमझे उक्तीसंजइकठेसमठ ॥ १ ॥ एकेन्द्रियाबातु विरहएवना  
 स्ति मनुष्यपतीतु-बारसमुद्रतमझे मनुद्रतसमुच्चिमसुबतवीसं । उक्तीसविरहकालो दोसुवियप्रइकठेसमठ ॥ १ ॥ देवमतीतु-मनसवककोइसोइ क्तीसा  
 वेबतवीसमुद्रतातु । उक्तीसविरहकालो पंचसुविकइकठेसमठ ॥ १ ॥ नवदिवखीसमुद्रता ३ बारसवसवेवदियमुद्रताठ ४ । बावीसाअहंविप ५ पक  
 मास ६ अवीह ७ दिवससय ८ ॥ २ ॥ सकेज्जमासकाय ८ यावपसु १० तद्वारव ११ दुर १२ वासा । सकेज्जाविकेया मेविल्लेसुपठेवोक्क ॥ ३ ॥  
 हेतुमिवासवयाहं मक्किवइत्साइंदवदिमसक्का । संकज्जाविकेया जहासठंयतीवुंयि ॥ ४ ॥ पसिपाअससमानो उक्तीसोइोइविरहकालोच । विव

विरहिया उद्यवाएण पक्खता ? गोयमा ! जह्मणेण एक्कसमय , उक्कीसेण दारसमुज्जता , एव यक्कतीपय

अपक्का तेपवतो ज पट प्रकरव व्युत्क्रान्तिपद पयववागा जहापद तेइवो जाववा तवाव सेसतयवप्रइथ, पचेइव तियेव यतिनेत्रिवै मनुष्यगतिनेविये  
 सेगतिनेविये उरज्जटवो वारव सुवुत जक्कवो एव समय, तथा रज्जमभा पाविदेई यत्नवीस मुद्रता १ सात अहोरात्रि २ पनरव अहोरात्रि ३ मास ४ एव  
 इवमास ५ बारमास ६ ज्जमास ७ विरहकास उरज्जटा जयववो एव समय जाववा इमणीज यविवाना विरह जाववा, यनेसपजवा यविवानो सक्का जववये  
 शय तीम उरज्जटवो सक्काता असक्काता यववा पचि इमज तिवचम तिवेविये विरहकास भिय मुद्रते । विमसिदिवायसमुच्चिमायय । तइव, बारसमुद्रत  
 यजे उवोस जइयसोसमपी, एकेद्रीने विरहकासज्ज मही इत्थादि पयववावो सव जइया, तइति हेममवन् । एवमे कम्पं तेसव सत्तवे भववानो यो यावत्

[illegible]

ज्ञाणि यस्तु निरयसेस, सेव जते जेतंति जाव विहरद् ॥ पठमसए दसमो उद्देसो सम्मप्तो ॥ १० ॥  
 जसांसददणविय १ पुढावि २ दिय ३ झणउलिय ४ जासाय ५ । देयायचमरषचा ७ समय ८ खित्त ९  
 ल्यिकाय १० यीयसए ॥ १ ॥ तेणकालेण तेणसमएण रायगिहेनामनगरे होल्या, यखण, सामीसमोसढे,

[illegible]

वत्प्रतीक्यते तप्यापि तदुच्छ्वासदीर्घां साक्षाद्भुपसन्नाम्नीवच्छरीरस्यैव निरुच्छ्वासादेरपि ब्रह्मविद्वद्भिरना त्पुच्छिष्याविपूश्चासादिविषया श्रद्धा  
स्यादिति तन्निरासाय तेषां मुच्छ्वासादिवैक मल्ली स्येतस्या यमप्रमादप्रसिद्धस्य प्रवर्तनपरमिदं युक्तं भवगन्तव्यमिति उच्छ्वासा दधिकारा ज्ञीवादि

परिसानिग्गया धम्मोकाहिंसे, पन्निगयापरिसा । तेणकालेण तेणसमएण जेठेस्यतेआसी जाव पज्जुआसमाणे  
एवययासी, जेइमे जंते ! येइदिया तेइदिया चउरिदिया पचेदिया जीया एएसिण स्याणामया पाणामया  
उत्सासया निस्सासया जाणामो पासामो जेइमे पुढविकाइया जाव वणफइकाइया एगिदिया जीया एए  
सिणं स्याणामया पाणामया उत्सासया निस्सासया जजाणामो जपासामो, एएसिण जंते ! जीया स्याणम

धम्मावहिंसा । द्विविध धम्म प्रज्ञाया ज्ञाना । परिसापत्तिगया तेजकालेण तेजसमएव । धम्म सांभलीभेयवसा पाखी बली वरेसवा मनुष्य इत्यर्थ, तेषासने  
विये ते समयनेदिये । जेठेपतेवासी जावपज्जुशासमावे । वणां यिण यावत् भगवत् शोमहावीरसामो प्रते सेजतावका पयुंपासना करतावका । ए  
ववसासी । इन जइता युवा । जेमिमते वेरदिया ते इदिया चउरिदिया पंचिदियाकोया । जे एव हेमयवत् । अयन रसन बेरद्रीहै जेइने ते वे  
इन्ने, अयन रसन घाव तीनइन्नेहै जेइने ते तेरिन्ने, अयन रसन घाव बहुत बारइन्नेहै जेइने, अयन रसन घाव बहुत जोष एपांष इन्नेहै जेइने ते प  
वेइ । पाचामवा पाचामवा जसासंवा जोसासंवा जाबानीपासामो जेमिपुढविकाइया जाववणफइकाइया एगिदियाकोया । पाचम पाचम ते भीत  
र सामासास जेबां जमास भीतास ते बाहिरां सस जसास जेबां जमास पाचाम एपदमो पर्वय जसास पाचाम एपदमो पयाव नोसास, तेइ  
जावत् हेसूई एतले वस जोवनो सासोसास जावत् हेसूई, जे पुर्विवोकाविक पन्नाविक तेजकाविक जावत् वनसतोकाविक एके  
द्रीजोवने जापवि एइनेत्रिये पागमादि प्रमाचे करो जोष पचानो प्रतीति जज्जेइ ते पवि । एएसिण पाचामवा उत्सासया विसासवा  
पचाचामा जपासामो । एइनो भीतर सासहै ते भीतर जसासहै ते बाहिर सासहै ते बाहिर नोसासहै ते नजानुं नदेसुं । एएवमतेजोवा पाच

पु पच्यन्ति पदे पु श्यामदिद्रव्याणां स्वरूपनिर्देशाय प्रसप्यताम् । विष्णुप्रतीयेत्यपि । किमित्यस्य सामान्यनिर्देशात्वा त्वाभि कि विचानि  
द्रव्याणीत्यर्थः । प्राकारगमोमेव्येति । प्राकारनायाग्रष्टविधितमाहारपदोक्तसूत्रपदति रिवाच्येत्यर्थः , साचेय-दुवयाइतियगांजावपववका

तिया पाणमतिथा उस्ससतिथा ? हुता गीयमा ! एणयिण जीवा श्याणमतिथा पाणमतिथा  
उम्ममतिथा निस्ससतिथा , किण न्ते ! एतेजीवा श्याण० पाण० उस्स० निस्स० ? गीयमा ! दध्दणश्रुणत  
रममताइ फासमताइ श्याणमतिथा पाणमतिथा उस्ससतिथा कालंश्रुखयरिठ्ठयाइ , जायठवसुमताइ गधमताइ  
था पाणमतिथा उस्ससतिथा निस्ससतिथा ताइ कि एणवक्खाइ श्याणमतिथा पाणमतिथा उस्ससतिथा नि  
मतिथा पाणमतिथा उम्ममतिथा ? नीयतिथा । तेमाटे एव हेमववन् । जोव भीतर सासवे भीतर कसासवे बाहिर सासवे बाहिर मोसासवे  
इतिवत् । इतागायमा । इगीतम । एतेविचजीवा पाचमतिथा । एवविष्वादिक्क वाक्काव्वाइरे, जोव भीतरसासवे । पाणमतिथा कससतिथा जोस  
पद नानान्य निर्देशपक्कांजी विवादिक्का प्रकारमाद्रव्य समयवन् । पृथिव्यादि एवेंद्रोणीव भीतर सासवे भीतर कसासवे बाहिर सासवे बाहिर  
मोमानवये इतिवत् उत्तर । मायमा दम्भपाचपक्कतपेसिवाइस्वमाइ । हेगीतम । द्रव्यदी धर्मतपेयेगी पणमतपुइसद्वक्कपेत्ते । सेतपोपसलेज्जपएसा  
माडाइ जायवीपक्कवरिठ्ठियाइ । चेवकी पक्कवत्ता पाचामने प्रदेशे पुइसपक्काइ तेपेत्ते, कावकी एक समवत्ता यावत् प्रसवत्ता समयनो क्कित्ता  
तेक्कपेत्ते । भावपाचमताइ मयमताइ रममताइ पाचमताइ पाचमतिथा । भावकी वक्क सक्कितद्रव्य गंध र सक्कित एव र ते सक्कित अय ८ तेसदि  
त इत्य सासीमाइ एवे पदे ४ । जाइ भावपाचमताइ । विवे भावकी वक्क सक्कित पुइसव द्रव्य । पाचमतिथा ४ ताइ विववक्काइ । सासीमाइ प

मतिथा पाणमतिथा उम्ममतिथा ? नीयतिथा । तेमाटे एव हेमववन् । जोव भीतर सासवे भीतर कसासवे बाहिर सासवे बाहिर मोसासवे  
इतिवत् । इतागायमा । इगीतम । एतेविचजीवा पाचमतिथा । एवविष्वादिक्क वाक्काव्वाइरे, जोव भीतरसासवे । पाणमतिथा कससतिथा जोस  
पद नानान्य निर्देशपक्कांजी विवादिक्का प्रकारमाद्रव्य समयवन् । पृथिव्यादि एवेंद्रोणीव भीतर सासवे भीतर कसासवे बाहिर सासवे बाहिर  
मोमानवये इतिवत् उत्तर । मायमा दम्भपाचपक्कतपेसिवाइस्वमाइ । हेगीतम । द्रव्यदी धर्मतपेयेगी पणमतपुइसद्वक्कपेत्ते । सेतपोपसलेज्जपएसा  
माडाइ जायवीपक्कवरिठ्ठियाइ । चेवकी पक्कवत्ता पाचामने प्रदेशे पुइसपक्काइ तेपेत्ते, कावकी एक समवत्ता यावत् प्रसवत्ता समयनो क्कित्ता  
तेक्कपेत्ते । भावपाचमताइ मयमताइ रममताइ पाचमताइ पाचमतिथा । भावकी वक्क सक्कितद्रव्य गंध र सक्कित एव र ते सक्कित अय ८ तेसदि  
त इत्य सासीमाइ एवे पदे ४ । जाइ भावपाचमताइ । विवे भावकी वक्क सक्कित पुइसव द्रव्य । पाचमतिथा ४ ताइ विववक्काइ । सासीमाइ प

इति प्राद्वयसुभ्रान्ताईतर्हि संपुन्युक्तान्ताई वायव्यवर्तनुक्तान्ताइपि इत्यादि रिति, ४ जीवेयिंदियत्यादि ॥ वापायनिष्ठापाय  
 ति ॥ मनुष्योपाद्यापायनिष्ठापायवक्तो मथितव्या, इहैवं पाठेयि निष्ठापायस्य सूत्रे तथैवे ह्यप्रमाणत्वात्, तत्र च  
 प्राविष्टोपायस्योपायः सूत्रेण दर्शिताः, एकेन्द्रियास्योव-पुत्रविद्याइयावर्जते। अद्विष्टिनिष्ठावर्जते। गोयसा। निष्ठापाएवं अद्विष्टिं वाचायं पशु  
 च सिय तिद्विष्टिमित्यादि एवमप्यावादिद्विष्टि, तत्र निष्ठापातेन पश्विष्टिं पश्विष्टिं यथा नमनादौ तत्तथा व्यापातं प्रतीत्य स्या च्छिष्टिं स्या  
 च्छिष्टिं, स्या त्वप्यविवं आनमन्ति यत्त तेषां सोक्तान्तवृत्तावलोकेन आदिद्विष्टिः कृत्वादिपुद्गलाना व्यापातः सम्भवतीति ॥ सेसामियमाहृदि  
 चिति ॥ सेषा नारकादिषु यस्वदिष्ट आनमन्ति तेषां चिन्माहृतनूतत्वात् पश्विष्टि मुष्ठावाविपुद्गलयोस्त्येवेति अथै कोन्त्रियाका मुष्ठा  
 सादिनावा पुष्ठावाद्य वायुपुष्ठा त्विवायुकायिकावा मप्युष्ठावादिना वायुनेव प्रवितव्य, मुत्तान्येन कोमापि पृथिव्यादीनामिव तद्विसर्जने

स्वसतिवा श्याहारगमो नेयद्वौ, आव पश्विष्टि, किंजन्ते। नेरइभा श्याणमतिवा पाणमतिवा उस्ससति  
 या निस्ससतिमा तचेव जाय नियमा ठद्विसं श्याणमतिवा पाणमतिवा उस्ससतिवा निस्ससतिवा, जीवे  
 गिंदिया वाचाया निष्ठायाया ज्ञानियद्वा, सेसा नियमा ठद्विसि। वाउयाएणजते। वाउयाएवेव श्याणम

चे पश्वे तिने खू एव वच इत्थं मते। साक्षात्साय पश्वे यई। आहारगमसंयस्यो। पश्वस्याना पश्वोसमा पश्वेयिं कदौ तेसूचपवति  
 र्वाककवौ। आव पश्विष्टि। दातत् पश्विष्टि व्यापात यावो व्यापात। विषयभत पेश्या। विसा प्रकारना द्रव्य हेमगवन्। नारदौ। व्यापमतिवा ४।  
 सामोत्थाम यई। तत्पेश्याविषयमाहृदिस्ति पाचमतिवा ४। तिमसोव यावत् निये अद्विष्टिना पुद्गलना साक्षात्प्राप्तं। जीवेयिद्विवा वाचाय विषया  
 घाय भाविष्यथा। जीवपदे तथा प्वेद्विदना पंषपदनेनिये व्यापाते तथा निष्ठापाते ठिष्टिना विभागौ सामोत्थास कदवो। सेनाविषयमाहृदिस्ति। ये  
 प उगुणोस नारदोद्विजनिये तिरवयो अद्विष्टिना कदवा। वाउवाएवंभते वाउवाए। नाअजाय हेमगवन्। वाउनेद्वौज। चेप्याचमतिवा ४। निय

बु पञ्चमः ॥ ५ ॥ वाउयायुबमित्यादि ॥ अथोच्छ्वासस्यपि यायत्वा दन्त्योऽच्छ्वासवायुना प्राप्य तस्या प्यन्येनैव मनस्यस्या नैव मन्वेतनत्वा  
 किञ्च योय मुच्छ्वासमायायुः सवायुस्थेयि नवायुसमाख्यादिरिकीकियमरीररूपः तदीयपुद्गलाभा माममावसञ्चिताभा मीदारिकीक्रियशरीर  
 पुद्गलभ्यो मन्तगुणमदेगत्वन मन्ततया एतच्छरीराव्यपदेवयत्वा तथाच प्रत्यच्छ्वासादीना मन्त्राय इतिना नवत्वा ॥ वायुकायप्रतइत्यादि ॥ अथ  
 मन्त्री वायुकायप्रसावा द्विद्विती न्यथा एचिबीक्रियकादीनामपि यत्वा स्वकाये उत्पत्तादेस्त्यव सर्वेया मेया कायस्थिते रसङ्काततया नन्ततया  
 शोक्तत्वा एतद्वद-अमगममप्यिच्छित्तु प्विच्छीमृजिदियाव्यचरव ॥ तावेवकचर्वता ववस्सईएववीचवा ॥ १ ॥ तत्र वायुकायो वायुकायत्वा नैक  
 मन्तइत्यतः ॥ उदाहरति ॥ अपइत्य यत्वा ॥ तस्यवति ॥ वायुकायस्य ॥ पञ्चायाइति ॥ प्रत्याजायते उत्पद्यत ॥ पुष्टेवद्वाइति ॥ स्पष्ट स्वकाय

तिया पाणमतिवा उरससतिवा नीससतिवा ? हता गोयमा ! वाउयाएण जात्र नीससतिवा । वाउयाएण  
 नत ! वाउयाएण्येय अणंगसयसइस्स खुमो उदाइ उदाइता, तस्यव नुज्जो नुज्जो पञ्चायाइ ? हता गोय  
 मा ! जात्र पञ्चायाइ । सेनते । किंपुठे उदाइ अणुपुठेउदाइ ? गोयमा ! पुठउदाइ नोअणुपुठेउदाइ । सेनते ! किं

नामात्राम पण एवे इतिमत्र उत्तर । हता गाबमा । जायोतम ! वाउयाएणजात्रनीससतिवा । वाउयाएण जात्र नीससतिवा इम सर्वं व  
 द्या । वाउयाएणमन्तेवाउवाएवेव । वाउयाएण उभयवन् । वाउने विपिअ नियो । अणंगसयसइस्सखुतो उदाइ १ ता । अनेअ यतसइस्स अणवार मरीम  
 रोने । तत्रेइमृखा २ पञ्चायाति हता गाबमा । तिहाज वाउजायनमिये वाएवार अणजे इतिमय उत्तर । इतामायमा । जायोतम ! वाउयाएण मरीम  
 याइतुअणजे । नेभतेकिपुठउदाइ । ते उभयवन् ! एवं अजाव यजे यरत्वा मरे । अपुष्टेउदाइ । अत्रया अणवरत्वा मरे इतिमय उत्तर । गाबमा पुष्टे  
 उदाइ । जायोतम । यरत्वा मापकमीनो अवेकाहे । वायुपुष्टेउदाइ । नजो अणवरत्वा मरे । नेभतेकिममरीरोविबजमर । ते उभयवन् ! एवं मरीर  
 मडित मोकने पाताना अणेरववो, पवसा । अमरीरीविबजमर । पाताना अणेरववो यरीररहित मोकने इतिमय उत्तर । गाबमा विबजवरीरी

हात्नेन परकायशान्तेनया अपद्रवति श्रियते ॥ गोचपुठेति ॥ सोपक्रमयोपनिर्दिष्टं ॥ विस्मयमवति ॥ स्वकलेवरात् ॥ सियसरीरिति ॥ स्या स्फुट्यन्वितम् ॥  
 प्ररामियवेदविषादं विषयजहायेत्यादि अयमर्थः श्रीदारिकवेदविषयपदया उग्ररीरी तैवसकामयेषयातु सशरीरी निकाभतीति वायुकायस्य  
 पुनः पुनः क्षत्रे योत्सति जंयतीति उक्तं मय कस्यापि भुनेरपि ससारवकायेषया पुनः पुनः सत्तै बोत्पत्तिः स्यादिति द्वायंयन्नाह ॥ मन्नाइयजते ।  
 निपठत्यादि ॥ यताही प्राप्तुजमोमो उपलब्धता देयवीयादिबेति दृश्य निर्येन्य साधु रित्यर्थः ॥ इदं ॥ श्रीत्रि मागच्छतीति योगः किंविचःसु

ससरीरीनिरुक्तमइ अ्सरीरीनिरुक्तमइ ? गोयमा ! सियससरीरीनिरुक्तमइ सियस्यसरीरीनिरुक्तमइ , सेकेणठेण  
 जते ! एव बुच्चइ सियससरीरीनिरुक्तमइ सियस्यसरीरी ? गोयमा ! वाउकायस्सण चत्तारिसरीरया पसुत्ता  
 तजहा—उराळिए वेउळिए तेयए कम्मए । उराळिययेउळियाइ विप्पजहाय तेयकम्मएहि निरुक्तमइ , सेते  
 णठेण गोयमा ! एवं बुच्चइ सियससरीरी सियस्यसरीरीनिरुक्तमइ । मन्नाइण जते ! नियठे नोनिरुक्तमवे

विच इमइ । वेगातम । कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गित भोजसे । सियससरीरीविचइमइ । कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गित भोजसे । सकेवइ सभतेएवंपुवइ ।  
 ते वामाटे वेमगवन् । इमकच्च । सियससरीरीविचइमइ । कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गितभोजसे । सियससरीरीविचइमइ । कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गित  
 न भोजन । मायसा वाउकायस्युक्त्वं । इमोतम । यज्जहाये । चत्तारिसरीरया पसुत्ता तजहा । चार यतोर कच्चा तेववेइ—चौराळिए वेउळिए तेयए क  
 म्मइ । श्रीदारिक १ वेकिइ २ तैजम ३ कामव ४ । श्रीदारिकवेउळियाइ विप्पजहाय । तिक्का श्रीदारिक १ वेकिइ २ एवेयतोर क्काणेने भोजसे । तेयव  
 मयविचिक्कमइ । तैजमकामवमो अपेयाने ससरीरी भोजसे । सेतेवइ च गायमा एवंपुवइ । ते तेवेयवे वेगोतम । इमकच्च । सियससरीरीविचइमइ ।  
 विचारेणै कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गित भोजसे । सियससरीरीविचइमइ । किवारेणै कवचित् प्रकारे यतोर सङ्गित भोजसे । मन्नाइण जते ।  
 वे वानिरइमवपवचे । प्राप्तुजमोमो वेमगवन् । निर्येण कच्चा साधु जेवे भवकप्पाययो भवता विहार जेवे रुच्योमो । सोपहीचससार । चतुर्गति मम



त्रित्याह ॥ भोनिर्गुनयति ॥ यमिर्गुहायतनभन्ता चरमप्रवाप्राप्त इत्ययः अप्यत्र प्रयद्गुप्राप्तव्यमोक्षोपि स्यादित्याह ॥ भोनिर्गुमयपवधेति ॥ प्राप्ताग्रजविभारइत्ययः अयं देवममुष्यनयप्रपञ्चावेद्यपिस्या दित्यतश्चाह ॥ अप्रहीणचतुर्गतिगमनइत्यर्थः, यतएव म तर्ध ॥ भोपहीवममारयपविज्जति ॥ अप्रहीणसमारवदाकर्मा ॥ अयं स रुचतुर्गतिगमनतोपि स्या दित्यतश्चाह ॥ भोयोष्विखसंसारेति ॥ चतुर्दि तचमयतिनमयानुद्वयइत्ययः अतएव ॥ भोयोष्विखसमारवेयपिज्जति ॥ भोनेव व्यवच्छिन्न मनुष्यव्यवच्छेदेन चतुर्गतिगमनवेद्यं कर्त्तव्यं यस्य स त

नानिरुद्धनयपथे नोपहीणमसारे नोपहीणससारवैयण्जो नोवोच्छिणससारवैयण्जो नोवोच्छिणससारवैयण्जो नानिठियठे नानिठियठकरणिज्जे पुणरायि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ ? हता गोयमा ! मक्काडणनियठे जाव पुणर विडुत्थम हव्वमागच्छइ । सेणजत ! किवत्तव्वसिया ? गोयमा ! पाणतिवत्तव्वसिया नूतेतिवत्तव्वसिया जीवे तियत्तव्वसिया सनेतिवत्तव्वसिया विन्नुयसिवत्तव्वसिया वेदेतिवत्तव्वसिया ? पाणे नूये जीवे सत्ते विसूवे

मरुत संसारसर्वकोपानयो । वायुहोषमंसारवद्विज्ये । संसारमहि ब्रह्मोपम सवकोपानयो, यतो वेदवा । वावाञ्चिचसंसारिवायोञ्चिचससारवेद  
निज्ये । ययो तटो समार चतगति गमनादुर्वध वेदयो, चतुगति समारजे तटपेकरो वेदमोयवम वेदयो तूटोययो । योविद्विष्टे । वेदने प्रवीचन पूरा  
मयो । नादिइवाचरविज्ये । प्रवाचननो करयो पूरोकोपानयो वेदने । पुषरविद्विष्टतद्विज्यमन्तर इतामोयमा । ते यतो मनुवादि भतिने जतायको  
पादे इतिमन्तर उतर द्वेयोतम । महाद्विष्टते । प्रायुषमाजो निषव साहु । जाय पुषरविद्विष्टतद्विज्यमन्तर । वाचय यतो चतुमतिकप सवारमै च  
तारमा पादे । मेनभतेविद्विष्टतद्विज्ये । मर्च वावाञ्चिचारे, तिहा द्वेभगन् । निर्वजयोच य् चरवाच इतिमन्तर । योयमा पावेतिवत्तद्विज्ये ।  
वेदमन्तर पाच एवम् तेदने कहीये । भूतेतिवत्तद्विज्ये । मू एवम् तेदने कहीये । जीवेतिवत्तद्विज्ये । जीव एवम् तेदने कहीये । सतेतिवत्तद्विज्ये ।  
या । मन्त्र एवम् तेदने कहीये । विद्वेतिवत्तद्विज्ये । विद्व विज्ये जाय एवम् तेदने कहीये । वेदेतिवत्तद्विज्ये । वेद एवम् तेदने कहीये । योविद्विष्ट ।

[illegible]

देतियसद्वसिया । सेकेण्ठेण पाणेतिवत्तद्वसिया ? जाय वेदेतिवत्तद्वसिया , जम्हा स्याणमतिया पाणमति  
या उत्तसससति नीससंतिया तम्हा पाणेतिवत्तद्वसिया । जम्हा नूणचवइ नविरसइ तम्हा नूणसिवत्तद्वसि

મુદ્રે ૨ જાતે ૩ ઇન્દ્રે ૪ વિષ્ણુ ૫ । પ્રાણ મૂળ ઓવ સહ વિષ્ણુ । વેદ ૬ એ જીવોત તેજને કહોયે । સર્વેવેદોજમતે । તે એપરે હેમગજનુ દ  
મ જગ્ન । પાવેતિવત્તર્થસિદ્ધા । પ્રાણ દમ તેજને કહીયે । જ્ઞાનવિષ્ણુતિવેદાવિત્તર્થસિદ્ધા । ચાચવુ વિષ્ણુદસા તેજને કહોયે કૃતિપ્રગ્ન જત્તર । મો  
યમા જન્માપાણમતિદા । હેનોતમ । તેમટે મોતરજાસહે । પાણમતિદા જક્ષસતિદા ધૌસસતિદા । મોતર જ્ઞાસસહે, જાહિર સાસપરે, વાહિર જ્ઞા  
મ પરે । તન્માપાવેતિવત્તર્થસિદ્ધા । તેમટે પ્રાણ દશ્યુ તેજને કહીયે । જ્ઞાનામુણ મયદ મવિષ્ણુ । જે કારણથી જ્યોતજ્વાલે જ્યોતર્થમાનજાલેથી ધામ,  
મિથાલે પૂલે । તન્મામુદતિવત્તર્થસિદ્ધા । તેમટે મૂળ દશ્યુ તેજને કહીયે । જન્મા જીવેજીવદા । જે કારણથી જીવ તેજાન્મા દ્યોત્ય પ્રાણપ્રતે ધારે । જીવ

मादिपमविषयया मूतादिप्रपञ्चककथाभ्यता तस्य कालप्रदेन व्याख्येया, यदा मूलासादिपमैर् युगप दधी विवक्षते तदा प्रायो प्रुतो जीवः स  
 स्वा विप्रो येदयितावति यत् तप्रति धार्यं स्या दयथा निभममै वाक्यमवेद भतो न युगपत्यव्याख्याकार्येति ॥ जम्हाजीवेइत्यादि ॥ यस्मा ज्जी  
 य धात्वा ङी जीवति प्राधान् धारयति तथा जीवात् मुपयोगसद्वत् प्रापुष्व कस्म उपजीवति अनुभवति तस्मा जीवति वस्तव्य स्यादिति ॥  
 जम्हामन्मुनामुज्जिबन्मिति ॥ सक्त आसक्तः शक्तोवा समर्थः सुन्दरा २ सुषेष्टासु दायवा सक्तः संवक्तुः क्षुजाक्षुभिः कर्मजि रिति अनन्तरो

या, जम्हा जीवे जीयइ जीयस् श्याउयच कम् उवजीयइ तम्हाजीवेतिवस्तव्यसिया, जम्हासत्ते सुहासुहे  
 हिं क्रम्मेहि तम्हा सत्तेयिवस्तव्यसिया, जम्हा तित्तकटुकसायश्रयिलमज्जरसेआणइ तम्हा विष्णुस्तिवस्तव्य  
 सिया, वेदेइय सुहदुस्कं तम्हा वेदातिवस्तव्यसिया, संतेणठेण जाय पाणतिवस्तव्यसिया, जाव वेदाति  
 वस्तव्यसिया । मर्राइण जते । नियठे निरुध्नवे निरुध्नवपवचे जाय निठियठकरणिज्जे, जोपुण रविइ  
 च्छत्त हव्व मागच्छइ ? हत्ता गोयमा ! मर्राइण नियठ जाव नोपुणरयिइत्थत्त हव्व श्यागच्छइ सेण जने

तथाउपपन्नंउच्यते । तथा जीवन् उपपन्नं सप्त षण्ण पापुष्वम उपपन्नोवति पनुभवे । तम्हाजीवेतिवस्तव्यसिया । तेमाटे जीव एइवू तेइने जीवो  
 ये । जम्हाजत्तेमभाममेहिंज्जोहि । जे माटे मज्जा पायज्ज पयसा समसइ संहर पमंहर वेदनेविपे शुभाइमज्जमज्ज संबधे । तम्हासत्तेतिवस्तव्यसिया ।  
 ते माटे मज्ज एइवू तेइने जीवोये । जम्हातित्तकटुकसायश्रयिलमज्जरसे जाव । जेमाटे तित्त कटवो कसावो र्वविज्ज मधुर ए पांवरत्त जावे । तम्हा  
 विज्जतिवस्तव्यसिया । तेमाटे श्रिय एइवू तेइने जीवोये । जम्हावेदेइयसुहदुस्क । जेकारपणी वेदे पनुमवे मज्ज मत्ते तथादुच्यते । तम्हावेदातिवस्तव्यसिया ।  
 तेमाटे वेठ एइवू तेइने जीवोये । संतेणठेण जायपावेतिवस्तव्यसिया । ते तेवे धवे जावत् प्राच एइवू तेइने जीवोये । जाववेदातिवस्तव्यसिया । जावत्  
 वेद एइवू तेइने जीवन् जीवोये पूर्वेज्जो जेपव तेइया विपरीतपणी जीवोये—मर्राइवमत्तेतिवस्तव्यसिया । पापुष्वमोको जेभनवत् । निग्गिज्जवा

कल्पे यापस्य विपर्ययमाह ॥ मन्नाहत्यादि ॥ पारगएति ॥ पारयतः संसारसागरस्य प्राविमि प्रूलवदुषणचारादिति ॥ परंपरमएति ॥ परंपरया सिध्यादुष्यादिगुणस्यानन्तानां अनुयाविसुयतीनांयाः पारपर्येष गतो प्रवात्मोपियारं प्राप्ताः परम्परागत, इहा अन्तरं सप्ततस्य संसारवद्विज्ञानी उ

किं यस्तृष्टसिया ? गोयमा ! सिद्धेति यस्तृष्टसिया , युद्धेति यस्तृष्टसिया , मुक्तेति यस्तृष्टसिया , पारगएति यस्तृष्टसिया , परंपरगएति यस्तृष्टसिया , सिद्धे युद्धे मुक्ते परिनिष्ठुते श्रुतकृते सध्वदुरकप्यहीणे त्रिवस्तृष्टसिया या संय जते जतेति , जगव गोयमे समज जगव महावीर यंदद नमसइहा सजमेण तवसा श्रुप्याण

५ कथाये यामिना जग कथाई मयना विप्रार जेबे । कावविहववरचिल्ले । बाबत् निठिताय वरचो प्रबोजननो वरचो पूरकोधी । बापुवरविद वरचोइवमासण्णर । नहो यही मनुष्यादि मवमते अतावका पावे पामे इतिप्रज उतर । संता गोयमा । हगोतम । सदाईवंधियठे । सतादि प्रासुव भावो निगइमाहु । कापचापुवरविहवसंइवमागच्छइ सेवमतेविजवसव्वसिया । बाबव नहोवली मनुष्यादि मवप्रते अतावका पावे पामे, तिहां ते निदीबजोइ यं दाक्कायंकारे, हेमगवन् । म्कइबाव इतिप्रजउतर । गोयमा सिद्धेतिवसव्वसिया । जेगोतम सिद्ध एहवू तेइने कइये । बडेतिवसव्वसि वर । इए एहवू तेइने कइये । मनेतिवसव्वसिया । मज एहवू तेइने कइये । पारगएतिवसव्वसिया । सवार सागरनेपारे पइता एहवू तेइने कइो ये । परदरमएतिवसव्वसिया । मिमात्तादि सुवस्मानकने तवा मनुष्यादि यतिने परपराये यमा एहवू तेइने कइये । सिद्धे १ बुद्धे २ मुक्ते ३ । सिद्ध बुद्ध मज । परिनिबबयंतकरे । परि भिंरुंग ववा ४ सवारना यंतकोधी । सम्वदुक्कप्यहोवेतिवसव्वसिया सेवमते ५ ति । सगळा बुद्ध प्रचीनववाइ व इने एहवू तेइने कइोये गोतम बाप्ता तइति हेमगवन् तुले वधं तेससइ सेवमानहो । भगवं गायमे । भगवत गोतम । समव भगवं मइवीर । यमव भगवत गोमकाओरसामी पते । वइइ वमसइ २ पा । यवि मयरकारकरे पादोने जमरकार करोने । सज्जेवतवसाप्याणभावैमाचे विहरइ । नवा था जता कमशारीये जेवेकरो ते सपम कइोये भग्या कमजोदिये जेवेकरो ते तपकइोये ते सुवम उपसवाते । तएवसमवेभगवमहावीरे । पात्माने भावता

ते विदुष्य चत्पुत्रान् तेषां मन्त्रेषां चार्थानां श्रुत्यादनाथे स्फुटकथितं प्रियसुरिदमाह ॥ तेनं कासेन मित्यादि उपपन्नानां दुःखपरं ॥ इह यावत्  
 करणान् ॥ पररा क्रिये कथसौ मयूयू यद्वरिलो भागासुगणं कतेन मित्यादि ॥ सम्यक्संज्ञात्मवाप्यमिति ॥ गद्गमासस्सति ॥ गद्गमासस्सति ॥

नात्रे माणे विहरद्, तएण समणे जगय महावीरे रायगिहाउ नयराउ गुणसिलाउ चेइयाउ पणिनिस्कम  
 ड पणिनिस्कमइहा यादिया जणत्रयविहार विहरइ, तेणकालेण तेणसमएण कयगलाणाम नयरीहोत्या, व  
 गाउ, तीसेण कयगलाए नयरीए यादिया उत्तरपुरिच्छिमे दिसीजाए लत्तपलासए णाम चेइएहोत्या, ययाउ  
 तएण समणे जगवमहावीरे उपपन्नाणदसुगधरे जाय समोसरण परिसा निगया, तीसेण कयगलाए  
 नयरीए श्रुदूरसामते सायत्थीणाम नयरीहोत्या, यखउ, तत्थण सायत्थीए जयरीए गद्गजालिस्स छुतेवासी

यका भीरे तितारे जमच भनवत श्रीमहाभोरखामो । रावगिहाभाचवराया गुणसिलापचेइयाया । राखयइणामा ममरबी गुणयोसकनामे यच  
 ना येसवमो । यद्विबिजमर २ णा यद्विबिजमवयविहारविहार । मोकमे मोकमोम वाहिर वेगमोखानेविपे विहारकरे । तेवकासेन तेवसमए ॥ ते  
 कामनविपे तेममयनेविपे । ययागनामपयरोहाता यचपो । ययगनामाने नयरोइवे यचक लवांसो परेकइया । तीसेकयमसाएचवरीए । तेइ च  
 वात्थामकारे चवतना नयरीने विपे । यद्विवाउत्तरपुरिच्छिमेठिवीमाए । वाहिर उत्तर पूवनादिदि विभागे एवचे हेयानमूचे । जत्तपलासएचेइएहोत्या  
 जयया । जत्तपलास इसेनामे यचना येव जया तेइना यचक लवांसो जायया । तएचसमचे भगवमहावीरे । तितारे जमममगधंत श्रीमहाभोरखामो ।  
 उपपन्नवाचदसवधरे । जयना यद्वयज्जान यने खेइउर्याण तेइना धरवहार । जावसमासरच । यावत् समासरच तीरे कइवो । परिसाचिज्जवा । परि  
 यथा वीइना मोकमो । मोमेचकयमनाएचरोए चदूरसामते । तेइ च वात्थामकारे जययका नयरीवी यच पसगमही यच निजटपयनइ । मायलो  
 पामेचवरीहाताययया । तिहा सायथोनामे नमरो कर ते नगरोना यचकउर्याण उपपन्नोपे कइया । तत्तर्बमाउलोएनयरोए । तिहा सायलो नगरो



गतपति ॥ भवितरश्मपुपरिनिष्ठित इति योग , परब्रूवेदकत्वमेव व्यनक्ति ॥ सिक्खाकथयेति ॥ त्रिणा चण्डरस्वरूपनिरूपक आह कस्यच तथा  
 विपद्मभाषारनिरूपकं प्रागम्य ततः स्याद्वरद्वन्द्वा च्छिषाकस्ये ॥ वागरेवेति ॥ दादुआखे ॥ च्छवेति ॥ पद्यसप्तचक्राखे ॥ निरुचेति ॥ सद्युत्युत्प  
 निवारकभाते ॥ ओद्दामामयपति ॥ न्योति-द्वारे ॥ वज्रस्यसुति ॥ प्राङ्मुखसम्बन्धिषु । परिधाययसुयति ॥ परित्रावकसत्केषु ॥ मयेषु भीतिषु द  
 दानापित्यया ॥ निपठति ॥ निर्गुणः अयच्छत्यर्थः ॥ विज्ञासा महावीरजननी तस्या अपत्यमिति, वैद्यालिको प्रगवास्त  
 म्य वचनं द्योति नदूमिद्वया दिति वैद्यालिकः आवाहः सद्गुणानादृतपामनिरतइत्यर्थः ॥ इवमन्वयेवति ॥ एत भाषेयं प्रस ॥ पुच्छेति ॥ पृष्ठवान् ॥

नएसु सुपरिनिष्ठिए याचिहोत्या , तस्य सावर्त्योए नयरीए पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए परिव  
मड , तएण से पिगलए नाम नियठे वेसालिसावए अखया कयाइ जेणेव खदए कझायणसगोसे तेणेव  
उयागच्छइ उवागच्छइसा खदय कझायणसगोस इण मस्केव पुच्छे , मागहा ! किं सस्यतेलोए अणतेलोए

जावमुच मयसु । स्वातिव मावना जाव सोजाईनेविने वपुन घडाईनेविपे प्राप्ताव सवसोनेविने नीतनेविपे । सुपरिनिद्रिष्टया  
 शिवात्वा तत्तर्चनालोपवरीए । मनोपरि निरुपायना जाव एववा एवदपरिवाजक ज्ञया तेइनेविपे व शास्त्रावकारे, सावतो नामै नमरीये । पिंगल  
 एषाम्निपठे बेमादियमावए परिबरा । विगन नामे निपे व साधु अमच इत्यव विद्याया ओमहावीरना मावा तेइनीपुव ओमहावीर तेइना वचन  
 ना रनिजवै । तएवबेपिगमएवामिपठे । तिवारे तेपिमसगमे निपे व साधु । वेसाखिबसावए । ओमहावीरना वचन सुबियाने रसिध । अष्टबाजया  
 ई जेदेवगए । एववा प्रभावे दिवारेकै जिया एवव परिवाजक । कथावचसमोत्ते । तेवेववागव्वर सा । कात्मायनगोपीय तिहा पाये ति  
 वा पायेने । एवदववावचसा । अष्टव कात्मायनगोपीय प्रते इवमकीउपुववा । इव पायेये प्रअपूवै । मागवा । मयबदेयना खपनो ते मागव ।  
 दिमपनेनार पवनेनार नपतेओवे पवनेओवे । एव साव रत सद्धित एगावतासावना रते पववा वजतसावले नाकनो अतनवी ओव रत सद्धि





मे पिगलए नियठे वेसालीसाथए खदय कच्चायणसगोत्त दोच्चपि इण मस्केव पुच्छे, मागहा ! कि सस्यते  
 लोए जाय केणवामरणेण मरमाणेजीवे यहुठवा हायद्ववा एतावताय आइस्काहि युच्चमाणो, एव तएण ते  
 खदए रुच्चायणसगोत्त पिगलएण नियठेण वेसालीसाथएण दोच्चपि तच्चपि इणमस्केव पुच्छिए समाने सकि  
 ए फाखिए वित्तिगिठिए नेदसमायन्ने कलुससमावन्ने नोसवाएड, पिगलस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स  
 क्रिचियिपमोस्समस्काडत्त तुंसिणीए सचिठइ, तएणं सावत्यीएनयरीए सिधाऊगजाथपहेसु महयाजणसम्म

पाताजिवि वनुगपाया । चासबाएर पिगलसक पिबठस । उत्तर देई नमवाये पिगलने भिगुं बने । वेसाजियसावसक । किचिवि । योमहावीरना व  
 वन मविचाने रमिक्कै । काई एक पवि । पमाळमळाएणा । प्रतीतरकडवा, समव नबबो । तत्तिचोण्णविह । तिचारे मीनकरी रत्तो । तएणसेपि  
 गमएचिबठे । तिवार पछो ते पिगल निपे क साध । वेसाजियसावए खदयकवाससमीत्त । योमहावीरणाभीना वचनना रमिक्कै खुदकपत्ते काळ्या  
 एन मावना ववो मत । दाचपिइचमस्सेवपुच्छे मागहा । बीजोवार पवि इसे भाचेये पूछिवासागो इमगधेयना छपना । किंसचतेसाए जाववेववा  
 मरदेव । स्मं भाक पंत सडित्तवै इळादि यावत् किचे मरवेकरी । मरमाचिबीवे वठइवाहायइवा । मरतोबकीबीव संसारना वठवावो बडे पबवा वट  
 वावो वटे इनिदामै । एतावतावथाइळाधि बुद्धमावे । ए प्रयत्तो पडिवा उत्तर कहि पडै बीजो प्ररण्णो इम पूछता । एवतएवसेवदए । इम वि  
 वारे ते खुदक । कवावकसगोत्ते पिगमएवनिर्गठेव । वाळावकबीजमाधवी पिगलनामे निपेयसाह । वेसाखोसावएव दोच्चपि । योमहावीरणाभीना  
 वचननो रमिक्क यीजीवारपवि । तच्चपि इचमस्सेव पुच्छिएसमावे । भीजा वारपवि इसे भाचेये पूछोबबो । सकिए च्छिए वित्तिगिरिक्कए । यका छ  
 पनी काचित्तवयो वसविपै सदेइइवा । मेइसमाववे कलुससमाववे । चोसबाएर । मननेविपै कलुसपवी छपनी उत्तर देई नमबै । पिगलसकनिवठ  
 म् । पिगलने भिगुं बने । वेसानियसावसक । योमहावीरना वचनना रमिक्कने । किचिविपमोस्समस्काडत्त । काई एकापवि प्ररतनो उत्तर कडवा न य



[illegible]

ण समण नगन महाधीर वडाभि नमसाभि सेय स्वाहु मे समण जगव महावीर वदिता नमसिप्ता सक्कारे  
ता सम्माणेत्ता कक्षाण मगल देयय वेदय पज्जुयासप्ता इमाद्धचण एयाकथाह्म थ्यठाइ हेऊहं पसिणाइ वाग

पञ्चाननं । तेनाटं लघात्र । असर्पभगवत्सहायोर वंशानि वयमासि । यमज भगवत योमहावीरव्यामो पते बार्द्ध ममव्यार कटं । सेयं पशु मेसमबंभमव महागोर वदित्ता वमवित्ता महारेत्ता सुभावेत्ता । त्रेव कष्याण नित्यै मुझे यमज भगवत योमहावीरव्यामीपते बार्द्धोने ममव्यारवरीने सुव्यार बरो

नोऽस्माभं प्रत्यनवे जन्मान्तरे विताय पय्याश्रवत् सुलाय शम्भवे सोमाय समुतत्याय नि शेषसाय मोचाय आनुगामिकस्याय परम्परयाशुभानु  
 ग्रन्थसुताय प्रविष्यति इतिकृत्वा हस्तिदेतो बहव उवा आदिदेवस्थापिता राजश्वज्जाता प्रोगा सगीवा यस्यापितगुहवयज्जाता राजन्या जग  
 धहपस्ययज्ञाः अत्रिया राजकुसीना, प्रता श्रीयवन्तो योषा सोम्यो विविदिष्टरा मल्लकिनो लेब्धकिनश्च राजविश्वेयः राजानोऽयम् इधरा  
 युयराजा सप्तमेव महर्षिणा कलसकरः प्रतुष्टनरपत्तिवित्तीक्ष्णहृन्मयिमुपिता राजत्यामीया मारुयिकाः सुमिषेशविश्वेयभायका कौदुम्बिकाः  
 कतिपयकुन्दुन्यप्रजयो राजसेयका उटिगटि दानवमहाध्वनिविहङ्गादव प्रसीतः योस्य वर्यध्वनिस्त्रिजितो महाध्वनिः कलकसश्च व्यकवधमः  
 स एव यत्सहस्रो यो रव सैन समुद्रवज्रतमिव जलपिशाचप्रासमिव तन्मयमिवे त्वर्षे मनर भित्तिगम्यत इति एतस्या यस्य सङ्केप कुवकाश्च ॥  
 परिसन्निगन्धइति ॥ तएवति ॥ ततो नन्तर ॥ इमेयारुवेति ॥ अयं वत्समावतया प्रत्यक्षः सुव क्विनी चामानो न्यूमापिकोपि सवती त्यतश्चा

इ एतदेव रूप यस्या सा वतद्रूपः ॥ वट्कालिएति ॥ आध्यात्मिकधाम्नावियेयः ॥ चित्तिएति ॥ सरवरूपः ॥ पत्निएति ॥ प्रापित अनिशाया  
 त्मकाः ॥ मन्वीनयति ॥ मनस्सव योगतो म यदि यचनेना प्रकायमात् सु तथा धङ्गस्यो विकल्पः ॥ समुप्यजित्यति ॥ समुत्पन्नवान् ॥ सयंति ॥ ये  
 यः कल्याणं ॥ पुच्छितएति ॥ योगः ॥ इमाश्चरति ॥ प्राकृताया दिना ननतराक्तावेन प्रत्यक्षासद्याम् वयन्दा दम्पाव ॥ एयाकवाश्च ॥ एतदरूपा  
 भुवस्सरूपान् अपवाः एतेयामेवा भनरीकाना भयोनां रूप येया प्रमुष्यसासाधर्म्यो ते तथा ता भर्ग्यान् प्रायाम् लोक्तसान्तस्वादेो सप्तन्याय ॥  
 रेवइति ॥ धन्वयव्यतिरेकसहस्रदेतुनम्यत्वा द्रुतयो लोक्तसान्तावयएव तदभ्येवा अत सान् ॥ पसिचाइति ॥ प्रअयिययत्वा त्प्रश्ना एतएव त  
 दम्पेयाः ॥ अत सान् ॥ कारबाइति ॥ कारव मुक्कपत्तिमात्रं तद्विपपत्वा त्कारणा न्येतएव तदन्येया त सानि ॥ वागरवाइति ॥ व्याप्तिपमाव  
 त्यात् व्याकरवाति एतएव तदभ्येवा तसामि ॥ पुच्छितएति ॥ प्रदुं तिक्कु इतिकृत्वा अमेन कारकन ॥ एवसपरेइति ॥ एव मुक्कप्रकार भगव

मुञ्चनादिदण्डमित्यर्थः मन्त्रेणैव पयसोचयति ॥ परिष्ठापायसंसेति ॥ परिष्ठापायसमन्त्रः क्रियाकलापः कमबद्धः, काष्मिनिक्ता रुद्राधरुता, करोटि  
का मुद्राग्रमविद्याः मृगिका साजनविद्येयः केसरिका प्रमार्जनार्थं पीवरफल उद्धासक श्रिकाटिका अक्षुण्णक तक्षपक्षवपश्चार्थं मङ्कुशाकृतिः  
पञ्चि कर्मगन्तीयश्च मन्त्रशिक्षा कर्मादिका भरयविद्येयः ॥ पाठरत्नामृतिः ॥ क्राटिकावृत्तिभेदः ॥ तिर्यकदादीनि दश वृत्ते भक्ता

रगाड पुच्छिन्मणु तिर्यक, एय सपेहेड सपेहेडसा जेणेव परिष्ठापायगा वसही तेणेव उवागच्छुड उवागच्छुडसा  
तिर्यकच फुक्रियच कचणियच करोक्रियच निसियच केसरियच त्र्याण्डियच श्रुकुसयच पविस्तयंच गणेति  
यंच तत्तयच याहणाउय पाउयाउय धाउरसाउय गेखइ गेखइसा परिष्ठापायगथसहीत पक्रिनिस्कमइ प  
क्रिनिस्कमइसा तिर्यक फुक्रिय कचणिय करोक्रिय निसियकेसरियतनालयश्रुकुसयपविस्रियगणेत्तियइत्य

प्रधान बरान । बत्रापं मम देवर्षं चैव । कथाचक्रना कारजगत धुरित उपपमभेदुमते देवमते इहदेवमो प्रतिमानो परे । पञ्चुवाचिस्ता । सेवू ।  
इमाहपणवराकसाहं पहाइ । ए पणमनरात्र प्रमथ पायव अपुन वं बाव्वाचंकारे ए कस स्रकवे वसमते । सेतइपविचार वामरचार । सेतुकारच प्र  
इम का डरण एतना मानामते । पुनिस्रयत्तिइ । पुर्वं णव्वं करोमि । एवसेपेइ २ ता । इम भावले पानोचोमि । जेवेकपरिष्ठापायवसही । विहा  
परिष्ठापायवसही वसतो पायमचै । तेवेइउवागच्छुड २ ता । तिहा पावे विहा पावोमि । तिर्यकच । तोन एकठा कौवा । मुद्रियच १ । कसडच २ । भव  
नियच भिमियच केमत्तिच कथावियच पङ्कमयेव । वड्ढाचमासा १ स्रुत्तिकाभयभाजन ४ स्रुत्तिकाभयभाजन वियेय १ पीवर खंय पूजवामे ६ वड्ढा ना  
निव विडादिवा विगहो ० उवना पङ्कय सेनामनो पङ्कयणे पाकारे ८ । पविस्रियच गवेत्तियच कसयच वाइवापाय पाउवापाय । तोवानो सुइयो प्रमु  
प ममरनो ८ कानादिवा भरयवियेय १ कनर ११ पयसवा तथा काडन १२ काडमयो वाचहो १३ । पाठरत्नावृत्तिभेद २ ता । गेरुमो भगवा  
वपाइ पाटिवा इति येव तेनुइ गुणोमि । परिष्ठापायवसहीपो । पविष्ठापायवसही २ ता । गोसरे मोसरोमि । तिर्यक मुद्रिय ।

नि स्मिताभि मस्य स तथा ॥ पहरत्येति ॥ प्रहारितवान् बहुस्त्रितवान् मयसाय गन्तु ॥ गोयमाप्रति ॥ गोतमइति एवं ग्रामत्र्येतिशोयो, उपवा

गए वृत्तोवाहसजुत्ते घाउरस्रवत्यपरिहिए सावत्पीए नयरीए मज्झ मज्जेण निगच्छइ निगच्छइत्ता जे  
जेय कयगलानगरी जेणेघ ठसपलासाए वेहए जेणेघ समणेत्तगव महाधीरे तेणेघ पाहारिच्छगमणाए गोयमाइ  
समणे नगवं महाधीरे नगवं गोयम एव वयासी, दच्छिंसिण गोयमा ! पुइसगइय कतं, कंनते ! स्वदय नाम  
से काहेया किहवा केवच्चिरेणया, एव खलु गोयमा ! तेणकालेण सावत्पीणाम जयरी हीत्या वसुठं तत्थण

विहं १ कर्मठन २ कंचकित्त । वप्राच भावा ३ । वराजिर्भ भिक्षिण केसरिय । भुत्तिका मय भाजन ४ सुत्तिका मय भाजन ५ बोपरच्छं ६ पय  
शाने ७ । वृत्ताविवं पंहुसवं पत्रित्तिय यदेत्तिय इत्तगए । वट्ठनादिक् पिवाटिका चिमो ८ इत्तना पल्लवेया भवो पंहुपने पाकारि ९ बावानी मूद  
ही प्रमुख ८ समरत्तो कलापिका भरवदियेय १ प इत्तनावा वावेसीया । कर्त्तावाइवसुत्ते । कचमावे पयेपगरत्तो तेणे सुयुत्त । घाउरतवत्त्वपरिहिए ।  
प्रात २३ वज्र पकिरा पकिरीने । सावत्तीणचरौए । सावत्ती नगरीने । मत्तमस्योव विज्जच्छर २ ता । मज्जे मज्जमागे घरेने नोकसे नौकसीने । जेवेव  
कर्ममलाचरौ । जिहा कबमवा गमे नगरीवे । जेववत्तपलासएवेए । जिहा कचपलासगाने पैखइ । जेवेवत्तपेगवमइमानीरे । जिहा त्रमय म  
यवत्त त्रिमहावीरल्लामोइ । तेवेपपकारिज्जमयाए । जिहा संकल्लकोषो पाइजानेवावे । मोवमादि । जेगोयम । इत्तो ग्रामचद मयन । समवे भगव  
महावीरे । त्रमय भववत्त त्रिमहावीरल्लामो । भयवत्त योतम प्रते इम कइता इया । इत्थित्तिय गोयमा । देखी च पाआसकार  
येयोतम ! पयसयत्तिय । पू भिज प्रते तिवारे योतम मोवमा । कर्मते कवर्चनाम । जेइप्रते हेमयंवन ! भयवत्तवाक्या कटव इवेगाने तेइप्रते । सेकाइ  
वा । ते विनिवेवा भिदिइ । विदिंया । किंचे प्रचारि यमवत्तो सुवे मयी । जेवचिरेयवा । जेतोकाय कोतकोचिरे जिवारे पावळे । एवंछठ गोयमा ।  
इम भिदे हेतोतम । तेचकासेच तेचमयए । ते कावनेविदे ते समयमेविपे । सावत्तिपणमंयरीइत्या वचपी । सावत्तीनाम नगरी इहे वचंक्क वर

ययी त्यामस्तकापण्य ॥ सेबादेवति ॥ अथ कदावा कस्या वेसाया मित्यर्थः ॥ किंयति ॥ केनवा प्रकारेण साक्षा वर्जनतः प्रवक्षतोवा ॥ देव  
 पिरेववति ॥ निपतो वा आस्तात् ॥ सावत्यो काम कयरी होत्वति ॥ विप्रतिपरिवा मावली तयर्था ॥ अथवा कासस्या वसुभिर्षीत्या त्वप्रसिद्धु  
 या कासान्तरण्या नव अदानीमिति ॥ अदूरादयति ॥ अदूरे आगतः सवावपिस्थानापेक्षया पिस्या दयवा दूरतर मार्गापेक्षया [ यय ३००० ]  
 क्रोधादिष्वयं प्यदूरं स्या दतव्यते ॥ अयवतः सभासो बहुसमासः सव विद्याभाविदेतो राराभाविगतोपि स्या दत उच्यते ॥ अदूरा  
 कपन्निवोति ॥ मार्गमतिपक्वा किमुक्तं प्रवति ॥ अतारापरेवदृष्टि ॥ विवक्षितस्यानयो रत्नारसमार्गे वर्ततइति अनेन सूत्रेण कथं द्रव्यामी त्य  
 स्या तत्तमुक्त कथयतो दूराभ्युदयस्य साक्षादेव वर्जनं सम्भवति तथा ॥ अन्तेवकवक्षसी त्यनेन कियद्विरा दित्यस्यो तत्तमुक्त काहेत्य

सायत्यीए नगदीए गहनालिस्स स्यतेवासी स्वदए णाम कच्चाणसगोहे परिद्यायए परियसइ, तवेय जाय जेणेय  
 ममस्यतिए तेणेव पाहारेच्छेगमणाए सेअदूरासए वक्रसपत्ते स्युत्ताणपक्रिवणे स्युत्तरापहे वहइ, स्युज्जेवण दिठ  
 सि गीयमा ! जंतेसि, जगवं गीयमे समण जगव महावीर वहइ नमसइ नमसत्ताइ एवं वयासी, पत्तण जंते !

आचार्य । तत्रैववावतीए बहरीए । विष्णुं आबध्दोनामे भयरोमन्निवे । यद्वादिष्यतेवासो । यद्वासी परिप्राजकनो मिय । अदवशामं । स्वइवनामे ।  
 कथाय वसनामे । आवायन पावनो प्रबो । परिष्वाएपरिवरा तरेव । परिप्राजक वसहे तिमहीन सव कइवा । जाववेवममचंपति । यावत् जिज्ञा  
 माहरे मदीये । तेरेवपहरिखमसाए । तिष्ठां संकल्पकीवा काइमनेकाज । मेवधदूराजते । ते नकोवेचावा । बहुसपणे । योहे प्रबोधीको । यवाव  
 पदिदने अतारापरेवदृष्ट । मामप्रते प्रतिपद्ये मार्गमे अतरे यत्ते हे आवेहे । पत्तेवबदन्निहि योवमा । आजहीन देवदे हेमोतम ! मतेति । हेभगव  
 न् । इवे धामकवे । भगवंगीवमे । भगवत मीतम । समर्थभगवंमहावीर सदइवमंसह २ ता । अमच भगवत योमहावीरराम्मी प्रते पदे नमस्कारेण वारे  
 रोमे नमस्कारवरीने । एवंरवासो । इम कइगाइवा । पमूचमतेसइएववावचसपांति । समकवे य वास्माकजारे, हेभगवन् ! अंदव कावावगगोचोव ।

स्य चोत्तरं सामर्थ्यस्य यतो यदि जगज्जा मध्याह्नसमये इयं वातां अभिहितता तदा मध्याह्नस्यो परि मुद्रुर्जायति क्रमेण या वेसा भवति तस्या  
धनुस्त्वस्रोतिसामर्थ्या दुक्तं चद्रुगमताविक्रियेयवस्य हि तदेवग्रहासौ मुद्रुर्जायति ॥ अगाररठति ॥ निष्क्रम्येति बोधः ॥  
अनपारितां साधुता प्रप्रजितुं भक्तुं यथा विमलपूरिकाभा दमगारितया प्रप्रजितुं प्रत्रव्यां प्रतिपत्तुं ॥ अमुठेइति ॥ आसनं त्यजति यद्य ज  
गज्जातो पीतमस्या उर्यपत्तं प्रत्यमुत्पन्नं तद्गविविधतत्वेन तस्य पक्षपातयिष्यत्वा द्वीतमस्य चासीकरागत्वा, तथा जगदवाविक्रततदीयविकल्पस्य  
तारवमीपमननं सारजयना प्रयवभूषणतिलयप्रकाशनेन भवत्यतीव बहुमानोत्पादकस्य चिकीर्षितत्वादिति ॥ हेसंश्यति ॥ सम्बोधनमात्रं ॥

खंदेण कञ्चायणसंगीते देवाणुप्यिमाण श्रुतिमुक्तेन विज्ञा आगारातुं स्पृणगारिय पवृइत्तए । हता पञ्च, जाव  
चण समण जगव महावीरे जगवतु गोयमस्स एयमठ परिकेइइ, तावचणसे खंदए कञ्चायणसंगीते तंदेस  
इह मागए, तएण जगव गोयमे खंदय कञ्चायणसंगीते श्रुदूर मागय जाणेसा सिप्यामेव श्रुत्तुठेइ श्रुत्तु

देवास्त्विमावयति एतदेव भविता । तुम्हाते समीपे मेव यद्गते । आगारायाचयणात्त्वियवत्तरण एव तावदू । एवस्त्वायमकांक्षी साधुपक्षी प्रवक्तव्यं दोषा  
नेत्ये इति पञ्च इतीतम । समय इत्ये । अतर्कव । जेठेकासे । समये भगवन्महावीरे । खंदव भगवंत योमहावीरस्वामी । भगवन्मोक्षमस्य । भगवन्तगो  
तमने । एवमइ परिकेइरे । एव यव कञ्चायुते । ताववपथेखंदए कञ्चायणसंगीते । तेतथेकासे चणुन च वास्वायनगोभौय । तदेव  
इयमासए । तेदेवी चरित्त चरवमस निवेगना श्रुतस्त्वाने अतावद्वी आख्या । तएवभगवन्मायमे । तितरे भयवत गोतम । खंदवकथायवसंगीत ।  
युइव आस्वायन माभोग प्रते । पदूरप्पामवजाविता सिप्यामेवपथइइ १ १ ता । निकट पासै पाया जायोने कथावत्ता आसनयो छाव्वा भगवंत गोतम  
पमंयतीने किम अठे इसे पूव्वा उत्तर खंदव पावत्तर सबतीइसी तथा गोतमस्वामीने रायचोवधवागवो तथा भगवन्तगो आन प्रगट्ठरण भिमिने  
अठोने । पिप्पामेवपथवत्तर १ १ ता । आतासा सांभोकाय आरने । जेथेवखंदएकथायवसंगीते । जिह्वा खंदव आस्वायनगोभौय ववो । तेथेवज्जा



सागयगदयति ॥ स्थायतं शोभन मागमने तवस्तन्दुव महाकस्यानित्ये प्रगवतो महावीरस्य सम्यग्देव तव कल्याणनिधन्यमत्वा तस्य ॥ सुसागयति  
 अतिप्रियम न्यागत कयन्ति देवार्थं वाञ्छन्ता वेती एकायशब्दोच्चारणं कियमात्र न तुष्ट समुभमितिमात्वा वस्येति ॥ अङ्गरागयसदयति ॥ देवस्या  
 गमिष्यता दय्यागत मन्त्ररूप मागमन इत्यन्त्यं तवेति हृदये ॥ सावप्यमवराणयति ॥ शोभनत्वानुपपत्त्यस्यस्यमद्वयोपेतं तवा गमनमित्यर्थे ॥  
 प्रयेयइति ॥ यस्यामेव दिदीर्घं प्रगवत्समवसरं ॥ तेवेति ॥ तस्यामेवविशिष्टि ॥ अन्त्येसमन्वेति ॥ अन्त्येसमन्वेति ॥ पाठान्तर काका

ठेइत्ता स्थिप्यामेय पञ्चगच्छइ पञ्चगच्छइ जेणेव खंदए कञ्चायणसगोप्ते तेणेव उद्यागच्छइ उद्यागच्छइत्ता  
 खदय ! कञ्चायणसगोप्ते एव ययासी, हेखदया ! सागय खदया ! सुसागय खदया ! सुणुरागय खदया ! सागय  
 मणुरागय खदया ! सेणूण तुम खदया ! सावस्थीए पयरीए पिंगलण नियठेण वेसाळियसायएण इणमस्के  
 यं पुच्छिए ! मागहा ! किं सस्यतेलोए एव तचेव जेणेवइह तेणेव हसुमागए, सेणूण खदया ! अण्ठे समठे, ह

गच्छइ २ ता । तिहा पावे ते तिहा पावोने । खंदइ कञ्चायणसगोप्ते । खंदइ काकायण मागना यथा ते प्रते । एवववाचो । इम कञ्हातुवा । हेखदया ।  
 हेखदइ । मागवर्षइहा । तुम्हाए मागमन माभन हेखदइ । सुसागयखदया । अतिशयेकरी माभन तुम्हारा मागमन हेखदइ । अङ्गरागयखदया ।  
 पदचम तुम्हारा मागमन इच्छइ । मागमनङ्गरागयखदया । माभन तवा पदचम तुम्हारा मागमन देइ कञ्चे सज्जुव तुम्हारी मागमन हेखदइ । से  
 वंनुमछइया । ते निवे तुम हेखदइ । मादळोएकरीए । आच्छो मगरीये । पिंगलएवर्षियठेवं । पिंगलनामे निषवसाधु । वेसाळीवसायइवं । भीम  
 शोरीना वचन सुवचानि रमिळ । इवमस्केपुणिए मागना कियतेलोए पयतेलोए । इसे पावेये पूण् जेमायव । मगधदेयना छपना । पूं खोव  
 येन महितवे पचरा पनंत मोव येन रदिगळे । एवतचेव । इम सय विमकीज कइवो । केवेवइवं तेवेकचममागए । किय दिदिनेविने भवनेत श्रीमहा  
 योरीना वमइसए तेदिदिनेविने छरापवा पाया । ऐवर्षइहा । ते निवे हेखदइ । कियतेसमठे । पूं पच वमइ वुव ए पवे इतिपत्र खंदइ कइवे

चेद मध्यं ततः प्रारभ्यः सङ्गत इति प्रसङ्गः स्यात् उत्तरसु ॥ इति प्रसङ्गः ॥ सङ्गतोयमर्थ इत्यर्थः ॥ काशीत्यादि ॥ अस्या यमनिप्रयाय प्राप्ता  
 प्राप्तामर्ष्यो न्यागति तपस्वी च तपःसामर्थ्या इयतासाविध्या ज्ञानातीति प्रसङ्गः ॥ रहस्सकथेति ॥ रहः कृतः प्रच्छन्न कृतः स्वयंप्रया यथा  
 रितत्वात् ॥ अन्त्यायिरिति ॥ इति एत दित्याह ॥ धर्मोवयस्यस्येति ॥ उत्पन्नानामवर्णनचरो ननु सदा सविदुः अर्हन् वदमाद्यत्वात् किनो रागादि  
 सेवत्वात् केवली वदन्त्यापान्तात् अतएवा तीतप्रत्युपस्थानागतविद्यायकः सच देशयोग्यि स्या वित्याह ॥ सर्वेषां सर्ववक्षो ॥ विपद्गोचरि ॥ ध्या

ताश्चल्य, तएण सेखंदए कञ्जायणसगीत्ते जगव गोयम एववयासी, सेकसिण गोयमा ! तहा रुवेणाणीवा  
 तवस्सीवा, जेण तव एसच्चंठं ममताव रहस्सकथे हव्वमस्काए जण्ठण तुम जाणासि, तएण सेजगव गोयमे  
 खदय कञ्जायणसगीत्त एव वयासी, एवखलु खदया ! मम धम्मायिरिण धम्मीवएसए समणे जगव महा  
 धीरे उप्पय्णणाणदसुणधरे अरहा जिणे केवली तीयपसुप्पसमणागयधियाणए सव्वए सव्वदरिसी, जेण मम

उत्तर । इति प्रसङ्गः ॥ इति एवमर्थं सत्यम् । तएवसेखंदए । तिवारे ते खंदव । अचायस्यस्योत्ते । आत्मावन मोक्षोत्ते । भगवतायम । भगवत गौतम प्रते ।  
 एववयासी सेखंदं गावमा तहाकवे । इम कइतावुवा तेखुव जेगीतम । तवाकय । काशीवा तवखीवा । आनंदरीखात्ते तेजानी, तपवत त तपस्वी त  
 पनी ममनीइवो देवसाविज्जइरे । खंदंतवएसच्चं ममतावरहस्सकथेहव्वमस्काए । जिणे तुमने एवव माइरो तावत् पविता प्रहस्यवोचो हव्वमेविदे  
 व मै धारताइता तेपव जतावसाकइता । अणीव गुमवावासी । जेतुने मोइराममनी रहस्सकापीइता इतिप्रय उत्तर । तएवभगवंगोयमे । तिवारे तेभगवन्  
 गोतम । खंदवसायस्यसमीत्त । खंदवमते आत्मावन मोक्षमा धवो प्रते । एवववासी । इम कइतावुवा । एवंवसुखइवा । इम निये खंदव । ममधम्मा  
 वरिए धम्मावदसए । माइरा धर्माचारं धम्मगासु धममा उपदेयव । समवेभगव महावीरे । यमव भगवत गोमइवावोरसामी । उपसववावदसुणधरे ।  
 उपमा वेवसप्रान वेवददमममा धरइइता । धरइताभिवेखेवसी । विसुवमने पूजणा गोपव राग द्वेय जोता कोइताप्रानसद्धित । तीयपसुप्पसमणागयधिया



दृते २ नमं पुंन इत्येवं श्रीसो ध्यावृत्तनोजीं प्रतिदिननोजीत्यर्थः ॥ शृंगारति ॥ शृंगारोऽन्तङ्गाराविरुता शोभा तद्योगा  
 ब्युत्पत्तिरमिव शृंगार मतिव्ययशोभावदित्यर्थः ॥ अस्याद्य श्रेयः शिव समुपद्रवं समुपद्रवहेतुर्वा पन्थ धर्मफलमभ्यु तथवा सापु तद्वा इति  
 मङ्गल्य मङ्गले वितापप्रापके सापु मङ्गल्यं फलकृत मुकुटादिभि विभूषितं वस्त्रादिभि सान्निधेया वसस्तुतधिपूयित ॥ सखसखजगदुद्योगवेयति ॥  
 तपणं मानोन्मानादि तत्र मानं वसद्वेगमानता जलभुजगुडिज्यायां हि मातव्याः पुरुषाः प्रवक्ष्यन्ते, तत्प्रवेक्ष्ये य जल ततो निस्सरति त यदि श्री  
 ब्रह्मानं भवति तदा श्री मानोपेत उच्यते, उन्मान त्वदेभारसामता मातव्यपुरुषो हि तुसारीपितो यथाहजारभरमनोजवति ततो न्मानोपेतो साधुष्य  
 त प्रमातं पुनः स्थाकृतेना द्वातराकुस्तक्षतोऽप्युता यदाह-स्तदोद्यमद्वार समुद्रावसभूषितं उद्योगवत् । माबोभाकपमाय तिविहसलुलवत्कं  
 यं ॥ १ ॥ व्यञ्जन मपतिलज्जादिक मयवा धवलं लज्जं यथाद्रव व्यञ्जनमिति गुणाः श्रीजाम्बोदयो लज्जव्यञ्जनात्वा वा ये गुणा सौ रूप  
 पत य त तथा उपपद्यते इत्येतस्य स्थाने निवर्तिवता दुपपेत जवतीति ॥ सिरीएति ॥ मन्मया शोभयत्वा ॥ इतुतुष्ठितमाकदिरिति ॥ इतुतु

सिंगार कल्लाण सिव धन्त मगसु स्थण्डिकियिजूसिय छरकणवजणगुणवेय सिरीए स्थतीव स्थतीव छव  
 सोजंमाणे चिठ्ठह, तएण सेखदए कञ्जायणसगोत्ते समणस्सजगवत्तंमहावीरस्स वियहजोइस्स सरीरय उरा

शरहित धन्व दितप्रति । पञ्चवद्विद्विभूषित वल्लभजंजणगुणवेय । धामरवरहितयामे वल्लरहितयामे वल्लभमान उन्मानसहित मन्मसित प्रमुख  
 गुणयोभास्यादिव तिवेसहित । मिरीएछद्व २ उवयामेमावं २ विष्टह । ग्रामायेकरो वषू २ धत्तत उपग्रामायमानवका रवैवे । तणवसिखंदए वल्लाव  
 वसमाने । तिवरि तेसद्व कात्मावतमोषमोषको । समवसवमगवथा मङ्गावीरस । अमभु भगवत सीमङ्गावीरसामोना । विद्यदोईयच्छसरीरयंभारासय  
 तिवभाकोना यरीरमत्ते प्रबानप्रत्ते । जावपईव २ उवसामेमावं २ पासद्व २ ता । यावत् धत्तत २ वषू २ ग्रोभावमान २ वेषे देवीने । इतुतुष्ठित  
 माचदिए पोहमावे । इपपाम्मी संतापयामा पितवेइता धानदितवयो मनवेइजो प्रीतिवचोई वेइता मज्जेविपे । परमयोगमवसिए । परम वरल्लह

ह मत्स्येणुह इष्टं वा विस्मितं नुष्टं च तोयव विहंतं मनो यस्य त तत् हृष्टनुष्टचित्तं यथाप्रवर्तते, एवं ज्ञानवित्तं इष्टं नुष्टसीम्यतादिज्ञाते समु  
 दि मुपपत्तः ततश्च नन्दियति न नन्दित सौ रेव सप्रहृष्टरता मुपपत्तः ॥ पीडमलेति ॥ प्रीति प्रीतिन माप्यायन समसि यस्य स तथा ॥ परम  
 भाषणमिति ॥ परमं योग्यतस्तं सुयत्नकता सम्प्राप्तं यस्य स परमसीमनस्यितः तद्वा स्यात्सीति परमसीमनस्यिकः ॥ हरिसवसविसवप्पमायहि  
 यति ॥ इयवद्वेन विमप्य द्विसारं प्रय इदं यस्य स तथा एकार्यिकानि सैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनाद्यर्थाभिन्ति ॥ दृष्टं च एते सोऽस्य चतेति ॥

लय जाय अतीत्य अतीत्य उवसोजेभाण पासह पासइज्ञा हठतुठचिप्तमाणदिपु पीडमणे परमसीमणासिपु  
 हरिसयस्यिसवप्पमाणहियपु जेणेय समणे जगव महावीरे तेणेव उयागच्छइज्ञा उयागच्छइज्ञा समण जगव  
 महावीर तित्कुहो आयाहिण पयाहिण करेइ जाय पज्जुवासह खदयाइ, समणे जगव महावीरे खदय क  
 च्चायणसगोस एवययासी, से ण तुम खदया सावत्यीपु णयरीपु पिगलएण नियठेण वेसालिसावएण

नमज्जदवा पात्ता । हरिममविसयमाचरियए । इपनेवसेकरो विस्सारपात्ताके इदं जेइको एइवा खदइ । जेवसवसेमगवमहावीरे । जिह्वा  
 यमव भगवन् श्रीमहावीरेवामीके । तेवैवभगवन्महावीरे । तेवैवभगवन्महावीरे । समवेभगवन्महावीरे । जमव भगवत श्रीमहावीर ज्ञानीप  
 ते । तिलाणायायाचिंपयाहिणकरेइ । तीजवार जीमवा पात्तावी मांडी प्रवविवा करे । जावपज्जुवासह खदयाइ । यावत् बोडो नमस्कारकरो से  
 बाबरे हेमइइ इने पामवने । समवेभमवमहावीरे । जमव भगवत श्रीमहावीरज्जुवासी । खदयकायवसगीत । खदयकायवसगीत । खदयकायवसगीत । प्रते ।  
 परंशवाओ मंगुवगुह्या । इम खदयाइया ते जिसे हेइइइ । सावत्तोपववरीए पिगलएवविठेव । यावत्तो ननरीवे विंगलनामे निर्गवसाधु । वेसा  
 निवमाएव । श्रीमहावीरना यवन सुविवाजे रमिज तिसे । इवमस्वेवपुहिणए । इसे पासेपै पूजा । मागवाचिसवपतेलोए । जेमागव ! मगवदेयना ज  
 यना स्वं नाच पंतवहितवै पदवा भवतिओए । भवत रचितओववै । एवंतलेव । इम तिमसीज जिसे । जावजेवेभममचतिइ । यावत् जिह्वा मांडीरो

इणमस्क्रेय, मागहा ! किस्यतेलोए छणतेलोए एव तचेय जाय जेणेव ममस्थितिए तेणेव हृद्यमागए, से  
 णण खदया ! श्रुठे समठे, हुतास्थित्य जेयिय ते खदया ! स्थयमेयाक्ये स्थज्जत्थिए चितिए पत्थिए मणो  
 गए सकय्ये समुप्पज्जत्था, किस्यतेलोए छणतेलोए तस्सवियण स्थयमठे, एवखलु मए खदया ! चउव्विह  
 लोए पण्णत्ते तजहा-वृद्धत्ते खेप्पत्ते कालत्ते जावत्त । वृद्धत्तेण एगेलोए सस्थत्ते १ खेत्तत्तणं लोए स्थसखेज्जात्त  
 जोयणकोणाकोनीत्तं स्थायामविसक्खेण, स्थसखेज्जात्तं जोयणकोणाकोनीत्तं परिसक्खेण पसत्ता, स्थित्य पुण  
 से स्थित, कालत्तेण लोए नकयाइनस्थसि नकयाइननवइ नकयाइनजविस्सइ जविंसुय जवतिय जविस्स

मसोपइ । तेवेवइणमामए । तिहा जतावहा पाथा । सेवूपखदया । तेजिये सेवदक । पणसमठ । एपवं समवं बुल्ले खदवकइ । हुताभत्ति । वज्जि  
 मो सम्वे । जेदिदवत्तेकटवा । विजापवि वपुण ते तुम्हजे सेवदक । थयमेयाक्ये । एयताइयकूप । पय्यत्थिए । चितिए पत्थिए । चितित  
 समोठ प्रावताकूप । मन्नागपर्सकपेसुपत्थिवा । मन् समी मन्नेजियै ममो सखए विचारकण्ण । किस्यतेलोए । खूं सोवधत्तसहित्थे । पण्णे  
 लोए तप्पविबंध्यमइ । सोव धत्तरहित्थे तेइनापवि वपुण वं याव्वाखकारे, एधवत्ते । एवंखलुमएकदया । इम जिदै म्मे सेवदक । वत्तविवेसोएपस  
 जेतंजहा । चार भेइ साव क्खो तेकरीं-दवया खेतया कासो भावो । द्रव्यो १ खेवो २ कावो ३ भावो । दव्योवएमेसोए सपत्ते । द्रव्यो  
 पचाम्मिकायस एव द्रव्यतत्त्वो सोव धत्तसहित्थे । खेतपोषणाएपर्सखेज्जापोषणाकावोवोपी । खेवो खोव मेवपवत्तवो पसत्तातो योजन  
 नी बोवावाहि चर इम चिचिदिमै कावो इम खोदिमै पचादिमै तेधसत्तातो धत्तत्तातो योजननी बोवावाहि । पायामविसंभेय पसत्तेआ  
 पावापवोवाकावो पापरित्ते वेवं पलत्ता पत्थिपसत्ते । पायामदोयपेवं विक्कमविदारपेवं पसत्तातो योजननी बोवावावोवोरोने कट्ठा खोव  
 वे वमो तेवोवनापत्त पत्तसे धत्तमहित्थे । कावोवोवोव एववयाइपत्ति । कावोवोवोव नत्तता एवावता पत्तोत्तावे खदेर नत्तता इम न

पश्चाद्विभाषयन्मैरुद्रव्याया श्लोकस्यमान्तो मी ॥ आयाभविश्वमेवति ॥ आयाभो देस्ये विक्रमो विस्तारः ॥ परिक्खेवेति ॥ परिधिना ॥ भूवि  
मुनि ॥ चमत् इत्यादिनिय पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पर्य मुक्त ॥ भुवेति ॥ भुवोऽप्यसत्त्वात् सचा नियतरूपोपि स्या दतच्चाह ॥ क्रियएति ॥  
नियम उद्भमरूपत्वात् नियतरूपः कादचित्करोपि स्या दतच्चाह ॥ सासयति ॥ आश्रयतः प्रतिबिम्बसङ्गाथात्, सच नियतकासापेक्षयापि स्या दित्य  
त चाह ॥ चरुमति ॥ चरुयो दविनागित्वात्, अयच्च यतुतप्रदेक्षापेक्षयापि स्या दित्यतच्चाह ॥ अद्वयति ॥ अद्वय स्वरूपदेक्षाना मव्ययत्वात् अ  
यच्च द्रव्यतयापि स्या दित्याह ॥ अत्रहि एति ॥ अवस्थितः पयायाकाभनतया अवस्थितत्वात् किमुक्त प्रवति नित्यइति ॥ वक्ष्यपञ्चवति ॥ यर्धेविशेषो  
यद्भमवधानत्वात् एवमन्यपि मुरुस्तपुपयवा साविशेषा वादरस्कथानां अगुरुस्तपुपयेवा अयूना मूलस्कथानां ममूर्तोर्माच ॥ नावपञ्चवति ॥ आ

इय, ध्रुवे णियए सासए अस्कर अक्षर अनाठिए णित्थिपुण से अत्ति ३ । नावठेण छोए अणतावस  
पज्जाया, गधरमफास । अणता सठाणपज्जाया, अणता गुप्पयलज्जायपज्जाया, अणता अगुक्कयलज्जायपज्जा  
या, नत्थिपण से अत्ति ४ सेत्त खदया । दधन छोगे सत्थते, सेत्तन छोए सत्थते, कालन छोए अणते,

१। चक्रवादनभरद । तथा नवी चरेर वसमानकासे नवे एतावतावे तथा । नवयादनमविष्कार । नवीचरेर वसमानकासे नवी इजे एतावता । अविमुवमभतिय अद्वितिय पुवेवियरमाभए । अतीतआसेइती वसमानकासे नवे चक्रवर्चावी एव चक्रवर्चा नितत माकती । अकार एवर पवडिर बिसे । दिनामनहो खेइना प्रदेयापेचाये खिसतु नवी । अवकित एतसेनिलखै । अतिपुचसेपते । नवी ववी तेइनी अंत एतसे चर्मनै । भावपापनीए । भावको लाह । अवतावपपया । अर्नता यचना पयाय एकगुणवासादिने । गवरययास । गवरसयासना पबिबइया । अवतानतापपया । अर्नता अमानना पर्याय । अर्नतागुइइयपपया । अर्नता गवर चपने गुबइयुर्वाय । अर्नतागुइइयपपया । अर्नतासुअ पपने तथा अमूर्नी अमुरइइ पर्याय । अतिपुचसेपतेसंतर्कदया । नवी ववी तेइनी अंत एतसे पबि चर्मनतवै ते एउइक । इअपोखोएसपते

आणियह्वा । तत्पदवच्च सिद्धी सञ्चिता, खेत्तवसिद्धी सञ्चिता, कालव सिद्धी श्रुणता, नावव सिद्धी श्रुणता, जेवियते खदया ! जाय कि श्रुणते सिद्धे तत्वेव जाय दव्ववण एणिसिद्धे सञ्चते, खेत्तवण सिद्धे श्रु सखेज्जापणसिद्धे श्रु सखेज्जापणसिद्धे श्रु सखेज्जापणसिद्धे सादीएश्रुपज्जावसिद्धे, नालियपुण सञ्चते, नाववण सिद्धे, श्रुणता पाणपज्जाव श्रुणता दसणपज्जाव, श्रुणता श्रुगुरुवज्जायपज्जाव, नालियपुणसञ्चते सत्तं । दव्ववसिद्धे सञ्चते, खेत्तवसिद्धे सञ्चते, कालव सिद्धे श्रुणते, नावव सिद्धे श्रुणते, जेवियते खदया ! इमेयारुवे श्रुणालिए चितिए जाय समुप्यज्जित्या । केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वहुइवा हायइवा तत्त्व विषयण श्रुयमठे एवखलु खदया ! माए दुविहे मरणे पण्णवे तज्जा-द्यालमरणेय पण्णियमरणेय, सेवित

विद्ये । पश्चिपुत्रसेषते । यतो तद्विद्वत्तत्त्वं एतत्तद्विद्वत्तत्त्वं काश्चनो च वाक्यासकारे सिद्धिमिवा । नक्त्याविनाशि ३ । नही कदेरं नहुद एतावता हुद्वै हुये । भावभाववाच्योपस्यतवाभाविबन्धा । भाववो यपन जिम सोकनेकनो तिम सिद्धिमिवाच्यवो । तत्तद्वत्त्वोसिद्धीसंपत्ता । तिङ्गं द्रव्यो मिश्रिमिवा यत संहितवे । सेतपोसिद्धिसंपत्ता । येनो सिद्धिमिवा यतसंहितवे । काश्चनो सिद्धिमिवा यतसंहितवे । काश्चनो सिद्धिमिवा यतसंहितवे । भाववो सिद्धीसंपत्ता । भाववो सिद्धिमिवा यतसंहितवे । केविच तेसदया । विवेचपि यपुन सेसद्वे । इमेत्यादवे । एववा रुपेकरो संयुक्तवे । पश्चिपुत्रसिद्धि २ । भावविषय पिताकप । कायसमुपज्जिता । यावत् सकल जपनो । केववामरवेचमरमावेवोवेकवाहायवा । विसे मरवे मरतोवकोजीव यवे ससारता वधवावो जीवतो वधवा ससारतोजीवको जीवतोजीवता । तावत् सकल जपनो । तेहेन पवि यपुन च वाक्यासकारे, यथकनो । एवंसुसु यदया । इम मिये सेसद्वे । मणुविमरवेचनो तेववा । मे वेमकार मरचकनो तेकवे—वासमरवेय । वाकमरच १ यपुन । पविमरवेय । पविमरच २ यपुन । सेवितंवाकमरवे २ दुवाचसविषेचते तत्तदा । ते पू वासमरच ते वाकमरच यारे प्रजारतो कनो तेकवे—यसमरचे । मू



ति ॥ यस्ततो युनुवापरिगतत्वेन यस्तत्सायमानस्य सयमाद्वा प्राप्यतो मरय यस्मरखं तथा यद्धो नेम्रियवद्धोनेन श्रुतस्य पीडितस्य दीपकालिका  
पापित्तचतुयः शाननस्यव य स्मरखं तद्वशात्तमरख तथा यन्ताः क्षयस्य द्रव्यतो ऽनुवृत्ततोमरवे मौक्तः सातिचारस्य यस्मरखं तदन्तःक्षयमरख त  
या तन्मे प्रवाप मनुष्यादेः यतो मनुष्यादोवेय यद्वापुयो यस्मरखं तत्तद्भव मरख मिद्वच नरतिरवाभवेति ॥ सत्योवाक्येति ॥ क्षलेष क्षुरिकादिना  
प्रयपाटन विदारणं दहस्य यस्य स्मरखे तच्छखायपाटनं ॥ विहायस्याकादो प्राव यक्षशाखापुद्गभ्यमेव यत्त निरुक्तवद्धा द्वैशानसम् ॥  
गदुपयेति ॥ यत्रोः पक्षिनिगदै यद्देवो लोसमुद्योः श्वासादिभिः स्पृष्टस्य विदारितस्य करिहरजरासमाविक्षरीरान्तर्गतत्वेन य स्मरखं तत् यत्र  
स्पृष्टवा गृहस्पृष्टवा ; यत्रैवोः प्रक्षितपृष्टस्य य तत् पृष्टपृष्ठ ॥ दुवाससविशेषं वासमरखेति ॥ उपलब्धत्वा वस्या श्वेनाति  
शालमरणे ; यावत्समस्ते

याळमरणे , याळमरणे दुयाळसविहे पयुत्ते तजहा-वलयमरणे वसहमरणे श्रुतोसप्तमरणे तप्तवमरणे गि  
रिपनने तरुपनने जळप्यवेसे जळणप्यवेसे विसनरुके सत्योवाकणे वेहाणसे गिध पिठे , इच्छेण स्वदया !  
दुयाळसविहेण याळमरणेण मरमाणेजीवे श्रुणतेहिं नेरुयनयगहणेहिं श्रुप्याण सजोएइ , तिरियमणुदेव  
ते विनविनाडरता नेटे, पयवा धमबो भटहावमरे १ । वसहमरणे २ । इच्छेण स्वदया ३ । तिरियमणुदेव ४ ।

[illegible]

मपर्याया ध्यानविशेषा बुद्धिकृतावा विभागपरिच्छेदा अनन्तागुरुसंपुर्याया श्रीदारिकाविशरीरा व्याप्तित्वा इतरेतु कामसाविद्व्याधि जीवस्वरूप  
 बाभित्तेति ॥ जेवियतखदयापुच्छति ॥ अनेन समर्थ चिद्विप्रशसूत्र गुणसंबन्धा धोत्तरसूत्राशय सूचित कावद्वयमप्येव ॥ जेवियतेउदयाइमेयासू

आवहं लोए झुणते, जेयिय ते खदया ! जाव सस्यतेजीवे झुणतेजीवे तस्सविपण झुयमठे, एवखलु जाव  
 दधठण एगेजीवे सस्यते, खेततठण जीवे झुसखेजापएसिए झुसखेजापएसोगाठे, झुत्यिपुणसे झुते, का  
 लठण जीवे नकदाइनझ्यासि पिञ्जे नल्यिपुण से झुते, आवहंनं जीवे झुणतानाणपज्जावा, झुणता दस  
 णपज्जावा, झुणताधरित्तपज्जावा, झुणता गुरुयलज्जापज्जावा, झुणता झुगुरुयलज्जापज्जावा । नल्यिपुण

सेतपासीएसपति । इयवही सोव भंतसहितहै, जेपही सोवपि भंतसहितहै । कावही सोव भंतरहितहै । भावपीओएपभंते ।  
 भावही पवि सोव भंतरहितहै । जेविबभंतेउदवा । जेपवि जपुन वही च वाक्कासंकारे, ऐसइव ! कावसर्पतेजीवे पभंतेजीवे । यावत् भंत सचित्तहै  
 जीव, भंत रचित्तहै जीव । तच्चद्विबभंयसमठे । तेहनो पवि जपुन चंवाक्कासंकारे, एयव वावही । एवखलुजावद्वयपीव । इस निचै यावत् इयवही च वा  
 स्वासंकारे, एमेजीवेसपंते । एवजीव इयव भंतसहितहै । छेतपीपजीवेचसखेज्जपएसिए चंखेज्जपएसोगाठे । जेपही च वाक्कासंकारे, जीव चस  
 स्वात प्रदेयाव्यवहै चसज्जावप्रदेय चवगाठहै । भविपुचसेपंति । है वही तेहनो भत, भंतसहितहै । कावपीवजीवे चवयाइयासि । कावही च वाक्कासंकारे  
 रे जीव नही वदेई नहुता एतावता भंतोतकासेइतो भत्तमानकासेइ चनामवकासेइछे । बिसेदमिपुचसेपंते भावपीपजीवे । भित्तहै नही वही तेह  
 ना भंत एतसे पभंतहै । भावही च वाक्कासंकार, जीव । पभतावाचपज्जावा चंभताचंखपज्जावा । भजता ज्ञानना पर्याय चर्नता चर्नना पर्या  
 य । पभताचरित्तपज्जावा । भजता चारिणा पर्याय । चंभतागुचयसइवपज्जावा । भजता सुखपु पर्याय ते चौरिकभरोर पायबीने । चंभता चगु  
 रवसइवपज्जावा भविपुचसेपंते । भंताकाभंभइव भववा जीवस्वरूप भायीने । नही वही तेहनोभंभ एतावता तेहनो भतहै । सेतद्वयपीवीविसपते ।

[illegible]

मे श्रुते संस्र । दध्नं जीवे सश्रुते, खेत्तुं जीवे श्रुणते, जावन् जीवे श्रुणते, जेवियण  
 ते मदया पुच्छ । श्रुतासिद्धी श्रुणतासिद्धि, तत्सर्वियण श्रुयमठे, मए वउच्चिहासिद्धी पक्खत्ता तजहा  
 दध्नं ४ दध्नं एगासिद्धी सश्रुता खेत्तुं सिद्धी पणयालीसजीयणसयसहस्साइ श्यायामविरक्केण, ए  
 गाजायणकोयायालीमसयसहस्साइ तीसचसहस्साइ दोणियश्रुउणापक्खे जीयणसए किंचियिसेसाहिए प  
 रिरक्केण पणत्ता, श्रुत्तिपुणसेश्रुते, काळंण सिद्धी नक्काइ नश्यासि, जावन् जहा लीयस्स तहा

धी प्रविजोर चतरहितहै । जेविदपतियदसगुण्या । जेपवि वपन चं दाम्बासकारे, हेखदख पूबो ! सपतासिहो ! चतसहित सिहसिखाहै प  
 दरा पचतामियो लखविदख । चतरहित सिहसिखाहै तेइनों पवि बपुन । बबमेइखदया । एखबहै हेखदख । अएएवबसुवठभियडासिहोयबसा  
 तत्रदा मी हम निते चारभेदे सिहसिखा कही तेकहीछे—दखभोचएगासिहोसपता । इखबो एख सिहसिखा तेइनों पतहै तेभाटे पतसचि  
 तहै । गुनचो बंनिहोपबनानीमत्रोपबनससहण्याइ धायामविकसभेच । येचवो सिहसिखा पैताभीसखाइ सोजन प्रभाच पाबाम कही दियकभबइतां  
 पाइबपबेइ । एगा आपनबाहो । एख यात्रनो कोहो । वायासोचंमससहण्याइ । बयानीसखाइ । तोसबसहण्याइ । तोमसइख । दोसिसपठबापने  
 आपबमए । सुपमै उगुनपपाच बावन । बिंविनिसेसाहिपएरिछेउंच पवता । कोरएख नियेपाविन पतले कर्हिएकलंका सोबकोस नियेपाविन परि

ना मरणेन प्रियमावहति ॥ दण्डवत्प्रणम्य भूमौ वर्तते जीव इदं हि द्विवचनं प्रुषार्थं इति ॥ पाठवगमनेति ॥ पादपस्येवो पगमम  
मस्पृशतपावस्थान पादपोपगमनं इदं च शुभविषयाहारपरिहारमित्यलमव अवतीति ॥ नीहारिमयेति ॥ निहारिष्यति यत्त त्रिहारीम प्रतिश्रये  
यो विपत्त तस्ये तत् तत्कालेवरस्य निहारकात् धर्मिहारिमतु गोदव्यां विपत्तइति यथा म्यवेह स्थाने इक्षितमरु मज्जिषीयते तद्गच्छप्रत्यास्था

शृणाड्यचरणं शृणवदग दीहद्व चाउरतससारकतार शृणुपरियहइ, सेत वालमरणेण मरमाणे यहुइ यहुइ  
संस्रवालमरणे । सेकित पक्रियमरणे, पक्रियमरणेदुविहे पखत्ते तजहा — (ग्रथसख्या १०००) पाठवगमणेय  
नत्तपञ्चरुकाणेय, सेकित पाठवगमणे पाठवगमणेदुविहे पखत्ते तजहा — नीहारिमयेय शृनीहारिमयेय नियमा  
शृपक्रिक्कमे सेत पाठवगमणे, सेकित नत्तपञ्चरुकाणे, नत्तपञ्चरुकाणेदुविहे पखत्ते तजहा — नीहारिमयेय

नत्तपञ्चरुकाणेयचर्च पञ्चरुकाण दीहमह । तिष्ठ नत्तपञ्च देवगतिस्वर्गते आत्माणां च पादित्तो ययुन धामे संतनही शोधकावा पदा मग । चाउरत  
मसारकतारधपुपरियहइ । नत्तपञ्चरुकाण कतार धटवीमाहे परित्थमपञ्चरु । सेतवालमरणेपरमारेवठठव २ । तेय वालमरणेकरी मरदोवका  
त्रोड समांने वचवेकते जोवधै । सेतवालमरणे । तेय वालमरणेकका । सेकि तं पक्रियमरणे २ दुविहे पखत्ते तजहा [ प १ ] ते खू पक्रित  
मरण ते पक्रित मरण वेमेदे कका तेकरीहै — पाभावमरणे १ । पादप करीये वृच तेकरीये वृच । संतपञ्चरुकाणिये २ । वीवी भात पञ्च  
काण रूप पक्रितमरण २ । सेकितपापोपगमने २ दुविहे पखत्ते तजहा । ते खं पादपापगमन पक्रितमरण पाठपापगमनपक्रितमरण तेवेपकारना  
करी तजरीहै — नीहारिमये । नगरमांकिमरे तेकका कसेवरना मौहारपोहाय तेगीहार मरणकरीये १ । धमोहारिमये । पदनादिके मरे तेकको नी  
हारवी नहाव २ । पिरमापपक्रिक्कमे । निययो पक्रिक्कमया नकरे हाव पग क्कालेवही । सेतपाभावगमणे । ते पादपापगमन मरण कक्रो । से  
कितमरणपञ्चरुकाणे दुविहे पखत्ते तजहा । २ । ते खो भक्तप्रत्यास्थान मरण तेभक्तप्रत्यास्थान मरण २ । वेपकारे कक्रो तेकरीहै — नीहारिमयेय धमो

नस्यैव विज्ञपयति नह प्रदेन दक्षितमिति । यमकाजाविपयति । साचैव-अह्नीयावयस्यती । सुब्रतो जह्यसकितस्सति । जहदुक्कावयत फरिं  
तिदेहंप्रपन्नियदा । १५ अह्नियहियतिता जहजीवादुक्कावयानमुविति । जहवेरणमुवयया कम्मसमुगविहाकिततीत्यादि । २॥ इहएव । अह्निय  
॥

अुनीहारिमेय , नियमा सपान्निक्कमे सेत्त जत्तपञ्चस्काणे । इच्चैतेण खदया ! दुविहेण पानियमरणेण मरमा  
णेजीत्रे अणुतोह नेरइयजवगइणेह अण्णाण विसजोएइ जाव वीयीवयइ , सेत मरमाणे हायइ , सेस  
पानियमरणे । इच्चैएण खदया ! दुविहेण मरणेण मरमाणे जीवे बहुइवा हायइवा , एत्थणसे खदए कच्चाय  
णसगोत्ते सवुद्धे समणजगवमहावीर वदइ नमसइ , नमसइप्ता एव वयोसी , इच्छामिण जते ! तुज्जअ

हारिमेय । उपायवभाणे रई तेइता योरेता नोहारवाहाय अटोभाणे रई तेइता योरेता नोहारवानहाय । विवमासपडिक्कमे । निबय ए पठि  
वमना करे जाव पन डिहावे । सेतभत्तपक्काव । भत्तमत्तावमान मरववहीवे । इवेतेवखदया । इत्तादिसे करो व वाक्कावकारे इखदव । दुविहे  
सपडिदनरेवमरमावेओवे । दुविहपकारे पठितमरव पारावनाविक्करोवीरौ मरतावकोजीव । अक्तेहिरेखसमवयविहिं प्रप्पावविस्वोएइ । अनतरे  
करो नारकोभा मवपडिक्करो आपवा याक्कान विसज्जे अक्काकरे एतावता वतुर्गतित्तमवरूप संसारवो पापवोवीव पसमोकरे । जाववीइवयइ ।  
यावए ससार पंतकरे जावकर्मवक्करो माववाय । सेतमरजविहायए १ । तेए पठितमरवि मरतोवको ससारनोहानि करवावो जोववव्वु ज्ञानियामे ।  
सत्तपडिक्कमरवि १ इवेतेवखदया । तेए पठितमरवक्काओ । एतसे पंडदव । दुविहपमरविक्कमरमाविओवे वड्डइवाहायइवा । वेमकारे मरविक्करो मर  
तावकोओव ससारना वववावी वीक्कवे अजे ससारनोहानिवो जोवनोहानिवो । एत्तवसेवदए । इहा एववे अक्का व वाक्कावकारे, तेवदव । अ  
वापववगाजेवद्वे । वाक्कावनायाओव समक्का इक्का तल्लनोवातजावो । समव समवंमजावीर वदइ कर्मसइ १ । तिहारि अमव भगवंत एववादिवंत  
योमहाओ एवामोमे वई नमस्कारकरे वादीने नमस्कारवतेने । एवंवयाओ । इम कहै । इच्छामिक्कमेतेतुज्जपतिएक्कविनपत्तवक्कमिसामेत्तप । वावु

द्विपचिन्तति ॥ आर्तं निर्वर्तिनं चित्तं ये स्ते सया आर्ताद्वाः अनिश्चितं चित्तं ये स्ते आर्तं निवर्तिनचिन्ता ॥ सुदृढमिति ॥ निपुण्य प्रयत्न म स्नीति प्रालिप्ये ॥ पत्न्यामिति ॥ प्रीतिं प्रत्ययं वा सत्य मिदं मित्यत्र रूपं तच्च करोमी त्यर्थं ॥ रोएमिति ॥ चिकीर्षोमीत्यर्थः ॥ अद्भुतेमिति ॥

ति ए केयलिपक्षे घम निशामित ए, अहासह देवाणुप्यथा मापक्रियध, त एणसमणेजगवमहावीरे स्वद  
यस्सकच्चायणसगोत्तस्स वसियमहद्धमहालिया ए परिसा ए घम परिकेहइ, घमकहा जाणियधा, त एणसे  
खंद ए कच्चायणसगोत्ते समणस्स जगवने महावीरस्स अति ए घम सोच्चा निसम्म इठठुजाव हयाहिया ए उ  
ठाएउठेइ उठेइत्ता समणजगवमहावीरं तिसुत्तो अयाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता एवंधयासी, सहहामि

[illegible]



दानि यथायोग मेकार्पा न्यत्यादरप्रवृत्तनायो कानि ॥ आतिशेखंति ॥ अजिविचिना श्वसित ॥ शोएति ॥ जीवसोक्तः ॥ पलितेवति ॥ प्रकर्षेव  
 एवसितः एवविष यासौ कालनेदेनापि सा दत्त उच्यते आदीप्तप्रदीप्तइति ॥ जराएमरखेययति ॥ इह वज्जिमेति वाक्यशेषो हृतयः ॥ स्क्रियायमा  
 वधिति ॥ ध्यायमाने ध्यायतिवाः इयमान इत्यर्थः ॥ अप्यसारेति ॥ अक्षयं तत्सारं चेत्यल्पसारं ॥ आयाएति ॥ आत्मना एकान्त विजन अन्त  
 प्रुमाच ॥ पञ्चापुरायति ॥ क्वचित्कालस्य पया त्पूवेच सवदेवत्यर्थः ॥ येज्जेति ॥ स्वयंभर्मयोगात् स्वयं वैद्याधिको विद्यासम्पोजनत्वात्

जायधाउरस्ताउय एगतेएकैइ एकेइसा जेणेव समणेजगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण  
 जगय महावीर तिस्रुत्तो आदाहणपयाहिण करेइ करेइसा जाय नमसइसा एववयासी, आलिसेणजते !  
 लोए, जराए मरणेणय, सेजहानामए केइ गाहावई आगारसि ज्जियायमाणसि जेसे तस्य जंऊनवइ अ  
 प्यनारे मांसिगुरुए तगहाय आयाए एगतमत अयक्कमइ, एसमेनित्थारिएसमाणे पक्खापुराए हियाए सुहा

करीने । एउंययासी । इमइई । पारितेवमतहाए । समसुपय हेमगवन् अवधितयना साव एवसे जोवसाक । पभित्तमतेकाए । प्रकये ज्वआजीव लो  
 क हेमगवद् । पारितपनिनेवमतेकाए । आदीत प्रदीत भजया आक्षित प्रक्षित हेमगवन् । साव । जराएमरखेय । खे करो जरा तवा मरखेकरीने ।  
 मेजहानामएवेइमाहावई । ते वडा इडांतनाम इति कीमखामेवइ, कोइएक एइपविसेठ वरणीवनी । अयारहिम्बियावमावसि । घर पभित्तरी  
 नागावका घर वसता वडा इत्थ । जनेतलमेवभव । जिज ते तिहा भाडा पगरखइवे । अप्यसारे । वाडा तहोवसार प्रधान । मांसगुरुएतगहाय ।  
 मान भवा एइवी घरजीवगु ते गते वहीने । आताए एमतमतपयक्कमइ । आत्माये पाते एकांत मनुष्यरहित भूमागनेविवे मंके । एसमेनित्थारिएसमाने,  
 एमे मुम्भने वसुकाकीके ते । पक्खापुराए डिगाए सुहाए । पयै पहिना हितनेकाजे सुखनेकाजे । खमाए थिखेयसाए आसुगामिवत्ताए भविष्खा ।  
 समानेकावे निनेवस इरिइना गस अनुगामियिषे बुले । एवामेवदेवाण्णपिया । इहि दृष्टति हेदेवायुपिय । मज्झविभाषाए । मुम्भने पयि आभापोते ।



अम्यत मत्तस्तकापावां सन्ततत्वात् बहुमतो बहुशो यन्मो वा न्येभ्यः सकाशात् बहुरित्तिवा भतोबहुमत , अनुमतो नु विप्रियकरखस्य प  
पादपि प्रतो ऽनुमतः ॥ प्रहकरद्वगसमावृत्ति ॥ प्राककरयल्लभ मामरकभाजन तत्समान आदेयत्वादिति मावसीत नित्यादौ मावशो निषेधार्थे  
यमिति वाख्यालङ्कारार्थं इहय स्पृष्टस्त्विति यथायोग योजनीय अथवा मायन मात्मान भित्तिव्याख्येय ॥ आसृति ॥ व्याशा व्यापवदनुज्ञाः ॥  
माववाहपिपित्तमिधिप्रियशयिष्यादयति ॥ इह प्रयभाववृत्तवचमसीपो हृदय ॥ रोगाः कालसहा व्याचयः आतका स्तएव सद्य उप  
पातिताः ॥ परीसहोवसगति ॥ अस्य मावभित्त्यनेन सम्बन्धः स्पृष्टानु ऋपन्मु प्रवृत्तित्वार्थं लिखतु इत्यप्रिसन्धाय प पातित इतिभेय स किमि

ए स्वमाए निस्सेयसाए क्षणगामियत्ताए नयिस्सइ, एवामेव देवाणुप्पिया मज्झिमाए ज्ञाया एगे जन्ति इठि  
कते पिए मणुखे मणामे धेज्जे विस्सासिए समए यज्जमाए क्षणमाए जन्तकरुगसमाणे माणसीय माणल्लएह  
माणस्सुहा माणपिवासा माणचोरा माणयाला माणवसा माणमसया माणथाइयपिप्पियसजियसस्सिवाइय  
विधिद्वारोगायकापरीसहोयसग्गाफुससुत्तिकहु, एसनित्यारिएसमाणे परलोयस्स हियाए सुहाए स्वमाए नो

[illegible]

त्याच ॥ यस्यमेवत्यादि ॥ तं दृष्ट्वा मिमं ॥ त तस्या दिष्टानि ॥ सयमेवति ॥ स्वयमेव भगवतीवेत्यर्थः प्रवृत्तिर्त्त रजोहरणादिवेपदानेन आत्मान  
 मितिगम्यत प्रावदा तत्प्रत्यय स्तेन प्रवृत्तानमित्यर्थः मुचिष्ठत शिरीसुष्यमेव ॥ सहावियति ॥ सेहितं प्रत्युपेक्षणादिक्रियाकृतापयाइवत  
 शिष्टितं मूत्राचयग्राहकत साया आचारः शुतक्रानादिविषय मनुष्ठान कासा ध्ययनादि, मोचरो जिज्ञाटन एतयोः समाहारद्वंद्वं कृत सदास्या  
 त मिच्छानीति योग, साया यिनयः प्रतीतो, वैमर्षिक तत्फल, कर्मकायादिपरत्वं प्रातादिकरत्वं पिबकविशुद्ध्यादि यात्रा सयमयात्रा, माघा  
 तदचमेव भारमात्रा ततो विनयादीनां दण्डं कृतत्वं विनयादीनां वृत्ति वंत्तम यत्रा सौ विनयवैमर्षिकपरत्वं यत्राभावावृत्तिको, उत क्त च

संसाए छाणुगामियत्साए नविस्सइ त इच्छामिणं देयाणुप्पिया ! सयमेव पहाविय सयमेव मुग्गाविय सय  
 मेव मेहावियं सयमेव सिस्कावियं सयमेव छायागोयर दिणयवेणिय चरणकरणजायामायावसिय घम्म  
 माइरियं , तएण समणेजगवंमहावीरे स्वदय कच्चायणसगोस्स सयमेव पहावेइ जाव घम्ममाइरकाइ , एव

एव मुभने विष्कारपास्या एमाहरा पाक्का पसेवइ पसेवइसू निक्काला वक्का । परकोवच्छिवाए खमाए निरुपेसाए पण्णागामियत्साए भिच्छर । परलोव  
 ने वित्तकाव समानेकाव मुचिष्ठेत् पनुमानिकपवेइजे । तइक्काभिरुदेवाणुप्पियासयमेवपक्कावियाते कारव वाक्खूणवाक्कावकारे, इदेवागुमिय । पा  
 ते भगवत्तज रत्ताहरणादि देवदानेकते दोषाभाइ । सयमेवमुक्काविय । भगवते पाते त्रिरासुवनकरा । सयमसंसेवाविय । पातेव पाचारक्रियाकृतापयाइ  
 ववो । सयमेवमिज्जाभियं । पातेव जिघाकरो सुवावइववो सयमवधावारगासरत्रिय मेवइव परव करव जायामावावत्तिर्यधममाइक्किय । पोतेव  
 पाचारः शुतक्रानादिविषय पनुष्ठान कासाध्वयनादिमाचरी भिष्काविरव, विजय करवा जेइना फल कमचयइतेत्तं करववतादिक करव पिबविशुद्धादिक  
 संकमयाया पाचारमोमर्मादं तिहा निज्जेत्ते तेवमते तनेक्को इसाइ वाक्खू । तएणसमनेभगवमहावोरे । तिवाते यमप भगवत यीमहावोरक्कामो ।  
 पइर्यवणाउचनगात्तं । सुदक्कपते कात्ताउचनगात्तना भवोप्रते । सयमेवपक्काविय । पाते दोषाये । कावधममाइक्काइ । यावत् सर्वं जिगधमं सकय ववहे । एवदेवा

ममामयान मन्त्रिन्ति धिष्ट्याना तियोगः ॥ एवदेयान्मुष्यपागतवृत्ति ॥ युगमात्रनून्यस्तद्विनेत्यर्थः ॥ एवविधिपद्यति ॥ निष्कमप्रवेशादि यज्जिते  
भ्याने मयमात्ममयनशायपरिहारको दृष्ट्याने न स्थातव्य ॥ एत ॥ निसीदयति ॥ नियतव्य मुपवेष्टव्य सहस्रकनूभिप्रमाजनादिभ्या येमेत्यथ ॥  
एतत्तद्विद्यति ॥ दायितव्य मामपिपिओवारवारिपूर्व ॥ एवजुजियवृत्ति ॥ भूमाङ्गारादिषोपवज्जनतः ॥ एवभासियवृत्ति ॥ मधुरादि विक्षेपको

न्याणुप्पिया । धिष्टियधुं गतम् । एव निसीदयम् , एव तुयहिंयम् , एव भुजियम् , एव भ्रासियम् , एव  
उठाय उठाय पाणोहि जूणोहि जीवोहि सत्तेहि सजमेणसजमियम् , खुस्सिचण खुंठं योकिचिपमाइयम् ,  
तण्ण मेस्यदण् कञ्जायणसगोहे समणस्सनगयन्तु महावीरस्स इम एयारुव धम्मिय उवएसुस सम्म सपक्खिज्ज  
इ तमाणाए तह गच्छइ , तह चिठ्ठ , तह निसीयइ , तह तुयहइ , तहा जुजइ , तह ज्ञासइ , तह उठा

नुप्पियायत्त ॥ इ म इदेवान्मियम् ॥ ३ ॥ इहायुग प्रमाच भूमिमाता । एवविधिद्विष्य ॥ इम निगम प्रवेय वजितस्मान्ने भूमिपूजोने खभोरहिवा । एव  
निनोदय ररन्तयदियम् । इम भूमि पजोने वेमिवा इम मामाविवादि उवारव पूर्वव सूहा । एवभुजियव्य एवंभासियव्य । इम सामारादि खीव ववि  
न नेमवा शायजित्त वाविवा । एवउठायउठाय । इम जठोने २ प्रमाद निद्राने तजिवेवरी जायोने २ । पावेसिं भूण्णि जोवेहि सत्तेहि । पावेवरीने म  
तवरोन जोडेवरादे मत्तेवराने । मज्जेमणमलमियव्य । ते प्राणादिक्खनेवि तेवना रवाकरे तिक्केवरीने यतनकरवो । पक्खिचण्णो योकिचिपमाइयव्य ।  
एदनेविदे वतन व शरदामन्त्रारे खयनेविदे मज्जे कांरि एवि प्रमाउकरवा एतसे समयमाच प्रमाइकरवाजो । तएवखइएववाचवसयोने । तिवारे खइ  
॥ आलापनगाथीय । सुतरम्भमणवधामवागोरए ॥ यमचना भगवत योमहावीरव्यामोभो । इमेण्याकव । एयूवकाणो तेकप । पक्खियठवएसुससपक्खि  
२ ॥ ३ ॥ ४ ॥ मग्गे उग्गेमग्गे भमापरे एतन्नेज भंगोवारकरे । तमाचाएतव्यवच्छा । भनतरेव वको ते प्राणा पावेमोवरीने तिम इयोमिति जाय  
तवविवा तवविमावइ तवपुत्तइ तवभुत्तइ तवभावा । तिमज खमारहे तिमज निपज्जयि वेहे तिमज मूहे तिमज वापरवित पाठारकरवा, तिम



या ॥ वारंति ॥ मद्रूत्यायाम् ॥ सञ्जुति ॥ सुयमयाम् रज्जुरिय या रज्जु रवत्तव्यवहारः ॥ पश्येति ॥ धन्यो धर्मजनसत्त्वैत्यर्थः ॥ कृतिक्कमेति ॥  
 तात्या समत न त्वममयतया यो भो क्षान्तिशुभः, जितेन्द्रिय इन्द्रियविकाराभावात् यद्य प्राग् गुप्तेन्द्रियस्तुक्त तदिन्द्रियविकारगोपनमात्रेवा  
 यि स्यादिति विदोषः ॥ मारिदिति ॥ मोञ्जितः शोभावान् शोषितोवा निराकृतातिचारत्वात् सौहृद मैत्रो सर्वप्राक्किपु तद्योगा स्वीहृदोवा  
 अविवायति ॥ प्रायनारहितः ॥ अप्यस्तुपति ॥ अन्तरीसुस्पर्शरारहितः ॥ अक्षिमेस्वेति ॥ अविद्यमाना वक्षिःस्यमा इहिसा ब्रह्मया मनो  
 र्गति यस्या मा यद्यहिसैश्यः ॥ सुभामस्वरपति ॥ शोचने दमकत्वे रतः अतिशयनवा माभयपरतः ॥ इतति ॥ दातः आयादिदमनात्, दातो  
 याः रागद्वयया रन्नाघेयवृत्तत्वात् ॥ इदमेवति ॥ इदमेव प्रत्यक्ष ॥ पुरष्ठकथंति ॥ अग्रे विषय मार्गानिमित्तो मार्गेश्वरमिव पुरस्कृत्य वा; प्रजा

कायगुते गुतेगुप्तिदिगु गुप्तप्रजचारो स्याद्दं ठज्जु धनो स्वतिस्कमे जिह्दिदिगु सोहिगु ध्यणियाणे ध्यप्युस्सुगु ध्यव  
 हिंसिस्स सुसमणारगु दंतं इणमेवनिगय पाययण पुरत्तं काउ विहरइ, तण्णसमणेजगदमहावीरं कयगलानं  
 णयरानं ठत्तपलासयात्तं चेइयात्तं पफ्फिनिस्सकमइ पफ्फिनिस्सकमइत्ता दहिंया जणवयविहार विहरइ, तण्ण

दिगु गुप्तप्रजचारो वाहं सञ्जु। मन धादिदेहं गावरे, इक्षिभोपवे गुप्त, वज्रचारो वज्रपत्र व्रत धादरे समन्तागवरे, सर्वमन्त्राणां सञ्चित। धर्मेक्षतिष्ठने नि  
 तिशिगु साहिदे चनिवाये पय्यमुर। धर्ममजसहित धर्मायेकरी छमे पक्षि धर्ममक्षपणेनही इन्द्रोविकाररहित वितेन्द्रिय अतोचार सोष्वा पञ्चवा सौहृ  
 द मैत्रोभात्र यवप्राचीनेदिदै निदान प्रायनारहित। अरसकपचारहित। अक्षिमेस्वे सुसामचरण। सबभते तेल्लेया वाहिदिप्रवर्तनही मनोवृत्ति छेदने  
 भया अमपपनो तेहनेद्वियै रतहै। इतेहचमेवचिर्बर्णमवचपुरयोकारंविहर। दांत कावादिक्काठमकावी एप्रत्यक्ष निपेक्ष प्रवचन ध्यामेकरीने मा  
 गता पञ्च। व मागता श्रीव मनव तद्वज्रभागे करीन विचरे तिम सुन्ध पणि विचरे, तण्णसमणेमगयमहावीरे। तिचारि यमव भवर्बत श्रीमहावीरया  
 नो। इदमन्ना पावपरोपा। कवमन्नाभासे नगरीयी। वतयकायमापायेइयाथा। छत्रपलासनामा चैत्यवको। पडिदिल्लमर २ ता। नीकसे भोजनीने।

भौतत्वयिदं त्वासादिति ॥ एकारसंज्ञमाहं अदिग्राहति, इह कथं दाहं न म्यनेन रक्षन्कचरिता त्वागेव एकादशानिप्यसि रवसीयते पञ्च  
 माङ्गान्तर्गतं रक्षन्कचरितं मियं मुपसन्त्यते इति कथं न विरोधः ? उच्यते श्रीमन्महावीरतीर्थे क्लिप्तं नव वाचना सात्रय सर्ववाचभासु स्कन्दकच  
 रिता एवमस्ते ये रक्षन्कचरितामिथया अयो सो चरितास्तददरेव प्रज्ञाप्यन्ता स्कन्कचरितोत्पत्तीच सुपसस्वामिना कस्युमाभान स्वशिष्य म  
 द्रोताया पिक्तवाचकाया मस्यो रक्षन्कचरितमेवा मित्य तदर्थप्रकपकालतेति न विरोधः ॥ अथवा सातिक्षापस्वा द्रुक्षराका मनागतकालजावि  
 चरितनिचयन मदुसमिति प्राविद्विषयनामापठना अतीतकालमिदं योयि न दृष्टइति ॥ मासिपति ॥ मासपरिमाणा ॥ निष्कपुपठिमति ॥ निष्कचित म

सेरवदण् अणगारे समणस्स जगवत्तं महाथीरस्स तहाक्याण येरणं अतिणु सामाहयमाइयाइ एक्कारसअणगाइ  
 अहिज्जाह अहिज्जाइहा जेणेव समणेजगवमहावीरे तेणेय उवागच्छइहा समण जगव महावीर  
 वदइ नमसइ नमसइहा एव ययासी, उच्छामिण जते ! तुज्जेहि अण्णुणाए समणे मासियंजिस्कुपठिम

वदियात्रभवसविहारविहर । वाचिदि देयनेवि विहारकरी विचरे, विहारकरे इत्यत्र । तएववदएवपणगारे । तिवारे तखंदक पणगारसाव । समव  
 ण मगवपामहावीरस्य । अमच भयवत्तं जीमहावीरसामोना । तहाकवाचं येराच यतिण । तथा पत्तणुकिवाणा करणकार तथा कपवे कविरेसाव  
 तेइने समोवे पावे । सामाहयमारवाहं एकारसचमाहं अदिग्राहं अयावयवच यने पाचारीयादिक इत्यार यग तेइमते म  
 ने भवोने । खेववनमकेभमवमहावीरे । विहा अमच समवत्तं जीमहावीरसामो । तेखेवववागच्छइहा २ ता । तिहां पावे तिहां पावोने । समवमगवमहा  
 वीर वदइ नमसइ २ ता । अमच समवत्तं जीमहावीरसामो प्रते वादे नमस्कारकरे वादीने नमस्कार करोने । एववयासी । इमकइ । इच्छामिचमते ।  
 वाचं च वात्सासंज्ञकरे हेमवत्तं । तन्मदिपपण्णवाएसमाचे । तन्ने पाचादीर्घा यका एतवे तन्नारी पाचा हावता । मासिवभिल्लपठिम मासनी मि  
 सु सापुनी मतिमा चित्तं अभिनुचविसेव ते एइणेए सूरपहे मण्णको नीवसी एकमासनी महाप्रतिमा पाइरे, एक दत्तमावज यने एवदत्तपायो गृहे

भिन्नविद्रोप यतत्पश्यन्-मच्छात्रिच्छिन्नमिहा पक्षिज्जन्मसिंघरापटिस । दत्तेजोयवस्सा पावस्सविण्णज्जामासमित्यादि ॥ १ ॥ न न्ययमे  
 बादगाद्रूपरी पटितः प्रतिभाय विशिष्टसुतवानेव करोति यदाह-नष्टेसियकिमाठ आपुह्वाहसजवेधसपुष्पा । नवमस्सतइयवन्नु इतिवइयोसु  
 पाहियसो ॥ १ ॥ इतिरूपं न विद्रोप ? पुण्यते सुठपात्तरविपयो यमुतनियम सस्यत्तु सर्वविपुपदेक्षेन प्रवृत्तत्वा अदोपइति ॥ अथासुनति ॥ सा  
 माय्यनूनासत्तिद्वये ॥ अष्टाकर्म्यति ॥ प्रतिभाकस्यासत्तिद्वये ॥ तत्सत्यवरत्वनतिक्रमेव ॥ अष्टाकर्म्यति ॥ अनादिमोक्षमार्गान्तिकमेव सायोप  
 गमितकथायानतिक्रमकथा ॥ अष्टाकर्म्यति ॥ यथासत्य तात्त्वानतिक्रमक भासिखीजिह्वप्रतिवेति सक्षार्पामतितन्मनेनेत्यर्थः ॥ अष्टाकर्म्यति ॥ यथासा

उथसपज्जाज्ञाण विहरितए , अहासुह देवाणुप्पिया ! मापक्रियव । तएण खदए अणगारे समणेण जगव  
 या महायीरेण अण्णुखाए समणे हठतुठजाव नमसिंसा मासिय जिस्कुपक्रिम उवसपज्जाज्ञाण विहरइ ,  
 तडुण मे खदए अणगारे मासिय जिस्कुपक्रिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम सम्म का

इम वाचन् एवमामन्त्रे इम विष्णार गन्धान्तरबी आचवा इहा कांएवक पूज्ज सुइवता इत्यार अग माच्छात्रे, अने प्रतिमाठा विग्रिह भुववत आद  
 रे मेमाटे इहा विराव दीव्वे ! तेइना उभर एदुत्त नियम पुद्गाम्भरविमेयवै तेषदवे सवज्जे उपदेगेवरी प्रतिमावही तिचेदीपनही, वीतराम तेइनो  
 मन्त्रकप आचे तेषकमानिक माधुनो प्रतिमा आदरीने विवर इमा खंदक पुढ्यावकी भगवतकईते-अवाभुइवाअग्निवा मापचिखव । तिम सुकुहु  
 रे देशमग्रिह पवि दिन्न मकरजो । तएकमेखदएअवगारे । तिवारे तेउत्तवसाह समवेच भगवमामकावीरेव । अमच भगवत अमकावीरेवे । अमच  
 आएममचे । आग्रानोपायका । इहज्जावमर्म्मसिनायासियभिक्षपठिमठवसयज्जिमाअविहरइ । इहपाळो यावत् नमस्कारकरीने माठ प्रमाच साधुनो  
 प्रतिमा अभिषेइमिये तेपादरीने विवरे प्रतिमावही तयकरे इम्भव । यएवेखदएअवगारे । तिवारे तेखइव साधु । मासिर्वमिबसुपठिम । मास प्रमा  
 च साधुनो प्रतिमा अभिषेइमिये । अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम । तिम सूचमाहि कको तिम अतिक्रमेगही प्रतिमा आचार अ

अथ समन्ताधानातिशयेन ॥ अत्राहंति ॥ न सतीरयमासीत् ॥ फासेइति ॥ उचितकाले विधिना गृह्णात् ॥ पालेइति ॥ असकृदुपयोगेन प्रतिजगर  
 मात् ॥ सोहेइति ॥ शोभयति पारककदिनेषुगोविंदसहोपयोगनखरकात् क्षोपयतिवा तिहारपककामनात् ॥ तीरइति ॥ पूर्वेपि तदवधौ सो  
 कजातावस्थानात् ॥ पूरेइति ॥ तत्कृत्यपरिमणपूरयात् ॥ किहेइति ॥ कीर्तयति । पारककदिने इदं वेद रीतस्याः कृत्यं तच्च संपाकृत भित्तयेव की  
 र्त्तनात् ॥ पदुपलेइति ॥ तत्कृत्यमासी तदनुगोदमात् ॥ किमुत्तं जयतीत्याह प्राप्ताया कारायतीति, एवमेताः स्वसप्तमासारां कृतोपमी प्रथमा

एण फासेइ पालेइ सोत्तेइ तीरेइ पूरेइ किहेइ क्षुणुपालेइ क्षाणाए क्षाराहेइ, समं काएण फासिहा जात्र  
 क्षाराहेहा, जेणव समणेजगव महावीरे तेणेव उद्यागच्छइ, उद्यागच्छिता समण जगवं जाव नमसिहा एवव  
 यासी, इच्छामिग नते ! तुज्जेहि क्षुणुखाए समाणे दोमासिय निस्कुपहिम उवसपज्जित्ताणं विहरिस्सए, ए  
 हासुह देवाणुप्पिया ! मापहिधध । तचेन एवं दोमासिय तिमासिय चाउम्मासिय पंचलसप्त, पठमसप्तरा

तिजमनहो आनादिमावमाग विमलं तिमलकवेवको तथा यथापथम भायको समभावकरो धतिकमेनहो । सप्तावारव्यासेइ पासेइ सोभेइ तीरेइ पू  
 रेइ किहेइ पदुपलेइ । भौषट्कारे कावयिकरो करे, विधिपइ करे वारवार उपयोगे पारकादिने गृह्णा सभागकरो कोमे, तथा प्रतीवार दोवटा  
 मे, तदवधाने पूरेइते कितरा एवञ्चान पकसे, तेइना प्रयासपूराकरे, पारकादिने दिने गरुप्रतेइ करारा यथासाथ पूराइयो अनुमावनापूर्वक पासे । आवा  
 एपाराइए सर्वकायवकासिता जावपाराइता । प्राप्तापारावे मखीपरे कावयिकरी करसोन यावत् पारावीने । जेकेसममेभगवमहावीरे । विहारी  
 त्रमन भगवत श्रीमहावीरसाम्भौ । तेवेकवाभक्खइ २ ता । तिहा आवै पावीने । समखमगवमहावीर । अथ भगवत बोमहावीरप्रते । वंदइकावचमसि  
 ता । वधि नमस्कारकरे यावत् गठी नमस्कारकरी । एवमकासी । इमका । इच्छामिगभते तन्नेलिपमपुष्पाएसमावे । वीक्षु पक्षावकाए, समग  
 न् । तुत्तारी प्राप्तापाम्बावका । दामासिबभिवपुण्डिमउवसपज्जित्ताचज्जित्ताए । दिमासनी साधुनो प्रतिसा भादरेने विचरु एनाम दिमासिककरो





यत्र तत् गुबरजसुवस्वरं तप इह च ज्योत्स्नायाः सप्तदशदिनापि ताः स्तपःकालः त्रिसप्ततिश्च दिमानि पारशक्काला इति एव भाय-परस्वसीस  
 पठयी सुवेवपठवीसपठवीसाय । पठवीसपठवीसाय । पठवीसासप्तवीसाय ॥ १ ॥ तीसातेनीशाविय पठवीसकवीसपठवीसाय । तीसायतीशाविय सोल  
 समासेभुतवदिवसा ॥ २ ॥ पश्चरसदसपठवीस पठरपञ्चसुपतिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि । पञ्चसुदोदोयतज्ञा सोलसमासेसुपारखणा ॥ ३ ॥ इह च यत्र मासे अष्ट  
 मादितपयो यावन्ति दिनानि न पूर्णो ताव त्सप्येतनमावा दारुण्य पूरवीया प्यधिकानि जायेतनमासे सोलानि ॥ पठत्यवतयेकति ॥ चतुर्थ  
 मत्तं याव ज्ञानं त्यज्यते यत्र त चतुर्थं मिय ज्योपवासस्य संज्ञा एवं पष्ठदिक सुपवासद्वयादेरिति ॥ अतिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि ॥ अविश्रान्तेन ॥ दियति ॥  
 दिवा दिवसद्वयार्थः ॥ छात्रकुसुमसुपति ॥ स्थान मासन मुकुटुब मापारे पुतालग्नकप यस्या सौ स्थानोत्कुटुबः ॥ वीरासवेकति ॥ विंशसनेपवि

गारे समणेण जगद्यया महावीरेण अम्भुणुयाए समणे जाव नमसिप्ता गुणरणसवच्छर तवीकम्म उयसपज्जि  
 ताण थिहरद, तजहा-पठममास चउत्थचउत्थेण अग्निस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि विथाठाणुक्कुणु सुरान्निमुहे स्या

गर्भसंस्कारतथावका उयसपज्जिताविवरित्तप । नोबद्धं वृमगवन् । तत्पारी आन्नापास्यावका एवमे तत्पारी आन्नापायातो गुर्भज्जरावियेव तेवने र  
 द ते इनाकरवो तेरेमास सतरेदिन तपकाळ पने ०१ दिन पारचात्ता एव मास १५ ते गबरज सवच्छर तपकम क्रिया पादरीने बिषरू एतले तपक  
 रू इतिपञ्च मनवत कौर्त्त-पञ्चासुद्विगापुनिवा मापद्विबद्धं । ज्जिम सब ज्ञोय तिम द्वेवानुप्रिय । पवि प्रतिवच विद्वज मकरस्त्री । तएवसेवद्वए ।  
 पबयारे । तिपारे ते खरक सावु । समसेवंधयववामावोरेव । समच भगवत श्रीमहावीरस्वामी । अम्भुणुयाएसमासे । आन्नादोपायका वदि । कावच  
 र्भसिप्ता । यावत् नमस्कारकरीने । गुबरजसवच्छरतथावका उयसपज्जिताविवरित्तप । गुबरजसवच्छरमास तपकम, तपक्रिया, पंगोकारकरीने वि  
 चरे एतले गबरज सवच्छरतप पाठरे इत्यत्र । तपकममासं पठत्यवतयेव अविस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि । ते कौर्त्त-पञ्चिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि एव उपवासने स  
 प्रा, इम अठम यप ते वेठपवास, इम यामे पवि वद्ववा, वीसामोरहित अतरारहित तपकमक्रियाकरै । विथाठाणुक्कुणु । दिवसनेविपै पासन छव

याग्रजन्मीए आयायेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउळेणय दोच्चमास लठलठेण अर्निस्कित्तेण दिया ठाणुकु  
 हुए मूरान्निमुहे आयावणज्जमीए आयायेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउळेणय एव तच्चमास अठमअठमेण  
 चउत्यमान दसमदसमेण पचममास आरसमवारसमेण लठमास चोद्धसम चोद्धसमेण सप्तममास सोलसम सो  
 लसमेण अठममास अठारसम २ नवममास दोसइम २ दसममास यावीसइमवायीसइमेणं एक्कारसममास  
 चउयीसइम २ आरसम मास लव्हीसइम लव्हीसइमेण तेरसममास अठावीसठम २ षोद्धसममासतीसइम २

दु वेमे ऋषदनानापरे । मूरामिमुहे । मूरं माइमू अमिमुहे । आवावज्जमीएआयायेमाच रत्तिवीरासवेच अवाउळेच । आतापनाओ ममोवे विज्जा  
 रेतयत्तने ते भूमिकानेविचे आतापनामेतावका रात्तिविचे वीरासम ते सिहासने मनुबबेसीने पय बेळ वरतीराचै नोपावुं सिहासम पराओ काठे  
 त मज्ज तिमओत्र बैरीरै त वीरासमरै वस्सरहित उपाओ मज्ज इत्यव । दाचमासइहइहोच अचिक्किच । वीजा मासनेविचे इहइहे एतले जेठप  
 षामे पारणाकरै वीमामारहित पतरारहित इत्यव । दिवाठाणुइहुए । दिग्नेविचे उक्कडूपासल बेसे । मूरामिमुहे । सुव साइमी सुकराखै । आया  
 रज्जमूओएआयायेमाचे । आतापनाओ भूमिकानेविचे आतापना करतावका । रत्तिवीरासवेच । राओने वीरासने बेसे पूर्वक्कओ तेरीते । अवाउळेच ।  
 पटिधान क्यदिता नममावे । एवंतबेमास पठमपठमेचमम । इसओत्रजियावे वीजेमासे तीगउपवासे पारपोकरै एतले निरत्ते पठमकरै । अठममा  
 पुण्डमम इममेच । ओवेमाने इयमदमम एतले चारे उपवासे पारपोकरै । पंचममासवारसमवारसमेच । पाचमे मओने वारसवारसमे पारपोकरै एत  
 ने पांच उपवास निरत्तेकरै । इहमार्जउदममचइसमेच । इहेमओने इणए उपवासे निरत्ते पारपो करै । सप्तममार्जओसप्तमसोसमेच । सात  
 मेमओने मात उपशमे पारणाकरै । पठममास पठारममपठारसमेच । आठमेमओने आठपाठ उपवासे पारपोकरै एतले । नवममासवीसइमवीसर  
 मम । नवममओने ओमतिम कइतां नवन उपवासे पारणाकरै । दसममासवाओसतिमवाओसतिमेच । दसमे मओने कइतां दसइय उपवासे पार

पन्नरसममास यत्तीसहमर सोलसममासच०हम चउत्तीसहमेणं स्थानिस्त्रिमेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुणु  
सूराभिमुहे स्थायावणन्नुमीए स्थायावेमाणे रीस वीरासणेण स्थावाउणेण, तएणसे स्वएण्णगारे गुणरयणसव  
च्छर तयोफम्म अहासुस अहाकप्प जाव स्थाराहिप्ता जेणेव समणेजगव महावीरे तेणेव उयागच्छइ उवा  
गच्छइप्ता समणजगव महावीर वदइ नमसइ, वच्छहिं षउत्थत्तठमदसमदुवालसेहिं मासध्मासखमणेहिं

बीकरे। एकारचर्ममास षड्वीसतिमवसोसतिमेव। एकारमेमासे एकार उपवासे पारषोकरे। बारसमासंष्ट्वीसतिमवसोसतिमेव। बार  
मे महीने बारिबारे उपवासे पारषाकरे। तेरसमासषड्वीसतिर्मण्डवोसतिमेव। तेरमेमहीने तेरेतेरे उपवासे पारषाकरे। षड्वसमासंतीसतिम  
तीसतिमेव। षड्वमेमहीने षड्वषव उपवासे पारषोकरे। पचरसमासत्रतीसतिमवतीसतिमेव। पचरमे महीने पचर पचर उपवासे पारषोकरे। तव  
सासवममासवचतीसतिम वचतीसतिमेव। सासमेमहीने सोस सोस उपवासे पारषोकरे। अविस्वितेव। वीषमे चतरारहित विवामटाळी। तव  
वचनेव। तपकम क्रियावेकरे। दिवाठाककुण। दिवसनेविने अकउपासनेसे। सूरामिसुहे। सूर माहमे मुखे रक्षिवो। आवावचमुमीए। आताप  
ना बरतावका। रत्तिगौरासयेव। राक्षिनेविने गौरासम पूर्वका तेरीते। अवाउहेव। यहिरव वल रक्षित करमावे। तएणसेवदएण्णगारे। ति  
बारि तेवइव सावु। नुवरयवसवच्छरववाकअपावुण। नुवरल संवच्छरनामे तपकमक्रिया विमवसमाहेव सूचनो मर्वादेवे। अहाकप्प। यवा सामा  
चारिसे पाचारउचित। आवपापहिता। कावत् पापहीने। जेवेवसमवेमवमहावीरे। जिह्वा अमच भगवत श्रीमहावीरस्वामीवे। तेवेवउवागव  
इ २ ता। तिहाभावे तिहाभावेने। समच भगवमहावीर। अमण मगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वटइ वमसइ २ ता। वदि नमस्कारकरे वदिने  
नमस्कारकरेने। वड्विषवत्तसहम। धवे षउत्थ एवउपवास षड्वीस उपवास अठम तीण उपवास। उममदुवाससेहिं। इयम चार उपवास षड  
ग पाँच उपवास। मासमासवसमेहिं विचिनेहिं। मास तीसदिन पचमास पचरदिन तिचेकरी विविच नाना प्रकारना छे। तवोवसेहिं। तपकमे

इत्य नृव्यापारदस्या पनीतीर्भिर्द्वयमनस्येव यत्कल्याणं तद्वीरासुनं तेन ॥ अथावशेषयति ॥ प्रावरबाजावेनच ॥ उरासेषमित्यादि ॥ उरासेन आ  
 मंगारहिततया प्रपानेन प्रपानं चाप्यमपि स्यादित्याह ॥ विपुलेन ॥ विस्तीर्णेन यदुविनत्वात् विपुलेन गुरुमि रगनुष्ठातमपि स्या दप्रयत्नकृत  
 वा स्यान्नचाह ॥ पयसपति ॥ प्रदत्तन अनुष्ठातेन गुरुजिः प्रपलेनवाः प्रयत्नवता प्रमादरहितेत्यर्थः, एवयिषमपि सामान्यत प्रतिपन्न स्यादि  
 त्याह प्रगृहीतन बहुमानप्रदयो दानितेन तथा कस्याचेन भीरोगताकारेण, धिमेन शिवहेतुना अन्येन पल्लयनसाधुना मङ्गस्येन वुरितोपशम  
 साधुना नवीनेव सम्यक्पामना रम्यगोत्रेण उदयेन उन्नतपयवसानेन उत्तरोत्तर वृद्धिमतेत्यथ उदयेन उन्नतजाववता ॥ उन्नमेयति ॥ उन्नत  
 ममा उन्नाना दा न तथा तन ज्ञानपुरुषेने त्यर्थः उत्तमपुरुषयावेवितत्वा द्वो तमेन उदारेण श्रीदार्पयता मिःस्पृहत्वातिरेकात्, महानुभागेन म  
 दामनावच ॥ मुकति ॥ शुक्लो भीरवमरीरत्वात् ॥ मुक्येति ॥ पुनुरावसेन कृत्तौनूतत्वात् यस्मीनि यस्मीवन्मुनि यस्य सो स्थिबर्मायनदु कि

त्रिचिमेहि तत्रोक्तमेहि श्रुप्याण नावेमाणे त्रिहरद्व, तएणसेसुदए श्रुणगारे तेण उरालेण विउलेण पयसे  
 ण पग्गान्निण क्खण्णिण सिधेण धन्नेण मंगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदग्गेण उल्लमेण उदारेण महाणुभागेण  
 तत्रोक्तमेण सुक्कं लुरक्के निम्मसे श्रुठिचम्भावणद्धे किंकिकिंयन्नुए किसे धमणिस्तएजाएयाचिहोत्या, जी

जिदा निवेदरो । पयाःकभावेमावविहर । आकाशेते भाव्यमान तेधन्य मानता विचरेत् । तएणसेसुदएषणमारे । तिवारे तेखदन्न साधु । तेखउरासे  
 न रिउमेव पयमेण पक्खिदिपेवं पक्कायेवं मिदेवं धन्नेन । मिचे पागनाकरी रचित विधमेकरी विस्तीर्णं चकादिनमाटे गुरुसमीयेगया अनुष्ठातमुदभी  
 दइमानमो गच्छा भीरागने कारयेकरी शिवहेतुगेवरी धमद्वन्द्वरा । मंगल्लेन समिरिणं उदग्गेन । वुरित उपयमेकरी भक्ती परै खासबाबी संयोम  
 नेवरो दिनदिनपते तपनीयदि । उदलेवं उत्तमेवं उदारेवं महारुभोगेन । चठते परिचामेकरी ज्ञानवृत्तिकरी उत्तम पदयेसेया वीबारचित निस्सुइय  
 वीवो मर्जातपचा प्रभावक । तवोद्वेषेवं सुवेभुल्लेनिभसे । एवमे तपकम त्रिधायिकरी यरीरसूना तिरसपथावी मूखमेवसे मोसरहितवयो । चट्टिपभाव

1944

विबो अशमविधि मङ्गपला प्रवर्त्ती त्वग्निप्रायेष दग्गवैश्वदेवे शोक्नुः सज्जन भाजुव मह इत्येव ॥  
 फलति ॥ यः प्रादुः प्राकारये ततः प्रकाशप्रजाताया रजस्या पुष्टोत्पलकमसोमलोम्नीसिते पुत्रा विकसितं तच्च तदुत्पलक पुष्टोत्पल तच्च कम  
 भय इरिबिद्विषय पुष्टोत्पलकमन्त्री तयोः बोमल मन्तोर मुन्नीसित दानाना नयनयो बोम्नीसल यस्मिं न्ना तथा तस्मिन् भवेति रजनीविमा  
 तानन्तर पायनरे प्रजाते रक्षाशोकप्रकाशेन किमुक्तस्य शुक्लमुखस्य रागेव सदृशो यः स तथा तस्मिन् तथा कमलाकरा ब्रवावयः स्ते  
 य दक्षानि नलिनीलकानि तया घोषकी यः स कमलाकरपद्मबोधक सस्मि भुत्विते कस्मि कित्याह ॥ घुर ॥ पुन किम्भूतइत्याह ॥ स

ण नगद्यमहावीरे जिणे सुहृदो विहरइ, ताथ तामे सेय कस पाउप्यजायाए रथणीए फुसुप्यलकमलकोमलु  
मिळियमि झुहपदुरे पन्नाए रत्तासोगप्यकासे किमुयमुयमहुगुज्झरागसरिसे कमलागरसरुबोइए उठियमि

पुण्याचार पराजम पतले पाचसंगे उद्यानादि सर्वथा चीयवया नवै तेमाठे आसवे सुभने । अलिङ्गये । कै उद्यान । कथे वसे वीरिए पुरिखवा  
रपरवने । जम बल वीय पुण्याचार पराजम । आवडने वयावरिए ध्यावणसए ध्यावणसए धनाचारं धर्मापदेशक  
धर्मवतक धर्मभगवत श्रीनारायणजी । विवेकवतीविजय तावतामस्य । बोलावै राययेय जिबं, सुभावावै मयप्रते, अथवा सुहृदीनीपरै वि  
बरे तेतवाकाजवने सुभने यवमसीक । कण्ठभाएरवणी । आगामि प्रभात राचिनेविये । फण्णसकमसकोमसुमिसिखसि । विवधित उत्पन्नफूट  
कमल हरिचनीनेव बोमल पळठार कमळा दह हरिचमा नव मिलाया ते कथोमितवया । अथ पोरुर प्रभातववा । रत्नासागय  
यासे । रागा अगाव हचना पुष्टपतिनी प्रभा विवेकरी । विसुयसुयसुयगुणहरागसरिसे । येमहागोपल अथवा शुद्धनामुख अथवा विरमोभोपसं तेइना  
रागमरीगात्र । कतकरगरस्तकाइए सङ्गिभिमेरे । वमसनावागर सरावर तेइनेविये नखिनोखण तेइने विद्यावचहार तेइनेविषे छगतेबके सूर्ये । स  
अष्टारनिनिदिपरे तेमस असते । सइस निरवसहित दिगकरसूय तेइकरी काळ्यलमाग एसावता प्रभातसमये । समथभगवमहावीर । असथभगवत



यस्यसि ॥ ससिप्यतेकृशीक्रियते नयेति सलेयना तप सस्या ओयदा सेवा तथा शुष्टः सेवितो छुपितोवा सपितो य स तथा तस्य ॥ असपायप  
रियाइकिउपसति ॥ प्रत्यास्यातअनयानस्य ॥ कासति ॥ मर ॥ तिष्ठतु ॥ इति क्त्वा इदविपयीकृत्य ॥ एवसंपेहेइति ॥ एव मुक्तलक्षयमय सम्प्रेष्ठत

याइस्किपस्स पाठवगयस्स कालं स्युणयकस्वमाणस्स यिहरिसएसिक्कट एवसंपेहेइ एवसंपेहेइहा कसपाउप्पन्ना  
याए रयणीए जाव जलत जेण्यसमणेजगवमहावीरे जाव पज्जुवासइ स्वययादि, समणेजगवमहावीरे स्वदय  
स्युणगार एव वयासी, सेंजुण तव स्वदया पुवरसावरत्त जाव जागरमाणस्स इमे याक्खे स्युप्पत्थिए जाव समु  
प्पज्जित्या, एवस्सलु स्यहं इमेण एयाक्खेण उरालेण विउलेण तवेय जाय काल स्युणयकस्वमाणस्स विहरित्त  
एसिक्कट, एव संपेहेइ २ हा, कसपाउप्पन्नायाए जाव जलते जेणेव मम स्युतिए तेणेव हवमागाए, सेंजुण

वे ते ससे ॥ १ ॥ कश्चित्ते तेन ते इमोसहा तिचे सेवा तेइने । भत्तयाचपडिवाइस्तिवस्स । मात पांणी पचस्सोने । पाभावमवस्स । पादपायममने । का  
ईपचवक्खमाचस्स विहरित्तएतिक्कट एवसंपेहेइ २ ता । कासमरच प्रचवाइतोवको विचक इवोवरोन इम समस्यपे चाखावे चाकोषीन । कसपाउप्प  
माहाएरवचोए । आयामि ममातसमय मगटववे ववे । जाववसति यावत् काण्वज्जमान मय समतेववे । जववसमेभगवमहावीरे । विहा यमच मगवत औ  
महावोरब्बानो तिहा भावे । जावपज्जवसिह । बाणत् सेवाकरे तेतवे । खदयादि । सेखइक्क । इत्थादिनाम पूवपरे समये भगवमहावीरे । यमच मगवत औम  
हाओग्ग्वानो । खदयंपवगार । खदक्क पचमारमत । एवंवयासी । इमक्क । सेज्जववस्सदया । ते निचे तन्ने हेखदक्क । पुप्परत्तावरत्त । मप्परत्तिने । जाव  
जामरमाचक्ख । जावत् भमचित्ताय कामताब्बाने, इमेवाक्खे पसस्सिए । ए एथाइय इमरूप । धाममपिय । जावसमुप्पज्जित्या । जावत् सक्ख जपना ।  
एव जलु पक्क इमववयाक्खे उरालेक्क विठ्ठेक्क । इम निचेइ पयि एइवे रूपेवरी उदारे पथानेवरी विष्ठोव्वेवरो । तयेवजावकास पचवक्खमाचस्स विहरि  
तएतिक्कट । तिमाज निचे बाणत् कासमरचमते पचवांक्कता वक्काने विचक इसावरोने । एवं संपेहेइ २ ता । इम समस्यपे चाखावेने । कसपाउप्प



टिकटिका निमांसास्त्रिसम्बन्धी उपवेदानादिक्रियासमुच्चः शब्दविशेष सा प्रुता प्राप्तो यः स क्तिटिकटिकाजुतः कश्चो दुयलः, यमनीसम्मतो मा  
 श्रीम्यासो मांसस्य च दृश्यमाननामोक्तत्वात् ॥ जीवजीवेति ॥ अनुस्वारस्या गमिकत्वा ज्जीवजीवेन जीवयत्वेन गच्छति न शरीरवलेनेत्यर्थं प्रा  
 ममांसिमेत्यादौ कालत्रयनिर्दिष्टा ॥ गिलाइति ॥ क्वायति स्थानो मज्जतीति ॥ सञ्जानामयति ॥ सेति शयाय ॥ ययेति हृष्टान्तार्थः नामेति स  
 म्भावनायां यद्वतियाख्यामङ्गुरे ॥ कठसगक्रियति ॥ काष्टमृता शुद्धिका काष्टशुद्धिका ॥ पत्तसगक्रियति ॥ प्रलाङ्गादिपत्रप्रुता गत्री ॥ पत्ततिलम  
 ळसगक्रियति ॥ पद्मपुष्पतिलानां प्राक्कलानां शुन्यप्रजाजनानां प्रुता मंत्री इत्यर्थः ॥ तिलसठगसगक्रियति ॥ क्विवित्याहः प्रतीसार्यय ॥ परककठ

यं जीवेण गच्छुइ, जीवजीवेण चिठइ, नासनासिता विगिलाइ, नासनासमाणगिलाइ, नासनासिस्सामी  
 तिगिलाइ, सेजहानामए कठसगक्रियाइया पत्तसगक्रियाइया पत्ततिलजकगसगक्रियाइया एरककठसगक्रि  
 याइया इगालसगक्रियाइया उरहिवियासुक्कासमाणी ससहुगच्छुइ, ससहुचिठइ, एवामेव स्वदण्ड्यणगारे सस

भवे । इह चान्दोये करो वीत्वा एतच्छेदाह चामडोरहो । विटिकटिक्रियायू । मांस रक्षितश्चाह तेमाटे बैठतां कठतां क्तिटिकटि शब्दइवे । क्विसे । दूय  
 पाइया । यमपिमतए । मांसने चयेकरो गच्छिनीकलो । जातेवाविद्यात्वा । एववा स्वदकसायु बयोरगोइ । जीवजीवेवंगच्छइ जीवजीवेकचिठइ । जीव  
 हे तेजीवेने बसेकरो मांए जाइ पबि शरीर बसेकरोनही जीवनेवसेकरो खभोरहै । मांसभासित्ताविसिखाति । तोनकाव निर्देयवे चतौतकासे माया  
 वाणा स्थानवाय । मांसमांसमावेगित्ताति । मायावीकताकको वत्तमानकासे स्थानकाय । भासभासिस्थामौतिगिखाति । भाया भागामिकासे बोभयं  
 ता पबि स्थानवाय । मेत्र इजानामर । ते यवा कटोते आम इसे समावनाये ए इतिवाक्याजकारे । कठमगक्रियाइया पत्तसगक्रियाइया । काष्टमरी मय  
 टिका माइको पक्कायादिपक्करी गच्छनी । पत्ततिपर्मडमगक्रियाइया । पाज महित तिकागा मांका यकय माजजो भरी गाइको । एरककठमगक्रियाइ  
 या । एरककाटोपरो माइको । इमाककठसगक्रियाइया । शंकारासंभरो माइको । उवसेद्विषा मुकासमाथो । एवेक विशेषच काट पक्कादिक मोमाने चभ

सगक्रियति । एरककाष्टमयी एरककाष्टपुताया भवति का एरककाष्टयइयं तेषा मसारत्वेन तच्छकटिकायाः शुभायाः सत्या कसिवायेन गम  
भादौ सगएत्वं स्यादिति चङ्गरकटिका चङ्गरपुता गन्त्री ॥ उक्तेदिकासुकासमाधीति ॥ विद्यापक्यं काष्टादीना माद्रोकाभेन सम्यतीति य  
घासमम भायोभ्यमिति पुतासुनइय मसरसिप्रतिष्ठाकाः ॥ तवेवतएकति ॥ तपोसक्येन तजसा ध्यमभिप्रायो यथा प्रसप्यलोनि वंदितृत्वा  
तेजोरहितो ऽन्तर्प्यातु व्यसति एवं स्कन्धो व्यपचितभासशोभितत्वा दृष्टिमितेना दृष्टिमितेना एवसतीति उक्तमेवार्थमाह ॥ त  
वतेत्यादि ॥ पुवरतावरतकालसमयसिति ॥ पुवरत्रय रात्र पूर्वोत्तमो ऽपरत्रय अपकटा रात्रिः पश्चिम सङ्गणइत्यर्थं सङ्गणबो यः कालस  
मयः कालात्मन समयः स तथा तत्र अथवा पूर्वरात्रापररात्रकालसमय इत्यत्र रेवतोपात् पुवरतावरतकालसमयवित्तिस्यात्, वत्सकागरिका

दृगच्छइ, ससदचिठइ, उवचितं तवेण अथचिए मससोणिणुणं ज्ञायासणेविबजासरासिपिच्छिसे तवेण  
तेणुण तवतयसिरीए अतीव उयसोनेभाणे २ चिठइ, तणकालेण तेणसमण रायगिहेनयरे समोसरण जाव  
परिसा पक्रिगया, तेणुण तस्स खंदयस्स अणगारस्स अथयाकथाइ पुवरत्ताथरत्तकालसमयसि धम्मजागरि

वे ते मौचासू भरोदुतो गाढसी पवे तावडोडोवो मूकोवको । ससइयइइ । ससइयइइ । शब्दसहित एतत्वे बोधतो वाचे । ससइचिठइ । शब्दसहित कभोरइ । एवा  
मेवर्त्तएयवयारे मसइयइइ समइचिठइ । तेनाडकाने इहति इमज खुटव पचि निवै यवमार साधु मोसरहितवको वाडना शब्दसहित वाचे एतत्वे  
चानता वाड माडामादि वाचेइ शब्दमारइइ । उवचितेतेवेण । उपचितपुत्रववाहे खेवरीने तपेवरीने । अवचितेसससाविणव तवेण । येथञ्चाहे  
पववाजीनमवाहे खेवरीन मासमाडोडोने तपेवरीने । इयामचेविषयासरासिपिच्छिसे तवेवं तेएवं । अग्नि विम भयना समइबो ठाक्को तप  
सपव तेवेवरो ए भावार्थ विम रचाये ठाक्को अग्निवाडिर तेवरहितववे पनसुत दोपै इम खुटव पचि एगरीनेविवै मासबोडोचवववाहे तेसाटे य  
रोर वाडिर तेवरहितववे पचिमचि यमप्यान तपेवरो दोपेहे वडोडक्या तेडोड धर्म वडैवै—तवतेयविरोएथतोचववसाभेमाचेचिठइ । तपतेवे ग्रीम

जायत कुर्वत इत्यर्थः ॥ तच्चित्तित्तमेति ॥ तदेवमपि शक्ति ताव न्मम उत्तानादि न सर्वथा क्षीयमिति जायः ॥ तज्जावतामेधित्यति ॥ त त तस्मान्  
यावत् तावति प्राणमात्रे चे मयासि ॥ जायति ॥ यावत् ॥ शुद्धित्वमिति ॥ शुद्धापी प्रव्याप्तमिति शुद्धसीमा; पुरुषपरगन्धहस्ती एतच्च प्रगयवसा

यं जागरमाणस्स इमेपादवे ध्युत्पत्त्यि ए धितिए जाव समुप्यज्जेत्या । एवसलु स्थहं इमेण एयारुवेण उराले  
णं जाव फिसे धमणिसतए जाव जीव जीवेण गच्छामि, जाव जीवेण चिठामि, जाव गिलांमि, जाव ए  
यामेव ध्युहपि ससदुगच्छामि, ससदुचिठामि, त ध्युत्थि तामे उठाने कम्मे धले वीरिए पुरिसक्कारपरक्का  
मे त जाव तामे ध्युत्थिउठाने कम्मे धले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कामे आव यमेधम्मायिए धम्मोवेदसए सम

तावका रहै । तेवकावेव तच्चममएव । तेवकावेवित्ते तेवमवनेवित्ते । समच्च भगवत् त्तोसकावोरस्सामो । अवेवरायमिहैवयरस  
मोमरिए । अिहं राजज्जइनामा मवरत्ते तेइनेवित्ते समसराया धाव्या । जावपरिमा पडियया । यावत् पयदा वाडवा धावोइती तेपाज्जेगह । वरपत्तच्छ ।  
तिवारि तेइने । उइउच्छपकगारसु । उइउकनामा साधुने । पक्कयावकाह । एवका प्रज्ञावे विवारिहै । पुधरत्तावरत्तवाससमवसि । मच्चराविकासस  
ममे प्रज्ञावनेवित्ते एवले धावोरारविनेवित्ते । पक्कयायिए जावरमावसु । इमका मरिका इमपिता जायतावकाने इतत्ते धम्मपिता वरतायकाने । इमे  
वाकवे । ए एववो एताइयकय । पयम्मिए । पावविपय पच्चवसाव । चिए । पिताए प्रार्थनारूप । जावसमुप्यज्जित्ता । यावत् जपनो । एवजसुपय ।  
इम निवेत्त । इमेवंपरादेव । एवै इसेएवकरो । उरालेव आवचित्ते । पाशमारहित तेवेकरो यावत् पुर्ववकयो । इमचित्तनएकाए । मीसचवेकरो उठ्ठा  
नादियिजिरहितनाहो नोववो । जोवजोवेवगच्छामि । जोव जोयने वत्ते इं पासं चू । जोवजोवेवचित्तामि । जोवजोवने वत्ते इ उमोरइं चू । जावगिखा  
मि । यावत् ज्ञानववो । जावएवामेव पयपिससईमच्छामि । यावत् काट इत गकटो गकटरे इमच्छ पचि मच्चसहितमायें जाजं चू । ससईचित्तामि ।  
यवरहित उभारएव । तपत्ति । तापचित्ते पचेत्त । तामेउठ्ठावे । तावत् सुभने उठ्ठाव । अवेवसेवोएए पुरिसक्कारपरक्कामेत्तजावताने । इम वव वीय

पर्यालोचयति मङ्गलासङ्गतविजातः ॥ उच्चारणसव्यभूमिपङ्क्तिहेतुति ॥ पाठयोगमना दारा दुष्कारादे स्तस्य कर्तव्यत्वा दुष्काराविभूमिप्रत्यु

स्वदया अंठसमं हतास्थित्य, अहासुहर्दयाण्यपिया मापक्रियथ, तएणस स्वदएस्थणगार समणेणजगवया  
महावीरेण अम्पणयाए समाणे हठुठुजावहयहियाए उठाए उठेइ उठेइत्ता, समण जगव महावीरं तिरकुसो  
आयाहिणपयाहिण करेइ, जाव नमसित्ता सयमेय पचमहस्ययाइ आरुहेइ आरुहेइत्ता समणासमणीनुय  
स्वामेइ स्वामेइत्ता तहारुवोहि परेहि कफाइहि सदिं विपुलं पस्य सणियं सणियं तुकुहेइ तुकुहेइत्ता मेहच  
मसन्तिगास देवसन्तिगाय पुढविसिंसायहयं पङ्क्तिहेइ उच्चारपासवणन्तुमि पङ्क्तिहेइ पङ्क्तिहे

भावाए जावत्तते। आमा मिप्रभातसमं प्रयट्ठवे यावत् जावत्तयमान जय्य। वेधेवमसंति। विहा माहरा समीपे। तेनेववज्जमागए। तिहा उताव  
नो पाया। मणूवसुदवा अइसमो। तेनिचै हेसुदक। एचं समथवै तुकवै। हतापत्ति। हा जामोवै, तिवारे भयवत्तकहेइ—भसासुदेववत्तपिया।  
जिम मुए तिम देवेवाहुप्रिय पवि। मापङ्क्तिव। मिसं मकरणा। तइसंसेइएभचगारे। तिवारे ते खक्क साधु। समवेभभगवत्तमहावीरेव। यम  
न ममवत्त जीमहावीरस्सामो। यमबुछाए समवे। आआदोपायको। इहउइआनहियाए। इहववा सतीयपोन्ना यावत् इदवजेवो। उठाए उठेइ २ ता।  
उठे छठेने। समवंमगवं महावीरं तिक्कत्ता आयाहिणपयाहिणकरेइ। यमव भयवत्त जीमहावीरस्सामोप्रते तीमवार जीमवापासावो प्रदविवाक  
रे। जावचमसित्ता। यावत् ममस्साकरोने। सबवेमवमइववाइ। पातैव येवमहावत्तप्रते। आरुहेइ २ ता। वापे जायेने। समवाय समवीपाय।  
साधभोगमादिप्रते साधवो चदनवासापमुसु प्रते। खमेइ २ ता। समवीने। तहारुवेधियेरेहि। तथा मवीरकट्ठ अवरिसाधु। मवारहिमहिं। वेया  
मयकारी ते सघाते। विपुलपथवसिंख २ इदवेइ २ ता। विपुल पथत तेइप्रते इसवे २ पठे पठेने। मेवववसिंखिगास। सबसमेव मरीखी जाम। देव  
सलिशय। देवसमागम रमवीर। पुठविसिंसावइवपङ्क्तिहेइ २ ता। पुठवो जिया स्थान पङ्क्तिहेइ पङ्क्तिहेइ। उच्चारपासवभूमिपङ्क्ति

चेष्टनं न निरपेक्षं ॥ मयन्वियद्विमलमेवेति ॥ पट्टागमोपविष्टः ॥ शिरसा ग्रामात् भरुए दधवा शिरसि छावर्त्तं प्रायुति रावर्त्तं

हेडप्ता, दन्तसधारय सपरद्ध सपरडप्ता, पुरत्याजिमुहे सपलियकनिसुद्धे करयलपरिगहिहं दसनह सिरसा  
त्रन मत्यण झुजलिम्ह पृथग्वासी, नमोत्युण स्वरहताण जगघताण जाव सपत्ताण, नमोत्युण समणस्स  
जगयत्तं महाथीरस्म जाय सपायित्तामस्स वक्काभिण जगवत्त तत्यगत इहगत्त पासउमेसेजयव तत्यगए इह  
गय तिसिम्ह यट्टड गमसह यट्टप्ता गमसित्ता एववासी, पुच्चिपि मएसमणस्स जगवत्त महावीरस्स झं  
निग मत्ते पाणाडयाण पच्चरकाए जायज्जीयाए जाव मिच्छादंसणसस्से पच्चरकाए जावज्जीयाए, इयाणपियण

इ १ २ भा १ प्रमकारमवर १ २ भा । वडोमेनेति नपुनोति भूमिपते पत्तिमेवे पाटमणेने काभद्ववियवना सवारा पावर पावरोने । पृथ्वाभिमुहेसपनि  
एवविमने । एवदिमि मामुहा पर्येक्कामने वैमे वापटपाणयो वामीने वैमे । करववपरिक्खि । करतण वेक्काय वडोने । डसनहंसिरमावत्तमत्तएअअब्धि  
वट्ट । डमवत्त पाणुनोना मत्त वडोने विवै पावत्त परिक्खमवकरो एतमे वेक्काववाडो । एवववासी नमात्तव । इम वडता इवा नमस्कारइप्पो । चरहताव ।  
नोन भुवनमेविपे पूअथायवनेक्काअ । कावमपत्ताव अमोत्तव । वावत्त मिहमत्तित्थान सपासनेक्कावे नमस्कारइप्पो । समवच्छमगवभीमव्हावीरएअ । अ  
मन मयवत्त गोमहाशेरव्हामीने । आवर्त्तवाविठकामअ । वावत्त मिहगतिनामयेवत्थान पासवामा वामीने । वंदामिभ भगवत्त । नमस्कारवरहं भग  
वत्त गोमहाशेरव्हामीने पत्ते । तत्तवर्त्त भगवत्त । तिक्काएअवे । इहगणपामपमिमेमवत्तमत्तएअइहगइयत्तिवट्ट । इह इहारेअोवको विपुलगिरिपर्वतनेविपे  
देवा भुवनं तेभ्यमयत्त गोमहाशेरव्हामीने तिक्का रक्कावक्का इहा विपुलगिरिरक्का मा वडक्कवामयिक्कपत्ते । इमकरोने । वडइ वरमवत्त २ भा । वदि नम  
स्कार वरे वडोने नमस्कारवट्टोने । एवववासी । इम वडता इया । पुच्चिपियण । पच्चिमा पत्तिमे । समवच्छमगवपां वक्कावीरस्स । अमव भगवत्त ओ  
महाशेरव्हामीने । पत्तिए नमेपावाइवाए पवक्काते । समीये सर्वं प्राप्तातिपात्त विविपिनिविधवट्टो पवक्का । आवक्कोवाए । को खोभंतामणे एअरोर

समणस्स जगवन्तं महावीरस्स स्थितिए सच्च पाणाइवार्यं पञ्चस्काणि जायज्जीवाए जाय मिच्छादसणसस पञ्च  
स्काणि जायज्जीवाए, सच्चस्थसणपाणखाइमसाडुम थउसिंहपि स्याहार पञ्चस्काणि जावज्जीवाए, जपिय  
इमसररीर इठ कतं पियं जाव फुसतुसिकहु एयपिण चरिमेहि ऊसास नीसासेहि कोसिरामिसिकहु, सछे  
हुणाहुसणाहुसिए अत्तपाणपट्टिमाइरिए पाठवगए काळ स्थणवक्खमाणे थिहरइ, तएणसेस्वदए स्थणगारे  
समणस्स जगवन्तं महावीरस्स तहाऊवाण थेराण स्थितिए सामाइयमाइथाइ एक्कारसस्थगाइ स्थिहिज्झिहा यज्झ

अं जीवतां पयत । आरमिच्छादससत्तेपयस्साए कावक्खोवाए । वाक्खु मिथावयनअल्लप्रसुख थठार पापक्खानअ पयक्खाना आजीवूतावगे । इवा  
विपियअ । इमेपवि । ममअस्य ममअधानाजीरएअतिए । अमअ भगवत श्रीमहावीरअमीने समीपे । मअ पाणाइवार्यं पयक्खामि । सव मावातिपा  
त विविध विविधकरो पयक्खू । जावक्खोवाए आव मिच्छादसससकपयक्खामि । आ जीवू ताअने यावए मिथाइयन शस्वमनुअ थठारपापक्खानअ प  
यक्खू । जावक्खोवाए । आ जीवू ताअने । सर्वेपसकपाणंआइमसाइम । सव थयन पाण अादिम आदिम । अछव्विइपिआइरपयक्खामि । वारेइं विवि  
तापाइर पयक्खू । जावक्खोवाए अपिइमसरीर । आ जीवू ताअने जेपवि एयरीर । इडुअतपियंआवपसतुत्तिकहु । इठ कतं प्रिअ वाक्खु रोअ भातअउ  
पमअ इत्थादिअे मअसा इमअरो । थयपिअअरिमेअ । एअपवि शरीर थं वाक्खानाकारे जेअका । अस्साअमीपासेइवीसिराअमत्तिकहु । साआआसंखरो  
आमरावू इति इमअरोने । मअइआमूसकाभूमिए । शरीर दुयअकरोने तेसखेअवा तप तेअमी सेवासहित अइं मत्तपाअपठिवाइरल्लिए । मात पांभी  
तेअने पयक्खीने एतमे पामिराअतो । पाथाअनएआअअअअअअअ अविअर । पाएपोअगअ अगअनेरओ आअमरअअते अअअअअतोयको विअरे । तएअ  
सअरंइए थवगारे । तिवारे तेअअअमाअ । अमअ भगवत श्रीमहावीरदेवना । तहाइरवार्यं खेराअर्यतिए । तथाविव तेअवा  
अरअठ अविअरे समीपे । समाइअमाइथाइ । सामाइअ पादिसेइ । एक्कारसथगाइ थज्झिअणा । इत्थारअअअअ थयू मूथा मूथाअ अकी मअीने । वडुपठि

न परिग्रमयं पम्पा मो मत्प्रमोपा ध्विरस्यायत्त स्तं ॥ अहिप्रताईति ॥ प्रतिमित्रं भोजनद्वयस्य त्यागा चिन्तता दिनेः षष्टिभक्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ यममगापति ॥ प्रारुतत्वा दनशमेन ॥ खेदमिति ॥ खिन्ना परित्यक्त्य ॥ आलोडयपक्रिक्तमिति ॥ आलोडित गुरुकां भिषेदित य इति चा रणात् न रमतिज्ज्ञान मकरपदिविपथीरुत्त यमा सा दामोचितप्रतिज्ञान्तो उचवाः ॥ आलोडयपक्रिक्तमिति ॥ आलोडित खासा दामोचनादामा रप्र निज्ज्ञानम् निम्प्यादुक्तदामा दामोचितप्रतिज्ञान्तः ॥ परिस्मिन्नायवतिपति ॥ परिनिर्वाच मरुत्त तत्र यच्चरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाचमेव

पक्रिपुणाइ दुयालसथासाइ सामणपरियाग पाउणिज्ञा मासियाए सलेहणाए अणुपुणीए कालगाए, तण्णतयेराजगवतो स्वदयअण गार कालगाय जाणिज्ञा परिनिज्ञायासिय काउसग्ग करेइ, पत्तचीयराणिगियहति, त्रिपुलान पड्याउ पड्याउ सणि यमणिय पड्योरहति पड्योरहइहा जेणेवसमणेजगव महावीरे तेणेय उवागच्छइ उवागच्छइहा समणजगव

पन्नाइ न्दाभजगमाइ । वच्चं प्रतिपूज पूरा वारेवरमग्गे । मामम्परिबामपाडावत्ता । वारिज पवीय एतत्ते दीवा पावोने । मासिबाएसलेहबाए । रत्त माभमो मनेउवाये यमयने । यत्तावच्छमिता । पाकांने वेवामे भासरीज । सञ्जिभत्ताइ भववत्ताइ छेदिता । दिक्कमते मोक्कमे दीयन्ता ज्जांगयको बीसे ६५ वाठभात्त यमयने तच्चोने छेदीने गुवादिक्के वेवत्ता यतोवारवत्ता । पावाएसपडिक्कतंसमाव्विपत्ते । ते गुरुने सभवावीने आम्भोइने तेसुको मिय्वा दुच्छनदेइत्त नमाधियाव्वा । मानमोपोइ । दहितवया । पाणुपव्विण्णामयए । यमुक्कमे वावपड्यतो एतावत्ता मरवपाय्मो । तएवत्तेथेराभगवतो । तिवारे न व्यधिर भयर्थ । गुदर्थयजगारकायगएजागिता । म्दुच्चमायुपत्ते मरुणपाय्मो जावोने । परिनिष्ठावन्नित्तवाउसय्यज्जेरिति । मरवत्तेवत्ते तिक्का जेग राक्का पट्टइइत्ते यदि परनिजाव्वोत्त तेत्तेनुवे वेइनेते कावमम्भच्चरे एतसे यनज्जयरोर वासरावोने । यत्तचोवराविभिषइति । पावपड्यो वच्च उपय रत्त वई । रिपनापावयवा पावनिर्घं ९ पञ्चावइति । रिपुयनामा पवत्तव्वो वमने २ अत्तरे अत्तरोज । जवेचमम्भेभजवत्तडावीरे । जिक्का यमव भज

महावीर वदइ नमसइ वदिता नमसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण स्युतेवासी स्वदणामस्युण  
गारे पगइअइए पगइउवसते पगइपयणकोहमाणमायालोने मिउमद्वसपखो स्युत्तीणे अइए विणीए सेणदे  
याणुप्पिएहिं अण्णुप्पिएसमाणे सयमेवपचमहस्ययाणि स्याराहेसा समणाय समणीठय स्वामेसा अम्मोहिं सद्धि  
यिपुल पइय तचेव निरवसेस जाव अणुपुत्तीए कालगए, इमेयसे स्यायारनरुए जतेत्ति, जयवगोयमे सु  
मणजगव महावीर वदइ नमसइ वदिता नमसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण स्युतेवासी स्वद

वत श्रीमहाभारखामोके । तेवेवउवायच्छति २ ता । विहा पावे तिहा पाओन । समबंभगवमहावीर वदइ वमसइ २ ता । वमस भगवत श्रीमहावीर  
सामीप्रते वदि नमस्कारकरे वदनाकरीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहताइया । एवंखलुदेवासुप्पियाण भंतेवासी । इम निसे हेदेवानुग्रिय ।  
इमनवन् । तुम्हाराग्रिय । खइएवामणवमारोपयइ । वदइनामे साहु प्रकतेकरी भद्रक दुष्टचितारहित । पगइउवसते । प्रकते उपयात कयावरहि  
त । पयइपवसुकाइमावमावसि । जमाव पातजापाया कोव मान माया कामजिने । निउमइवसपस चमोवि । खुदु मादव मनेकरी सपूव, वम रणे  
परडाया नबी । भवविपीए । एववा माटैअ भद्रक शिभवत तेइ । सेवदेवासुप्पिएहि । तेव वाक्खासकारे देवानुग्रिय । अमसुखाएसमावे । पात्रादी  
वाइका । सयमेवपचमहस्ययाइ आरजेता । पातैव सव प्राणतिपातादि पंचमहावृत प्रते आरापीने । समबाव । सावुकाजे गीतमाडि प्रते । समबी  
पावयामेता । नावबी चंदनवासाप्रसुखने खमापीने । पनेहिसद्धिपुसपव्यय । एक सवाते विपखमिरिनामा पयते इत्यादि सर्व । तवेवजिरवसेस ।  
तिमज विवि मेये कहबी । पासुपुत्तीएकाखगए । वापव अनुक्रमे कासमरण पंहुता । इमेयसेपाबारभउपभतेत्ति । एव तेइना पाचार मांउपपकरव  
देवउडे हेमगवन । भगवगोइमे । भगवत गीतम समणभगवमहावीर अमच भयवत श्रीमहावीरखामोप्रते । वदइ वमसइ २ ता । वदि नमस्कारकरे  
वादीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहताइया । एवखलुदेवासुप्पियाण भंतेवासी । इमनिसे हेदेवानुग्रिय । तुम्हारी ग्रिय । खइएवाममव



तद्वत् प्रत्ययो ऽगु पत्य न परित्रियाप्रत्ययो त स्त ऽ कर्षिर्नपति ऽ कस्या गती ऽ कर्षितवव्येति ॥ एतद्व्यावृत्ति ॥ एतेषा

एषाम शृणुगारे कालमासे कालकिञ्चा कर्हिगए कर्हिउपवयो ? गोयमादि, समणेजगव महायीरे जगवगो  
यम तथययासी, एयरतु गोयमा ! मम श्रुतेवासी खदणाम शृणुगारे पगइजदए जाव सेण मए श्रुम्भणु  
गाए ममाने नयमेय पधमहस्रयाइ श्राउहेत्ता तंचय सव् श्रवसेसय नेयव् जाव श्रालोइयपभिक्कते समा  
हिपमे कालमासे कालकिञ्चा श्रुम्भणुएरुप्ये देयसाए उववये, तत्थण श्रुत्येगइयाण देवाण यावीससागरोयमा  
इ तिइ पणत्ता, तत्थण खंदयस्सयि देयस्स यावीससागरोयमाइ तिइ पणत्ता, सेणजते ! खदए देवत्तान

बार। एतद्वचनाम मापु। काममानजानकिचा। कामने पवमरे कामजराज मरुवपीमोने। कर्हिगएकइइववये। किमिमतिनेवि वि सादेवसाका  
दिबदेतिवे जयता इतिपत्र। गाउमादि। मोतमादि इमे मगाधन। समवेभमममपतेवामी। इम नियो ईमोतम ! माउरो शिय। खदएणामपचगरि। खदइ इवेनामे साधु।  
मउते। एरइवामा। इम कइताअवा। एरवकुहायामाममपतेवामी। इम नियो ईमोतम ! माउरो शिय। खदएणामपचगरि। खदइ इवेनामे साधु।  
वमउभए आइमेवमव। यावत् तेइमे भि वाम्मादोपाववा। मयमउपवमममपतेवामी। यावत् पाव्वाइ पडिबमोने निरावाधपई समाधि  
वम एरमेविउतव्ये। तिमत्र नियो मय श्रिमेपरजित कइता। आवापामोइवपडिबते ममाधिपते। यावत् पाव्वाइ पडिबमोने निरावाधपई समाधि  
पामो। जानमामेकानकिचा। कामन पवमरे कालगतै वरोने। पमएकमेदेवताएउववये। बारमा चउतनामा देवकोकनेवि देवपचे जपमो। तत्तव  
पारमेवयावरेवाच। ते बारमा देवनाकनेजिये जेतनाएव देवमा पनि मगजानोमरो। मावोससागरोयमाइहिइपचत्ता मावोस मागनेपमनो किति  
पात्रगामो कइो। मउभगइवव्यविदेवमा। तिहा खदइ पनि देवमी। मावोससागरोयमाइहिइपचत्ता। मावोस मागनेपमनो कितिबही पाज्जजानो  
विमामवमा। मेरुभतिवएदेवतायाइवोपामो पाठलएव मवसएरईइएव। ते च माव्वामवारे देवमवन्। खदइ देवतायो देवकोकनी पाज्जजम

मनु सूर्यां ॥ आउक्तायति ॥ आयुःकर्मसिद्धिर्भवेत् ॥ देवप्रयत्निकमन्त्रकर्मणा गत्यादीनां निर्भरत्वेन ॥ ठिक्कण्ठेन ॥  
 आयुःकर्मसिद्धिः स्थिते वेदनेन ॥ अर्चनं ॥ देवप्रयत्निकमन्त्रकर्मणा गत्यादीनां निर्भरत्वेन ॥ ठिक्कण्ठेन ॥  
 अतएव गमिष्यतीत्येव मननारयस्य सम्बन्धः कार्यः ॥ इति द्वितीयस्तप्रथम उद्देशः समाप्तः ॥ १ ॥ अथ द्वितीय आरम्भते, अस्यवाय  
 मन्त्रिसम्बन्धः ॥ अथवाभरवेकमरमावेकीवेकइति ॥ प्रागुक्तं मरकटं मारुतानिअसुमुद्रातेन समवहत्तस्या म्पथाच प्रवर्ततीति समुद्रातस्वरूप मिश्रो  
 व्यत इत्येवं सम्बन्धस्या स्वेव सूत्रं ॥ अथवततेसमुद्रायाइत्यादि ॥ तत्र इमद्विहागस्योरितिवचनात् इमनानि पाताः, स मेकीमावे च त्मावस्ये तत्  
 य एकीनामन प्राक्स्थानं पाताः समुद्राताः अथ कन रुई कीजाव ? उच्यते यदा आत्मा वेदनाविसमुद्रातगतो प्रवर्तति तदा वेदनाद्यनुभवज्ञानप

देवलायान् आउक्तायति नक्कण्ठेन ठिक्कण्ठेन अथचठत्ता कहिगमिहिति कहिउवयज्जिहिति गीय  
 मा ! महानिठेहि सिज्जिहिति युज्जिहिति मुच्चिहिति परिनिष्ठाहिति सव्वदुस्काणमत करेहिति स्वदठसम्मत्तो ॥  
 धिहुयसयस्स पठमो उव्वेसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ कइणत्त ! समुद्राया पय्हा ? गीयमा !

नादम निवरवेकरो द्रवभस्वकथो कर्मयत्नादिकने निर्भरवेकरो पातकावमनोक्तिने वेदवेकरो । अथनरवचरत्ता । अतए रचित अमुक्ते मरी  
 रतेने ततोने । कहिगमिहिति । निष्ठाकाळे । कसिचवज्जिहिति । किङ्को उपजले एसे प्रयुक्तीये । गोयमा मरुदिवेदेवासेसिज्जिहिति मुक्तिदि  
 ति मुच्चिहिति परिबिम्बाहिति । वेगोतम । मरुदिवेदेकनेविपे सोभस्य तत्त्वना जावहुणे जमवो मूक्ताळे प्रोतवो भाव हुल्ले । सव्वदुक्कापमेतंकरि  
 हिति । मरीरमानम सुखमो अतवरल्ले ए र्पवधियवमो अथ पूर्वसिक्काळे तेहयो विक्कुरे जावना । सुइयोसपत्ता । एक्कइवमा अधिकार सपूषवयो ।  
 वितियसयस्सपठमा रुई सासपत्ता । एवोभायववना यहिवा रुईया पूरावया ॥ १ ॥ पाळिल्ले विवेमरुमि मरतायका जीवयधे इसो  
 मरगमा अधिकार वज्जा, ते मरव मारुतीति समुद्राते करोबाय तेमाटे मरवसमुद्रात कहेयिक्के । मरुभमतेसमग्गयाया पय्हा । वेतसा हेमगवन् । स

रिक्ततण्ड यत्रभीति यत्रनायनमयच्छायेन सहैभीतायः अथ प्राक्स्येन चाताः कथं ? मुच्यत यस्मा द्वेदनादिसमुद्भासपरिचितो यद्गुं वेदनीयादिक  
 मप्रदग्गान् कानातरानुभवयाग्या मुदोरखाकरनेना रुच्य षडये प्रक्षिप्या मुनूय मिळरयति आत्मप्रवेष्टी सः क्षिपान् शासयतीत्यथ अतः प्राव  
 त्यन पाताइति ॥ सप्तसमुग्घापरिति ॥ यदनासमुद्भासावप एतथ प्रक्षापनाया मिव द्रष्टव्याः अतयवाह ॥ कठमत्यिरुत्पादि ॥ काठमत्यिरसमुग्घाय  
 यज्जन्ति कडबजन्ते । काठमत्यिरामनूयायापक्खाइत्यादि मुद्रवन्ति ॥ समुग्घायपर्यति ॥ प्रक्षापनायाः पट्त्रिंशत्सप्तपद समुद्भातार्यं मिह नेतव्य  
 तथैव-कडव जल । समुग्घाया यन्मत्ता ? गोयमा । सतसग्घाया पक्खा तांजडा-वेयकासमुग्घाय कसापसमुग्घाय इत्यादि इहसयइभाया-वेय  
 व १ कसाय २ मरवे ३ कडविय ४ तयण्य ५ पाञ्जारे ६ । वेयवियवजन्ते वीधिमनुस्वारुततव ७ ॥ १ ॥ वीधपदे मनुष्यपदेव सप्तयाथ्या । मारका

सप्त समुग्घाया पयाप्ता , तजहा-वेयणासमुग्घाए एव समुग्घायपय तउमत्यिरसमुग्घायत्रज्जा नाणियह्व जा  
 य वेमाणिपाण , कसायसमुग्घाया सप्यायज्जय , स्युगारस्सगज्जे ! नावियप्पणो केवलीसमुग्घाय जाय सा

महात कडाये पतिपवजज्जेवात ते ममहात कडावे इन्दिमा मत्ताइति इवनात् उत्तर । गावमा सत्तममग्घाया पक्खा ताज्जा वेयवसमग्घाए एवंस  
 मुग्घायपय कउमत्यिरसमग्घाववत्त भाणिज्जव्वापवेमाविदाव । वेगौतम । सात समुद्भात पक्खा तेकडै-वेदनासमुद्भात इम पक्खनानीपरे देखवा  
 रतत्ता माठैज कडैवे-कउमत्यिर समुग्घाव वज्जति । कडवभते समुग्घाया पक्खा इत्तादि मूखवर्ज्जिनि, समुग्घायपवति पक्खनानी कउतीसमापव स  
 मुद्भात इहो आचडा कडा त वेगवो केकाउट्टे-कडव भते समुग्घाया पक्खा सत्त समग्घाया पक्खा ताज्जा वेयवसमग्घाए इत्यादि । वेयव १ कमा  
 य २ मरवे ३ वेठविय ४ तेवण्ड ५ पाञ्जारे ६ । वेयविय ० चेयमे वीयमकुयावसुत्तेव १ । तिह्विदेवना समुद्भाते करो वेदनीय कर्मगतनकरे १ खपाय  
 ममहातेवो खपाय पदमगा मातनकरे २ मारवातिव समुद्भाते करो भावु'पमपुइमगा यातनकरे ३ वेकिवसमुद्भातेकरो जोवपदेगमते गरीरपवो  
 नाहिरवाडो यरोरपिप्पव वाइसमाव २ पगे पावामवो सप्येयवाज्ज दण्डपते रवो सवा म्बुन् वेतिवज्जरोरणा पुइम पुंवेग्घा तेमने गातनकरे तथा

विपुल यथायोगमित्यथ सत्र वेदनासमुद्घातेन समुद्भूत आत्मा येदनीयकर्मपुद्गलात्मा ज्ञात करोति कथायसमद्घातेन कथायपुद्गलात्मा मारकास्ति  
 कर्मसमुद्घातेन चायुःकर्मपुद्गलात्मा वैदुर्विक्रमसमुद्घातेन समुद्भूतो जीवप्रदधान् शरीराद्विभिन्नाय शरीरविक्रमवारुत्समात्र मायामतश्च सहेययोजना  
 नि दशनं निरुजति निरुन्यत्र यथास्थूतान् वैदुर्विक्रमसमुद्घातेन प्रार्थयद्भुगम् ज्ञातयति यथा सूक्ष्मा यावन्ते यथोक्त-वेदविषयसमुद्घात  
 च धर्मोक्तद्वयं सा सरज्ज्वाहं जीयकाहं दंष्ट्र निरिह च आहवायरे पोगन्ते परिसाकेह अक्षसुभुयोगले आहयन्ते, एवं तैजसाहारकसमुद्घातायपि  
 व्यास्येयी क्वचित्समुद्घातेन समुद्भूत वेदनीयैवदिकर्मपुद्गलान् ज्ञातयतीति एतेषुप सर्वेषुपि समुद्घातेषु शरीराज्जीवप्रदेक्षनिर्गमोक्षि  
 सर्वेषुते यन्तर्मुद्गलाना नवर केवत्सिखो ऽष्टसामयिक एते वैकेन्द्रियविक्रमसमुद्घाता मावित एतेषु वायुमारकाह्य पत्वारो देवाना पञ्चोन्द्रिय  
 तिरयाच पञ्च मनुष्याकालुषत इति द्वितीयकाले द्वितीय उद्देक समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरज्यते अस्य चाय मजिसम्बन्धः  
 द्वितीयोद्देकले समुद्घाताः प्रकृपिता लपुच मारकान्तिस्वसमुद्घात सौनव समवहताः केचि त्पयिधीपू त्यद्यत इती इ पृथिव्यः प्रतिपाद्यन्तइत्येय

सयमणागयथ चिठति, समुग्वायपय जेयसु ॥ विद्देयसए धीन उहेसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ कइ

मूल्यापन्न प्रतेपइ इ इम तैजस पाहारक समुद्घात पचि पछाचका । क्वचित्समुद्घातेकरो केवलो वेदनीयादि कर्मपद्वयते ज्ञातनकरे इ ए सवसमदघात  
 नेनैय शरीरवको जीवप्रदेद्याना मियमळे, सबनोमान सौतर्मुद्गलनाके एतसो विशेषके केवलो समुद्घात आठमसव प्रमापळे ए समुद्घात एकेन्द्रिय विक  
 रेन्द्रियने पङ्कितानोनइये, वायुकाव मारकीने पङ्किताना बारहवे देवता पनै पचेष्टीतियेचने पचइवे, मनुष्य सञ्चोने पनै जीवपदे सात समुद्घात इवे इम  
 वायु वैमानिकताह कइना कथायसमदघात अस्वककुलसवे यइको । अथगारक्यमतेभावित्पथाकेवस्मिमग्वाय । अथगारसाधु हेभयवत् । भाविता  
 खाने केवस्मि समुद्घात । आवकासमन्त्रायवहविइति । यावत् यावत्तो पनायतकाव रही । समुग्वायपद्वेयस्य । समुद्घात पन् पदवचाना जलोसना  
 मवकइवा । वितियमयस्मविनिषो । ए बीका शतकना बीका उहेया अर्यको निष्ठा । २ । पाचिखे उहेये समुद्घात कक्षा तेइने

मम्यन्त्यस्या स्वेद मादिमूत्र ॥ अरुचं ज्ञेते । पुढवीर्यइत्यादि ॥ इह च औवाग्निगमनारकाद्वितीयोद्देशे अर्थसंग्रहाया-पुढवीर्यमुगाहिता निरयासठाया  
 मवमाहर्म्म । विस्तरप्रपरिक्लपो यस्मिन्योगोपपासोय ॥ १ ॥ मूत्रपुस्तकेषु च पूर्वोद्देशेय सिद्धित छेपाका विविक्षितार्थाना यावच्छब्दम सूचितत्वादिति  
 ति तत्र ॥ पुढवीर्य ॥ पुढवीर्यो वाच्या साद्येवं-अरुचं ज्ञेते । पुढवीर्यं यस्मात् १ गोयमा । सप्त तत्रा-रयकप्यजेत्यादि । ठुगाहिता निरयासठाया  
 पुढवीर्यं मवमाहर्म्म कियदूरे नरका इतिवाच्य तत्रा स्या रजप्रमाया अक्षीतिवहस्रोत्तरयोजनलसदाइत्याया मुपर्येव योजनसहस्रमवगाह्याचोप्येक य  
 ज्ञयित्वा त्रिंशत्परिमणानि ज्ञवन्ति एव शर्कराप्रमाविषु यथायोग वाच्यं ॥ यथासंभवति ॥ नरकस्थान वाच्य तत्र ये आवास्त्रिकाप्रविष्टा स्ते  
 वृता ह्यन्त्या यतुरत्याय इतरंतु नाभासंस्थाना ॥ आहति ॥ नरकाका बाह्य वाच्य तच्च त्रीविज्योक्तसहस्रादि कथं अथ एक मध्ये द्युपिर

गजनेते । पुढवीर्यं यस्मात् १ गोयमा । औवाग्निगमो नरइयाण जो यितित उद्देशो सो जेयहो, पुढवीर्यं  
 हिता निरयासठाणमेययाहस्र । यिस्करपरिस्केयो यस्मिन्योगोपपासोय ॥ १ ॥ किं सहापाणा अवयवसुपुष्टा ?

त्रियं के-एककोन नारकातिक समुद्रवाते मरीने एविनीनेविने उपवे तेहभचो एविनीना एधिकार कहै-अरुचं ज्ञेते-पुढवीर्यं पुढवीर्यं पञ्चताया औवाग्निम  
 ने बेरइयाचं आबितिपोहइसासोयिज्यो । केतवो हेमववन् । एविनी कहो इतिप्रय औवाग्निगमने नारक बोकासहेयानेविने अवं संभइमाका कि  
 निहो एक पुस्तकनेविने याकाता पूर्वोद्देशीक चिकहै गेप अथ यावत् शब्दे कहवो, तच्च एविनी कहवो, तेहम केतवो हेमववन् । एविनीकहो गोतो  
 म सात एविनीकहो तेजेही रजप्रमा इत्यादि । उवाग्निगाहिरयासठाणमेयवाहस्रविस्तरपरिस्केयो इति । एविनी यवगाहो केतवोदूर नरकावासाहै तिहो  
 एरतप्रमाएविनीनेविने एवकानु अयोइकार याकननो पिण्डहै, तेमाहै उपरि एक सहस्र योजन यवगाहो जे मोचे एकसहस्र योजन मूकोगे ते विविमा  
 भीममात्र नरकागा माहै हम यकरप्रमात्रिज एविनीनेविने कवावाये कहवा । यथासंभवति । नरकनो यथासंभवता निहो जेपावसिका प्रतिनरकावासाहै  
 तेवलय भंयं अरुचं ज्ञेते अने बोकागागाप्रकार सक्तामहै । याहति । नरकना वाह्यवा कहवा भिन्निवहस्रकोजनहै तेकिम मोचे एकसहस्रकोजनहै

मेऽमुपादि मनुष्यगण मिति ॥ विस्मयप्रपरिक्लेशोति ॥ एतो याच्यो, तत्र सङ्कतविजृम्भाना सम्भूतयोजन आयासो विक्रमः परिशेष इतरेषा त्यज्यति, तथा यक्षादयो वाच्या स्तेषा त्याग मनिष्टा इत्यादि बहुवचन्य याव दय मुद्देशकान्तो यदुत ॥ किस्रपाबाइत्यादि ॥ अस्वसेव प्र योगः अस्यां रत्नप्रज्ञायां त्रिश्ररत्नसेपु कि सर्वे प्राकाश्य उत्पन्नपूर्णा अत्रोत्तरं ॥ असइति ॥ असल दनेकाः इवंच सेसाह्यादायपिस्या दतो त्यन्मप्राप्त्यप्रतिपादनाय ॥ अदुयति ॥ अयथा ॥ अर्धतत्सुतोति ॥ अन्नमन्त्रोऽमन्त्राणां ॥ इति द्वितीयशतेतृतीय उद्देशः समाप्त ॥ ३ ॥ तृतीयाहुग्रे नारका उक्ता स्तेष पन्थेन्द्रिया इतीन्द्रियमरूपकया बहुधाद्वैशब्दः तस्य वादिसूत्र ॥ कश्चमिन्त्यादि ॥ पठमिन्द्रोद्विषयतेनेपक्षोति ॥ प्रज्ञापनाया मिन्द्रियपदप्रिपानस्य पन्थदशपदस्य प्रथमउद्देशको ऽत्र नतत्त्वो ऽप्येतत्त्व तत्रच द्वारगाथा-सठापवाइस पोइतकश्चपएसठमाडे ।

हतागोयमा ! अस्मतिं अदुया अणतसुतो पुठवीउद्देशो ॥ यिहयसए तइउ उद्देशो सम्मत्तो ॥ ३ ॥  
 कुड्ढगजते ! इदिया पण्णा १ गोयमा ! पच इदिया पण्णा, तजहा-पठमिन्द्रो इदियउद्देशो णेयस्सो, सठा

मध्ये एवमइत्ययाजन मदिरेवै, अदर एवमइत्ययाजन सभाषणे, तथा विस्मयप्रपरिक्लेशो विस्मय अने परिधि कहवा, तिहा संख्यात वाचनविस्कारके तमव्यातवाजन पाशाने पने दिक्खे अने परिधि के वने बोला असख्यात वाचननाइ ते आवासे १ विस्मये २ अने परिधि असंख्यात वाचनना आवावा तथा । वक्तागंथाय आमाए । किंसमवपावाउजवकपाया इताअसइ पदुवा अर्धतत्सुता पुठयोउद्देशा । वार्तादिक्क कहवा ते पत्तंत अणिट इत्यादि वक्को वक्कअइ वासत् उपदेमना अंतसने इत्यादि एवना इत्यमयागवा रत्नप्रभा एविवोना वीसक्काव नरकापाशानेविवे एव सगसा प्रीयो अपना पूर्व इति पत्र उत्तरं इ एवकार नहो वक्कोवार पथया अन्तोवार अपना एविवोना उद्देशोना उद्देशोना । विविधमसंख्यातपोठपे सो । एवोवा शतवन्तो बोळो अइया टअयोनिष्ठा ॥ १ ॥ बोले उद्देशे नारकोवक्का ते नारको पवेष्टीके इहा इत्योना अधिवार कइवै-कश्चमतेइदिया पच ता गोयमा पचइदिवा पचता तजहा पठमिन्द्रो दिक्कउद्देशोपाया । वेतसा अं वाक्कासकारे, हेमगदम् । इन्द्रियवक्का इतिप्रत्य हेमोवम । पांचइत्यो क

अथ्याजपुनपि अयिमपयत्वारयादरे ॥ १ ॥ इह मधुपुनलेषु द्वारत्रयमेव सिद्धिस्तु तदर्थो पायश्चर्येन सूचिता तत्र सुस्थान श्रोत्रा  
दीन्द्रियाणां याप्यं तवे-यात्रन्द्रिय कथ्यपुप्यसंस्थित वसुरिन्द्रिय मसूरकचन्द्रस्थित मसूरक मासमविशेष वदः श्लक्ष्णी प्रथया मसूरकचन्द्रो घा  
न्ययितापदन ग्रामेन्द्रिय मतिपुनकचन्द्रस्थितं यतिपुनकचन्द्रस्थितं रसनेन्द्रियं श्वरप्रसंस्थित स्पर्शनेन्द्रिय नामाकार ॥ वाहस्यति ॥  
इन्द्रियाणां याप्यं तवेद-मदाक्यद्रुमानदेयभागयाहस्यानि ॥ पोषसति ॥ पृथुत्वं तवेद-श्रोत्रचक्षुर्घ्राणाना मङ्गुलामङ्गुलपञ्चागो जिह्वान्द्रिय  
स्या द्रुमपुष्पं स्पर्शनेन्द्रियस्य च उररिमानं ॥ कश्पसति ॥ धनन्तमदेकमिष्यकाणि पञ्चापि ॥ शृगाहेति ॥ असङ्केपप्रदेशायगाढानि ॥ अथ्या  
जइति ॥ मयलोत्त वसुरयागइते ततः श्रोत्राद्येन्द्रियक्रमेण मङ्गुलतपुत्रे ततो रसमिन्द्रियमसङ्केपगुह ततः स्पर्शान सङ्केपगुहमित्यादि ॥ पुनपयिठ

द्या ते देवैर्देवैः—पयसाचना पनरम। इन्द्रियपदना पदिका उदेगा इहा कइया। तिहा दारयावा सठावबाइल पोइसकइएएसया  
 गाडे परयावकइएनइइ विमवापयगाएपाकारे ॥ १ ॥ इहा सुभावे तीनदारमिस्त्रा तेरोबा। आवयनागोर टिय उदुदेसी। रसनेन्नी वावत् शब्द शरी  
 जाइया तिहा मत्मान आवादिक्कना कइया, ते हम आबेरी कइय्कमने सखाने कइइली ममूख अइनेपाकारे ममूर ते आसनविषय गानमसूरिना  
 इतिमाइमाया भद्र कइती कइती अयवा ममूरअइनेमा एक नाम तेभाकविषय तेवना अई तमा आबेदिय अतिमकअइ ते मूख विषयनो सुख तेइने  
 पाओर पुरमनेपाकारे मयनेदिय अनेक सखाने पाइमति। इन्द्रिमावाइल अइया, ते मय नो अंगुननो अयव्यातमोभाग बाइल्ये। पोइसति  
 एइअ कइया ते हम आबएनु हाव ना अगलना अमव्यातमाभाग पुवअ मित्रेद्विअ अंगुनपुवअ, अगनेद्विअ यरीअमाये। कइएएसति। पचेर अततमेमे  
 भोपनाये। पोगाठति। अमयपेयपदेयावकाठके सव। अयवइति। सवबावू अणुअवाइनाओ तिवाएयली ओन हाव रसन अमुकमे भव्यातगुनां स्वयन  
 दिअ पनेव्यातगुनो अरमाइनायो। पुहुपनिइति। आवादिअ कइइरहित समी अय अनेमिडि अयनेवइ। विनयति। मयनो अइल्यो अंगुनना अरसकमान

ति ॥ श्रोत्रादीनि स्पर्शभये प्रविष्टं च यत्सन्नि ॥ विषयसि ॥ सर्वथा अपत्यतो ह्रस्वस्या मध्येयज्ञानो विषय उत्कृष्टतस्तु श्रोत्रस्य द्वादश  
 योजनानि चतुः शतानिरेवं तत्तं शेषाणां भवयोजनानि ॥ अथनगरस्य समुद्रपातगतस्य ये निजरापुद्गला स्ता अष्टदशस्यो मनुष्या  
 पश्यन्तीति ॥ आहारसि ॥ निजरापुद्गला आरकादयो न जानन्ति नपश्यन्ति, आहारयन्ति ये त्वेवंमादि यद्युपायं भय किमन्ताय मुदेसक इत्या  
 ४ पाप इतीको ओषधमूर्तान् सार्व-चलोनेवं प्रते । विष्णुपुच्छे कश्चिदा कायेति पुच्छे ? गोयमा । नोपमन्त्रिकायेक पुच्छे काव नो आगाव  
 त्रिकायेवं पुच्छे आगावत्रिकापस्व देवेवं पुच्छे आगावत्रिकापस्व पश्यन्ति पुच्छे गोपुष्टिकायेवं पुच्छ काय नाचतुसमयं पुच्छे एते अशीधद्वदेवे  
 यत्तुनष्टय चर्मतर्हि यत्तुनष्टयपुच्छेति संज्ञते सद्वागावे अचतजापुच्छेति ॥ नालोको चर्मस्त्रिकायादिना पृथिव्यादिकायैः समयेनच स्पृष्टो व्याप्त  
 ज्ञेयं तत्रा मन्त्रात् आगावत्रिकायदेशादिभिश्च स्पृष्ट संपात् ॥ एक यासावर्जविवृष्यदेव आकाशद्रव्यवैद्यत्वा तस्य ॥ इति द्वितीपक्षते  
 चतुः उष्णः समस्तः ॥ ४ ॥ अन्तरिमित्रिया स्यन्तानि तद्व्यास परिचारकास्यादिति, तन्मित्रपथाय पञ्चमीदृशकस्य द्वावि

ण ग्राह्यं पोहस जाय श्रुतीगो इदियउद्देशो ॥ त्रिद्वयसए चउत्सो उहसी सम्मत्तो ॥ ५ ॥  
 श्रुताउच्छ्रियाण जत ! एत माइकति पयावेति परुवेति, एवखलु नियठ काउगएसमाणं देवस्रूणां श्रुप्या

साभाग विदधे उच्छ्रितो यावता १२ यात्रन चतु माधिकमवद्यात्रन येयता ८ यात्रन । पश्यगरिति । पश्यगर समुद्रपातगतमा जेनिजरापुद्गल तत्र  
 एत मनुष्यमदेतः पाहारेति । निजरापुद्गलपते नारकादि मदेखे मजाने आहारे इत्यादिक चतुःकषणा ॥ द्विव केतसा मगे एवहेगा कश्चो ते कश्चैव—  
 प्राउपपन्नामा । यावत् पयाकसूत्रा घेत ते इमा । यमागेभमते विष्णुपुच्छे कश्चिदाकाएविकेहेगायमा भावमन्त्रिकाएविकेहे इत्यादिकश्चो । वितियमयस्य नच  
 मउद्देशेमा । योत्रागतजना बाबा उद्देशानाशिवरच विष्णो ॥ ४ ॥ पाणिमे उद्देशे इन्द्रियकक्षा तेइनेदिये परिचाराणा कश्चैव—पश्य  
 इन्द्रियपक्षत एवमा श्रुतिं नामनि पश्येति परुवेति । पश्यतोर्षी च वाक्यासकारे, उभयमन । इमकश्चै सामान्यतो माये प्रयापे प्ररूपैः एवंश्रुतिनियठे । इम



मूत्र ॥ अन्नप्रतिपत्त्यादि ॥ देवयूयवर्षति ॥ देवयूतेन आत्मना हरब्रूतेन नोपरिचारयतीति योगः ॥ सेवति ॥ असी निगुज्यदेव स्तत्र दयनोक्ते नो  
नेय ॥ चक्रेति ॥ अन्त्यान् आत्मव्यतिरिक्तान् देवान् मुरान् तथा नो अस्मेषा देवाना सबाधिनी ईदीः ॥ अग्निषु जियसि ॥ अभिपुज्य यगीकृत्य ग्रा  
हिय याः परिचारयति परिजुम्हे ॥ नोअप्यबिद्धिपाठेति ॥ अस्मीया ॥ अण्यथाभेधअप्याब धितवियसि ॥ श्रीपुसपरूपतया यिरुत्तय म्वचस्सियते ॥  
यगेवियवमित्यादि ॥ परठब्बियवत्तद्वयावयुति ॥ एव येय ज्ञातव्या ॥ ज्ञा समयं इत्थिवेय वेयइ तंसमयं पुरिसवयवणइ अममय पुरिसवेय घेग  
इ तंसमयं इत्थिवेयंवेयइ इत्थिवेयस्स येयवयाय पुरिसवेय वयइ पुरिसवेयस्स येयवयाय इत्थिवेयवेयइ यथरानु एगे यियममित्यादि ॥ मिध्यास्य

णेण सेणतस्य नो अणुदेवे नोअणुसि देवाण देवीत्तं अन्नजुजिय अन्नजुजिय परियारंइ, गो अणुपणिच्चि यात्तं देवीत्तं अन्नजुजिय अन्नजुजिय परियारंइ, अणुपणामेय अणुपण विउच्चिय २ परियारंइ, एगेविय णजीवं एगेणसमएण देवेवं वेदेइ, तजहा—इत्येवेयच पुरिसवेयच, एव अणुउच्छियवत्तस्यया णेयह्वा जा व इत्येवेयच पुरिसवेयच सकहमेयजत ! एव ? गोयमा ! जणंते अणुउच्छिया एवमाइस्सत्ति जाय इत्येवे

[illegible]

चेपा मेयं श्रीभूपरचपि तस्य देवस्य पुत्रपत्या स्तुसपयेदस्यै येकाय समये उक्तयो न त्रीवेदस्य वेवपरिएत्याया त्रीवेदस्यैव न पुरुषयेदस्यो दय  
 परपरविक्रुत्यादिति ॥ दयमायुमिति ॥ दयजपयु मध्ये ॥ उक्तवतारो जयन्ति ॥ प्राकृतज्ञेया उपपत्ता जयतीति दृश्य ॥ मतिन्दि ॥ इत्यत्र या  
 यत् करवा दिवदृश्यं-मन्त्रदृश्यं मन्त्रायमे महाकसे मन्त्रासोक्तये मन्त्राजुनामे जारविरादययत्ने कलयतुष्टिपयप्रिपुण ॥ श्रुटिका वापुरष्टिका ॥ य  
 ग्यर्गुमन्त्रमहगककवपीठपरी ॥ चन्द्रदगनि बाह्यापरवविशोपाय् कुंठलानि कथामरकविशोयाय् सुदगकानि बाग्नियितकपोलानि कथपीठानि कथो  
 मरकशियापान् पारपती त्येद्योस्तो य सतया ॥ विपितकत्याप्रये विपितमासाय पुसुमकब् मौली मस्तक मुकुटय य

यत्र पुरिसयेयंच जतेपुवमाहसु मिच्छातेपुवमाहंसु, अहपुण गोयमा ! पुत्रमाहसकामि जाय पकवेमि, एव  
 मनुनियठे काडगाएसमाणे अन्तयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवयत्तारो नवति मतिहिएसु जाय महाणुनागेसु

नबिमये एव हेममन्त्र । इम तेकथो । गायमा जंजतेपजठिच्छया एवमाहसकति । हेनौतम । जेमाटेपम्यतीवीं इमकसे । जावइतोवेदव परिसवेहंच जेते  
 एवमाहम मिच्छतेपममन्त्रम् । दावत् कोवेड पने पयवेड एवेक वव इवपकारे एवकोव एकसमय वेवेदे ते हेनौतम । इमकसेहे—ते म्यतीवीं मिच्छा  
 भूत कसेहे—तेबिम कोरुपकरेहे तायवि ते देवने पुकपपचामाठ पुषय वेदभाज एकसमवेनेविये उदयजे पवि कोवेद्वनो उदयमवो पयवा वेदपावटे  
 ता ज्योवेद्वनो उदयजे पवि पमपवेद्वनो उदयनवी मीडोमाहि विवडभाववो । पययच गायमा एवमाहसकामि । क वनो हेनौतम । इमज कडलू स।  
 मास्यवत्वाबिबो । मामेनि पकवेमि पकवेमि । विडीपवो हेतुक्तरो भेजकडवात्रो । एवयलविधिठेजावगणसमाये । इम निवे भियव वाज्ज पय्यतर यत्तर  
 डित जानगत एतमे मरकवीव्यावका । पय्यगरेपु देवभाएम देवत्ताएउययत्ताराभवति । पय्यतर कोइएक मेवमाकनेविये देवतापये जयको पवतरे । म  
 चिडिपु । माटावे यडि परितार जेइने । जावमन्त्राणभागेम् । यावगमन्त्रे माटा पय्यत्त मतिवतमेविये एतमाज्जगे खडवा । दूरवाईसु दूरठिईसु सेवत  
 गदेवमपड मडिडिपु । वेवमोगतने पवती अउरदेवमाकनेविये पवोमिडिपु पासुजमनो बिहो ते मियेव चं बाण्णार्चकारे, तिथं देवपवेइवे मयापरि

स्य मतया इत्यादि पाठान् रिष्टीय इष्टीय पत्राय बायाय पक्षीय तेष्ट लसाय दसदिसाष्ट उज्जोयमावेति ॥ तत्र अष्टिः परिवाराविका युति रि  
 हायसयाग प्रजा यानादिदीप्ति न्वाया शोभा शब्धिः शरीरस्पर्शकादितेजोव्यासा तेजः शरीररोचि सश्या देववक्त्रः एकार्थोवेति उद्घोतय प्रका  
 शाकरगम ॥ पन्नासेमावति ॥ प्रजासयम् शोचयम् इह यावत्स्वका दिवदृश्य ॥ पाशादय ॥ न्युक्ता चित्तप्रसादजनकः ॥ दरसखिज्येय ॥ पश्यवष्टु  
 क प्राम्यति ॥ चन्द्रिये ॥ मनोब्रह्मयः ॥ पठिरुवेति ॥ इष्टार इष्टार प्रतिकप यस्य स तथति एवे नैकदा एकएव धेवोवेद्यात इष्ट कारखमाइ ॥

दूरंगतीसु विराठितीसु सेणतत्य देवेनवह्म मंहिष्टिपु जाय दसदिसाष्ट उज्जोवेमाणे पन्नासेमाणे जाय पठिरुवे  
 सेणतत्यश्चुखेदेवे अस्सेसि देवाण देवीतु अन्निजुजिय अन्निजुजिय परियारेइ , अष्टपणिस्त्रियानंदेवीतु अष्टनि  
 जुजिय अन्निजुजिय परियारेइ , नोअष्टपणामेवअष्टपण वेउष्टिय परियारेइ ! एगेवियण जीवे एगेण समए  
 ण एगवेद वेडेइ , तजहा—इत्यिवेववा पुरिसवेववा , जसमय इत्यिवेद वेएइ णोतसमय पुरिसवेद वेदेइ ,

बारताबनी । आइदसदिसाभाअवेमावे पन्नासेमावे । बावत् ग्रम्हे ताखन वक्त्रा दसदिग्घिनेविदे देइनोळातिवरी तथा आभरवनी काविवरी उ  
 घात करताबजा तेवकरताबजा । आवपठिरुवे सेवतलपवेदेवे । बावत् प्रतिकप आरवावोव एतकाकवे कक्को, ते निपेव च वाक्काळंकारे, तिहा  
 बीआदेव । बन्नेमिदेवायंदेवीपापभिवुब्बिइ २ परियारेइ । पनेरा देवनी देवी तेहने पाखिगीने तथा बयिक्कोने परित्ताएवाकरे अक्का । अष्टपिब्बिया  
 पादेवोपापभिवुब्बिइ २ परियारेइ । पापकोहीक देवीवाव ते पाखिगीने तथा बयिक्कोने परित्ताएवा अोगकरे । बोअष्टपणवेवअष्टपणविउठियव २ प  
 रियारेइ । पनिनही पापनवेइअ पाव्वागे ओकवे विक्कुवी भाणवे एतावतादेवता ओकरपननो विक्कुवी भाय ककरे इक्कव तेमाटे । एगेवियवओवेण्णेव  
 ममएव एमवेदेवदेइ इत्तावेदेवा । एकअत्रोव, यपि निवै यपुन च पाक्काळंकारे, ओव एक युक्काकाककर्त्तो मसवनेनिवै एक वेउवेदे अगुभवे भोअवे तेकवेवे—  
 मायद चउरा । परिमवइरा । पक्कव वेइ पक्कव । जमप्रवइओवेदेवेइ । अेसमयनेनिवै ओवेदेवेइ भोगवे । आतसमयपुरिसवेदेवेइ । ते समअनेविदे सु

इत्थीइत्यिगणमित्यादि ॥ परिभारणाय किल गतः स्यादिति गप्रप्रकरणे तत्र ॥ उदगगन्नेषं, क्विद्गगन्नेषं इत्युपेतं, तत्र उदगगन्नेषः कासान्तरं नमप्रपयस्यनुः पुद्गलपरिणामः तस्य चावस्थानं जपन्यतः सुखाः समयाभ्यन्तरमेव प्रपयन्तात्, उदगगन्नेषं पयसासां पयसासां मुपरि यदे

जसमय पुरिसयेद येदेइ णीतसमय इत्यियेय घेएइ, इत्यियेयस्स उदएण नोपुरिसयेद येदेइ, पुरिसयेयस्स उदएण नोइत्यियेय घेएइ, एवस्सलु एगेजीये एगेण समएण एगवेद येदेइ, तजहा-इत्यियेयया पुरिसवेद या, इत्थी इत्यियेयण उदिणेण पुरिस पत्येइ, पुरिसो पुरिसवेदेण उदिणेण इत्यिय पत्येइ, दोयेते इत्यिया मया पत्येइ, तजहा-इत्थीया पुरिस पुरिसाया इत्यिय, उदगगन्नेषं जते ! उदगगन्नेषंति कालं केवचिरे

य वेदेइते वेदेइते भागेइते । जसमयपुरिसवेदेइ । जेसमयनेविघे पयवेदे वेदे भागवे । भातमय इत्यावेदेइ । गहो तेसमयनेविघे स्तोवेदप्रते वेदे भागवे । इत्यावेदय उदएण । स्तोवेने उदगेइते । चापुरिसवेदेइ । गहो पुरयवेदेइते वेदे भागवे, मांभोमां विरायवको । पुरिसवेयस्स उदएण चाइतोवेदेइ । पयवेदेने उदयेइते गहो स्तोवेइते वेदे भागवे । एवस्सलु एगेजीये एगेजसमएण । इम जिये एककोज एकसमये । एमवेदे वेदेइ । ए कवेदप्रते वेदे भागवे । इत्यावेदया परिसवेद ॥ त कथेइ-स्तोवेइते यथा पुरयवेदप्रते एक समये एककोज वेदेइ इहा कारय कथेइ-इतोइ स्तोवेने उदिने पुरिसपयेदे । स्तोवेने स्तोवेने उदयया पुरयवेदप्रते मां यथे । पुरिसोपुरिसवेद उदिने पुरिसपयेदे । तथा पुरयवेदे ते पुरय वेदेने उदयया स्तोवेइते मां । दावेते पयमयपरंति तजहा । एवेज मांभावे प्रागेभावे तेजथेइ-इत्थीयापुरिस पुरिसायाइति । स्तोपुरय प्रते पययस्तोमत प्रागे परिभारणाकोधावका गभइवे, तेमाटे सभप्रकरण कथेइ-उदगगन्नेषंते उदगगन्नेषंति कालं केवचिरेइ । किं एक सूत्रे दमय भेन पययापठ दोमेइ, तिहा उदमभकता कासान्ते जम यययागेण पुरयपरिणाम ते उदगगन्नेषंति कालं केवचिरेइ । किं एक सूत्रे दमय यायमाइ चिंएकमयउदगगन्नेषंति कालं केवचिरेइ । जेगोतम । उदमभ जययवको एज समयने पयमांते ज वरसे उदगगन्नेषंति तो जमकोनापके वरसे एमय

यान् एवं न मागन्तीषीतिपि युष्माकाम्नेषु सध्यारागोन्मुदा सपरिवेयाः । ना  
 म्यप्येवागन्ति नीलं नीलं यतिरितिपपातः ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ काये समनुवरमण्यवस्थितनिजदेष्टयय यो प्रवो अम स काय  
 प्रयः नत्र तिष्ठति यः न कायनयस्यः न कायनयस्य इति एतेन पर्यायेनेत्याद्यः ॥ एतवीससयच्छराईति ॥ स्त्रीकाये द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन मं

होहु १ गोयमा ! जहन्तेण एक्कममय उक्कोम ठम्मासा । तिरिस्सजोणिय गप्पेणज्जेते ! तिरिस्सजोणियगप्पेति  
 कालनुं केयचिर होहु १ गोयमा ! जहन्तमतोमुज्जत्त उक्कोम अठसयच्छराइ । मणुस्सीगप्पेण ज्जेते ! मणुस्सी  
 गप्पेति कालनुं केयचिर होहु १ गोयमा ! जहन्त मतोमुज्जत्त उक्कोस दारससयच्छराइ । कायजयत्येणज्जेते !  
 कायजयत्येति कालनुं केयचिर होइ १ गोयमा ! जह्यामतोमुज्जत्त उक्कोसिण चउवीससयच्छराइ । मणुस्सप

तिर पामादिबन्नेविषेइते ते वेग ॥ येतमेवमेव सध्याराग देवउपजावचना विष इवे । इव पपेइते गर्भको पधिवार वरुहे—तिरिस्सजोणियगप्पेचम  
 ते । तियेवयानिज अथभोगम वेमनयन् । तिरियउजावित । तिसवयानिज । अर्धेतिवामपो केवविरहा । गर्भपे कासयकी केतकीकास गर्भमावे  
 बिरहाइ इतिपय उतर मारमा अइकेवयतामुज्जत्त । हेमातम । अपयवकी यतमुज्जत्तइ चउवीससयच्छराइ । उल्लङ्घकी पाठ  
 उरमने तियेवमो मभकामवचा । मणुगोमभेगभेमिण्योमभेतिवामपोकेवविरहा । मणुयनी लीमोयम वेमनयन् । मणुय लीमेविने गभपे का  
 मबोकेनवाकाम विररइ इतिपय उतर, गायमा अइकेवयतामवत्त । हेगीतम ! अयवयो यतमुज्जत्तनैरइ चउवीससयच्छराइ । उल्लङ्घकी पाठ  
 वच्छराइ । उरउदयकी राट उरमने मणुयवोना यममाइ रई ओध । कायमवत्तेवभते कायमवत्तेविकाजपा केवविरहा । कायनेविने एतमे माता  
 ना नदेस्मादिराणा जेगीतामायोर तेइनेविनेत्र अकामय अथ ते कायमय अयो तेइनेविने जेरेइ तेकावमवत्त कतोये एनेदीन पर्याये इत्यथ,  
 वेमनयन् । कावयो केतमे कामरइ इतिपय उतर । गोयमा अइकेवयतामवत्तलीयमयच्छराइ । हेगीतम । अइकेवो येतमुज्जत्तइ उरउद

गा तमि न्रेग म्मरौरे उत्पद्यते द्वादशवयस्यसिक्तया इत्येवं चतुर्धिशतितपसि प्रयति, केचिदाहुः द्वादशवयसि स्थिता पुनः सप्तश्रेया न्य  
 चीश्रेय नश्वरौ उत्पद्यत, द्वादशवयसि स्थितिरिति ॥ यगशीयेवमते ! इत्यादि ॥ मनुष्याणां तिरयाच यीजं द्वादशमुहूर्तां न्यावद्योनिपूतं प्रवसति त  
 तप नपारीनां शतपुण्यमापि यीजं भवादिभ्योनिप्रविष्टं यीजमेव, तत्रच यीजसमुदाये एको नीव उत्पद्यत सच तेया यीजस्याभिनां सर्वेषां पुत्रो न  
 यती स्तत उत्त ॥ इक्षोमर्षंयपुत्रतस्तेत्यादि ॥ मयसहस्रपुत्रांति ॥ मत्स्यादीनां मयसयोभेयि जलसहस्रपुत्रां क्रुते उत्पद्यत निप्यद्यते चेत्येव

चिद्वियतिरिरुजोणियथीएण जेतं ! जोणियधूए कंयइय काल सचिठइ ? गोयमा ! जहन्तेणमतोमुक्कात्त उ  
 क्कोसंण यारममुक्कात्ता ! एगजोयेण जत्ते ! एगजग्रगहणेण कंयइयाण पुससाए हहमागच्छइ ? गोयमा ! जह  
 न्तेण उक्कात्तमा दांयइस्सया तिरइस्सया उक्कोत्तं सयपुहसस्स जीयाणं पुससाए हहमागच्छइ एगजीयस्सणजत्ते  
 एगनग्रगहणेणं कंयइया जीया पुससाए हहमागच्छति ? गोयमा ! जहक्केण इक्कोवा दीवा तिखिया उक्को

वो लोभो वायमांने धारे इरमरइ यच्छ मतोने वभो तिनिहाअ मरीरजविपे अपव यत्वा धारैवरमरइ एव २४ वरस पञ्चवा एकलोव धारैवरस एषी मू  
 पा ते वनमरौरे पनेरे योज्जवतो ते वज मरीरमांने पाव अपजे धारैवरस म्मोरइ एव २४ वरस एवोकावरस । मसुस्यविद्वितिरिक्खजोखिय । मनुष्य  
 पनेद्विच तथा तिर्येवमानि च पंचद्विय ते वने । योएवमतेआविधूर वेवइयआममविधूर । यीज कइतां योरज ते केभगवन् । यानिमूत यानिनेविये रत्ताऽ  
 वा जेनावाभनइ इतिग्य उत्तर । गायमा जइक्कवर्षंतामकूतउक्कोसेणवारसमकूता । जेभोतस । कइत्तयको पतमुहूर्तं वेवही सोम रइ उरखटयको  
 धारे मइतनई रइ नउभेमवडागांइ यीजभूतरइ एवे सौतापधवामांने केना विमयआय इ त । एगजोवेवमनेएगभमअइक्केवेवइवाणपत्तताएवव्यमा  
 मअर । एवभो न वायामंइति एव भवने वइवेवरी केतलाना पचपणे उताउलो धावे एतने येतमापिताना पचपुवे इतिप्रय उत्तर । गायमा अइ  
 नेनंउमइ ॥ निनइग्यउ उतामेवमयपुइग्यउओदांनपत्तताएवव्यमागच्छइ । जेभोतस । अयभो एकना पञ्चवा दायना पचववा तीनने उ

स्य यस्मिन् गणय मत्तपुत्रं पुत्राणां मयतीति मयूययोनी पुनस्तस्या चापि बहवो ननिप्यद्यन्तइति इतीगपुरिसस्यपदत्येतस्य मेषुयति ए नामं  
मत्राग ममुपपन्नइ इत्यनन मय्यस्य सस्या भवा युत्पद्यत इत्याह ॥ कल्पकलाएखोबीएति ॥ नामकर्मनिवर्तिताया योनीं प्रपद्या कम्म मयूमी  
दीपशाम्यापार मत्तकृत पस्यां सा कल्पाकला अत सस्या मेषुनस्य वृत्तिः प्रयुति र्भस्मि खसी मेषुनवृत्तिको मेषुनया प्रत्ययो प्रेतु यस्मि खसी

मेग मयसहस्मपुहस्त जीथाण पुत्तभाण हसुमागच्छति । सेकेणठेण जते । एव युस्सइ जाय हसुमागच्छइ ?  
गोयसा । इत्थीणय पुरिसस्सय कम्मककाण जोणीए मेज्जगवत्ति एनाम सजोए समुपपज्जइ , ते दुहइ सिणेह चि

रजइवा मत पदच्छमंछाई तेमनुजना तथा त्रियेचना वात्र कारमन्नस यानिमृतस्य तिवार यावपमवने गतएवज्ज नवयय नोपचि वीखयानि प्रविष्ट  
वोत्रओत्रइओवे तिवा तेवीत्रना ममगायेविपे एवओत्र अपवे ते खोव वीत्रसामी मयमाओ पुषइवे तेमाटे कटो छटइवी नवसयनो पवपवे सता  
इवा अपवे इति । एगओत्रस्यभतेणगभइवखेवइवाओवापतभाणइवमागच्छति । एकखीवने नं वाक्कावकारे हेमगवन् । एक भवने पइवैवनी के  
तनाओत्र पवपवे अतायमापवे एतने एकपिताना येनवापववइ इतिप्रत्य उत्तर । मावमा खइण्वेवइवावाटावातिवाओत्रसमयसहस्मपुहस्तजोवा  
ववतनाएइइवमागच्छति । इमेतीतम । खवये एव पववा राय पववा वीज छत्तपुवको भाण एवज्ज एतवे मयवाएखोव पवपवे छटावळापावे अपवे  
त मरवातिजने एवने मयमे पचि माइओनी यानिनिविपे मयवाएखोत्र गमपव अइति धमे भोपवे पचि तेमाटे एकनेमवगइवे नवकाएपुवपवे वुवे,  
मनुप यानिने ववा अपवे पचि एवानीपजेनइओ इतिभाव वखीगोतम पुवई—मेवेवेभभतेएवमुवाइ कावहवमागच्छति । तेखिसेपवे किसे प्रयोजने  
इमकपुं राइत् नववापओइ अतायमा मयमाहेवपवे अपवे इतिप्रत्य उत्तर । गावमा इतोएपुरिसस्यववकाएखोवीए मेषुववतिपवामसंजोएम  
मयपार तेदुइयानिबेइविइति । जेगीतम । म्मोपवपने वपन नाम कम्मनिवर्तित यानिनिविपे पववा मरओदीपवयापार तेओओ खेइनेविपे तिका कम्म  
अनायानि वओय ते ध्यापारकरतेइते तेइने मेषुनवाहति मठसिखे खेइनेविपे ते मयनवतिवखोवे पववा मेषुनवाहेतुवे खेइने तेमेइत पयवविज्ज इने

स्वाधिके कर्मत्यये मीयुनप्रत्ययिक ॥ नामति ॥ नामनामवतो रग्रेदोयबारा देतकामेत्यर्थ संयोग सम्यक्- तेति स्त्रीपुरुषौ ॥ दुष्टंति ॥ उभय-  
तः स्मरं रेतः श्रोत्रितलण्ड सन्निभः स्वपयतइति ॥ मेढुवसिदानामसञ्जोयति ॥ प्रागुक्त मय मीयुनस्य वासयमहेतुताप्रकृपसूत्र ॥ रूपयान्ति  
यवसि ॥ कर्तृकर्णस्यधिकार सम्भूता भासिका धूपिरवस्थादिरूपा कृतनालिका ता एवदूरभासिकामपि नवर वरं वनस्पतिविशेषावयवविशेष ॥

णति, तत्यण जहन्नेण एकौवा दीवा तिखिया उक्कोसेण सयसहस्स पृहस जीयाण पुप्तताए हसमागच्छति  
सेतेणठेण जाय हसमागच्छइ । मेज्जेणज्जेते ! सेयमाणस्स केरिसेस्यसज्जे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए  
केइपुरिसे कयनालियया धूरनालियया तप्पेण कणएण समज्जिधसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेज्जेण सेवमा

नामे सभाग सपञ्च छपव तेषूपपय वेवववो छेइ इक इधिरकचच तेइप्रत पिहै एकाचकरे इत्यय । तत्स्यत्रहस्यएवावादोदतिष्विवा उक्तासिचसय  
सहस्रपइतौवाचपुत्तताएइववमानच्छति । तिङ्गी सबववयानेविवै च वाक्कासकारे जवयववौ एक पववा दीय पववा तीन जोवपचे गर्भमाहे छप  
चे उत्तवृष्टवौ प्रत सहस्स पञ्चसहस्राहे ते नवमाच जोव च वाक्कासकारे पुषपपे ज्जाभासा छपवै पावै इत्यय । सेतेवृष्टवजावइवमानगच्छति । ते तेच  
पपे जेमीतम । बावत् नवमाचजोव गर्भजिवै पुष पचे छपावकापावै छपव ॥ इवै मीयुनता पधिकारववौ, मीयननाथ पचं वमपचा प्रकपेहै । मेढुवे  
वमतेमेढमाचक्येरिसिचसंजमेकज्जइ । मेढन च वाक्कासकार, इभगवन् । सेवतावकाजोव केइवा पचसमकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेज्जानामएवै  
इयरिसे कवनादिना दूरनामिना । जेतोतम । ते ववा इहति नाम इति कामनामनच काईयवच कपासनाविचार ते कृत कइवे ते मरी वीमनी भूय  
छौ पववा वनस्पतौ विशेवना पवव ते दूर कइवे तेण् भरोवासनी भूगलो जो । तत्तवचएणं समभिधसेज्जा । तम आत्तवमान पम्निक्करो तपा  
व्यो मोइता खोमा यमाका ते भंगमीमाहे यपे तिवार तेकत तथा धूर सर्व विध्वषपामे विनाग्रपामे इत्यर्थ । एरिसएणं गायमा मेढुवसेवमाचक्यपसज्जे  
वज्जइ । एइवा च वाक्कासकार जेतोतम । मीयुनसेवताववो योनिमाडिरइवाहे खेजोव ते प्रते मेइमपुषयसिय तेचेवरी विनाग्र पमाहे इवै एइयो पस



सुमामिषसेज्जति ० कृतादिसमप्रिप्यंशना विह वा यं वाक्यशेषो दृश्य एव मीथुन सेवमानो योगिततसत्वा न्नेहमेना विष्वसये देतेष किल यं यान्तरे पन्नेन्द्रियाः श्रुयन्तइति ० परिसयकमित्यादिष ॥ मिनमर्नामिति पूर्वे तियद्गमभयोत्पत्ति विचारिता ०य देवोत्पत्तिविचारकाया प्र

णस्स अस्सजमे कज्झइ, सेव जेतंजंते ! त्ति जाव यिहरइ । तएण समणे जगव महावीरे रायगिहात्ते नयरात्ते गुणसिंहात्ते चेहयात्ते पफिनिस्कमइहा यहिंया जणवययिहार यिहरइ, तेणकालेण तेणसमए ण तुगियानाम नयरी होत्या, यखत्ते, तीसेण तुगियाए नयरीए यहिंया उत्तरपुरस्किमेडिसिंभाए पुप्फवइ एनाम चेइए होत्या, यखत्ते, तत्पणतुगियाएनयरीए बहवेसमणोनासया परिवसति, अह्हा दित्ता विच्छिख

बमकरे । नेवभात्तं ति जावविहर । तइति हेभमवन् । पुणेकइ ते सवसत्थे पक्खवानको इयकहो यावत् समस्सार बरी सयमेतपेकरो धाक्खानेभावता प्रका विपरै । तएणसमवे भयवंसइवीरे रावविहापाववराधा बुबसिहापा वेरवापा । पडिवा तिवेवमगुण्य उत्पत्ति विचारणाकोधो । इवि देव सत्पत्तिनो विचारणा प्रस्ताववीए कइहे — तिभारे अमव भगवंतसौमहावीरज्जामो रावमुइजाना मगरवको गुबधिसानाम पैत्थवको । पडिपिक्खमइ रत्ता । नोक्खे नोक्खोने । इडिवाजववविहारविहर । बाहिर वनपइदेयने विवै विहरिको विपरै । तेवकाखेव तेवसमएव । ते ववसप्पिषो सोवा भारारूप कास नेविं ते समयनेविं । तंगिवा नाम ववरोज्जावावको । तपोवा इवेनामे नयरोपुवे तेहनो वपंज ववार् उपगवो जाववो । तीसेवंतयिवाएवयरीए । तेइवं धाक्खवत्ते, तमिवा नाम नयरीनेविं । इडिवाउत्तरपरत्त्वमीडिसीभाए । बाहिर उत्तरपूवदिग्गिना विमायनेविं एतळे इयान्नुवनेविं । पुण्णव इएवाम चेइएवात्ता ववपा । पुण्णवती इमेनाम पैत्थ ववावतव इवा, वव वउवार् उपगमहिंकाओ तिमववको । यत्थवंतुंयिवाएवयरीए । तिई ववा क्ख मवारे, तमीवानामै मगरनेविं । वइवेसमवोपायिवापरिवसति वइटा दित्ता । ववा अमवसाधु तेहना उपासव सेवव एतळे यामव वमेहे रइहे इववं धन धान्यकरो परिपूव मसिह तावा वववा । दिक्खविपुअभवसयवासवजाववाइवाइवा । विस्सारउत्तित ववाभावाव पक्खवादि सुगदि

स्तावनाये दमाह ॥ तत्पुंसमवेदस्यादि ॥ आह्वानं धनवाच्यादिभिर्निर्णयितुं ॥ दीप्ता प्रसिद्धा दृष्टावा दृष्टिताः ॥ विच्छि  
 स्तविपुल्लतवसपदासुखादवाहकाहका ॥ विस्तीर्णानि विस्तारवन्ति विपुलानि प्रभुरादि प्रवमानि प्रभुरादि प्रयनासमयानवाहने रात्रीर्वाणि ये  
 पां ते तथा सद्यवा विस्तीर्णानि विपुलानि प्रवमानि प्रयनासमयानवाहनानि वा कीर्त्यानि युक्तवन्ति येया ते तथा तत्र यान गंत्र्यादि वा  
 इम त्वद्यादि ॥ बहुपक्षबहुवायकवरयया ॥ बहु प्रदूत वर्न शक्तिमादिबं तथा बहुव जातकप सुवच रजत च रुप्यं येयाते तथा ॥ आठंमपठंय  
 सपठता ॥ आयोनो द्विगुणादिव्या योप्रदान प्रयोमद्य कस्तान्तरं तौ सम्युक्तौ व्यापारितौ यौ द्वौ तथा ॥ विच्छिन्नक्रियवितलनतपाका ॥ विच्छि  
 र्दितं विविच मुक्तिस्त बहुलोकनोक्तत लब्धिहावधेयसम्भवा विच्छिर्दितवा विविचविच्छिन्नतम द्विपुलं प्रकच पानक च येया ते तथा ॥ बहुदा  
 सीदासमोमरिसगवेसगप्यनूया ॥ बहुवो दासीदासा येयां मोमरिसगवेसकाद्य प्रभूता येया ते तथा गवेसकादतरव्यः ॥ बहुवचस्सभपरिभूया ॥ वही

विपुलचनयणसयणासणजाणयाहणाहका यज्ञधनयज्ञजायकवरयया श्रुतंगपतंगसपउत्ता विच्छिन्नक्रियविउल  
 नतपाणायज्ञादासीदासगोमहिंसगधलगप्यनूया यज्ञजणस्सश्रुपरिभूया श्रुतिगयजीवाजीया उवल्लरुपसुपाया  
 श्रुतसवसदरानिजराकिरियाहिगरणयधप्यमोस्तकु सलाश्रुसहेज्जदेवासुरनागसुयसुजस्कररकसकिस्सरकिपुरिसग

वापत् मकट वाहो प्रमुल धन्नादिक तिरेकरा पात्रोच आसहो । यथा धन यक्षमादिक । बहुकायकवरयया । वही जातकप सुवच रयय रूपो  
 ज्ञेयानि । पाषाण पक्वायसपठता । विपुला विमणा यकारा भवो वेदा वनादिक विम प्रवहणपाये विसयना पाषाणवलेख् इमकही वनदेवो ते भावो  
 यक्षहीये व्यापारादिक तेवचरो सममुक्तसहित । विच्छिन्नक्रियविपलनतपाका । वर्यालोका जोमवधौ वर्या पयादिक कठानासिधे यदवा ह्ये वेदनाधर ।  
 यशु सोकास गोमहिंसमवेसगप्यनूया । वर्या दासीदासहो ज्ञेयाने यान मैत यकारा यादरपमुख प्रमूग वर्याहो ज्ञेयाने । बहुवचस्यपयस्मिन् । वर्यालो  
 काने परि यति वनवंतमाटै कुचहो य परामत्या भवाव । यभिगवजोवालीवा । वर्याहो ज्ञेयाने यलीनगा लरूप ज्ञेये । उवल्लरुपसुपाया । भासक्या

सौकम्या परित्रवनीया धामयत्यादौ क्रिया कायिक्यादिका अधिकत्वे नवीयस्यकादि ॥ सुखसति ॥ आश्रवादीना हेयोपादेयतास्वरूपवेदेनः ॥  
 समहेज्जन्त्यादि ॥ अविद्यमाना आश्रय परसाक्षात्किं मत्स्यसमर्थत्वा यथा ते आसाहाय्या स्तेषु ते द्वाद्ययेति कर्मधारय अथवा व्यस्य मे  
 वन् तेन असाहाय्या आपद्यपि देयादिसाहायकानपेक्षा स्वयकृतं कर्मस्वयमेव प्रोक्तव्य भित्तिदीपममोयुस्यइत्यर्थः अथवा पाशुछिप्रि प्रारब्धाः  
 मय्यग्राविचननंप्रति न परसाहाय्य मयेष्टल स्वयमेव सत्यतिपातसमर्थत्वा स्निग्धसासनात्यक्तजावितत्वाचेति तत्र देवा वैमानिका ॥ अमुर  
 ति ॥ अमुरकुमाराः ॥ नागति ॥ नागकुमारा ॥ उजये प्यमी भवनपतिविशेषाः ॥ सुवसति ॥ सहस्रार्थः ज्योतिष्का यशराससकिन्नरीकिपुरुपाव्यन्तर  
 यिनीयाः ॥ गहनति ॥ गहनप्यशः सुपचकुमारा भवनपतिविशेषा गन्धर्व महीरगाय व्यन्तरविशेषा ॥ अन्तर्निष्क्रमणीया

सुलगधसुमहोरगादीर्णह देयगर्णेह निगयानु पाययणानु व्युणतिक्लमणिज्जा, निगये पावयणे निस्सकिया  
 निक्लस्किया निवृत्तिगिच्छा छठ्ठा गहियठा पुच्छियठा अग्निगयठा व्युणिच्छियठा व्युणिमिजपेम्माणुराय

त्रेहे पुत्र्य शुभप्रवृत्तिकप पापघमम प्रवृत्तिकप महामात्र ॥ पासवसवरविश्वरक्षिवादिगरवचमास्तुसुखा । पासवचन आवबानात्मानक  
 मवर ते कमहार रात्रशा कममोक्षेराकप काविकान्निश्रिवा माहोयनादिक वक्ष्यमकृति वषादि चारभदे माच सववा चरकप एतसानेविये  
 सतिटाहाहे । समहेज्जन्त्या सर भाग सुवच चकल रक्ताम विनर विपरिव गणुन मधव महीरगादि एहि देवगर्णेहि विमवाधो पावयवाधो प  
 वतिबनविद्या । आपदात्रानि पवि विवको देशताने महेरको आपकाक्रोधाक्रम आपनभागवोवे एहवो ममोहतिहे जेहनी अथवा पाखडी  
 ए मारंभो समकितबको पकावको तिवारे कोषागो मकाव नवाहे एतस पातैक तेहने कवावदेवाने समबहे एतावता विमयासन प्रस्यत परिचय्यो  
 जे जेहने, देरपेमात्रिक पसरकुमार मामकुमार एवेक मकमपतौवियेण । सुवसति । सवच ते ज्योतिषी यच्च राचस चिन्नर चिपुष्य ए च्छतरनिकाव  
 मा देवत्राचवा मरुड विगहजे जेहने एहवा मुनचकुमारविमेष मधव महीरगा एवेत्यतर विमेषजोचवा एथादिने १ जेहने गबेसमने साधुना प्रवचन वि

[illegible]

રક્ષા ધ્યમાત્સો નિગદ્યે પાઘ્યણે સ્થઠે ધ્યપરમઠે સંસે ધ્યણઠે કસિયફલિહા ધ્યવગુપ્તવારા ચિયસતેઊર

हीतयको चतिवृत्ताबी नमकोये पतसे ते याचक निवेदना प्रवचनबको एतका देवना सखाबा सरीमही । विषयेपावयसे । निर्पेदना प्रवचननेविपे ए  
तावता मागनेविपे खोबादितस्वसे जिना नपौहे । बिस्वाक्रिया विवक्षिता बिब्रितियिण्या सखा मक्षियहा पुष्पियहा । एखवो यका तिवेखरी रहित निस्से  
दित १ पञ्चदशनीनीवावा तेजावा तिवेखरीरहित २ दानादिब फसनासखेब तिवेखरीरहित ते निव्रितियिण्या सखीसे ३ सुखवावी सखाहे पव खेब  
पवधारवो पद्याहे पवजेबे सम्यबो पूही लोभाहे पवखे । अभिगतहा वनिष्पियहा । प्रज्जना पव जायोने विरपरिव सखा भयसेबे निदयको खो  
भा गिरीयखरीन पवना पर्याव । चट्टिमिकयेमाखारमरता । खाहमिजा ते खाहमखवती धातु ते सवख वचन प्रीतिरूप कुसुभादिरागेखरी रख्यानीपरे  
रख्याहे खहना पवना अस्तिभिजानेविपे खिन्नासमगत प्रेमाभुरामरखहे जिवे । भयमासही बिग्येपावयसेभहे । ए प्रखप पुचान्किना ग्रामभव  
माधुना प्रवचनमाग ते प्रयाजनहे एखोज मीचसाधमहेतु परमाससे गेपबाकता । अयपरमभुमेसेभहे । पनसहे निग्यवप्रवचनखी खोजो धमवान् पव  
ग्रन्थादिब जनाभवनादिज ते पनब मीचमागना गधखहे । खरिबफलिया । भसा स्पष्टिज जिम निर्मलविता तथा दानवेवानेकाज ग्रामसदीखी

तिरितीयं इषाटपशुद्वान्ता दयनीत इत्यय परिजो र्भेता येना ते तच्छिन्नपरिषा चयथा तच्छिन्नपरिषो येना ते तच्छिन्न  
तपरिषा छोदायातिमया इतिद्वयदानवयिलेखे मिश्रुकाया यइप्रवेद्याय मनर्भसितशुद्धाराइत्यर्थ ॥ अथगुययुयारेति ॥ अग्रायुतद्वारा कपाटा  
न्नि रत्यगितयद्वाराइत्यय सवृक्षनसात्रेन न कुतोपि पाखदिका द्विन्यति श्लोभनमार्गेपरिषेया द्वाटजिरस स्तिष्ठ स्ती तिसाव इतिवद्व्या  
रया अव्यत्याहुः मिश्रुकप्रवेद्याय मीयायो वस्त्रमितशुद्धाराइत्यर्थ ॥ चियहतेउरपरप्यवेसाचियत्ताति ॥ सोकाना स्मीतिकरएवा स्त पुरेवा  
पुरेया प्रवक्षो येना ते तथा अतिपार्मिकतया सवत्रा नाशङ्कनीया स्त इत्यर्थः अव्यत्याहुः ॥ चियहोति ॥ नामोत्तिकरो उत पुरयइयो प्रवेश  
मिदभनप्रवक्षाम येना त तथा आनायात्नुतामतिपादनपर चेत्त विषयइमिति अथवा ॥ चियत्ताति ॥ त्यक्त अत पुरयइयोः परकीययो  
यया कथन्ति इप्रवेजो ये स्ते तथा ॥ यदुद्दिहत्यादि ॥ श्रीसत्रता न्यकुत्रतामि बुवा वक्षत्तामि विरमत्तामि ओचित्यन रागादिनिवृत्तय  
प्रत्याग्यानानि पीरुष्यादीनि पीरप म्यवदिनानुष्ठान तत्रो यवाखो वस्त्रान् पीरचोपवाच, यतया द्रुम्हो उत स्ते युक्ता इतिनम्य पीरचोपवा  
सइत्युक्तं पीरपच यदा ययाविषम ते कुवन्तो विहरन्ति तदुक्तंयथाह ॥ वातइत्यदि ॥ इहो विष्टा अमावास्या ॥ प्रक्षिप्तपोषइति ॥ आहा

परधरप्यवसा दक्षहि सीलक्ष्यगणवेरमणपस्रक्काणपोसहोवयासेहि चाउद्वसठमुद्विठपुसमासिणीसु पणिपुसा  
पोसह सस्रमणुपाटिमाणा समणे निगये फासुएसणिज्जेण ससणपाणस्वाद्धमसाइमेण वत्थपणिग्गहकयलपा

मन्त्रो । यद्यप्यदृशता । अज्ञाता ते ज्ञाना कारणाणा विमाह । वियत्ततं उपरस्तरणवेसा । प्रौढिबारीबा र्थत पुरनेविये तबा परवरनेविये प्रवेय खेइ ना एतावता विषदीने सनै तेइना अविद्यासनहो । इद्विभीमम्यगुणम्यवेरमचपञ्चापपासजोबवासिदि । यबा खेयीसवृत पञ्चवत यमवृत बेरमच उचित तपे मानापकारि रागादिस यको निजत पञ्चाप पोरसोपमम पोणव भवदिनामुहाज तेइनेविये उपबासरहबो तिजे मदिताजे एतावता मच महित पापवहरना विषगै ते पोपधदिन करीजे—पाठइसहमुनिपुणभाचि बोसपडिपणपोससंखणपासेमाणा । यसदय पाठम इहाँ करिहगबरे

रात्रिना भानुविपमपि मयतः ॥ यत्पयस्किण्वक्यमयापयपुष्टमेवेति ॥ इष्ट पतद्गुह्यं पात्र पात्रप्रोक्तं रजोहरणं पीठं माम् । फलकं मयदुग्धं  
मत्तयन्त्रं त्रय्यायमति युद्धमन्मारजोयाः । मन्तारका सपुत्रर एषां समाहारद्वन्द्वो स स्तनः ॥ अद्यापकिण्वद्विष्टितिः ॥ यया प्रतिपद्ये न पुन इ  
मयातिः ॥ परति ॥ अतद्वृद्धा ॥ नृयमेव त्रति ॥ इष्ट रूपं सुविदितनपथ्यग्रीरसुदरतावाः । तेन सम्पत्ता युक्ता रूपयम्पत्ता ॥ सज्जालापवसंपत्तिः ॥

यपुच्छणेण पीठफलंगसेज्जासथारण त्रसहजेसजेण पक्षिजनेमाणा स्याहापरिगहिणुहं तवोकम्मेहि ह्युप्या  
ण जायेमाणा विहरति । तेणकादेण तेणसमण पासायसिञ्जा धीराजगवती जाइसपया कुलसपया वलस

पमाशाम्नातवापूनिम ए पवदिमनेविधै पूरापाकार । शरीर सत्कारं वृक्षपथ १ पञ्चापार ४ ए चार मवती परिहारकरता पौषध अमुपास्तुताबन्धाले  
। ममर्धे । यमन तदप्यो । विन्ययफामणमविज्जैवं पमवपावगावममादेमं वटपट्टिपट्टकं वलपावपुष्टमेव पीठपट्टकगसेज्जासथारण १ मीमहेसज्जैव पक्षि  
नाभेमाणा । निर्गय गाद्याभार पट्टादितने पममेमापुने काम् मवानोम दूमवरकिण पकाय माका सातू प्रमुक्त सुधा ममाववानेसमवतेज्जासोपायो म  
द इष्टरमादि ते । भेद वया वपममवि १ मागको प्रमव व्याप १ मंठ इष्टे पोपल व्यायन प्रमुक्त ४ एवार पाचारिकरी वती वल पक्षवोपायो का  
वमा रजाहरण पाया चामन ठाडोमन ॥ नापाटोया वमति पवन माटा संवारी नागहासवारा तिबेकरो वतो सोवध भेज्य चूर्णदिव तिबेकरी  
पतिमाभता विहरावता वजा प्रमर्धे । पाडापरिप्यद्विष्टि तवाकयेहि अय्यार्धभावेमावाविहरति । वेडवा चादरा तेडवा पाले एडवा खेतपकर्म  
विगा तेनेकरो चामाने पापवयो एव नृप पम वल्य इम तोजतल चममात्ता वका विवरते ज्ञादक । तणकासिणं तेवमण्य । तेकान्नेविधै ते समव  
न वदे । पामावमिज्जा । पामनाम स्वासोना अपरममतानिका प्रगियादिक । बेराभगवताजतिसपका कमसपका वलसपका र्वसपका विचयसंपया ।  
दुमन प्रामयेय मायवत तिबेकरो ग्रामना भया पवना मडित पितापन तिबेकरो ग्रामन भमा उरुद्धं मवयन तिबेकरो युक्त गरीर सुम्पयो  
तने ग्रामन भना मुववतन तमन् मवाकरो तिबेकरो ग्रामन भमा । पाणमपया दुवमपका चरित्तसपका सज्जालापवसा स्यापवसपका । मत्यादिक

नञ्चा प्रमिदु मयमात्रा माप्यद्रु द्रव्यतो ऽप्योपचित्यं प्रावर्तौ गौरवत्याग ॥ दृश्यसीति ॥ दृष्टस्त्रिनो मानसाद्यष्टम्भयुक्ता ॥ तयसीति ॥ तेष्व  
 म्निनः गरारमभायुक्ताः ॥ यद्वसीति ॥ यद्वस्त्रिनो विद्विष्टप्रजाधोपेता दवस्त्रिनोवा त्रिजिष्टवचनयुक्ता ॥ जससीति ॥ स्यातिमस्तो मुंस्वार जेतपु  
 प्राहृतत्याग ॥ त्रीविद्यामापयग्नयविव्यमुकृति ॥ ज्योतितागया मरुजप्रयेनचयिप्रमुक्ता ये ते तथा इह यावत्करका दिद दृश्य - तवप्यहाखगु  
 व्यहाता नूनाय मयमगाः तयः मयमगाइवइ तयः मयमगाः प्रथामयोनादूताभिधानार्थं तथा करकप्यहाका चरकप्यहाका तत्र करक  
 पिण्ठगिगुच्यदि चरुं प्रतत्रमनप्यर्मादि निगइव्यहाका मिप्रहो ऽव्यायकारिका दवलो निष्कयप्यहाका निक्षयो करयदूरवाच्यपुगल स्तत्व  
 निगयोवाः मन्वप्यहाका चरकप्यहाका मनु जितजोपादिस्वा म्यादृवादिप्रधानत्व मयमयतएव तस्त्रि माद्वस्त्र्यादिमा ? उच्यत तत्रो दयविफ  
 मतात्मा माह्यादिप्रधानत्यनू दयान्नावणवति सापवप्यहाका मापव त्रियासु दहात्व सतिप्यहाकामुतिप्यहाकाएवविष्ण्वामतवेयबंजनयनिय  
 मनपमाप्यहातागारुप्यया मत्प्रज्ञाः माही द्युदुदुतुत्वेन माचय सुहदाया मित्राणि लीवानामिति यस्य अक्षियाका अयुस्तुया अचदि

परमा रुच्यसपया धिगयसपया गाणसपया ठसणसपया चरिप्तसपया लज्जालाचवसपया दृयसी तेयसी  
 यच्चूनी जससी जियकीहा जियमाणा जियमाया जियलोजा जियनिहा जियइदिया जियपरीसहा जीवियासा

प्रात निनदरी गाभनदुत मव्यत्र तिणेकरो गाभनदुत मामाविकादि चारिच तिणेकरो गाभन मखा बाकप्रविष खान भववा सवम तेबेकरो हुल  
 इ-उभो चय इवविचवा माइवा गारुदत्याग तेनेदुत । पावमी तेयसी दवलो जमसी । चित्त यवद्वभसहित प्ररीरप्रमा सचित विगिट भविमससि  
 न पलवा विगिट भवाइवमसदिन आकमाने असवत । त्रिदकाहा जितमाया त्रियमाया जियलाभा जियविहा । तज्योहे काधप्राचने भयभरित गा  
 यया मान पडुबार, अने दगिबोधीक माया पटवववा त्रिणे जोखा यव्यकोधीके होम आनचजिणे औतो यव्यकोधीके निद्रापंचक जिणे । जितिति  
 या त्रिदपरोमहा । जागई मगादिह पीवइलो अने जोयाह बाधोम परोसइजेने । जोमियामसरभययिणमुखा । जोवितवमोनीका मरकगा भ

ममा सुमाग्रया शब्दवृत्तिप्रमाणमिति शब्दत्रा स्यथिरस्तामि विदूषयानि प्रशङ्गाद्वरानि येवा ते तथा ॥ कुसियायवज्जुयति ॥ कुत्रिक  
 वृत्तमप्यपाताम्यताव प्रुमिप्रय तत्समभय यत्स्वपि कुत्रिक तत्सम्यदक यापयो इह कुत्रिकापक सद्गता समीक्षितार्थसम्यादनसोभ्यपुस्त्येव  
 मन्त्रनृपोपतत्रमवाः तदुपमाः ॥ सुदिंति ॥ साह सवेत्यथ मय्यरियताः सम्यक्परिवारिताः, परिकरभावेन परिकरितास्त्यथः पञ्चभिः

मरणानयमोऽत्रिप्यमुक्ता यज्जस्तुया यज्जपरिवारा पचार्हश्चणगारसएहिं सद्धि सपरियुक्ता अहाणपुहिं चर  
 माणा गामाणुगामदूहज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवर्हएवेइए तणेव उ  
 यागच्छति उयागच्छइसा अहापफिक्ख उगगह उगिरिहता सजमेण तयसा अय्प्याणनावेमाणा विहरति,  
 तण्णा तुंगियाए नयरी ॥ सिधागतिगचउक्काचचरचउम्मुहमहापहपेसु जाव एगदिसज्जिमुहा णिज्जायति,

य प वेज्जवार उदित पतम सवपकारे मनादिगण दत्त । जावत्तयावभूया । यावत् सग मच्च पाताम मांदि जे । ए ते जिणे हाटे सांभे ते क्विका  
 पच क्कोव मरोवा माथ मक्कव सइक्के । उइमवा वक्कपरिवाता । यदा युतना धारकहे यदा परिवारवं जेइमे । पचहिं पचधारमएहिंसमरिव  
 हा । पापमे माथ तेवेमदित परिहराभावा भवे परिवारमदित । यहाणुपुब्बिचरमाणा । यथा पूर्वे पणकमे हावतावका विचरतावका । गामाण  
 गानदूहज्जमाणा । यज्जपाननो वीजपमे आतावका । सज्जमुहेव विहरमाणा । सखे सखेकरो विचरतावका सख्खाये पमतिवव विहारी परवसेनही  
 जेवतेमियानयरो । जिज्ञां तंगियामामेनयरो । जेवपुप्फवर्हणीणवण । जिज्ञां पय्यवतोभामे पैव यकायतव्वे । तेवैवतावमच्छतिववागच्छइता । तिह्ना  
 पावै पापोम । यहापहिं दूवउक्कठनिविहताण । यथा प्रतिरूप यथा वाण्य अभिपक्क यइमे । सज्जमच्चतवसायण्यभावेमाणा विहरति । यावताकम  
 थारोण ते मयम सूयमाकम मिज्जतेवे ते तपते उयमेतपेकरो भाव्याने भावतावका विचरेव्वे । तएणतुनिवाएणवरोप । तिवाते तुंमियानाम नगरोमेविदे ।  
 मियः कमतिगवउइवपरमहापपेमु । सिंघाया कल्लमे पाकारेस्मानक तोन गज्जोमिह्वे ते स्मानक पारगन्तो मिये त स्मानक ववो गज्जोमिह्वे ते स्मानक राजमागं



अमवगतैरव ० मिंपाठनति ॥ अट्टाटकफसाकार स्थान त्रिक रप्यात्रयमीलनस्थान नतुफ रप्याचतुष्पमीलनस्थान चत्वर बहुतररप्याभीलनस्थान  
महापयो रात्रमायः पन्मरप्यामात्र यावत्करत्वात् बहुवचसहेइवाइत्यादिपूवव्यास्मात् मन्त्रवृष्य ॥ पठिसुखेति ॥ अष्टपगच्छन्ति ॥ सुयाइति ॥

तण्ण तसमणोयासया इमीसिकहाए लुठठासमाणा हठतुठा जाव सदावति , सदावित्ता एववयासी , एव  
खलु देयाणुप्पिया पासावसेज्जा घेराजगवेतो जातिसपग्गु जाव अहापफिरुव उग्गह ठगिरिहत्ता सजमेण  
तथमा अुप्प्याणजावेमाणा विहरति , तमहाफल खलुदेयाणुप्पिया तहारुयाण येराण जगवताण नामगोय  
स्सयिसयणयाए किमगपुण अुत्तिगमप्यत्तणनमसपफिपुच्छुणपज्जुासणयाए जाव गहणयाए तगच्छामो

एक यमीमाच । आवएनडिमाभिनङ्गाजिज्जावेति । बाणत् मन्त्रको बहुवचसवेरवा इत्यादि पूववत् एकट्ठिणि सादम सुयवे जेइना इम वचासाव आवेति  
तवत्तममवावामया । तिबारे ते अमवापासव मावसेवव जावक इत्यव । इमीसिकहाए । एइवो ववा वार्ता चत्वर । सदासमाचा । बहुतुठाजावसदा  
वेति । मापुपावा ते भाभिववे इय सतोय पाग्गु अगुइववा बाणत् माहामाहि तेइवै तेइवोने । एववयासी । इम चइताइया । एवंखलुदेवाणुप्पिया ।  
इम निवै देवतानि पवि वत्तम । पासावसिअ । पावमायना अपम्वयिवादिक् । वेतामवना । कविर ज्ञानवत । जातिसपसा । जातिबरी सडुत्त ।  
आवपहापटिपूर्वकम्वैअम्विहित्ताच । यावत् सवायतिरूप पभिनुइ गुहने । सवमेवतवसापयाव भावेमावाविहरति तववा । संवमेवरी तपेवरी या  
अनि भावतावका विरैवै तेमाटे । महाफसलसुदेवाइयिका । महाफसल सवृटफव माटाफस निवै सेवेनेपि वत्तम । तहादूवाचवेराअमवतावे । जे  
इवा पूवववा तेइवा म्यदिर दुतठव ज्ञानवत । आमगोइअविसयवयाए । तेइवा नामगोने पवि सोमसमे एतवे नामगोवसोभवा पवि महाफववे ।  
विमपपुवपभिजमववइअमसवपटिपुववपज्जुवावयाए । म्मू कइवो पग इति कोमनामववि ववो साइमोअइ पांच पभिजम सोचवे वादेवे ममज्जा  
र करेवे मनागन सदेइ वार्ता पूववे सेवा वेयाइतिने करेवे । जावमववयाए । बाणत् पवोइवको गुग्गवा िने तेवे । तंगरवामोचदेवाइयिका । ते

स्वकीयानि ॥ कथयसिद्धमस्ति ॥ ज्ञानानन्तरं कर्तव्यकर्मण्यैः स्वपश्येवतामा त तया ॥ कथकोउत्तमसपायिच्छति ॥ इतानि कौतुकमाप्नुया  
म्यथ प्रायश्चित्तानि तु स्वप्रायश्चित्तपातायै मवश्यकरणीयत्वाद्यै को तथा अन्येत्वाङ्गः ॥ प्रायश्चित्तमिति ॥ प्रादेन प्रादेवा बुद्ध्या यदुर्वोपपरिहा  
रायं पादच्छुभाः इत्याकौतुकमप्राप्तय त पादच्छुभा यतिविषयः सः कौतुकानि स्योतितत्कादीनि मङ्गलानि तु सिद्ध्यर्थकव्यस्तद्वोक्तुं प्रादीनि  
सुदृष्यावेष्टावति ॥ बुद्ध्यात्मनो वेण्यादि वेयोचितानि अपवा बुद्ध्यानि च तानि प्रादेश्यानि च राज्यादिप्रमाणयोगोक्तानि सद्प्रावेश्यानि ॥ च  
त्याहपरवरपरिधिपति ॥ इति ॥ इत्येते द्विच ॥ कथार्थपरपरिधिपति ॥ तत्र प्रथमपाठो व्यक्ता द्वितीयस्तु प्रवरं यथाप्रवती त्येव परि

णं देवाणामप्यया धरेन्नगवते वदामो णमसामो जाव पञ्जुवासामो , एयणं इहजनेवे परन्नेवे जाव श्याणुगा  
मियज्ञाणं नविस्सइ तिकहु श्रुसुमस्यस्स स्थितिए एयमठ पणिसुणत्ता जेणय सयाइ नेहाइ ते  
णेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता एहाया कयवलिकम्मा कयकोउत्तमगलपायिच्छिन्ना सुधप्पावेसाइ मगस्यइ

प्रची कारव च वाक्काङ्क्षकारे इदमङ्गः ॥ चरेभयवर्तते वदामा णमसामा । वयं तु त तपैकरीहृष्ट ज्ञानवत मस्तव नमावैकरी योदा यः । करव शुभ नम  
स्कार करोते । जावपञ्जुवासामा । कावत् सेवाकरीते तेजनाकका, करिक्त प्रचीत धर्मादि विचार णगीकारकरै । एयंको इहजनेवा परभवेवा । एव चाप  
दे इहवाकनेजियै परकावतविदै । पासुनाभिजापकावभविच्छित्तिकाहु । षण्णगामीपवति यावत् इच्छे इसा करोते । पञ्चमसकषर्धति ए । एव एहने पा  
से । एयमददिसुवेति । एहवा षकपुवे चमोकारकरै । जेदेव सवार सवारं गिकाइ । जिहो भाप आपका वरदे । तेवेचवामसद्धतिचवागच्छइत्ता । तिहो  
पादे तिहो पाचोने । एहावा । ज्ञानकीया । कयवसिक्का । आपकाधरमादेवता ने कावा वसिक्कम जेये । कयकोउत्तमसपायिच्छिता । कोधोदे काट  
च नुह्णारमादे मंगनीच पचत दप्पाटिक प्रावधिण तिमव वाठना जेवे केर कहीये — वस्तु भाभरवादि पग ठामे कुडाई पडिटा जिय इटि मसागे ।  
मव्यावेसाइ मगस्यार इत्याइ परपरिधिवा । राजसमाप्रवेश उचित मयसौक पाकावथ प्रधान पडिटा । प्रथमहृष्टवत्तरवाक्काङ्क्षसरोरा । भारवी



धरासगकरणेण, चस्कृष्णसेञ्जालिपगहेण, मणसा एगुप्तीकरणेण । जेणेच धेराजगवतो तेणेच उगगच्छ  
 ति उगगच्छङ्गता तिरकुप्ती आयाहिणपयाहिण करेति जाय तियिहाए पञ्जुवासणाए पञ्जुयासति, तएण  
 तेधेराजगवतो तेसि समणोवासयाण तीसेयमहमहालियाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिक्कहेति जहा के  
 सिसामिस्स जाय समणोवासइत्ताए आणाए आराहए जयइ, जाय धम्मो कहिठ । तएणतेसमणोवासया  
 धेराण जगवताण अतिए धम्म सोच्चा निसम्मइठुठ जाय हियया तिरकुप्ती आयाहिणपयाहिण करेति,

तिरकुप्ती । इट्ठिदेखे तिवारे झाववाही मखवे चठावे ४ । मचवाएगलीकरेव । धनेकावर्षी मनने एकचकरवो ठामेराववा ५ इमकरी । खे  
 बरेराभगवता । जिहा कखिरमगवतवे । तेवेवसवागचरति २ ता । तिहा पावे तिहापावेने । तिक्कतोपायाहिणकरेति २ ता । तोमवार खीमवा  
 वमावे वनी करामे पटुमीदे एतोन भगे सेवने कपासनाकरे । तएवरेराभगवता तेसिसमणीवासवाचतोसेवमइतिसहासियाए । तिवारे ते कखिर ज्ञान  
 वत ऐमयवत ते तेवने अमवापासकोने यावकोने ते सर्वोखठ अतिसाटीकवा धमपर्चा तिक्करी । वाउज्जामधमपरिकहेति । चार महावृतरूपधने  
 पाईनावना संतानिवाव तेमची कइ । कइवेसिसामिस्स । किम खीमोखुमार अमवे वज्जो तिमवई । जावसमणीवासइत्ता । यावत् अमवापासव आव  
 कपवे पावी । पावाएपराइएमइइ जाववभाक्किया । पात्रावे पारावक पूवे इसा वावत् धमवज्जा भगे अमवापासवे धंमोकारकोवी । तएवतेसम  
 वावामवा । तिवारे ते अमवापासव आवक ते । वेराचभयवताण संतिए । कखिरने ज्ञानयतने समीये । धव्ययावा । द्विविधधम सांभल्लावका । विस  
 पाइइइइआवइविया । अतिग्रये मय्यक प्रकारे इयंपाम्या चरुइवचनेविदे विव्वासवे खेइना पल्लत सांभल्लवाने पाटरवे खेइना ते वावत् इइयनेविये  
 साधु उपहेय सांभल्लवाओ पापवया धव्यमानतावज्जा । तिरकुत्तापायाहिणपयाहिणकरेति २ ता । तोमवार खीमवापासाओ प्रदर्शिवार करीने ।

प्रापः ॥ पुव्वतवपत्ति ॥ पुव्वतवः सरागावस्थाप्रवितपस्या धीतरागावस्थापेक्षया सरागावस्थायाः पूर्वकालमावित्वात् एवंस्यमोपि अयथाया  
तत्कारिन्मित्ययः ततश्च सरागरुतन सयमेन तपसा च देवत्वावाप्तिः रागाद्यस्य कर्मवन्धहेतुत्वात् ॥ कर्मियाएत्ति ॥ कर्म विद्यते यस्या सी कर्मो  
तद्भाव एता तया कर्मियतया अन्यत्वाद् कर्मका विकारः कामिका तथा कर्मीयेन कर्मवोधेन देवत्वावाप्ति रित्यर्थ ॥ संगियाएत्ति ॥ सङ्गो

तसमणायासए एयवयासी, पुव्वसजमेणसुज्जो देवा देवलोएसु उववज्जाति, तत्थण सुणदरस्किएनामथेरे तेस  
मणोवासाए एयवयासी कम्मियाए सुज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जाति, तत्थण कासवेनामथेरे तेसमणोयासए  
एववयासी संगियाए सुज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जाति । पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए सु

तसमणायासए एववयासी । ते यमनायास च यावकापते इम कहता इया । पुव्वतवर्षपञ्चादेवादेवकाएसुववज्जाति । पूव तपेकरी पञ्चोपार्थी । साधु  
देवनाकनेदिवै देवपत्ते जपत्ते, पूर्ववप सरामभादे तपत्ते, पूर्ववद् ज्ञां मयो ! नेकारवे रीतरायावकापेक्षया सरामपत्तो तप पत्तिस्सो । तत्त्वमेवहेतुवाम  
मेवपञ्चादेशहेतुनाएसुउववज्जाति । पूव सयमेकरी पञ्चापार्थी । ते समसोवासाएववयासी । ते यमसोपास च यावकापते इम कहताइया । पुव्वसज  
नै रामांमने कम यवनाहेतुवक्को एतत्ते इया क्वातनसो सामाविकादि यवाक्वातचारिषको पूवत्ते । तत्त्ववाचदरस्किरनामदेरे । ते साधुना समुदाव  
माहे पान्ततरचितनाम स्थित । तेसमणावासाए उववयासी । ते यमनायास च यावकापते इम कहताइया । कथियाएपञ्चादेवादेवकाएसुववज्जाति ।  
यमपत्ते यमनेविकारे पञ्चापार्थी । मापु देवनाकनेदिवै देवपत्ते जपत्ते एतत्ते समस्तकमच कोजागवो कोरिएककम मेवपञ्चाहे तिचेकरी देवपत्ते । तत्त्व  
मेवमएचाममेरे । तिहा माधुना समुदावमादि कायपनामे कविर । ते यमनायासाएववयासी । ते यमनायास च यावकापते इम कहताइया । मं  
गियाए पञ्चादेवादेशमापमउववज्जाति । सयमेकरी पञ्चापार्थी ! स पु देवनाकनेदिवै देवपत्ते जपत्ते मधुनादिकनेसमे वलता सरामपत्तो भवो इत्यादिभिने

इष्टपञ्चानामवाप्तिः ॥ इह पपुणसनात्रेतिष्य मनोवाकाग्रयेदेवदिति ॥ महाभक्त्यालिपाएति ॥ आलमप्रत्ययस्य स्वाधिक्यत्वात् महसिम्भृत्या ॥  
 यववृक्षलेति ॥ न चाग्रवो ज्याग्रव इतिपाठोपि दृश्यते अनाग्रवो भवकर्माभुपादान फलमस्ये त्याग्यवफलः समयः ॥ बोधावकलेति ॥ दा  
 प्रत्यये अथवा देवयोगेने इतिवचनात् व्यवदान पूर्वकृतकामवनहनस्य सवन प्राकृतकमकवद्वीचनंवा फल यस्य तद्व्यवदानफल तपश्च  
 ति ॥ किपत्तिरिति ॥ का प्रत्यय करवं यत्र तत्कि अत्ययं निष्कारकमेव देवा देवलाक्षेयु त्पद्यन्ते? तपार्थयमयो सुकरीत्या तत्कारकत्वा दिव्यनि

करद्वहा एववयासी, सजमेण जते! किफले, तवेण जते! किफले ? तएण येरा जगवतो तेसमणोवासया  
 एववयासी, सजमेणस्यज्जो ! स्यणरहयफले, तएण तेसमणोवासया धरेजगवते एववयासी, जइणजते !  
 सजमेस्यणरहफले, तवेवोदाणफले, किपत्तिरिति ! देवादेयलोएसु उववज्जाति ? तस्यण कालियपुत्तेणाम  
 स्यणगारेधरे तेसमणोवासए एववयासी, पुत्तवेण स्यज्जो देवा देयलोएसु उववज्जाति, तस्यण महिलेनामयेरे

एव वयासी । इस कहताहवा । सजमेणभतेकिफले । सवमना देभगवन् । पूज्य स्यकपुवे । तवेकभतेकिफले । यत्ते तपनो देभगवन् । स पूज्यपुवे इतिप्र  
 त्त । तएच तेदेसमवतो तेसमवाकासह । तिगारे तेसविर भगवत आनवत ते यमवापासक वावकापते । एवंवयासी । इसकहै । सजमेणस्यज्जोअथ  
 वयफले । सवमना अहा भायों अनायवपल एतावता अवा आबताकम वारीये । तवेवोदावपले । तपना पूर्वकृतकमना केदेवो एतावता मूलमाकम  
 केहै । तएनेतेसमवाकामवा । तिगारे ते यमवापासकवोवा प्रज्जो एववा उत्तर सांभसो । येरेममवतेएववयासी । सविर ते भगवतप्रते इस कहताह  
 वा । जइणभतेमजमेवंपएववयफले । जो वं वाक्कासकारे, देभगवन् । सजमना अनायव कहतां सवरफल जेले आनताकमे यारीये । तवेवोदावपले ।  
 तपना पूव मपितकम केदेवा । अपितवकभतेदेवादेववाएसुउववज्जाति । विसकारे जेधये देभगवन् । देवता देवलोकेनेविपै जपजे तपसंयमने उल  
 रोते तेइना अकारववो इत्थभिप्राव । तज्जणवाधियपुत्तेणामयवमारि । तिहां ते साधुना समुदावभाहे य वाक्कासकारे, वासिकपुत्र इहेमामे साधु ।

यस्याग्नि म जग्ही तद्वाय मन्ता तथा मन्त्रितया द्रव्यादिषु सत्सङ्गोऽपि सयमादियुक्तोऽपि कर्मं वध्नाति तत सङ्कृतिषा देवत्वावाप्तिरिति । आश्व-  
पुत्रतपमन्त्राहो निरागिनापच्छिमाश्वरागत्स । रागोसुगोषुतो सगणममप्रलोतेकं ॥ १ ॥ सर्वेकमित्यादि ॥ सत्योपमर्षं कस्या वित्याह ॥ नोचेव

ओ ! देया देयलोऽसु उधयज्जति , सञ्जेण एसस्यठे नोचेयण आयजायवसुहयाए । तएण तेसमणोवासया  
धेरैहि जगयतोह इमाइ एयाकयाइ यागरणाइ यागरिया समाणा हठतुठा धेरैजगवते वदति जमसति ,  
यदडत्ता जमसइत्ता पसिणाइ पुच्छति , अठाइ उवाहियंति , उठाएउठेति , धेरैजगवते तिरकुक्षो जाय वंदति  
जमसति , यदडत्ता जमसिस्ता धेरैजगवताण अतियाह पुण्यइयाह चेइयाह पणिनिस्कमति , पणिनिस्क

मंजकरता मयमादिदुक्कता कमदीये देइको देइकुवे । पवतवेक पुण्यसकमर्षं कण्ठयाए । इम सरागवपेकरी सराग सयमेचारिनेकरी कभंजोपकरी । स  
जिवाए । मन्थ द्रव्यादि जमेकरी । यज्जादेवादेवकोममठयकज्जति । यहापावो । देवपणे देवकाजमेधिये कपले । सवेबंसपइ । सांभू च वाक्काबंकारे,  
एइ पव यत्तवे एइ पव यदाय कज्जावे । पाचेइलपायमावयत्तयाए । नही जिये च वाक्काबंकारे, आत्मभाव वत्तयतायेकरी कज्जा, एतवे पापको  
कयभावे पचंभाइ इदि पचंनवो कज्जा एइ पव परमावशो कज्जावे इत्यर्थ । तएवंतेममकायासया । तिबारे ते यमकोपासक आवक । धेरैहिमगवते  
हि । ज्वरि भगवते । इमाइ एयाकयाइ । एइ एताइइए । यामरवाइ वायटिवासमाया । मन्थनापव कज्जावे । इहठुडा । इमपाज्जा । धेरैमगव  
ती । ज्वरि भगवतमते । यममति बंदिविदिता । योडे ममकाइकरे वादीने । पमंजिता । ममकाइकरेज । पसिवाइ पुच्छति २ ता । मन्थपते पृथेयमपते  
पुढोने । पडाइ उवाहियंति २ ता । पूजोत पयपइ वाग धारोने । यहाएउठेति २ ता । धेरैमगवते तिरकुतावदति यमसंति २ ता । जठो खमायाय खभाव  
ने ज्वरि भगवत तेहापते तोनवार बंदि ममकाइकरे वादीने ममकाइकरोने । धेरैमगवताय । क्वरिने भगवने । अतियापो समीपकको । पुण्णइ  
वतोयाचोचेइवापा । पय्यतो आम येयवको । पडिनिस्कमति २ ता । जोसरे जोसरोने । आमेवविधियालधूपाका । जेदिजिबी पाज्जाइता । तामेववि

अभित्यादि ३ नेवा त्मनाववच्छाद्यतया उपमर्श आत्मप्रावण्य एव साभिप्रायय एव न यस्तुतत्वं वक्तव्यो वाच्यो अभिमाना घोषा ते आत्मप्रावण्यकथा

मइसा जामेवदिस पाउझूया सामेवदिसं पळिगया । सएण तेथेरा जगयतो सुखयाकयाइ तुगियाउ नयरो  
उ पुण्णइयाउ वेइयाउ पळिनिमाच्छति , पळिनिमाच्छइसा ग्रहिंया जणवयाविहार विहरति , तेणका  
छेणं तेणसमएण रायगिहेनाम नयरे जाय परिसापळिगया , तेणकालेण तेणसमएण समणस्सजगयउ महा  
वीरस्स जेठेच्चतेयासी इवचूइणाम सुणगारे जाय सांक्कसविउलतेउलेस्से लठ्ठकुंठेण सुनिस्सित्तेण तवोक्कमे  
ण सजमेण तवसा सुप्प्याण जावेमाणे विहरइ , तएण सेजगवगीयमे कुंठस्समणपारणयसि पढमाए पोरि

मिपळिपढा । न दिगिने साने पाळानवा । तएवं तेवेरा । तिवारे ते खविरसाधु । एवदा मच्छावे । तुयियाया बबरीओ । तुमिवा  
नाम बनरो यओ । पुण्णइतिवाया वेइयाओ । पुण्णवतो नाम वेइयाओ । पळिचित्तमति २ ता । मौसरे मौसरीने । वडिवाववविहारं विहरवि ।  
वाडिउ खनवद देयनेविपे विहारिवरो विचरे एतावता वोवे खानविवाव । तेवंवालेव तेवंसमएव । ते कावनेविपे ते समयनेविपे । रायगिहेनामं  
इइहाता । रायइइनामे नगर झूयो, तिहा योमइमान खामी समावरा । जावपरिसापळिगया । यावत् पढायावो धर्मक्कओ परिपदा पाळोगाइ इत्था  
दि सवइइया । तेवं वासेवं । ते कावनेविपे । तेवंसमएवं । ते समयनविपे । समयसुभगवणोमइवोरख । यमव भयवंत योमइवोरखानोनी । खेइ  
पत्तिवानी । वडागिण येमा । इदमूतोखामेववगारे । इइभूतो इयेनासे साधु इत्थादि । जावसुखित्तविउलतेउलेखे । यावत् सचेपोखे विपुल खोरावर  
तेआसेय्या खेने । खइइइणं । पट्टवट तपे पारणावरेखे । पळिचित्तमेवणवोखेवं । थंतरावडित निरत्तर इत्थव, तपक्कमेवरो । थंजमेण तवसापयाव मा  
वेमावेविहरइ । मवम सतरेमेइ तप वारेमेइ ते सयमे तपेवरो आत्मागत भावताववा विचरेखे । तएण सेभयवगीयमे । तिवारे तेभगवत मौगम ।  
खइइमवपारवमसि । खइभजना पारवनेविपे । पढमाएपारिखीए । विससनी पडिओ पोरिखीनेविपे । सुक्खाववरेइ । सुक्खाववरे । बीयाएपारिखी



ल्नेपां भाव घाल्ममापवच्छात्रा यश्चामिता तथा नवय महामानितयैव श्रुमो पितु परभार्यया य मेयविध इतिजायता ॥ मत्तुरियति ॥ कायिक  
 त्यररहित ॥ अचवसंति ॥ मानसुषापसरहित ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥ अचवनेति ॥

सीए सज्जाय करेइ, थीयाए पोरिसीए ज्जिआण ज्जियाए, तइयाए पोरिसीए छतुरियमववलमसज्जते मुहपो  
 क्षिय पन्निहेइइ, पन्निहेइइता नायणाइ वत्याइ पन्निहेइइ, पन्निहेइइता नायणाइ पमज्जाइ, पमज्जाइता  
 नायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेइता जेणेव समणेज्जगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइता समण  
 जगव महावीर यदइ णमसइ, वदइता णमसइता एववयासी इच्छामिणज्जते! तुज्जेहि अस्सणुयाए समाणे  
 ठठरकमणपारणयसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्जिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स निस्कायरियाए अकित्तए?

ए। बोओ पारिसीए। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय। आनन्धियिआय।  
 विवेहेइ २ ता। कायाव बरी उतावसानही मने यणववो यसंभातज्जान बका एतवे जववा पूर्वव इवै २ मुख वस्मिवापत्ते पस्मिहे पस्मिहेहीने। भाव  
 भावचार व्वाइ पस्मिहेइ २ ता। भावन तोमपाचा व्वा पस्मिहे पस्मिहेहीने। भावचार पमज्जाइ २ ता। भावन पाचा प्रमाज्जे पूजे प्रमाज्जीने। भाव  
 बार उवाहेइ २ ता। भावनपाचा गरी यहीने। जवेवसवे मयवेमहावीरे। विवा अमव भावत योमहावीरकासी। तेवेववागच्छउवागच्छइता।  
 तिवा पावे तिवा पापीने। समवे मयवे महावीर। अमव भावत योमहावीरकासी। तेवेववागच्छउवागच्छइता।  
 र वरीने। एववयासी। इम कइताइया। इच्छामिणज्जते। पस्मिहेइ २ ता। वदे ममरवार बरे पापीने ममरका  
 रायती। वदममरवारवगसि। वदमज्जना पारणमेविने। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे। रावगिहेवरे।  
 वज्ज म दिवने। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया। वज्जमपूरया।

नाय ॥ निरुद्धायापरिपत्ति ॥ निद्रासमाचारश्च ॥ जुगतरपत्तोयनापत्ति ॥ युग युप सारप्रभाज मन्तरं स्वदेहस्य दृष्टिपातदेशस्य च अयथाभा

श्रुहासुहृदयाणुप्यिया मापक्रियं । तएण जगवगोयमे समणेण जगवया महाधीरेण श्रुण्णुगुहाएसमाणे सम  
णस्स जगवत्तं महाधीरस्स श्रुतियात्तं गुणसिंहात्तं चेइयात्तं पठिनिस्कमइह, पठिनिस्कमइहा श्रुतुरियमच  
यलमसन्नंते जुगमतरपलोयणाए विठ्ठीए पुरत्तरिय सोहेमाणे सोहेमाणे जेणेव रायगिहेनयरे तेणेव उयाग  
च्छइ उवागच्छइहा रायगिहेनयरे उच्चनीयमज्जिमाइ कुलाइ परचरसमुदाणस्स जिरकायरिय श्रुइह, तए  
ण सेजगवगोयमे रायगिहेनयरे जाव श्रुमाणे बज्जजणसइ निसामेइ, एवखलु देयाणुप्यिया तुगियाए न  
यरीए यहिया पुप्फत्रइयाए चेइयाए पासावसिज्जा येराजगवत्तो समणोवासएहि इमाइ एयाक्याइ वागर

कईहे—पहासदेवाणुप्यिबानापठिबंध । विम सुखउपणे तिमकरा देदेवाहमिय । कारिना प्रतितव मकरज्जो व्याघात मकरज्जो । तएवमनक्कोवमे ।  
तिवारि मभवत्त नीतम । समवेचंमयववामहावीरं । यमवमवत्त नीमहावीरज्जो । पहासहाएसमावे । पाहादीवावका । समवसुमगवभीमइ  
वीरए । यमव भयवत्त नीमहावीरज्जो । यतियाथी गुवसिहाथी वेइयाथी । समीपवकी गुवसिहानाम पैववकी । पठिनिस्कमइ २ ता । नीव  
ने नीवमोने । श्रुतुरियमववमवत्तमे । वायागेकरी उताववत्तनी मनेकरी वपकनही वसवत्त वान वका । जुगतरपलोयबाएदिहीएपुरभीरिवसीहे  
मावे । भूयत्तो तेइममाव वत्तर वायवाथीर वेग वनेइइयात्त वेयने वववत्त देखे ण्ठकी इटिकरी वामे ईवीसमिति वीधवा पासतावका । खेवेव  
रायगिहेनयरे । विहा राखएवमाणा मकरज्जो । तेवेववामवत्त २ ता । तिहा वामे तिहा वामोने । रायगिहेनयरे । राखएवमाणा मकरनेविये ।  
उच्चनीयमज्जिमाइकुमार । खं व नीव मज्जम कुलनेविये । घरसमदावसुभिक्कायरिववत्तइ । घरनेविये समदान भिजावेवानेपर्यं पट्टे क्रिरे । तएव  
सेमवमंमायमे । तिवारे ते भयवत्त नीतम । राखगिहेनयरे । राखएव मकरनेविये । वावववत्तमावे । यावत्त क्रितावका । वपुववत्तनिवासिहा । पहा

अनादित्वात्तानि वाता वानान्दन्तोक्तान् तथा वृक्षा ॥ इति ॥ इत्येवमेवमस्येति ॥ अथ कथमेतत् स्वविरयवचनं मन्ये इति वितर्कार्थो

गाढं पुच्छिष्या , मज्जमेगर्जते । किफले तये किफले ? तएण तेथेरा जगवतो समणीवासाए एव ययासी सज  
मेगथुज्जो ! थुणगहयफले , तये योदाणफले , तचेय जाय पुव्वतयेण पुव्वसजमेण कमियाए सगियाए थु  
ज्जा । देया देयत्ताणनु उययज्जति , सच्चेण एसमहे गोचेयण थ्यायजावधत्तध्याए । सेकह मेय मन्ने एव ?  
तणन जगयगायमे दुमीसरुहाए लछ्ठे समाण जायसहे जाय समुप्पन्नकोउहले थुहापज्जात्त समुदाण गिरहइ

अथवा जगहो वचन कीर्तने । एवमनुदशपट्टिणा । इम निवे देवभुमिय । मयियाएवयरीए । सुगियानाम जगरीने । वथियापुम्फवतोएवेइए ।  
वादिए वचनोभासा चेअनरिने । पासावहिम्ययेराभवता । पागनायना संताजिवा यथियादिक अविर भसवंतवते । समसोवासएहि । अमको  
रावके नासहे । इमाए एवाकवाए वागएवाए पच्छिवा । एववा एताइयकए वासे कइसे ते प्रवनायय पूजा ते कइहे—संजमेवमंते किफसे ।  
अमको ऐअत्तए न् एअ । तवकिअने । तपमा व् एअ ? तएववेराभसवंता । तिवारे ते अमव भगवंत । ते समसोवासए । अमसोपासक आव  
काउने । एवववाओ । इम कइता कइ । अममेवयया । अममा यओपायो । एववययकसे तवेदीरावकसे । एनायवयव जवा यावताकमं वारीवे त  
एवा मूनसाकअहेरीवे न कअ । तवेववावपुज्जतवेरपुज्जअमेवकजिवाए । इम तिमहीअ कइओ , यावत् वारन तयेवरो वरामवारिरेवरो कमिया मेव  
एका तयेवरो । यतिगएवत्ता । अमव इयाने अवेवरो यथापायो । देवपने देवलोकावेदिये जपने । सवेवएअमहे । अथ ए  
एव अयडे वरि । नावाएववायनागइअवराए । जहो दिवे क वाअ्वाव्वावे प्रापवो कप्यनावे यइभाववुहि यनेमवो कज्जा एअव परमाववो कज्जा  
हे—वेवइअमवेराए । दिवे किम ए अविरमा वचनमाओवे एववा वितकअपना इनेअवारे वचनअ कवा समुक्कना वचन कीर्तिया । तएवमेवमवमीय  
ने । तिवारे त भववचन मोअम । इमोवेवइराअमहे ववावेवरायमइडे । एवरो कवावाओ तेइवा यवनाओकवा एतने एवम कीमनीने जवनी अवा वाअ्वा

गिरहइहा रायगिहानु नयरानु पक्रिनिकमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेय गुणसिलए चेइए जेणेव सम  
 ने नगयमहावीरे तेणेवउवागच्छइ २ समणस्स जगवठं महावीरस्स अतूरसामते गमणागमणाए पक्रिक्का  
 मइ एसगमणेसण आओएइ, नसपाण पक्रिदसेइ २ समण नगव महावीर जाव एववयासी, एवखलु नते !  
 अहंतुन्नेहिं अण्णुणाए समाने रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स त्तिस्कायरिया  
 ए अण्णुमाणे यज्जजणसहं निसामेइ एवखलु देवाणुप्पिया तुगियाए नगरीए यहिया पुप्फवईए चेइए पासा

जेइने । जावममुग्गवाउइने । जावत् जणमा कोतुज अउरव जेइने । पइगपवत्तसमुदावनेउइ २ ता । यवा पर्याप्त एतत्ते भिच्चा पाहार वंपूव ते प्र  
 ते पई चइने । राययिहापोवरापापहिबिक्खमइ २ ता पतरिववावसीहेमाचे । राखयइनामा मगरवकी मोकई नोकडोने कायवी उवावदानही  
 मनवी उतावनामही यावत् ईर्वात्तमिदि साधताबका । जेदेवगुबसिसएवेए । जिहां मुबयिदानाव पैवई । जेदेवसमवेभयवनइवीरे । जिहां यम  
 व भयवत योमहावीरवामीके । तेदेवउवागच्छ २ ता । तिहां पावे तिहां आवीने । समखमवचामहावीरख । यमव भगवत बीमहावीरखामो  
 ने । पदूरसामते । पवूं वेयमानही पवूं ठकामही । यमवागमवाएपडिबमइ २ ता । समनायमज आवी पाविवी पाखीवे मिवव चइने जेजीव वि  
 राधनावईदेवे, ते सभारी पडिबने पडिबमीने । एखमनेसुखपाओए । जे कांइ यव पडवा पडव बयो तोदूवव पाखीई । मत्तपावंपडिदसेइ । भा  
 त पांवी भिदीव बिहारी ते देगाचे देफाडीने । समखमगवंसहावीर । यमव भगवंत योमहावीरखामोमते वोही । जावएववयासी । वावव इम खइ  
 ताइण । एवपुत्तमते पइतगंछेहिं । इम भिये वेमयमन् । प्र तुळे । पछखवाएसमाचे । भाद्रादौषावकी । राखगिहेचपरे । राखयइनामा मगरनेविदे ।  
 उववीवमअमाचिजुमाचि । छव नीव मध्यमकुलनेनिवे । घरसमुदावखमिक्कायरियाए अइमाचे । घरसमुदाव भिच्चा पाहारनेविदे फिरताबका ।  
 नहुजचसरनिसामेइ । पवां मनुचानेमुलवी यव्द सीमळा । एवउसुदेवापुणिया । इम भिये डेदेवागुणिय देववज्जभ १ तूमियाएचवरीएवहिया । तूमिया

निपातः, एव ममुना प्रकारेवेति, बहुजनवचन ॥ प्रयुजति ॥ प्रभवः समर्थो स्ते ॥ समर्थमिति प्रशंसार्थो निपात स्तेन सम्यक्ते व्या  
कृते म्वर्तेते धविपर्योदा साहस्येकः समन्वयः समितावाः सम्यक् प्रवृत्तयः अभितावा व्यासवतः ॥ आठिज्यसि ॥ प्रायोगिकाः

वसिष्ठ्या येरा नगवतो समणीवासएहिं इमाइ एयारुयाइ वागरणाइ पुच्छिया, सजमेण जते ! किफले,  
तवे कि फले ? तचेय जाव सस्येण एसमंठे णोचवण स्यायनावयसस्ययाए तपज्जुण जते ! तेयेरान्नगवंतो तेसि  
समणीवासयाण इमाइ एयारुयाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाज्ज, स्यम्भूसमियाण जते ! तेयेरान्नगवतो  
तेसि समणीवासयाण इमाइ एयारुयाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाज्ज, स्यसमिया स्याउज्जियाण जते !  
तेयेरान्नगवतो तेसि समणीवासयाण इमाइ एयारुयाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाज्ज, स्यणाउज्जियापलि

नयरीने बाहिर । पुम्भनतीएरेए । पय्यज्जोनामा बैजनेविने । पासावणिजा । पाखनाकना सुतानिया । बेरामनवंतो । क्विर भमवत । समबोचान  
एहिं । नमबोपासवे । इमाइ एयारुयाइ । वज्ज वववज्जित ज्ञानीना वववतव । पसिवाएपुच्छिया । प्रव हेय गेव उपादेय वयु पव्व । सजमेवमंतिविं  
यने । सवमती हेमयवन् हेमय । जं फलहे ? तवेचिक्खे । तपनी स्युवववे ? तवेववावसवेएसमंठे । तिमबोव सववववो वावत् एयव सवववे ज्जम  
ववे पवि । बोवेववंधावमाववववववव । नवी जिने व वाक्कासंवारि, पाज्जुवि करीने नवी वज्जा एयवं । तपमूज्जभंतिवेरामनवंतो । ते भवो प्रमू स  
मववे हेमयवन् ! ते क्विर मज्जत । तेसिमबोपासवव । ते यमवापासव वववरोक्क याववना । इमाइ एयारुयाइ । ए सिज्जान्तीत्त ज्ञानी मायित  
रुप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रव ज्जवाववेयानि एतावता क्विर त याववानीना सदेव टाखिवानि समववे इत्यव । उदाज्जुपय्यम् । पववा वे समबंनवी  
पव वववने । समिवावंमंतिवेरामनवंतो । भवोभीण पय्यासवंत हेमववन् । क्विर ज्ञानवव । ते सिंसमबोपासवव । तेनमबोपासववना । इमाइए  
यारुयाइ वागरेत्तए । एयवा एतावयकप प्रव ते मंते ज्जवावेयानि । उदाज्जुपयसमिवा । पववना समारपवं कवववनि समबंनवी । पावज्जिवावं

उज्जियाण नते ! तेथेरानगवर्ततो तंसि समणीयासयाण इमाइ एयाकयाइ वागरणाइ वागरित्तए । उदाज्ज ,  
अणाउज्जिया पलिउज्जियाण नते ! थेरानगवर्ततो तेसिसमणीयासयाणं इमाइ एयाकयाइ वागरणाइ वा  
गरित्तए । उदाज्ज , अपलिउज्जिया पुसुतवणं अज्जो ! देया देवलोएसु उययज्जति, पुसुसजमेण कम्मियाए  
सगियाए अज्जो ! देया देवलोएसु उययज्जति, सज्जेणं एसमठे णोचेवण अयायजावयससुयाए पज्जेण गीय  
मा ! तेथेरानगवर्ततो तेसिसमणीयासयाण इमाइ एयाकयाइ वागरणाइ वागरित्तए णोअप्यप्पन्नु तहचेय नेय

भते । एववा उपवायवत प्राग्विकतत्पर्ये आचरे देवमवन् । ते वेरामवन् । ते खविद भगवत् । तस्सिमवावासवाच । ते यमवायासकना । इमाइ एयाक  
याइ । एववा एताइमरूप । नामरणाइ वागरित्तए । मन् प्रते अवावदेवने । उदाइपचत्तविया । एववा उपवायवतनही आचरेही । पस्विउज्जियाच  
मन्तवेरामवर्तता । जापयवो डूकडा जिम डूकडा मय्यकभावअचि एववो आचरे मय्यकपचोअचि उभगवन् । ते खविद भगवत् । तेसिसमणीयासया  
च । ते यमवायासकना । इमाइ एयाकयाइ वागरणाइ वागरित्तए । एववा एताइमरूप मन् प्रते अवावदेवने । उदाइपचत्तविया । अयवा क्किमिय  
प्राग्विकतत्पर्ये । पस्विउज्जियाचमणीएमउववन्ति । एववते एतत्ते सरागतये अहीपाही ! देव देवसाकनयिये अज्जे । एवव सजमेच । पूर्व सजमे सरा  
य सजमे । अग्निवाए मगियाए । येव वसीयेअही मज्जे इत्थाविसयेअही । अज्जादेवादेवलोएमुउववन्ति । अहीपाही ! देव देवसाकनयिये अज्जे  
मज्जेमसमठे । मज्जे पच । पाचैरुपवायवतवयसाएममूच गायमा । नही मिये च वाक्यासकारे थाकभाव वत्तव्यताये अचट्टिभावै एपर्ये अज्जा  
अ इतिमन्, ममवदे देवीतम । ते वेरामवर्तता । ते खविद भगवत् । तेसिसमणीयासयाचं । ते यमवायासकना । इमाइ एयाकयाइ वागरणाइ । एववा  
एताइमरूप मन् प्रते । वागरित्तए । अयान देवने । ओपपमू तहचेवयेय्य । नही प्रसमय इत्थादि, तिमहीव आचरे । प्रवसेसियआवपमूममिय

मधपयपामनासुविचान्तः मुक्त मध सा यत्कसा तद्दर्शनार्थमाह ॥ तथा रूप मुचितस्तत्राव कम्बनपुरुषं प्रमथवा तपोयुक्तं  
मुपमसत्वा दस्यो तत्पुत्रजनमित्यथ ॥ माहनवा स्वय इजननिवृत्तत्वा त्परस्मृति माहनेति यादिस्य मुपलब्धत्वा देव मूतगुणयुक्त मितिज्ञाव

छ, अथसेसिय जाय पनुसमिय स्याउज्जियपलिउज्जिय जाय सञ्जेण एसमठे णोसंखण स्यायजायवसत्तव्याए ।  
अहपिण गोयमा ! एवमाइस्सामि ज्ञासेमि पन्नेवमि पक्खेमि , पुह्वतवेण देवा देवलोएसु उययज्जाति ,  
पुह्वसजमेण देवा देवलोएसु उययज्जाति , कममियाए देवा देवलोएसु उववज्जाति , सगियाए देवा देवलो  
एसु उययज्जाति , पुह्वतवेण पुह्वसजमेण कममियाए सगियाए स्यज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जाति । सञ्जेण

जाकता मय यावत् समस पम्मासवत् । आठच्छिद पमिठच्छिद । उपयोगवत् । आवससेवएसमहे । यावत् मां च एषव । याचेववपाव  
भाववत्तव्याए । मग्गो निवै च काक्कानेकारे, चाक्कभाव वक्कत्तादे पवहुविभावे एषववक्का । पवहुविचे गोयमा । इ पवि वेगोतम । एवमाइस्सामि ।  
इम कम्मं । मामानि पक्खेमि पक्खेमि । माक्खं विरोधेकरो कम्मं प्रकम्बू । पुम्बतवेवदेवादेवसाएसुठववज्जाति । पूवतपे एतस्से सरागमयमे देव  
ता देवनाकनेविये अपवै । पुम्बतवेवदेवादेवलोएसुठववज्जाति । पूवसंयमे सरागसुबमे देवसाकनजिये देवपचे अपवै । कमियाएदेवादेवलोएसुठव  
ज्जाति । येय कम्मगेकरो देवनाकनजिये देवपचे अपवै । समियाएदेवादेवलोएसुठववज्जाति । मनुव इ आदिक्कनेसगे देवलोक्कनेविये देवपचे अपवै । पुम्बत  
देवपक्कसजमेव । पूवतपे पर्वसंयमे । कमियाए सगियाए । कम्मो रक्खादे तेवेकरो पुम्बतमनुवादि समेकरो । पक्कोदेवादेवलोएसुठववज्जाति । पक्कोभावी ।  
एतनेवादे देवता देवलोक्कनेविये अपवै । सजेवएसमहे । मां पूवै एषव । याचेववपावभाववत्तव्याएताकवेवर्मतेससंभावंदा पम्बुवासमावत्त । न  
रो निवै एषव धामकक्कनावो कम्मो परमावधो कम्मो पनन्तरे मापुसेवा करवोक्करो । विवे ते सेवानोयक देकावधमिकाने वरैवे—तत्तापुप यो  
य स्वमापवत्त वराज्जासंकारे, वेमगवन् । त्रमव तपमुक्त पाते इवपावो निष्ठतवया पनेराने क्वै ववोमत तेवपते भिन्नताने भिन्ना करपानि । विज्जना

वागर्थीसुमुचये ॥ अथवा अमलः सायु मांङ्गः आवका ॥ सवयफलसि ॥ सिद्धान्तप्रवक्तृता ॥ मावकलेति ॥ भुतज्ञानफल भवकादिप्रुतज्ञान-  
फल भवका हि भुतज्ञान भवाप्पते ॥ विद्यावफलेति ॥ विविष्टज्ञानफल भुतज्ञाना हि हेयोपादेयविवक्तकारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ यक्षस्वावक  
सेति ॥ विविष्टज्ञानफलं विविष्टज्ञानोहि पाप म्यस्याख्याति ॥ सयमफलेति ॥ कृतप्रत्याख्यामस्यहि सयमो ज्ञयस्यव ॥ अक्षरव्यपकसति ॥ अनाभयवक  
तः सयमवान् विल भवं कने नो पादते ॥ तवफलेति ॥ अनाभयोहि सयुक्तमोत्या तपस्यतीति ॥ वोदावफलेति ॥ व्यववर्गं कस्मिन्नरव तपसा

एवमठे णीचैद्यणं श्यायनावयसङ्ख्याए ॥ तहाकवेण जते ! समणवा पञ्जुवासमाणस्स किफला पञ्जुयासणा ?  
गोयमा ! सवणफला , सेण जते ! सवणे किफले ? णाणफले ! सेणजते ! नाणे किफले ? विस्साणफले !  
सेण जते ! विस्साणेकिफले ? पच्चस्काणफले , सेणजते ! पच्चस्काणे किफले ? सजमफले ! सेणजते ! सजमे  
किफले ? छणणहयफले , एव छणणहए तवफले , तवे वोदाणफले , वोदाणे श्चकिरियाफले , सेणजते !

प्रवृत्तावयवता । स्रू प्रवृत्तविवेकानो, एतत्तै सापुवेना वीधा स्रू प्रवृत्त कर्त्तव्य । मोक्षमासवयवता । हे भौतम ! विहात सांभवाभानोदुद । सेवभतेसववे  
किंफले वावफले । ते च वाक्कावकार, हेभयवन् । सिहात सांभवाभानो स्रू प्रवृत्त कर्त्तव्य । सांभवाभो द्रुतज्ञानपरिभाषाको फल । सेवभतेवावेविषयदे । ते च  
वाक्कावकार, हेभयवन् । ज्ञान याम्नाया स्रू प्रवृत्तकथा । विहावफले । ज्ञानको वेव गेव उपादेय विवेककारी विज्ञानफलदुद । सेवभतेविस्वावेकिफले ।  
ते च वाक्कावकार, हेभयवन् । विज्ञानको स्रू प्रवृत्त यामिहे । पञ्चस्कावफले । विविष्टज्ञानयाया पापको पञ्चस्कावकारे ते पञ्चदुद । सेवभतेपञ्चस्कावेकि  
फले सजमफले । ते च वाक्कावकार, हेभयवन् । पञ्चस्कावकारो सयम यामिहे तेपञ्चदुवे । सेवभतेसजमेकिफले । ते चवा  
क्कावकार, हेभयवन् । संवमना स्रू प्रवृत्तको । संवमपत नवाकम उपावेनही ते भगायवफल । एवपञ्चवद्वसतपफले । इम भगायवनी त  
पञ्च स्रुवर्त्मवो तपज्जावदुद । तवेवावावफले । तपेवरी परातनकर्म निजरेवेदे इल्लव । वोदावेभविस्वाफले । पुरातन निजयायो नियारहित



हि पुरातन कर्म निम्नरयति ॥ अकिरियाफलेति ॥ योगनिरोधफल कर्मनिर्णरातोहि योगनिरोध कुरुते ॥ सिद्धिपञ्चवसावपलेति ॥ सिद्धिल  
 एव पर्यवसानफल मुक्तफलपर्यवर्तित्वं यस्या सा तथा ॥ नादिति ॥ सकृद्गणाया एतद्वचनं चैत द्विपमाक्षरपाद वेत्यादि च्छब्द आख्याप्रसिद्ध  
 भिति तथा रूपस्यैव अमकदेः पर्युपाखना यथोक्तफला प्रवति ना तथाकूपस्या सम्यग्भायित्वा वित्य सम्यग्भायितामेव केयान्भि ह्युपययाह ॥  
 अत्रउच्येत्यादि ॥ पञ्चपदप्रवेति ॥ अथला तस्योपरि पवतदस्यर्थः ॥ इत्येति ॥ अथानिधानं क्षन्तिनु इत्येति ननुवयते

अकिरिया किफला ? सिद्धिपञ्चवसावपला पञ्चज्ञा गोयमा ॥ गाहा ॥ सुवर्णेणानेयविस्त्राणे पञ्चस्काणेय  
 सजने । अणुरहृपुतवेधेय बोदाणेष्टाकिरियाचिन्दी ॥ १ ॥ अष्टउच्छ्रियाण नते ! एयमाइस्कति नासति प  
 खावति परुवति एवस्त्रु रायगिहस्त्र नयरस्त्र दाहिया येनारस्त्र पञ्चयस्त्र अहे एत्यण मह एगेहरण अ्यवे  
 पणत्ते , अणैगाईजीयणाह अ्यायामविक्रनेण नाणादुमस्त्रमक्रिउहेसे सस्त्रिरीए जाव पक्रिस्त्रे , तस्यण  
 यहये उदारा बलाहया संसेयति समुच्छ्रियाति वासति तवृतिरिस्त्रेवियण सयासमिउ उंसिणे अ्याउकाए

१५ यागरुचे । सेवभतेचकिरिवाकिन्दा । ते हेमगम् । रायभिरूषो अ्यकसुहृ ? सिद्धिपञ्चवसावपलापला । सिद्धिपञ्च समस्तपञ्चभाहि हेह  
 ना उरुलडा फन एतसे समस्तवसावपरूप मोचयनयाने । भावमा गाहा । हेवीतम । एहोव अयंनो सुबहगावा कहै—सुबवेवाववविस्त्रावे पञ्चयका  
 निवर्धने पञ्चवसाववेधेय बोदावेचकिरियाकिन्दी ॥ १ ॥ सेवावी सबयस्य १ अवचनो ज्ञानफल २ ज्ञानवो विज्ञानविशेषफल ३ विज्ञानवो विरतिरूप  
 फल ४ पञ्चवसाववो मयमपन ५ सयमवो अनायवपन ६ अनायववो तपयस ७ तपवी अयदानफल ८ अयदानवो अकिरियामिफिल १ । तथा  
 रूप साधुनीमेवावी यवाकपञ्चवे, पवि अयवाएप नौ सेवावी अहो विपरीतमापवावो तेभाटे विपरीतमापी केइण्ड रेकाडिहे—पञ्चउच्छ्रियावभते एव  
 मारएयति भावेति पञ्चवेति पर्येति । अन्वतोर्वा च वाक्कावकारे, हेमगम् । इमकहै सामान्यपञ्चवो कहै विवेकपञ्चवो कहै हेनुकरो ॥ ६ ॥ भवे

अपेक्षस्यैव त्वाने ध्वमेति दृश्यते तत्र प्राप्यः आपां प्रपद्यः इदमेववेति ॥ संरासति ॥ वस्तीर्काः ॥ मेघाः ॥ सुसेयति ॥ उखि  
यति ॥ उत्पादाभिमुखोपवन्ति ॥ समुच्छति ॥ समुच्छति ॥ तद्वदितेयति ॥ इदपूरका इतिरिक्त्य उत्कलितइत्यर्थः ॥ आठपाएति ॥  
अन्धायः ॥ अग्निनिस्सवइति ॥ अग्निनिस्सवति इति ॥ मिच्छतेएवमाइस्कति ॥ मिच्छात्य चेतदास्मानस्य विप्रङ्गान्पूर्वकत्वा त्प्रायः सर्वे

अग्निनिस्सवइ, संकह मेयजते ! एव ? गोयमा ! जयते अस्माउच्छ्रिया एव माइस्कति जाव जेते एयमा  
इस्कति मिच्छते एवमाइस्कति, अहपुण गोयमा ! एवमाइस्कामि जा० प० प० एवस्वतु रायगिहस्स

कइवेवरी कइ । एवस्वतु रायगिहस्सवइति । इम निवे राखयइनामा नयने बाधिर । बेभारखपववस्यपहे । बेभारनामा पवत इठे । एत्व  
मइहरएयपयजते । इहां च वाक्काळकारे, मोठा एव इइहे जलना उत्पत्तिना जालव अन्न तिहावकी पांथी भरैहेते इइ । पवेगाइजापचार जा  
यानविससमेव । पनेव बावन दोषपहे पिडुसपवेहे । पाचापुमसकमिडिउठेने । पनेव प्रकारनो हव पनखइ संकित मोमित उइय प्रदेय एइवी मो  
भा सजितहे । सखिरिप । याभावमानहे । जावपटिने । जावत् प्रतिपू जाइना बाप्यहे एख कइया । तत्ववइवेउराका । तिहां घवां विखीव । वखा  
इवा । मय वाइना । समेयति समुच्छति वासति । जपकवने सनमकइवेहे जपजेहे बरसेहे । तत्कतिरितेवच सवासमिव २ उखिबेपाठकाएयभिनि  
खिवइ । ते इइने भरौने चधिका पांथीपुवे ते पांथीपुवे त्रै भरे सदेव उपयातवत उखयोनिवा धपुबाय एते इइना भरवाथी अधिको उखवी  
निबळा एइना धपुबाय त्रैभे भरैहे । सेकइमेवमतेएव । ते किम एवचन सेमयवन् । इम इतिमय उत्तर । गावमा जयतेपवमाइस्कति । एवमाइस्कति ।  
वेगोतम । जेमाटेते पयतीबीं पइइवन कतिरिजमानताववा इम कइहे—जावकतेएवमाइस्कति मिच्छतेएवमाइस्कति । जावत् विवे इम कइहे मि  
या भूठा एवचनने विमंग प्राग पूर्वक यथाथी पावे सर्वत्र वचनविबव यथाथी ते भूठी कइहे अयतीबीं नामत निरास करवानेपेव प्रत्रने उत्तर  
करवेवरो गोतमपते त्रीमहावोरस्सामो इम कइहे—पइपुव नावमा एवमाइस्कामि । इ ववी वेगोतम । इम कइवन् । भासेमि पयवेमि पयवेमि

प्रवचनविहृत्या द्यावद्भारिकप्रत्ययेष्वप्योपपत्त्याया ध्यमाग्य ॥ अतुरसामतेति ॥ नातिवृते नाप्यतिसमीपइत्यर्थः ॥ इत्युच्यते ॥ प्रद्यापकेनो पदप्रधाने ॥ महातवीवतीरप्यनवेनामपासयवति ॥ आतपइव आतप उच्यते ॥ महातपो महातपस्य उच्यते ॥ सीरसमीये प्र

णयरस्स द्यहिद्या धेनारपइयस्स अतुरसामते एत्यण महातवीवतीरप्यनवे नाम पासवणे पसुत्ते, पचघणु सयाइ अ्यायामयिस्सनेण नाणादुमस्सकमहिउइसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अ्थिन्निकवे पण्णिकवे, त त्यण ग्रहवे उंसिणजोणिया जीयाय पोगालाय उदगत्ताए थक्कमति विउक्कमति चयति उवचयंति, तस्मिंति रिहेयियण सयासमिय उंसिणजोसिणे अ्याउत्थाए अ्थिनिस्सथइ, एसण गोयमा ! महातवीवतीरप्यनवे पा

भापूइ इम प्रद्यापन करूइ इम प्रदूइ । एषउत्तावकिइसकवरस्यवडिमा । इम भिये राखउइनामा नगरजेवाहिर । बेमारस्यपजबसु । बेमार नामा पर्यंतने । अतुरसामते एत्यमहातवीवतीरप्यनवेनामपासयवेपचत । अतिदूरगो अतिदूरगो पवित्रो इहा च वाक्कासकारे महातप अत्यत च वाक्कासक चैवविशेषे तेइना तीरने समीये उपमावे त महातपापतीरप्रभवगमे प्रयवव भरुवे ते भरुवो । पचउउउसवाइ पाबामविसवभेव । मीरमै वनप पायाम सांभपे पिइयवेइ । वाकादुमसकउइउइने । अनेकपकारनाउच वनसकउमिमत प्रदेइवे । अस्सिरीए पासादे हरसचिक्खे । आभावंतइ प्रसवचित्तवाव देउकावीम्य । अमिकवे पडिइवे तत्तवइवे । अतिमगोहर प्रतिकपइ देउता इति न पामीवे तिहा च वाक्कासका, रे । उमिचजाविया जीवापपोयसायउउगभायवकर्मति । उवसाजिया जीव अपुन पुइस उदकपवे पावीरुये अपवेइ । विउक्कमति चयति उवचयंति । च दे विचसेवे एवेइ पुटि पामेइ । तस्मिंतिरिलेविचमवासासमिव । ते मरीने जे पावो पयिकोहाय ते पावो सदासदीव समित । उंसिणेपाउवाएअभिचि चयति एसव गावमा । आतापकासे एएकाव भरुवे । एइ चवाक्कासकारे, हेमीतम । उवा पावमो निगम करुवे—महातवीवतीरप्यनवेपाउववेएएव गोयमा । ए पचवडिचि वसित आपसं महातपोपतीरपमव प्रयवव करुवे जे तवा एउोव अन्नतरीम उंसिच जोचिय इत्यादि हेमीतम । अज्जाल

[illegible]

सर्वणे, एसण गीयमा ! महातथीवतीरप्पन्नवस्स पासयणस्स छुठे पणत्ते, सेवज्जेज्जंतं ! त्ति, जगव गो यमे समणजगव महावीर वंदइ नमसइ ॥ विईयसए पव्वमी उद्देसी सम्मत्तो ॥ ५ ॥ सेणण

पाशतोरव्यभञ्जस्यपासश्चस्यपदेपक्षते । महातपापतीरतमव प्रयव्य ऋरणाणां भवकक्षा । सेवभते २ सि । तद्वति हेमगवन् । तुम् कक्षा ते सत्वर्णे । भ  
सबनोयमे । भयवत गौतम । समुच्च भव्य महावीर बंदश्चमसर । यमव भगवत योमहावीरव्यामौ प्रते वीदे नमस्कारकरै । वितियसयस्युपबमपी ।  
ए वीजा यतकना चोचमाश्रिया पुराबयो ॥ ५ ॥ पाक्षिके उद्योगे मिथ्याभासोक्ता, तेमाटे मायास्वरूप कहैवे—सेपूषभते मचासो  
तिपाइरिनी भामा भामापद भाविकव्य वितियसयस्युक्ता । ते निय हेमगवन् । हमहमान् वृक्षोय मायाभववाध वीजभूत इत्वव भवय्ये भवधारवो  
भाया भावीये ते मायाबहीये एवेत्रकरे सभाशुक्ले पंथवकाणा इत्यारसा भायापदकहना, इहांभाया द्रव्य खेच कास भाव इत्यादिन भेदेबरी भमेरे

प्रदे रम्यं पशुनि पपापे विचायत ॥ इति द्वितीयोऽप्युपक्रमः ॥ ६ ॥ प्रापाविशुद्धे देवस्य प्रवतीति देवो  
 देवः ॥ अमारम्यते तस्यपदं मूत्रं ॥ अहमिति ॥ कति दया आत्ययेत्येति मय्य सतिविषया देयाइति सुदय ॥ जहाठावपयति ॥ क  
 पया पयत्रकारा पादूनी प्रपापमाया द्वितीयेत्यानपदान्ये परे देवानां वक्तव्यता सेति तथा प्रकारा प्रकृतव्यति नवर ॥ मयस्यापयति ॥ क  
 विदुःपणे तस्यैव कर्म ॥ मय्य नवपयते दयवक्तव्यतायैव ॥ इमीमे रयवप्यमाए पुढवीए कसीउत्तरयोगसयसइस्सवाइहाए उवरि एम लोय

जेत । मणामोति उद्धारणीजासा , जासापद जाणियसु ॥ विइयसए उठोउडेसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥  
 कडुयिहागजन्ते ! दया पणसा ? गोयसा ! चउखिहा देया पणसा तजहा—अवणवइवाणमंतर जोइसवेमा  
 गिया । कहिगजन्ते ! जयणयासीण देवाण ठाणा पणसा ? गोयसा ! इमीसेरयणप्यजाए पुढवीए जहाठा  
 णपदे देयाण यत्तसूया सा जाणियसा , नवर जयणा पणसा , उजवाएण लोयस्स स्यसखेज्जाइजागे , ए

रने परीदेवो रिचारि ॥ इति ए बोआ गतकना का उरेगो पूराकवा । १ ॥ भाषा विरुदयो देवतापुत्रे, तेमाडे सातमी छे  
 या देवता कहेहे—अइएभनेदेवाएकना । केतमा हेमयइन् । जाति पचेवावे देवताकना, यर्वाए केतकेभेदे देवकना इतिप्रत्य । मीयमा अउविहादेवा  
 पयता तजहा अउपदइ भावर्मनर आइम येमाबिसा । हेमीतम । चारभेदे देवकना ते कहेहे—अवनपतो १ याअव्यतर २ ज्योतियो ३ वैमानिक ४ । क  
 (इकभनेअवनपामो) देवाए ठावा पयला गासमा । विहा हेमयइन् । अवनपतो कना ज्ञानक कना इतिप्रत्य हेमीतम । इमीमेरयणप्यमाएपुढवीए  
 अहाठाणपदेदेवाअवनपकायाभाविकना अउरयकवा पयता उववाएर्यसापना यसखेअइमावे एकर्यमाविमर्ग । एवोअ रजप्रमाणम एविवीनेदि  
 ने इत्यादि अहा ठावपदेति यहा अइवी पयउकना गोआआज पउनेविदे देउमोअतप्यताहे सेति तेइवी ककवी ककर अकवा पयता ए पाठके ते  
 अभाउन मनोतरे व जालिदे ते अकथता इमडे चारउपमा इविरोनविदे एअनागु अमीअइसा मीकन अउर पयमाविदे चेहे एकरककवाअन अमीवि

गमइमं मुग्धादिना सिद्धायेनं प्रापयन्नइमं यज्जेता मज्जे अठइत्तर जीयकस्यसुइस्से यत्थं भयकवायीय देवाणं सप्तमयबकोमीउं वायसरिणं न  
 गगयानमपनइममा मयमीति मकमायं इत्यादि तद्गतमेवा निधेयविशेषं विज्ञायेणं दयायति ॥ उवयाएणं सोयस्स अससेअइमामेसि ॥ उपपातो ज्ञ  
 पनपत्तिवत्तयाज्जात्तापिमृमं तेन उपपात माभित्यत्यथ सोकस्या सङ्खेयतमे भागे यत्तमे प्रयगवासिनइति ॥ एव सद्य मासियवति ॥ एय मु  
 ण्ययेना म्दपि त्रियतयं तपइ-अमुग्गायनें सोयस्स अमंउअइभागे मारकात्तिआदिसुवुतातवत्तिनो प्रवमपसयो सोकस्या सङ्खेयएवजागे व  
 तते तथा ॥ मन्नाअवं ओयरमं अमंमज्ज भागे म्वत्थाअस्यो क्तयमायावातिरेककोहीसप्तअससवस्य सोकाअङ्खेयजागवत्तितावति ॥ एव असु  
 रकुमारपां एवं तत्तामेव दापिकात्ताया मीदीयाभा एवमागजुमारविजवमपतीनो ययी चित्थेयं अन्तराका ज्योतिफाणं वीमानिकामाअ स्या  
 मांनि दाप्यानि किमदूदं यावदित्थाअ यावत्सिद्धुगणिककासिद्धस्यानप्रतिपादनपरं प्रकरवं सार्वेयं ॥ कइत्थं जत्ते । सिद्धाअं ठावा पक्कता इत्या  
 दि इएव इवस्याअपिआरं यत्सिद्धुगणिकामिपानं तत् स्थानापिआरवत्ता दित्यवसयं तथेदं मपरमपि जीवाज्जिगमप्रसिद्धं वाअ्यं तद्यथा-अ

यं सद्यं जाणियव , जाय सिद्धुगणिपा समप्ता । कप्पाणपइठाणं याहसुसुत्तमेयसठाणं ॥ जीवाज्जिगमे जा

मये एवकमाअं पव्यातरं मइस योजनं पिइके इहा भवनपतो देवताया सातकाओ वडुत्तरकाणं भवनकक्षा, वसो विशेयं कपेइ-पइइवायीअ भवन  
 एतो सपइया पायो नाअनें वसंय्यातमीभागे उपनाअे इमं क्तअ्यावेकरो नववीवू पवि कइयो, ते इमं ससुग्वाएणं मीमस्य पसखेअइभागे, मारवा  
 तिअनइहात वतीं मरमपतीनाअनें अमंय्यातमेभागे वत्ते तथा समुदायेअमीअस्य असखेअइभागे, अस्थानं सातकाओ वडुत्तरमाअं भवन कक्षा ते का  
 अनें एमंय्यातमेभागे वत्ते इमं एमुरकुमारजा इमं तेजगांअं दुविअमा अत्तरमा इमं नागकुमारारुडिक भवनपतीना तथा अत्तरना तथा ज्योतिपो  
 ना तथा वेअानिअना स्थानअ कइया । आअविहिंसंइयाअयत्ता कप्पाणं पइइया । यावत् सिद्धिगटयति, विहिम्यानं प्रतिपादअं प्रअटपतीदं कइयो,  
 ते इमं जिपरा इमअअम् । मिइनाअ्याअइया इत्यादि, इहा देवस्यायाधिकारवत्ती विहिगिन्निअानाअं ते स्थानअं खांअवा जीवाभिगम सपंगनी ए गात्रा

व्याकपइस्यं कस्यविमानाना माचारो वाच्यइत्यर्थः सर्वेव सोइस्मीसाखेसुखं जते कप्येसु विमाकपुठयी कि पइठिया पछता । गोयमा । च  
 बोदइपइठिया पयता इत्यादि आइव-पठठइविपइठाका सुरभवकाहोतियोकप्येसु । तिसुवाठपइठाका तदुभयसुपइठियातिसुय ॥ १ ॥ तब  
 परंउवरिमया चागमतरपइठियासवेति ॥ तथा ॥ वाइमेति ॥ विमानपुचिण्याः सर्व-सोइस्मीसाखेसुखं जते । कप्येसु विमाकपु  
 ठयी कयइय वाइमेव पयता ? गोयमा । सभा वीस जोयबसयाइ इत्यादि ॥ आइव-सतावीससयाइ आइमकप्येमुपुठविधाइव । एकेकराखिसेसे  
 दुदुगपदुगचउकेप ॥ १ ॥ येयेयकेपु इविहति योजनाना जतानि अनुतरपु त्वेकविहतिरिति ॥ उक्तमेवति ॥ कस्यविमानोसुखं वाच्य, तबैव-  
 सोइस्मीसाखेसुखं जते । कप्येसु विमाका केवइय उक्तेव पयता ? गोयमा । पचवोयबसयाइ इत्यादि आइव-पचसठसतेरं आइमकप्येसुहोतिउ  
 विमाका । एककटुठिसेसे दुदुयेपदुयेचउकेप ॥ १ ॥ येयेयकेपु वचयोक्कमशतानि अनुतरपुपु एकादोति ॥ सठाकति ॥ विमानसस्यान वाच्य  
 तबैव-सोइस्मीसाखेसुखं जते । कप्येसु विमाका किरठिया पछता ? गोयमा । जे आवसिया पविठा ते वहा तसा चठरवा जे आवसिया बाहि

वयाबोदेवै, कस्यविमाननी आधारबइवा ते हम सोवर्म ईयाननेविपै हेमगवन् । कसनेविपै विमान पुखियो जेपाधारवै हेमोतम । जनादिप्रि प्रति  
 छिनकही इत्वादि । वाइवचतमेवठठाव । विमान प्रविनीनो पिठ कइवो, ते हम हेमगवन् । सोवर्म ईयान देवसोक्कनेविपै विमानपुखियो जेतसे वाइ  
 म्यपने कही हेमोतम । सतावीससय योजन इत्वादि उक्तेव कइवा, सोधम ईयान देवसोक्कनेविपै विमान जेतका उक्तेवकइवा, गोतम पचसठ योजन  
 इत्वादि तबा सठाकति विमानना सकान कइवा, ते हम सोवर्म ईयानना विमान जे पावसिका प्रविष्टवै ते वस चठरम नाट  
 मावै जे पावसिका बाहिर ते नामा प्रकार संकानेवै । हिवे कइवा पचवना गेप देकावै-जोपाधियमेकावमेमाविचठइ-सामावियजो । आइ जेमा

रा ते नायासंदिशति उक्तायेत्युक्ताय मतिविश्रयाय ॥ जीवाग्निमेत्यादि ॥ यत्र विमानाया प्रमाख्यप्रमाणं पादिप्रतिपादनायः ॥ इति द्वितीय  
 श्रुतेः ॥ ७ ॥ अथ देवस्थानाधिकारा चमरचन्द्राभिधानदेवस्थानादिप्रतिपादनाया सुमोदेषां स्तस्य वेद सूत्र ॥ अथि  
 भित्त्यादि ॥ चमुरिदरसति ॥ चमुरेन्द्रस्य स चैश्वरताभावेऽपि स्वादित्याय चमुरराजस्य चमरस्यसुरमिकायस्येत्यर्थः ॥ उपपायपक्षएति ॥ तिर्ये

य येमाणिउद्देशो ॥ विद्मयसए सप्तमो उद्देशो सम्प्रत्तो ॥ ७ ॥ काहिणजते ! चमर  
 स्स असुरिदस्स असुरकुमाररखो सनासुहृन्मा पणत्ता ? गोयमा ! जयूद्विवेदीवे मदरस्स पञ्चयस्स दाहि  
 नेण तिरियमसखेजा दीयसमुद् विद्मयहत्ता अरुणवरदीयस्स दाहिरिखानं वेदयतानं अरुणीदय समुद् या  
 यादीस जोयणसहस्साइ ठंगाहिता एत्यण चमरस्स असुरिदस्स असुररखो तिगिच्छिक्कून्नेनाम उपपाय

निय सव विमानना प्रमां च चमरभा सधादिप्रतिपादक येमानि च उद्देशा जायन्ता । वितियसवरसक्तमघो । एवोवा यतज्जना सातमा उद्देशा उद्देशा  
 यो विध्या । ७ । पाखिने उद्देशे देवस्थानाधिकार कथा, इहा चमरचन्द्राभिधान देवस्थानाधिकार कथैवे—अथिचमते चमरस्य  
 सतिदरस चमुरकुमाररावासभासुहृन्मापणत्ता । जिहा च वाक्यासकारि, हेभगवन् । चमरेन्द्र चमरेन्द्रो चमरकुमार राजा चयिवर्त्तौष्टि असुरनिक्काय जे  
 वने तेज्जो सभामुचमां कडो इतिमन्त्र उत्तर । गायमा जंयूद्विवेदीवेमदरस्यपण्यस्यदाहिवेच । हेमोतम । जयूद्वोपनामा दीपनेमिये मेरनामा पर्वतने  
 इतिचमयासे । तिरिवमसखेज्जदीयसमुद्दीतीवत्ता चमरदीयस्य । सोळा अर्धस्थाता दीप तथा समुद्रपते चतिल्लमोने सघोने चमरचन्द्रोपनो । दाहि  
 माया वेदयताया । आहिरत्तो वेदिकावो । चमरचन्द्रसमुद् । चमरचन्द्रासकारि, चमरेन्द्रासकारि । वायासीसलोचचसहत्ता उक्ताहिताए । वावासीस स  
 चमयाज्ज चमरावोने कडवीने । एत्थ चमरस्य चमुरिदस्य चमुररखो । इहा च वाक्यासकारि, चमरेन्द्रना चमरेन्द्रना चमुरकुमार राजानो । तेमिच्छिक्क  
 येचामउपायपक्षएत्यज्जे । तेमिच्छिक्कून्नेनाम विवन्नाकि कारलाने जिहा पावोने येज्जियमरात्तरो जवो पावो ते कथो । सत्तरसएज्जवीसजोचसएचउत्त



ग्रीष्मकर्मनाय यथा गत्यो ह्यतति स हत्यातपर्यंतमिति ॥ गोपूजस्वेत्यादि ॥ तत्र गोसुभो स्यवसमुद्रमण्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजायासपर्यंत स्त  
स्वर्चादिमध्याह्नेषु विषमप्रमादमिवं-कमसोविक्रमोसे दसवावीसाइकोयवसयाइ १ । सप्तसयतेवीसे २ चत्वारिसयपठवीसे ३ ॥ १ ॥ इष्टैव विदो  
यमाइ ॥ नवरमित्यादि ॥ तत यद् मापन मूलेदसवावीसे वायवसयविक्रमजड । मण्येचत्वारिचठ वीसेचवरिसत्ततेवीसे ॥ १ ॥ मूले तिलि लोयव  
मइस्वाइं दोजिप मतीसुतरे कोपवसए बिचिविसेयूवे परिकेवेवं मण्ये एग कोयवसइस्व तिचिय इनुयाले कोयवसए किचिविसेयूवे परिकेवे

पष्ठए पछात्ते , सप्तसएक्कवीसे जोयणसए उहु उच्चैषेण चत्वारितीसे जोयणसए कोसच उच्चैषेण गोपूज  
स्व आयासपव्वयस्स पमाणेण जेयव्व , नवर उवस्सि पमाण मज्जे नाणियव्व , मूले दसवावीसे जोयण  
सए चिरकनेण , मज्जे चत्वारिचठवीसे जोयणसए विस्सनेण , उवार्सत्ततेवीसे जोयणसए चिरकनेण , मू  
ले तिसिजोयणसइस्वाइ , दोस्सिययसीसुतरे जोयणसए किचिविसेयूवे परिकेवेण , मज्जे एग जोयणस

यत्तेवं । सत्तेरे इववोसवाजन १०२१ जणा जंयपवेहे । चत्वारितीसेवायवसए वासपठवेइय मावप्रस्रपावासपव्वयस्सपमादेवतेतव । चारिमे तोस  
वाजन ४१ चने एककास चरतोमाइ जडा वववसमनेविसे पूर्वदिशि नागराजनो आवासपवत तेइजा प्रमावसरोको आचवा तेइनो प्रमाव चादि  
एवसवस्र वावोमवोजन मजे सातसे देवीस वाजन जपर चारसे वठवोस वोजन ते इहा पचि जावो । जवरसवविजपमावमज्जे माचिबव । एठको  
विशेष गोवमपर्यंतमिवै जे माग ऊपरवक्काहे ते माग तमिस्सइट पवतमविसे मज्जभागे जावना एडोव देवादेहे—मूलेदसवायोसेकोपवसयविक्रमजेवं ।  
मूले एकमइस्र वावोम वोजन विस्कारहे १ २२ । मज्जवत्वारिचठवोसेकोपवसयविक्रमजेवं । मज्जभागे चारसे वठवोस याजन विस्कारहे ४२४ । जवरि  
मत्ततेवीसेकोपवमएविक्रमजेवं । जपरि मातसे तेवीस ४२१ वोजन विस्कारहे । द्विजे परिचि जइहे—मूलेतिलिजोपवसइस्वाइ । मूले तोनसवस्र वोज  
न । दाबिचव तोबुतरेआपवसइ । दोरमेइतोस वाजन । बिचिविसेमूलेपरिकेवेच मण्येएगकोपववसइ तिचिचत्वारिचठवोस वाजन विचिय इनुयाले कोयवसए किचिविसेयूवे परिकेवे

तेन उपरि दालिग्रीयवसदस्माई दीक्षिपयसोऽपि परिकीर्तयेत्, पुस्तकान्तरे स्वेतस्फुल्ल मत्त्येवेति ॥ वरवहरविग्नशि  
 एति ॥ परवस्येव विपश्चि च स्थापिकप्रत्यये सति वरवस्यविपश्चिको मय्याहाम इत्यर्थः ; एतदेवाह ॥ महामठवेत्यादि ॥ मुकुंदो वा  
 द्यविद्यायाः ॥ दध्योति ॥ स्वच्छ धावाद्यस्तद्विषयम् यावद्वरवस्य विद्वद्भ्यः, सर्वे साक्षाः, अक्षयपुद्गलनिर्वृत्तत्वात् लवणे, मसुः, पठे घृष्ट  
 य पृष्ठः गरुडगमया प्रतिवेद्य महे सद्यश्च सट मुकुमारस्यावया प्रतिवेद्य प्रमाणनिकषेयवा । श्लोचितो उत्तम्य नीरएः नीरजा रजोरहितः, नि  
 म्मने कठिनमसदरहितः, निष्पक्वे आद्रमसदरहितः निरुद्धवच्छाए निरावरधवीति । ध्वजने समभावाः, क्विरिहय, क्विरिहय, सचञ्जीए,  
 प्रत्यासन्नवत्पुद्गोतकः पासादए ॥ पठमवरवेद्याए वक्ष्यंतस्सय वक्ष्यंति ॥ वेदिकावर्कको यथा-साव पठमवरवद्या समं कोयवं वक्ष्यं वक्ष्येव

हस्त तिगियइगुयाले जीयणसए किचिविसेसूणे परिकेवेण, उवदिं दीक्षियजीयणसहरसाइ दीगियतल  
 सीए जीयणसए किचिविसेसाहिए परिकेवेण, जाव मूले वित्त्यन्ते मज्जे सारिक्तं उप्पि विसाले, मज्जे वरव  
 डरविगगहे, महामउदसठाणसठिए, सहरयणामए, शृच्छे जाव पण्डिक्खे, सेण पुगाए पठमवरवेइयाए वण

न परिधि आचवा पिबाले एवसद्वद्दु तोनसे इकतालोस १४४१ बाजन । किंचिविसूखपरिखेवेव । काइव विषेपो नपरिखे जाववा । उवरिदीक्षि  
 यत्राप्यमहम्साह । उपरि दाव अइमूसाजन । दाविगय नसोएवाचवसए । दावमे एकासी २८६ बाजन । किंचिविसेसाहिपरिखेवेव । काइव दि  
 मेवा नपरिखे जाववा । जावमेविच्छेदमज्जेसंकिता । जावत् मसनेविमे विसारएत मज्जभावे साकका । उरिपविसालेमज्जेवरवरविच्छे । वसी व २  
 विच्छोव विचानि प्रदान वल्लनीपरे आकाराव जेइना एतसेविसे साककावे एकोव ऐखावेइ । महामउदसठाणसठिए । माटाए मुकुंद वाद्य विषेय तेइने  
 मज्जाने रसाव । मवरयवामए वण्डेजावपडिक्खे । सवरजमसकै आच्छ निमल आकाय स्मटिकनीपरे जावत् मज्जलो सचरे सचरे धोइ इत्यादि, मतिकप  
 नाहि इइना । मेवएगाएपठमवरवद्याए वक्ष्यंते इत्येवमसतासपरिखिने पठमवरवेइयाए वक्ष्यंते इत्येवमसतासपरिखिने पठमवरवेइया

पञ्चपञ्चस्यार्हं विष्णुमेवं सधुरयद्यामर्हतिभिष्णुगच्छुः उवविततपपरिक्खेवसमापरिक्खेवेवं तीसेवं पठमवरवेइयाए इमेमास्सुधे यथावासे पस्सुते वस्सुध  
य्यामा वसुधविस्तरः । वइरामयानेमाइत्यादि ॥ नेमति ॥ सजानां मूसपादा नवरं वमखंठवसंखं स्खव-सेव वयवसे वेसूयाइ दी जीययाइ चक  
यामत्रिप्पननं पठमवरवेइयापरिक्खेवसमे परिक्खेवसे विसरे कियेहीजासे इत्यादि ॥ यधुसमरमणिज्जति ॥ अत्यन्तसमो रमणीयेत्यथा ॥ यय  
उति ॥ वसुध स्तास वाच्यः सचाए-से वइरानामए आसिगपुस्सरइवा आसिगपुस्सर इवा मुरजमुख तइस्समइत्यर्थः मुइगपुस्सरइवा सरतलेइवा  
करतलेइवा आपसमठसेइवा चंदवठलेइवेत्यादि ॥ पासायवाठिसयति ॥ प्रासादो ज्वतसकइव छकरइव प्रथानत्वा त्रसादावतसकः ॥ पासाय

खन्निगयसहंठसमता सपरिस्सुते, पठमवरवेइयाए वणखठस्सयवसुत्ते, तस्सण तिगिच्छिक्कूठस्स उप्याय  
पह्ययस्स उप्वि यज्जसमरमणिज्जो भूमिजागे पस्सुते, वन्तठ, तस्सण यज्जसमरमणिज्जस्स यज्जमज्जवेसन्नाए  
एत्यण महं एगे पासाययान्हिसए पस्सुते, एत्ताइज्जाइ जीयणसयाइ उहु उच्चत्तेण, पजवीस जीयणसयाइ वि

पने वज्जइतो वसव वइवा, तिहा पस्सरवेइका धर्मावत वरवीपाचसे भयुप विष्णुमेववरतमवसे ते वेइका तेविष्णुठ पर्ववना अपरसो वसो तेइनेप  
रिविजीपरेवीठी रज्जोही ते पस्सरवेइका एइवीही सेवपठमवरवेइयाए इमेएवाइवेवयावासे पस्सुते । वर्यवयास । वर्यव विस्तर । वइरामका नेमा  
इत्यादि नेमा बीभाना मूलपावा वज्जइ वसव ते वज्जइवेगे जका दीव बीजल वज्जवाक विज्जमे, पस्सरवेइका बीटीरज्जोही इत्यादि । तच्छचितियिच्छिक्कूठ  
स्यत्थावपववस्य उप्पि वइसमरमणिजेभूमिमाजेपचतेवस्यो । तेइने तिगिच्छिक्कूठ पवतेने अपर वर्यं पज्जवा वरीचो रमणीक मनोहरभूमितव कज्जो  
तेइनी वसव इम वइवी, सेवइरानामए आसिग पुस्सरइवा, मुरजवाय विमिय तेइना मुख वरीचो सम इत्थं इत्यादि वसव वइवी । तच्छववइतमरमणि  
ज्जमभूमिभागवइममइदेसभाए । तेइने च पासायवठारे, वसुध रमणीक भूमिभागनेनिये वर्यं मज्जेयमानजेवि एतसे विसाने इत्थं । एत्थंमर्हएयपा  
माव । इतिपपत्ते । इहा वं वाक्कामंकारे, मोठो एक पासादावतसक पासाइमाहि मथानपवावी मुकुटवरीचो प्राकावसे । चक्कारज्जोपचववबार

यन्मनुति ॥ प्राप्तादवलोकनो वाच्यः सर्वैर्ध-यन्मगयमूयियपञ्चमिह दान्युद्रत मन्त्रोद्गतं वा यथा त्वेव मुच्यते उपवा मकारस्या गमिष्यवा  
 न् पन्मुद्रत यामागुच्युत येत्यमुद्रतोच्छ्रितः श्रत्ययमुसह्ययः प्रथमैकवचनलोप यात्र दृश्यः, तथा ग्रहसितद्वय प्रमापटलपरिगततया प्रहसि  
 ताः प्रमया पादितः शुक्रः सम्युद्रोवा प्रजायितइति ॥ मणिकण्ठगरयजनितिविते ॥ मणिकनकरवार्ता अस्मिन्मि भिच्छित्तिनि स चित्रो विचित्रो यः  
 न तथा इत्यादि ॥ उल्लोपयूमिबलमुत्ति ॥ पञ्चोक्तवचनः प्राप्तादस्यो परिभागवर्त्यः सर्वैर्ध-तत्सुखं पासायवज्जिगत्सु इमयाकृते तलोय पलसे प

रुक्तेण, पासाययन्तठ, उल्लोपयूमिबलमुत्ति, अष्टजोयजाणि मणिपेठिया, चमरस्स सीहासुण सुपरिवार जा  
 णियध्, तत्सुणं तिगिच्छिक्कुरुस्स दाहिणेण उल्लोफिसएप जवणुचकोप्पिणं पणतीसचसयसहस्साइ पस्सासच  
 सहस्साइ जोयणाइ अरुणोदए समुहे तिरिय दीतिवइत्ता अहे रयणप्पनाएपुठवीए चत्तालीस जोयणसह

उक्तं उच्यते । पठारं मे योजन १५ कषा लंघपवेहे । पञ्चमीमंकोपकमयं विषयमेव पासायवचयो । एवसो पञ्चवीस योजन १२५ पिपुसपवेहे प्रासा  
 द्वा इत्येव कइवा, ते इम पणुमवमसिक्कपइति । पातिवो कषा इत्येव, इत्यादि । उक्ताव भूमिवचयो वटुवापवाभिमिपेठवा चमरच्छवीहासचं स  
 परिहारं भाषितवान् । प्रासादना जयदिभामना वचनं ते इम-तत्तवपासाययज्जिगत्सु इमेणवाक्ये तलोपपणने पठमवममितिचित्ते जावसव्यतबज्जिज्जम  
 ए पञ्चैत्रावपडिद्वे इत्यादि उल्लोकवचनं तथा भूमिवचनं तेरम-तत्तवपासायवज्जिगत्सु वटुवमरमदित्ते भूमिभागे पणने पाणिगपुस्सरेइवा इत्यादि,  
 पादं याज्जन्तो मन्विषोठिकावै, चमरमन्वो परिवारना सिहासुण सहितं कइवा ते इम-तत्तवसिहासवचनं चववत्तरेव उत्तरं पुरच्छिमेव एत्थं चम  
 रम वज्जन्तो एवामाविषमाइरमोएणं वज्जन्तोभामवसाइरमोपो पणत्ताथा इत्यादि । तत्सुखंतिगिच्छिक्कुरुस्सदाहियेयं । तेइने एं वाक्पावत्तरे, ति ।  
 मिच्छिक्कुरु इत्यादिमना इरमोएणं वज्जन्तोभामवसाइरमोपो पणत्ताथा इत्यादि । तत्सुखंतिगिच्छिक्कुरुस्सदाहियेयं । तेइने एं वाक्पावत्तरे, ति ।  
 मिच्छिक्कुरु इत्यादिमना इरमोएणं वज्जन्तोभामवसाइरमोपो पणत्ताथा इत्यादि । तत्सुखंतिगिच्छिक्कुरुस्सदाहियेयं । तेइने एं वाक्पावत्तरे, ति ।  
 मिच्छिक्कुरु इत्यादिमना इरमोएणं वज्जन्तोभामवसाइरमोपो पणत्ताथा इत्यादि । तत्सुखंतिगिच्छिक्कुरुस्सदाहियेयं । तेइने एं वाक्पावत्तरे, ति ।  
 मिच्छिक्कुरु इत्यादिमना इरमोएणं वज्जन्तोभामवसाइरमोपो पणत्ताथा इत्यादि । तत्सुखंतिगिच्छिक्कुरुस्सदाहियेयं । तेइने एं वाक्पावत्तरे, ति ।

उत्तमपन्नतिरिति त्राय सवृत्तवद्विज्जमए णत्थे भावपठिक्कये, भूमिवर्त्तके स्त्वेवं-तस्सवं पासायवकिञ्चिदस्यस्सबहुसमरमन्त्रिके भूमिभागे पक्खसे तंजहा ध्या  
 निपपुस्सपरेइवेत्यादि ॥ सपरिवारादि ॥ समरसम्बन्धिपरवारविंशसुभोजेयं तथैव-तस्सवं सीहासकस्स अथत्तरक उत्तरेय उत्तरपुरिच्छिमेव एत्थए वम  
 रस्स चत्तसहीए सामादिय साइस्सीवं चत्तसही जहासकसाइस्सीवं एव पुरिच्छिमेव पचवइ अगमइस्सीवं सपरिवाराय पचमज्जासुखा  
 ॥ सपरिवाराइ दाइइकपुरिच्छिमेवं अस्मितरियाय परिसाए चत्तसीसाए देवसाइस्सीवं चत्तसीस जहासकसाइस्सीवं एव दाइइकेव मक्किमाए अ  
 हावीस जहासकसाइस्सीवं दाइइकपुरिच्छिमेव भाइरियाए भातीस पक्खिमेव सत्तवं अविद्याइवइवं सत्तज्जासुखाइ चत्तहिंसि आयरक्खइवेवा  
 च चत्तारि जहासकसाइस्सचत्तसीसि ॥ तत्तीवं जोज्झि ॥ वाचनात्तरे इश्यते तत्र जीमानि विस्मिहत्थानानि नगराकारावीत्यन्ये ॥ उवदि  
 यतसेवति ॥ ग्रहस्य पीठकम्बकल्पं ॥ सवृप्पमावं वेमादियपमावस्स अवं नेयक्खति ॥ अयमर्घो यत्तस्मा राजधान्यां प्राकारप्रासादसमादि वस्तु तस्य

स्साइ उग्गाहिता, तत्थण समरस्स अस्सुरिंदस्स असुररगो समरखचानाम रायहाणी पक्खहा, एग जोय  
 णसयसइस्स आयामविस्क्कनेण जयूदीवप्पमाणा उवरियतलेण सोलसजोयणसइस्साइ आयामविरक्कनेण,

पचेरवचयमाएपठबीए । हेठे रक्कमभा इविवीने । वणासोसवजायवसइस्साइस्साहिता । वासोस सवृयुवोच्चन अयमाहीने । एत्तवंचमरस्सचमुदिद  
 रमपमररवाचमरचंधानामरायहावी यक्कता । इहा चं राज्जावकारे, समरेन्दो अस्सुरेन्दो अस्सुरपचानो समरखचानाम राजधानी अहो । एतजोच  
 वनवसइरमपायामविरक्कमेवं । एकवाव योजन कोपणें तथा पियुक्कपणेहे । अमूरीवप्पमाणा । अमूरीय सेवणे प्रधापेहे । दिवउठजोअवसयचउठउ  
 वतेव । एकमार्यवाम योजन १५ ऊंषा खंषपणेहे । मूलेपवासवीथयाइविक्कमेव । मूलेने पियै पवास योजन पियुक्का । उवरियवतेरत्तवाचचार अवि  
 मोमगा । अवरि साठोवारे योजन आसीसा कोपका । चरकोपचंधावामेव आसंखविक्क मेव । पक्खयोजन कोपणे एककोस पियक्कपणे । सेमूचंमसजो  
 पक्कउठउवतेवं । हेमे अक्कल चत्तवाजन अथा खंषपणेहे । एवमेवावाहाएपपचदारसुवा । एकेजो वाहा पोचसेपोचसे नारवाहे । चत्तकारज्जावजोच

सुखस्यो न्यायिप्रमाणं श्रीपद्मवैमानिकविमानप्राकारप्रासादकमारिबलपतप्रमाणस्या ऽ मेतव्यं तथाहि-सौचमैवैमानिकानां विमानप्राकारो योजनानां प्रीतिशाला नुसत्येन एतस्यास्तु सादृश्यतं तथा सौचमैवैमानिकामां मूलप्रासादः पञ्चयोजनानां ज्ञातानि तदन्त्ये बत्वार सप्तपरिवार भूताः सार्धं द्वे शते प्रत्यक्षं तेषां चतुर्धा मप्यन्ये परिवारभूता बत्वारः सप्ताहं शतं एव मन्ये तत्परिवारभूताः सादृर्न द्विपट्टि रेव मन्ये सप्ताहं त्रिपट्टि इष्टु मूलप्रमादाः सार्धं द्वे योजनजते एव मधुर्देहीना सप्तपरे यावद्वस्तिमाः पञ्चदशयोजनानि पञ्चच योजनस्या षांका एतदेव वा चत्वारि उत्त-चत्वारि परिवारप्रतीतिं पासायवक्रिसपाचं षड्दुर्हीणाठिति एतेपाच प्रासादानां चतस्र्यपि परिपाटिपु श्रीचि क्षता न्येकपत्वारिसप्तद

### पञ्चास जीयणसहस्साह पंचयससप्तणउय जीयणसए किंचिविसेसुणे परिस्केवेण , सहप्यमाण वेमाणियस्स

पञ्चास उठठ ज्वतेव । ते बारवा घटाईले बाळन खचा ख चपचेवै । एमपचवोसजीपचसए १०५ विस्स मेव । एवद्या पचोत्तर बीजन विस्सकपचे १०५ । ज्वातिवमैवसासमकापचसहसाह आयामविस्समेव । घरता पोठ बचसरीको १५ सहस्र बाळन दीवपचे पिपुबपचेवै । पचासजीपचसहसाह पंचवसताचठत्राचसए । पंचास सहस्रबाजन पांचसै सत्ताचवे बाळन । किंचिविसेसूचेपरिस्केवेव । बाईक नियेजे ज बो परिचै जांबवो । सव्यप्यना च । एपच जे ते राजधानीनेविये माबारगठ प्रासादघर सभादिबनसुवै, ते सवनी उषादिक प्रमाच ते सौचमै वैमानिक प्राकार प्रासादाविक्रानो जे प्रमाचकज्ञावै तेहको पंचजाबदा ते देपावैवै-सौचम वैमानिक बार विमाननो प्राकार तीनसै १ बाळन ख चपचेवै तेमाटे एवनी १५ , तवा सौ चम वैमानिकने मूलप्रमादा ५ बाळनना तेहको बीका ४ तेहनी परिभूत २५ बाळन, ते बारिना प्रलेके बीका बार २ विमान तेहना परिवारभूत २५ योजन इम बीका ते परिवाभूत साहीवासठबाळन इव बीका सवाइबचोस बाळन इम विमान परिपाटी सौचमै देवकोकनेवियेवै, इहां मूल प्रा माद २५० बाळन तेहयो पच २ बीन बरता जेहका पनरेबीजन धनै एकबीजनना घाठमागकोजैएइवा पंचमाग प्रमाचवै, एहीज बाचनात्तरे चत्ता रि परिवारजीपापासायवक्रिसमाच षड्दुर्हीणाठिति । एव प्रासादनी बार परिपाटीनेविये तीनसब इकताजीस प्रासादहुवे, १२५ को । ४ १२५ को

पित्राणि भवन्ति एतेन्यः प्रासादेन्य उत्तरपूर्वस्थां दिशि समा सुधर्मां सिद्धायतनमुपपातसमा प्रदोऽन्निवेकसजा लङ्कारसजा व्यवसायसजा  
 चेति यतानिच सुधर्मसजादीनि सौवर्ण्यैर्मानिषसजाविज्यः प्रमाकतोऽर्जप्रमाकाणि तत योष्युय इहैवा यद्विंशद्योजनानि पञ्चाशद्वापामो  
 विष्णुमय पञ्चविंशतिरिति एतेषाञ्च विजयदेवसम्बन्धिनामिव शङ्खगर्जनसयसस्त्रिविष्टा मधुगणयसुखयहरयेह्याहत्यादि त्रयको वाच्यः, तथा दा  
 राणां उप्यिबहवे षष्ठमननतवाक्या कृताहता इत्यादि रसङ्कारसजादीना वाच्यः सर्वञ्च जीवाग्रिमोक्त विषयदेवसम्बन्धिनश्चमरस्य वाच्य  
 यावदुपपातसजाया चतुस्त्य द्याग्निवोत्पन्नस्य चिं मम पूर्वे यद्वाहु कर्तुं मेय इत्यादित्य अन्निवेक सान्निवेकसजायां महर्ष्यां सामानिकादिदे  
 वततः किनूयकाञ्च वज्रालङ्काररुता व्यसङ्कारसजायां व्यवसायद व्यवसायसजायां पुलकवाचनतोऽर्धमिकाञ्च विद्वायतने विद्वमतिमादीनां सुध  
 र्मसजाभममञ्च सामानिकादिपरिवारोपेतस्य चमरस्य परिवारस्य सामानिकादि अट्टिमत्वंच यत् महिन्द्रहत्यादिवचनैर्वाच्य मत्सेति एतच्च वा

१६ ६२॥ यो १६४ ३१॥ वा १२६६ १५॥ ५ मान सब १४२ कवा एह प्रासादो ईशान कूचि सुधर्मां समा सिद्धायतन उपपातसमा अद्वयभिवेकसमा  
 पञ्चकारसमा व्यवसायसमाहै, एतुधर्मासमा आदिदेहे सोधम देमानिषसमादिकता प्रमाञ्च अहममाञ्च एहर्षो वाच्यो तिवारे एहने अचपये १६ यो  
 जन ५ योत्रन पावामे २५ योजन विष्णुश्च एहने विषयदेवममधोमोपरे धर्मेक अमसवसस्त्रिविष्टा इत्यादि, सर्वञ्च अहर्षो एषोवाभिममेकज्ञो, विष  
 यदेवसवधे तिम इहर्ष चमरने सबधे कङ्कनू यावत् ठवत्रापासञ्जया इत्यादि । धववापासञ्जया । देवता उपपात सजा अचपये कवच पञ्चो कर्षो कच  
 च पञ्चो कर्षो इत्यादि । अमिसेव विभूषणापो वज्रसापो पाञ्चविज्यमुहणाञ्च चमरपरिवाररुठित आचमिहर । अमिसेव कोषा देवते ठकुटा इत्यादि  
 वज्र चर्मकार पञ्चराग सर्वकारममा व्यवसायसमा एतुववाञ्च सिद्धायतन प्रतिमादिकनो पूजाकोपी बुधर्मासमा भिन्नो परिवारमिहै वापामि

चमत्कारं चर्चत प्रायो व्यसोक्त एव ॥ इति द्वितीयस्याहमसद्वैद्यः ॥ ८ ॥ चमत्कारात्पुनश्च लेख सप्तमोक्त्याके उक्त मय मे  
 प्राप्तिभारादय नवमे समयोत्र मुच्यतइत्येव सम्बन्धस्या स्पेद सूत्र ॥ किमित्यादि ॥ तत्र समय-काल-सोनो पदस्थितं क्षेत्रं समयोत्र कालोद्दि दिनमासा  
 विरूप-भूपगतिमन्त्रिणयो मनुष्योत्रेण न परतः परतोद्दि भादित्याः स्यवरिप्रवहति ॥ एवं जीवाजिगमयसध्यायेयवृत्ति ॥ एषा चैव-एवं जो  
 यतमयमहसस प्रायामविवर्त्तनेन मित्यादि ॥ जोदसविहसति ॥ तत्र जगद्गुहीपादिमनुष्योत्रवक्तव्यतायां जीवाजिगमीक्षायाज्योतिषक्यात्तव्यता प्यस्ति,  
 तत स्तद्विहीनं यथा त्वेव जीयाजिगमयवक्तव्यता नतव्येति, वाचनान्तरेण जोदसचतविहसत्यादि जगद्गुह्यते तत्र-जगद्गुहीवेवं जते । नर च  
 दापनानिमया ॥ कतिमूरियातविमुखा ॥ कश्चकृताजोदजगद्गुह्येत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिषक्युग्रादि तथा-सेकेकठेवं जत । एव बुधर जगद्गुहीवे  
 दीय गोयमा । जगद्गुहीव दीवे मंदरस्व पक्षस्व उत्तरं तयकस्त द्वादिदेवं ज्ञात तत्त्व २ वद्वे समुत्पन्ना जगद्गुह्यता ज्ञात उपसोदनाका विवृति

पमागस्तस्य शुद्ध नैयव ॥ इह विद्वंस एव च्युतमो उहेसो समस्तो ॥ ८ ॥ किमिदं जते !  
 समयस्कंक्षेति पवुचइ ? गोयमा ! शुद्धाहजा दीवा दीयसमुक्ता एसण पत्रदए समयखेतेति पयुचइ, तस्य

आदि परिधारनदिन चमत्कारिणार सामाजिक आशिवंत ए मदिष्ट ठए इत्यादि कश्चन, यावत् विचरे । विवितव्युत्पन्नमो । एतौका प्रतवना घाठमो  
 उदगा प्रावय ॥ ८ ॥ ते चेचना पविकारो नवमे उहेगे समयचन कश्चिदे-किमिदमतेसमयखेतेतिपववद । एव भेभगवन् ।  
 समयचन इनाकशेदे इतिप्रय उत्तर । यावमा चकडाहज्यासोवादायसमुगा एसकयवएसमवखेतेतिपववद । हे गौतम ! घटादिदीप विसमद्र एहन  
 समयचेन कशेदे मनव कश्चता कान्तिव उपसचितकौधा मे चेचकाव ते दिन मासादिप स्य गतिकरो जायिजे ते मयुवचेनविधेज्जते ते वाहि  
 रमश ! तेपरे पादिसादितो मयाग्नही विरमाटे । तत्त्वचयजगद्गुहीवे २ । तिहा च वाक्कासकारे, एव जगद्गुहीपनामाहोप । सम्बन्धो नममहाचसव्यधतरे  
 एवोशोभिममवतामसाचेवगा त्राव पमि । एतत्तरईओसविहव । सब दीप समद्रने सब चम्भतर माहेवे इम जीवाभिममसूत्र नतव्यता जायवो ते



मत्तयहर्ष गोपमा । एव युद्ध अर्धूदीयेदीवे इत्यादीनि प्रत्येक मर्षयूत्रादिषु सन्ति तत्त द्वैतद्विहीन यथा त्रय त्वेवं बीधाभिगमयस्तत्त्वतया नेम  
मम्यो इत्यवस्य मृत् ॥ जावइमागाइति ॥ सयइमागा सार-अरइतममयवायर विष्णुप्रविद्यावसाइनाअगबी आगरनिदिनइउधरा गनिगमेदुम्भिय  
यग्न ॥ १ ॥ एस्या दाय सारा नम सम्बेयेका यातो अम्भूदीपादीनां मासुपोत्तरात्तागा मर्षाणां यवैकस्यांति इत्यमुक्त-जावंचक मासुसुत्तरेपधयर  
तावंचकं अरिंसोमोयति यवुद्ध ॥ ममुप्यसोब उच्यतइत्यर्थं सार्था ॥ अरइतेति ॥ जावंचकं अरइता अक्यवही जाव साधियाठे मन्धुया पगइजसुया  
विचीया तावंचकं अरिंसोमोयति यवुद्ध ॥ समयति जावंचक समयारवा आक्सियाइवा जावसोएति यवुद्ध उव जावंचकं वायर विष्णुयार वायरे  
यविचमइ जावंचक इत्ये उतासा यसाइया संवेयति अन्विति जावंचक वायरे तउपाय जावंचक आनराइवा निष्ठीइया नइइवा उवरागति, चंदो  
यरागाइया मूरावरागाइया तावंचकं अरिंसोमोयति यवुद्ध उपरागोपइव ॥ निम्मे दुम्भिययवंचति ॥ याव किर्नमादीनां यचनं प्रजापन तावन् मनु  
यमोचइति प्ररुतं तत्र-जावंचकं चंदिममूरियावं जाव ताराइवावं अइगमवं निगमवं युम्भिमिडुम्भू आपविष्णव तावंचकं अस्सिसोयति यवुद्ध  
यतिगमम मिहात्तरायवं निर्गमम दचिकायनं वृद्धि दिनस्य इत्येव इति ॥ इति द्वितीयस्तते नवमउद्देशः ॥ ५

ण अय जयूदीयेदीवे ससुदीवसमुदाण ससुस्त्रितरे एव जीवाजिगममधसुधया नेयइहा, जाव अस्त्रितर पुस्क  
रइ जोइसयिह्मण ॥ इह यिठयसए नवमो उद्देशो सम्मत्तो ॥ १ ॥ कइण जते ! अस्त्यि

इह-एतंभापमवमइरमं पाढामविक्रमेष इत्या दे, वाएतु ताकगे अइवा, जानी अचत्तर पक्कटाई कोइअइइहोव पाविदेर मनुअजेन यत्तवता जीवा  
जिमिअही ते इममिं अ निदोमो एहि कअप्यताकहोवे तेमाटे ते इहा म्यातिप यत्तवता मकइवो दीवो जीवाभिगमोअ यत्तवता सब अइवो । चिति  
यममवमयो । ए बीवा यतवता मवमो अइमोपूरावो । ८ । मवमे अइगे जेवअहा ते अष्टिकाय देमइयवे तेमाटे अष्टिकाव निरुप  
अ इममाउरेमा अइइ - अइयंभते यतिवाया यत्तता भावमा पपसिवाया पक्कता तंवका । जेतवो जेमअवण । अष्टिकावअइवो इतिमव उत्तर जेमोतम । यव

चनकरं नेत्रमुत्तम तथास्तिकापदेद्वयमित्यस्तिकायाप्रिधानपरस्य दृक्प्रतीक्ष्यस्या विसृज्य ॥ अस्तिशब्देन प्रदेशा सुष्यन्ते षण्ण सोपा  
काया राश्याऽस्तिकायाः अथवा अस्तीत्यर्थ निपातः काश्रयाप्रिधायी ततो अस्तीति सन्ति आसन् प्रविष्यन्ति च ये काम्या प्रदेशराश्या ये ऽस्ति  
कायाइति धर्मस्तिकायादीना चोपमास उपमेय इमं स्थापयि-धर्मस्तिकायादियदस्य मातृस्तिकाया यादा युक्त सवन्मन्त्रं च तद्वि

काया पशुता ? गोयमा ! पचश्च्युत्यिकाया पशुता, तजहा--धम्मत्यिकाए अथम्मत्यिकाए श्यागासत्यिका  
ए जीयत्यिकाए पोगगलत्यिकाए । धम्मत्यिकाएण कतिवसे कतिगधे कतिफासे ? गोयमा ! अथ  
त्वे अगधे अरसे अफासे अरुवी अजीवे ससए अथठिए लोगदवे से समासठे पचविहे पसुत्ते तजहा-

पक्षिनागच्छा, पक्षिमन्दिपदमकहीवे ते इमाकाव कहीसे रामि ते पक्षिकाव पचवा पक्षिपचव साजकय कविक्क तिवारे अक्खिसे प्रवा इवे जकायप्रवेय  
रामि ते पक्षिकाव ते कहीसे--धम्मत्यिकाए अथम्मत्यिकाए आयासत्तिकाए औदत्तिकाए पोव्वत्तिकाए पचत्तिकाएअमनेत्तवद्वयेपचत्ते । धर्मोत्तिकायने  
हेभगवद् । केतवावर्द्धे । धर्मोत्तिकाय धारिणति परिचत्तजोव पुव्ववने तमन व्दमावने तेमवी वन पक्षिकज्जिबे प्रदेशे कायकहीवे समूह धर्मोत्तिकाय  
औदपुव्ववने ममन करताने जेद्व व साकाज्जदेदिम मत्तपनीज्ज १ । तेइवी विपरीत ते पचर्मोत्तिकाय विवरसमाव २ । पचकायकय ते आकायात्तिकाय ३  
आकाय ते को व चैतन्यमच ४ । पूरकनयन जमावसे जेइमी ते पुव्वकात्तिकाय ५ । पच सगसे पुठिखोपरै कव्वी इहा धर्मोत्तिकावात्तिका एवोअ पनुज्जम  
कव्ववा जेभवी धर्मोत्तिकाय मगहोव्वे ते भवी पचिवे कल्लं १ तेइवी विपरीत ते पचर्मोत्तिकाव २ तिवारपळो ते जेअना आधार भवो आकायात्तिकाय  
३ तिशर पळो चनत्त मूर्त साधव्वको औपात्तिकाव ४ तिवारपळो तेइना उपट्ठभपचासो पव्वनात्तिकाव ५ कळो ए पनुज्जम धर्मोत्तिकायनेविधे ६  
वाक्खान्नारे, जेभगवद् । केतमाव ७ । जगधे कइसे कइकासे गायमा पचसे थगधे अरसे अफासे अरूवे अकीवे सासण पचव्विण्णोगद्वये । केतना गंध  
जेनमा रस केतसा लय इतिपय उत्तर हेयोत्तम । धर्मोत्तिकाएनेविधे पच १ जे ते मात्तिलो एक्कहोनहो, गध २ नहो, रस ३ नहो, फरस ८ नहो, जेमाटे

पद्यस्या दप्यर्मासिद्धात् सतप तदाधारत्वा दाकाद्यासिद्धात् सतो ऽनन्तत्वाऽमूर्तत्वसाधर्म्या ञ्जीवास्तिकाय सत सतुपटम्भकत्वात् पुट्तास्तिका

दधुन रेत्तन कालन जायत गुणत, वधुन धम्मत्थिकाए एगेदधे, खेत्तन लोगप्पमाणमेहे, कालत नक  
याइनथामि नरुयाइनत्थि जाव निच्च, जायत धुत्तने धुगधं धुत्तसे धुत्तसे, गुणत गमणगुणे । अह  
म्मत्थिकाएणि एयत्तये, नयर, गुणत ठाणगुणे । धुगत्तत्थिकाएणि एवत्तये, नयर खंत्तये धुगत्तत्थि  
काए लोयालोयप्पमाणमेहे धुत्तयेव जाय गुणत धुवगाहगुणे । जीयत्थिकाएण जेतो ! कइयत्तसे कइ

धर्मादि नहो ननाडे पर्योडे येत्तगुणपरिचित द्रव्ययो वासताहे प्रत्ययो परिक्रितहे, भावये र्वास्तिकावाजक तेहना र्वायभूत इत्यहे । तेसमासचोर्पव  
रिच पणने तं नहा । त धर्मास्तिकाय सत्तेपयो पचिमेहे कथा ते कहे—इत्यथा खेतयो भावयो गुणयो । द्रव्ययो १ धेवयो २ भावयो ३  
माशयो ४ गुणयो ५ । इत्यथावधत्तिशाए एमेदत्ते । द्रव्ययो धर्मास्तिकाय एवद्वत्तव । खेतयो धर्मास्तिकाय एवद्वत्तव । भावयो २ भावयो ३  
माशयो ४ भावयो धर्मास्तिकाय । भावयो नकथा एतत्पत्तिनकथाइत्थि । यतोतत्ताहे कदापि नहुतो इत्यनयो वत्तमानवातेतहे धागामिक्कावेनभुत्ते  
इत्यनयो । जावत्तिचे भावया यमने चगवे चरते यकाहे गवधोममचमुच । बावत् निवत्ते मावयो धर्मास्तिकाय पर्यवयो वंरचित नवरहितहे रस  
रहितहे धुवद्वितहे मवयो काययो काव यमने गति परित्तने यत्तिपट्ठक हेतु किम मावत्तयोने वस तिम । धवत्तिकाएणिवत्तये । धवत्तोक्तिवा  
द र्वाग निचे इत्यव परवत्तारे धर्मास्तिकावन्नो परे कइथा । वरं गवपाठावगुणे । एतन्नोविधिच गुणयो कावयो धर्मास्तिकाएणिवत्तये । धवत्तोक्तिवा  
पट्ठक इत्थि तिम मारप्पने वम तिम । धागासत्तिवागविपत्तये । धागायास्तिकाय यदि पचिमेहे इत्यव कइयो । वरत्तयेत्तयोव धागामिक्काएणिवा  
भावमाचमेते । एतत्तात्पिय धेवयो धागायास्तिकाव काव तवा भकाव एवत्तयमा भाव कइयो । धवत्तयेव । धवत्तये निचेत् । जावगुणधावपमा

ગંધે કહરસે કહફાસે ? ગોયમા ! અથવન્તે જાઘ અરૂવી જીવે સાસણુ અથઠિણુ લોગદહે સેસમાઘઠ પચ  
 યિહે પણાસે તજહા—દહઠ જાઘ ગુણઠ, દહઠજા જીઝાલિકાણુ અણતાહ જીઘદહાહ, સ્વેદઠ લોગપ્પમા  
 ખમેસે, કાઠઠ નકયાહનઅસિ જાઘ નિસે, જાઘઠ પુણ અથવન્તે અગધે અરસપાસે, ગુણઠ ડઘઠગુણે,  
 પોગલલિકાણુ નતે ! કહયણુ કહગધરસપાસે ? ગોયમા પચવન્તે પચરસે દુગંધે અઠપાસે રૂઘી અજીવ  
 સાસણુ અથઠિણુ લોગદહે, સે સમાસઠ પચયિહે પચસે તજહા—દહઠ સેસઠ કાઠઠ જાઘઠ ગુણઠ, દહઠ

રૂપને । યાઘત્તુ મુષ્કો જાઘઠો જોવાલિકાને ધવકાચેતુલે । જોઘલિકાણુઅઘઠેકહરસ । જોઘલિકાણુ અ ધાકાસકારે, રેમવન્ । જેતસાવં । કહર  
 યે કારસે કાઘાસે । જેતમા મધ જેતસારસ જેતસા ધરસ રતિપત્ર ઠતર । યાઘમા ધવસેજાઘધૂલો । રેયોતમ । ધરરહિત યાઘત્તુ ધરૂવો ધમૂતં । જો  
 રેમામણ ધરહિર આનદલે સેઠમામધા ધરનિષે પઠસે તજહા । સેતત્તરૂપ સદા કાસોગ કિર નિચલ અચલિત હોલદ્રવ્ય તે જોવાલિકાણુ અસેપવો  
 પાંચ મેરેલે તે કહેલે—દહધા કાઘપુષ્પા દહધાવંક્રોલિકાણુ । દ્રવ્યો જાઘત્તુ મુષ્કો દ્રવ્યો જોવાલિકાણુ । ધરતાહ જોવદહાહ જેતધોહોગપ્પમા  
 મતે । પતનમા જોગદ્રવ્ય પેષ્વો જીઘ જાઘમળકયાહનપાસિ । કાઘઠો કહેર જોવદ્રવ્ય મહો રમનહો । જાઘલિકા સે માઘધોપુષ  
 પવલે । યાઘત્તુ નિચલ માઘઠો ઘસોપધોયલો ધરરહિત । ધગધે ધરસે ધકાસે મુષ્પાઠવધોગમુષે । યઘદહિત રસદહિત ધરસરહિત કાઘઠો ધપયોગ  
 સેતત્તર સાકાર ધમાકાર તદૂપજોવ । પાઘાલલિકાણુઅઘઠેકહરસે । પુદ્ગલિકાણુ અ ધાકાસકારે, રેમવન્ । જેતસાવં । કહરગધરસપાસે । જેતસા  
 મધ રમ ધરસકાણુ રતિપત્ર ઠતર । યાઘમા ધંચલે । રેયોતમ ધાંચલલે । ધરસે દુગંધે ધકાસે રૂઘી ધજીવે સાસણુ । પાંચ રસલે ધોઘમધલે ધાઠ  
 ધરમદે દુગંધે પેનઅરહિત યાઘતાલે । ધરહિર જાઘલે સેસમાસપાર્થવલિકે પઠસે તજહા દહધા । અચલિતલે જાઘદ્રવ્યલે તે પુદ્ગલિકાણુ  
 સંધેપવો પાંચમેરલે તે કહેલે—દ્રવ્યો । જેતપા કાઠપો માઘપા મુષ્કો દ્રવ્યધોયલોઅલિકાણુ । પેષ્વો કાઘઠો માઘઠો મુષ્કો, દ્રવ્યો પુદ્ગલિકાણુ

पशति ॥ उपकारस्यादि ॥ पतयवा यवोर्दि रतएवा रूपी धर्मोः । ननु निःस्वभावो नन्वापर्युदासवृत्तित्वात् साधुतो द्रव्यतो ऽवस्थित प्रदेवतः ॥ सोऽगद्व  
 वृत्ति ॥ मोक्षस्य पञ्चान्तिशायामकस्यां प्राप्त इव्य लोकद्रव्य प्राप्तवद्वृत्ति पर्यायतः ॥ गुणवृत्ति ॥ कार्यतः ॥ यमपुद्गलेति ॥ जीवपुद्गलानां नतिपरि  
 पतनात् नत्यपटुपदेन परस्याप्तो अमपिविति ॥ ठावुमुचेति ॥ जीवपुद्गलाणा स्थितिपरिचिताया स्थित्युपपत्त्यर्थे तु भर्त्स्याना स्थलमिवेति ॥ अत्रगा  
 इवागुपति ॥ प्रोवागीना यवकागरेतु यदराणां भुक्तिमिव ॥ स्वर्गगुणेति ॥ उपयोग्येति ॥ साकाराभाकारजदे ॥ यवगुणेति ॥ यवगुणेति ॥ परस्परव

णं पीगलतिकाए अणताइ वसाठ , खेसठ लीयप्पमाणमेसे , कालठ नकयाइनस्यासि जाव निञ्जे ,  
 नाग्रनु ययामते गधरसफासमते , गुणठ गहणगुणे , एगेजते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएणि वसठ सि  
 या ? गीयमा ! जोइणठेसमठे , एव वेत्तिवि तित्तिवि वप्पारि पच ठ सप्त अठ नव दस सखेजा अ  
 संखेजा जते ! धम्मत्थिकाय पदेसा धम्मत्थिकाएणि वसठ सिया ? गीयमा ! जोइणठे समठे , एगपदे  
 नूणेयियणं धम्मत्थिकाएणि यसठ सिया ? जोइ ० सेकेणठेण जते ! एव वुसुइ , एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

पचनाः करार पतपामाप्यमावमते । पृष्ठन द्रव पतनादे चेष्वो बोधप्रमाणं माच एतत्वे वदद् एव प्रमावहे । कावधानकावदानपासि । कावबो  
 वदेइववो इमनवो तोनेजानेव । जावविने भावपेरवमते । बावणं निम्बे भाववो वववद्वितहे । अवमते रसमते वासमते नुषपोगववमुवे । नवदोव  
 मदिनवै रम वां वमदिनवै वरस पाठमद्वितहे कायवो परव्वः सवव करवो जीवे पीदारिकादि प्रकारे धर्मास्तिभावना अधिकारवोच करवै — एगे  
 भतेधम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकायेतिवक्तव्यमिवा । एव हेमगवन् । धर्मास्तिभाव पदेय तेवपते धर्मास्तिभाव एवम् काववाय इतिप्रव वप्पर । गोवमा  
 चारणवमठे । हेगोतम ! एवम नमचनवो मुलनवो । एवद्विद्विद्वित्तिारियवम गपठनवदसखेजा पदमेव्वाभतेधम्मत्थिकायपएवा । इम बीजपदेय  
 ने तोनपदेयने चारपदेयने वां वपदेयने चारपदेयने सातपदेयने पाठपदेयने नवपदेयने सप्तपदेयने संख्यातापदेयने चैवगवद ! धर्माधि

सम्बन्धमर्थं प्रीतिम वा श्रीदारिकाविमिः प्रकाशेरिति ॥ शृङ्गेर्यद्वैतत्यादि ॥ यथा शृङ्गेर्यस्य अफ न भवति शृङ्गेर्यस्य नित्येयं तस्य व्यपविद्यमानमास्वा  
दपितु मङ्गलमेव नञ्च नतं भवति एव धर्मास्तिकायः प्रदग्धना प्युनो न धर्मास्तिकाय इति वक्तव्यः स्या देतस्य निषयनपदस्येन व्यवहारनपमतनु

नोधम्मत्थिकायेति यत्तद्ध सिंया, जाय एगपदेसूणेवियण धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएस्ति यत्तद्धसिया ।  
सेणूण गोयमा ! खंढेचक्के सगलेयक्के ? नगव ! नोखंढेचक्के सगलेचक्के । एव छत्ते धम्मे दंढे दूसे झ्याउहे

कावयदम् । धम्मत्तिज्ञाएत्तिवत्तम्भिया । धर्मास्सिक्काय इम् कहवाय इत्तिप्रय उत्तर । गोबन्ना पाएवहेसम्भे । हेगोतम् । एषव सम्भेनहो सुत्तनहो । एमपदेम्भविविक्कम्भेधम्मत्तिज्ञाए धम्मत्तिज्ञाएत्तिवत्तम्भिया । एक प्रदेये अ वा पित्त पणन च वाक्काखड्डारे, हेभगवन् । धर्मास्सिक्काय धर्मास्सिक्काय इमा कहवाय इत्तिप्रय उत्तर । मायमा पाएवहेसम्भे । हेगोतम् । ए सयममन्नहो सुत्तनहो विवारे गोतम् कह्वै—सेनेवहु चम्भेएववह । त स्से प्रवो वने नेभगवन् । दम्भत्तु । एमे धम्मत्तिज्ञाएवमेकाधम्मत्तिज्ञाएत्तिवत्तम्भिया । एक धर्मास्सिक्कायमा प्रदेय तेइने धर्मास्सिक्काव एहव् कहवायनहो इत्थादि । आरणपदेम्भेविवक्कम्भियाए । यावत् एक प्रदेये अ वा पित्त, चपुन चवाक्काखड्डारे, धर्मास्सिक्काव तेइने । बोधम्मत्तिज्ञाएत्तिवत्तम्भियाए धर्मास्सिक्काय पण्डव् नहव्वि इत्तिप्रय । सेवन् मायमा खडेवहे सगखेवहे । ते जियै हेगोतम् । चक्कनाखड्डने चक्क कह्वे, चववा सगम्मा चक्कने चक्क कह्वे, यउववत्ता तइमा कटवा इमा भयवत्पूजा तिबारे गोतम् चान्ना । भगव्वाखडेवहे सगखेवहेएव चक्के चक्केइहे इमे पाउहे मायए । वभगवन् । नहो चक्कनाखड्डने चक्क कह्वे, इम चववा खड्डने चक्कनकह्वे सवने चक्क कह्वे, इम चववा खड्डने चक्कनकह्वे पायुववड्डने पायुववड्डने चक्कनकह्वे इतकह्वे चक्कना खड्डने चक्कनकह्वे जेमाटे हेगोतम् । प्रिम चक्कना खड्ड खड्ड कह्वे पवि तेइने चक्क कह्वे सगमाओज चक्क तेइने चक्क कह्वे । तेने च च हेगोतम् । इम चक्क एक धर्मास्सिक्काव प्रदेय तेइने धर्मास्सिक्काव नहव्वि । आवएवपदेम्भेविवक्केधम्मत्तिज्ञाएनाधम्मत्तिज्ञाएत्तिवत्तम्भिया ।

एकत्र नोक्तमपि यन्नु परस्वेय यथा यखलोपि घटो घटस्य' किमस्मार्त्तपि स्थाय्य प्रवर्तिष्य-यकदेशविकृतमन्यवादेति ॥ सेकिसाङ्गति ॥ अथ कि पुनरित्यय ॥ मधुति ॥ ममत्ता क्षेत्र देगापवपापि प्रवर्ति प्रकाशास्मर्यपि सवक्ष्यप्रवृत्ते रित्यतथाङ्ग ॥ कसिङ्गति ॥ कस्त्या मनु तदेकदेशापे स्या सवक्ष्यस्य मन्त्र व्यन्त्रमावरद्विता अपि प्रयत्नोत्पत्तया प्रतिपूर्णा आत्मस्वरूपका विकल्पा क्षेत्र प्रदेशान्तरापेक्षया स्वस्थमावन्मुनापि त याप्यन्तइत्याह ॥ विरवसमृति ॥ प्रदेशान्तरतोपि स्वस्थजायेना मूनाः तथा ॥ एयगङ्गकङ्गद्वियति ॥ एकग्रङ्गे त्रैकग्रङ्गे चर्मास्तिकापइत्येव नमन्वेन एहीता य ते तथा एकग्रङ्गनिषेण इत्यर्थे एकायां दैतेशब्दाः ॥ परसाधकतात्राङ्गियति ॥ चर्माचर्मायो रसङ्कया प्रदेशा उक्ता आका मीयग । सेतेणठेण गायमा ! एववुच्चृष्ट एगेधम्मत्तिकायपदेसे गोधम्मत्तिकायसि वत्तव्वसिसिया जाव एगपदे सुगंथियण धम्मत्तिकाय नोधम्मत्तिकायसि वत्तव्वसिसिया । सेकिस्वाङ्गएणजत ! धम्मत्तिकायसि वत्तव्वसिसिया ? गोयमा ! शुमस्वज्जा धम्मत्तिकायपएसा तेसव्वे कसिणा पङ्कियुष्सा निरव्वेसेसा एक्कागङ्गगङ्गहिया एसण गोयमा ! धम्मत्तिकायसि वत्तव्वसिसिया । एवञ्चहम्मत्तिकायसि स्थागासत्तिकाय जीवत्तिकाय पोग्गलल्लिय

वायत् ०८ प्रदेशे 'अ वा धर्माद्विक्काय नकहीये एनिचे सवक्ष्यमेते कथा पवि व्यवहार नवनेमेते ०८ देयेवरी नून एवि ननु ते वसुहीव कहीये वि मयाही एवि वडा वडाहीअ कहीये, कथा काजना एवि वतरी वतरी वतरी कहीये इम कोकापुव इत्यादि वाचवा । सेकिस्वाङ्गएणमेतेवम्मत्तिकाय गतिरत्तव्वसिसिया । ते प्वानि प्वानि प्रमिदने एव्वे उभयवत् । धर्माद्विक्काय इमा कइवाव, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एवसेव्वाधत्तिक्कायपदेसातिसरवी कनिनापट्टियव्यापिरवमेमा । हेनोतम धम्मत्तिकायता धर्माद्विक्कायता प्रदेशा पदेसातिसरवी एवि धम्ममावेवरी नून नही एतसे एव प्रदेशना एवि धम्मत्तिकायता एव्वे नकहीयेवरी ते एवि प्रदेशान्तरवक्को एव्व गोयमा धम्मत्तिकायसि वत्तव्वसिसिया । एवने हेनोतम । धर्माद्विक्काय कहीये इहा एमावाह धर्माद्विक्कायता धम्मत्तिकायता प्रदेशा तमेमावि को एव

मादीनां पुनः प्रदेशा दन्ता याथा दन्तप्रदेशस्था उपयोगिणुषो जीवास्तिकाय प्राग्दक्षिते उपपद्यन्मूलो जीव उत्पानादि  
 नृद्विति द्वायया ॥ जीवेवमित्यादि ॥ इदं सउच्छादेत्मादीनि विद्योपकानि मूलजीवद्वाराधार्यानि ॥ आकाशवेदति ॥ आत्मजायेन उत्पानस्य  
 तन्मनमोश्मादित्त्वेया त्परिकामविश्लेषः ॥ जीवतावति ॥ जीवस्य नैतस्य मुपववायति प्रकाशयति इतिवक्तव्यस्यात् विक्षिप्तस्यो त्याभावे धि

काएयि एयचेय, नवर, तिरहपि पणसा झणता भाणियह्या। सेस तचेव ! जीवेण जेत ! सउठ्ठाणे स  
 क्कमे सयळे सयीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे ध्यायजावेण जीवजाव उवदसेइति वसहसिया ? हता गोयमा !  
 जीवेण सउठ्ठाण जाय उवदसेइति वसहसिया ! सेकेणठेणजाय वसहसिया ? गोयमा ! जीवेण ध्याज्जिणि

श्री प्रदेश पाठाश्रयात् तेहने धर्मास्तिकाय पवि । इस धर्मास्तिकाय परे धर्मास्तिकाय पवि कहवो । धर्मास्तिकाय ।  
 पाठाश्रयात् पवि । औबस्तिकाय । औबस्तिकाय पवि १ ए तीमेई इसकीव औबवा । धर्मास्तिकाय  
 दि धर्मापचताभाविशर सेयतवेद । एतका विमिय धर्मास्तिकाय १ धर्मास्तिकाय २ एवेकता प्रखेवे धर्मास्तिकाय प्रदेय  
 ताप्रदेय कहवा, बाकर्त मय तिमत्र कहवा । औबेयमते सहाधिसकवे । साय गुण औबस्तिकाय पूर्वकथा १ द्विवे तवेयभूत औबने उद्यानादि गुण ते  
 देवाहदे—औबेयमवन् । सउत्यान जतोआभा ते अहित समगादि जियामहित ते सकम । सखे सवोरिए सपरिमकारपरकमे । यरीरनी समयता  
 ईशित आरना उजाह तेमहित पुरयगा अभिमान ते सहित कामपूरा ओवो । आयभावेओबभावेओबदेमोतिवत्तवसिया । आत्मभाव उद्यान  
 मयन समगादिय पाळपरिणाम विमिय तिवेकरो ओबभाव ओयना पतावता पैतम्पका देकाछे प्रकाये इतिएइता कहवाय इतिप्रय उत्तर । अता  
 मायमा । श्री गीतम । औबेयमवन्देजाहउदमेतोतिवत्तवसिया । ओब उद्यान प्रकमादि आत्मपरिणामविमिय तेवे सावत् ओबभाव पैतम्पका दे  
 पाहवे—एइता कहवा इवे । सेअइत न आवनतवमिवा । ते से धर्मे यावत् पैतम्पका देकाछेई इस कहवा इतिप्रय उत्तर । मायमा औबेय पचता



शिष्टचतनः पूर्वकृत्यादिति ॥ अर्हताकमानिषिवोद्विद्येत्यादि ॥ पयवाः प्रज्ञाकृता अविज्ञाताः पयसिष्वेदा स्तेषां नम्रा आग्निनिवोषिषज्ञानस्या तो  
 उमन्ताना आग्निनिवोषिषज्ञानपयवाका यम्बन्धिष भक्तानिषिवोषिषज्ञानपयवात्मकमित्यर्थं उपयोगं चेतनाविद्येयं गच्छतीतियोगः, इत्यानादा  
 वात्मनावेयतमान इति इदमस्य अथ यद्युत्तानाद्यात्मभावे वतमानो जीव आग्निनिवोषिषज्ञानाद्युपयोगं गच्छति तस्मिन् मेतावर्तव जीवमात्र मु  
 पदत्रयतीति वक्तव्य स्या दित्यासङ्गाह ॥ अवलोक्येत्यादि ॥ अत उपयोगसंज्ञं जीवमात्र मुत्तानाद्यात्मभावमो पदत्रयतीति वस्तुष्व स्या देवेति, अ

श्रीहिमनाणपञ्जायाण एव सुयनाणपञ्जायाण तृहिनाणपञ्जायाण मणपञ्जवनानपञ्जवाण केवलनाणपञ्जायाण  
 मङ्गलनाणपञ्जायाण सुयस्यन्नाणपञ्जायाण विजगनाणपञ्जायाण वरकुदसणपञ्जायाण स्यचस्कुदसणपञ्जायाण  
 तृहिदसणपञ्जायाण केवलवसणपञ्जायाण उवर्गगच्छइ , उवर्गगलरकणेण जीवे सेण्णठेण एव वुच्चइ ,

नं पाभिनिवादिबवावपय्यशाच । हेमोतम । जीव चर्चता मतिज्ञान परीयाब्जवाहे उपवाग वतना विवेद प्रते जाइ, इतिवाग, उत्तानादिब वाक्यमात्र  
 निविबै वत्ते जेवना बीजा भाग नहाय ते पर्याय कबोये । एवंउपवाच पय्यशाच । हम अनन्ता नुतज्ञानना पर्याय । पादिवाचपय्यशाच । अनन्ता अत्र  
 दि ज्ञानना पर्याय । अत्रपय्यवाचपय्यशाच । अनन्ता नमपर्येव ज्ञानना पर्याय । केवलवाचपय्यशाच । अनन्ता केवलज्ञानना पर्याय । नहपवाचपय्य  
 शाच । अनन्ता मति ज्ञानना पर्याय । मुपवाचपय्यशाच । अनन्ता नुत ज्ञानना पर्याय । विमयवाचपय्यशाच । अनन्ता विमगज्ञानना पर्याय ।  
 बलद्वयवपय्यशाच । अनन्ता वसुद्वयना पर्याय । परबलद्वयवपय्यशाच । अनन्ता परबलद्वयना पर्याय । ओदिदसवपय्यशाच । अनन्ता अवधिदर्शन  
 ना पर्याय । जेवम दर्शनवपय्यशाच । अनन्ता उत्रपायमप्यार । अनन्ता केवलदर्शनना पर्याय उपयाग चतस्रभाच प्रते जाइ, उत्तानादि वाक्यभाचने विबै वतना  
 म । उत्रपायमप्यारनेच कोये । उपयाग सप्तषजोत्र पतनामाट उपवागसुखन जीवप्रते उत्तानादिब वाक्यभाचिबरी देवाहे परवत् कबवाय । अनेचहु  
 ने भावना एवमप्यार । ते तेवे परे वयोपम । हम बभ्रु । मायमाजाने सुठहाच आरवतमविधिया । हेमोतम । जीव ज्ञानान वाक्य कबवाच अनन्तरेजी

नजरं श्रीवचिकामुद्रं मुक्तं मय तदापारस्वेना काशचिन्ताभूषादि ॥ कतिविशेषं भते । इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो संततं मिद-धर्मो  
रीतावृत्ति इत्यादिप्रवृत्तिप्रतत्वेन । तद्व्योऽसहस्रं सङ्घिपरीतल्लोकास्य मिति ॥ १ ॥ लोकागणैकमित्यादि षट्प्रमाणा एव लोकाकाशो ऽ  
पिन्नरवे श्रीर्वाते सम्पूर्वाणि जीवद्रव्याणि ॥ जीवद्रव्यस्य ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता प्रादयो विजगा ॥ जीवस्यैव बुद्धिरुता एव  
पञ्चाशद्व्यस्रः प्रदद्या निर्विजगा प्राणा इत्यर्थः ॥ पञ्चाशतिरुता इत्यर्थः ॥ पञ्चाशतिरुता इत्यर्थः ॥ पञ्चाशतिरुता इत्यर्थः ॥

गोयमा ! जीवें सडठाने जाव वसतुंसिया । कइविहेणजते ! ह्यागासे पखाते ? गोयमा ! दुविहे ह्यागासे प० त०-होयागासेय झुडोयागासेय, किजीवा, जीवपएसा, झुजीया, झुजीवदेसा, झुजीयपएसा ? गोयमा ! जीवायि जीवदेसायि जीवपदेसायि झुजीवायि झुजीवदेसायि

बादनात्कक्षा । दिव तेजोवता साधार साक्षाद्यधिनासूष कश्चै—अरत्रिचैवमते सागासे पश्यते साक्षाद्यामेव साक्षाद्यागासेव । केतसे प्रचारे हेभगवन् ।  
पाशायकक्षा इतिमत्र हेमोतम । विभुमदे साकाय कश्चो ते कश्चै—साकाकाय १ असाकाकाय २ तिहा साकाकायनी एसचच धर्मास्विबायादि  
द्रव्य त्रिहासुवे ते साकाकाय, तेहको दिवरोत ते असाकाकाय कश्चोवे । सायामासेकभते विज्जोवाजोश्वेसाओवपदेसा । साकाकायाशनेविवे हेभगवन् ।  
एव त्रीय इत्यादि क्षम्य तिहा साकाकाय पश्चिक्करनेविवे 'जोवति, सपूष जोवद्रव्य जोवद्रव्य जावनीअमुदि छान पज्जट देय ते प्रदेयनिविमान इत्य  
व । एत्रासा एज्जोवहेसा एज्जोयपदेसा । असाव धर्मास्विबायादिक्क ४ असावदेयदादिक्क विभाग ५ असावनिर्विभाग ६ । गायमा ओवादि । हेगात  
व । ओव पश्चिक्कै १ । ओवदेसावि । ओव देयपश्चिक्कै २ । ओवदेसावि । ओवना प्रदेय पश्चिक्कै ३ । अओवावि । अओवपश्चिक्कै ४ । अओवदेसावि  
एज्जोवनादेय पश्चिक्कै ५ । अओवपदेसावि । अओवना प्रदेय पश्चिक्कै ६ । अओवातेनियमाएमिदिया । अ ओवाचै मियै एज्जोओव । अओविया तेइदि  
पा एउदिदिक्क पश्चिदिक्क पश्चिदिक्क ओज्जोवदेसा । अ ओज्जोव ते एज्जोओव एउदिदिक्क पश्चिदिक्क पश्चिदिक्क ओज्जोव । तेनियमा एयेद्वि

य प्रवृत्ति श्रीवाद्याभितिरिच्छत्वा देयादीनां ततो जीवाजीवप्रवृत्ते किं देखादिप्रवृत्तेनेति? जैव निरवयवाजीवाद्यदयइति मतव्यवच्छेदार्थत्वा दस्योति  
 योजोत्तरं ॥ भोयमा । जीवाजीव्यादि ॥ अनेन चाद्यप्रमथस्य निर्वचनं मुक्तं अथा तस्य प्रमथस्य निर्वचनमाह ॥ जैवजीवेत्यादि ॥ कृवीयति ॥ मू-  
 लाः पुद्गला इत्यर्थः ॥ अकृवीयति ॥ अमृतो बर्मासिकायादय इत्यर्थः ॥ यथति ॥ परमाद्यप्रमथात्मकाः स्कायाः स्वचक्षुःशा द्यादयो विज्ञाणा स्क्  
 यमदेसां सास्येव निरंशा यथाः परमाद्यपुद्गलाः स्वचक्षुःश्व मनापकाः परमाणवइति ततो लोकाकाशे कृपिद्रव्यामेवया अजीवावि अजीवदेसा

अजीवपदेसायि । जेजीवा तेनियमा एगिविद्या जेइविद्या तज्जिविद्या चउरिदिद्या पच्चिदिद्या अणिदिद्या ,  
 जेजीवदेसा तेनियमा एगिविद्यदेसा जाव अणिडियपदेसा । जेअजीवा ते दुविहा पखसा , तजहा—कृवी  
 य अकृवीय , जेकृवी ते चउहिहा पखसा , तजहा—खधा खधदेसा परमाणुपोगला । जेअकृ

देसा । ते निवै एकेद्वोजोवना देय इत्यादि । जावपच्चिदिदेसा । जावपु निहतादेयत्रै । अजोवपदेसातद्विषमाएगिविद्यपदेसा । जे जायना प्रदेगळे ते  
 निवै एकेद्वोना प्रदेय । जावपच्चिदिबपदेसा । जावपु यमिद्वोना प्रदेय सिहना प्रदेयवै । जे अजीवा ते दुविहा पखता तजहा दूवोव अकृवीय । जे अ  
 जीववै तेइना जेमेद कक्षा तेकईवै—दूपो अजीव अरूपो अजीव अमृति अमृतिमृतिनाटि इत्यत्र । जेदूवो तचठखिहा पखता तजहा । जेदूपो अजीव  
 ते पुइठ तेइना चारमेठ कक्षा तेकईवै—खधा खधदेसा खधपदेसा परमाणुपाखसा । परमाणु प्रचयरूप १ इतिदिक् विभाग २ तेइनानिविभाग अथ  
 १ स्वभावा प्रते मयाव्या ते परमाणु अजीवे ४ एतत्त काकाकाशमवित्रै रपो इतिपायाने अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि एतत्त अजीव पख  
 ते पखता अन्वने जीवपचवेकरी गच्छा । जेअदूवो तचठखिहा पखता तजहा यथात्मिकाए । जे अदूवो ते पच प्रचरना कक्षा ते कईवै—जीवे अनाजवे  
 अरूपो दयप्रचरना कक्षा तेकिम याकायासिक्काव १ तदेय २ तजदेय ३ एवं अमना ३ अजमना ३ अजमना ३ ते इहा लोनामेद अहित याकाय  
 जे याचारपने कक्षा तेइना अजिह सात मेद कइया पनि जे इहा मज्झा पखभाच आरचवकी ते कईवै पचेति । नोचअजिवाअजवेसे अजजिवाअ

वि चप्रीवप्यगमादि, इत्येत दद्यतःस्वा इषूनां रक्तागाम्या जीयपञ्चनेन ग्रहकात् ॥ सौम्यशीतेपञ्चविशेषादि ॥ शम्यत्राप्यरूपिबो दवाविपर रक्ता  
मदपा-घाताश्लिङ्गाय साद्रेण शास्त्रदेशे येस्य चत्मापत्तोस्तिकायी समयेति वक्ष इदं सज्जदस्या काशस्या पारत्वेन विवक्षितस्या तदपे  
पाः मम यत्तया भवन्ति, न च तेन विवक्षिता घस्यभासकारका, होतुवियक्षिता रुानाह, पञ्चति कथमित्याह ॥ चम्पत्यिकायेत्यादि ॥ इह जी  
घाना पुद्गलानां यद्वा देकस्यापि जीवस्य पुद्गलस्यवा स्थाने सङ्क्रियक्षितयाविषपरिणामयक्षा इह जी जीवा पुद्गलाद्य तथा तद्देहा सत्त्व  
देहाद्य सुभवन्ती तिरुत्वा जीयाद्य जीवदेयाय जीवप्रदेशाद्य, तथा रूपिद्रव्यापेक्षया प्रजीवाद्या जीवप्रदेशादेति सङ्कृत नैकत्रा प्याक्षये  
प्रदत्ता वस्तुत्रयस्य सद्भावात् चम्पास्तिकायादीसु क्षितयमेव युक्तं यतो यदा सम्पूवं वस्तु विवक्ष्यते तथा चम्पास्तिकायादी तुच्यते तदवस्थिति  
यथायासु ताम्रम्नादिति तथा मयस्थितरूपत्वात् तद्देहास्यपना स्थयुक्ता तेया भवयास्थितरूपत्वादिति यद्यपिवा नवस्थितरूपत्वं जीवादिदद्या  
न पञ्चति तप्यति तेपा मज्जा हये प्रदेम सम्ययः प्ररूपकाकारण मिदं तु त द्यास्ति, चम्पास्तिकायादे रेकत्वा दसङ्कोचादि घर्मकत्वाचेति अत

मे नृपनयिना पराभा । तज्ज्ञा-धम्मालिकाए नोद्धम्मालिकायस्सदेसे धम्मालिकायस्सपदेसा । अद्धम्मालिय

[illegible]

एव धर्मास्तिकापादिदेगमिषयायाह ॥ नोपन्मास्तिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोपन्मास्तिकायस्सदेसेति ॥ पूर्विकारो प्याह, अरुविओ वद्या समुदय  
 सद्व नवति भीसेसापएसदि या भीसेसापवेजा नो दवेब तस्स अरुविठियपमाकत्तयठ तेब नदसेय मिदेओ नोपुगदेसहो एसु क्खो सो सधि  
 सयपयववत्तारत्वं परववपुसबादिगयववत्तारत्वेति ॥ तत्र स्त्रियये धर्मास्तिकायादिवियये यो देगस्य व्यवहारो-यथा धर्मास्तिकाय स्यदेवो नो दे  
 सोकाकाया भागोती त्यादि स्तदये तथा परवव्येव ऊर्लोकाकायादिवना या स्त्रस्य स्पर्शाभाविगतो व्यवहारो यथा छटुसोकाकायेन धर्मास्तिका  
 यस्य दहाः स्पदपते इत्यादि स्तदयमिति ॥ अट्टासमएति ॥ अट्टाकाल लल्लकः समय क्खो उट्टासमए-सुबेकएव यत्तमानल्लदस्य अतीताना  
 गतयो रसत्तादिति स्त लोकाकायगतमपट्टस्य निवचन मया लोकाकायप्रतिमस्य काह ॥ पुब्बातहवेवति ॥ यथा लोकाकायप्रसे तथादि-  
 धर्मास्तिकावेवं जत । वि लीवा लीवदसा लीवपणसा अलीवा अलोववैसा अलीवप्यएसति ॥ निवचनं स्वेया एकामपि नियच सया ॥ एगअजीव  
 दवदवति ॥ अलोकाकायस्य देसल लोकास्तोकाकायअव्यस्य भानकपत्तात् ॥ अगुरुफलपुप्पति ॥ अगुरुपुत्त्याप्यपदेगत्तात् ॥ अकतेदि अगुरुयस

काए नोअधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपदेसा । अट्टासमए । अलोयाकासेण जते ! किजीना ?  
 पुच्छा तहवेव, गोयमा ! नोजीया जाव नोअजीवप्यदेसा । एगेअजीवदवदेसे अगुरुयल्लकाए अणत्तेहिं

से भा अरुविठिकावत्तदेवेति । ते देय ग्रन्ध धर्मास्तिकावादिक्के कट्टा ते वविपयवतत्तवत्तारजेपवे तथा परद्वय अगतादिगतत्तवत्तारनेपवे ति  
 शा अविपवेने देगअवत्तार ते कहैवे-जिम धर्मास्तिकाय अवेगेवरी क्ख लोकाकायपते भायै, तथा परद्वय कार्यभाविनत्तवत्तार कहैवे-जिम  
 अर्धनाकाकायेवरी धर्मास्तिकावनी देसअगोवे तेवने पवे देसकट्टो । अट्टासमए अभावायासेवभतेविजीवापुत्ता तहवेव । कास ते कयच समय चव  
 ते एकएक वत्तमान मत्तचवदे पतीत अभायतेनियै वत्तलवको लोकाकायगतपयुनो उत्तर कट्टो । हिदे अलोकाकाय प्रते पूजेवे-यसीकाकायने  
 निवे देमयवत्त ! एवोव इत्तादि यय विमअपूजा । गावमा चोमोवा जाव नो अलोवपदेसा एवेअजीवअवदेवे । जे सीतल ! अएनो भियेअ अरुवि

दुयगवेदिति ॥ घनतोऽथपर्यायपरयायकृते गुंही रगुरुसपुस्तकावे रित्यर्थः ॥ सद्यागासे अर्धतभागूकति ॥ लोकाकाशस्या लोकाकाशापेक्षया अ-  
 भानागरूपत्वादिति अथा घनरोक्तान् घनमस्ति कायादी ग्रमाकतो निरूपयन्नाह ॥ घनमिति इत्यादि ॥ सोमहासएति ॥ सुप्तभावमत्यमत्वा भिद्वे  
 दाम्य कि मह्यस्य मस्या की विमहन्तः ॥ सोएति ॥ लोको लोकाप्रमितस्याय् लोपव्यपदेशाद्वा हा उच्यते ॥ पञ्चविंशत्ययमस्य लोयमित्यादि ॥ लोको  
 वादी वतत इदंवा प्रथित मयुक्तं शिष्यवृत्तस्या वाचायस्येति लोकमात्रो लोकपरिभाषाः सच क्रिञ्चिन्मूनीपि व्यपहरतः स्या दित्यत आह ॥ लो  
 यप्यमावृत्तिसाक्यमायो लोकप्रदेशाप्रमावत्वा तत्प्रदेशानां सचा म्योन्यामुर्ध्वेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुलेति ॥ लोकं लोकाकाशान् सकलस्य  
 प्रदेसो एतदो लोकपरपु सचा लोकमवयव सकलस्यप्रदेसैः रययुगतिष्ठतीति पुद्गलास्तिकायो लोकं एतद्वा तिष्ठतीत्यन्तरं मुक्तमिति स्पष्टानाधिक्या

स्रगस्यरुज्जयगुणीहि सजुते सद्यागासे अणतन्नागूणे । घमस्त्यिकाएण नते ! केमहालए पसुते ? गोयमा !  
 लोए लोयमेत्ते लोयप्यमाणे लोयफुले लोयचंचफुसिस्ता णचिठ्ठह , एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे , जीव

त्रोवा इत्यादि, तथा एव सज्जोव द्रव्यना देयत्वे तेजस्य अलोकाकायने देयपवा लोकाशोक्तरूप पाद्यादृक्कनाभाज रूपीकै । अगुरय स्रयुय अर्धते  
 एतुरय नहर नुवहि सज्जते मकागासे अर्धतभागूव अर्धत्थिकाएवमते केमहासए पसुते । गुर स्रयुयवाडो अभावो अगुरुस्रयुवै अतत स्रपर्यायरूप  
 एतुदन्तु स्रमवेकरो स्रित्तै नाकाकाय अलोकाकायनी अपेक्षये अततभाग रूपवै तेवै छत्रो अलोकाकायवै तेमचो सर्वाकायने अततमिभाने अ  
 वा । द्वि अलोकाकायादित्र प्रमाथवो अर्धत्वे—अलोकाकाय सेभगवन् । नोतनी एवमोटा अलो इतिप्रश्न उत्तर । मायमा लोव लोयमेत्ते लोवप्यमा  
 ने । जेमोमम । माकपवाः प्तिवायमव तेतवावै लोकाकायवै साक्यप्रदेश प्रमाथवै । लोवप्यमाकायवैव कृत्तितावचिठ्ठह । अमर्त्थिकायनाप्रदेश लोकाकाये व  
 रो मकम स्रदेश स्रवै तथा मोकमते समस्त स्रप्रदेशे अर्धो रलोवै । एवमहम्मत्थिकाए । इम अमर्त्थिकाव पवि अहवा । लोपागासे लोवत्थिकाए  
 पालनत्थिकाए पंचविंशतिभिनाया । इमलोकाकायपवि लोवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एवंचिदना एकसरीखा पाद्यावा अहवा, पुद्गलास्तिकाव लोव

रा दधोतोकादीना धर्मास्तिकायादिगतां स्पष्टेना दर्शयन्निदमाह ॥ अहोसोएणमित्यादि ॥ सातिरेगममदिति ॥ लोकायपकत्वा दुर्मास्तिकायस्य सा तिरेकसरन्मुममायत्वा सापोलोकाय ॥ असखेज्जाज्ञागंति ॥ असङ्कतयोजनप्रमायस्य धर्मास्तिकायस्या द्वावशयोजनज्ञातप्रमाय स्तिर्यम्भोको सङ्का तनागवर्त्तति तस्या सा वसङ्केप्यजाग स्पष्टतीति ॥ दोसोवंपदति ॥ दोखोनसरन्मुममायत्वा दुर्दलोकायस्येति ॥ इमाय प्रते ! इत्यादि ॥ इह प्रतिप

त्यिकाए पोमगलित्यिकाए क्काज्जिलाया । अहोलोएण जते ! धम्मत्थिकायस्स केवद्वय फुसइ , गोयमा ! सा तिरेग अइ फुसइ । तिरियलोएण जते ! पुच्छा ? गोयमा ! असखेज्जाइजागफुसइ । उहुलोएण जते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूण अइ फुसइ । इमाण जते ! रयणप्यजाण पुठवी धम्मत्थिकायस्स किसखेज्जाइ जाग फुसइ , असखेज्जाइजाग फुसइ , सखेज्जाइजाग फुसइ , सवफुसइ ? गोयमा ! णो

प्रते कय्यीनेनै एइयो यनतरे ऋतुं तेषागंता धिचारवो पचासोकादिक्खने धर्मास्तिकायादिगत समग्रा देखावै—पइओएणमतिवक्खत्थिकायस्यवेवइय वरति । पचासोका हेमयवन् । धर्मास्तिकावने केतसू समे इतिप्रत्त उत्तर । नायमा सातिरेकसरफुसइ । हेगौतम । धर्मास्तिकाय लोकायपकत्वे यने य धानावसाविज सातराज प्रमाचइ तेमवो साधिक यवसमै । तिरियलोएकंभते पुच्छा । तियन्तोका हेमयवन् । केतसो फरसे इसू पूछूं । गोयमा असे खेज्जइमायमुत्तर । हेगौतम । धर्मास्तिकाव असज्जाता बोअ प्रमाचइ यने लोकोलोका १८ लोखनइ तिवारे पसज्जातमे मागे परसे । उहुलोएण मतिपच्छा । जइकाव हेमयवन् । केतसो फरसे इम पूछा । गोयमादेसूवंपइयत्तर । हेगौतम । दोखेज्जा सातराजप्रमाच अइलोकाव तेमाठे सेगान अ वरसे । इमावमतेरयपयमापकवोपक्खत्थिकावसुक्खिसवेज्जाभायफुसइ । एइ व वाक्कावजारे, रजयमानाया पृथिवी धर्मास्तिकावनां खूं सम्य तमो भाग परसे । असखेज्जाभायममर सखेज्जेभायममर । यववा असज्जातभाभाग फरसे यववा सज्जातभाभागमेविने फरसे यववा । यमखेज्जेभायममर । यवज्जातमा भावनेविदे फरसे यववा । यवफुसइ । यव फरसे इतिप्रत्त उत्तर मायमा चासखेज्जाइमायमुत्तर । हेगौतम । नवो सज्जातभाभाग करसे ।

मर्गेजाइनाग फुसड, शुभमर्गेजाइनाग फुसड । गोसखेजेनाग फुसड, गोशुसखेजेनाग फुसड, नोसख  
 फुसड । इमीसेण जते ! रयणप्यनाए पुठवीए घणोदही घम्रतियफायस्स कि सखेजाइनाग फुसड ? गो  
 यमा ! जहा रयणप्यनाए तहा घणोदहिंघणयाथतणुवायायि । इमीसेण जते ! रयणप्यनाए पुठवीए उवा  
 मतंघ घम्रतियफायस्स कि सखेजाइनाग फुसड, शुसखेजाइनाग फुसड पुच्छा ? गोयमा ! सखेजाइनाग  
 फुसड गोशुमर्गेजाइनाग फुसड नोसखेजे नोशुसखेजे नोसख फुसड । उवासतराइ सखाइ जहा रयण  
 प्यनाए पुठवीए यम्रसुया नणिया एव जाव शुहे सत्तमाए जनुदीवाइयादीया लयणसमुदाइया समुदा एवं

यमर्गेजाइनाग फुसड । यमव्यातमा भागकरने एवमाय यमोमइस याज्ज पिठ माटे । बीसखे वाचसखे वासखकसर । सखातमाभागेनेविपे खय  
 जहे यमव्यातमाभागेनेविपे खयोनको मर खयोनको वलीपुखडे—इमीमेखभतेरयवप्यमाएपुठवीएघणोदही । एव हे भगवन् । रज्जमा एविबौनो घनोद  
 रिडे । यम्विजायम विमपेजेभागेफमड । यमालिकायने व् सखातमाभाग करखे एमवि । जहारयवप्यभातहाघणोदहिं घववाय तणुवायावि ।  
 तिम रज्जमा एविबौनेविपे कजा तिम कमादहि । यमवात १ तनुवात २ एतोण कइवा, एतखे प्रखे घमस्यावमेभागे करखे । इमीसेणभतेरयवप्यमाएपु  
 ठवीएउवासतरे । एव हे भगवन् । रज्जमा एविबौना पाकायांतर ते । यम्विजायमा किंसुखज्जभाग कसर । यमोसिखावनो खं सखातमाभाग कर  
 ने विडा । यमर्गेजाइनाग फुसड । यमव्यातमा भाग करखे इत्यादि पूज् । यममा सखेजाइनाग फुसड । हे गोतम । सखातमे मागे करखे ए घस  
 व्यात याज्जने तेमाटे । यापमपेज्जभागेफमड । यमव्यातमा भाग करखेनको । वासखेजे यापमखेजे वासखकसर । सखातमाभागेनेविपे करखेनको  
 यमव्यातमाभागेनेविपे करखेनको सर्व करखेनको । उवासतराइमव्या । याकायांतर सव । जहारयवप्यमाए पुठवीए यम्विजायमा भागियखा एवंवावचखे  
 यतमाए । तिम रज्जमा एविबौना पाकायांतर कजा, तिम सातेर नरज एविबौना कइवा, एतखे सखातमाभाग करखे इत्यं, इम यावत् भीचे सा



पिविषममूत्रादि, देवसोक्तमूत्रादि द्वादश ग्रैवेयकमूत्रादि श्रीदि, अनुतरेपत्राग्नारासूत्रे द्वे एव द्विपञ्चाशत्सूत्राणि धर्मास्तिकायस्य किं सुद्धे ये मार्ग एषांस्ती त्याद्यन्तितापना वसेयानि तथा यथाज्ञान्तराणि सङ्क्षेपज्ञाय स्पृशन्ति क्षेपा स्त्वसङ्क्षेपज्ञागमिति निर्वेचन एतान्येव सूत्रा स्य धर्मास्तिकायसोक्तानां योदिति इतो चार्थसङ्ग्रहाया प्रावितायेव ॥ इति द्वितीयश्चासदधमः ॥ १० ॥ समाप्तपट्टितीयज्ञात ॥ २ ॥

सोहम्मेकप्ये जाय हसिपम्नाए पुढधीए तेसंघेवि थ्यसखेज्जइ चाग फुसइ । सेसा पण्हिसेहेयसा । एव थ्यध  
म्मात्यिकाए एवं छीयागासेयि ॥ गाहा ॥ पुढयोवहीधणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिन्धी सखेज्जइभागाथ्य तेरे  
सुसेसाथ्यसंखेज्जा ॥ यित्तियस्सदसमो उहेसोसम्मसो ॥ १० ॥ वित्तियसय सम्मत्त ॥ २ ॥

तमीतरव द्रविषोतीरे मर्वकइवा । जूहोवाइबाहोवा । जूहोप पादिदेरे पचक्कातापोप । खवच समुद्र पादिदेरे पसरया  
ता समुद्र । एवंसाइयेक्ये । इम सोबम पादिदेरे बार देवसोव नव येवेयव पच पनुत्तरविमान । जावइमिप्यभारापठबोप । वावत् सिद्धि मिया  
ताई । तेमवेविपसंखेज्जइभाय फसइ । ते सगहारं यमास्तिकाबनो पसंक्कातमीभाग परसंखे । सेमापडिसेहेयसा । येय सदयातमीभाग पादिदेरे  
चारत्तमा प्रतिनियेव करवा । एवंयक्कविवाए । इम पचमास्तिकाबनो पचि खयना कइवी । एवमोयागासेवि । इम सोकाकायनी पचि नाक्य  
कइवी । गाहा । संगइनावा कइये—पुढधीउद्विषयत्तू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिन्धी संखेज्जइभाय तेरेमुसेयापसंखेया ॥ १॥ सात पुढिनी सात  
पनादिभि सात बनवात सात तटुयात । बार देवकाव नव येवेयव पच पनुत्तरविमान सिद्धिवा एसईभाये जे पाकायांतर ते धर्मास्तिकायादिक्क  
ना संक्कातमीभाय परसे गावा पचसूचकइवा, द्रविषो १ बनीद्वि २ धनवात ३ धावायांतर ४ धावायांतर ५ तिवारे सातेर द्रविषीना ६ सूचकया वा  
रेवकाकना १२ सूच नव येवेयवना ३ सूच पचपनुत्तरा १ सूच इंपवपाभारागा १ मूत्र इम १२ सूच यथा ते धर्मास्तिकायनो संक्कातमीभाय परसे  
इमादि पाकावेकरी कइवा, तिर्वा पाकायांतर सक्कातमीभाये परसे बीजा यव यमस्यातमीभाये परसे । बिहवयक्कपुममोठेनी सक्काती । एव बी  
जा यतकना इयमी इवेगा परबो सबसो ॥ १ ॥ चित्तिसर्वसुसम्मत । एबीनो यतक पचवी पूराविषयो ॥ २ ॥

